



Sample

05 Mar 1987

07:15 AM

Jeypore

Model: Brihat-Kundli-Phal-New

Order No: 112920

ଲିଙ୍ଗ _____ : ପୁଲିଙ୍ଗ

ଜନ୍ମ ତିଥି _____ : **05/03/1987**

ଦିନ _____ : ଗୁରୁବାର

ଜନ୍ମ ସମୟ _____ : **07:15:00** ଘଣ୍ଟା

ଇଷ୍ଟ _____ : **02:25:22** ଦଣ୍ଡ

ସ୍ଥାନ _____ : **Jeypore**

ରାଜ୍ୟ _____ : **Odisha**

ଦେଶ _____ : **India**

ଅକ୍ଷାଂଶ _____ : **18:51:38** ଉତ୍ତର

ରେଖାଂଶ _____ : **82:33:03** ପୂର୍ବ

ମଧ୍ୟ ରେଖାଂଶ _____ : **82:30:00** ପୂର୍ବ

ସ୍ଥାନିକ ସଂସ୍କାର _____ : **00:00:12** ଘଣ୍ଟା

ଗ୍ରୀଷ୍ମ ସଂସ୍କାର _____ : **00:00:00** ଘଣ୍ଟା

ସ୍ଥାନିୟ ସମୟ _____ : **07:15:12** ଘଣ୍ଟା

ବେଳାନ୍ତର _____ : **-00:11:41** ଘଣ୍ଟା

ସାତ୍ତ୍ୱିକ କାଳ _____ : **18:04:20** ଘଣ୍ଟା

ସୂର୍ଯ୍ୟ ଉଦୟ _____ : **06:16:51** ଘଣ୍ଟା

ସୂର୍ଯ୍ୟ ଅସ୍ତ _____ : **18:06:18** ଘଣ୍ଟା

ଦିନମାନ _____ : **11:49:28** ଘଣ୍ଟା

ସୂର୍ଯ୍ୟଙ୍କ ଛିତି ଆୟନ _____ : ଉତ୍ତରାୟନ

ସୂର୍ଯ୍ୟଙ୍କ ଛିତି ଗୋଲ _____ : ଦକ୍ଷିଣ

ରତ୍ନ _____ : ବସନ୍ତ

ରବିଙ୍କ ଅଂଶ _____ : **20:16:24** କୁମ୍ଭ

ଲଗ୍ନ ର ଅଂଶ _____ : **07:42:26** ମୀନ

ଅବକହଡ଼ା ଚକ୍ର

ଲଗ୍ନ-ଲଗ୍ନାସିପତି _____ : ମୀନ - ଗୁରୁ

ରାଶି-ସ୍ୱାମୀ _____ : ମେଷ - ମଙ୍ଗଳ

ନକ୍ଷତ୍ର-ଚରଣ _____ : ଭରଣୀ - **3**

ନକ୍ଷତ୍ର ସ୍ୱାମୀ _____ : ଶୁକ୍ର

ଘୋର _____ : ଇନ୍ଦ୍ର

କରଣ _____ : କୌଲବ

ଗଣ _____ : ମନୁଷ୍ୟ

ଘୋରି _____ : ଗଜ

ନାଡ଼ୀ _____ : ମଧ୍ୟ

ବର୍ଣ୍ଣ _____ : କ୍ଷତ୍ରିୟ

ବଣ୍ୟ _____ : ଚତୁଷ୍ପଦ

ବର୍ଗ _____ : ମୃଗ

ପୁଞ୍ଜ _____ : ପୂର୍ବ

ହଂସକ _____ : ଅଗ୍ନି

ଜନ୍ମ ନାମାକ୍ଷର _____ : ଲେ-ଲେଖପାଳ

ପାୟ ରାଶି-ନକ୍ଷତ୍ର _____ : ରଜତ - ସ୍ୱର୍ଣ୍ଣ

ସୂର୍ଯ୍ୟ ରାଶି ପାଖାତ୍ୟ _____ : ମୀନ

ପଞ୍ଚାଙ୍ଗ

ଜେଜେ ବାପାଙ୍କ ନାମ _____ :
 ପିତାଙ୍କ ନାମ _____ :
 ମାତାଙ୍କ ନାମ _____ :
 ଜାତି _____ :
 ଗୋତ୍ର _____ :

| କେଲେଣ୍ଡର | ବର୍ଷ | ମାସ | ତିଥୀ/ପୁରିଷେ |
|--------------|--------------|----------|-------------|
| ରାହୁୟ | ଶକ : 1908 | ଫାଲ୍‌ଗୁନ | 14 |
| ପଞ୍ଚାବି | ସମ୍ବତ : 2043 | ଫାଲ୍‌ଗୁନ | 22 |
| ବଙ୍ଗାଳି | ସନ୍ : 1393 | ଫାଲ୍‌ଗୁନ | 20 |
| ତାମିଲ | ସମ୍ବତ : 2043 | ମାସି | 21 |
| କେରଳ | କୋଲମ : 1162 | କୁମ୍ଭମ୍ | 21 |
| ନେପାଳି | ସମ୍ବତ : 2043 | ଫାଲ୍‌ଗୁନ | 21 |
| ବୈତ୍ତାଦି | ସମ୍ବତ : 2043 | ଫାଲ୍‌ଗୁନ | ଶୁକ୍ଳ 6 |
| କାର୍ତ୍ତିକାଦି | ସମ୍ବତ : 2043 | ଫାଲ୍‌ଗୁନ | ଶୁକ୍ଳ 6 |

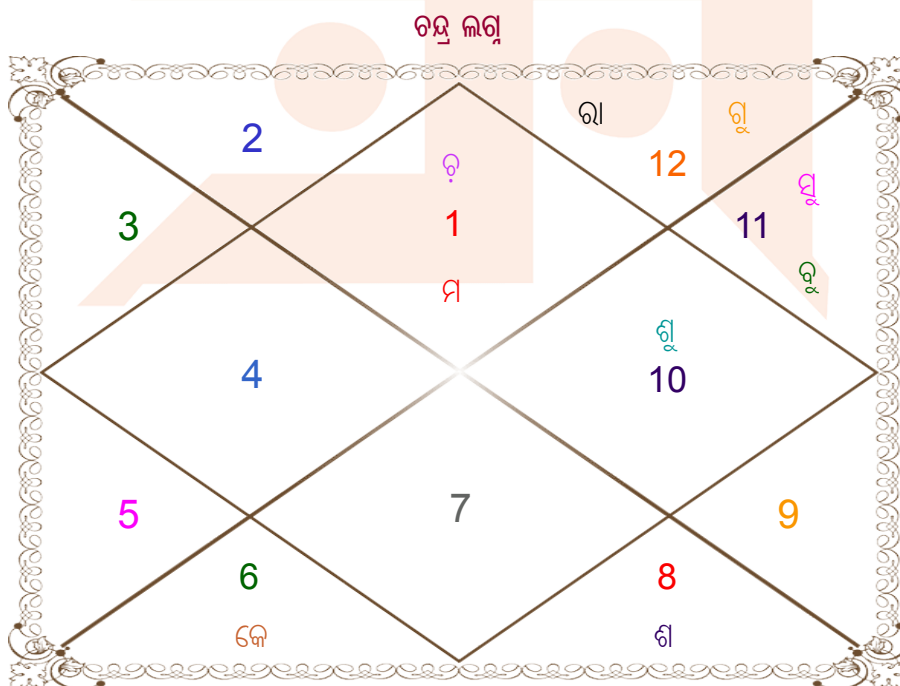
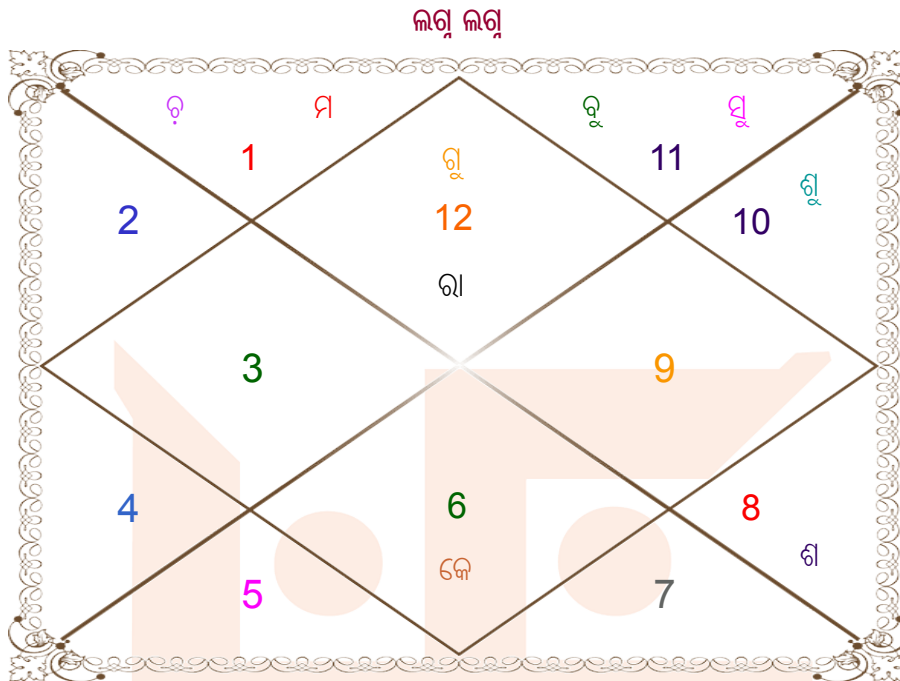
ପଞ୍ଚାଙ୍ଗ

ସୂର୍ଯ୍ୟୋଦୟ କାଳୀନ ତିଥୀ _____ : 6
 ତିଥୀ ସମାପ୍ତି କାଳ _____ : 26:35:25
 ଜନ୍ମତିଥୀ _____ : 6
 ସୂର୍ଯ୍ୟୋଦୟ କାଳୀନ ନକ୍ଷତ୍ର _____ : ଭରଣୀ
 ନକ୍ଷତ୍ର ସମାପ୍ତି କାଳ _____ : 14:08:07 ଘଣ୍ଟା
 ଜନ୍ମ ଯୋଗ _____ : ଭରଣୀ
 ସୂର୍ଯ୍ୟୋଦୟ କାଳୀନ ଯୋଗ _____ : ଇନ୍ଦ୍ର
 ଯୋଗ ସମାପ୍ତି କାଳ _____ : 13:08:03 ଘଣ୍ଟା
 ଜନ୍ମ ଯୋଗ _____ : ଇନ୍ଦ୍ର
 ସୂର୍ଯ୍ୟୋଦୟ କାଳୀନ କରଣ _____ : କୌଲବ
 କରଣ ସମାପ୍ତି କାଳ _____ : 13:54:48 ଘଣ୍ଟା
 ଜନ୍ମ କରଣ _____ : କୌଲବ
 ଭୟତ _____ : 46:15:42
 ଭଞ୍ଜୋଗ _____ : 63:28:30
 ଭୋଗ୍ୟ ଦଶା କାଳ _____ : ଶୁକ୍ଳ 5 ବର୍ଷ 4 ମାସ 13 ଦିନ

ଘାତ ଚକ୍ର

ମାସ _____ : କାର୍ତ୍ତିକ
 ତିଥୀ _____ : 1-6-11
 ଦିନ _____ : ରବିବାର
 ନକ୍ଷତ୍ର _____ : ମଘା
 ଯୋଗ _____ : ବିଷକୁମ୍ଭ
 କରଣ _____ : ବଦ
 ପ୍ରହର _____ : 1
 ବର୍ଗ _____ : ସିଂହ
 ଲଗ୍ନ _____ : ମେଷ
 ସୂର୍ଯ୍ୟ _____ : କର୍କଟ
 ଚନ୍ଦ୍ର _____ : ମେଷ
 ମଙ୍ଗଳ _____ : ସିଂହ
 ବୁଧ _____ : ବୃଷ
 ଗୁରୁ _____ : କନ୍ୟା
 ଶୁକ୍ର _____ : ତୁଳା
 ଶନି _____ : ମିଥୁନ
 ରାହୁ _____ : ବିଛା

ଓମ୍ ନୁଷ୍ଟା



ଲଗ୍ନ ଜୁଷ୍ଟିଫିକାସନ୍ ଦିନ

ଲଗ୍ନ ଲଗ୍ନ

| | | | |
|------------------|--------|--|----|
| ରା ଲଗ୍ନ ମୃ | ମ ବ | | |
| ମୃ ମ | | | |
| ମୃ | | | |
| | ଶ | | କେ |

ଲଗ୍ନ ଲଗ୍ନ

| | | | |
|----|--------|------------------|---|
| | ମ ବ | ରା ଲଗ୍ନ ମୃ | |
| | | ମୃ ମ | |
| | | ମୃ | |
| କେ | | ଶ | ଶ |

ବିଂଶୋତ୍ତରୀ
ଶୁକ୍ର 5ବର୍ଷ 4ମାସ 13ଦିନ
ଶୁକ୍ର

05/03/1987
17/07/2092

| | |
|---------|------------|
| ଶୁକ୍ର | 17/07/1992 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 18/07/1998 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 17/07/2008 |
| ମଙ୍ଗଳ | 18/07/2015 |
| ରାହୁ | 17/07/2033 |
| ଗୁରୁ | 17/07/2049 |
| ଶନି | 17/07/2068 |
| ବୁଧ | 17/07/2085 |
| କେତୁ | 17/07/2092 |

ଘୋଷିନୀ
ଭଦ୍ରକା 1ବର୍ଷ 4ମାସ 3ଦିନ
ଭଦ୍ରକା

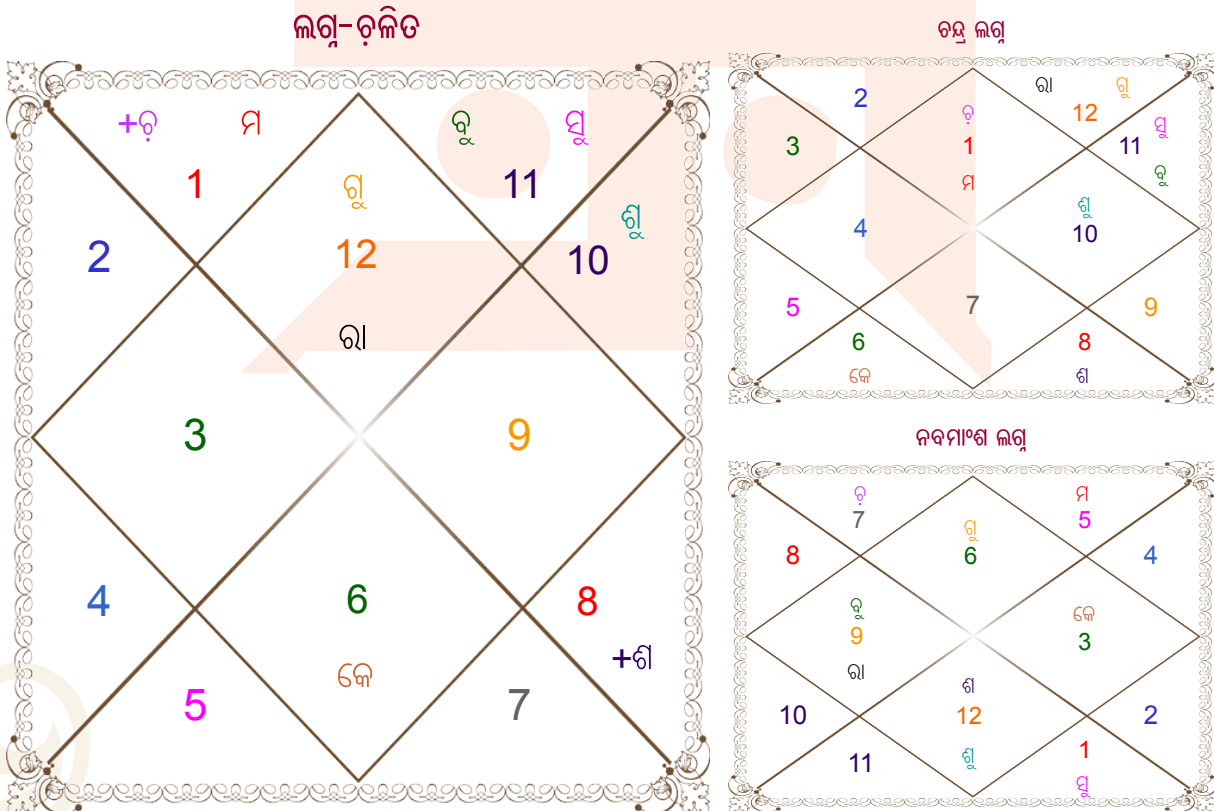
08/07/2019
07/07/2024

| | |
|---------|------------|
| ଭଦ୍ରକା | 18/03/2020 |
| ଭଲ୍ଲୀ | 16/01/2021 |
| ସିଦ୍ଧା | 06/01/2022 |
| ସଙ୍କରା | 16/02/2023 |
| ମଙ୍ଗଳା | 08/04/2023 |
| ପିଙ୍ଗଳା | 18/07/2023 |
| ଧାନ୍ୟା | 17/12/2023 |
| ଭ୍ରାମରୀ | 07/07/2024 |

ଗ୍ରହ କ୍ଷୟ ତଥା ତାହାର କ୍ଷତି

| ଗ୍ରହ | ବ | ଅ | ରାଶି | ଅଂଶ | ଗତି | ନକ୍ଷତ୍ର | ପଦ | ମଗ. | ରା | ନ | ଅଂଶ | କ୍ଷତି |
|---------|---|---|-------|----------|-----------|-------------|----|-----|-------|---------|-------|------------|
| ଲଗ୍ନ | | | ମୀନ | 07:42:26 | 461:48:07 | ଭ.ଭାଦ୍ରପଦ | 2 | 26 | ଗୁରୁ | ଶନି | କେତୁ | --- |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | | | କୁମ୍ଭ | 20:16:24 | 01:00:08 | ପୁ.ଭାଦ୍ରପଦ | 1 | 25 | ଶନି | ଗୁରୁ | ଗୁରୁ | ଶତ୍ରୁ ରାଶି |
| ଚନ୍ଦ୍ର | | | ମେଷ | 23:05:13 | 12:31:19 | ଭରଣୀ | 3 | 2 | ମଙ୍ଗଳ | ଶୁକ୍ର | ଶନି | ସମ ରାଶି |
| ମଙ୍ଗଳ | | | ମେଷ | 14:53:27 | 00:41:07 | ଭରଣୀ | 1 | 2 | ମଙ୍ଗଳ | ଶୁକ୍ର | ଶୁକ୍ର | ନିଜ ରାଶି |
| ବୁଧ | ବ | ଅ | କୁମ୍ଭ | 09:35:27 | 00:50:10 | ଶତଭିଷା | 1 | 24 | ଶନି | ରାହୁ | ଗୁରୁ | ସମ ରାଶି |
| ଗୁରୁ | | | ମୀନ | 06:52:00 | 00:14:15 | ଭ.ଭାଦ୍ରପଦ | 2 | 26 | ଗୁରୁ | ଶନି | ବୁଧ | ନିଜ ରାଶି |
| ଶୁକ୍ର | | | ମକର | 08:21:49 | 01:10:19 | ଉତ୍ତରାଷାଢ଼ା | 4 | 21 | ଶନି | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଶୁକ୍ର | ମିତ୍ର ରାଶି |
| ଶନି | | | ବିଛା | 26:55:11 | 00:02:34 | ଜ୍ୟେଷ୍ଠା | 4 | 18 | ମଙ୍ଗଳ | ବୁଧ | ଗୁରୁ | ଶତ୍ରୁ ରାଶି |
| ରାହୁ | | | ମୀନ | 18:06:07 | 00:01:49 | ରେବତୀ | 1 | 27 | ଗୁରୁ | ବୁଧ | ବୁଧ | ସମ ରାଶି |
| କେତୁ | | | କନ୍ୟା | 18:06:07 | 00:01:49 | ହସ୍ତ | 3 | 13 | ବୁଧ | ଚନ୍ଦ୍ର | ବୁଧ | ଶତ୍ରୁ ରାଶି |
| ପୁରେ. | | | ଧନୁ | 02:43:48 | 00:01:24 | ମୂଳା | 1 | 19 | ଗୁରୁ | କେତୁ | ଶୁକ୍ର | --- |
| ନେପ. | | | ଧନୁ | 13:58:12 | 00:01:10 | ପୂର୍ବାଷାଢ଼ା | 1 | 20 | ଗୁରୁ | ଶୁକ୍ର | ଶୁକ୍ର | --- |
| ପୁଟୋ. | ବ | | ତୁଳା | 16:09:53 | 00:00:44 | ସ୍ୱାତି | 3 | 15 | ଶୁକ୍ର | ରାହୁ | ଶୁକ୍ର | --- |
| ଦଶମ | | | ଧନୁ | 07:18:56 | -- | ମୂଳା | -- | 19 | ଗୁରୁ | କେତୁ | ରାହୁ | -- |

ବ - ବକ୍ରୀ ସ - କ୍ଷିର
 ଅ - ଅକ୍ଷ ପୁ - ପୂର୍ଣ୍ଣ ଅକ୍ଷ
 ରାହୁ : କ୍ଷୟ
 ବିକ୍ରମଣ ଅୟନାଂଶ : 23:40:37



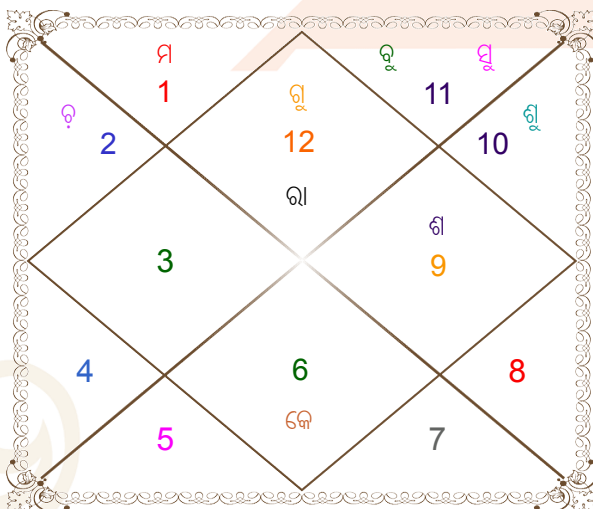
ଚଳିତ ତଥା ନିରୟଣ ଭାବ ଚଳିତ

| ଚଳିତ ଅଂଶ | | | | ନିରୟଣ ଭାବ ଚଳିତ | | | |
|----------|----------------|----------------|-----|----------------|----------|--|--|
| ଭାବ | ଭାବ ସନ୍ଧି | ଭାବ ମଧ୍ୟ | ଭାବ | ରାଶି | ଅଂଶ | | |
| 1 | କୁମ୍ଭ 22:38:31 | ମୀନ 07:42:26 | 1 | ମୀନ | 07:42:26 | | |
| 2 | ମୀନ 22:38:31 | ମେଷ 07:34:36 | 2 | ମେଷ | 12:55:36 | | |
| 3 | ମେଷ 22:30:41 | ବୃଷ 07:26:46 | 3 | ବୃଷ | 11:51:35 | | |
| 4 | ବୃଷ 22:22:51 | ମିଥୁନ 07:18:56 | 4 | ମିଥୁନ | 07:18:56 | | |
| 5 | ମିଥୁନ 22:22:51 | କର୍କଟ 07:26:46 | 5 | କର୍କଟ | 02:53:22 | | |
| 6 | କର୍କଟ 22:30:41 | ସିଂହ 07:34:36 | 6 | ସିଂହ | 02:09:19 | | |
| 7 | ସିଂହ 22:38:31 | କନ୍ୟା 07:42:26 | 7 | କନ୍ୟା | 07:42:26 | | |
| 8 | କନ୍ୟା 22:38:31 | ତୁଳା 07:34:36 | 8 | ତୁଳା | 12:55:36 | | |
| 9 | ତୁଳା 22:30:41 | ବିଛା 07:26:46 | 9 | ବିଛା | 11:51:35 | | |
| 10 | ବିଛା 22:22:51 | ଧନୁ 07:18:56 | 10 | ଧନୁ | 07:18:56 | | |
| 11 | ଧନୁ 22:22:51 | ମକର 07:26:46 | 11 | ମକର | 02:53:22 | | |
| 12 | ମକର 22:30:41 | କୁମ୍ଭ 07:34:36 | 12 | କୁମ୍ଭ | 02:09:19 | | |

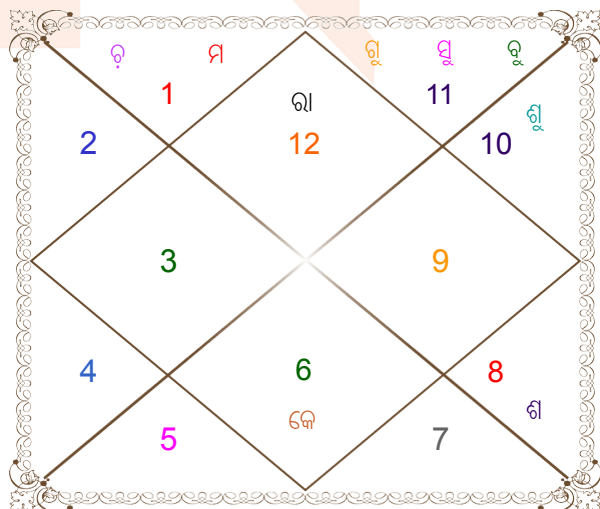
ତାରା ଚକ୍ର

| ଜନ୍ମ | ସଦ | ବିପଦ | କ୍ଷେମ | ପ୍ରତ୍ୟାରି | ସାଧକ | ବନ୍ଧ | ମିତ୍ର | ଅତିମିତ୍ର |
|-------------|-------------|--------|---------|-----------|------------|-----------|----------|----------|
| ଭରଣୀ | କୃତ୍ତିକା | ରୋହିଣୀ | ମୃଗଶିରା | ଆର୍ଦ୍ରା | ପୂର୍ଣ୍ଣିମା | ପୁଷ୍ୟ | ଅଶ୍ୱିନୀ | ମଘା |
| ପୁ.ଫାଲଗୁନୀ | ଉ.ଫାଲଗୁନୀ | ହସ୍ତ | ଚିତ୍ରା | ସ୍ୱାତି | ବିଶାଖା | ଅନୁରାଧା | ଜ୍ୟେଷ୍ଠା | ମୂଳା |
| ପୂର୍ବାଷାଢ଼ା | ଉତ୍ତରାଷାଢ଼ା | ଶ୍ରବଣା | ଧନିଷ୍ଠା | ଶତଭିଷା | ପୁ.ଭାଦ୍ରପଦ | ଉ.ଭାଦ୍ରପଦ | ରେବତୀ | ଅଶ୍ୱିନୀ |

ଚଳିତ ଲଗ୍ନ



ଭାବ ଲଗ୍ନ



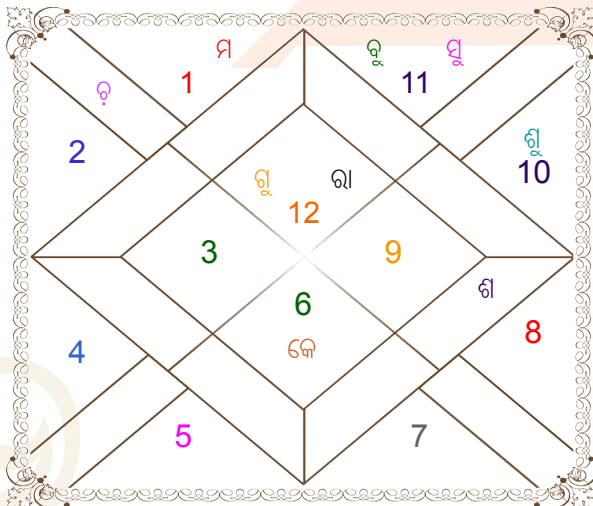
କାରକ ଅବକ୍ଷା ରଶ୍ମି

| ଗ୍ରହ | ----- କାରକ ----- | | | ----- ଅବକ୍ଷା ----- | | | ରଶ୍ମି | ଗ୍ରହ ବଳ |
|------------|------------------|--------|--------|--------------------|----------|--------------|-------|---------|
| | ଚର | କ୍ଷିର | ବାଳାଦି | ଦୀପ୍ତାଦି | ଶୟନାଦ | | | |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଭ୍ରାତୃ | ପିତୃ | ବୃହ | ଖଳ | କୌତୁଳ | 7.24 | 16 % | |
| ଚନ୍ଦ୍ର | ଆମାତ୍ୟ | ମାତୃ | ବୃହ | ଶାନ୍ତ | ଆଗମ | 4.25 | 73 % | |
| ମଙ୍ଗଳ | ମାତୃ | ଭ୍ରାତୃ | ପୁତ୍ରା | ସୁକ୍ଷ | ନୃତ୍ୟଲିଖ | 4.30 | 49 % | |
| ବୁଧ | ପୁତ୍ର | ଜ୍ଞାତି | କୁମାର | ବିକଳ | ପ୍ରକାଶ | 0.00 | 36 % | |
| ଗୁରୁ | କଳତ୍ର | ଧନ | ବୃହ | ସୁକ୍ଷ | ନୃତ୍ୟଲିଖ | 3.61 | 46 % | |
| ଶୁକ୍ର | ଜ୍ଞାତି | କଳତ୍ର | ବୃହ | ମୁଦିତ | ନୃତ୍ୟଲିଖ | 6.01 | 59 % | |
| ଶନି | ଆତ୍ମା | ଆତ୍ମ | ବାଳ | ଖଳ | ନୃତ୍ୟଲିଖ | 1.59 | 42 % | |
| ରାହୁ | --- | ଜ୍ଞାନ | କୁମାର | ନିପୀଡ଼ିତ | ପ୍ରକାଶ | 0.00 | 30 % | |
| କେତୁ | --- | ମୋକ୍ଷ | କୁମାର | ଖଳ | ନୃତ୍ୟଲିଖ | 0.00 | 30 % | |
| ମୋଟ | | | | | | 26.99 | | |

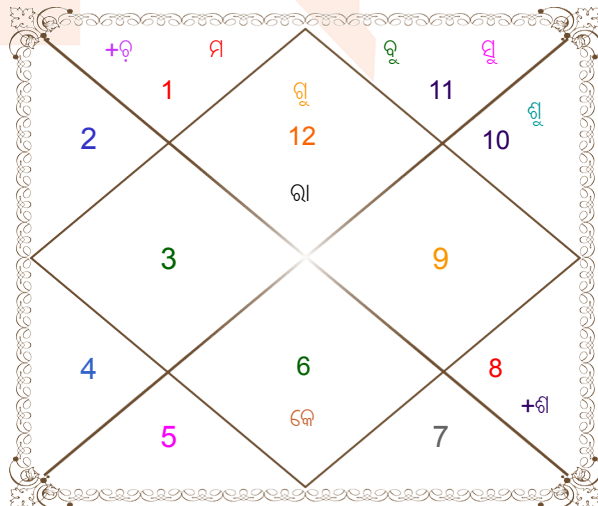
ତାରା ବୃକ୍ତ

| ଜନ୍ମ | ସଦ | ବିପଦ | କ୍ଷେମ | ପ୍ରତ୍ୟର୍ | ସାଧକ | ବନ୍ଧ | ମିତ୍ର | ଅତିମିତ୍ର |
|-------------|-------------|--------|---------|----------|------------|-----------|----------|----------|
| ଭରଣୀ | କୃତ୍ତିକା | ରୋହିଣୀ | ମୃଗଶିରା | ଆର୍ଦ୍ରା | ପୂର୍ଣ୍ଣିମା | ପୁଷ୍ୟ | ଅଶ୍ଳେଷା | ମଘା |
| ପୁଂଘାଲଗୁନୀ | ଉଂଘାଲଗୁନୀ | ହସ୍ତ | ଚିତ୍ରା | ସ୍ୱାତି | ବିଶାଖା | ଅନୁରାଧା | ଜ୍ୟେଷ୍ଠା | ମୂଳା |
| ପୂର୍ବାଷାଢ଼ା | ଉତ୍ତରାଷାଢ଼ା | ଶ୍ରବଣା | ଧନିଷ୍ଠା | ଶତଭିଷା | ପୁ.ଭାଦ୍ରପଦ | ଉ.ଭାଦ୍ରପଦ | ରେବତୀ | ଅଶ୍ୱିନୀ |

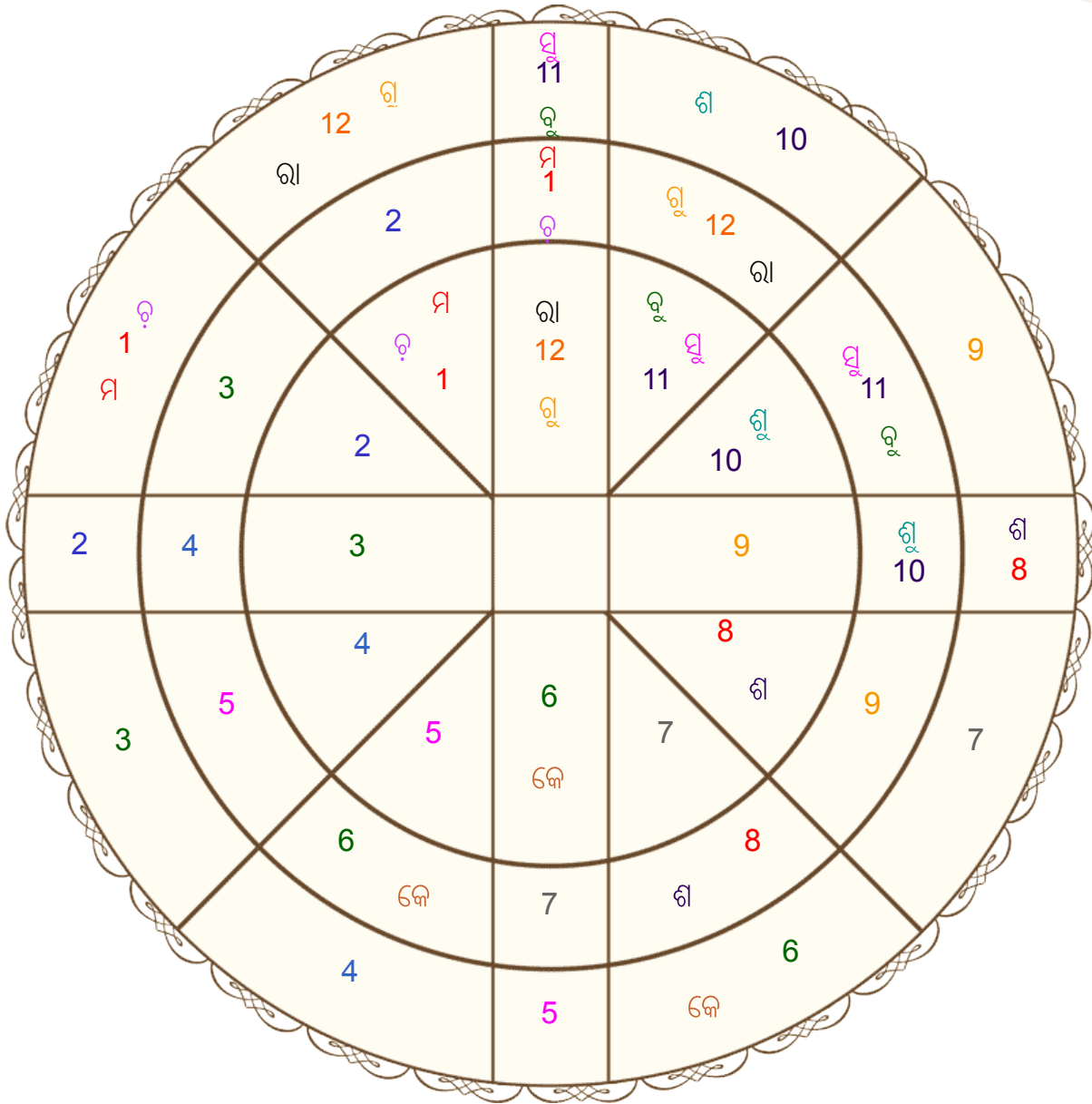
ବୃକ୍ତି ଲଗ୍ନ



ଲଗ୍ନ-ବୃକ୍ତି



ସୁଦର୍ଶନ ଚକ୍ର



ନୋଟ : ସୁଦର୍ଶନ ଚକ୍ର କ୍ରମାନୁସାରେ ବାହର ଚୁଡ଼ ରୁ ଅନ୍ତଃ ଚୁଡ଼ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ରବି ଚନ୍ଦ୍ର ଏବଂ ଜନ୍ମ ଜାତକରେ ଗ୍ରହ ର ତୁଳନାତୁଳ୍ୟ ସ୍ଥିତି ଦର୍ଶାଇଛି କୌଣସି ଭାବର ବିଚାର କରିବା ପାଇଁ ସେହି ଭାବ କୁ ପ୍ରକଟ କରିବା ପାଇଁ ତିନି ରାଶିର ବିଚାର କରିବା ଉଚିତ ।

କୃଷ୍ଣମୂର୍ତ୍ତି ପଞ୍ଜତି

ଭୋଗ୍ୟ ଦଶା କାଳ : ଶୁକ୍ର 5 ବର୍ଷ 4 ମାସ 13 ଦିନ

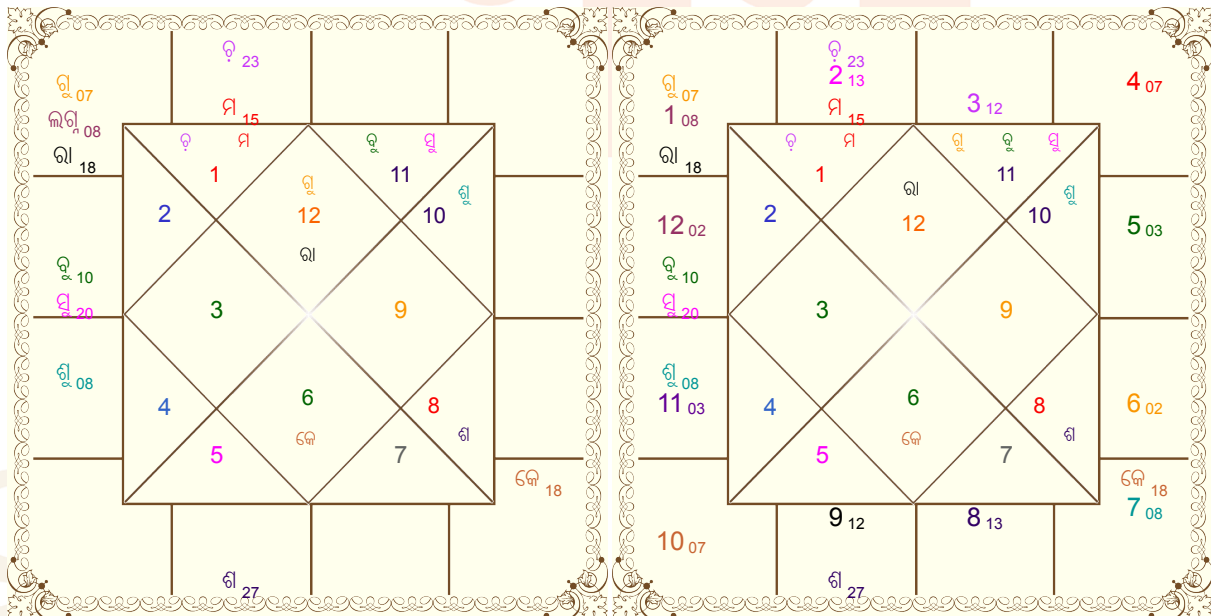
| ଗ୍ରହ | | | | | | ନିରୟଣ ଭାବ | | | | | | | | |
|---------|-------|----------|----------|---------|-------|-----------|---------|-------|----------|---------|---------|--------|--------|---------|
| ଗ୍ରହ | ବ | ରାଶି | ଅଂଶ | ରା | ନ | ଅଂ | ପ୍ରତ୍ୟଂ | ଭାବ | ରାଶି | ଅଂଶ | ରା | ନ | ଅଂ | ପ୍ରତ୍ୟଂ |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | କୁମ୍ଭ | 20:16:24 | ଶନି | ଗୁରୁ | ଗୁରୁ | ଶନି | 1 | ମୀନ | 07:42:26 | ଗୁରୁ | ଶନି | କେତୁ | ରାହୁ | |
| ଚନ୍ଦ୍ର | ମେଷ | 23:05:13 | ମଙ୍ଗଳ | ଶୁକ୍ର | ଶନି | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 2 | ମେଷ | 12:56:22 | ମଙ୍ଗଳ | କେତୁ | ରୁଧି | ଗୁରୁ | |
| ମଙ୍ଗଳ | ମେଷ | 14:53:27 | ମଙ୍ଗଳ | ଶୁକ୍ର | ଶୁକ୍ର | ଶନି | 3 | ବୃଷ | 11:53:05 | ଶୁକ୍ର | ଚନ୍ଦ୍ର | ମଙ୍ଗଳ | ଚନ୍ଦ୍ର | |
| ବୁଧ | କୁମ୍ଭ | 09:35:27 | ଶନି | ରାହୁ | ଗୁରୁ | ଶୁକ୍ର | 4 | ମିଥୁନ | 07:20:40 | ରୁଧି | ରାହୁ | ରାହୁ | ଶନି | |
| ଗୁରୁ | ମୀନ | 06:52:00 | ଗୁରୁ | ଶନି | ରୁଧି | ଗୁରୁ | 5 | କର୍କଟ | 02:54:49 | ଚନ୍ଦ୍ର | ଗୁରୁ | ରାହୁ | ଶୁକ୍ର | |
| ଶୁକ୍ର | ମକର | 08:21:49 | ଶନି | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଶୁକ୍ର | ଚନ୍ଦ୍ର | 6 | ସିଂହ | 02:10:01 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | କେତୁ | ଶୁକ୍ର | ଗୁରୁ | |
| ଶନି | ବିଛା | 26:55:11 | ମଙ୍ଗଳ | ରୁଧି | ଗୁରୁ | କେତୁ | 7 | କନ୍ୟା | 07:42:26 | ରୁଧି | ସୂର୍ଯ୍ୟ | କେତୁ | ରୁଧି | |
| ରାହୁ | ମୀନ | 18:06:07 | ଗୁରୁ | ରୁଧି | ରୁଧି | ଗୁରୁ | 8 | ତୁଳା | 12:56:22 | ଶୁକ୍ର | ରାହୁ | ରୁଧି | ଶୁକ୍ର | |
| କେତୁ | କନ୍ୟା | 18:06:07 | ରୁଧି | ଚନ୍ଦ୍ର | ରୁଧି | କେତୁ | 9 | ବିଛା | 11:53:05 | ମଙ୍ଗଳ | ଶନି | ଚନ୍ଦ୍ର | ଶୁକ୍ର | |
| ପୁରୁ. | ଧନୁ | 02:43:48 | ଗୁରୁ | କେତୁ | ଶୁକ୍ର | ରୁଧି | 10 | ଧନୁ | 07:20:40 | ଗୁରୁ | କେତୁ | ରାହୁ | ଚନ୍ଦ୍ର | |
| ନେପ. | ଧନୁ | 13:58:12 | ଗୁରୁ | ଶୁକ୍ର | ଶୁକ୍ର | ଚନ୍ଦ୍ର | 11 | ମକର | 02:54:49 | ଶନି | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଗୁରୁ | ରାହୁ | |
| ପୁଟୋ | ବ | ତୁଳା | 16:09:53 | ଶୁକ୍ର | ରାହୁ | ଶୁକ୍ର | 12 | କୁମ୍ଭ | 02:10:01 | ଶନି | ମଙ୍ଗଳ | କେତୁ | ଚନ୍ଦ୍ର | |

କେ.ପୀ. ଅୟନାଂଶ : 23:34:29

ଫେରଭୂମିକା : ବୃଷ 10:31:15

ଲଗ୍ନ ଲଗ୍ନ

ଭାବ ଲଗ୍ନ



କାରକତ୍ର ୪୧° ସ୍ଵାମିତ୍ର

ଭାବ କାରକ

| ଭାବ | ଗ୍ରହ |
|-----|---------------------------------------|
| 1 | ସୂର୍ଯ୍ୟ- ବୁଧ, ଗୁରୁ- ରାହୁ, |
| 2 | ଚନ୍ଦ୍ର, ମଙ୍ଗଳ, କେତୁ, |
| 3 | ଚନ୍ଦ୍ର- ମଙ୍ଗଳ- ଶୁକ୍ର- |
| 4 | ବୁଧ- ଶନି- ରାହୁ- |
| 5 | ଚନ୍ଦ୍ର- କେତୁ- |
| 6 | ସୂର୍ଯ୍ୟ- ଶୁକ୍ର- |
| 7 | ବୁଧ- ଶନି- ରାହୁ- କେତୁ, |
| 8 | ଚନ୍ଦ୍ର- ମଙ୍ଗଳ- ଶୁକ୍ର- |
| 9 | ମଙ୍ଗଳ- ଗୁରୁ, ଶନି, |
| 10 | ସୂର୍ଯ୍ୟ- ଗୁରୁ- |
| 11 | ଚନ୍ଦ୍ର, ମଙ୍ଗଳ, ଗୁରୁ- ଶୁକ୍ର, ଶନି- |
| 12 | ସୂର୍ଯ୍ୟ+ ବୁଧ, ଗୁରୁ+ ଶୁକ୍ର, ଶନି+ ରାହୁ, |

ଗ୍ରହ କାରକତ୍ର

| ଗ୍ରହ | ଭାବ |
|---------|-------------------|
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 1- 6- 10- 12+ |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 2, 3- 5- 8- 11, |
| ମଙ୍ଗଳ | 2, 3- 8- 9- 11, |
| ବୁଧ | 1, 4- 7- 12, |
| ଗୁରୁ | 1- 9, 10- 11- 12+ |
| ଶୁକ୍ର | 3- 6- 8- 11, 12, |
| ଶନି | 4- 7- 9, 11- 12+ |
| ରାହୁ | 1, 4- 7- 12, |
| କେତୁ | 2, 5- 7, |

ସ୍ଵାମିତ୍ର

| | |
|---------------------|-------|
| ଲଗ୍ନ ନକ୍ଷତ୍ର ସ୍ଵାମୀ | ଶନି |
| ଲଗ୍ନ ରାଶି ସ୍ଵାମୀ | ଗୁରୁ |
| ରାଶି ନକ୍ଷତ୍ର ସ୍ଵାମୀ | ଶୁକ୍ର |
| ରାଶି ସ୍ଵାମୀ | ମଙ୍ଗଳ |
| ବାର ସ୍ଵାମୀ | ଗୁରୁ |
| ଲଗ୍ନ ଅକ୍ତର ସ୍ଵାମୀ | କେତୁ |
| ରାଶି ଅକ୍ତର ସ୍ଵାମୀ | ଶନି |

କାରକତ୍ୱ-ସାରଣୀ

| ଭାବ | ଧିବା ଗ୍ରହର ନକ୍ଷତ୍ର ରେ | ଧିବା ଗ୍ରହ | ସ୍ୱାମୀର ନକ୍ଷତ୍ର ରେ | ସ୍ୱାମୀ |
|-----|-----------------------|-----------|--------------------|--------|
| 1 | କୁ | ରା | ସୁ | ଶୁ |
| 2 | କେ | ଚ ମ | -- | ମ |
| 3 | -- | -- | ଚ ମ | ଶୁ |
| 4 | -- | -- | ଶ ରା | କୃ |
| 5 | -- | -- | କେ | ଚ |
| 6 | -- | -- | ଶୁ | ସୁ |
| 7 | -- | କେ | ଶ ରା | କୃ |
| 8 | -- | -- | ଚ ମ | ଶୁ |
| 9 | ଶୁ | ଶ | -- | ମ |
| 10 | -- | -- | ସୁ | ଶୁ |
| 11 | ଚ ମ | ଶୁ | ଶୁ | ଶ |
| 12 | ସୁ ଶୁ ଶ ରା | ସୁ ଚୁ ଶୁ | ଶୁ | ଶ |

ଗ୍ରହ କାରକ ସାରଣୀ-୧

| ଗ୍ରହ | ଭାବାଧିପତି | ନକ୍ଷତ୍ରାଧିପତି | ଛିତ | ଭାବ |
|---------|-----------|---------------|-------|-----|
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 6 | 7,11 | କୁମ୍ଭ | 12 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 5 | 3 | ମେଷ | 2 |
| ମଙ୍ଗଳ | 2,9 | 12 | ମେଷ | 2 |
| ବୁଧ | 4,7 | --- | କୁମ୍ଭ | 12 |
| ଗୁରୁ | 1,10 | 5 | ମୀନ | 12 |
| ଶୁକ୍ର | 3,8 | --- | ମକର | 11 |
| ଶନି | 11,12 | 1,9 | ବିଛା | 9 |
| ରାହୁ | --- | 4,8 | ମୀନ | 1 |
| କେତୁ | --- | 2,6,10 | କନ୍ୟା | 7 |

ଗ୍ରହ କାରକ ସାରଣୀ-୨

| ଗ୍ରହ | ଭାବାଧି ଭାବ | ନକ୍ଷତ୍ରାଧି ଭାବ | ଧିବା ଭାବ | ସ୍ୱାମିତ୍ୱ | ଅନ୍ତର ସ୍ୱାମୀ | ଧିବା ଭାବ |
|---------|---------------|-------------------|-------------|-----------|-----------------|-------------|
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 1,10 | 5 | 12 | 1,10 | 5 | 12 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 3,8 | --- | 11 | 11,12 | 1,9 | 9 |
| ମଙ୍ଗଳ | 3,8 | --- | 11 | 3,8 | --- | 11 |
| ବୁଧ | --- | 4,8 | 1 | 1,10 | 5 | 12 |
| ଗୁରୁ | 11,12 | 1,9 | 9 | 4,7 | --- | 12 |
| ଶୁକ୍ର | 6 | 7,11 | 12 | 3,8 | --- | 11 |
| ଶନି | 4,7 | --- | 12 | 1,10 | 5 | 12 |
| ରାହୁ | 4,7 | --- | 12 | 4,7 | --- | 12 |
| କେତୁ | 5 | 3 | 2 | 4,7 | --- | 12 |

ଗ୍ରହ ଦୃଷ୍ଟି ବିଚାର

ଦୃଶ୍ୟ ଗ୍ରହ

| | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଚନ୍ଦ୍ର | ମଙ୍ଗଳ | ବୁଧ | ଗୁରୁ | ଶୁକ୍ର | ଶନି | ରାହୁ | କେତୁ | ପୁରୁ. | ନେପ. | ପୁଣେ |
|---------|---------|--------|-------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|
| | 320.27 | 23.09 | 14.89 | 309.59 | 336.87 | 278.36 | 236.92 | 348.10 | 168.10 | 242.73 | 253.97 | 196.16 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | -- | ତୃତୀ | ତୃତୀ | ସୂଚି | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| 320.27 | 0.00 | 2.22 | 0.48 | 4.37 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | -- | -- | ସୂଚି | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | ସପ୍ତ |
| 23.09 | 0.00 | 0.00 | 6.54 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 7.49 |
| ମଙ୍ଗଳ | -- | ସୂଚି | -- | -- | -- | -- | ଅଷ୍ଟ | -- | -- | -- | -- | ସପ୍ତ |
| 14.89 | 0.00 | 6.54 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 3.06 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 9.91 |
| ବୁଧ | ସୂଚି | -- | ତୃତୀ | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| 309.59 | 4.37 | 0.00 | 0.55 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| ଗୁରୁ | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | ସୂଚି | ସପ୍ତ | -- | -- | -- |
| 336.87 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 3.84 | 3.84 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| ଶୁକ୍ର | -- | -- | -- | -- | ତୃତୀ | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| 278.36 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 2.77 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| ଶନି | -- | -- | -- | ତୃତୀ | -- | -- | -- | -- | -- | ସୂଚି | -- | -- |
| 236.92 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 2.41 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 8.21 | 0.00 | 0.00 |
| ରାହୁ | -- | -- | -- | -- | ସୂଚି | -- | -- | -- | ସପ୍ତ | -- | -- | -- |
| 348.10 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 3.84 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 10.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| କେତୁ | -- | -- | -- | -- | ସପ୍ତ | -- | -- | ସପ୍ତ | -- | -- | ତୃତୀ | -- |
| 168.10 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 3.84 | 0.00 | 0.00 | 10.00 | 0.00 | 0.00 | 1.41 | 0.00 |
| ପୁରୁ. | -- | -- | -- | -- | ତୃତୀ | -- | ସୂଚି | -- | -- | -- | ସୂଚି | -- |
| 242.73 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 1.41 | 0.00 | 8.21 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 3.84 | 0.00 |
| ନେପ. | -- | -- | ପଞ୍ଚ | ତୃତୀ | -- | -- | -- | ତୃତୀ | -- | ସୂଚି | -- | -- |
| 253.97 | 0.00 | 0.00 | 2.91 | 1.24 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 1.41 | 0.00 | 3.84 | 0.00 | 0.00 |
| ପୁଣେ | ପଞ୍ଚ | ସପ୍ତ | ସପ୍ତ | -- | -- | -- | ନବ | -- | -- | -- | ତୃତୀ | -- |
| 196.16 | 1.43 | 7.49 | 9.91 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.38 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 2.52 | 0.00 |

୧. ଉପରୋକ୍ତ ଗଣନା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଦୃଷ୍ଟି ଏବଂ ମାନ ଦିଆଗଲା ।

| ସଂକ୍ଷିପ୍ତ - ଦୃଷ୍ଟି | ଅଂଶ | କାଳାଂଶ | ଅଙ୍କ | ସଂକ୍ଷିପ୍ତ - ଦୃଷ୍ଟି | ଅଂଶ | କାଳାଂଶ | ଅଙ୍କ |
|-----------------------|-----|--------|------|--------------------|-----|--------|------|
| ସୂଚି-ସୂଚି | 0 | 15 | 10 | ସପ୍ତ-ସପ୍ତମ | 180 | 15 | 10 |
| ପଞ୍ଚ-ପଞ୍ଚମ | 120 | 6 | 3 | ଚତୁଃ-ଚତୁଃର୍ଥୀ | 90 | 6 | 3 |
| ତୃତୀ-ତୃତୀୟା | 60 | 6 | 3 | ଅଷ୍ଟ-ଅଷ୍ଟମାଂଶ | 45 | 1 | 1 |
| ନବାଂ-ନବମାଂଶ | 40 | 1 | 1 | ପଞ୍ଚା-ପଞ୍ଚମାଂଶ | 72 | 1 | 1 |
| ଅଷ୍ଟାଂ-ଅଷ୍ଟଚତୁଃର୍ଥୀଂଶ | 135 | 1 | 1 | ଷଷ୍ଠ-ଷଷ୍ଠ | 150 | 1 | 1 |

ବିଶେଷ ଦୃଷ୍ଟି - ମଙ୍ଗଳ ର ଚତୁଃର୍ଥୀ ଏବଂ ଅଷ୍ଟମ, ଗୁରୁ ର ପଞ୍ଚମ ଏବଂ ନବମ ତଥା ଶନି ର ତୃତୀୟା ଏବଂ ଦଶମ ଦୃଷ୍ଟି କୁ କାଳାଂଶ ୧୫ ତଥା ଅଙ୍କ ୧୦ ମାନ ଦିଆ ଯାଇଛି ।

୨. ଉପରୋକ୍ତ ତାଲିକା ଦୃଷ୍ଟି ଏବଂ ଅଙ୍କ ଦର୍ଶାଇଛି । ଅଙ୍କର ଗଣନା ଗ୍ରହ ର ଦୃଷ୍ଟି ବିନ୍ଦୁ ଠାରୁ ନେଇ କୋଣ୍ୟା ସ୍ତରରେ କରା ଯାଇଛି ।

ଭାବ ମଧ୍ୟ ଦୃଷ୍ଟି ବିଚାର

ଦୃଶ୍ୟ ଭାବ

| | ୧ | ୨ | ୩ | ୪ | ୫ | ୬ | ୭ | ୮ | ୯ | ୧୦ | ୧୧ | ୧୨ |
|---------|---------------|-------------|--------------|--------------|--------------|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|---------------|
| | 337.71 | 7.58 | 37.45 | 67.32 | 97.45 | 127.58 | 157.71 | 187.58 | 217.45 | 247.32 | 277.45 | 307.58 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | -- | -- | -- | -- | -- | ସପ୍ତ | -- | -- | -- | -- | -- | ଶୁକ୍ର |
| 320.27 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 2.39 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 2.39 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | -- | -- | ଶୁକ୍ର | ଅକ୍ଷ | -- | -- | ଅକ୍ଷ | -- | ସପ୍ତ | -- | -- | -- |
| 23.09 | 0.00 | 0.00 | 0.67 | 0.35 | 0.00 | 0.00 | 0.83 | 0.00 | 0.67 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| ମଙ୍ଗଳ | -- | ଶୁକ୍ର | -- | -- | ବୃହ | -- | -- | ସପ୍ତ | ଅକ୍ଷ | -- | -- | -- |
| 14.89 | 0.00 | 7.21 | 0.00 | 0.00 | 7.11 | 0.00 | 0.00 | 7.21 | 7.11 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| ବୁଧ | -- | ବୃହ | ବୃହ | -- | -- | ସପ୍ତ | -- | -- | -- | -- | -- | ଶୁକ୍ର |
| 309.59 | 0.00 | 2.59 | 2.54 | 0.00 | 0.00 | 9.78 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 9.78 |
| ଗୁରୁ | ଶୁକ୍ର | -- | ବୃହ | ବୃହ | -- | କ୍ଷତ୍ର | ସପ୍ତ | -- | ନବ | -- | -- | -- |
| 336.87 | 9.96 | 0.00 | 2.97 | 2.98 | 0.00 | 0.44 | 9.96 | 0.00 | 9.98 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| ଶୁକ୍ର | ବୃହ | ବୃହ | ପଞ୍ଚ | -- | ସପ୍ତ | -- | -- | -- | -- | -- | ଶୁକ୍ର | -- |
| 278.36 | 2.96 | 2.94 | 2.91 | 0.00 | 9.95 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 9.95 | 0.00 |
| ଶନି | -- | -- | -- | ସପ୍ତ | -- | -- | -- | -- | -- | ଶୁକ୍ର | ନବ | ବୃହ |
| 236.92 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 4.64 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 4.64 | 0.68 | 4.39 |
| ରାହୁ | ଶୁକ୍ର | -- | -- | -- | -- | -- | ସପ୍ତ | -- | -- | -- | -- | -- |
| 348.10 | 4.64 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 4.64 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| କେତୁ | ସପ୍ତ | -- | -- | -- | -- | -- | ଶୁକ୍ର | -- | -- | -- | -- | -- |
| 168.10 | 4.64 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 4.64 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| ସ୍ୱରା. | ବୃହ | ପଞ୍ଚ | -- | ସପ୍ତ | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | ବୃହ |
| 242.73 | 0.79 | 0.89 | 0.00 | 8.87 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.89 |
| ନେପ. | -- | -- | -- | ସପ୍ତ | -- | -- | -- | -- | -- | ଶୁକ୍ର | -- | -- |
| 253.97 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 7.67 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 7.67 | 0.00 | 0.00 |
| ପୁଣ୍ୟ | -- | ସପ୍ତ | -- | -- | -- | -- | -- | ଶୁକ୍ର | -- | -- | -- | -- |
| 196.16 | 0.00 | 6.22 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 6.22 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |

୧. ଉପରୋକ୍ତ ଗଣନା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଦୃଷ୍ଟି ଏବଂ ମାନ ଦିଆଗଲା ।

| ସଂକ୍ଷିପ୍ତ - ଦୃଷ୍ଟି | ଅଂଶ | କାଳାଂଶ | ଅଙ୍କ | ସଂକ୍ଷିପ୍ତ - ଦୃଷ୍ଟି | ଅଂଶ | କାଳାଂଶ | ଅଙ୍କ |
|--------------------|-----|--------|------|--------------------|-----|--------|------|
| ଶୁକ୍ର-ଶୁକ୍ର | 0 | 15 | 10 | ସପ୍ତ-ସପ୍ତମ | 180 | 15 | 10 |
| ପଞ୍ଚ-ପଞ୍ଚମ | 120 | 6 | 3 | ବୃହ-ବୃହସ୍ପତି | 90 | 6 | 3 |
| ବୃହ-ବୃହସ୍ପତି | 60 | 6 | 3 | ଅକ୍ଷ-ଅକ୍ଷମାଂଶ | 45 | 1 | 1 |
| ନବ-ନବମାଂଶ | 40 | 1 | 1 | ପଞ୍ଚା-ପଞ୍ଚମାଂଶ | 72 | 1 | 1 |
| ଅକ୍ଷ-ଅକ୍ଷରତ୍ୱାଂଶ | 135 | 1 | 1 | କ୍ଷତ୍ର-କ୍ଷତ୍ର | 150 | 1 | 1 |

ବିଶେଷ ଦୃଷ୍ଟି - ମଙ୍ଗଳ ର ବୃହସ୍ପତି ଏବଂ ଅକ୍ଷମ, ଗୁରୁ ର ପଞ୍ଚମ ଏବଂ ନବମ ତଥା ଶନି ର ବୃହସ୍ପତି ଏବଂ ଦଶମ ଦୃଷ୍ଟି କୁ କାଳାଂଶ ୧୫ ତଥା ଅଙ୍କ ୧୦ ମାନ ଦିଆ ଯାଇଛି ।

୨. ଉପରୋକ୍ତ ତାଲିକା ଦୃଷ୍ଟି ଏବଂ ଅଙ୍କ ଦର୍ଶାଇଛି । ଅଙ୍କର ଗଣନା ଗ୍ରହ ର ଦୃଷ୍ଟି ବିନ୍ଦୁ ଠାରୁ ନେଇ କୋଣ୍ୟା ସ୍ତରରେ କରା ଯାଇଛି ।

ଭାବ ଦୃଷ୍ଟି ବିଚାର

ଦୃଶ୍ୟ ଭାବ

| | ୧ | ୨ | ୩ | ୪ | ୫ | ୬ | ୭ | ୮ | ୯ | ୧୦ | ୧୧ | ୧୨ |
|---------|--------|--------|--------|-------|-------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|--------|
| | 337.71 | 12.93 | 41.86 | 67.32 | 92.89 | 122.16 | 157.71 | 192.93 | 221.86 | 247.32 | 272.89 | 302.16 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |
| 320.27 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | -- | -- | -- | ଅଷ୍ଟ | -- | -- | ଅଷ୍ଟ | ସପ୍ତ | -- | -- | -- | -- |
| 23.09 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.35 | 0.00 | 0.00 | 0.83 | 4.85 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| ମଙ୍ଗଳ | -- | ପୁଷ୍ଟି | -- | -- | ବୃତ୍ତ | -- | -- | ସପ୍ତ | ଅଷ୍ଟ | -- | -- | -- |
| 14.89 | 0.00 | 9.79 | 0.00 | 0.00 | 3.09 | 0.00 | 0.00 | 9.79 | 9.50 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| ବୁଧ | -- | ବୃତ୍ତୀ | ବୃତ୍ତ | -- | -- | ସପ୍ତ | -- | -- | -- | -- | -- | ପୁଷ୍ଟି |
| 309.59 | 0.00 | 1.93 | 2.49 | 0.00 | 0.00 | 7.12 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 7.12 |
| ଗୁରୁ | ପୁଷ୍ଟି | -- | ବୃତ୍ତୀ | ବୃତ୍ତ | -- | -- | ସପ୍ତ | -- | ନବ | -- | -- | -- |
| 336.87 | 9.96 | 0.00 | 0.78 | 2.98 | 0.00 | 0.00 | 9.96 | 0.00 | 8.66 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| ଶୁକ୍ର | ବୃତ୍ତୀ | ବୃତ୍ତ | ପଞ୍ଚ | -- | ସପ୍ତ | -- | -- | -- | -- | -- | ପୁଷ୍ଟି | -- |
| 278.36 | 2.96 | 1.10 | 1.83 | 0.00 | 8.40 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 8.40 | 0.00 |
| ଶନି | -- | -- | -- | ସପ୍ତ | -- | -- | -- | -- | -- | ପୁଷ୍ଟି | -- | ବୃତ୍ତୀ |
| 236.92 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 4.64 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 4.64 | 0.00 | 8.53 |
| ରାହୁ | ପୁଷ୍ଟି | -- | -- | -- | -- | ଅଷ୍ଟ | ସପ୍ତ | -- | -- | -- | -- | -- |
| 348.10 | 4.64 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.08 | 4.64 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |
| କେତୁ | ସପ୍ତ | -- | -- | -- | -- | -- | ପୁଷ୍ଟି | -- | -- | -- | -- | ଅଷ୍ଟ |
| 168.10 | 4.64 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 4.64 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.08 |
| ସୁର. | ବୃତ୍ତ | -- | -- | ସପ୍ତ | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | ବୃତ୍ତୀ |
| 242.73 | 0.79 | 0.00 | 0.00 | 8.87 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 2.97 |
| ନେପ. | -- | ପଞ୍ଚ | -- | ସପ୍ତ | -- | -- | -- | -- | -- | ପୁଷ୍ଟି | -- | -- |
| 253.97 | 0.00 | 2.89 | 0.00 | 7.67 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 7.67 | 0.00 | 0.00 |
| ପୁଣେ | -- | ସପ୍ତ | -- | -- | -- | -- | -- | ପୁଷ୍ଟି | -- | -- | -- | -- |
| 196.16 | 0.00 | 9.43 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 9.43 | 0.00 | 0.00 | 0.00 | 0.00 |

୧. ଉପରୋକ୍ତ ଗଣନା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଦୃଷ୍ଟି ଏବଂ ମାନ ଦିଆଗଲା ।

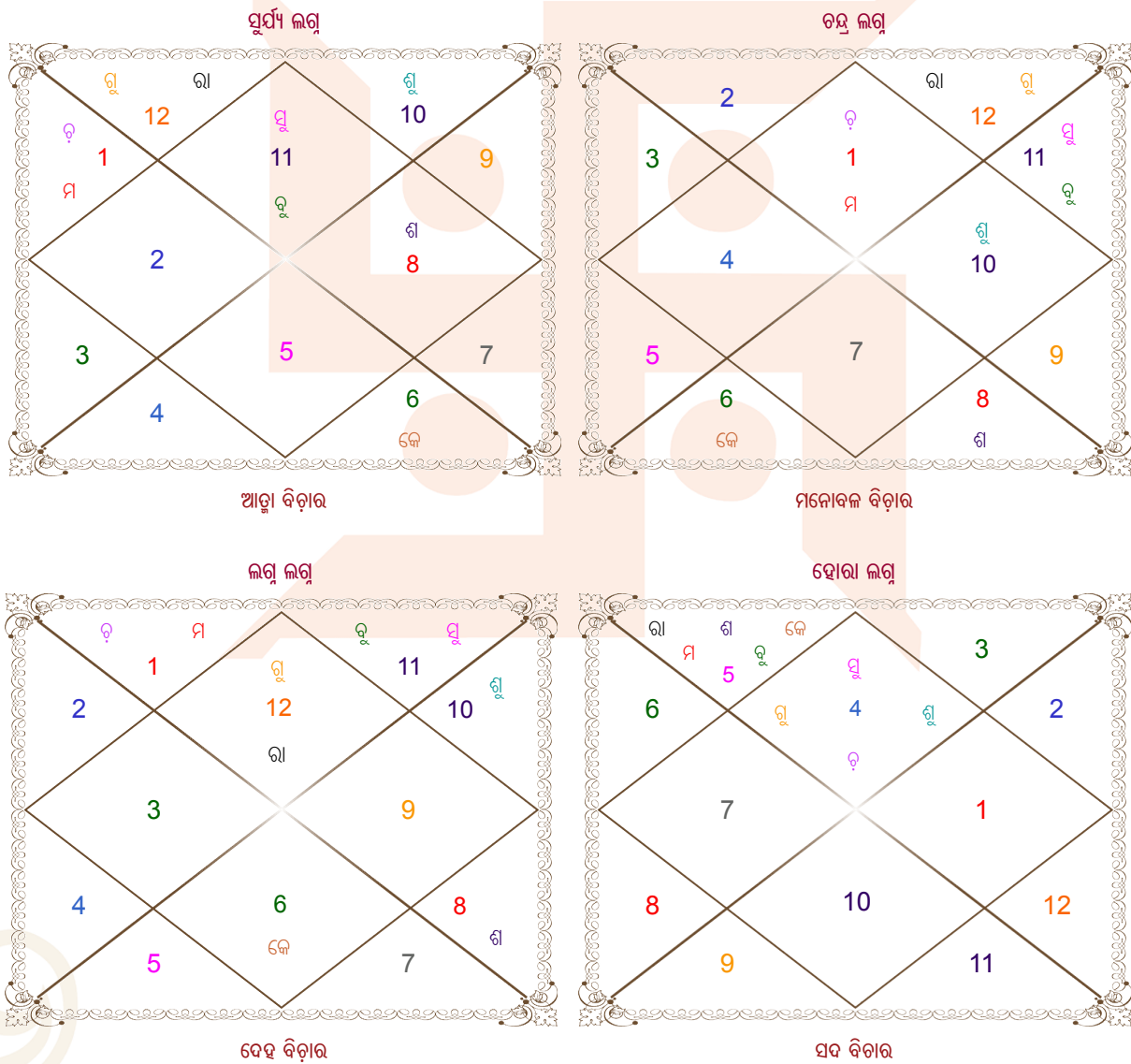
| ସଂକ୍ଷିପ୍ତ - ଦୃଷ୍ଟି | ଅଂଶ | କାଳାଂଶ | ଅଙ୍କ | ସଂକ୍ଷିପ୍ତ - ଦୃଷ୍ଟି | ଅଂଶ | କାଳାଂଶ | ଅଙ୍କ |
|----------------------|-----|--------|------|--------------------|-----|--------|------|
| ପୁଷ୍ଟି-ପୁଷ୍ଟି | 0 | 15 | 10 | ସପ୍ତ-ସପ୍ତମ | 180 | 15 | 10 |
| ପଞ୍ଚ-ପଞ୍ଚମ | 120 | 6 | 3 | ବୃତ୍ତ-ବୃତ୍ତୀ | 90 | 6 | 3 |
| ବୃତ୍ତ-ବୃତ୍ତୀ | 60 | 6 | 3 | ଅଷ୍ଟ-ଅଷ୍ଟମାଂଶ | 45 | 1 | 1 |
| ନବାଂ-ନବମାଂଶ | 40 | 1 | 1 | ପଞ୍ଚା-ପଞ୍ଚମାଂଶ | 72 | 1 | 1 |
| ଅଷ୍ଟାଂ-ଅଷ୍ଟରତ୍ତ୍ୱାଂଶ | 135 | 1 | 1 | ଷଷ୍ଠ-ଷଷ୍ଠ | 150 | 1 | 1 |

ବିଶେଷ ଦୃଷ୍ଟି - ମଙ୍ଗଳ ର ବୃତ୍ତୀ ଏବଂ ଅଷ୍ଟମ, ଗୁରୁ ର ପଞ୍ଚମ ଏବଂ ନବମ ତଥା ଶନି ର ବୃତ୍ତୀ ଏବଂ ଦଶମ ଦୃଷ୍ଟି କୁ କାଳାଂଶ ୧୫ ତଥା ଅଙ୍କ ୧୦ ମାନ ଦିଆ ଯାଇଛି ।

୨. ଉପରୋକ୍ତ ତାଲିକା ଦୃଷ୍ଟି ଏବଂ ଅଙ୍କ ଦର୍ଶାଇଛି । ଅଙ୍କର ଗଣନା ଗ୍ରହ ର ଦୃଷ୍ଟି ବିନ୍ଦୁ ଠାରୁ ନେଇ କୋଣ୍ୟା ସୁତ୍ରରେ କରା ଯାଇଛି ।

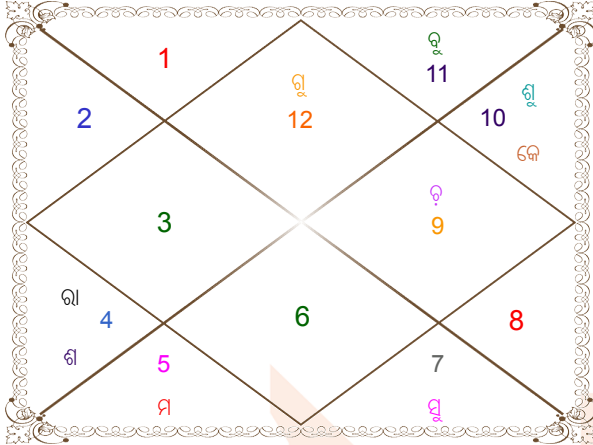
କ୍ଷୋଭଣାବର୍ଣ୍ଣ ଚକ୍ର

ବର୍ଣ୍ଣାୟ କୁଣ୍ଡଳୀ ଲଗ୍ନ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ବିସ୍ତାରିତ ରୂପ ଅଟେ । ପ୍ରତ୍ୟେକ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଏକ ବିଶେଷ ଲକ୍ଷ ଥାଏ, ଯାହା ନିମ୍ନ ଲଗ୍ନ କୁଣ୍ଡଳୀ ସହିତ ବର୍ଣ୍ଣନା କରାଯାଇ ଅଛି । ବିସ୍ତୃତ ଭାବେ ଜାଣିବା କୁ ଚାହିଁଲେ ଉକ୍ତ କୁଣ୍ଡଳୀ ଗୁଡ଼ିକ କେଉଁ ବିଷୟ ଉପରେ ପ୍ରତିନିଧିତ୍ୱ କରୁଅଛି ତା ସହିତ ମୂଳ ଲଗ୍ନ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ବିଚାର କରିବା ଉଚିତ । କିନ୍ତୁ ଉକ୍ତ କୁଣ୍ଡଳୀ କୁ ବିଶେଷ ଧ୍ୟାନର ସହିତ ଦେଖିବା ଉଚିତ । ସାମାନ୍ୟ ଭାବେ ଗ୍ରହ ଗୁଡ଼ିକ ର ଆଡ଼ରଣ ଉକ୍ତ ରାଶି କିମ୍ବା ମିତ୍ର ରାଶି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ସିମିତ ରହିଥାଏ ।

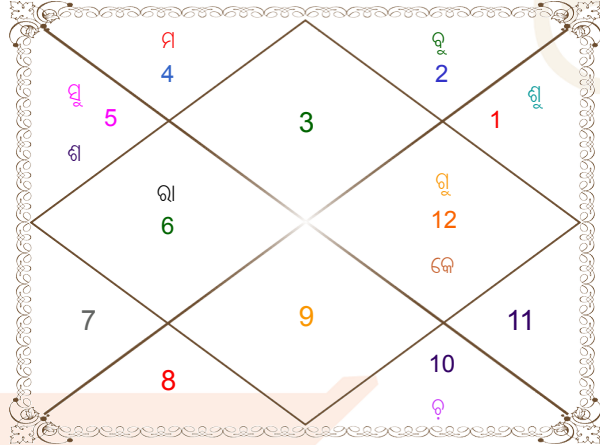


କ୍ଷୋଭଣାବର୍ଣ୍ଣ ଚକ୍ର

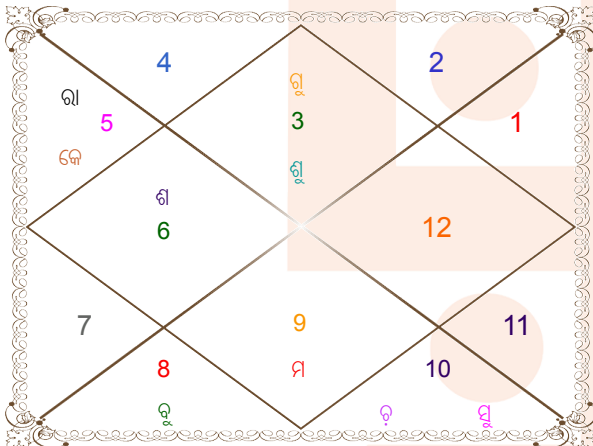
ଦ୍ଵେଷାଣ ଲଗ୍ନ



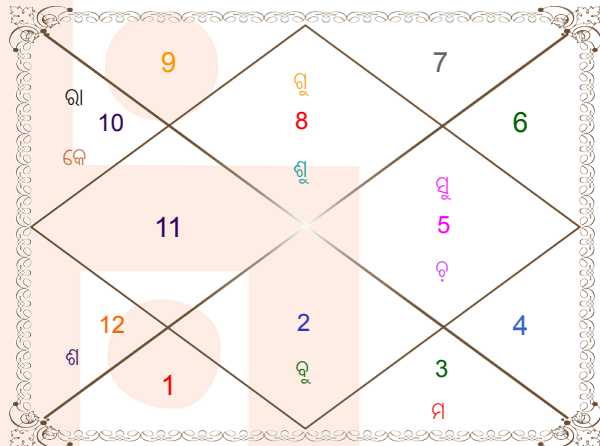
ବୃହସ୍ପତି ଲଗ୍ନ



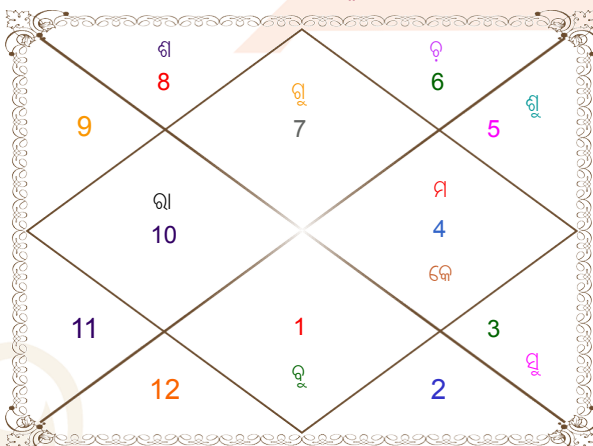
ଭାର୍ଗବୋଷ୍ୟମ ପଞ୍ଚମାଂଶ ଲଗ୍ନ



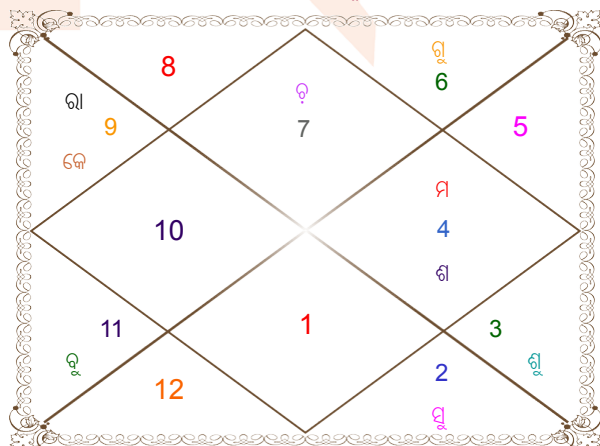
ଭାଗ୍ୟ ବିଚାର ସଂକ୍ଷାଣ ଲଗ୍ନ



ଜ୍ଞାନ ବିଚାର ସତ୍ୟମାଂଶ ଲଗ୍ନ



ରିପୁଜ୍ଞାନ ଅଷ୍ଟମାଂଶ ଲଗ୍ନ

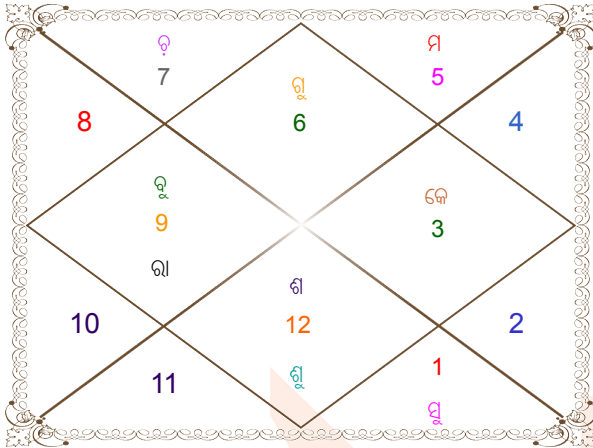


ପୁତ୍ରପୌତ୍ରବିଜ୍ଞାନ

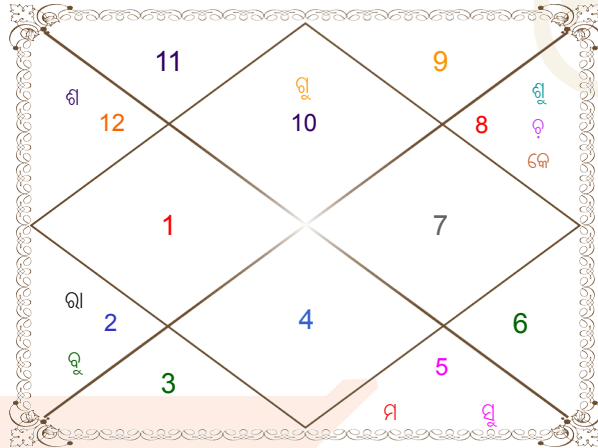
ଆୟୁ ବିଚାର

ଷୋଡଶବର୍ଗ ଚକ୍ର

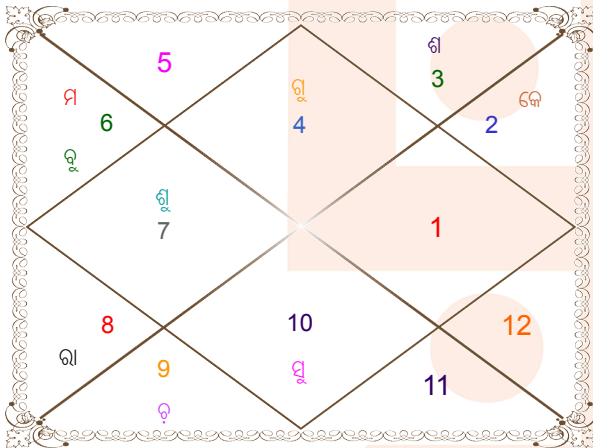
ନବମାଂଶ ଲଗ୍ନ



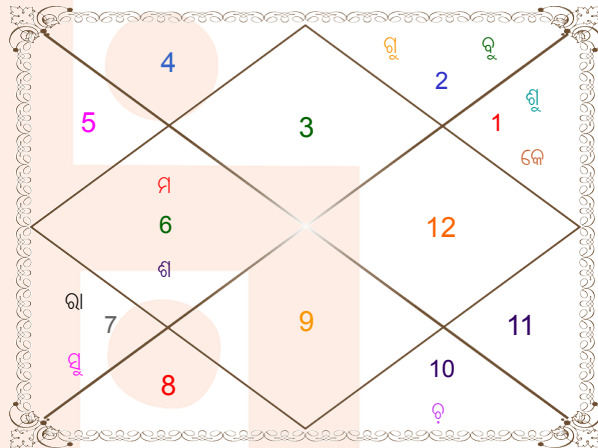
ଦଶମାଂଶ ଲଗ୍ନ



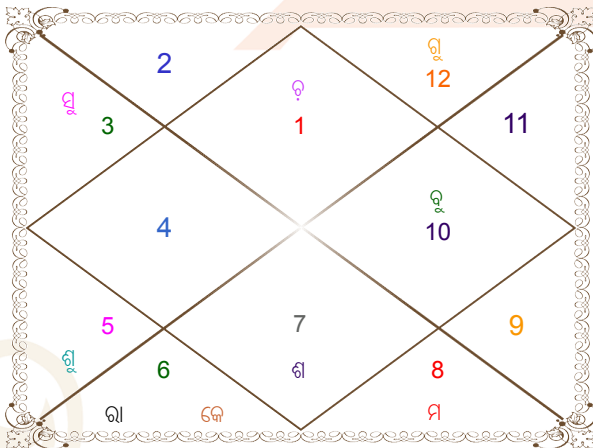
କଳତ୍ରଯୌଗ୍ୟମ୍
ଏକାଦଶାଂଶ ଲଗ୍ନ



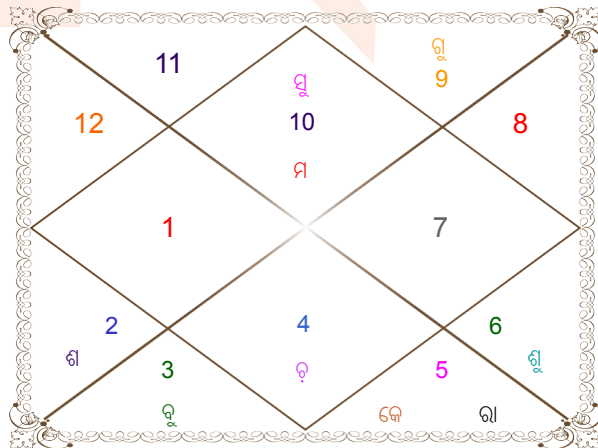
ରାଜ୍ୟ ବିଚାର
ଦ୍ଵାଦଶାଂଶ ଲଗ୍ନ



ଲାଭ ବିଚାର
ଷୋଡଶାଂଶ ଲଗ୍ନ



ପିତୃ ଯୌଗ୍ୟମ୍
ବିଂଶାଂଶ ଲଗ୍ନ

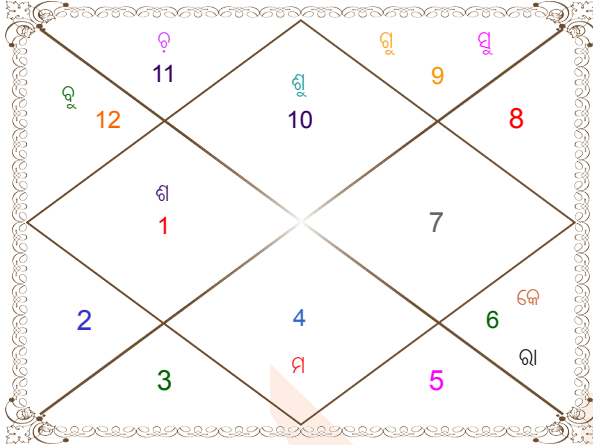


ବାହନ ସୁଖ ବିଚାର

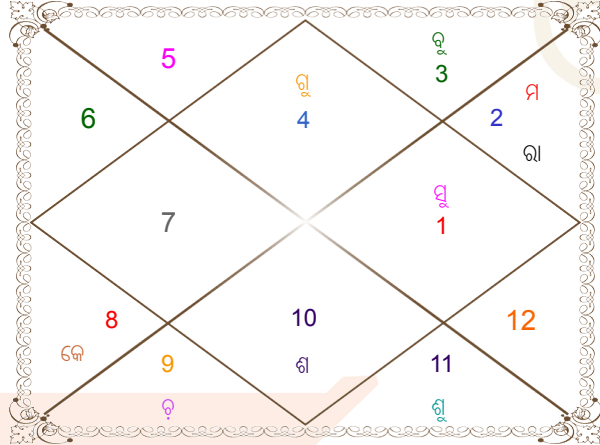
ଉପାସନା ଜ୍ଞାନମ୍

କ୍ଷୋଭଣବର୍ଗ ଚକ୍ର

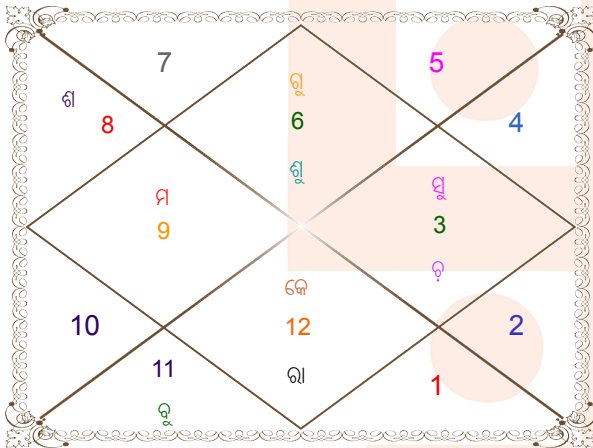
ଡ଼ତୁଷ୍ଟବିଂଶାଂଶ ଲଗ୍ନ



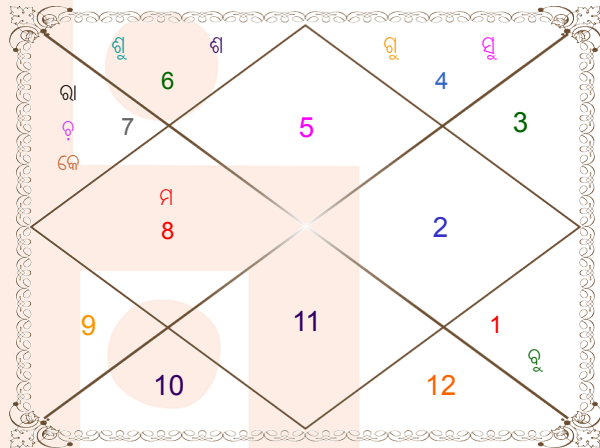
ସତ୍ତ୍ୱବିଂଶାଂଶ ଲଗ୍ନ



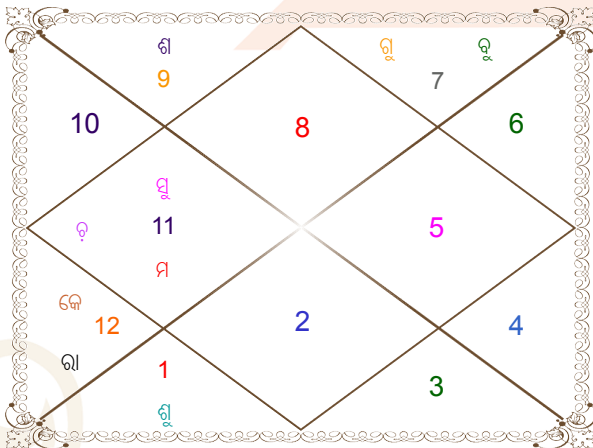
ବିଦ୍ୟା ବିଡ଼ାର
ତ୍ରିଂଶାଂଶ ଲଗ୍ନ



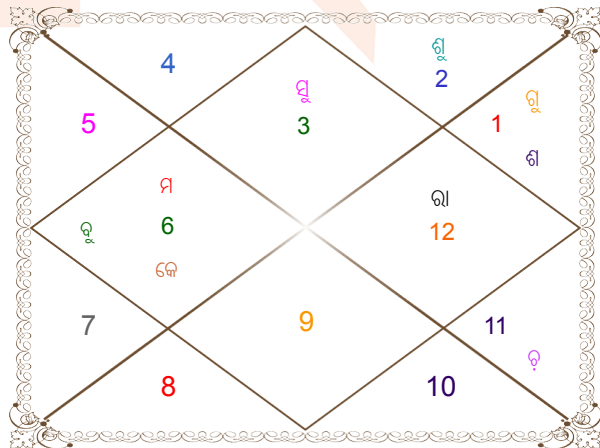
ବଲାବଳଜ୍ଞାନମ୍
ଶବ୍ଦୋଂଶ ଲଗ୍ନ



ଅରିଷ୍ଟ ଜ୍ଞାନମ୍
ଅକ୍ଷବେଦୋଂଶ ଲଗ୍ନ



ଶୁଭା ଶୁଭ ଜ୍ଞାନମ୍
ଷଷ୍ଠ୍ୟଂଶ ଲଗ୍ନ



ସର୍ବାକ୍ଷିତି ବିଡ଼ାର

ସର୍ବାକ୍ଷିତି ବିଡ଼ାର

ଷୋଡ଼ଶବର୍ଣ୍ଣ ସାରଣୀ

ଷୋଡ଼ଶବର୍ଣ୍ଣ ସାରଣୀ

| | ଲଗ୍ନ | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଚନ୍ଦ୍ର | ମଙ୍ଗଳ | ବୁଧ | ଗୁରୁ | ଶୁକ୍ର | ଶନି | ରାହୁ | କେତୁ |
|----------|-------|---------|--------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| ରାଶି | ମୀନ | କୁମ୍ଭ | ମେଷ | ମେଷ | କୁମ୍ଭ | ମୀନ | ମକର | ବିଛା | ମୀନ | କନ୍ୟା |
| ହୋରା | କର୍କଟ | କର୍କଟ | କର୍କଟ | ସିଂହ | ସିଂହ | କର୍କଟ | କର୍କଟ | ସିଂହ | ସିଂହ | ସିଂହ |
| ଦ୍ରୋଣୀ | ମୀନ | ତୁଳା | ଧନୁ | ସିଂହ | କୁମ୍ଭ | ମୀନ | ମକର | କର୍କଟ | କର୍କଟ | ମକର |
| ବୃହସ୍ପତି | ମିଥୁନ | ସିଂହ | ମକର | କର୍କଟ | ବୃଷ | ମୀନ | ମେଷ | ସିଂହ | କନ୍ୟା | ମୀନ |
| ଶୁକ୍ର | ତୁଳା | ମିଥୁନ | କନ୍ୟା | କର୍କଟ | ମେଷ | ତୁଳା | ସିଂହ | ବିଛା | ମକର | କର୍କଟ |
| ରବି | କନ୍ୟା | ମେଷ | ତୁଳା | ସିଂହ | ଧନୁ | କନ୍ୟା | ମୀନ | ମୀନ | ଧନୁ | ମିଥୁନ |
| କେତୁ | ମକର | ସିଂହ | ବିଛା | ସିଂହ | ବୃଷ | ମକର | ବିଛା | ମୀନ | ବୃଷ | ବିଛା |
| ପ୍ରାଣୀ | ମିଥୁନ | ତୁଳା | ମକର | କନ୍ୟା | ବୃଷ | ବୃଷ | ମେଷ | କନ୍ୟା | ତୁଳା | ମେଷ |
| ଶୋକ | ମେଷ | ମିଥୁନ | ମେଷ | ବିଛା | ମକର | ମୀନ | ସିଂହ | ତୁଳା | କନ୍ୟା | କନ୍ୟା |
| କ୍ରୋଧ | ମକର | ମକର | କର୍କଟ | ମକର | ମିଥୁନ | ଧନୁ | କନ୍ୟା | ବୃଷ | ସିଂହ | ସିଂହ |
| କ୍ଷୟ | ମକର | ଧନୁ | କୁମ୍ଭ | କର୍କଟ | ମୀନ | ଧନୁ | ମକର | ମେଷ | କନ୍ୟା | କନ୍ୟା |
| ସୁଖ | କର୍କଟ | ମେଷ | ଧନୁ | ବୃଷ | ମିଥୁନ | କର୍କଟ | କୁମ୍ଭ | ମକର | ବୃଷ | ବିଛା |
| ସ୍ତ୍ରୀ | କନ୍ୟା | ମିଥୁନ | ମିଥୁନ | ଧନୁ | କୁମ୍ଭ | କନ୍ୟା | କନ୍ୟା | ବିଛା | ମୀନ | ମୀନ |
| ସ୍ୱାମୀ | ସିଂହ | କର୍କଟ | ତୁଳା | ବିଛା | ମେଷ | କର୍କଟ | କନ୍ୟା | କନ୍ୟା | ତୁଳା | ତୁଳା |
| ଅଧିକାର | ବିଛା | କୁମ୍ଭ | କୁମ୍ଭ | କୁମ୍ଭ | ତୁଳା | ତୁଳା | ମେଷ | ଧନୁ | ମୀନ | ମୀନ |
| ଅଧିକାରୀ | ମିଥୁନ | ମିଥୁନ | କୁମ୍ଭ | କନ୍ୟା | କନ୍ୟା | ମେଷ | ବୃଷ | ମେଷ | ମୀନ | କନ୍ୟା |

ବର୍ଣ୍ଣ ଭେଦ

| | ଷଡ଼ବର୍ଣ୍ଣ | ସପ୍ତବର୍ଣ୍ଣ | ଦଶବର୍ଣ୍ଣ | ଷୋଡ଼ଶବର୍ଣ୍ଣ |
|---------|-----------|------------|-----------|-------------|
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 1 --- | 1 --- | 2 ପାରିଜାତ | 4 ନାଗପୁଷ୍ପ |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 1 --- | 1 --- | 1 --- | 2 ଭେଦକ |
| ମଙ୍ଗଳ | 1 --- | 1 --- | 2 ପାରିଜାତ | 4 ନାଗପୁଷ୍ପ |
| ବୁଧ | 0 --- | 0 --- | 1 --- | 3 କୁସୁମ |
| ଗୁରୁ | 3 ବ୍ୟଞ୍ଜନ | 3 ବ୍ୟଞ୍ଜନ | 4 ଗୋପୁର | 9 ପୁଷ୍କର |
| ଶୁକ୍ର | 1 --- | 1 --- | 2 ପାରିଜାତ | 2 ଭେଦକ |
| ଶନି | 0 --- | 0 --- | 1 --- | 2 ଭେଦକ |
| ରାହୁ | 0 --- | 0 --- | 1 --- | 3 କୁସୁମ |
| କେତୁ | 1 --- | 1 --- | 1 --- | 3 କୁସୁମ |

ବିଂଶୋପକ ବଳ

| | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଚନ୍ଦ୍ର | ମଙ୍ଗଳ | ବୁଧ | ଗୁରୁ | ଶୁକ୍ର | ଶନି | ରାହୁ | କେତୁ |
|-------------|---------|--------|-------|-------|-------|-------|------|------|------|
| ଷଡ଼ବର୍ଣ୍ଣ | 12.65 | 12.45 | 17.80 | 14.80 | 15.80 | 16.15 | 7.30 | 9.00 | 7.70 |
| ସପ୍ତବର୍ଣ୍ଣ | 12.08 | 13.23 | 16.70 | 14.80 | 14.80 | 15.23 | 7.25 | 9.23 | 7.30 |
| ଦଶବର୍ଣ୍ଣ | 10.53 | 10.83 | 15.25 | 16.33 | 15.38 | 16.03 | 7.63 | 9.92 | 7.38 |
| ଷୋଡ଼ଶବର୍ଣ୍ଣ | 11.58 | 10.80 | 15.58 | 16.30 | 16.33 | 16.25 | 8.42 | 9.75 | 7.25 |

ମୈତ୍ରୀ ସାରଣୀ

ନୈସର୍ଗିକ ମୈତ୍ରୀ

| ଗ୍ରହ | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଚନ୍ଦ୍ର | ମଙ୍ଗଳ | ବୁଧ | ଗୁରୁ | ଶୁକ୍ର | ଶନି | ରାହୁ | କେତୁ |
|---------|---------|--------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | --- | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ସମ | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ |
| ଚନ୍ଦ୍ର | ମିତ୍ର | --- | ସମ | ମିତ୍ର | ସମ | ସମ | ସମ | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ |
| ମଙ୍ଗଳ | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | --- | ଶତ୍ରୁ | ମିତ୍ର | ସମ | ସମ | ଶତ୍ରୁ | ମିତ୍ର |
| ବୁଧ | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ | ସମ | --- | ସମ | ମିତ୍ର | ସମ | ସମ | ସମ |
| ଗୁରୁ | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ | --- | ଶତ୍ରୁ | ସମ | ସମ | ସମ |
| ଶୁକ୍ର | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ | ସମ | ମିତ୍ର | ସମ | --- | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର |
| ଶନି | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ | ମିତ୍ର | ସମ | ମିତ୍ର | --- | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ |
| ରାହୁ | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ | ସମ | ସମ | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | --- | ଶତ୍ରୁ |
| କେତୁ | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ | ମିତ୍ର | ସମ | ସମ | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ | --- |

ତାତ୍ତ୍ୱାଳିକ ମୈତ୍ରୀ

| ଗ୍ରହ | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଚନ୍ଦ୍ର | ମଙ୍ଗଳ | ବୁଧ | ଗୁରୁ | ଶୁକ୍ର | ଶନି | ରାହୁ | କେତୁ |
|---------|---------|--------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|-------|
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | --- | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ |
| ଚନ୍ଦ୍ର | ମିତ୍ର | --- | ଶତ୍ରୁ | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ |
| ମଙ୍ଗଳ | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ | --- | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ |
| ବୁଧ | ଶତ୍ରୁ | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | --- | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ |
| ଗୁରୁ | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | --- | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ |
| ଶୁକ୍ର | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | --- | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ |
| ଶନି | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ | ମିତ୍ର | --- | ଶତ୍ରୁ | ମିତ୍ର |
| ରାହୁ | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ | --- | ଶତ୍ରୁ |
| କେତୁ | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ | --- |

ପଞ୍ଚମା ମୈତ୍ରୀ

| ଗ୍ରହ | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଚନ୍ଦ୍ର | ମଙ୍ଗଳ | ବୁଧ | ଗୁରୁ | ଶୁକ୍ର | ଶନି | ରାହୁ | କେତୁ |
|---------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | --- | ଅଧିମିତ୍ର | ଅଧିମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ | ଅଧିମିତ୍ର | ସମ | ସମ | ସମ | ଅଧିଶତ୍ରୁ |
| ଚନ୍ଦ୍ର | ଅଧିମିତ୍ର | --- | ଶତ୍ରୁ | ଅଧିମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ | ସମ | ଅଧିଶତ୍ରୁ |
| ମଙ୍ଗଳ | ଅଧିମିତ୍ର | ସମ | --- | ସମ | ଅଧିମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ | ସମ | ସମ |
| ବୁଧ | ସମ | ସମ | ମିତ୍ର | --- | ମିତ୍ର | ଅଧିମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ |
| ଗୁରୁ | ଅଧିମିତ୍ର | ଅଧିମିତ୍ର | ଅଧିମିତ୍ର | ସମ | --- | ସମ | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ |
| ଶୁକ୍ର | ସମ | ସମ | ମିତ୍ର | ଅଧିମିତ୍ର | ମିତ୍ର | --- | ଅଧିମିତ୍ର | ଅଧିମିତ୍ର | ସମ |
| ଶନି | ସମ | ଅଧିଶତ୍ରୁ | ଅଧିଶତ୍ରୁ | ଅଧିମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ | ଅଧିମିତ୍ର | --- | ସମ | ସମ |
| ରାହୁ | ସମ | ସମ | ସମ | ମିତ୍ର | ଶତ୍ରୁ | ଅଧିମିତ୍ର | ସମ | --- | ଅଧିଶତ୍ରୁ |
| କେତୁ | ଅଧିଶତ୍ରୁ | ଅଧିଶତ୍ରୁ | ସମ | ଶତ୍ରୁ | ଶତ୍ରୁ | ସମ | ସମ | ଅଧିଶତ୍ରୁ | --- |

କ୍ଷତ୍ରବଳ ତଥା ଭାବବଳ ସାରଣୀ

କ୍ଷତ୍ରବଳ

| | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଚନ୍ଦ୍ର | ମଙ୍ଗଳ | ବୁଧ | ଗୁରୁ | ଶୁକ୍ର | ଶନି |
|------------------|---------|--------|-------|-----|------|-------|-----|
| ଉଚ୍ଚ ବଳ | 43 | 57 | 34 | 12 | 21 | 34 | 48 |
| ସପ୍ତର୍ଷି ବଳ | 75 | 113 | 150 | 105 | 113 | 113 | 41 |
| ଓଜସ୍ବିତ୍ତ ବଳ | 30 | 0 | 30 | 30 | 0 | 30 | 0 |
| କେନ୍ଦ୍ର ବଳ | 15 | 30 | 30 | 15 | 60 | 30 | 15 |
| ଦ୍ରୋଣୀ ବଳ | 0 | 15 | 0 | 0 | 15 | 0 | 0 |
| ମୋଟ ସ୍ଥାନ ବଳ | 163 | 214 | 244 | 162 | 208 | 206 | 104 |
| ମୋଟ ଦିଗ୍ବଳ | 36 | 45 | 17 | 51 | 60 | 10 | 34 |
| ନଗୋଳ ବଳ | 35 | 25 | 25 | 60 | 35 | 35 | 25 |
| ପକ୍ଷ ବଳ | 39 | 78 | 39 | 39 | 21 | 21 | 39 |
| ତ୍ରିଭାଗ ବଳ | 0 | 0 | 0 | 60 | 60 | 0 | 0 |
| ଅକ୍ଷ ବଳ | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 15 |
| ମାସ ବଳ | 0 | 0 | 0 | 30 | 0 | 0 | 0 |
| ବାର ବଳ | 0 | 0 | 0 | 0 | 45 | 0 | 0 |
| ହୋରା ବଳ | 0 | 0 | 0 | 0 | 60 | 0 | 0 |
| ଅପ୍ତ ବଳ | 43 | 8 | 49 | 43 | 30 | 5 | 60 |
| ସୁନ୍ଦ ବଳ | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 |
| ମୋଟ କାଳବଳ | 118 | 111 | 112 | 233 | 252 | 61 | 138 |
| ମୋଟ ରେଖାବଳ | 0 | 0 | 22 | 55 | 7 | 28 | 29 |
| ମୋଟ ନୈସର୍ଗିକ ବଳ | 60 | 51 | 17 | 26 | 34 | 43 | 9 |
| ମୋଟ ଦୂର୍ବଳ | -20 | -1 | 0 | -20 | -6 | -12 | -16 |
| ମୋଟ କ୍ଷତ୍ରବଳ | 357 | 421 | 414 | 506 | 554 | 337 | 297 |
| ଗୁପ୍ତ କ୍ଷତ୍ରବଳ | 6.0 | 7.0 | 6.9 | 8.4 | 9.2 | 5.6 | 5.0 |
| ନ୍ୟୁନତମ ଆବଶ୍ୟକତା | 5 | 6 | 5 | 7 | 7 | 6 | 5 |
| ଅନୁପାତ | 1.2 | 1.2 | 1.4 | 1.2 | 1.4 | 1.0 | 1.0 |
| ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ପଦ | 4 | 5 | 2 | 3 | 1 | 6 | 7 |

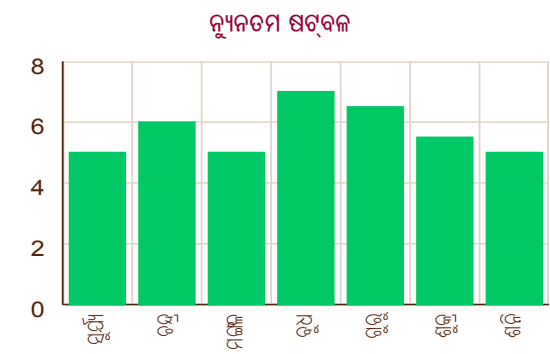
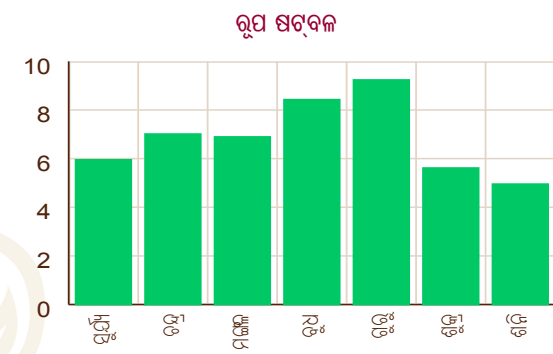
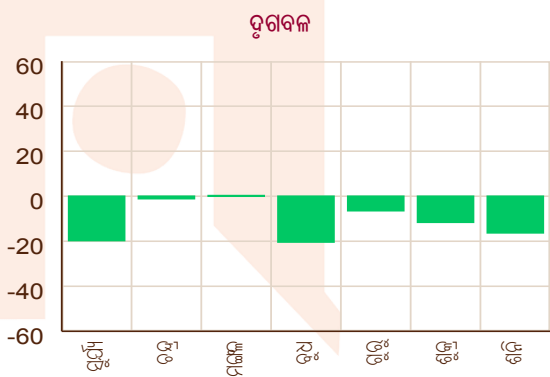
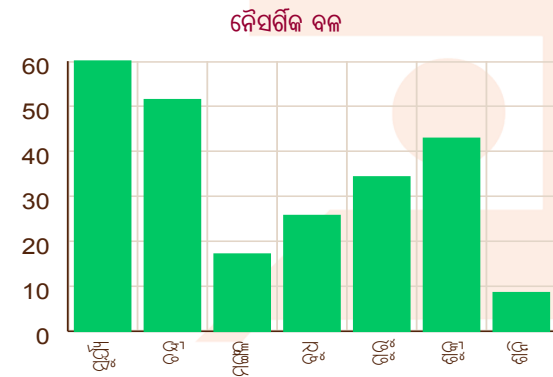
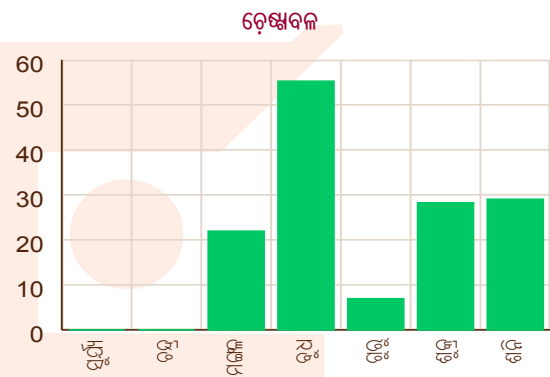
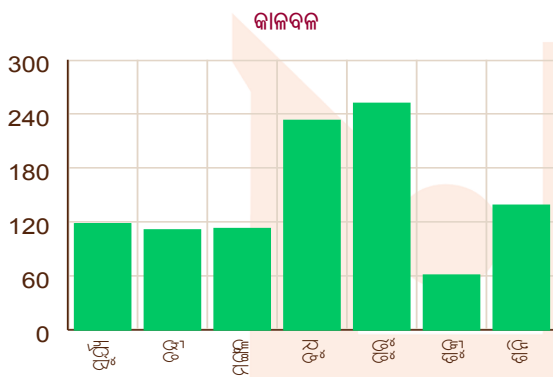
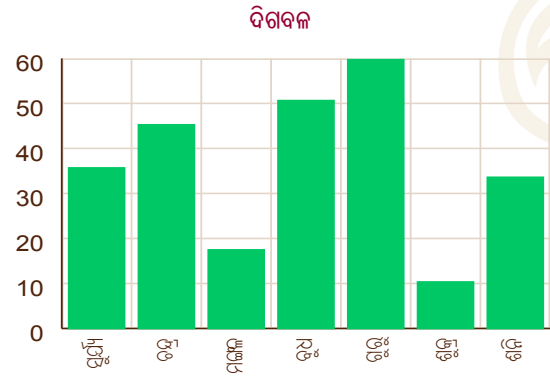
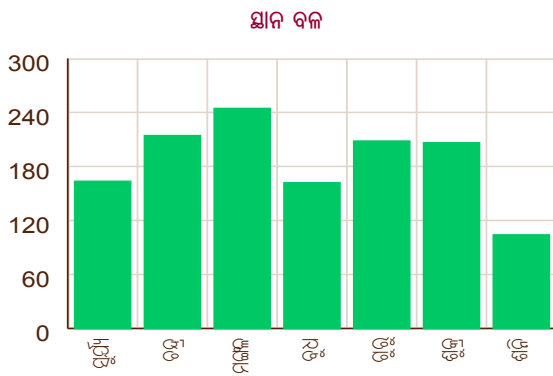
କ୍ଷତ୍ର ଫଳ

| | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଚନ୍ଦ୍ର | ମଙ୍ଗଳ | ବୁଧ | ଗୁରୁ | ଶୁକ୍ର | ଶନି |
|-----------|---------|--------|-------|-------|-------|-------|-------|
| କ୍ଷତ୍ର ଫଳ | 32.72 | 34.45 | 27.45 | 25.54 | 11.96 | 30.88 | 37.21 |
| କଳ୍ପ ଫଳ | 24.21 | 11.36 | 31.24 | 15.14 | 45.71 | 28.86 | 19.52 |

ଭାବ ବଳ

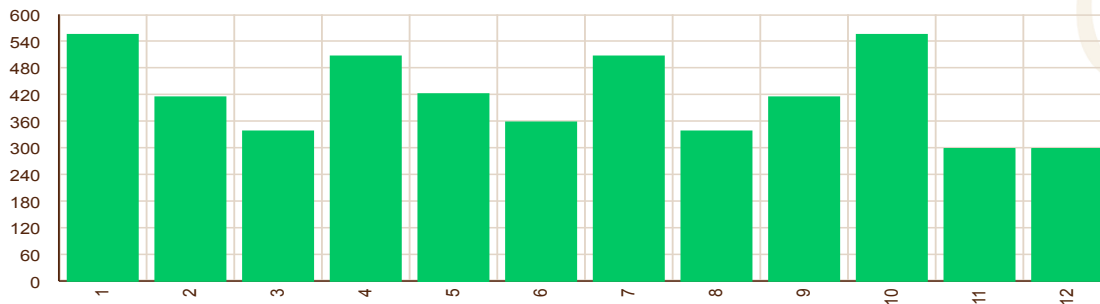
| | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|----------------|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|
| ଭାବାପିପତ୍ତି ବଳ | 554 | 414 | 337 | 506 | 421 | 357 | 506 | 337 | 414 | 554 | 297 | 297 |
| ଭାବ ଦିଗ୍ବଳ | 30 | 20 | 10 | 30 | 50 | 20 | 0 | 10 | 40 | 30 | 50 | 50 |
| ଭାବ ଦୂର୍ବଳ | -6 | 18 | 53 | 49 | 46 | 32 | 81 | 52 | 45 | -7 | -12 | -21 |
| ମୋଟ ଭାବ ବଳ | 578 | 452 | 400 | 584 | 517 | 409 | 587 | 399 | 499 | 577 | 336 | 327 |
| ଗୁପ୍ତ ଭାବ ବଳ | 9.6 | 7.5 | 6.7 | 9.7 | 8.6 | 6.8 | 9.8 | 6.6 | 8.3 | 9.6 | 5.6 | 5.4 |
| ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ପଦ | 3 | 7 | 9 | 2 | 5 | 8 | 1 | 10 | 6 | 4 | 11 | 12 |

ଷଟ୍‌ବଳ ଗ୍ରାଫ

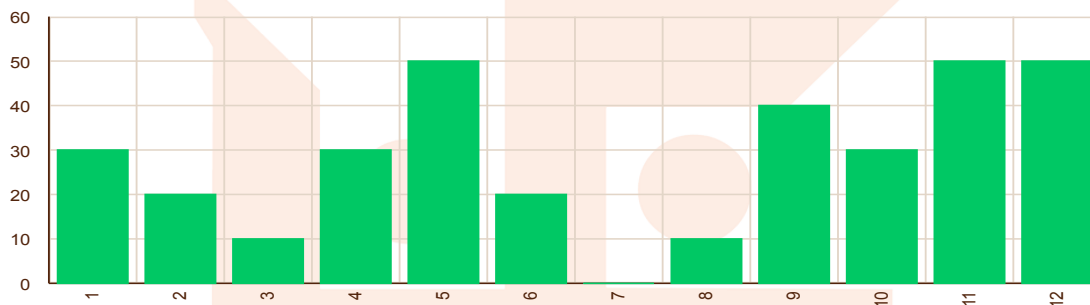


ଭାବ ବଳ ଗ୍ରାଫ

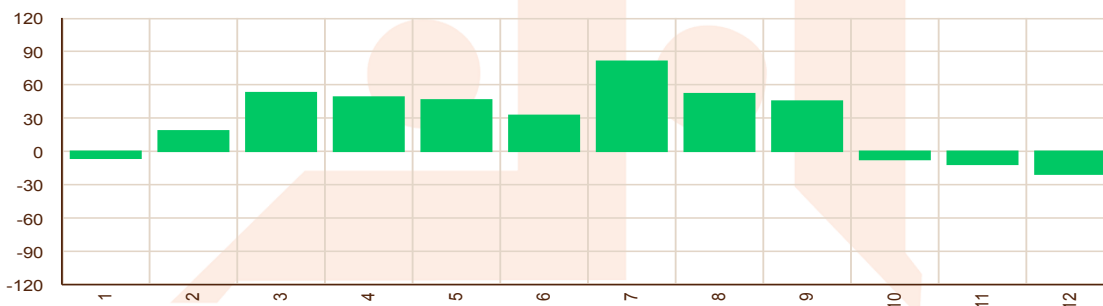
ଭାବାଧିପତି ବଳ



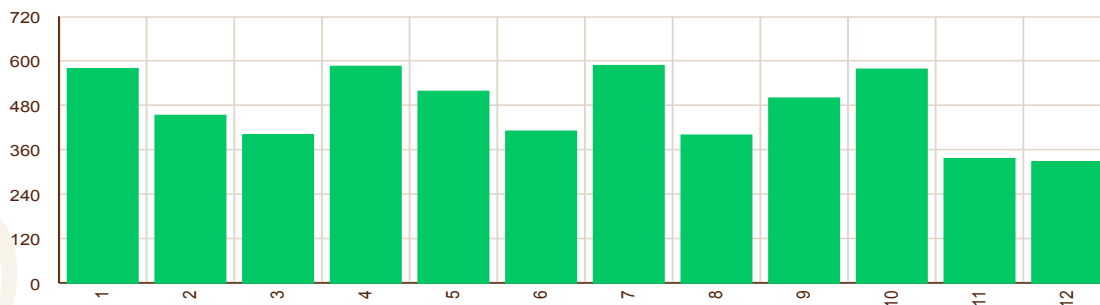
ଭାବ ଦିଗ୍ଞ



ଭାବ ଦୃଢ଼ି ବଳ

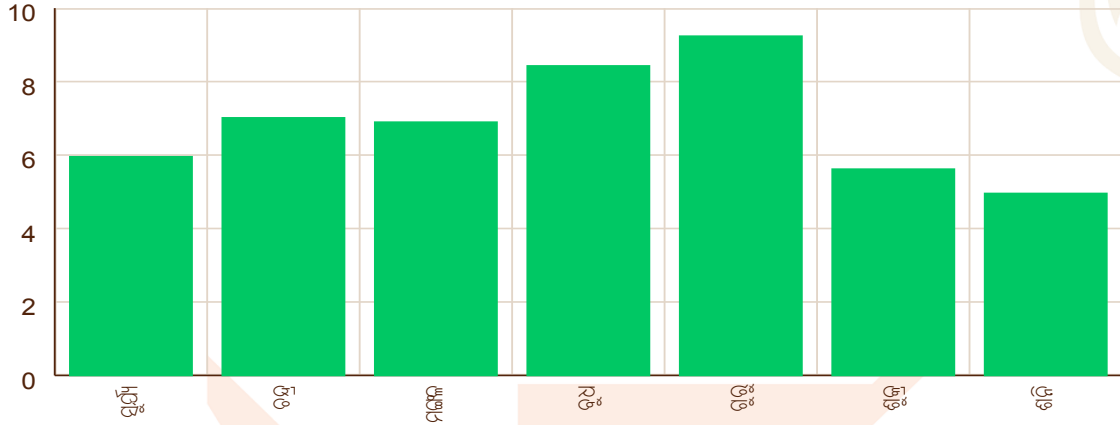


ଭାବ ବଳ

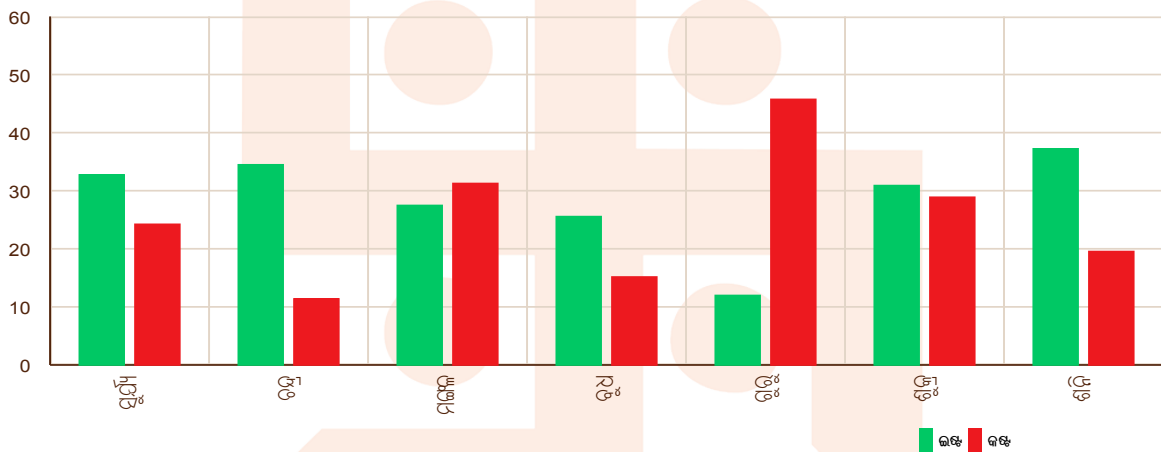


ଷଟ୍‌ବଳ ତଥା ଭାବବଳ ଗ୍ରାହ

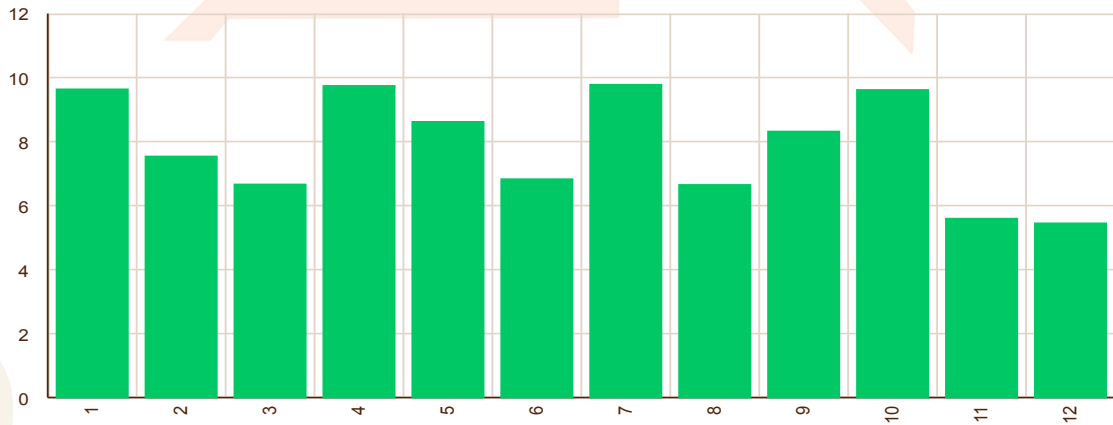
ରୁପ ଷଟ୍‌ବଳ



ଭାବ - ଭାବ ପଳ



ରୁପ ଭାବ ବଳ

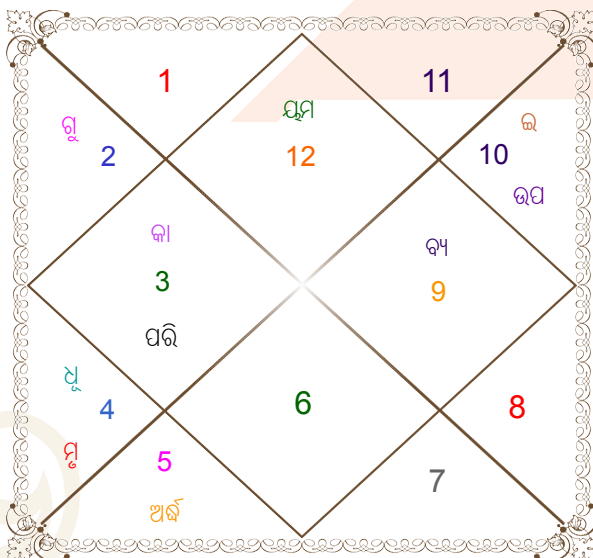


ଉପଗ୍ରହ ଏବଂ ଆରୁଢ଼

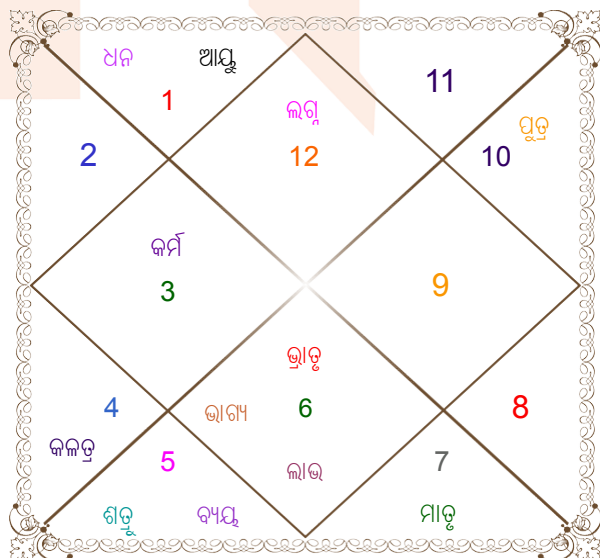
| ଉପଗ୍ରହ | ସଂକ୍ଷିପ୍ତ | ରାଶି | ଅଂଶ | ଉଚ୍ଚ | ସ୍ଥିତି | ନକ୍ଷତ୍ର | ପଦ | ମଗ. |
|-------------|-----------|-------|----------|------|--------|-------------|----|-----|
| ଲଗ୍ନ | ଲଗ୍ନ | ମୀନ | 07:42:26 | -- | -- | ଉ.ଭାଦ୍ରପଦ | 2 | 26 |
| ଗୁଳିକ | ଗୁ | ବୃଷ | 09:15:15 | -- | -- | କୃତ୍ତିକା | 4 | 3 |
| କାଳ | କା | ମିଥୁନ | 00:57:15 | -- | -- | ମୃଗଶିରା | 3 | 5 |
| ମୃଗ୍ଧୀ | ମୃ | କର୍କଟ | 10:55:21 | -- | -- | ପୁଷ୍ୟ | 3 | 8 |
| ଯମପଞ୍ଚକ | ଯମ | ମୀନ | 17:47:12 | -- | -- | ରେବତୀ | 1 | 27 |
| ଅର୍ଦ୍ଧପ୍ରହର | ଅର୍ଦ୍ଧ | ସିଂହ | 01:01:49 | -- | -- | ମଘା | 1 | 10 |
| ଧୂମ | ଧୂ | କର୍କଟ | 03:36:24 | -- | -- | ପୁଷ୍ୟ | 1 | 8 |
| ବ୍ୟତିପାତ | ବ୍ୟ | ଧନୁ | 26:23:36 | -- | -- | ପୂର୍ବାଷାଢ଼ା | 4 | 20 |
| ପରିବେଶ | ପରି | ମିଥୁନ | 26:23:36 | ଉଚ୍ଚ | -- | ପୂର୍ବପୂ | 2 | 7 |
| ଇନ୍ଦ୍ରପାପ | ଇ | ମକର | 03:36:24 | -- | -- | ଉତ୍ତରାଷାଢ଼ା | 3 | 21 |
| ଉପକେତୁ | ଉପ | ମକର | 20:16:24 | -- | -- | ଶ୍ରବଣା | 4 | 22 |

| | | | | | | | |
|-----------|---|------|----------|--------------|---|-----|----------|
| ପ୍ରାଣପଦ | : | ସିଂହ | 11:01:12 | କାରକାଂଶ ଲଗ୍ନ | : | ମୀନ | 02:16:39 |
| ଭାବ ଲଗ୍ନ | : | ମୀନ | 22:14:40 | ହୋରା ଲଗ୍ନ | : | ମେଷ | 06:46:54 |
| ବଣ୍ଡ ଲଗ୍ନ | : | ବୃଷ | 02:57:36 | ବର୍ଷଦ ଲଗ୍ନ | : | ମେଷ | 15:30:40 |

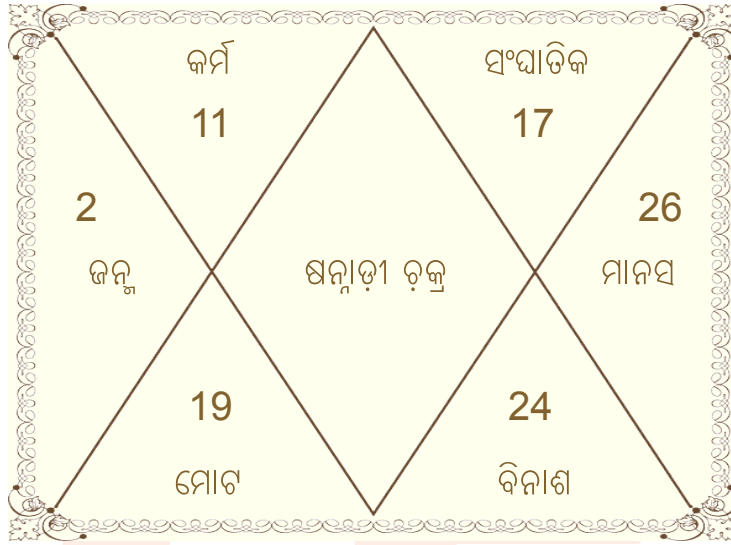
ଉପଗ୍ରହ ଲଗ୍ନ



ଆରୁଢ଼ ଲଗ୍ନ



ଷମ୍ଭାତୀ ଚକ୍ର



ତ୍ରିପାପ ଚକ୍ର

| | | | | | | | | | | | | |
|--------------|---------|---------|--------|---------|---------|--------|---------|---------|--------|---------|---------|---------|
| ପ୍ରଥମ ଚକ୍ର | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| ଦ୍ୱିତୀୟ ଚକ୍ର | 37 | 38 | 39 | 40 | 41 | 42 | 43 | 44 | 45 | 46 | 47 | 48 |
| ତୃତୀୟ ଚକ୍ର | 73 | 74 | 75 | 76 | 77 | 78 | 79 | 80 | 81 | 82 | 83 | 84 |
| କେତୁ ପତାକା | ଶୁକ୍ର | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଚନ୍ଦ୍ର | ମଙ୍ଗଳ | ବୁଧ | ଶନି | ଗୁରୁ | ରାହୁ | କେତୁ | ଶୁକ୍ର | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଚନ୍ଦ୍ର |
| କେତୁ ଲଗ୍ନ | କେତୁ | ବୁଧ | ମଙ୍ଗଳ | କେତୁ | ଗୁରୁ | ଚନ୍ଦ୍ର | କେତୁ | ଶୁକ୍ର | ରାହୁ | କେତୁ | ଶନି | ସୂର୍ଯ୍ୟ |
| ଗୁରୁ ଲଗ୍ନ | ଚନ୍ଦ୍ର | ବୁଧ | ଗୁରୁ | ଶୁକ୍ର | ଶନି | ରାହୁ | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ମଙ୍ଗଳ | କେତୁ | ଚନ୍ଦ୍ର | ବୁଧ | ଗୁରୁ |
| ପ୍ରଥମ ଚକ୍ର | 13 | 14 | 15 | 16 | 17 | 18 | 19 | 20 | 21 | 22 | 23 | 24 |
| ଦ୍ୱିତୀୟ ଚକ୍ର | 49 | 50 | 51 | 52 | 53 | 54 | 55 | 56 | 57 | 58 | 59 | 60 |
| ତୃତୀୟ ଚକ୍ର | 85 | 86 | 87 | 88 | 89 | 90 | 91 | 92 | 93 | 94 | 95 | 96 |
| କେତୁ ପତାକା | ମଙ୍ଗଳ | ବୁଧ | ଶନି | ଗୁରୁ | ରାହୁ | କେତୁ | ଶୁକ୍ର | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଚନ୍ଦ୍ର | ମଙ୍ଗଳ | ବୁଧ | ଶନି |
| କେତୁ ଲଗ୍ନ | କେତୁ | ବୁଧ | ମଙ୍ଗଳ | କେତୁ | ଗୁରୁ | ଚନ୍ଦ୍ର | କେତୁ | ଶୁକ୍ର | ରାହୁ | କେତୁ | ଶନି | ସୂର୍ଯ୍ୟ |
| ଗୁରୁ ଲଗ୍ନ | ଶୁକ୍ର | ଶନି | ରାହୁ | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ମଙ୍ଗଳ | କେତୁ | ଚନ୍ଦ୍ର | ବୁଧ | ଗୁରୁ | ଶୁକ୍ର | ଶନି | ରାହୁ |
| ପ୍ରଥମ ଚକ୍ର | 25 | 26 | 27 | 28 | 29 | 30 | 31 | 32 | 33 | 34 | 35 | 36 |
| ଦ୍ୱିତୀୟ ଚକ୍ର | 61 | 62 | 63 | 64 | 65 | 66 | 67 | 68 | 69 | 70 | 71 | 72 |
| ତୃତୀୟ ଚକ୍ର | 97 | 98 | 99 | 100 | 101 | 102 | 103 | 104 | 105 | 106 | 107 | 108 |
| କେତୁ ପତାକା | ଗୁରୁ | ରାହୁ | କେତୁ | ଶୁକ୍ର | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଚନ୍ଦ୍ର | ମଙ୍ଗଳ | ବୁଧ | ଶନି | ଗୁରୁ | ରାହୁ | କେତୁ |
| କେତୁ ଲଗ୍ନ | କେତୁ | ବୁଧ | ମଙ୍ଗଳ | କେତୁ | ଗୁରୁ | ଚନ୍ଦ୍ର | କେତୁ | ଶୁକ୍ର | ରାହୁ | କେତୁ | ଶନି | ସୂର୍ଯ୍ୟ |
| ଗୁରୁ ଲଗ୍ନ | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ମଙ୍ଗଳ | କେତୁ | ଚନ୍ଦ୍ର | ବୁଧ | ଗୁରୁ | ଶୁକ୍ର | ଶନି | ରାହୁ | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ମଙ୍ଗଳ | କେତୁ |

ପ୍ରକ୍ଷାରଖକବର୍ଗ ସାରଣୀ

ରବି ର ଅଖକବର୍ଗ

| | କୁ | ମା | ମେ | ଜୁ | ଜି | କ | ସିଂ | କ | ତୁ | ବି | ଧ | ମ | ମୋଟ |
|------------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|-----------|
| ଶନି | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 8 |
| ଗୁରୁ | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 4 |
| ମଙ୍ଗଳ | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 8 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 8 |
| ଶୁକ୍ର | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 3 |
| ବୁଧ | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 7 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 4 |
| ଲଗ୍ନ | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 6 |
| ମୋଟ | 5 | 1 | 2 | 4 | 5 | 5 | 4 | 3 | 3 | 5 | 6 | 5 | 48 |

ଚନ୍ଦ୍ର ର ଅଖକବର୍ଗ

| | ମେ | ଜୁ | ଜି | କ | ସିଂ | କ | ତୁ | ବି | ଧ | ମ | କୁ | ମୋଟ |
|------------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|------------|
| ଶନି | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 4 |
| ଗୁରୁ | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 7 |
| ମଙ୍ଗଳ | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 7 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 6 |
| ଶୁକ୍ର | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 7 |
| ବୁଧ | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 8 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 6 |
| ଲଗ୍ନ | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 4 |
| ମୋଟ | 5 | 4 | 4 | 2 | 4 | 7 | 3 | 3 | 5 | 5 | 4 | 349 |

ମଙ୍ଗଳ ର ଅଖକବର୍ଗ

| | ମେ | ଜୁ | ଜି | କ | ସିଂ | କ | ତୁ | ବି | ଧ | ମ | କୁ | ମୋଟ |
|------------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|------------|
| ଶନି | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 7 |
| ଗୁରୁ | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 4 |
| ମଙ୍ଗଳ | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 7 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 5 |
| ଶୁକ୍ର | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 4 |
| ବୁଧ | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 4 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 3 |
| ଲଗ୍ନ | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 5 |
| ମୋଟ | 3 | 3 | 5 | 4 | 4 | 2 | 1 | 4 | 5 | 3 | 4 | 139 |

ବୁଧ ର ଅଖକବର୍ଗ

| | କୁ | ମା | ମେ | ଜୁ | ଜି | କ | ସିଂ | କ | ତୁ | ବି | ଧ | ମ | ମୋଟ |
|------------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|-----------|
| ଶନି | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 8 |
| ଗୁରୁ | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 4 |
| ମଙ୍ଗଳ | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 8 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 5 |
| ଶୁକ୍ର | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 8 |
| ବୁଧ | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 8 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 6 |
| ଲଗ୍ନ | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 7 |
| ମୋଟ | 6 | 2 | 4 | 4 | 4 | 5 | 4 | 3 | 5 | 5 | 5 | 7 | 54 |

ଗୁରୁ ର ଅଖକବର୍ଗ

| | ମା | ମେ | ଜୁ | ଜି | କ | ସିଂ | କ | ତୁ | ବି | ଧ | ମ | କୁ | ମୋଟ |
|------------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|-----------|
| ଶନି | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 4 |
| ଗୁରୁ | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 8 |
| ମଙ୍ଗଳ | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 7 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 9 |
| ଶୁକ୍ର | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 6 |
| ବୁଧ | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 8 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 5 |
| ଲଗ୍ନ | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 9 |
| ମୋଟ | 5 | 5 | 6 | 4 | 3 | 3 | 4 | 7 | 5 | 5 | 4 | 5 | 56 |

ଶୁକ୍ର ର ଅଖକବର୍ଗ

| | ମ | କୁ | ମା | ମେ | ଜୁ | ଜି | କ | ସିଂ | କ | ତୁ | ବି | ଧ | ମୋଟ |
|------------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|-----------|
| ଶନି | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 7 |
| ଗୁରୁ | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 5 |
| ମଙ୍ଗଳ | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 6 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 3 |
| ଶୁକ୍ର | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 9 |
| ବୁଧ | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 5 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 9 |
| ଲଗ୍ନ | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 8 |
| ମୋଟ | 5 | 4 | 5 | 4 | 3 | 5 | 5 | 4 | 4 | 4 | 4 | 5 | 52 |

ଶନି ର ଅଖକବର୍ଗ

| | ବି | ଧ | ମ | କୁ | ମା | ମେ | ଜୁ | ଜି | କ | ସିଂ | କ | ତୁ | ମୋଟ |
|------------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|-----------|
| ଶନି | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 4 |
| ଗୁରୁ | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 0 | 4 |
| ମଙ୍ଗଳ | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 6 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 7 |
| ଶୁକ୍ର | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 3 |
| ବୁଧ | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 6 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 3 |
| ଲଗ୍ନ | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 6 |
| ମୋଟ | 3 | 4 | 5 | 4 | 4 | 1 | 2 | 4 | 2 | 4 | 5 | 1 | 39 |

ଲଗ୍ନ ର ଅଖକବର୍ଗ

| | ମା | ମେ | ଜୁ | ଜି | କ | ସିଂ | କ | ତୁ | ବି | ଧ | ମ | କୁ | ମୋଟ |
|------------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|----------|-----------|
| ଶନି | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 6 |
| ଗୁରୁ | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 9 |
| ମଙ୍ଗଳ | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 5 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 1 | 0 | 6 |
| ଶୁକ୍ର | 1 | 1 | 1 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 8 |
| ବୁଧ | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 7 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 4 |
| ଲଗ୍ନ | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 4 |
| ମୋଟ | 3 | 5 | 4 | 3 | 3 | 4 | 6 | 0 | 5 | 4 | 7 | 5 | 49 |

ଅଞ୍ଜନବର୍ଗ ସାରଣୀ

ସର୍ବାଞ୍ଜନବର୍ଗ ସାରଣୀ

| | ମେ | ତୁ | ମି | କ | ସିଂ | କ | ତୁ | ବି | ଧ | ମ | କୁ | ମା | ମୋଟ |
|---------|----|----|----|----|-----|----|----|----|----|----|----|----|-----|
| ଶନି | 1 | 2 | 4 | 2 | 4 | 5 | 1 | 3 | 4 | 5 | 4 | 4 | 39 |
| ଗୁରୁ | 5 | 6 | 4 | 3 | 3 | 4 | 7 | 5 | 5 | 4 | 5 | 5 | 56 |
| ମଙ୍ଗଳ | 3 | 3 | 5 | 4 | 4 | 2 | 1 | 4 | 5 | 3 | 4 | 1 | 39 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 2 | 4 | 5 | 5 | 4 | 3 | 3 | 5 | 6 | 5 | 5 | 1 | 48 |
| ଶୁକ୍ର | 4 | 3 | 5 | 5 | 4 | 4 | 4 | 4 | 5 | 5 | 4 | 5 | 52 |
| ବୁଧ | 4 | 4 | 4 | 5 | 4 | 3 | 5 | 5 | 5 | 7 | 6 | 2 | 54 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 5 | 4 | 4 | 2 | 4 | 7 | 3 | 3 | 5 | 5 | 4 | 3 | 49 |
| ଲଗ୍ନ | 5 | 4 | 3 | 3 | 4 | 6 | 0 | 5 | 4 | 7 | 5 | 3 | 49 |
| ବି | 29 | 30 | 34 | 29 | 31 | 34 | 24 | 34 | 39 | 41 | 37 | 24 | 386 |
| ରେ | 35 | 34 | 30 | 35 | 33 | 30 | 40 | 30 | 25 | 23 | 27 | 40 | 382 |

ତ୍ରିକୋଣ ଶୋଧନ ପରେ ଅଞ୍ଜନବର୍ଗ ସାରଣୀ

| | ମେ | ତୁ | ମି | କ | ସିଂ | କ | ତୁ | ବି | ଧ | ମ | କୁ | ମା | ମୋଟ |
|---------|----|----|----|----|-----|---|----|----|----|----|----|----|-----|
| ଶନି | 0 | 0 | 3 | 0 | 3 | 3 | 0 | 1 | 3 | 3 | 3 | 2 | 21 |
| ଗୁରୁ | 2 | 2 | 0 | 0 | 0 | 0 | 3 | 2 | 2 | 0 | 1 | 2 | 14 |
| ମଙ୍ଗଳ | 0 | 1 | 4 | 3 | 1 | 0 | 0 | 3 | 2 | 1 | 3 | 0 | 18 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 0 | 1 | 2 | 4 | 2 | 0 | 0 | 4 | 4 | 2 | 2 | 0 | 21 |
| ଶୁକ୍ର | 0 | 0 | 1 | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 2 | 0 | 1 | 7 |
| ବୁଧ | 0 | 1 | 0 | 3 | 0 | 0 | 1 | 3 | 1 | 4 | 2 | 0 | 15 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 3 | 0 | 1 | 1 | 1 | 1 | 1 | 10 |
| ଲଗ୍ନ | 1 | 0 | 3 | 0 | 0 | 2 | 0 | 2 | 0 | 3 | 5 | 0 | 16 |
| ରେ | 4 | 5 | 14 | 11 | 6 | 9 | 4 | 16 | 14 | 16 | 17 | 6 | 122 |

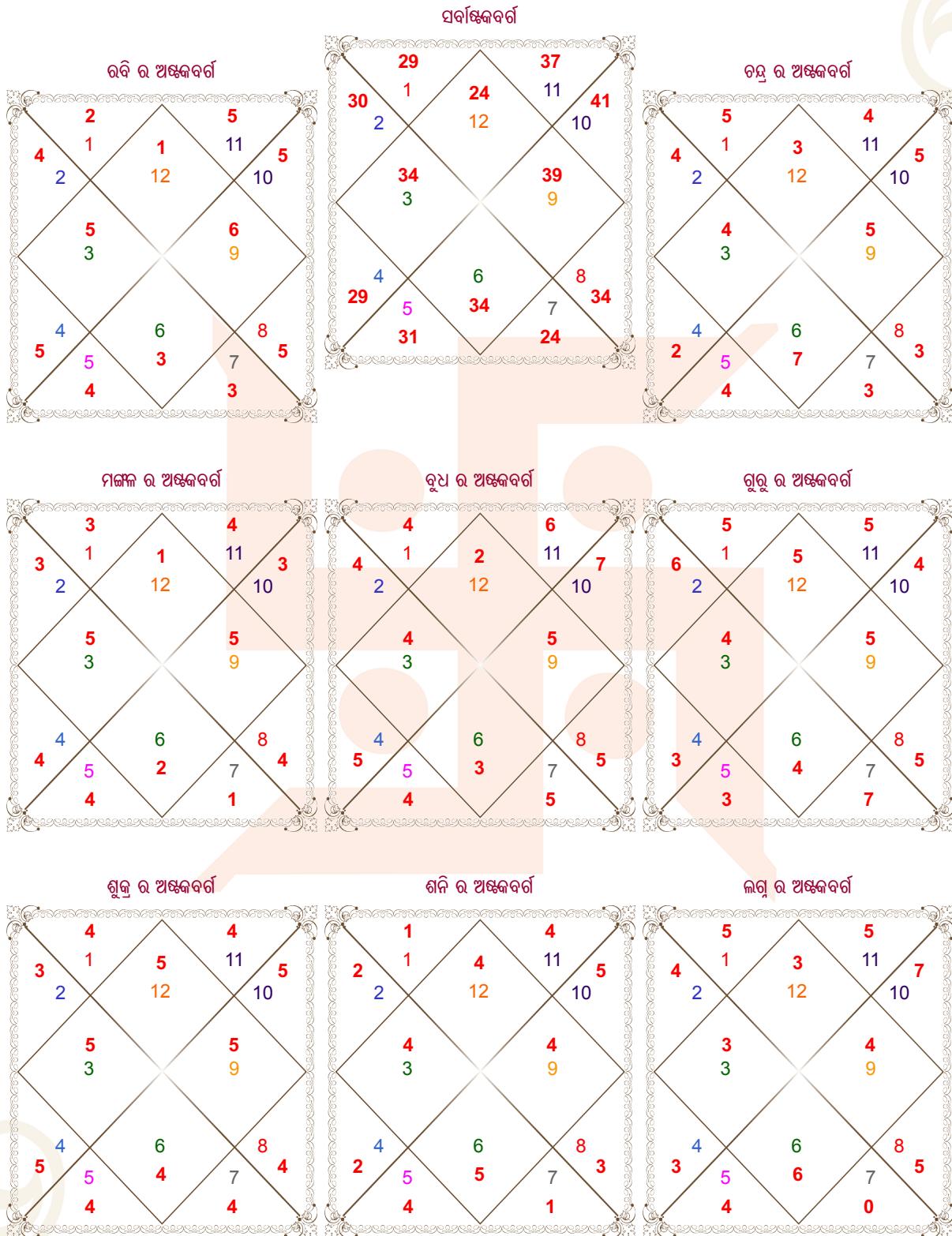
ଏକାଧିପତ୍ୟ ଶୋଧନ ପରେ ଅଞ୍ଜନବର୍ଗ ସାରଣୀ

| | ମେ | ତୁ | ମି | କ | ସିଂ | କ | ତୁ | ବି | ଧ | ମ | କୁ | ମା | ମୋଟ |
|---------|----|----|----|----|-----|---|----|----|---|----|----|----|-----|
| ଶନି | 0 | 0 | 0 | 0 | 3 | 0 | 0 | 1 | 2 | 3 | 3 | 2 | 14 |
| ଗୁରୁ | 2 | 2 | 0 | 0 | 0 | 0 | 2 | 2 | 0 | 0 | 1 | 2 | 11 |
| ମଙ୍ଗଳ | 0 | 1 | 4 | 3 | 1 | 0 | 0 | 3 | 2 | 1 | 3 | 0 | 18 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 0 | 1 | 2 | 4 | 2 | 0 | 0 | 4 | 4 | 2 | 2 | 0 | 21 |
| ଶୁକ୍ର | 0 | 0 | 0 | 1 | 0 | 0 | 0 | 0 | 0 | 2 | 0 | 1 | 4 |
| ବୁଧ | 0 | 0 | 0 | 3 | 0 | 0 | 0 | 3 | 1 | 4 | 2 | 0 | 13 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 1 | 0 | 1 | 0 | 0 | 1 | 0 | 1 | 0 | 1 | 1 | 1 | 7 |
| ଲଗ୍ନ | 1 | 0 | 2 | 0 | 0 | 2 | 0 | 2 | 0 | 3 | 5 | 0 | 15 |
| ରେ | 4 | 4 | 9 | 11 | 6 | 3 | 2 | 16 | 9 | 16 | 17 | 6 | 103 |

ଶୋଧ୍ୟ ପିଣ୍ଡ

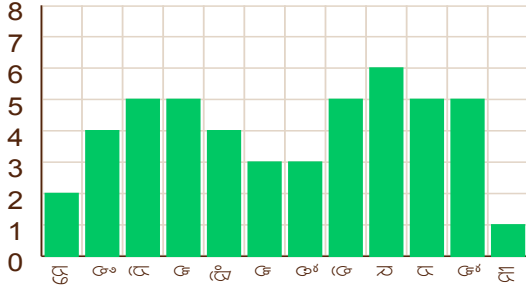
| | ଲଗ୍ନ | ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଚନ୍ଦ୍ର | ମଙ୍ଗଳ | ବୁଧ | ଗୁରୁ | ଶୁକ୍ର | ଶନି |
|-------------|------|---------|--------|-------|-----|------|-------|-----|
| ରାଶି ପିଣ୍ଡ | 119 | 162 | 56 | 144 | 87 | 99 | 26 | 128 |
| ଗ୍ରହ ପିଣ୍ଡ | 94 | 54 | 45 | 52 | 63 | 66 | 24 | 76 |
| ଶୋଧ୍ୟ ପିଣ୍ଡ | 213 | 216 | 101 | 196 | 150 | 165 | 50 | 204 |

ଅଞ୍ଜକବର୍ଣ ସାରଣୀ

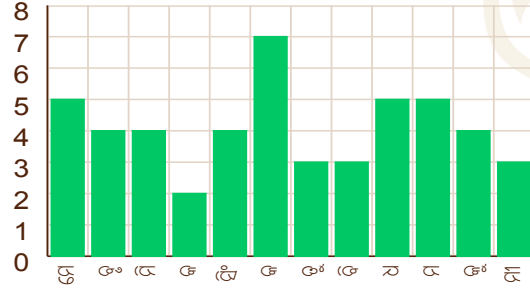


ଭିନ୍ନାଞ୍ଜନ ଗ୍ରାଫ

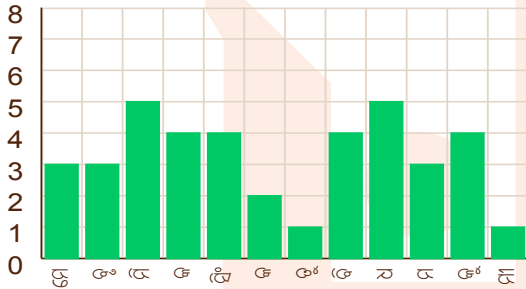
ସୂର୍ଯ୍ୟ



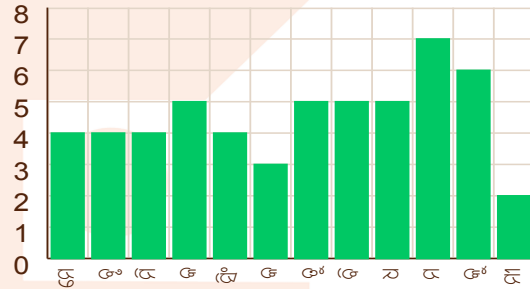
ଚନ୍ଦ୍ର



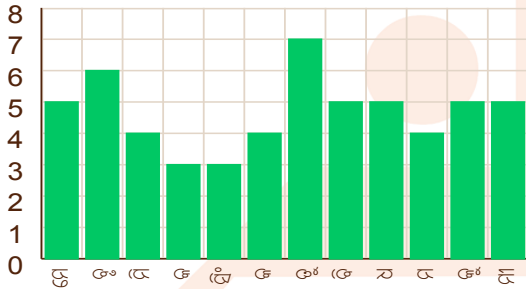
ମଙ୍ଗଳ



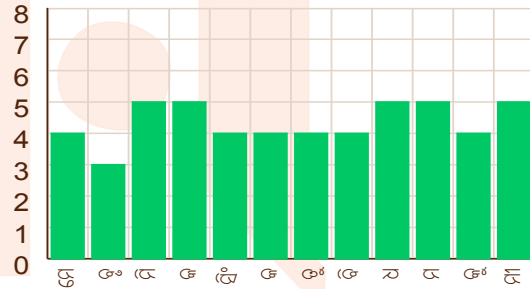
ବୁଧ



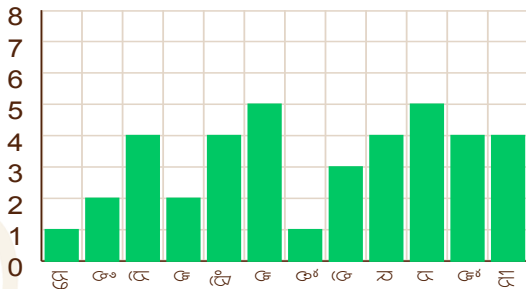
ଗୁରୁ



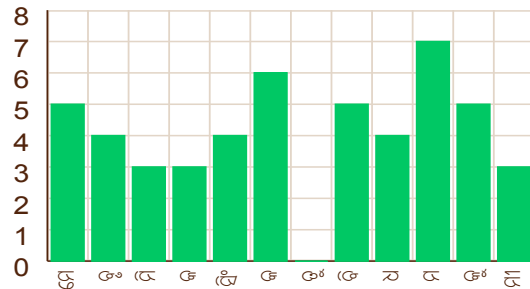
ଶୁକ୍ର



ଶନି

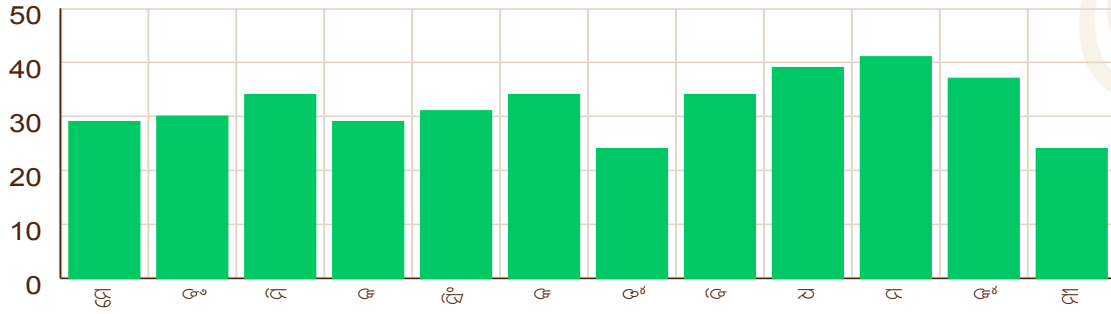


ରାହୁ

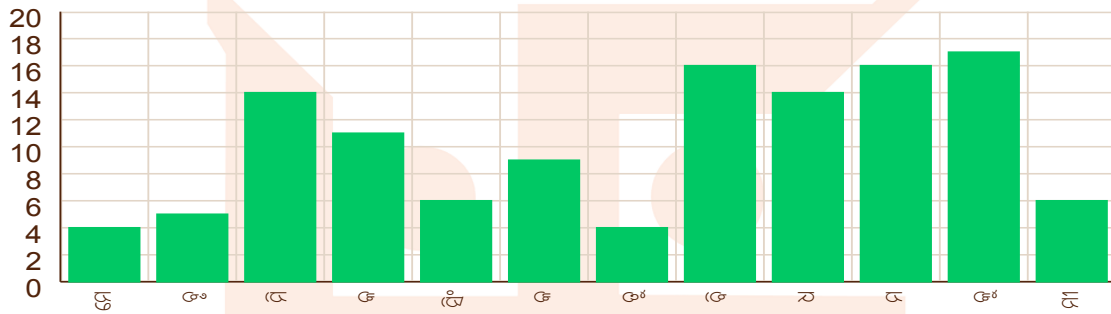


ଅଞ୍ଜକବର୍ଣ୍ଣ ଗ୍ରାଫ

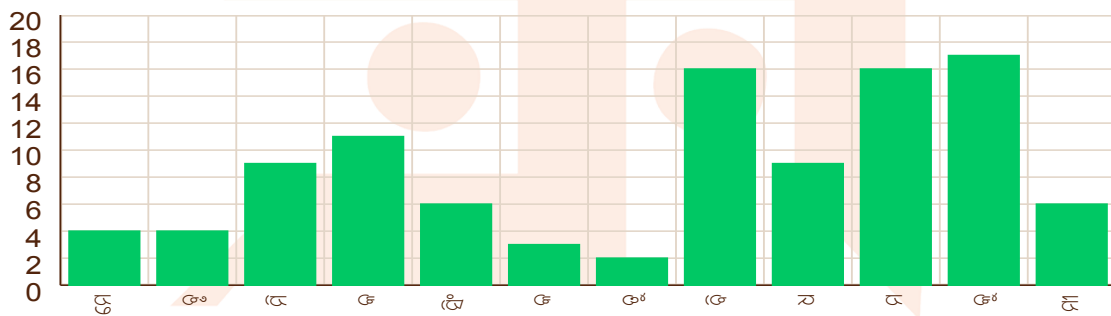
ସର୍ବାଞ୍ଜକବର୍ଣ୍ଣ



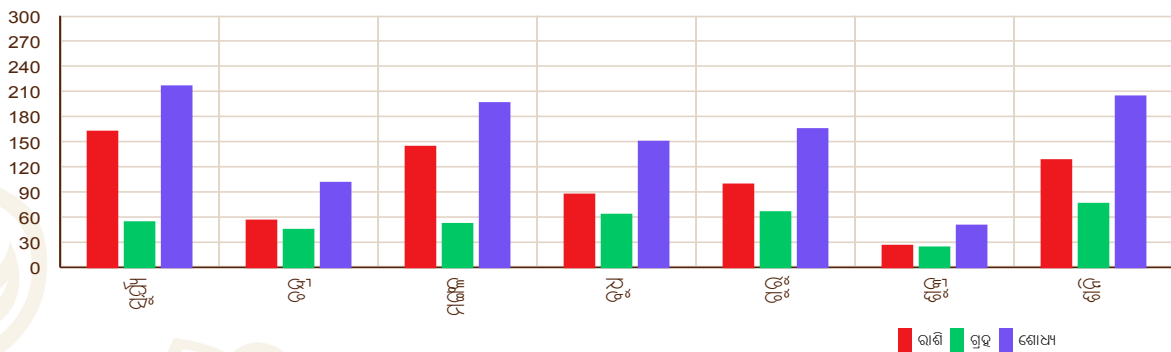
ତ୍ରିକୋଣ ଶୋଧନ ର ପଞ୍ଜର ଅଞ୍ଜକବର୍ଣ୍ଣ



ଏକାଧିପତ୍ୟ ଶୋଧନ ର ପଞ୍ଜର ଅଞ୍ଜକବର୍ଣ୍ଣ



ଶୋଧ୍ୟ ପିଣ୍ଡ



ବିଂଶୋତ୍ତରୀ ଦଶା

ଭୋଗ୍ୟ ଦଶା କାଳ : ଶୁକ୍ଳ 5 ବର୍ଷ 4 ମାସ 13 ଦିନ

| ଶୁକ୍ଳ 20 ବର୍ଷ | | ସୂର୍ଯ୍ୟ 6 ବର୍ଷ | | ଚନ୍ଦ୍ର 10 ବର୍ଷ | | ମଙ୍ଗଳ 7 ବର୍ଷ | | ରାହୁ 18 ବର୍ଷ | |
|----------------------|---------|-----------------------|---------|-----------------------|---------|---------------------|---------|---------------------|--|
| 05/03/1987 | | 17/07/1992 | | 18/07/1998 | | 17/07/2008 | | 18/07/2015 | |
| 17/07/1992 | | 18/07/1998 | | 17/07/2008 | | 18/07/2015 | | 17/07/2033 | |
| 00/00/0000 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 04/11/1992 | ଚନ୍ଦ୍ର | 18/05/1999 | ମଙ୍ଗଳ | 13/12/2008 | ରାହୁ | 30/03/2018 | |
| 00/00/0000 | ଚନ୍ଦ୍ର | 05/05/1993 | ମଙ୍ଗଳ | 17/12/1999 | ରାହୁ | 01/01/2010 | ଶୁକ୍ଳ | 23/08/2020 | |
| 00/00/0000 | ମଙ୍ଗଳ | 10/09/1993 | ରାହୁ | 17/06/2001 | ଶୁକ୍ଳ | 08/12/2010 | ଶନି | 30/06/2023 | |
| 00/00/0000 | ରାହୁ | 05/08/1994 | ଶୁକ୍ଳ | 17/10/2002 | ଶନି | 16/01/2012 | ବୁଧ | 16/01/2026 | |
| 00/00/0000 | ଶୁକ୍ଳ | 24/05/1995 | ଶନି | 17/05/2004 | ବୁଧ | 13/01/2013 | କେତୁ | 03/02/2027 | |
| 05/03/1987 | ଶନି | 05/05/1996 | ବୁଧ | 17/10/2005 | କେତୁ | 11/06/2013 | ଶୁକ୍ଳ | 03/02/2030 | |
| ଶନି 17/07/1988 | ବୁଧ | 11/03/1997 | କେତୁ | 18/05/2006 | ଶୁକ୍ଳ | 11/08/2014 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 29/12/2030 | |
| ବୁଧ 18/05/1991 | କେତୁ | 17/07/1997 | ଶୁକ୍ଳ | 16/01/2008 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 17/12/2014 | ଚନ୍ଦ୍ର | 29/06/2032 | |
| କେତୁ 17/07/1992 | ଶୁକ୍ଳ | 18/07/1998 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 17/07/2008 | ଚନ୍ଦ୍ର | 18/07/2015 | ମଙ୍ଗଳ | 17/07/2033 | |

| ଶୁକ୍ଳ 16 ବର୍ଷ | | ଶନି 19 ବର୍ଷ | | ବୁଧ 17 ବର୍ଷ | | କେତୁ 7 ବର୍ଷ | | ଶୁକ୍ଳ 20 ବର୍ଷ | |
|----------------------|------------|--------------------|------------|--------------------|------------|--------------------|------------|----------------------|------------|
| 17/07/2033 | | 17/07/2049 | | 17/07/2068 | | 17/07/2085 | | 17/07/2092 | |
| 17/07/2049 | | 17/07/2068 | | 17/07/2085 | | 17/07/2092 | | 00/00/0000 | |
| ଶୁକ୍ଳ | 04/09/2035 | ଶନି | 20/07/2052 | ବୁଧ | 14/12/2070 | କେତୁ | 13/12/2085 | ଶୁକ୍ଳ | 17/11/2095 |
| ଶନି | 18/03/2038 | ବୁଧ | 30/03/2055 | କେତୁ | 11/12/2071 | ଶୁକ୍ଳ | 13/02/2087 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 16/11/2096 |
| ବୁଧ | 23/06/2040 | କେତୁ | 08/05/2056 | ଶୁକ୍ଳ | 11/10/2074 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 20/06/2087 | ଚନ୍ଦ୍ର | 18/07/2098 |
| କେତୁ | 30/05/2041 | ଶୁକ୍ଳ | 09/07/2059 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 17/08/2075 | ଚନ୍ଦ୍ର | 19/01/2088 | ମଙ୍ଗଳ | 17/09/2099 |
| ଶୁକ୍ଳ | 29/01/2044 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 20/06/2060 | ଚନ୍ଦ୍ର | 16/01/2077 | ମଙ୍ଗଳ | 17/06/2088 | ରାହୁ | 17/09/2102 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 16/11/2044 | ଚନ୍ଦ୍ର | 19/01/2062 | ମଙ୍ଗଳ | 13/01/2078 | ରାହୁ | 05/07/2089 | ଶୁକ୍ଳ | 18/05/2105 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 18/03/2046 | ମଙ୍ଗଳ | 28/02/2063 | ରାହୁ | 01/08/2080 | ଶୁକ୍ଳ | 11/06/2090 | ଶନି | 06/03/2107 |
| ମଙ୍ଗଳ | 22/02/2047 | ରାହୁ | 04/01/2066 | ଶୁକ୍ଳ | 07/11/2082 | ଶନି | 21/07/2091 | | 00/00/0000 |
| ରାହୁ | 17/07/2049 | ଶୁକ୍ଳ | 17/07/2068 | ଶନି | 17/07/2085 | ବୁଧ | 17/07/2092 | | 00/00/0000 |

- ❖ ଉପରୋକ୍ତ ଦଶା ଚନ୍ଦ୍ରମା ର ଅଂଶ ଉପରେ ଦିଆ ଯାଇଛି । ଭୟାବ ଉଭୋଗ ର ଅନୁସାରେ ଦଶା ଶୁକ୍ଳ ୫ ବର୍ଷ ୫ ମାସ ୩ ଦିନ ହେଉଛି ।
- ❖ ଉପରୋକ୍ତ ତିଆ ଦଶାର ସମାପ୍ତ ହେବାର ସମୟ ଦର୍ଶାଉଛି । ବିଶୋଭରୀ ଦଶା ପୁରା ୧୨୦ ବର୍ଷର ଆୟୁ ନିର୍ଣ୍ଣୟ ଦିଆ ଯାଇଛି ।

ବିଂଶୋତ୍ତରୀ ଦଶା - ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷର

| ଶୁକ୍ର - ଶନି | ଶୁକ୍ର - ରୁଧ | ଶୁକ୍ର - କେତୁ | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ସୂର୍ଯ୍ୟ | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଚନ୍ଦ୍ର |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| 05/03/1987 | 17/07/1988 | 18/05/1991 | 17/07/1992 | 04/11/1992 |
| 17/07/1988 | 18/05/1991 | 17/07/1992 | 04/11/1992 | 05/05/1993 |
| 00/00/0000 | ରୁଧ 11/12/1988 | କେତୁ 12/06/1991 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 22/07/1992 | ଚନ୍ଦ୍ର 19/11/1992 |
| 00/00/0000 | କେତୁ 09/02/1989 | ଶୁକ୍ର 22/08/1991 | ଚନ୍ଦ୍ର 01/08/1992 | ମଙ୍ଗଳ 29/11/1992 |
| 00/00/0000 | ଶୁକ୍ର 31/07/1989 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 12/09/1991 | ମଙ୍ଗଳ 07/08/1992 | ରାହୁ 27/12/1992 |
| 05/03/1987 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 21/09/1989 | ଚନ୍ଦ୍ର 18/10/1991 | ରାହୁ 23/08/1992 | ଶୁକ୍ର 20/01/1993 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ 13/03/1987 | ଚନ୍ଦ୍ର 16/12/1989 | ମଙ୍ଗଳ 11/11/1991 | ଶୁକ୍ର 07/09/1992 | ଶନି 18/02/1993 |
| ଚନ୍ଦ୍ର 18/06/1987 | ମଙ୍ଗଳ 15/02/1990 | ରାହୁ 14/01/1992 | ଶନି 24/09/1992 | ରୁଧ 16/03/1993 |
| ମଙ୍ଗଳ 24/08/1987 | ରାହୁ 20/07/1990 | ଶୁକ୍ର 11/03/1992 | ରୁଧ 10/10/1992 | କେତୁ 27/03/1993 |
| ରାହୁ 14/02/1988 | ଶୁକ୍ର 05/12/1990 | ଶନି 18/05/1992 | କେତୁ 16/10/1992 | ଶୁକ୍ର 26/04/1993 |
| ଶୁକ୍ର 17/07/1988 | ଶନି 18/05/1991 | ରୁଧ 17/07/1992 | ଶୁକ୍ର 04/11/1992 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 05/05/1993 |

| ସୂର୍ଯ୍ୟ - ମଙ୍ଗଳ | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ରାହୁ | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଶୁକ୍ର | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଶନି | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ରୁଧ |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| 05/05/1993 | 10/09/1993 | 05/08/1994 | 24/05/1995 | 05/05/1996 |
| 10/09/1993 | 05/08/1994 | 24/05/1995 | 05/05/1996 | 11/03/1997 |
| ମଙ୍ଗଳ 13/05/1993 | ରାହୁ 29/10/1993 | ଶୁକ୍ର 13/09/1994 | ଶନି 18/07/1995 | ରୁଧ 18/06/1996 |
| ରାହୁ 01/06/1993 | ଶୁକ୍ର 12/12/1993 | ଶନି 29/10/1994 | ରୁଧ 05/09/1995 | କେତୁ 06/07/1996 |
| ଶୁକ୍ର 18/06/1993 | ଶନି 02/02/1994 | ରୁଧ 09/12/1994 | କେତୁ 25/09/1995 | ଶୁକ୍ର 27/08/1996 |
| ଶନି 08/07/1993 | ରୁଧ 21/03/1994 | କେତୁ 26/12/1994 | ଶୁକ୍ର 22/11/1995 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 11/09/1996 |
| ରୁଧ 26/07/1993 | କେତୁ 09/04/1994 | ଶୁକ୍ର 13/02/1995 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 10/12/1995 | ଚନ୍ଦ୍ର 07/10/1996 |
| କେତୁ 03/08/1993 | ଶୁକ୍ର 03/06/1994 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 28/02/1995 | ଚନ୍ଦ୍ର 07/01/1996 | ମଙ୍ଗଳ 25/10/1996 |
| ଶୁକ୍ର 24/08/1993 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 19/06/1994 | ଚନ୍ଦ୍ର 24/03/1995 | ମଙ୍ଗଳ 28/01/1996 | ରାହୁ 11/12/1996 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ 30/08/1993 | ଚନ୍ଦ୍ର 17/07/1994 | ମଙ୍ଗଳ 10/04/1995 | ରାହୁ 20/03/1996 | ଶୁକ୍ର 21/01/1997 |
| ଚନ୍ଦ୍ର 10/09/1993 | ମଙ୍ଗଳ 05/08/1994 | ରାହୁ 24/05/1995 | ଶୁକ୍ର 05/05/1996 | ଶନି 11/03/1997 |

| ସୂର୍ଯ୍ୟ - କେତୁ | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଶୁକ୍ର | ଚନ୍ଦ୍ର - ଚନ୍ଦ୍ର | ଚନ୍ଦ୍ର - ମଙ୍ଗଳ | ଚନ୍ଦ୍ର - ରାହୁ |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| 11/03/1997 | 17/07/1997 | 18/07/1998 | 18/05/1999 | 17/12/1999 |
| 17/07/1997 | 18/07/1998 | 18/05/1999 | 17/12/1999 | 17/06/2001 |
| କେତୁ 19/03/1997 | ଶୁକ୍ର 16/09/1997 | ଚନ୍ଦ୍ର 12/08/1998 | ମଙ୍ଗଳ 30/05/1999 | ରାହୁ 08/03/2000 |
| ଶୁକ୍ର 09/04/1997 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 04/10/1997 | ମଙ୍ଗଳ 30/08/1998 | ରାହୁ 01/07/1999 | ଶୁକ୍ର 20/05/2000 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ 16/04/1997 | ଚନ୍ଦ୍ର 04/11/1997 | ରାହୁ 14/10/1998 | ଶୁକ୍ର 30/07/1999 | ଶନି 15/08/2000 |
| ଚନ୍ଦ୍ର 26/04/1997 | ମଙ୍ଗଳ 25/11/1997 | ଶୁକ୍ର 24/11/1998 | ଶନି 01/09/1999 | ରୁଧ 01/11/2000 |
| ମଙ୍ଗଳ 04/05/1997 | ରାହୁ 19/01/1998 | ଶନି 11/01/1999 | ରୁଧ 02/10/1999 | କେତୁ 03/12/2000 |
| ରାହୁ 23/05/1997 | ଶୁକ୍ର 09/03/1998 | ରୁଧ 23/02/1999 | କେତୁ 14/10/1999 | ଶୁକ୍ର 04/03/2001 |
| ଶୁକ୍ର 09/06/1997 | ଶନି 05/05/1998 | କେତୁ 13/03/1999 | ଶୁକ୍ର 19/11/1999 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 31/03/2001 |
| ଶନି 29/06/1997 | ରୁଧ 26/06/1998 | ଶୁକ୍ର 03/05/1999 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 29/11/1999 | ଚନ୍ଦ୍ର 16/05/2001 |
| ରୁଧ 17/07/1997 | କେତୁ 18/07/1998 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 18/05/1999 | ଚନ୍ଦ୍ର 17/12/1999 | ମଙ୍ଗଳ 17/06/2001 |

ବିଂଶୋତ୍ତରୀ ଦଶା - ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷର

| ଚନ୍ଦ୍ର - ଗୁରୁ | | ଚନ୍ଦ୍ର - ଶନି | | ଚନ୍ଦ୍ର - ବୁଧ | | ଚନ୍ଦ୍ର - କେତୁ | | ଚନ୍ଦ୍ର - ଶୁକ୍ର | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 17/06/2001 | | 17/10/2002 | | 17/05/2004 | | 17/10/2005 | | 18/05/2006 | |
| 17/10/2002 | | 17/05/2004 | | 17/10/2005 | | 18/05/2006 | | 16/01/2008 | |
| ଗୁରୁ | 21/08/2001 | ଶନି | 16/01/2003 | ବୁଧ | 29/07/2004 | କେତୁ | 29/10/2005 | ଶୁକ୍ର | 27/08/2006 |
| ଶନି | 06/11/2001 | ବୁଧ | 08/04/2003 | କେତୁ | 29/08/2004 | ଶୁକ୍ର | 04/12/2005 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 27/09/2006 |
| ବୁଧ | 14/01/2002 | କେତୁ | 12/05/2003 | ଶୁକ୍ର | 23/11/2004 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 14/12/2005 | ଚନ୍ଦ୍ର | 16/11/2006 |
| କେତୁ | 11/02/2002 | ଶୁକ୍ର | 16/08/2003 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 19/12/2004 | ଚନ୍ଦ୍ର | 01/01/2006 | ମଙ୍ଗଳ | 22/12/2006 |
| ଶୁକ୍ର | 03/05/2002 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 14/09/2003 | ଚନ୍ଦ୍ର | 31/01/2005 | ମଙ୍ଗଳ | 13/01/2006 | ରାହୁ | 23/03/2007 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 28/05/2002 | ଚନ୍ଦ୍ର | 02/11/2003 | ମଙ୍ଗଳ | 02/03/2005 | ରାହୁ | 14/02/2006 | ଗୁରୁ | 12/06/2007 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 07/07/2002 | ମଙ୍ଗଳ | 05/12/2003 | ରାହୁ | 19/05/2005 | ଗୁରୁ | 15/03/2006 | ଶନି | 17/09/2007 |
| ମଙ୍ଗଳ | 05/08/2002 | ରାହୁ | 01/03/2004 | ଗୁରୁ | 27/07/2005 | ଶନି | 17/04/2006 | ବୁଧ | 12/12/2007 |
| ରାହୁ | 17/10/2002 | ଗୁରୁ | 17/05/2004 | ଶନି | 17/10/2005 | ବୁଧ | 18/05/2006 | କେତୁ | 16/01/2008 |
| 16/01/2008 | | 17/07/2008 | | 13/12/2008 | | 01/01/2010 | | 08/12/2010 | |
| 17/07/2008 | | 13/12/2008 | | 01/01/2010 | | 08/12/2010 | | 16/01/2012 | |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 26/01/2008 | ମଙ୍ଗଳ | 26/07/2008 | ରାହୁ | 09/02/2009 | ଗୁରୁ | 15/02/2010 | ଶନି | 10/02/2011 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 10/02/2008 | ରାହୁ | 17/08/2008 | ଗୁରୁ | 01/04/2009 | ଶନି | 10/04/2010 | ବୁଧ | 08/04/2011 |
| ମଙ୍ଗଳ | 20/02/2008 | ଗୁରୁ | 06/09/2008 | ଶନି | 01/06/2009 | ବୁଧ | 28/05/2010 | କେତୁ | 02/05/2011 |
| ରାହୁ | 19/03/2008 | ଶନି | 30/09/2008 | ବୁଧ | 25/07/2009 | କେତୁ | 17/06/2010 | ଶୁକ୍ର | 08/07/2011 |
| ଗୁରୁ | 12/04/2008 | ବୁଧ | 21/10/2008 | କେତୁ | 16/08/2009 | ଶୁକ୍ର | 13/08/2010 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 28/07/2011 |
| ଶନି | 11/05/2008 | କେତୁ | 29/10/2008 | ଶୁକ୍ର | 19/10/2009 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 30/08/2010 | ଚନ୍ଦ୍ର | 31/08/2011 |
| ବୁଧ | 06/06/2008 | ଶୁକ୍ର | 23/11/2008 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 07/11/2009 | ଚନ୍ଦ୍ର | 28/09/2010 | ମଙ୍ଗଳ | 24/09/2011 |
| କେତୁ | 17/06/2008 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 01/12/2008 | ଚନ୍ଦ୍ର | 09/12/2009 | ମଙ୍ଗଳ | 17/10/2010 | ରାହୁ | 23/11/2011 |
| ଶୁକ୍ର | 17/07/2008 | ଚନ୍ଦ୍ର | 13/12/2008 | ମଙ୍ଗଳ | 01/01/2010 | ରାହୁ | 08/12/2010 | ଗୁରୁ | 16/01/2012 |
| 16/01/2012 | | 13/01/2013 | | 11/06/2013 | | 11/08/2014 | | 11/08/2014 | |
| 13/01/2013 | | 11/06/2013 | | 11/08/2014 | | 11/08/2014 | | 17/12/2014 | |
| ବୁଧ | 08/03/2012 | କେତୁ | 21/01/2013 | ଶୁକ୍ର | 21/08/2013 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 17/08/2014 | ଚନ୍ଦ୍ର | 03/01/2015 |
| କେତୁ | 29/03/2012 | ଶୁକ୍ର | 15/02/2013 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 11/09/2013 | ଚନ୍ଦ୍ର | 28/08/2014 | ମଙ୍ଗଳ | 16/01/2015 |
| ଶୁକ୍ର | 28/05/2012 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 23/02/2013 | ଚନ୍ଦ୍ର | 17/10/2013 | ମଙ୍ଗଳ | 04/09/2014 | ରାହୁ | 17/02/2015 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 15/06/2012 | ଚନ୍ଦ୍ର | 07/03/2013 | ମଙ୍ଗଳ | 10/11/2013 | ରାହୁ | 24/09/2014 | ଗୁରୁ | 17/03/2015 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 15/07/2012 | ମଙ୍ଗଳ | 16/03/2013 | ରାହୁ | 13/01/2014 | ଗୁରୁ | 11/10/2014 | ଶନି | 20/04/2015 |
| ମଙ୍ଗଳ | 06/08/2012 | ରାହୁ | 07/04/2013 | ଗୁରୁ | 11/03/2014 | ଶନି | 31/10/2014 | ବୁଧ | 20/05/2015 |
| ରାହୁ | 29/09/2012 | ଗୁରୁ | 27/04/2013 | ଶନି | 18/05/2014 | ବୁଧ | 18/11/2014 | କେତୁ | 02/06/2015 |
| ଗୁରୁ | 16/11/2012 | ଶନି | 21/05/2013 | ବୁଧ | 17/07/2014 | କେତୁ | 25/11/2014 | ଶୁକ୍ର | 07/07/2015 |
| ଶନି | 13/01/2013 | ବୁଧ | 11/06/2013 | କେତୁ | 11/08/2014 | ଶୁକ୍ର | 17/12/2014 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 18/07/2015 |

ବିଂଶୋତ୍ତରୀ ଦଶା - ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷର

| ରାହୁ - ରାହୁ | | ଗୁରୁ - ଗୁରୁ | | ରାହୁ - ଶନି | | ରାହୁ - ବୁଧ | | ରାହୁ - କେତୁ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 18/07/2015 | | 30/03/2018 | | 23/08/2020 | | 30/06/2023 | | 16/01/2026 | |
| 30/03/2018 | | 23/08/2020 | | 30/06/2023 | | 16/01/2026 | | 03/02/2027 | |
| ରାହୁ | 13/12/2015 | ଗୁରୁ | 25/07/2018 | ଶନି | 03/02/2021 | ବୁଧ | 08/11/2023 | କେତୁ | 07/02/2026 |
| ଗୁରୁ | 22/04/2016 | ଶନି | 11/12/2018 | ବୁଧ | 01/07/2021 | କେତୁ | 02/01/2024 | ଶୁକ୍ର | 12/04/2026 |
| ଶନି | 25/09/2016 | ବୁଧ | 14/04/2019 | କେତୁ | 31/08/2021 | ଶୁକ୍ର | 05/06/2024 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 01/05/2026 |
| ବୁଧ | 12/02/2017 | କେତୁ | 04/06/2019 | ଶୁକ୍ର | 20/02/2022 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 22/07/2024 | ଚନ୍ଦ୍ର | 02/06/2026 |
| କେତୁ | 11/04/2017 | ଶୁକ୍ର | 28/10/2019 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 13/04/2022 | ଚନ୍ଦ୍ର | 07/10/2024 | ମଙ୍ଗଳ | 25/06/2026 |
| ଶୁକ୍ର | 22/09/2017 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 11/12/2019 | ଚନ୍ଦ୍ର | 09/07/2022 | ମଙ୍ଗଳ | 01/12/2024 | ରାହୁ | 21/08/2026 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 10/11/2017 | ଚନ୍ଦ୍ର | 22/02/2020 | ମଙ୍ଗଳ | 08/09/2022 | ରାହୁ | 19/04/2025 | ଗୁରୁ | 11/10/2026 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 31/01/2018 | ମଙ୍ଗଳ | 13/04/2020 | ରାହୁ | 11/02/2023 | ଗୁରୁ | 21/08/2025 | ଶନି | 11/12/2026 |
| ମଙ୍ଗଳ | 30/03/2018 | ରାହୁ | 23/08/2020 | ଗୁରୁ | 30/06/2023 | ଶନି | 16/01/2026 | ବୁଧ | 03/02/2027 |

| ରାହୁ - ଶୁକ୍ର | | ରାହୁ - ସୂର୍ଯ୍ୟ | | ରାହୁ - ଚନ୍ଦ୍ର | | ରାହୁ - ମଙ୍ଗଳ | | ଗୁରୁ - ଗୁରୁ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 03/02/2027 | | 03/02/2030 | | 29/12/2030 | | 29/06/2032 | | 17/07/2033 | |
| 03/02/2030 | | 29/12/2030 | | 29/06/2032 | | 17/07/2033 | | 04/09/2035 | |
| ଶୁକ୍ର | 05/08/2027 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 20/02/2030 | ଚନ୍ଦ୍ର | 13/02/2031 | ମଙ୍ଗଳ | 21/07/2032 | ଗୁରୁ | 29/10/2033 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 29/09/2027 | ଚନ୍ଦ୍ର | 19/03/2030 | ମଙ୍ଗଳ | 16/03/2031 | ରାହୁ | 17/09/2032 | ଶନି | 02/03/2034 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 29/12/2027 | ମଙ୍ଗଳ | 07/04/2030 | ରାହୁ | 07/06/2031 | ଗୁରୁ | 07/11/2032 | ବୁଧ | 20/06/2034 |
| ମଙ୍ଗଳ | 02/03/2028 | ରାହୁ | 26/05/2030 | ଗୁରୁ | 19/08/2031 | ଶନି | 07/01/2033 | କେତୁ | 04/08/2034 |
| ରାହୁ | 13/08/2028 | ଗୁରୁ | 09/07/2030 | ଶନି | 13/11/2031 | ବୁଧ | 02/03/2033 | ଶୁକ୍ର | 12/12/2034 |
| ଗୁରୁ | 07/01/2029 | ଶନି | 30/08/2030 | ବୁଧ | 30/01/2032 | କେତୁ | 24/03/2033 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 20/01/2035 |
| ଶନି | 29/06/2029 | ବୁଧ | 16/10/2030 | କେତୁ | 02/03/2032 | ଶୁକ୍ର | 27/05/2033 | ଚନ୍ଦ୍ର | 26/03/2035 |
| ବୁଧ | 01/12/2029 | କେତୁ | 04/11/2030 | ଶୁକ୍ର | 01/06/2032 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 15/06/2033 | ମଙ୍ଗଳ | 11/05/2035 |
| କେତୁ | 03/02/2030 | ଶୁକ୍ର | 29/12/2030 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 29/06/2032 | ଚନ୍ଦ୍ର | 17/07/2033 | ରାହୁ | 04/09/2035 |

| ଗୁରୁ - ଶନି | | ଗୁରୁ - ବୁଧ | | ଗୁରୁ - କେତୁ | | ଗୁରୁ - ଶୁକ୍ର | | ଗୁରୁ - ସୂର୍ଯ୍ୟ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 04/09/2035 | | 18/03/2038 | | 23/06/2040 | | 30/05/2041 | | 29/01/2044 | |
| 18/03/2038 | | 23/06/2040 | | 30/05/2041 | | 29/01/2044 | | 16/11/2044 | |
| ଶନି | 29/01/2036 | ବୁଧ | 13/07/2038 | କେତୁ | 13/07/2040 | ଶୁକ୍ର | 08/11/2041 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 12/02/2044 |
| ବୁଧ | 08/06/2036 | କେତୁ | 30/08/2038 | ଶୁକ୍ର | 07/09/2040 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 27/12/2041 | ଚନ୍ଦ୍ର | 08/03/2044 |
| କେତୁ | 01/08/2036 | ଶୁକ୍ର | 15/01/2039 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 24/09/2040 | ଚନ୍ଦ୍ର | 18/03/2042 | ମଙ୍ଗଳ | 25/03/2044 |
| ଶୁକ୍ର | 02/01/2037 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 26/02/2039 | ଚନ୍ଦ୍ର | 23/10/2040 | ମଙ୍ଗଳ | 14/05/2042 | ରାହୁ | 07/05/2044 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 18/02/2037 | ଚନ୍ଦ୍ର | 06/05/2039 | ମଙ୍ଗଳ | 12/11/2040 | ରାହୁ | 07/10/2042 | ଗୁରୁ | 15/06/2044 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 06/05/2037 | ମଙ୍ଗଳ | 23/06/2039 | ରାହୁ | 02/01/2041 | ଗୁରୁ | 14/02/2043 | ଶନି | 01/08/2044 |
| ମଙ୍ଗଳ | 29/06/2037 | ରାହୁ | 25/10/2039 | ଗୁରୁ | 16/02/2041 | ଶନି | 18/07/2043 | ବୁଧ | 11/09/2044 |
| ରାହୁ | 14/11/2037 | ଗୁରୁ | 13/02/2040 | ଶନି | 11/04/2041 | ବୁଧ | 03/12/2043 | କେତୁ | 28/09/2044 |
| ଗୁରୁ | 18/03/2038 | ଶନି | 23/06/2040 | ବୁଧ | 30/05/2041 | କେତୁ | 29/01/2044 | ଶୁକ୍ର | 16/11/2044 |

ବିଂଶୋତ୍ତରୀ ଦଶା - ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷର

| ଗୁରୁ - ଚନ୍ଦ୍ର | | ଗୁରୁ - ମଙ୍ଗଳ | | ଗୁରୁ - ରାହୁ | | ଶନି - ଶନି | | ଶନି - ବୁଧ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 16/11/2044 | | 18/03/2046 | | 22/02/2047 | | 17/07/2049 | | 20/07/2052 | |
| 18/03/2046 | | 22/02/2047 | | 17/07/2049 | | 20/07/2052 | | 30/03/2055 | |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 26/12/2044 | ମଙ୍ଗଳ | 07/04/2046 | ରାହୁ | 03/07/2047 | ଶନି | 07/01/2050 | ବୁଧ | 06/12/2052 |
| ମଙ୍ଗଳ | 24/01/2045 | ରାହୁ | 28/05/2046 | ଗୁରୁ | 28/10/2047 | ବୁଧ | 12/06/2050 | କେତୁ | 02/02/2053 |
| ରାହୁ | 07/04/2045 | ଗୁରୁ | 12/07/2046 | ଶନି | 15/03/2048 | କେତୁ | 15/08/2050 | ଶୁକ୍ର | 16/07/2053 |
| ଗୁରୁ | 11/06/2045 | ଶନି | 04/09/2046 | ବୁଧ | 17/07/2048 | ଶୁକ୍ର | 14/02/2051 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 03/09/2053 |
| ଶନି | 27/08/2045 | ବୁଧ | 23/10/2046 | କେତୁ | 06/09/2048 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 10/04/2051 | ଚନ୍ଦ୍ର | 24/11/2053 |
| ବୁଧ | 04/11/2045 | କେତୁ | 11/11/2046 | ଶୁକ୍ର | 30/01/2049 | ଚନ୍ଦ୍ର | 11/07/2051 | ମଙ୍ଗଳ | 20/01/2054 |
| କେତୁ | 02/12/2045 | ଶୁକ୍ର | 07/01/2047 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 15/03/2049 | ମଙ୍ଗଳ | 13/09/2051 | ରାହୁ | 16/06/2054 |
| ଶୁକ୍ର | 21/02/2046 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 24/01/2047 | ଚନ୍ଦ୍ର | 27/05/2049 | ରାହୁ | 25/02/2052 | ଗୁରୁ | 26/10/2054 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 18/03/2046 | ଚନ୍ଦ୍ର | 22/02/2047 | ମଙ୍ଗଳ | 17/07/2049 | ଗୁରୁ | 20/07/2052 | ଶନି | 30/03/2055 |

| ଶନି - କେତୁ | | ଶନି - ଶୁକ୍ର | | ଶନି - ସୂର୍ଯ୍ୟ | | ଶନି - ଚନ୍ଦ୍ର | | ଶନି - ମଙ୍ଗଳ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 30/03/2055 | | 08/05/2056 | | 09/07/2059 | | 20/06/2060 | | 19/01/2062 | |
| 08/05/2056 | | 09/07/2059 | | 20/06/2060 | | 19/01/2062 | | 28/02/2063 | |
| କେତୁ | 23/04/2055 | ଶୁକ୍ର | 17/11/2056 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 26/07/2059 | ଚନ୍ଦ୍ର | 07/08/2060 | ମଙ୍ଗଳ | 12/02/2062 |
| ଶୁକ୍ର | 29/06/2055 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 14/01/2057 | ଚନ୍ଦ୍ର | 24/08/2059 | ମଙ୍ଗଳ | 10/09/2060 | ରାହୁ | 13/04/2062 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 20/07/2055 | ଚନ୍ଦ୍ର | 20/04/2057 | ମଙ୍ଗଳ | 13/09/2059 | ରାହୁ | 05/12/2060 | ଗୁରୁ | 06/06/2062 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 22/08/2055 | ମଙ୍ଗଳ | 26/06/2057 | ରାହୁ | 04/11/2059 | ଗୁରୁ | 20/02/2061 | ଶନି | 09/08/2062 |
| ମଙ୍ଗଳ | 15/09/2055 | ରାହୁ | 17/12/2057 | ଗୁରୁ | 20/12/2059 | ଶନି | 23/05/2061 | ବୁଧ | 06/10/2062 |
| ରାହୁ | 15/11/2055 | ଗୁରୁ | 20/05/2058 | ଶନି | 13/02/2060 | ବୁଧ | 13/08/2061 | କେତୁ | 29/10/2062 |
| ଗୁରୁ | 08/01/2056 | ଶନି | 19/11/2058 | ବୁଧ | 03/04/2060 | କେତୁ | 16/09/2061 | ଶୁକ୍ର | 05/01/2063 |
| ଶନି | 12/03/2056 | ବୁଧ | 02/05/2059 | କେତୁ | 23/04/2060 | ଶୁକ୍ର | 21/12/2061 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 25/01/2063 |
| ବୁଧ | 08/05/2056 | କେତୁ | 09/07/2059 | ଶୁକ୍ର | 20/06/2060 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 19/01/2062 | ଚନ୍ଦ୍ର | 28/02/2063 |

| ଶନି - ରାହୁ | | ଶନି - ଗୁରୁ | | ବୁଧ - ବୁଧ | | ବୁଧ - କେତୁ | | ବୁଧ - ଶୁକ୍ର | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 28/02/2063 | | 04/01/2066 | | 17/07/2068 | | 14/12/2070 | | 11/12/2071 | |
| 04/01/2066 | | 17/07/2068 | | 14/12/2070 | | 11/12/2071 | | 11/10/2074 | |
| ରାହୁ | 03/08/2063 | ଗୁରୁ | 07/05/2066 | ବୁଧ | 19/11/2068 | କେତୁ | 04/01/2071 | ଶୁକ୍ର | 31/05/2072 |
| ଗୁରୁ | 20/12/2063 | ଶନି | 01/10/2066 | କେତୁ | 09/01/2069 | ଶୁକ୍ର | 05/03/2071 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 22/07/2072 |
| ଶନି | 02/06/2064 | ବୁଧ | 09/02/2067 | ଶୁକ୍ର | 05/06/2069 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 23/03/2071 | ଚନ୍ଦ୍ର | 16/10/2072 |
| ବୁଧ | 27/10/2064 | କେତୁ | 04/04/2067 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 19/07/2069 | ଚନ୍ଦ୍ର | 22/04/2071 | ମଙ୍ଗଳ | 16/12/2072 |
| କେତୁ | 27/12/2064 | ଶୁକ୍ର | 05/09/2067 | ଚନ୍ଦ୍ର | 30/09/2069 | ମଙ୍ଗଳ | 14/05/2071 | ରାହୁ | 20/05/2073 |
| ଶୁକ୍ର | 18/06/2065 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 21/10/2067 | ମଙ୍ଗଳ | 20/11/2069 | ରାହୁ | 07/07/2071 | ଗୁରୁ | 05/10/2073 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 09/08/2065 | ଚନ୍ଦ୍ର | 06/01/2068 | ରାହୁ | 01/04/2070 | ଗୁରୁ | 24/08/2071 | ଶନି | 18/03/2074 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 04/11/2065 | ମଙ୍ଗଳ | 29/02/2068 | ଗୁରୁ | 27/07/2070 | ଶନି | 21/10/2071 | ବୁଧ | 11/08/2074 |
| ମଙ୍ଗଳ | 04/01/2066 | ରାହୁ | 17/07/2068 | ଶନି | 14/12/2070 | ବୁଧ | 11/12/2071 | କେତୁ | 11/10/2074 |

ବିଂଶୋତ୍ତରୀ ଦଶା - ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷର

| ରୁଧ - ପୂର୍ଣ୍ଣ | | ରୁଧ - ଚନ୍ଦ୍ର | | ରୁଧ - ମଙ୍ଗଳ | | ରୁଧ - ରାହୁ | | ରୁଧ - ଶୁକ୍ର | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 11/10/2074 | | 17/08/2075 | | 16/01/2077 | | 13/01/2078 | | 01/08/2080 | |
| 17/08/2075 | | 16/01/2077 | | 13/01/2078 | | 01/08/2080 | | 07/11/2082 | |
| ପୂର୍ଣ୍ଣ | 26/10/2074 | ଚନ୍ଦ୍ର | 29/09/2075 | ମଙ୍ଗଳ | 06/02/2077 | ରାହୁ | 02/06/2078 | ଶୁକ୍ର | 20/11/2080 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 21/11/2074 | ମଙ୍ଗଳ | 30/10/2075 | ରାହୁ | 01/04/2077 | ଶୁକ୍ର | 04/10/2078 | ଶନି | 31/03/2081 |
| ମଙ୍ଗଳ | 09/12/2074 | ରାହୁ | 15/01/2076 | ଶୁକ୍ର | 19/05/2077 | ଶନି | 28/02/2079 | ରୁଧ | 26/07/2081 |
| ରାହୁ | 25/01/2075 | ଶୁକ୍ର | 24/03/2076 | ଶନି | 16/07/2077 | ରୁଧ | 10/07/2079 | କେତୁ | 12/09/2081 |
| ଶୁକ୍ର | 07/03/2075 | ଶନି | 14/06/2076 | ରୁଧ | 05/09/2077 | କେତୁ | 02/09/2079 | ଶୁକ୍ର | 28/01/2082 |
| ଶନି | 25/04/2075 | ରୁଧ | 26/08/2076 | କେତୁ | 26/09/2077 | ଶୁକ୍ର | 05/02/2080 | ପୂର୍ଣ୍ଣ | 11/03/2082 |
| ରୁଧ | 08/06/2075 | କେତୁ | 26/09/2076 | ଶୁକ୍ର | 26/11/2077 | ପୂର୍ଣ୍ଣ | 22/03/2080 | ଚନ୍ଦ୍ର | 19/05/2082 |
| କେତୁ | 26/06/2075 | ଶୁକ୍ର | 21/12/2076 | ପୂର୍ଣ୍ଣ | 14/12/2077 | ଚନ୍ଦ୍ର | 08/06/2080 | ମଙ୍ଗଳ | 06/07/2082 |
| ଶୁକ୍ର | 17/08/2075 | ପୂର୍ଣ୍ଣ | 16/01/2077 | ଚନ୍ଦ୍ର | 13/01/2078 | ମଙ୍ଗଳ | 01/08/2080 | ରାହୁ | 07/11/2082 |
| 07/11/2082 | | 17/07/2085 | | 13/12/2085 | | 13/02/2087 | | 20/06/2087 | |
| 17/07/2085 | | 13/12/2085 | | 13/02/2087 | | 20/06/2087 | | 19/01/2088 | |
| ଶନି | 12/04/2083 | କେତୁ | 26/07/2085 | ଶୁକ୍ର | 22/02/2086 | ପୂର୍ଣ୍ଣ | 19/02/2087 | ଚନ୍ଦ୍ର | 08/07/2087 |
| ରୁଧ | 29/08/2083 | ଶୁକ୍ର | 20/08/2085 | ପୂର୍ଣ୍ଣ | 16/03/2086 | ଚନ୍ଦ୍ର | 02/03/2087 | ମଙ୍ଗଳ | 21/07/2087 |
| କେତୁ | 25/10/2083 | ପୂର୍ଣ୍ଣ | 27/08/2085 | ଚନ୍ଦ୍ର | 20/04/2086 | ମଙ୍ଗଳ | 09/03/2087 | ରାହୁ | 22/08/2087 |
| ଶୁକ୍ର | 06/04/2084 | ଚନ୍ଦ୍ର | 09/09/2085 | ମଙ୍ଗଳ | 15/05/2086 | ରାହୁ | 28/03/2087 | ଶୁକ୍ର | 19/09/2087 |
| ପୂର୍ଣ୍ଣ | 25/05/2084 | ମଙ୍ଗଳ | 17/09/2085 | ରାହୁ | 18/07/2086 | ଶୁକ୍ର | 14/04/2087 | ଶନି | 23/10/2087 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 15/08/2084 | ରାହୁ | 10/10/2085 | ଶୁକ୍ର | 13/09/2086 | ଶନି | 05/05/2087 | ରୁଧ | 22/11/2087 |
| ମଙ୍ଗଳ | 12/10/2084 | ଶୁକ୍ର | 30/10/2085 | ଶନି | 19/11/2086 | ରୁଧ | 23/05/2087 | କେତୁ | 04/12/2087 |
| ରାହୁ | 08/03/2085 | ଶନି | 22/11/2085 | ରୁଧ | 19/01/2087 | କେତୁ | 30/05/2087 | ଶୁକ୍ର | 09/01/2088 |
| ଶୁକ୍ର | 17/07/2085 | ରୁଧ | 13/12/2085 | କେତୁ | 13/02/2087 | ଶୁକ୍ର | 20/06/2087 | ପୂର୍ଣ୍ଣ | 19/01/2088 |
| 19/01/2088 | | 17/06/2088 | | 05/07/2089 | | 11/06/2090 | | 11/06/2090 | |
| 17/06/2088 | | 05/07/2089 | | 11/06/2090 | | 21/07/2091 | | 21/07/2091 | |
| ମଙ୍ଗଳ | 28/01/2088 | ରାହୁ | 13/08/2088 | ଶୁକ୍ର | 20/08/2089 | ଶନି | 14/08/2090 | ରୁଧ | 10/09/2091 |
| ରାହୁ | 20/02/2088 | ଶୁକ୍ର | 03/10/2088 | ଶନି | 13/10/2089 | ରୁଧ | 10/10/2090 | କେତୁ | 01/10/2091 |
| ଶୁକ୍ର | 10/03/2088 | ଶନି | 03/12/2088 | ରୁଧ | 30/11/2089 | କେତୁ | 03/11/2090 | ଶୁକ୍ର | 01/12/2091 |
| ଶନି | 03/04/2088 | ରୁଧ | 26/01/2089 | କେତୁ | 20/12/2089 | ଶୁକ୍ର | 10/01/2091 | ପୂର୍ଣ୍ଣ | 19/12/2091 |
| ରୁଧ | 24/04/2088 | କେତୁ | 18/02/2089 | ଶୁକ୍ର | 15/02/2090 | ପୂର୍ଣ୍ଣ | 30/01/2091 | ଚନ୍ଦ୍ର | 18/01/2092 |
| କେତୁ | 03/05/2088 | ଶୁକ୍ର | 23/04/2089 | ପୂର୍ଣ୍ଣ | 04/03/2090 | ଚନ୍ଦ୍ର | 05/03/2091 | ମଙ୍ଗଳ | 08/02/2092 |
| ଶୁକ୍ର | 28/05/2088 | ପୂର୍ଣ୍ଣ | 12/05/2089 | ଚନ୍ଦ୍ର | 01/04/2090 | ମଙ୍ଗଳ | 28/03/2091 | ରାହୁ | 02/04/2092 |
| ପୂର୍ଣ୍ଣ | 04/06/2088 | ଚନ୍ଦ୍ର | 13/06/2089 | ମଙ୍ଗଳ | 21/04/2090 | ରାହୁ | 28/05/2091 | ଶୁକ୍ର | 21/05/2092 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 17/06/2088 | ମଙ୍ଗଳ | 05/07/2089 | ରାହୁ | 11/06/2090 | ଶୁକ୍ର | 21/07/2091 | ଶନି | 17/07/2092 |

ବିଂଶୋତ୍ତରୀ ଦଶା - ସୁକ୍ତ

| ରାହୁ - ଶନି - ଚନ୍ଦ୍ର | | ରାହୁ - ଶନି - ମଙ୍ଗଳ | | ରାହୁ - ଶନି - ରାହୁ | | ରାହୁ - ଶନି - ଗୁରୁ | |
|----------------------------|------------------|---------------------------|------------------|---------------------------|------------------|-----------------------------|------------------|
| 13/04/2022 14:22 | | 09/07/2022 08:17 | | 08/09/2022 01:38 | | 11/02/2023 05:06 | |
| 09/07/2022 08:17 | | 08/09/2022 01:38 | | 11/02/2023 05:06 | | 30/06/2023 00:11 | |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 20/04/2022 19:51 | ମଙ୍ଗଳ | 12/07/2022 21:18 | ରାହୁ | 01/10/2022 11:45 | ଗୁରୁ | 01/03/2023 17:15 |
| ମଙ୍ଗଳ | 25/04/2022 21:18 | ରାହୁ | 21/07/2022 23:54 | ଗୁରୁ | 22/10/2022 07:25 | ଶନି | 23/03/2023 16:40 |
| ରାହୁ | 08/05/2022 21:35 | ଗୁରୁ | 30/07/2022 02:13 | ଶନି | 16/11/2022 00:46 | ବୁଧ | 12/04/2023 08:34 |
| ଗୁରୁ | 20/05/2022 11:11 | ଶନି | 08/08/2022 16:58 | ବୁଧ | 08/12/2022 03:39 | କେତୁ | 20/04/2023 10:53 |
| ଶନି | 03/06/2022 04:49 | ବୁଧ | 17/08/2022 07:25 | କେତୁ | 17/12/2022 06:15 | ଶୁକ୍ର | 13/05/2023 14:04 |
| ବୁଧ | 15/06/2022 11:45 | କେତୁ | 20/08/2022 20:26 | ଶୁକ୍ର | 12/01/2023 06:50 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 20/05/2023 12:37 |
| କେତୁ | 20/06/2022 13:12 | ଶୁକ୍ର | 30/08/2022 23:19 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 20/01/2023 02:13 | ଚନ୍ଦ୍ର | 01/06/2023 02:12 |
| ଶୁକ୍ର | 05/07/2022 00:11 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 03/09/2022 00:11 | ଚନ୍ଦ୍ର | 02/02/2023 02:30 | ମଙ୍ଗଳ | 09/06/2023 04:31 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 09/07/2022 08:17 | ଚନ୍ଦ୍ର | 08/09/2022 01:38 | ମଙ୍ଗଳ | 11/02/2023 05:06 | ରାହୁ | 30/06/2023 00:11 |
| ରାହୁ - ବୁଧ - ବୁଧ | | ରାହୁ - ବୁଧ - କେତୁ | | ରାହୁ - ବୁଧ - ଶୁକ୍ର | | ରାହୁ - ବୁଧ - ସୂର୍ଯ୍ୟ | |
| 30/06/2023 00:11 | | 08/11/2023 22:54 | | 02/01/2024 06:50 | | 05/06/2024 12:23 | |
| 08/11/2023 22:54 | | 02/01/2024 06:50 | | 05/06/2024 12:23 | | 22/07/2024 02:03 | |
| ବୁଧ | 18/07/2023 16:48 | କେତୁ | 12/11/2023 02:58 | ଶୁକ୍ର | 28/01/2024 03:46 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 07/06/2024 20:16 |
| କେତୁ | 26/07/2023 09:31 | ଶୁକ୍ର | 21/11/2023 04:17 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 04/02/2024 22:03 | ଚନ୍ଦ୍ର | 11/06/2024 17:25 |
| ଶୁକ୍ର | 17/08/2023 09:19 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 23/11/2023 21:29 | ଚନ୍ଦ୍ର | 17/02/2024 20:30 | ମଙ୍ଗଳ | 14/06/2024 10:37 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 23/08/2023 23:39 | ଚନ୍ଦ୍ର | 28/11/2023 10:09 | ମଙ୍ଗଳ | 26/02/2024 21:50 | ରାହୁ | 21/06/2024 10:15 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 03/09/2023 23:32 | ମଙ୍ଗଳ | 01/12/2023 14:12 | ରାହୁ | 21/03/2024 04:40 | ଗୁରୁ | 27/06/2024 15:17 |
| ମଙ୍ଗଳ | 11/09/2023 16:16 | ରାହୁ | 09/12/2023 17:48 | ଗୁରୁ | 10/04/2024 21:24 | ଶନି | 05/07/2024 00:15 |
| ରାହୁ | 01/10/2023 11:16 | ଗୁରୁ | 16/12/2023 23:39 | ଶନି | 05/05/2024 11:17 | ବୁଧ | 11/07/2024 14:35 |
| ଗୁରୁ | 19/10/2023 01:30 | ଶନି | 25/12/2023 14:07 | ବୁଧ | 27/05/2024 11:04 | କେତୁ | 14/07/2024 07:47 |
| ଶନି | 08/11/2023 22:54 | ବୁଧ | 02/01/2024 06:50 | କେତୁ | 05/06/2024 12:23 | ଶୁକ୍ର | 22/07/2024 02:03 |
| ରାହୁ - ବୁଧ - ଚନ୍ଦ୍ର | | ରାହୁ - ବୁଧ - ମଙ୍ଗଳ | | ରାହୁ - ବୁଧ - ରାହୁ | | ରାହୁ - ବୁଧ - ଗୁରୁ | |
| 22/07/2024 02:03 | | 07/10/2024 16:50 | | 01/12/2024 00:46 | | 19/04/2025 17:46 | |
| 07/10/2024 16:50 | | 01/12/2024 00:46 | | 19/04/2025 17:46 | | 21/08/2025 22:12 | |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 28/07/2024 13:17 | ମଙ୍ଗଳ | 10/10/2024 20:54 | ରାହୁ | 21/12/2024 23:43 | ଗୁରୁ | 06/05/2025 07:10 |
| ମଙ୍ଗଳ | 02/08/2024 01:57 | ରାହୁ | 19/10/2024 00:29 | ଗୁରୁ | 09/01/2025 14:47 | ଶନି | 25/05/2025 23:04 |
| ରାହୁ | 13/08/2024 17:22 | ଗୁରୁ | 26/10/2024 06:21 | ଶନି | 31/01/2025 17:41 | ବୁଧ | 12/06/2025 13:17 |
| ଗୁରୁ | 24/08/2024 01:44 | ଶନି | 03/11/2024 20:48 | ବୁଧ | 20/02/2025 12:41 | କେତୁ | 19/06/2025 19:09 |
| ଶନି | 05/09/2024 08:40 | ବୁଧ | 11/11/2024 13:32 | କେତୁ | 28/02/2025 16:17 | ଶୁକ୍ର | 10/07/2025 11:53 |
| ବୁଧ | 16/09/2024 08:34 | କେତୁ | 14/11/2024 17:35 | ଶୁକ୍ର | 23/03/2025 23:07 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 16/07/2025 16:55 |
| କେତୁ | 20/09/2024 21:14 | ଶୁକ୍ର | 23/11/2024 18:55 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 30/03/2025 22:46 | ଚନ୍ଦ୍ର | 27/07/2025 01:17 |
| ଶୁକ୍ର | 03/10/2024 19:41 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 26/11/2024 12:07 | ଚନ୍ଦ୍ର | 11/04/2025 14:11 | ମଙ୍ଗଳ | 03/08/2025 07:08 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 07/10/2024 16:50 | ଚନ୍ଦ୍ର | 01/12/2024 00:46 | ମଙ୍ଗଳ | 19/04/2025 17:46 | ରାହୁ | 21/08/2025 22:12 |

ବିଂଶୋତ୍ତରୀ ଦଶା - ସୁକ୍ଷ୍ମ

| ରାହୁ - ବୁଧ - ଶନି | | ରାହୁ - କେତୁ - କେତୁ | | ରାହୁ - କେତୁ - ଶୁକ୍ର | | ରାହୁ - କେତୁ - ସୂର୍ଯ୍ୟ | |
|-----------------------------|------------------|----------------------------|------------------|-----------------------------|------------------|-------------------------------|------------------|
| 21/08/2025 22:12 | | 16/01/2026 09:29 | | 07/02/2026 18:24 | | 12/04/2026 16:27 | |
| 16/01/2026 09:29 | | 07/02/2026 18:24 | | 12/04/2026 16:27 | | 01/05/2026 20:40 | |
| ଶନି | 14/09/2025 06:36 | କେତୁ | 17/01/2026 16:48 | ଶୁକ୍ର | 18/02/2026 10:04 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 13/04/2026 15:27 |
| ବୁଧ | 05/10/2025 03:59 | ଶୁକ୍ର | 21/01/2026 10:17 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 21/02/2026 14:46 | ଚନ୍ଦ୍ର | 15/04/2026 05:49 |
| କେତୁ | 13/10/2025 18:27 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 22/01/2026 13:08 | ଚନ୍ଦ୍ର | 26/02/2026 22:37 | ମଙ୍ଗଳ | 16/04/2026 08:39 |
| ଶୁକ୍ର | 07/11/2025 08:19 | ଚନ୍ଦ୍ର | 24/01/2026 09:52 | ମଙ୍ଗଳ | 02/03/2026 16:06 | ରାହୁ | 19/04/2026 05:41 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 14/11/2025 17:17 | ମଙ୍ଗଳ | 25/01/2026 17:12 | ରାହୁ | 12/03/2026 06:12 | ଶୁଭୁ | 21/04/2026 19:03 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 27/11/2025 00:14 | ରାହୁ | 29/01/2026 01:44 | ଶୁଭୁ | 20/03/2026 18:45 | ଶନି | 24/04/2026 19:55 |
| ମଙ୍ଗଳ | 05/12/2025 14:41 | ଶୁଭୁ | 01/02/2026 01:19 | ଶନି | 30/03/2026 21:38 | ବୁଧ | 27/04/2026 13:07 |
| ରାହୁ | 27/12/2025 17:35 | ଶନି | 04/02/2026 14:20 | ବୁଧ | 08/04/2026 22:58 | କେତୁ | 28/04/2026 15:58 |
| ଶୁଭୁ | 16/01/2026 09:29 | ବୁଧ | 07/02/2026 18:24 | କେତୁ | 12/04/2026 16:27 | ଶୁକ୍ର | 01/05/2026 20:40 |
| ରାହୁ - କେତୁ - ଚନ୍ଦ୍ର | | ରାହୁ - କେତୁ - ମଙ୍ଗଳ | | ରାହୁ - କେତୁ - ରାହୁ | | ରାହୁ - କେତୁ - ଶୁଭୁ | |
| 01/05/2026 20:40 | | 02/06/2026 19:41 | | 25/06/2026 04:36 | | 21/08/2026 17:15 | |
| 02/06/2026 19:41 | | 25/06/2026 04:36 | | 21/08/2026 17:15 | | 11/10/2026 20:29 | |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 04/05/2026 12:35 | ମଙ୍ଗଳ | 04/06/2026 03:00 | ରାହୁ | 03/07/2026 19:42 | ଶୁଭୁ | 28/08/2026 12:53 |
| ମଙ୍ଗଳ | 06/05/2026 09:19 | ରାହୁ | 07/06/2026 11:33 | ଶୁଭୁ | 11/07/2026 11:47 | ଶନି | 05/09/2026 15:12 |
| ରାହୁ | 11/05/2026 04:23 | ଶୁଭୁ | 10/06/2026 11:08 | ଶନି | 20/07/2026 14:23 | ବୁଧ | 12/09/2026 21:03 |
| ଶୁଭୁ | 15/05/2026 10:39 | ଶନି | 14/06/2026 00:09 | ବୁଧ | 28/07/2026 17:59 | କେତୁ | 15/09/2026 20:39 |
| ଶନି | 20/05/2026 12:06 | ବୁଧ | 17/06/2026 04:13 | କେତୁ | 01/08/2026 02:31 | ଶୁକ୍ର | 24/09/2026 09:11 |
| ବୁଧ | 25/05/2026 00:45 | କେତୁ | 18/06/2026 11:32 | ଶୁକ୍ର | 10/08/2026 16:38 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 26/09/2026 22:33 |
| କେତୁ | 26/05/2026 21:30 | ଶୁକ୍ର | 22/06/2026 05:01 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 13/08/2026 13:39 | ଚନ୍ଦ୍ର | 01/10/2026 04:49 |
| ଶୁକ୍ର | 01/06/2026 05:20 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 23/06/2026 07:52 | ଚନ୍ଦ୍ର | 18/08/2026 08:43 | ମଙ୍ଗଳ | 04/10/2026 04:24 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 02/06/2026 19:41 | ଚନ୍ଦ୍ର | 25/06/2026 04:36 | ମଙ୍ଗଳ | 21/08/2026 17:15 | ରାହୁ | 11/10/2026 20:29 |
| ରାହୁ - କେତୁ - ଶନି | | ରାହୁ - କେତୁ - ବୁଧ | | ରାହୁ - ଶୁକ୍ର - ଶୁକ୍ର | | ରାହୁ - ଶୁକ୍ର - ସୂର୍ଯ୍ୟ | |
| 11/10/2026 20:29 | | 11/12/2026 13:50 | | 03/02/2027 21:47 | | 05/08/2027 12:47 | |
| 11/12/2026 13:50 | | 03/02/2027 21:47 | | 05/08/2027 12:47 | | 29/09/2027 07:41 | |
| ଶନି | 21/10/2026 11:14 | ବୁଧ | 19/12/2026 06:34 | ଶୁକ୍ର | 06/03/2027 08:17 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 08/08/2027 06:31 |
| ବୁଧ | 30/10/2026 01:42 | କେତୁ | 22/12/2026 10:38 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 15/03/2027 11:26 | ଚନ୍ଦ୍ର | 12/08/2027 20:06 |
| କେତୁ | 02/11/2026 14:42 | ଶୁକ୍ର | 31/12/2026 11:57 | ଚନ୍ଦ୍ର | 30/03/2027 16:41 | ମଙ୍ଗଳ | 16/08/2027 00:48 |
| ଶୁକ୍ର | 12/11/2026 17:36 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 03/01/2027 05:09 | ମଙ୍ଗଳ | 10/04/2027 08:21 | ରାହୁ | 24/08/2027 06:02 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 15/11/2026 18:28 | ଚନ୍ଦ୍ର | 07/01/2027 17:48 | ରାହୁ | 07/05/2027 17:48 | ଶୁଭୁ | 31/08/2027 13:21 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 20/11/2026 19:55 | ମଙ୍ଗଳ | 10/01/2027 21:52 | ଶୁଭୁ | 01/06/2027 02:12 | ଶନି | 09/09/2027 05:33 |
| ମଙ୍ଗଳ | 24/11/2026 08:55 | ରାହୁ | 19/01/2027 01:28 | ଶନି | 30/06/2027 00:11 | ବୁଧ | 16/09/2027 23:50 |
| ରାହୁ | 03/12/2026 11:31 | ଶୁଭୁ | 26/01/2027 07:19 | ବୁଧ | 25/07/2027 21:06 | କେତୁ | 20/09/2027 04:32 |
| ଶୁଭୁ | 11/12/2026 13:50 | ଶନି | 03/02/2027 21:47 | କେତୁ | 05/08/2027 12:47 | ଶୁକ୍ର | 29/09/2027 07:41 |

ବିଂଶୋତ୍ତରୀ ଦଶା - ସୁଷ୍ଟ

| ରାହୁ - ଶୁକ୍ର - ଚନ୍ଦ୍ର | | ରାହୁ - ଶୁକ୍ର - ମଙ୍ଗଳ | | ରାହୁ - ଶୁକ୍ର - ରାହୁ | | ରାହୁ - ଶୁକ୍ର - ଗୁରୁ | |
|--------------------------------|------------------|-------------------------------|------------------|------------------------------|------------------|---------------------------------|------------------|
| 29/09/2027 07:41 | | 29/12/2027 15:11 | | 02/03/2028 13:14 | | 13/08/2028 21:56 | |
| 29/12/2027 15:11 | | 02/03/2028 13:14 | | 13/08/2028 21:56 | | 07/01/2029 00:20 | |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 06/10/2027 22:18 | ମଙ୍ଗଳ | 02/01/2028 08:40 | ରାହୁ | 27/03/2028 04:56 | ଗୁରୁ | 02/09/2028 09:27 |
| ମଙ୍ଗଳ | 12/10/2027 06:09 | ରାହୁ | 11/01/2028 22:46 | ଗୁରୁ | 18/04/2028 02:54 | ଶନି | 25/09/2028 12:38 |
| ରାହୁ | 25/10/2027 22:52 | ଗୁରୁ | 20/01/2028 11:19 | ଶନି | 14/05/2028 03:28 | ବୁଧ | 16/10/2028 05:22 |
| ଗୁରୁ | 07/11/2027 03:04 | ଶନି | 30/01/2028 14:12 | ବୁଧ | 06/06/2028 10:18 | କେତୁ | 24/10/2028 17:55 |
| ଶନି | 21/11/2027 14:03 | ବୁଧ | 08/02/2028 15:32 | କେତୁ | 16/06/2028 00:25 | ଶୁକ୍ର | 18/11/2028 02:19 |
| ବୁଧ | 04/12/2027 12:31 | କେତୁ | 12/02/2028 09:01 | ଶୁକ୍ର | 13/07/2028 09:52 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 25/11/2028 09:38 |
| କେତୁ | 09/12/2027 20:21 | ଶୁକ୍ର | 23/02/2028 00:41 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 21/07/2028 15:06 | ଚନ୍ଦ୍ର | 07/12/2028 13:50 |
| ଶୁକ୍ର | 25/12/2027 01:36 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 26/02/2028 05:24 | ଚନ୍ଦ୍ର | 04/08/2028 07:49 | ମଙ୍ଗଳ | 16/12/2028 02:22 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 29/12/2027 15:11 | ଚନ୍ଦ୍ର | 02/03/2028 13:14 | ମଙ୍ଗଳ | 13/08/2028 21:56 | ରାହୁ | 07/01/2029 00:20 |
| ରାହୁ - ଶୁକ୍ର - ଶନି | | ରାହୁ - ଶୁକ୍ର - ବୁଧ | | ରାହୁ - ଶୁକ୍ର - କେତୁ | | ରାହୁ - ସୂର୍ଯ୍ୟ - ସୂର୍ଯ୍ୟ | |
| 07/01/2029 00:20 | | 29/06/2029 12:11 | | 01/12/2029 17:44 | | 03/02/2030 15:47 | |
| 29/06/2029 12:11 | | 01/12/2029 17:44 | | 03/02/2030 15:47 | | 20/02/2030 02:15 | |
| ଶନି | 03/02/2029 11:36 | ବୁଧ | 21/07/2029 11:58 | କେତୁ | 05/12/2029 11:13 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 04/02/2030 11:30 |
| ବୁଧ | 28/02/2029 01:29 | କେତୁ | 30/07/2029 13:17 | ଶୁକ୍ର | 16/12/2029 02:53 | ଚନ୍ଦ୍ର | 05/02/2030 20:23 |
| କେତୁ | 10/03/2029 04:23 | ଶୁକ୍ର | 25/08/2029 10:13 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 19/12/2029 07:36 | ମଙ୍ଗଳ | 06/02/2030 19:23 |
| ଶୁକ୍ର | 08/04/2029 02:21 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 02/09/2029 04:30 | ଚନ୍ଦ୍ର | 24/12/2029 15:26 | ରାହୁ | 09/02/2030 06:33 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 16/04/2029 18:33 | ଚନ୍ଦ୍ର | 15/09/2029 02:57 | ମଙ୍ଗଳ | 28/12/2029 08:55 | ଗୁରୁ | 11/02/2030 11:09 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 01/05/2029 05:32 | ମଙ୍ଗଳ | 24/09/2029 04:17 | ରାହୁ | 06/01/2030 23:01 | ଶନି | 14/02/2030 01:37 |
| ମଙ୍ଗଳ | 11/05/2029 08:25 | ରାହୁ | 17/10/2029 11:07 | ଗୁରୁ | 15/01/2030 11:34 | ବୁଧ | 16/02/2030 09:30 |
| ରାହୁ | 06/06/2029 09:00 | ଗୁରୁ | 07/11/2029 03:51 | ଶନି | 25/01/2030 14:27 | କେତୁ | 17/02/2030 08:30 |
| ଗୁରୁ | 29/06/2029 12:11 | ଶନି | 01/12/2029 17:44 | ବୁଧ | 03/02/2030 15:47 | ଶୁକ୍ର | 20/02/2030 02:15 |
| ରାହୁ - ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଚନ୍ଦ୍ର | | ରାହୁ - ସୂର୍ଯ୍ୟ - ମଙ୍ଗଳ | | ରାହୁ - ସୂର୍ଯ୍ୟ - ରାହୁ | | ରାହୁ - ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଗୁରୁ | |
| 20/02/2030 02:15 | | 19/03/2030 11:42 | | 07/04/2030 15:55 | | 26/05/2030 23:19 | |
| 19/03/2030 11:42 | | 07/04/2030 15:55 | | 26/05/2030 23:19 | | 09/07/2030 19:15 | |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 22/02/2030 09:02 | ମଙ୍ଗଳ | 20/03/2030 14:33 | ରାହୁ | 15/04/2030 01:26 | ଗୁରୁ | 01/06/2030 19:35 |
| ମଙ୍ଗଳ | 23/02/2030 23:23 | ରାହୁ | 23/03/2030 11:35 | ଗୁରୁ | 21/04/2030 15:13 | ଶନି | 08/06/2030 18:08 |
| ରାହୁ | 28/02/2030 02:00 | ଗୁରୁ | 26/03/2030 00:56 | ଶନି | 29/04/2030 10:35 | ବୁଧ | 14/06/2030 23:09 |
| ଗୁରୁ | 03/03/2030 17:40 | ଶନି | 29/03/2030 01:48 | ବୁଧ | 06/05/2030 10:14 | କେତୁ | 17/06/2030 12:31 |
| ଶନି | 08/03/2030 01:46 | ବୁଧ | 31/03/2030 19:00 | କେତୁ | 09/05/2030 07:16 | ଶୁକ୍ର | 24/06/2030 19:50 |
| ବୁଧ | 11/03/2030 22:54 | କେତୁ | 01/04/2030 21:51 | ଶୁକ୍ର | 17/05/2030 12:30 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 27/06/2030 00:26 |
| କେତୁ | 13/03/2030 13:15 | ଶୁକ୍ର | 05/04/2030 02:33 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 19/05/2030 23:40 | ଚନ୍ଦ୍ର | 30/06/2030 16:06 |
| ଶୁକ୍ର | 18/03/2030 02:50 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 06/04/2030 01:34 | ଚନ୍ଦ୍ର | 24/05/2030 02:18 | ମଙ୍ଗଳ | 03/07/2030 05:27 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 19/03/2030 11:42 | ଚନ୍ଦ୍ର | 07/04/2030 15:55 | ମଙ୍ଗଳ | 26/05/2030 23:19 | ରାହୁ | 09/07/2030 19:15 |

ବିଂଶୋତ୍ତରୀ ଦଶା - ସୁକ୍ତ

| ରାହୁ - ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଶନି | | ରାହୁ - ସୂର୍ଯ୍ୟ - ବୁଧ | | ରାହୁ - ସୂର୍ଯ୍ୟ - କେତୁ | | ରାହୁ - ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଶୁକ୍ର | |
|-------------------------------|------------------|------------------------------|------------------|-----------------------------|------------------|------------------------------|------------------|
| 09/07/2030 19:15 | | 30/08/2030 20:24 | | 16/10/2030 10:04 | | 04/11/2030 14:17 | |
| 30/08/2030 20:24 | | 16/10/2030 10:04 | | 04/11/2030 14:17 | | 29/12/2030 09:11 | |
| ଶନି | 18/07/2030 01:02 | ବୁଧ | 06/09/2030 10:44 | କେତୁ | 17/10/2030 12:55 | ଶୁକ୍ର | 13/11/2030 17:26 |
| ବୁଧ | 25/07/2030 09:59 | କେତୁ | 09/09/2030 03:56 | ଶୁକ୍ର | 20/10/2030 17:37 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 16/11/2030 11:10 |
| କେତୁ | 28/07/2030 10:51 | ଶୁକ୍ର | 16/09/2030 22:13 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 21/10/2030 16:37 | ଚନ୍ଦ୍ର | 21/11/2030 00:45 |
| ଶୁକ୍ର | 06/08/2030 03:03 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 19/09/2030 06:06 | ଚନ୍ଦ୍ର | 23/10/2030 06:58 | ମଙ୍ଗଳ | 24/11/2030 05:27 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 08/08/2030 17:31 | ଚନ୍ଦ୍ର | 23/09/2030 03:14 | ମଙ୍ଗଳ | 24/10/2030 09:49 | ରାହୁ | 02/12/2030 10:41 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 13/08/2030 01:36 | ମଙ୍ଗଳ | 25/09/2030 20:26 | ରାହୁ | 27/10/2030 06:51 | ଶୁଭୁ | 09/12/2030 18:00 |
| ମଙ୍ଗଳ | 16/08/2030 02:28 | ରାହୁ | 02/10/2030 20:05 | ଶୁଭୁ | 29/10/2030 20:13 | ଶନି | 18/12/2030 10:12 |
| ରାହୁ | 23/08/2030 21:51 | ଶୁଭୁ | 09/10/2030 01:06 | ଶନି | 01/11/2030 21:05 | ବୁଧ | 26/12/2030 04:29 |
| ଶୁଭୁ | 30/08/2030 20:24 | ଶନି | 16/10/2030 10:04 | ବୁଧ | 04/11/2030 14:17 | କେତୁ | 29/12/2030 09:11 |
| ରାହୁ - ଚନ୍ଦ୍ର - ଚନ୍ଦ୍ର | | ରାହୁ - ଚନ୍ଦ୍ର - ମଙ୍ଗଳ | | ରାହୁ - ଚନ୍ଦ୍ର - ରାହୁ | | ରାହୁ - ଚନ୍ଦ୍ର - ଶୁକ୍ର | |
| 29/12/2030 09:11 | | 13/02/2031 00:56 | | 16/03/2031 23:57 | | 07/06/2031 04:18 | |
| 13/02/2031 00:56 | | 16/03/2031 23:57 | | 07/06/2031 04:18 | | 19/08/2031 05:30 | |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 02/01/2031 04:30 | ମଙ୍ଗଳ | 14/02/2031 21:40 | ରାହୁ | 29/03/2031 07:48 | ଶୁଭୁ | 16/06/2031 22:04 |
| ମଙ୍ଗଳ | 04/01/2031 20:25 | ରାହୁ | 19/02/2031 16:44 | ଶୁଭୁ | 09/04/2031 06:47 | ଶନି | 28/06/2031 11:39 |
| ରାହୁ | 11/01/2031 16:46 | ଶୁଭୁ | 23/02/2031 23:00 | ଶନି | 22/04/2031 07:05 | ବୁଧ | 08/07/2031 20:01 |
| ଶୁଭୁ | 17/01/2031 18:52 | ଶନି | 01/03/2031 00:27 | ବୁଧ | 03/05/2031 22:30 | କେତୁ | 13/07/2031 02:18 |
| ଶନି | 25/01/2031 00:22 | ବୁଧ | 05/03/2031 13:06 | କେତୁ | 08/05/2031 17:33 | ଶୁକ୍ର | 25/07/2031 06:30 |
| ବୁଧ | 31/01/2031 11:36 | କେତୁ | 07/03/2031 09:51 | ଶୁକ୍ର | 22/05/2031 10:16 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 28/07/2031 22:09 |
| କେତୁ | 03/02/2031 03:31 | ଶୁକ୍ର | 12/03/2031 17:41 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 26/05/2031 12:53 | ଚନ୍ଦ୍ର | 04/08/2031 00:15 |
| ଶୁକ୍ର | 10/02/2031 18:09 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 14/03/2031 08:02 | ଚନ୍ଦ୍ର | 02/06/2031 09:15 | ମଙ୍ଗଳ | 08/08/2031 06:31 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 13/02/2031 00:56 | ଚନ୍ଦ୍ର | 16/03/2031 23:57 | ମଙ୍ଗଳ | 07/06/2031 04:18 | ରାହୁ | 19/08/2031 05:30 |
| ରାହୁ - ଚନ୍ଦ୍ର - ଶନି | | ରାହୁ - ଚନ୍ଦ୍ର - ବୁଧ | | ରାହୁ - ଚନ୍ଦ୍ର - କେତୁ | | ରାହୁ - ଚନ୍ଦ୍ର - ଶୁକ୍ର | |
| 19/08/2031 05:30 | | 13/11/2031 23:26 | | 30/01/2032 14:12 | | 02/03/2032 13:14 | |
| 13/11/2031 23:26 | | 30/01/2032 14:12 | | 02/03/2032 13:14 | | 01/06/2032 20:44 | |
| ଶନି | 01/09/2031 23:09 | ବୁଧ | 24/11/2031 23:19 | କେତୁ | 01/02/2032 10:57 | ଶୁକ୍ର | 17/03/2032 18:29 |
| ବୁଧ | 14/09/2031 06:05 | କେତୁ | 29/11/2031 11:59 | ଶୁକ୍ର | 06/02/2032 18:47 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 22/03/2032 08:03 |
| କେତୁ | 19/09/2031 07:32 | ଶୁକ୍ର | 12/12/2031 10:27 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 08/02/2032 09:08 | ଚନ୍ଦ୍ର | 29/03/2032 22:41 |
| ଶୁକ୍ର | 03/10/2031 18:31 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 16/12/2031 07:35 | ଚନ୍ଦ୍ର | 11/02/2032 01:03 | ମଙ୍ଗଳ | 04/04/2032 06:31 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 08/10/2031 02:37 | ଚନ୍ଦ୍ର | 22/12/2031 18:49 | ମଙ୍ଗଳ | 12/02/2032 21:48 | ରାହୁ | 17/04/2032 23:15 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 15/10/2031 08:06 | ମଙ୍ଗଳ | 27/12/2031 07:29 | ରାହୁ | 17/02/2032 16:51 | ଶୁଭୁ | 30/04/2032 03:27 |
| ମଙ୍ଗଳ | 20/10/2031 09:33 | ରାହୁ | 07/01/2032 22:54 | ଶୁଭୁ | 21/02/2032 23:07 | ଶନି | 14/05/2032 14:26 |
| ରାହୁ | 02/11/2031 09:50 | ଶୁଭୁ | 18/01/2032 07:16 | ଶନି | 27/02/2032 00:34 | ବୁଧ | 27/05/2032 12:54 |
| ଶୁଭୁ | 13/11/2031 23:26 | ଶନି | 30/01/2032 14:12 | ବୁଧ | 02/03/2032 13:14 | କେତୁ | 01/06/2032 20:44 |

ବିଂଶୋତ୍ତର ଦଶା - ପ୍ରାଣ

| ରାହୁ - ଶନି - ଚନ୍ଦ୍ର - ଗୁରୁ | | ରାହୁ - ଶନି - ଚନ୍ଦ୍ର - ଶନି | | ରାହୁ - ଶନି - ଚନ୍ଦ୍ର - ବୁଧ | | ରାହୁ - ଶନି - ଚନ୍ଦ୍ର - କେତୁ | |
|----------------------------|------------------|---------------------------|------------------|---------------------------|------------------|----------------------------|------------------|
| 08/05/2022 21:35 | | 20/05/2022 11:11 | | 03/06/2022 04:49 | | 15/06/2022 11:45 | |
| 20/05/2022 11:11 | | 03/06/2022 04:49 | | 15/06/2022 11:45 | | 20/06/2022 13:12 | |
| ଗୁରୁ | 10/05/2022 10:36 | ଶନି | 22/05/2022 15:22 | ବୁଧ | 04/06/2022 22:36 | କେତୁ | 15/06/2022 18:51 |
| ଶନି | 12/05/2022 06:33 | ବୁଧ | 24/05/2022 14:04 | କେତୁ | 05/06/2022 15:48 | ଶୁକ୍ର | 16/06/2022 15:05 |
| ବୁଧ | 13/05/2022 21:53 | କେତୁ | 25/05/2022 09:18 | ଶୁକ୍ର | 07/06/2022 16:58 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 16/06/2022 21:09 |
| କେତୁ | 14/05/2022 14:04 | ଶୁକ୍ର | 27/05/2022 16:14 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 08/06/2022 07:43 | ଚନ୍ଦ୍ର | 17/06/2022 07:17 |
| ଶୁକ୍ର | 16/05/2022 12:20 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 28/05/2022 08:43 | ଚନ୍ଦ୍ର | 09/06/2022 08:17 | ମଙ୍ଗଳ | 17/06/2022 14:22 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 17/05/2022 02:13 | ଚନ୍ଦ୍ର | 29/05/2022 12:12 | ମଙ୍ଗଳ | 10/06/2022 01:30 | ରାହୁ | 18/06/2022 08:35 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 18/05/2022 01:21 | ମଙ୍ଗଳ | 30/05/2022 07:25 | ରାହୁ | 11/06/2022 21:44 | ଗୁରୁ | 19/06/2022 00:46 |
| ମଙ୍ଗଳ | 18/05/2022 17:32 | ରାହୁ | 01/06/2022 08:52 | ଗୁରୁ | 13/06/2022 13:04 | ଶନି | 19/06/2022 20:00 |
| ରାହୁ | 20/05/2022 11:11 | ଗୁରୁ | 03/06/2022 04:49 | ଶନି | 15/06/2022 11:45 | ବୁଧ | 20/06/2022 13:12 |
| 20/06/2022 13:12 | | 05/07/2022 00:11 | | 09/07/2022 08:17 | | 12/07/2022 21:18 | |
| 05/07/2022 00:11 | | 09/07/2022 08:17 | | 12/07/2022 21:18 | | 21/07/2022 23:54 | |
| ଶୁକ୍ର | 22/06/2022 23:02 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 05/07/2022 05:24 | ମଙ୍ଗଳ | 09/07/2022 13:15 | ରାହୁ | 14/07/2022 06:05 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 23/06/2022 16:23 | ଚନ୍ଦ୍ର | 05/07/2022 14:04 | ରାହୁ | 10/07/2022 02:00 | ଗୁରୁ | 15/07/2022 11:14 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 24/06/2022 21:18 | ମଙ୍ଗଳ | 05/07/2022 20:09 | ଗୁରୁ | 10/07/2022 13:20 | ଶନି | 16/07/2022 21:51 |
| ମଙ୍ଗଳ | 25/06/2022 17:32 | ରାହୁ | 06/07/2022 11:45 | ଶନି | 11/07/2022 02:48 | ବୁଧ | 18/07/2022 04:49 |
| ରାହୁ | 27/06/2022 21:35 | ଗୁରୁ | 07/07/2022 01:38 | ବୁଧ | 11/07/2022 14:50 | କେତୁ | 18/07/2022 17:34 |
| ଗୁରୁ | 29/06/2022 19:51 | ଶନି | 07/07/2022 18:07 | କେତୁ | 11/07/2022 19:48 | ଶୁକ୍ର | 20/07/2022 06:00 |
| ଶନି | 02/07/2022 02:48 | ବୁଧ | 08/07/2022 08:52 | ଶୁକ୍ର | 12/07/2022 09:58 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 20/07/2022 16:56 |
| ବୁଧ | 04/07/2022 03:57 | କେତୁ | 08/07/2022 14:56 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 12/07/2022 14:13 | ଚନ୍ଦ୍ର | 21/07/2022 11:09 |
| କେତୁ | 05/07/2022 00:11 | ଶୁକ୍ର | 09/07/2022 08:17 | ଚନ୍ଦ୍ର | 12/07/2022 21:18 | ମଙ୍ଗଳ | 21/07/2022 23:54 |
| 21/07/2022 23:54 | | 30/07/2022 02:13 | | 08/08/2022 16:58 | | 17/08/2022 07:25 | |
| 30/07/2022 02:13 | | 08/08/2022 16:58 | | 17/08/2022 07:25 | | 20/08/2022 20:26 | |
| ଗୁରୁ | 23/07/2022 01:49 | ଶନି | 31/07/2022 14:45 | ବୁଧ | 09/08/2022 22:13 | କେତୁ | 17/08/2022 12:23 |
| ଶନି | 24/07/2022 08:35 | ବୁଧ | 01/08/2022 23:26 | କେତୁ | 10/08/2022 10:15 | ଶୁକ୍ର | 18/08/2022 02:33 |
| ବୁଧ | 25/07/2022 12:06 | କେତୁ | 02/08/2022 12:54 | ଶୁକ୍ର | 11/08/2022 20:40 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 18/08/2022 06:48 |
| କେତୁ | 25/07/2022 23:26 | ଶୁକ୍ର | 04/08/2022 03:21 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 12/08/2022 06:59 | ଚନ୍ଦ୍ର | 18/08/2022 13:53 |
| ଶୁକ୍ର | 27/07/2022 07:49 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 04/08/2022 14:54 | ଚନ୍ଦ୍ର | 13/08/2022 00:11 | ମଙ୍ଗଳ | 18/08/2022 18:50 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 27/07/2022 17:32 | ଚନ୍ଦ୍ର | 05/08/2022 10:07 | ମଙ୍ଗଳ | 13/08/2022 12:14 | ରାହୁ | 19/08/2022 07:35 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 28/07/2022 09:44 | ମଙ୍ଗଳ | 05/08/2022 23:35 | ରାହୁ | 14/08/2022 19:12 | ଗୁରୁ | 19/08/2022 18:56 |
| ମଙ୍ଗଳ | 28/07/2022 21:04 | ରାହୁ | 07/08/2022 10:12 | ଗୁରୁ | 15/08/2022 22:44 | ଶନି | 20/08/2022 08:23 |
| ରାହୁ | 30/07/2022 02:13 | ଗୁରୁ | 08/08/2022 16:58 | ଶନି | 17/08/2022 07:25 | ବୁଧ | 20/08/2022 20:26 |

ବିଂଶୋତ୍ତର ଦଶା - ପ୍ରାଣ

| ରାହୁ - ଶନି - ମଙ୍ଗଳ - ଶୁକ୍ର | | ରାହୁ - ଶନି - ମଙ୍ଗଳ - ସୂର୍ଯ୍ୟ | | ରାହୁ - ଶନି - ମଙ୍ଗଳ - ଚନ୍ଦ୍ର | | ରାହୁ - ଶନି - ରାହୁ - ରାହୁ | |
|----------------------------------|------------------|------------------------------------|------------------|-----------------------------------|------------------|----------------------------------|------------------|
| 20/08/2022 20:26 | | 30/08/2022 23:19 | | 03/09/2022 00:11 | | 08/09/2022 01:38 | |
| 30/08/2022 23:19 | | 03/09/2022 00:11 | | 08/09/2022 01:38 | | 01/10/2022 11:45 | |
| ଶୁକ୍ର | 22/08/2022 12:55 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 31/08/2022 02:58 | ଚନ୍ଦ୍ର | 03/09/2022 10:19 | ରାହୁ | 11/09/2022 13:57 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 23/08/2022 01:03 | ଚନ୍ଦ୍ର | 31/08/2022 09:02 | ମଙ୍ଗଳ | 03/09/2022 17:24 | ଶୁକ୍ର | 14/09/2022 16:54 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 23/08/2022 21:18 | ମଙ୍ଗଳ | 31/08/2022 13:17 | ରାହୁ | 04/09/2022 11:37 | ଶନି | 18/09/2022 09:54 |
| ମଙ୍ଗଳ | 24/08/2022 11:28 | ରାହୁ | 01/09/2022 00:13 | ଶୁକ୍ର | 05/09/2022 03:48 | ବୁଧ | 21/09/2022 17:32 |
| ରାହୁ | 25/08/2022 23:54 | ଶୁକ୍ର | 01/09/2022 09:56 | ଶନି | 05/09/2022 23:02 | କେରୁ | 23/09/2022 02:20 |
| ଶୁକ୍ର | 27/08/2022 08:17 | ଶନି | 01/09/2022 21:28 | ବୁଧ | 06/09/2022 16:14 | ଶୁକ୍ର | 27/09/2022 00:01 |
| ଶନି | 28/08/2022 22:45 | ବୁଧ | 02/09/2022 07:48 | କେରୁ | 06/09/2022 23:19 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 28/09/2022 04:07 |
| ବୁଧ | 30/08/2022 09:09 | କେରୁ | 02/09/2022 12:03 | ଶୁକ୍ର | 07/09/2022 19:34 | ଚନ୍ଦ୍ର | 30/09/2022 02:58 |
| କେରୁ | 30/08/2022 23:19 | ଶୁକ୍ର | 03/09/2022 00:11 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 08/09/2022 01:38 | ମଙ୍ଗଳ | 01/10/2022 11:45 |
| ରାହୁ - ଶନି - ରାହୁ - ଶୁକ୍ର | | ରାହୁ - ଶନି - ରାହୁ - ଶନି | | ରାହୁ - ଶନି - ରାହୁ - ବୁଧ | | ରାହୁ - ଶନି - ରାହୁ - କେରୁ | |
| 01/10/2022 11:45 | | 22/10/2022 07:25 | | 16/11/2022 00:46 | | 08/12/2022 03:39 | |
| 22/10/2022 07:25 | | 16/11/2022 00:46 | | 08/12/2022 03:39 | | 17/12/2022 06:15 | |
| ଶୁକ୍ର | 04/10/2022 06:23 | ଶନି | 26/10/2022 05:22 | ବୁଧ | 19/11/2022 03:58 | କେରୁ | 08/12/2022 16:24 |
| ଶନି | 07/10/2022 13:29 | ବୁଧ | 29/10/2022 17:25 | କେରୁ | 20/11/2022 10:57 | ଶୁକ୍ର | 10/12/2022 04:50 |
| ବୁଧ | 10/10/2022 12:16 | କେରୁ | 31/10/2022 04:02 | ଶୁକ୍ର | 24/11/2022 03:25 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 10/12/2022 15:46 |
| କେରୁ | 11/10/2022 17:25 | ଶୁକ୍ର | 04/11/2022 06:55 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 25/11/2022 05:58 | ଚନ୍ଦ୍ର | 11/12/2022 09:59 |
| ଶୁକ୍ର | 15/10/2022 04:42 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 05/11/2022 12:35 | ଚନ୍ଦ୍ର | 27/11/2022 02:13 | ମଙ୍ଗଳ | 11/12/2022 22:44 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 16/10/2022 05:41 | ଚନ୍ଦ୍ର | 07/11/2022 14:02 | ମଙ୍ଗଳ | 28/11/2022 09:11 | ରାହୁ | 13/12/2022 07:32 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 17/10/2022 23:19 | ମଙ୍ଗଳ | 09/11/2022 00:39 | ରାହୁ | 01/12/2022 16:49 | ଶୁକ୍ର | 14/12/2022 12:41 |
| ମଙ୍ଗଳ | 19/10/2022 04:28 | ରାହୁ | 12/11/2022 17:39 | ଶୁକ୍ର | 04/12/2022 15:36 | ଶନି | 15/12/2022 23:17 |
| ରାହୁ | 22/10/2022 07:25 | ଶୁକ୍ର | 16/11/2022 00:46 | ଶନି | 08/12/2022 03:39 | ବୁଧ | 17/12/2022 06:15 |
| ରାହୁ - ଶନି - ରାହୁ - ଶୁକ୍ର | | ରାହୁ - ଶନି - ରାହୁ - ସୂର୍ଯ୍ୟ | | ରାହୁ - ଶନି - ରାହୁ - ଚନ୍ଦ୍ର | | ରାହୁ - ଶନି - ରାହୁ - ମଙ୍ଗଳ | |
| 17/12/2022 06:15 | | 12/01/2023 06:50 | | 20/01/2023 02:13 | | 02/02/2023 02:30 | |
| 12/01/2023 06:50 | | 20/01/2023 02:13 | | 02/02/2023 02:30 | | 11/02/2023 05:06 | |
| ଶୁକ୍ର | 21/12/2022 14:21 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 12/01/2023 16:12 | ଚନ୍ଦ୍ର | 21/01/2023 04:14 | ମଙ୍ଗଳ | 02/02/2023 15:15 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 22/12/2022 21:35 | ଚନ୍ଦ୍ର | 13/01/2023 07:49 | ମଙ୍ଗଳ | 21/01/2023 22:27 | ରାହୁ | 04/02/2023 00:02 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 25/12/2022 01:38 | ମଙ୍ଗଳ | 13/01/2023 18:45 | ରାହୁ | 23/01/2023 21:18 | ଶୁକ୍ର | 05/02/2023 05:11 |
| ମଙ୍ଗଳ | 26/12/2022 14:04 | ରାହୁ | 14/01/2023 22:51 | ଶୁକ୍ର | 25/01/2023 14:56 | ଶନି | 06/02/2023 15:48 |
| ରାହୁ | 30/12/2022 11:45 | ଶୁକ୍ର | 15/01/2023 23:50 | ଶନି | 27/01/2023 16:23 | ବୁଧ | 07/02/2023 22:46 |
| ଶୁକ୍ର | 02/01/2023 23:02 | ଶନି | 17/01/2023 05:30 | ବୁଧ | 29/01/2023 12:37 | କେରୁ | 08/02/2023 11:31 |
| ଶନି | 07/01/2023 01:55 | ବୁଧ | 18/01/2023 08:03 | କେରୁ | 30/01/2023 06:50 | ଶୁକ୍ର | 09/02/2023 23:57 |
| ବୁଧ | 10/01/2023 18:24 | କେରୁ | 18/01/2023 18:59 | ଶୁକ୍ର | 01/02/2023 10:53 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 10/02/2023 10:53 |
| କେରୁ | 12/01/2023 06:50 | ଶୁକ୍ର | 20/01/2023 02:13 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 02/02/2023 02:30 | ଚନ୍ଦ୍ର | 11/02/2023 05:06 |

ଘୋଡ଼ଗୋଉରା ଦଶା

ଭୋଗ୍ୟ ଦଶା କାଳ : ଗୁରୁ 3 ବର୍ଷ 5 ମାସ 26 ଦିନ

| ଗୁରୁ 13 ବର୍ଷ | ଶନି 14 ବର୍ଷ | କେତୁ 15 ବର୍ଷ | ଚନ୍ଦ୍ର 16 ବର୍ଷ | ବୁଧ 17 ବର୍ଷ |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| 05/03/1987 | 31/08/1990 | 30/08/2004 | 31/08/2019 | 31/08/2035 |
| 31/08/1990 | 30/08/2004 | 31/08/2019 | 31/08/2035 | 30/08/2052 |
| 00/00/0000 | ଶନି 09/05/1992 | କେତୁ 09/08/2006 | ଚନ୍ଦ୍ର 14/11/2021 | ବୁଧ 26/02/2038 |
| 00/00/0000 | କେତୁ 01/03/1994 | ଚନ୍ଦ୍ର 02/09/2008 | ବୁଧ 19/03/2024 | ଶୁକ୍ର 16/10/2040 |
| 00/00/0000 | ଚନ୍ଦ୍ର 04/02/1996 | ବୁଧ 14/11/2010 | ଶୁକ୍ର 12/09/2026 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 28/05/2042 |
| 00/00/0000 | ବୁଧ 23/02/1998 | ଶୁକ୍ର 13/03/2013 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 19/03/2028 | ମଙ୍ଗଳ 29/02/2044 |
| 05/03/1987 | ଶୁକ୍ର 26/04/2000 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 15/08/2014 | ମଙ୍ଗଳ 14/11/2029 | ଗୁରୁ 25/01/2046 |
| ଶୁକ୍ର 01/02/1988 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 24/08/2001 | ମଙ୍ଗଳ 04/03/2016 | ଗୁରୁ 31/08/2031 | ଶନି 14/02/2048 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ 26/04/1989 | ମଙ୍ଗଳ 04/02/2003 | ଗୁରୁ 08/11/2017 | ଶନି 05/08/2033 | କେତୁ 27/04/2050 |
| ମଙ୍ଗଳ 31/08/1990 | ଗୁରୁ 30/08/2004 | ଶନି 31/08/2019 | କେତୁ 31/08/2035 | ଚନ୍ଦ୍ର 30/08/2052 |

| ଶୁକ୍ର 18 ବର୍ଷ | ସୂର୍ଯ୍ୟ 11 ବର୍ଷ | ମଙ୍ଗଳ 12 ବର୍ଷ | ଗୁରୁ 13 ବର୍ଷ |
|--------------------|--------------------|--------------------|-------------------|
| 30/08/2052 | 31/08/2070 | 30/08/2081 | 30/08/2093 |
| 31/08/2070 | 30/08/2081 | 30/08/2093 | 00/00/0000 |
| ଶୁକ୍ର 16/06/2055 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 16/09/2071 | ମଙ୍ଗଳ 27/11/2082 | ଗୁରୁ 13/02/2095 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ 01/03/2057 | ମଙ୍ଗଳ 04/11/2072 | ଗୁରୁ 01/04/2084 | ଶନି 09/09/2096 |
| ମଙ୍ଗଳ 10/01/2059 | ଗୁରୁ 28/01/2074 | ଶନି 12/09/2085 | କେତୁ 16/05/2098 |
| ଗୁରୁ 16/01/2061 | ଶନି 28/05/2075 | କେତୁ 02/04/2087 | ଚନ୍ଦ୍ର 01/03/2100 |
| ଶନି 20/03/2063 | କେତୁ 29/10/2076 | ଚନ୍ଦ୍ର 26/11/2088 | ବୁଧ 26/01/2102 |
| କେତୁ 17/07/2065 | ଚନ୍ଦ୍ର 06/05/2078 | ବୁଧ 31/08/2090 | ଶୁକ୍ର 06/03/2103 |
| ଚନ୍ଦ୍ର 10/01/2068 | ବୁଧ 16/12/2079 | ଶୁକ୍ର 11/07/2092 | 00/00/0000 |
| ବୁଧ 31/08/2070 | ଶୁକ୍ର 30/08/2081 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 30/08/2093 | 00/00/0000 |

ନୋଟ : ଉପରୋକ୍ତ ତିଥୀ ଦଶାର ସମାପ୍ତ ହେବାର ସମୟ ଦର୍ଶାଉଛି ।
ଘୋଡ଼ଗୋଉରା ଦଶା ପୁରା ୧୧୬ ବର୍ଷର ଆୟୁ ନିର୍ଣ୍ଣୟ ଦିଆ ଯାଇଛି ।

କ୍ଷୋଭାଶୋଭରା ଦଶା - ପୂର୍ବଦୃଶ

| ଗୁରୁ - ଶୁକ୍ର | ଗୁରୁ - ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଗୁରୁ - ମଙ୍ଗଳ | ଶନି - ଶନି | ଶନି - କେତୁ |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| 05/03/1987 | 01/02/1988 | 26/04/1989 | 31/08/1990 | 09/05/1992 |
| 01/02/1988 | 26/04/1989 | 31/08/1990 | 09/05/1992 | 01/03/1994 |
| 00/00/0000 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 15/03/1988 | ମଙ୍ଗଳ 16/06/1989 | ଶନି 13/11/1990 | କେତୁ 02/08/1992 |
| 00/00/0000 | ମଙ୍ଗଳ 30/04/1988 | ଗୁରୁ 10/08/1989 | କେତୁ 01/02/1991 | ଚନ୍ଦ୍ର 01/11/1992 |
| 00/00/0000 | ଗୁରୁ 20/06/1988 | ଶନି 09/10/1989 | ଚନ୍ଦ୍ର 27/04/1991 | ବୁଧ 06/02/1993 |
| 05/03/1987 | ଶନି 13/08/1988 | କେତୁ 11/12/1989 | ବୁଧ 26/07/1991 | ଶୁକ୍ର 20/05/1993 |
| ଶନି 02/04/1987 | କେତୁ 10/10/1988 | ଚନ୍ଦ୍ର 17/02/1990 | ଶୁକ୍ର 30/10/1991 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 22/07/1993 |
| କେତୁ 07/07/1987 | ଚନ୍ଦ୍ର 12/12/1988 | ବୁଧ 30/04/1990 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 28/12/1991 | ମଙ୍ଗଳ 28/09/1993 |
| ଚନ୍ଦ୍ର 16/10/1987 | ବୁଧ 16/02/1989 | ଶୁକ୍ର 15/07/1990 | ମଙ୍ଗଳ 01/03/1992 | ଗୁରୁ 11/12/1993 |
| ବୁଧ 01/02/1988 | ଶୁକ୍ର 26/04/1989 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 31/08/1990 | ଗୁରୁ 09/05/1992 | ଶନି 01/03/1994 |
| | | | | |
| ଶନି - ଚନ୍ଦ୍ର | ଶନି - ବୁଧ | ଶନି - ଶୁକ୍ର | ଶନି - ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଶନି - ମଙ୍ଗଳ |
| 01/03/1994 | 04/02/1996 | 23/02/1998 | 26/04/2000 | 24/08/2001 |
| 04/02/1996 | 23/02/1998 | 26/04/2000 | 24/08/2001 | 04/02/2003 |
| ଚନ୍ଦ୍ର 06/06/1994 | ବୁଧ 24/05/1996 | ଶୁକ୍ର 26/06/1998 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 11/06/2000 | ମଙ୍ଗଳ 18/10/2001 |
| ବୁଧ 18/09/1994 | ଶୁକ୍ର 17/09/1996 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 09/09/1998 | ମଙ୍ଗଳ 31/07/2000 | ଗୁରୁ 16/12/2001 |
| ଶୁକ୍ର 05/01/1995 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 27/11/1996 | ମଙ୍ଗଳ 30/11/1998 | ଗୁରୁ 24/09/2000 | ଶନି 18/02/2002 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ 13/03/1995 | ମଙ୍ଗଳ 13/02/1997 | ଗୁରୁ 27/02/1999 | ଶନି 21/11/2000 | କେତୁ 27/04/2002 |
| ମଙ୍ଗଳ 25/05/1995 | ଗୁରୁ 08/05/1997 | ଶନି 03/06/1999 | କେତୁ 23/01/2001 | ଚନ୍ଦ୍ର 09/07/2002 |
| ଗୁରୁ 12/08/1995 | ଶନି 06/08/1997 | କେତୁ 13/09/1999 | ଚନ୍ଦ୍ର 31/03/2001 | ବୁଧ 25/09/2002 |
| ଶନି 05/11/1995 | କେତୁ 11/11/1997 | ଚନ୍ଦ୍ର 01/01/2000 | ବୁଧ 10/06/2001 | ଶୁକ୍ର 16/12/2002 |
| କେତୁ 04/02/1996 | ଚନ୍ଦ୍ର 23/02/1998 | ବୁଧ 26/04/2000 | ଶୁକ୍ର 24/08/2001 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 04/02/2003 |
| | | | | |
| ଶନି - ଗୁରୁ | କେତୁ - କେତୁ | କେତୁ - ଚନ୍ଦ୍ର | କେତୁ - ବୁଧ | କେତୁ - ଶୁକ୍ର |
| 04/02/2003 | 30/08/2004 | 09/08/2006 | 02/09/2008 | 14/11/2010 |
| 30/08/2004 | 09/08/2006 | 02/09/2008 | 14/11/2010 | 13/03/2013 |
| ଗୁରୁ 09/04/2003 | କେତୁ 30/11/2004 | ଚନ୍ଦ୍ର 21/11/2006 | ବୁଧ 29/12/2008 | ଶୁକ୍ର 26/03/2011 |
| ଶନି 17/06/2003 | ଚନ୍ଦ୍ର 07/03/2005 | ବୁଧ 12/03/2007 | ଶୁକ୍ର 03/05/2009 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 15/06/2011 |
| କେତୁ 31/08/2003 | ବୁଧ 19/06/2005 | ଶୁକ୍ର 07/07/2007 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 18/07/2009 | ମଙ୍ଗଳ 11/09/2011 |
| ଚନ୍ଦ୍ର 18/11/2003 | ଶୁକ୍ର 07/10/2005 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 16/09/2007 | ମଙ୍ଗଳ 09/10/2009 | ଗୁରୁ 15/12/2011 |
| ବୁଧ 10/02/2004 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 13/12/2005 | ମଙ୍ଗଳ 04/12/2007 | ଗୁରୁ 07/01/2010 | ଶନି 27/03/2012 |
| ଶୁକ୍ର 08/05/2004 | ମଙ୍ଗଳ 25/02/2006 | ଗୁରୁ 26/02/2008 | ଶନି 14/04/2010 | କେତୁ 14/07/2012 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ 02/07/2004 | ଗୁରୁ 15/05/2006 | ଶନି 28/05/2008 | କେତୁ 26/07/2010 | ଚନ୍ଦ୍ର 09/11/2012 |
| ମଙ୍ଗଳ 30/08/2004 | ଶନି 09/08/2006 | କେତୁ 02/09/2008 | ଚନ୍ଦ୍ର 14/11/2010 | ବୁଧ 13/03/2013 |

କ୍ଷୋଭାଶୋଭରା ଦଶା - ପୂର୍ବଦୃଶ୍ୟ

| କେତୁ - ସୂର୍ଯ୍ୟ | କେତୁ - ମଙ୍ଗଳ | କେତୁ - ଗୁରୁ | କେତୁ - ଶନି | ଚନ୍ଦ୍ର - ଚନ୍ଦ୍ର |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| 13/03/2013 | 15/08/2014 | 04/03/2016 | 08/11/2017 | 31/08/2019 |
| 15/08/2014 | 04/03/2016 | 08/11/2017 | 31/08/2019 | 14/11/2021 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ 02/05/2013 | ମଙ୍ଗଳ 12/10/2014 | ଗୁରୁ 11/05/2016 | ଶନି 26/01/2018 | ଚନ୍ଦ୍ର 20/12/2019 |
| ମଙ୍ଗଳ 24/06/2013 | ଗୁରୁ 15/12/2014 | ଶନି 25/07/2016 | କେତୁ 22/04/2018 | ବୁଧ 16/04/2020 |
| ଗୁରୁ 22/08/2013 | ଶନି 21/02/2015 | କେତୁ 12/10/2016 | ଚନ୍ଦ୍ର 22/07/2018 | ଶୁକ୍ର 19/08/2020 |
| ଶନି 23/10/2013 | କେତୁ 06/05/2015 | ଚନ୍ଦ୍ର 05/01/2017 | ବୁଧ 27/10/2018 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 04/11/2020 |
| କେତୁ 29/12/2013 | ଚନ୍ଦ୍ର 23/07/2015 | ବୁଧ 05/04/2017 | ଶୁକ୍ର 07/02/2019 | ମଙ୍ଗଳ 26/01/2021 |
| ଚନ୍ଦ୍ର 11/03/2014 | ବୁଧ 14/10/2015 | ଶୁକ୍ର 09/07/2017 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 10/04/2019 | ଗୁରୁ 26/04/2021 |
| ବୁଧ 26/05/2014 | ଶୁକ୍ର 10/01/2016 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 05/09/2017 | ମଙ୍ଗଳ 18/06/2019 | ଶନି 02/08/2021 |
| ଶୁକ୍ର 15/08/2014 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 04/03/2016 | ମଙ୍ଗଳ 08/11/2017 | ଗୁରୁ 31/08/2019 | କେତୁ 14/11/2021 |

| ଚନ୍ଦ୍ର - ବୁଧ | ଚନ୍ଦ୍ର - ଶୁକ୍ର | ଚନ୍ଦ୍ର - ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଚନ୍ଦ୍ର - ମଙ୍ଗଳ | ଚନ୍ଦ୍ର - ଗୁରୁ |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| 14/11/2021 | 19/03/2024 | 12/09/2026 | 19/03/2028 | 14/11/2029 |
| 19/03/2024 | 12/09/2026 | 19/03/2028 | 14/11/2029 | 31/08/2031 |
| ବୁଧ 19/03/2022 | ଶୁକ୍ର 07/08/2024 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 04/11/2026 | ମଙ୍ଗଳ 21/05/2028 | ଗୁରୁ 26/01/2030 |
| ଶୁକ୍ର 30/07/2022 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 01/11/2024 | ମଙ୍ଗଳ 31/12/2026 | ଗୁରୁ 28/07/2028 | ଶନି 15/04/2030 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ 20/10/2022 | ମଙ୍ଗଳ 03/02/2025 | ଗୁରୁ 03/03/2027 | ଶନି 09/10/2028 | କେତୁ 09/07/2030 |
| ମଙ୍ଗଳ 16/01/2023 | ଗୁରୁ 16/05/2025 | ଶନି 09/05/2027 | କେତୁ 26/12/2028 | ଚନ୍ଦ୍ର 07/10/2030 |
| ଗୁରୁ 22/04/2023 | ଶନି 02/09/2025 | କେତୁ 20/07/2027 | ଚନ୍ଦ୍ର 19/03/2029 | ବୁଧ 11/01/2031 |
| ଶନି 03/08/2023 | କେତୁ 28/12/2025 | ଚନ୍ଦ୍ର 04/10/2027 | ବୁଧ 16/06/2029 | ଶୁକ୍ର 23/04/2031 |
| କେତୁ 22/11/2023 | ଚନ୍ଦ୍ର 02/05/2026 | ବୁଧ 24/12/2027 | ଶୁକ୍ର 18/09/2029 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 24/06/2031 |
| ଚନ୍ଦ୍ର 19/03/2024 | ବୁଧ 12/09/2026 | ଶୁକ୍ର 19/03/2028 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 14/11/2029 | ମଙ୍ଗଳ 31/08/2031 |

| ଚନ୍ଦ୍ର - ଶନି | ଚନ୍ଦ୍ର - କେତୁ | ବୁଧ - ବୁଧ | ବୁଧ - ଶୁକ୍ର | ବୁଧ - ସୂର୍ଯ୍ୟ |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| 31/08/2031 | 05/08/2033 | 31/08/2035 | 26/02/2038 | 16/10/2040 |
| 05/08/2033 | 31/08/2035 | 26/02/2038 | 16/10/2040 | 28/05/2042 |
| ଶନି 24/11/2031 | କେତୁ 11/11/2033 | ବୁଧ 11/01/2036 | ଶୁକ୍ର 25/07/2038 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 11/12/2040 |
| କେତୁ 23/02/2032 | ଚନ୍ଦ୍ର 23/02/2034 | ଶୁକ୍ର 31/05/2036 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 25/10/2038 | ମଙ୍ଗଳ 10/02/2041 |
| ଚନ୍ଦ୍ର 30/05/2032 | ବୁଧ 14/06/2034 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 26/08/2036 | ମଙ୍ଗଳ 01/02/2039 | ଗୁରୁ 17/04/2041 |
| ବୁଧ 11/09/2032 | ଶୁକ୍ର 09/10/2034 | ମଙ୍ଗଳ 28/11/2036 | ଗୁରୁ 20/05/2039 | ଶନି 27/06/2041 |
| ଶୁକ୍ର 29/12/2032 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 20/12/2034 | ଗୁରୁ 10/03/2037 | ଶନି 14/09/2039 | କେତୁ 11/09/2041 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ 06/03/2033 | ମଙ୍ଗଳ 08/03/2035 | ଶନି 28/06/2037 | କେତୁ 16/01/2040 | ଚନ୍ଦ୍ର 01/12/2041 |
| ମଙ୍ଗଳ 18/05/2033 | ଗୁରୁ 01/06/2035 | କେତୁ 23/10/2037 | ଚନ୍ଦ୍ର 28/05/2040 | ବୁଧ 26/02/2042 |
| ଗୁରୁ 05/08/2033 | ଶନି 31/08/2035 | ଚନ୍ଦ୍ର 26/02/2038 | ବୁଧ 16/10/2040 | ଶୁକ୍ର 28/05/2042 |

କ୍ଷୋଭାଶୋଭରା ଦଶା - ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷର

| ବୁଧ - ମଙ୍ଗଳ | | ବୁଧ - ଗୁରୁ | | ବୁଧ - ଶନି | | ବୁଧ - କେତୁ | | ବୁଧ - ଚନ୍ଦ୍ର | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 28/05/2042 | | 29/02/2044 | | 25/01/2046 | | 14/02/2048 | | 27/04/2050 | |
| 29/02/2044 | | 25/01/2046 | | 14/02/2048 | | 27/04/2050 | | 30/08/2052 | |
| ମଙ୍ଗଳ | 03/08/2042 | ଗୁରୁ | 17/05/2044 | ଶନି | 26/04/2046 | କେତୁ | 28/05/2048 | ଚନ୍ଦ୍ର | 23/08/2050 |
| ଗୁରୁ | 14/10/2042 | ଶନି | 09/08/2044 | କେତୁ | 01/08/2046 | ଚନ୍ଦ୍ର | 15/09/2048 | ବୁଧ | 26/12/2050 |
| ଶନି | 30/12/2042 | କେତୁ | 07/11/2044 | ଚନ୍ଦ୍ର | 12/11/2046 | ବୁଧ | 11/01/2049 | ଶୁକ୍ର | 08/05/2051 |
| କେତୁ | 23/03/2043 | ଚନ୍ଦ୍ର | 11/02/2045 | ବୁଧ | 02/03/2047 | ଶୁକ୍ର | 16/05/2049 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 28/07/2051 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 20/06/2043 | ବୁଧ | 24/05/2045 | ଶୁକ୍ର | 26/06/2047 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 31/07/2049 | ମଙ୍ଗଳ | 25/10/2051 |
| ବୁଧ | 22/09/2043 | ଶୁକ୍ର | 09/09/2045 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 05/09/2047 | ମଙ୍ଗଳ | 22/10/2049 | ଗୁରୁ | 29/01/2052 |
| ଶୁକ୍ର | 31/12/2043 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 14/11/2045 | ମଙ୍ଗଳ | 22/11/2047 | ଗୁରୁ | 20/01/2050 | ଶନି | 11/05/2052 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 29/02/2044 | ମଙ୍ଗଳ | 25/01/2046 | ଗୁରୁ | 14/02/2048 | ଶନି | 27/04/2050 | କେତୁ | 30/08/2052 |

| ଶୁକ୍ର - ଶୁକ୍ର | | ଶୁକ୍ର - ସୂର୍ଯ୍ୟ | | ଶୁକ୍ର - ମଙ୍ଗଳ | | ଶୁକ୍ର - ଗୁରୁ | | ଶୁକ୍ର - ଶନି | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 30/08/2052 | | 16/06/2055 | | 01/03/2057 | | 10/01/2059 | | 16/01/2061 | |
| 16/06/2055 | | 01/03/2057 | | 10/01/2059 | | 16/01/2061 | | 20/03/2063 | |
| ଶୁକ୍ର | 04/02/2053 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 14/08/2055 | ମଙ୍ଗଳ | 10/05/2057 | ଗୁରୁ | 02/04/2059 | ଶନି | 21/04/2061 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 12/05/2053 | ମଙ୍ଗଳ | 18/10/2055 | ଗୁରୁ | 25/07/2057 | ଶନି | 30/06/2059 | କେତୁ | 02/08/2061 |
| ମଙ୍ଗଳ | 26/08/2053 | ଗୁରୁ | 27/12/2055 | ଶନି | 15/10/2057 | କେତୁ | 04/10/2059 | ଚନ୍ଦ୍ର | 19/11/2061 |
| ଗୁରୁ | 18/12/2053 | ଶନି | 11/03/2056 | କେତୁ | 11/01/2058 | ଚନ୍ଦ୍ର | 13/01/2060 | ବୁଧ | 16/03/2062 |
| ଶନି | 20/04/2054 | କେତୁ | 31/05/2056 | ଚନ୍ଦ୍ର | 15/04/2058 | ବୁଧ | 30/04/2060 | ଶୁକ୍ର | 17/07/2062 |
| କେତୁ | 30/08/2054 | ଚନ୍ଦ୍ର | 25/08/2056 | ବୁଧ | 24/07/2058 | ଶୁକ୍ର | 23/08/2060 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 30/09/2062 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 18/01/2055 | ବୁଧ | 24/11/2056 | ଶୁକ୍ର | 06/11/2058 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 31/10/2060 | ମଙ୍ଗଳ | 21/12/2062 |
| ବୁଧ | 16/06/2055 | ଶୁକ୍ର | 01/03/2057 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 10/01/2059 | ମଙ୍ଗଳ | 16/01/2061 | ଗୁରୁ | 20/03/2063 |

| ଶୁକ୍ର - କେତୁ | | ଶୁକ୍ର - ଚନ୍ଦ୍ର | | ଶୁକ୍ର - ବୁଧ | | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ସୂର୍ଯ୍ୟ | | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ମଙ୍ଗଳ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 20/03/2063 | | 17/07/2065 | | 10/01/2068 | | 31/08/2070 | | 16/09/2071 | |
| 17/07/2065 | | 10/01/2068 | | 31/08/2070 | | 16/09/2071 | | 04/11/2072 | |
| କେତୁ | 08/07/2063 | ଚନ୍ଦ୍ର | 19/11/2065 | ବୁଧ | 30/05/2068 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 06/10/2070 | ମଙ୍ଗଳ | 29/10/2071 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 02/11/2063 | ବୁଧ | 01/04/2066 | ଶୁକ୍ର | 27/10/2068 | ମଙ୍ଗଳ | 14/11/2070 | ଗୁରୁ | 14/12/2071 |
| ବୁଧ | 06/03/2064 | ଶୁକ୍ର | 20/08/2066 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 26/01/2069 | ଗୁରୁ | 27/12/2070 | ଶନି | 02/02/2072 |
| ଶୁକ୍ର | 16/07/2064 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 14/11/2066 | ମଙ୍ଗଳ | 06/05/2069 | ଶନି | 11/02/2071 | କେତୁ | 27/03/2072 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 04/10/2064 | ମଙ୍ଗଳ | 16/02/2067 | ଗୁରୁ | 22/08/2069 | କେତୁ | 01/04/2071 | ଚନ୍ଦ୍ର | 23/05/2072 |
| ମଙ୍ଗଳ | 31/12/2064 | ଗୁରୁ | 28/05/2067 | ଶନି | 16/12/2069 | ଚନ୍ଦ୍ର | 24/05/2071 | ବୁଧ | 23/07/2072 |
| ଗୁରୁ | 06/04/2065 | ଶନି | 15/09/2067 | କେତୁ | 20/04/2070 | ବୁଧ | 18/07/2071 | ଶୁକ୍ର | 26/09/2072 |
| ଶନି | 17/07/2065 | କେତୁ | 10/01/2068 | ଚନ୍ଦ୍ର | 31/08/2070 | ଶୁକ୍ର | 16/09/2071 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 04/11/2072 |

କ୍ଷୋଭାଶୋଭରା ଦଶା - ପୂର୍ବଦୃଶ୍ୟ

| ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଗୁରୁ | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଶନି | ସୂର୍ଯ୍ୟ - କେତୁ | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଚନ୍ଦ୍ର | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ବୁଧ |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| 04/11/2072 | 28/01/2074 | 28/05/2075 | 29/10/2076 | 06/05/2078 |
| 28/01/2074 | 28/05/2075 | 29/10/2076 | 06/05/2078 | 16/12/2079 |
| ଗୁରୁ 25/12/2072 | ଶନି 28/03/2074 | କେତୁ 04/08/2075 | ଚନ୍ଦ୍ର 13/01/2077 | ବୁଧ 31/07/2078 |
| ଶନି 17/02/2073 | କେତୁ 30/05/2074 | ଚନ୍ଦ୍ର 14/10/2075 | ବୁଧ 05/04/2077 | ଶୁକ୍ର 31/10/2078 |
| କେତୁ 16/04/2073 | ଚନ୍ଦ୍ର 05/08/2074 | ବୁଧ 29/12/2075 | ଶୁକ୍ର 30/06/2077 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 26/12/2078 |
| ଚନ୍ଦ୍ର 17/06/2073 | ବୁଧ 15/10/2074 | ଶୁକ୍ର 19/03/2076 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 21/08/2077 | ମଙ୍ଗଳ 24/02/2079 |
| ବୁଧ 22/08/2073 | ଶୁକ୍ର 29/12/2074 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 07/05/2076 | ମଙ୍ଗଳ 17/10/2077 | ଗୁରୁ 01/05/2079 |
| ଶୁକ୍ର 31/10/2073 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 13/02/2075 | ମଙ୍ଗଳ 30/06/2076 | ଗୁରୁ 19/12/2077 | ଶନି 12/07/2079 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ 13/12/2073 | ମଙ୍ଗଳ 04/04/2075 | ଗୁରୁ 27/08/2076 | ଶନି 23/02/2078 | କେତୁ 26/09/2079 |
| ମଙ୍ଗଳ 28/01/2074 | ଗୁରୁ 28/05/2075 | ଶନି 29/10/2076 | କେତୁ 06/05/2078 | ଚନ୍ଦ୍ର 16/12/2079 |

| ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଶୁକ୍ର | ମଙ୍ଗଳ - ମଙ୍ଗଳ | ମଙ୍ଗଳ - ଗୁରୁ | ମଙ୍ଗଳ - ଶନି | ମଙ୍ଗଳ - କେତୁ |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| 16/12/2079 | 30/08/2081 | 27/11/2082 | 01/04/2084 | 12/09/2085 |
| 30/08/2081 | 27/11/2082 | 01/04/2084 | 12/09/2085 | 02/04/2087 |
| ଶୁକ୍ର 22/03/2080 | ମଙ୍ଗଳ 16/10/2081 | ଗୁରୁ 21/01/2083 | ଶନି 04/06/2084 | କେତୁ 24/11/2085 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ 20/05/2080 | ଗୁରୁ 06/12/2081 | ଶନି 21/03/2083 | କେତୁ 11/08/2084 | ଚନ୍ଦ୍ର 10/02/2086 |
| ମଙ୍ଗଳ 23/07/2080 | ଶନି 30/01/2082 | କେତୁ 24/05/2083 | ଚନ୍ଦ୍ର 23/10/2084 | ବୁଧ 04/05/2086 |
| ଗୁରୁ 01/10/2080 | କେତୁ 29/03/2082 | ଚନ୍ଦ୍ର 30/07/2083 | ବୁଧ 09/01/2085 | ଶୁକ୍ର 31/07/2086 |
| ଶନି 15/12/2080 | ଚନ୍ଦ୍ର 31/05/2082 | ବୁଧ 10/10/2083 | ଶୁକ୍ର 01/04/2085 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 23/09/2086 |
| କେତୁ 06/03/2081 | ବୁଧ 05/08/2082 | ଶୁକ୍ର 26/12/2083 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 21/05/2085 | ମଙ୍ଗଳ 21/11/2086 |
| ଚନ୍ଦ୍ର 31/05/2081 | ଶୁକ୍ର 15/10/2082 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 10/02/2084 | ମଙ୍ଗଳ 15/07/2085 | ଗୁରୁ 23/01/2087 |
| ବୁଧ 30/08/2081 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 27/11/2082 | ମଙ୍ଗଳ 01/04/2084 | ଗୁରୁ 12/09/2085 | ଶନି 02/04/2087 |

| ମଙ୍ଗଳ - ଚନ୍ଦ୍ର | ମଙ୍ଗଳ - ବୁଧ | ମଙ୍ଗଳ - ଶୁକ୍ର | ମଙ୍ଗଳ - ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଗୁରୁ - ଗୁରୁ |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| 02/04/2087 | 26/11/2088 | 31/08/2090 | 11/07/2092 | 30/08/2093 |
| 26/11/2088 | 31/08/2090 | 11/07/2092 | 30/08/2093 | 13/02/2095 |
| ଚନ୍ଦ୍ର 24/06/2087 | ବୁଧ 28/02/2089 | ଶୁକ୍ର 14/12/2090 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 19/08/2092 | ଗୁରୁ 29/10/2093 |
| ବୁଧ 21/09/2087 | ଶୁକ୍ର 08/06/2089 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 17/02/2091 | ମଙ୍ଗଳ 01/10/2092 | ଶନି 01/01/2094 |
| ଶୁକ୍ର 23/12/2087 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 08/08/2089 | ମଙ୍ଗଳ 28/04/2091 | ଗୁରୁ 17/11/2092 | କେତୁ 11/03/2094 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ 19/02/2088 | ମଙ୍ଗଳ 13/10/2089 | ଗୁରୁ 13/07/2091 | ଶନି 06/01/2093 | ଚନ୍ଦ୍ର 23/05/2094 |
| ମଙ୍ଗଳ 21/04/2088 | ଗୁରୁ 24/12/2089 | ଶନି 03/10/2091 | କେତୁ 01/03/2093 | ବୁଧ 09/08/2094 |
| ଗୁରୁ 28/06/2088 | ଶନି 12/03/2090 | କେତୁ 30/12/2091 | ଚନ୍ଦ୍ର 27/04/2093 | ଶୁକ୍ର 31/10/2094 |
| ଶନି 09/09/2088 | କେତୁ 03/06/2090 | ଚନ୍ଦ୍ର 02/04/2092 | ବୁଧ 27/06/2093 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 20/12/2094 |
| କେତୁ 26/11/2088 | ଚନ୍ଦ୍ର 31/08/2090 | ବୁଧ 11/07/2092 | ଶୁକ୍ର 30/08/2093 | ମଙ୍ଗଳ 13/02/2095 |

ତ୍ରିଭଙ୍ଗ ଦଶା

ଭୋଗ୍ୟ ଦଶା କାଳ : ଶୁକ୍ଳ 3 ବର୍ଷ 6 ମାସ 29 ଦିନ

| ଶୁକ୍ଳ 13 ବର୍ଷ | | ସୂର୍ଯ୍ୟ 4 ବର୍ଷ | | ଚନ୍ଦ୍ର 7 ବର୍ଷ | | ମଙ୍ଗଳ 5 ବର୍ଷ | | ରାହୁ 12 ବର୍ଷ | |
|---------------|------------|----------------|------------|---------------|------------|--------------|------------|--------------|------------|
| 05/03/1987 | | 02/10/1990 | | 02/10/1994 | | 02/06/2001 | | 01/02/2006 | |
| 02/10/1990 | | 02/10/1994 | | 02/06/2001 | | 01/02/2006 | | 01/02/2018 | |
| | 00/00/0000 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 14/12/1990 | ଚନ୍ଦ୍ର | 23/04/1995 | ମଙ୍ଗଳ | 10/09/2001 | ରାହୁ | 20/11/2007 |
| | 00/00/0000 | ଚନ୍ଦ୍ର | 15/04/1991 | ମଙ୍ଗଳ | 12/09/1995 | ରାହୁ | 23/05/2002 | ଶୁକ୍ଳ | 27/06/2009 |
| | 00/00/0000 | ମଙ୍ଗଳ | 09/07/1991 | ରାହୁ | 11/09/1996 | ଶୁକ୍ଳ | 06/01/2003 | ଶନି | 22/05/2011 |
| | 00/00/0000 | ରାହୁ | 13/02/1992 | ଶୁକ୍ଳ | 02/08/1997 | ଶନି | 03/10/2003 | ବୁଧ | 01/02/2013 |
| | 00/00/0000 | ଶୁକ୍ଳ | 26/08/1992 | ଶନି | 23/08/1998 | ବୁଧ | 31/05/2004 | କେତୁ | 14/10/2013 |
| | 05/03/1987 | ଶନି | 15/04/1993 | ବୁଧ | 03/08/1999 | କେତୁ | 07/09/2004 | ଶୁକ୍ଳ | 15/10/2015 |
| ଶନି | 01/02/1988 | ବୁଧ | 08/11/1993 | କେତୁ | 23/12/1999 | ଶୁକ୍ଳ | 19/06/2005 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 21/05/2016 |
| ବୁଧ | 22/12/1989 | କେତୁ | 01/02/1994 | ଶୁକ୍ଳ | 01/02/2001 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 12/09/2005 | ଚନ୍ଦ୍ର | 21/05/2017 |
| କେତୁ | 02/10/1990 | ଶୁକ୍ଳ | 02/10/1994 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 02/06/2001 | ଚନ୍ଦ୍ର | 01/02/2006 | ମଙ୍ଗଳ | 01/02/2018 |

| ଶୁକ୍ଳ 11 ବର୍ଷ | | ଶନି 13 ବର୍ଷ | | ବୁଧ 11 ବର୍ଷ | | କେତୁ 5 ବର୍ଷ | | ଶୁକ୍ଳ 13 ବର୍ଷ | |
|---------------|------------|-------------|------------|-------------|------------|-------------|------------|---------------|------------|
| 01/02/2018 | | 02/10/2028 | | 02/06/2041 | | 02/10/2052 | | 02/06/2057 | |
| 02/10/2028 | | 02/06/2041 | | 02/10/2052 | | 02/06/2057 | | 00/00/0000 | |
| ଶୁକ୍ଳ | 05/07/2019 | ଶନି | 04/10/2030 | ବୁଧ | 10/01/2043 | କେତୁ | 09/01/2053 | ଶୁକ୍ଳ | 23/08/2059 |
| ଶନି | 13/03/2021 | ବୁଧ | 21/07/2032 | କେତୁ | 08/09/2043 | ଶୁକ୍ଳ | 20/10/2053 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 22/04/2060 |
| ବୁଧ | 16/09/2022 | କେତୁ | 17/04/2033 | ଶୁକ୍ଳ | 29/07/2045 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 14/01/2054 | ଚନ୍ଦ୍ର | 02/06/2061 |
| କେତୁ | 01/05/2023 | ଶୁକ୍ଳ | 28/05/2035 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 21/02/2046 | ଚନ୍ଦ୍ର | 05/06/2054 | ମଙ୍ଗଳ | 13/03/2062 |
| ଶୁକ୍ଳ | 09/02/2025 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 14/01/2036 | ଚନ୍ଦ୍ର | 01/02/2047 | ମଙ୍ଗଳ | 12/09/2054 | ରାହୁ | 13/03/2064 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 22/08/2025 | ଚନ୍ଦ୍ର | 03/02/2037 | ମଙ୍ଗଳ | 01/10/2047 | ରାହୁ | 26/05/2055 | ଶୁକ୍ଳ | 22/12/2065 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 13/07/2026 | ମଙ୍ଗଳ | 30/10/2037 | ରାହୁ | 12/06/2049 | ଶୁକ୍ଳ | 08/01/2056 | ଶନି | 05/03/2067 |
| ମଙ୍ଗଳ | 25/02/2027 | ରାହୁ | 24/09/2039 | ଶୁକ୍ଳ | 16/12/2050 | ଶନି | 04/10/2056 | | 00/00/0000 |
| ରାହୁ | 02/10/2028 | ଶୁକ୍ଳ | 02/06/2041 | ଶନି | 02/10/2052 | ବୁଧ | 02/06/2057 | | 00/00/0000 |

ନୋଟ : ଉପରୋକ୍ତ ତିଥୀ ଦଶାର ସମାପ୍ତ ହେବାର ସମୟ ଦର୍ଶାଉଛି ।

ତ୍ରିଭଙ୍ଗ ଦଶା ପୁରା ୮୦ ବର୍ଷର ଆୟୁ ନିର୍ଣ୍ଣୟ ଦିଆ ଯାଇଛି ।

ତ୍ରିଭଙ୍ଗ ଦଶା - ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ

| ଶୁକ୍ର - ଶନି | ଶୁକ୍ର - ରୁଧ | ଶୁକ୍ର - କେତୁ | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ସୂର୍ଯ୍ୟ | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଚନ୍ଦ୍ର |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| 05/03/1987 | 01/02/1988 | 22/12/1989 | 02/10/1990 | 14/12/1990 |
| 01/02/1988 | 22/12/1989 | 02/10/1990 | 14/12/1990 | 15/04/1991 |
| 00/00/0000 | ରୁଧ 09/05/1988 | କେତୁ 08/01/1990 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 06/10/1990 | ଚନ୍ଦ୍ର 24/12/1990 |
| 00/00/0000 | କେତୁ 18/06/1988 | ଶୁକ୍ର 24/02/1990 | ଚନ୍ଦ୍ର 12/10/1990 | ମଙ୍ଗଳ 01/01/1991 |
| 00/00/0000 | ଶୁକ୍ର 11/10/1988 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 10/03/1990 | ମଙ୍ଗଳ 16/10/1990 | ରାହୁ 19/01/1991 |
| 05/03/1987 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 15/11/1988 | ଚନ୍ଦ୍ର 03/04/1990 | ରାହୁ 27/10/1990 | ଶୁଭ୍ର 04/02/1991 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ 11/03/1987 | ଚନ୍ଦ୍ର 11/01/1989 | ମଙ୍ଗଳ 20/04/1990 | ଶୁଭ୍ର 06/11/1990 | ଶନି 23/02/1991 |
| ଚନ୍ଦ୍ର 14/05/1987 | ମଙ୍ଗଳ 20/02/1989 | ରାହୁ 01/06/1990 | ଶନି 18/11/1990 | ରୁଧ 13/03/1991 |
| ମଙ୍ଗଳ 28/06/1987 | ରାହୁ 04/06/1989 | ଶୁଭ୍ର 09/07/1990 | ରୁଧ 28/11/1990 | କେତୁ 20/03/1991 |
| ରାହୁ 21/10/1987 | ଶୁଭ୍ର 04/09/1989 | ଶନି 23/08/1990 | କେତୁ 02/12/1990 | ଶୁକ୍ର 09/04/1991 |
| ଶୁଭ୍ର 01/02/1988 | ଶନି 22/12/1989 | ରୁଧ 02/10/1990 | ଶୁକ୍ର 14/12/1990 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 15/04/1991 |

| ସୂର୍ଯ୍ୟ - ମଙ୍ଗଳ | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ରାହୁ | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଶୁଭ୍ର | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଶନି | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ରୁଧ |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| 15/04/1991 | 09/07/1991 | 13/02/1992 | 26/08/1992 | 15/04/1993 |
| 09/07/1991 | 13/02/1992 | 26/08/1992 | 15/04/1993 | 08/11/1993 |
| ମଙ୍ଗଳ 20/04/1991 | ରାହୁ 11/08/1991 | ଶୁଭ୍ର 10/03/1992 | ଶନି 02/10/1992 | ରୁଧ 14/05/1993 |
| ରାହୁ 03/05/1991 | ଶୁଭ୍ର 09/09/1991 | ଶନି 10/04/1992 | ରୁଧ 04/11/1992 | କେତୁ 26/05/1993 |
| ଶୁଭ୍ର 14/05/1991 | ଶନି 14/10/1991 | ରୁଧ 08/05/1992 | କେତୁ 17/11/1992 | ଶୁକ୍ର 29/06/1993 |
| ଶନି 28/05/1991 | ରୁଧ 14/11/1991 | କେତୁ 19/05/1992 | ଶୁକ୍ର 26/12/1992 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 10/07/1993 |
| ରୁଧ 09/06/1991 | କେତୁ 27/11/1991 | ଶୁକ୍ର 21/06/1992 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 06/01/1993 | ଚନ୍ଦ୍ର 27/07/1993 |
| କେତୁ 14/06/1991 | ଶୁକ୍ର 02/01/1992 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 30/06/1992 | ଚନ୍ଦ୍ର 26/01/1993 | ମଙ୍ଗଳ 08/08/1993 |
| ଶୁକ୍ର 28/06/1991 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 13/01/1992 | ଚନ୍ଦ୍ର 17/07/1992 | ମଙ୍ଗଳ 08/02/1993 | ରାହୁ 08/09/1993 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ 02/07/1991 | ଚନ୍ଦ୍ର 01/02/1992 | ମଙ୍ଗଳ 28/07/1992 | ରାହୁ 15/03/1993 | ଶୁଭ୍ର 06/10/1993 |
| ଚନ୍ଦ୍ର 09/07/1991 | ମଙ୍ଗଳ 13/02/1992 | ରାହୁ 26/08/1992 | ଶୁଭ୍ର 15/04/1993 | ଶନି 08/11/1993 |

| ସୂର୍ଯ୍ୟ - କେତୁ | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଶୁକ୍ର | ଚନ୍ଦ୍ର - ଚନ୍ଦ୍ର | ଚନ୍ଦ୍ର - ମଙ୍ଗଳ | ଚନ୍ଦ୍ର - ରାହୁ |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| 08/11/1993 | 01/02/1994 | 02/10/1994 | 23/04/1995 | 12/09/1995 |
| 01/02/1994 | 02/10/1994 | 23/04/1995 | 12/09/1995 | 11/09/1996 |
| କେତୁ 13/11/1993 | ଶୁକ୍ର 13/03/1994 | ଚନ୍ଦ୍ର 19/10/1994 | ମଙ୍ଗଳ 01/05/1995 | ରାହୁ 06/11/1995 |
| ଶୁକ୍ର 27/11/1993 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 26/03/1994 | ମଙ୍ଗଳ 31/10/1994 | ରାହୁ 23/05/1995 | ଶୁଭ୍ର 25/12/1995 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ 01/12/1993 | ଚନ୍ଦ୍ର 15/04/1994 | ରାହୁ 30/11/1994 | ଶୁଭ୍ର 11/06/1995 | ଶନି 21/02/1996 |
| ଚନ୍ଦ୍ର 08/12/1993 | ମଙ୍ଗଳ 29/04/1994 | ଶୁଭ୍ର 28/12/1994 | ଶନି 03/07/1995 | ରୁଧ 12/04/1996 |
| ମଙ୍ଗଳ 13/12/1993 | ରାହୁ 05/06/1994 | ଶନି 29/01/1995 | ରୁଧ 23/07/1995 | କେତୁ 04/05/1996 |
| ରାହୁ 26/12/1993 | ଶୁଭ୍ର 07/07/1994 | ରୁଧ 26/02/1995 | କେତୁ 01/08/1995 | ଶୁକ୍ର 03/07/1996 |
| ଶୁଭ୍ର 06/01/1994 | ଶନି 15/08/1994 | କେତୁ 10/03/1995 | ଶୁକ୍ର 24/08/1995 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 22/07/1996 |
| ଶନି 20/01/1994 | ରୁଧ 18/09/1994 | ଶୁକ୍ର 13/04/1995 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 31/08/1995 | ଚନ୍ଦ୍ର 21/08/1996 |
| ରୁଧ 01/02/1994 | କେତୁ 02/10/1994 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 23/04/1995 | ଚନ୍ଦ୍ର 12/09/1995 | ମଙ୍ଗଳ 11/09/1996 |

ତ୍ରିଭଙ୍ଗା ଦଶା - ପୃତ୍ୟନ୍ତର

| ଚନ୍ଦ୍ର - ଗୁରୁ | | ଚନ୍ଦ୍ର - ଶନି | | ଚନ୍ଦ୍ର - ବୁଧ | | ଚନ୍ଦ୍ର - କେତୁ | | ଚନ୍ଦ୍ର - ଶୁକ୍ର | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 11/09/1996 | | 02/08/1997 | | 23/08/1998 | | 03/08/1999 | | 23/12/1999 | |
| 02/08/1997 | | 23/08/1998 | | 03/08/1999 | | 23/12/1999 | | 01/02/2001 | |
| ଗୁରୁ | 25/10/1996 | ଶନି | 02/10/1997 | ବୁଧ | 11/10/1998 | କେତୁ | 11/08/1999 | ଶୁକ୍ର | 28/02/2000 |
| ଶନି | 15/12/1996 | ବୁଧ | 26/11/1997 | କେତୁ | 31/10/1998 | ଶୁକ୍ର | 04/09/1999 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 20/03/2000 |
| ବୁଧ | 30/01/1997 | କେତୁ | 18/12/1997 | ଶୁକ୍ର | 27/12/1998 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 11/09/1999 | ଚନ୍ଦ୍ର | 22/04/2000 |
| କେତୁ | 18/02/1997 | ଶୁକ୍ର | 21/02/1998 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 13/01/1999 | ଚନ୍ଦ୍ର | 23/09/1999 | ମଙ୍ଗଳ | 16/05/2000 |
| ଶୁକ୍ର | 13/04/1997 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 12/03/1998 | ଚନ୍ଦ୍ର | 11/02/1999 | ମଙ୍ଗଳ | 01/10/1999 | ରାହୁ | 16/07/2000 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 29/04/1997 | ଚନ୍ଦ୍ର | 13/04/1998 | ମଙ୍ଗଳ | 03/03/1999 | ରାହୁ | 22/10/1999 | ଗୁରୁ | 08/09/2000 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 27/05/1997 | ମଙ୍ଗଳ | 05/05/1998 | ରାହୁ | 24/04/1999 | ଗୁରୁ | 10/11/1999 | ଶନି | 11/11/2000 |
| ମଙ୍ଗଳ | 14/06/1997 | ରାହୁ | 02/07/1998 | ଗୁରୁ | 09/06/1999 | ଶନି | 03/12/1999 | ବୁଧ | 08/01/2001 |
| ରାହୁ | 02/08/1997 | ଗୁରୁ | 23/08/1998 | ଶନି | 03/08/1999 | ବୁଧ | 23/12/1999 | କେତୁ | 01/02/2001 |

| ଚନ୍ଦ୍ର - ସୂର୍ଯ୍ୟ | | ମଙ୍ଗଳ - ମଙ୍ଗଳ | | ମଙ୍ଗଳ - ରାହୁ | | ମଙ୍ଗଳ - ଗୁରୁ | | ମଙ୍ଗଳ - ଶନି | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 01/02/2001 | | 02/06/2001 | | 10/09/2001 | | 23/05/2002 | | 06/01/2003 | |
| 02/06/2001 | | 10/09/2001 | | 23/05/2002 | | 06/01/2003 | | 03/10/2003 | |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 07/02/2001 | ମଙ୍ଗଳ | 08/06/2001 | ରାହୁ | 18/10/2001 | ଗୁରୁ | 23/06/2002 | ଶନି | 17/02/2003 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 17/02/2001 | ରାହୁ | 23/06/2001 | ଗୁରୁ | 21/11/2001 | ଶନି | 29/07/2002 | ବୁଧ | 28/03/2003 |
| ମଙ୍ଗଳ | 24/02/2001 | ଗୁରୁ | 06/07/2001 | ଶନି | 01/01/2002 | ବୁଧ | 30/08/2002 | କେତୁ | 12/04/2003 |
| ରାହୁ | 14/03/2001 | ଶନି | 22/07/2001 | ବୁଧ | 06/02/2002 | କେତୁ | 12/09/2002 | ଶୁକ୍ର | 27/05/2003 |
| ଗୁରୁ | 30/03/2001 | ବୁଧ | 05/08/2001 | କେତୁ | 21/02/2002 | ଶୁକ୍ର | 20/10/2002 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 10/06/2003 |
| ଶନି | 19/04/2001 | କେତୁ | 11/08/2001 | ଶୁକ୍ର | 04/04/2002 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 31/10/2002 | ଚନ୍ଦ୍ର | 02/07/2003 |
| ବୁଧ | 06/05/2001 | ଶୁକ୍ର | 27/08/2001 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 17/04/2002 | ଚନ୍ଦ୍ର | 19/11/2002 | ମଙ୍ଗଳ | 18/07/2003 |
| କେତୁ | 13/05/2001 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 01/09/2001 | ଚନ୍ଦ୍ର | 08/05/2002 | ମଙ୍ଗଳ | 03/12/2002 | ରାହୁ | 28/08/2003 |
| ଶୁକ୍ର | 02/06/2001 | ଚନ୍ଦ୍ର | 10/09/2001 | ମଙ୍ଗଳ | 23/05/2002 | ରାହୁ | 06/01/2003 | ଗୁରୁ | 03/10/2003 |

| ମଙ୍ଗଳ - ବୁଧ | | ମଙ୍ଗଳ - କେତୁ | | ମଙ୍ଗଳ - ଶୁକ୍ର | | ମଙ୍ଗଳ - ସୂର୍ଯ୍ୟ | | ମଙ୍ଗଳ - ଚନ୍ଦ୍ର | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 03/10/2003 | | 31/05/2004 | | 07/09/2004 | | 19/06/2005 | | 12/09/2005 | |
| 31/05/2004 | | 07/09/2004 | | 19/06/2005 | | 12/09/2005 | | 01/02/2006 | |
| ବୁଧ | 06/11/2003 | କେତୁ | 06/06/2004 | ଶୁକ୍ର | 25/10/2004 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 23/06/2005 | ଚନ୍ଦ୍ର | 24/09/2005 |
| କେତୁ | 20/11/2003 | ଶୁକ୍ର | 22/06/2004 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 08/11/2004 | ଚନ୍ଦ୍ର | 30/06/2005 | ମଙ୍ଗଳ | 02/10/2005 |
| ଶୁକ୍ର | 30/12/2003 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 27/06/2004 | ଚନ୍ଦ୍ର | 02/12/2004 | ମଙ୍ଗଳ | 05/07/2005 | ରାହୁ | 23/10/2005 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 11/01/2004 | ଚନ୍ଦ୍ର | 06/07/2004 | ମଙ୍ଗଳ | 18/12/2004 | ରାହୁ | 18/07/2005 | ଗୁରୁ | 11/11/2005 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 31/01/2004 | ମଙ୍ଗଳ | 11/07/2004 | ରାହୁ | 30/01/2005 | ଗୁରୁ | 29/07/2005 | ଶନି | 04/12/2005 |
| ମଙ୍ଗଳ | 14/02/2004 | ରାହୁ | 26/07/2004 | ଗୁରୁ | 09/03/2005 | ଶନି | 11/08/2005 | ବୁଧ | 24/12/2005 |
| ରାହୁ | 22/03/2004 | ଗୁରୁ | 09/08/2004 | ଶନି | 23/04/2005 | ବୁଧ | 24/08/2005 | କେତୁ | 01/01/2006 |
| ଗୁରୁ | 23/04/2004 | ଶନି | 24/08/2004 | ବୁଧ | 02/06/2005 | କେତୁ | 29/08/2005 | ଶୁକ୍ର | 25/01/2006 |
| ଶନି | 31/05/2004 | ବୁଧ | 07/09/2004 | କେତୁ | 19/06/2005 | ଶୁକ୍ର | 12/09/2005 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 01/02/2006 |

ତ୍ରିଭଙ୍ଗ ଦଶା - ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷର

| ରାହୁ - ରାହୁ | | ରାହୁ - ଗୁରୁ | | ରାହୁ - ଶନି | | ରାହୁ - ବୁଧ | | ରାହୁ - କେତୁ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 01/02/2006 | | 20/11/2007 | | 27/06/2009 | | 22/05/2011 | | 01/02/2013 | |
| 20/11/2007 | | 27/06/2009 | | 22/05/2011 | | 01/02/2013 | | 14/10/2013 | |
| ରାହୁ | 10/05/2006 | ଗୁରୁ | 06/02/2008 | ଶନି | 15/10/2009 | ବୁଧ | 18/08/2011 | କେତୁ | 15/02/2013 |
| ଗୁରୁ | 06/08/2006 | ଶନି | 09/05/2008 | ବୁଧ | 21/01/2010 | କେତୁ | 23/09/2011 | ଶୁକ୍ର | 30/03/2013 |
| ଶନି | 18/11/2006 | ବୁଧ | 30/07/2008 | କେତୁ | 02/03/2010 | ଶୁକ୍ର | 04/01/2012 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 12/04/2013 |
| ବୁଧ | 19/02/2007 | କେତୁ | 03/09/2008 | ଶୁକ୍ର | 26/06/2010 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 04/02/2012 | ଚନ୍ଦ୍ର | 03/05/2013 |
| କେତୁ | 30/03/2007 | ଶୁକ୍ର | 09/12/2008 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 31/07/2010 | ଚନ୍ଦ୍ର | 27/03/2012 | ମଙ୍ଗଳ | 18/05/2013 |
| ଶୁକ୍ର | 17/07/2007 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 07/01/2009 | ଚନ୍ଦ୍ର | 26/09/2010 | ମଙ୍ଗଳ | 02/05/2012 | ରାହୁ | 25/06/2013 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 19/08/2007 | ଚନ୍ଦ୍ର | 25/02/2009 | ମଙ୍ଗଳ | 06/11/2010 | ରାହୁ | 03/08/2012 | ଗୁରୁ | 30/07/2013 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 13/10/2007 | ମଙ୍ଗଳ | 31/03/2009 | ରାହୁ | 18/02/2011 | ଗୁରୁ | 25/10/2012 | ଶନି | 08/09/2013 |
| ମଙ୍ଗଳ | 20/11/2007 | ରାହୁ | 27/06/2009 | ଗୁରୁ | 22/05/2011 | ଶନି | 01/02/2013 | ବୁଧ | 14/10/2013 |

| ରାହୁ - ଶୁକ୍ର | | ରାହୁ - ସୂର୍ଯ୍ୟ | | ରାହୁ - ଚନ୍ଦ୍ର | | ରାହୁ - ମଙ୍ଗଳ | | ଗୁରୁ - ଗୁରୁ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 14/10/2013 | | 15/10/2015 | | 21/05/2016 | | 21/05/2017 | | 01/02/2018 | |
| 15/10/2015 | | 21/05/2016 | | 21/05/2017 | | 01/02/2018 | | 05/07/2019 | |
| ଶୁକ୍ର | 13/02/2014 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 26/10/2015 | ଚନ୍ଦ୍ର | 20/06/2016 | ମଙ୍ଗଳ | 05/06/2017 | ଗୁରୁ | 11/04/2018 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 21/03/2014 | ଚନ୍ଦ୍ର | 13/11/2015 | ମଙ୍ଗଳ | 12/07/2016 | ରାହୁ | 13/07/2017 | ଶନି | 02/07/2018 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 21/05/2014 | ମଙ୍ଗଳ | 26/11/2015 | ରାହୁ | 04/09/2016 | ଗୁରୁ | 16/08/2017 | ବୁଧ | 14/09/2018 |
| ମଙ୍ଗଳ | 03/07/2014 | ରାହୁ | 29/12/2015 | ଗୁରୁ | 23/10/2016 | ଶନି | 26/09/2017 | କେତୁ | 14/10/2018 |
| ରାହୁ | 21/10/2014 | ଗୁରୁ | 27/01/2016 | ଶନି | 20/12/2016 | ବୁଧ | 01/11/2017 | ଶୁକ୍ର | 09/01/2019 |
| ଗୁରୁ | 26/01/2015 | ଶନି | 02/03/2016 | ବୁଧ | 10/02/2017 | କେତୁ | 16/11/2017 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 04/02/2019 |
| ଶନି | 22/05/2015 | ବୁଧ | 02/04/2016 | କେତୁ | 03/03/2017 | ଶୁକ୍ର | 29/12/2017 | ଚନ୍ଦ୍ର | 19/03/2019 |
| ବୁଧ | 02/09/2015 | କେତୁ | 14/04/2016 | ଶୁକ୍ର | 03/05/2017 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 10/01/2018 | ମଙ୍ଗଳ | 18/04/2019 |
| କେତୁ | 15/10/2015 | ଶୁକ୍ର | 21/05/2016 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 21/05/2017 | ଚନ୍ଦ୍ର | 01/02/2018 | ରାହୁ | 05/07/2019 |

| ଗୁରୁ - ଶନି | | ଗୁରୁ - ବୁଧ | | ଗୁରୁ - କେତୁ | | ଗୁରୁ - ଶୁକ୍ର | | ଗୁରୁ - ସୂର୍ଯ୍ୟ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 05/07/2019 | | 13/03/2021 | | 16/09/2022 | | 01/05/2023 | | 09/02/2025 | |
| 13/03/2021 | | 16/09/2022 | | 01/05/2023 | | 09/02/2025 | | 22/08/2025 | |
| ଶନି | 11/10/2019 | ବୁଧ | 30/05/2021 | କେତୁ | 29/09/2022 | ଶୁକ୍ର | 18/08/2023 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 18/02/2025 |
| ବୁଧ | 06/01/2020 | କେତୁ | 02/07/2021 | ଶୁକ୍ର | 06/11/2022 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 19/09/2023 | ଚନ୍ଦ୍ର | 07/03/2025 |
| କେତୁ | 11/02/2020 | ଶୁକ୍ର | 01/10/2021 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 18/11/2022 | ଚନ୍ଦ୍ର | 12/11/2023 | ମଙ୍ଗଳ | 18/03/2025 |
| ଶୁକ୍ର | 24/05/2020 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 29/10/2021 | ଚନ୍ଦ୍ର | 06/12/2022 | ମଙ୍ଗଳ | 20/12/2023 | ରାହୁ | 16/04/2025 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 24/06/2020 | ଚନ୍ଦ୍ର | 14/12/2021 | ମଙ୍ଗଳ | 20/12/2022 | ରାହୁ | 26/03/2024 | ଗୁରୁ | 12/05/2025 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 14/08/2020 | ମଙ୍ଗଳ | 15/01/2022 | ରାହୁ | 23/01/2023 | ଗୁରୁ | 21/06/2024 | ଶନି | 12/06/2025 |
| ମଙ୍ଗଳ | 19/09/2020 | ରାହୁ | 08/04/2022 | ଗୁରୁ | 22/02/2023 | ଶନି | 02/10/2024 | ବୁଧ | 10/07/2025 |
| ରାହୁ | 21/12/2020 | ଗୁରୁ | 21/06/2022 | ଶନି | 30/03/2023 | ବୁଧ | 02/01/2025 | କେତୁ | 21/07/2025 |
| ଗୁରୁ | 13/03/2021 | ଶନି | 16/09/2022 | ବୁଧ | 01/05/2023 | କେତୁ | 09/02/2025 | ଶୁକ୍ର | 22/08/2025 |

ତ୍ରିଭଙ୍ଗା ଦଶା - ପୂର୍ବଦିନ

| ଗୁରୁ - ଚନ୍ଦ୍ର | | ଗୁରୁ - ମଙ୍ଗଳ | | ଗୁରୁ - ରାହୁ | | ଶନି - ଶନି | | ଶନି - ବୁଧ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 22/08/2025 | | 13/07/2026 | | 25/02/2027 | | 02/10/2028 | | 04/10/2030 | |
| 13/07/2026 | | 25/02/2027 | | 02/10/2028 | | 04/10/2030 | | 21/07/2032 | |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 19/09/2025 | ମଙ୍ଗଳ | 26/07/2026 | ରାହୁ | 24/05/2027 | ଶନି | 26/01/2029 | ବୁଧ | 05/01/2031 |
| ମଙ୍ଗଳ | 07/10/2025 | ରାହୁ | 29/08/2026 | ଗୁରୁ | 10/08/2027 | ବୁଧ | 10/05/2029 | କେତୁ | 12/02/2031 |
| ରାହୁ | 25/11/2025 | ଗୁରୁ | 29/09/2026 | ଶନି | 10/11/2027 | କେତୁ | 21/06/2029 | ଶୁକ୍ର | 02/06/2031 |
| ଗୁରୁ | 07/01/2026 | ଶନି | 04/11/2026 | ବୁଧ | 01/02/2028 | ଶୁକ୍ର | 21/10/2029 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 04/07/2031 |
| ଶନି | 28/02/2026 | ବୁଧ | 06/12/2026 | କେତୁ | 06/03/2028 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 27/11/2029 | ଚନ୍ଦ୍ର | 28/08/2031 |
| ବୁଧ | 15/04/2026 | କେତୁ | 19/12/2026 | ଶୁକ୍ର | 12/06/2028 | ଚନ୍ଦ୍ର | 27/01/2030 | ମଙ୍ଗଳ | 05/10/2031 |
| କେତୁ | 04/05/2026 | ଶୁକ୍ର | 26/01/2027 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 11/07/2028 | ମଙ୍ଗଳ | 11/03/2030 | ରାହୁ | 12/01/2032 |
| ଶୁକ୍ର | 27/06/2026 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 06/02/2027 | ଚନ୍ଦ୍ର | 29/08/2028 | ରାହୁ | 29/06/2030 | ଗୁରୁ | 08/04/2032 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 13/07/2026 | ଚନ୍ଦ୍ର | 25/02/2027 | ମଙ୍ଗଳ | 02/10/2028 | ଗୁରୁ | 04/10/2030 | ଶନି | 21/07/2032 |

| ଶନି - କେତୁ | | ଶନି - ଶୁକ୍ର | | ଶନି - ସୂର୍ଯ୍ୟ | | ଶନି - ଚନ୍ଦ୍ର | | ଶନି - ମଙ୍ଗଳ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 21/07/2032 | | 17/04/2033 | | 28/05/2035 | | 14/01/2036 | | 03/02/2037 | |
| 17/04/2033 | | 28/05/2035 | | 14/01/2036 | | 03/02/2037 | | 30/10/2037 | |
| କେତୁ | 05/08/2032 | ଶୁକ୍ର | 23/08/2033 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 08/06/2035 | ଚନ୍ଦ୍ର | 15/02/2036 | ମଙ୍ଗଳ | 18/02/2037 |
| ଶୁକ୍ର | 19/09/2032 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 01/10/2033 | ଚନ୍ଦ୍ର | 28/06/2035 | ମଙ୍ଗଳ | 09/03/2036 | ରାହୁ | 31/03/2037 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 03/10/2032 | ଚନ୍ଦ୍ର | 04/12/2033 | ମଙ୍ଗଳ | 11/07/2035 | ରାହୁ | 05/05/2036 | ଗୁରୁ | 06/05/2037 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 25/10/2032 | ମଙ୍ଗଳ | 18/01/2034 | ରାହୁ | 15/08/2035 | ଗୁରୁ | 26/06/2036 | ଶନି | 17/06/2037 |
| ମଙ୍ଗଳ | 10/11/2032 | ରାହୁ | 14/05/2034 | ଗୁରୁ | 15/09/2035 | ଶନି | 26/08/2036 | ବୁଧ | 26/07/2037 |
| ରାହୁ | 21/12/2032 | ଗୁରୁ | 24/08/2034 | ଶନି | 21/10/2035 | ବୁଧ | 20/10/2036 | କେତୁ | 10/08/2037 |
| ଗୁରୁ | 26/01/2033 | ଶନି | 24/12/2034 | ବୁଧ | 23/11/2035 | କେତୁ | 11/11/2036 | ଶୁକ୍ର | 24/09/2037 |
| ଶନି | 09/03/2033 | ବୁଧ | 13/04/2035 | କେତୁ | 06/12/2035 | ଶୁକ୍ର | 14/01/2037 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 08/10/2037 |
| ବୁଧ | 17/04/2033 | କେତୁ | 28/05/2035 | ଶୁକ୍ର | 14/01/2036 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 03/02/2037 | ଚନ୍ଦ୍ର | 30/10/2037 |

| ଶନି - ରାହୁ | | ଶନି - ଗୁରୁ | | ବୁଧ - ବୁଧ | | ବୁଧ - କେତୁ | | ବୁଧ - ଶୁକ୍ର | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 30/10/2037 | | 24/09/2039 | | 02/06/2041 | | 10/01/2043 | | 08/09/2043 | |
| 24/09/2039 | | 02/06/2041 | | 10/01/2043 | | 08/09/2043 | | 29/07/2045 | |
| ରାହୁ | 12/02/2038 | ଗୁରୁ | 16/12/2039 | ବୁଧ | 24/08/2041 | କେତୁ | 24/01/2043 | ଶୁକ୍ର | 01/01/2044 |
| ଗୁରୁ | 15/05/2038 | ଶନି | 22/03/2040 | କେତୁ | 28/09/2041 | ଶୁକ୍ର | 05/03/2043 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 05/02/2044 |
| ଶନି | 02/09/2038 | ବୁଧ | 18/06/2040 | ଶୁକ୍ର | 03/01/2042 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 17/03/2043 | ଚନ୍ଦ୍ର | 02/04/2044 |
| ବୁଧ | 09/12/2038 | କେତୁ | 24/07/2040 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 02/02/2042 | ଚନ୍ଦ୍ର | 06/04/2043 | ମଙ୍ଗଳ | 12/05/2044 |
| କେତୁ | 19/01/2039 | ଶୁକ୍ର | 04/11/2040 | ଚନ୍ଦ୍ର | 22/03/2042 | ମଙ୍ଗଳ | 20/04/2043 | ରାହୁ | 24/08/2044 |
| ଶୁକ୍ର | 14/05/2039 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 04/12/2040 | ମଙ୍ଗଳ | 26/04/2042 | ରାହୁ | 27/05/2043 | ଗୁରୁ | 24/11/2044 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 18/06/2039 | ଚନ୍ଦ୍ର | 25/01/2041 | ରାହୁ | 23/07/2042 | ଗୁରୁ | 28/06/2043 | ଶନି | 13/03/2045 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 15/08/2039 | ମଙ୍ଗଳ | 02/03/2041 | ଗୁରୁ | 09/10/2042 | ଶନି | 05/08/2043 | ବୁଧ | 19/06/2045 |
| ମଙ୍ଗଳ | 24/09/2039 | ରାହୁ | 02/06/2041 | ଶନି | 10/01/2043 | ବୁଧ | 08/09/2043 | କେତୁ | 29/07/2045 |

ତ୍ରିଭଙ୍ଗ ଦଶା - ପୂର୍ବଦିନ

| ରୁଧ - ସୂର୍ଯ୍ୟ | | ରୁଧ - ଚନ୍ଦ୍ର | | ରୁଧ - ମଙ୍ଗଳ | | ରୁଧ - ବାହୁ | | ରୁଧ - ଶୁକ୍ର | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 29/07/2045 | | 21/02/2046 | | 01/02/2047 | | 01/10/2047 | | 12/06/2049 | |
| 21/02/2046 | | 01/02/2047 | | 01/10/2047 | | 12/06/2049 | | 16/12/2050 | |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 08/08/2045 | ଚନ୍ଦ୍ର | 22/03/2046 | ମଙ୍ଗଳ | 15/02/2047 | ବାହୁ | 02/01/2048 | ଶୁକ୍ର | 25/08/2049 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 26/08/2045 | ମଙ୍ଗଳ | 11/04/2046 | ବାହୁ | 23/03/2047 | ଶୁକ୍ର | 24/03/2048 | ଶନି | 20/11/2049 |
| ମଙ୍ଗଳ | 07/09/2045 | ବାହୁ | 02/06/2046 | ଶୁକ୍ର | 25/04/2047 | ଶନି | 01/07/2048 | ରୁଧ | 07/02/2050 |
| ବାହୁ | 08/10/2045 | ଶୁକ୍ର | 18/07/2046 | ଶନି | 02/06/2047 | ରୁଧ | 27/09/2048 | କେତୁ | 11/03/2050 |
| ଶୁକ୍ର | 04/11/2045 | ଶନି | 10/09/2046 | ରୁଧ | 06/07/2047 | କେତୁ | 02/11/2048 | ଶୁକ୍ର | 11/06/2050 |
| ଶନି | 07/12/2045 | ରୁଧ | 29/10/2046 | କେତୁ | 20/07/2047 | ଶୁକ୍ର | 13/02/2049 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 08/07/2050 |
| ରୁଧ | 06/01/2046 | କେତୁ | 18/11/2046 | ଶୁକ୍ର | 29/08/2047 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 16/03/2049 | ଚନ୍ଦ୍ର | 23/08/2050 |
| କେତୁ | 18/01/2046 | ଶୁକ୍ର | 15/01/2047 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 10/09/2047 | ଚନ୍ଦ୍ର | 07/05/2049 | ମଙ୍ଗଳ | 25/09/2050 |
| ଶୁକ୍ର | 21/02/2046 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 01/02/2047 | ଚନ୍ଦ୍ର | 01/10/2047 | ମଙ୍ଗଳ | 12/06/2049 | ବାହୁ | 16/12/2050 |

| ରୁଧ - ଶନି | | କେତୁ - କେତୁ | | କେତୁ - ଶୁକ୍ର | | କେତୁ - ସୂର୍ଯ୍ୟ | | କେତୁ - ଚନ୍ଦ୍ର | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 16/12/2050 | | 02/10/2052 | | 09/01/2053 | | 20/10/2053 | | 14/01/2054 | |
| 02/10/2052 | | 09/01/2053 | | 20/10/2053 | | 14/01/2054 | | 05/06/2054 | |
| ଶନି | 30/03/2051 | କେତୁ | 08/10/2052 | ଶୁକ୍ର | 26/02/2053 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 25/10/2053 | ଚନ୍ଦ୍ର | 25/01/2054 |
| ରୁଧ | 01/07/2051 | ଶୁକ୍ର | 24/10/2052 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 12/03/2053 | ଚନ୍ଦ୍ର | 01/11/2053 | ମଙ୍ଗଳ | 03/02/2054 |
| କେତୁ | 08/08/2051 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 29/10/2052 | ଚନ୍ଦ୍ର | 04/04/2053 | ମଙ୍ଗଳ | 06/11/2053 | ବାହୁ | 24/02/2054 |
| ଶୁକ୍ର | 25/11/2051 | ଚନ୍ଦ୍ର | 06/11/2052 | ମଙ୍ଗଳ | 21/04/2053 | ବାହୁ | 18/11/2053 | ଶୁକ୍ର | 15/03/2054 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 28/12/2051 | ମଙ୍ଗଳ | 12/11/2052 | ବାହୁ | 03/06/2053 | ଶୁକ୍ର | 30/11/2053 | ଶନି | 06/04/2054 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 21/02/2052 | ବାହୁ | 27/11/2052 | ଶୁକ୍ର | 10/07/2053 | ଶନି | 13/12/2053 | ରୁଧ | 26/04/2054 |
| ମଙ୍ଗଳ | 30/03/2052 | ଶୁକ୍ର | 10/12/2052 | ଶନି | 24/08/2053 | ରୁଧ | 25/12/2053 | କେତୁ | 05/05/2054 |
| ବାହୁ | 06/07/2052 | ଶନି | 26/12/2052 | ରୁଧ | 04/10/2053 | କେତୁ | 30/12/2053 | ଶୁକ୍ର | 28/05/2054 |
| ଶୁକ୍ର | 02/10/2052 | ରୁଧ | 09/01/2053 | କେତୁ | 20/10/2053 | ଶୁକ୍ର | 14/01/2054 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 05/06/2054 |

| କେତୁ - ମଙ୍ଗଳ | | କେତୁ - ବାହୁ | | କେତୁ - ଶୁକ୍ର | | କେତୁ - ଶନି | | କେତୁ - ରୁଧ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 05/06/2054 | | 12/09/2054 | | 26/05/2055 | | 08/01/2056 | | 04/10/2056 | |
| 12/09/2054 | | 26/05/2055 | | 08/01/2056 | | 04/10/2056 | | 02/06/2057 | |
| ମଙ୍ଗଳ | 10/06/2054 | ବାହୁ | 20/10/2054 | ଶୁକ୍ର | 25/06/2055 | ଶନି | 20/02/2056 | ରୁଧ | 07/11/2056 |
| ବାହୁ | 25/06/2054 | ଶୁକ୍ର | 23/11/2054 | ଶନି | 31/07/2055 | ରୁଧ | 29/03/2056 | କେତୁ | 21/11/2056 |
| ଶୁକ୍ର | 09/07/2054 | ଶନି | 03/01/2055 | ରୁଧ | 01/09/2055 | କେତୁ | 14/04/2056 | ଶୁକ୍ର | 31/12/2056 |
| ଶନି | 24/07/2054 | ରୁଧ | 08/02/2055 | କେତୁ | 14/09/2055 | ଶୁକ୍ର | 29/05/2056 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 12/01/2057 |
| ରୁଧ | 07/08/2054 | କେତୁ | 23/02/2055 | ଶୁକ୍ର | 22/10/2055 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 11/06/2056 | ଚନ୍ଦ୍ର | 02/02/2057 |
| କେତୁ | 13/08/2054 | ଶୁକ୍ର | 07/04/2055 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 03/11/2055 | ଚନ୍ଦ୍ର | 04/07/2056 | ମଙ୍ଗଳ | 16/02/2057 |
| ଶୁକ୍ର | 30/08/2054 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 19/04/2055 | ଚନ୍ଦ୍ର | 22/11/2055 | ମଙ୍ଗଳ | 19/07/2056 | ବାହୁ | 24/03/2057 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 04/09/2054 | ଚନ୍ଦ୍ର | 11/05/2055 | ମଙ୍ଗଳ | 05/12/2055 | ବାହୁ | 29/08/2056 | ଶୁକ୍ର | 25/04/2057 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 12/09/2054 | ମଙ୍ଗଳ | 26/05/2055 | ବାହୁ | 08/01/2056 | ଶୁକ୍ର | 04/10/2056 | ଶନି | 02/06/2057 |

ଅକ୍ଷେରଣ ଦଶା

ଭୋଗ୍ୟ ଦଶା କାଳ : ଶୁକ୍ର 17 ବର୍ଷ 1 ମାସ 27 ଦିନ

| ଶୁକ୍ର 21 ବର୍ଷ | | ସୂର୍ଯ୍ୟ 6 ବର୍ଷ | | ଚନ୍ଦ୍ର 15 ବର୍ଷ | | ମଙ୍ଗଳ 8 ବର୍ଷ | | ବୁଧ 17 ବର୍ଷ | |
|---------------|------------|----------------|------------|----------------|------------|--------------|------------|-------------|------------|
| 05/03/1987 | | 01/05/2004 | | 02/05/2010 | | 02/05/2025 | | 02/05/2033 | |
| 01/05/2004 | | 02/05/2010 | | 02/05/2025 | | 02/05/2033 | | 02/05/2050 | |
| ଶୁକ୍ର | 01/06/1987 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 31/08/2004 | ଚନ୍ଦ୍ର | 01/06/2012 | ମଙ୍ଗଳ | 04/12/2025 | ବୁଧ | 04/01/2036 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 01/08/1988 | ଚନ୍ଦ୍ର | 01/07/2005 | ମଙ୍ଗଳ | 12/07/2013 | ବୁଧ | 09/03/2027 | ଶନି | 01/08/2037 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 02/07/1991 | ମଙ୍ଗଳ | 11/12/2005 | ବୁଧ | 21/11/2015 | ଶନି | 05/12/2027 | ଗୁରୁ | 28/07/2040 |
| ମଙ୍ଗଳ | 20/01/1993 | ବୁଧ | 21/11/2006 | ଶନି | 11/04/2017 | ଗୁରୁ | 02/05/2029 | ରାହୁ | 18/06/2042 |
| ବୁଧ | 11/05/1996 | ଶନି | 12/06/2007 | ଗୁରୁ | 01/12/2019 | ରାହୁ | 22/03/2030 | ଶୁକ୍ର | 08/10/2045 |
| ଶନି | 22/04/1998 | ଗୁରୁ | 01/07/2008 | ରାହୁ | 01/08/2021 | ଶୁକ୍ର | 11/10/2031 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 17/09/2046 |
| ଗୁରୁ | 31/12/2001 | ରାହୁ | 02/03/2009 | ଶୁକ୍ର | 01/07/2024 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 22/03/2032 | ଚନ୍ଦ୍ର | 27/01/2049 |
| ରାହୁ | 01/05/2004 | ଶୁକ୍ର | 02/05/2010 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 02/05/2025 | ଚନ୍ଦ୍ର | 02/05/2033 | ମଙ୍ଗଳ | 02/05/2050 |

| ଶନି 10 ବର୍ଷ | | ଗୁରୁ 19 ବର୍ଷ | | ରାହୁ 12 ବର୍ଷ | | ଶୁକ୍ର 21 ବର୍ଷ | |
|-------------|------------|--------------|------------|--------------|------------|---------------|------------|
| 02/05/2050 | | 01/05/2060 | | 02/05/2079 | | 02/05/2091 | |
| 01/05/2060 | | 02/05/2079 | | 02/05/2091 | | 00/00/0000 | |
| ଶନି | 05/04/2051 | ଗୁରୁ | 04/09/2063 | ରାହୁ | 31/08/2080 | ଶୁକ୍ର | 05/03/2095 |
| ଗୁରୁ | 07/01/2053 | ରାହୁ | 14/10/2065 | ଶୁକ୍ର | 31/12/2082 | | 00/00/0000 |
| ରାହୁ | 16/02/2054 | ଶୁକ୍ର | 25/06/2069 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 01/09/2083 | | 00/00/0000 |
| ଶୁକ୍ର | 28/01/2056 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 15/07/2070 | ଚନ୍ଦ୍ର | 02/05/2085 | | 00/00/0000 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 18/08/2056 | ଚନ୍ଦ୍ର | 05/03/2073 | ମଙ୍ଗଳ | 22/03/2086 | | 00/00/0000 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 07/01/2058 | ମଙ୍ଗଳ | 01/08/2074 | ବୁଧ | 10/02/2088 | | 00/00/0000 |
| ମଙ୍ଗଳ | 04/10/2058 | ବୁଧ | 28/07/2077 | ଶନି | 22/03/2089 | | 00/00/0000 |
| ବୁଧ | 01/05/2060 | ଶନି | 02/05/2079 | ଗୁରୁ | 02/05/2091 | | 00/00/0000 |

ନୋଟ : ଉପରୋକ୍ତ ତିଥୀ ଦଶା ଯମାତ ହେବାର ସମୟ ଦର୍ଶାଉଛି ।

ଅକ୍ଷେରଣ ଦଶା ପୁରା ୧୦୮ ବର୍ଷର ଆୟୁ ନିର୍ଣ୍ଣୟ ଦିଆ ଯାଇଛି ।

ଅକ୍ଷେପ୍ଟର ଦଶା - ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷର

| ଶୁକ୍ର - ଶୁକ୍ର | ଶୁକ୍ର - ସୂର୍ଯ୍ୟ | ଶୁକ୍ର - ଚନ୍ଦ୍ର | ଶୁକ୍ର - ମଙ୍ଗଳ | ଶୁକ୍ର - ବୁଧ |
|-------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| 05/03/1987 | 01/06/1987 | 01/08/1988 | 02/07/1991 | 20/01/1993 |
| 01/06/1987 | 01/08/1988 | 02/07/1991 | 20/01/1993 | 11/05/1996 |
| 00/00/0000 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 25/06/1987 | ଚନ୍ଦ୍ର 27/12/1988 | ମଙ୍ଗଳ 13/08/1991 | ବୁଧ 29/07/1993 |
| 00/00/0000 | ଚନ୍ଦ୍ର 23/08/1987 | ମଙ୍ଗଳ 15/03/1989 | ବୁଧ 10/11/1991 | ଶନି 18/11/1993 |
| 00/00/0000 | ମଙ୍ଗଳ 24/09/1987 | ବୁଧ 30/08/1989 | ଶନି 02/01/1992 | ଶୁକ୍ର 18/06/1994 |
| 00/00/0000 | ବୁଧ 30/11/1987 | ଶନି 07/12/1989 | ଶୁକ୍ର 11/04/1992 | ରାହୁ 30/10/1994 |
| 00/00/0000 | ଶନି 08/01/1988 | ଶୁକ୍ର 12/06/1990 | ରାହୁ 13/06/1992 | ଶୁକ୍ର 22/06/1995 |
| 00/00/0000 | ଶୁକ୍ର 23/03/1988 | ରାହୁ 09/10/1990 | ଶୁକ୍ର 02/10/1992 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 28/08/1995 |
| 05/03/1987 | ରାହୁ 10/05/1988 | ଶୁକ୍ର 04/05/1991 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 02/11/1992 | ଚନ୍ଦ୍ର 12/02/1996 |
| ରାହୁ 01/06/1987 | ଶୁକ୍ର 01/08/1988 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 02/07/1991 | ଚନ୍ଦ୍ର 20/01/1993 | ମଙ୍ଗଳ 11/05/1996 |

| ଶୁକ୍ର - ଶନି | ଶୁକ୍ର - ଶୁକ୍ର | ଶୁକ୍ର - ରାହୁ | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ସୂର୍ଯ୍ୟ | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଚନ୍ଦ୍ର |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| 11/05/1996 | 22/04/1998 | 31/12/2001 | 01/05/2004 | 31/08/2004 |
| 22/04/1998 | 31/12/2001 | 01/05/2004 | 31/08/2004 | 01/07/2005 |
| ଶନି 16/07/1996 | ଶୁକ୍ର 15/12/1998 | ରାହୁ 05/04/2002 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 08/05/2004 | ଚନ୍ଦ୍ର 12/10/2004 |
| ଶୁକ୍ର 18/11/1996 | ରାହୁ 14/05/1999 | ଶୁକ୍ର 17/09/2002 | ଚନ୍ଦ୍ର 25/05/2004 | ମଙ୍ଗଳ 04/11/2004 |
| ରାହୁ 05/02/1997 | ଶୁକ୍ର 31/01/2000 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 04/11/2002 | ମଙ୍ଗଳ 03/06/2004 | ବୁଧ 22/12/2004 |
| ଶୁକ୍ର 23/06/1997 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 15/04/2000 | ଚନ୍ଦ୍ର 02/03/2003 | ବୁଧ 22/06/2004 | ଶନି 19/01/2005 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ 02/08/1997 | ଚନ୍ଦ୍ର 20/10/2000 | ମଙ୍ଗଳ 04/05/2003 | ଶନି 03/07/2004 | ଶୁକ୍ର 14/03/2005 |
| ଚନ୍ଦ୍ର 08/11/1997 | ମଙ୍ଗଳ 28/01/2001 | ବୁଧ 15/09/2003 | ଶୁକ୍ର 25/07/2004 | ରାହୁ 16/04/2005 |
| ମଙ୍ଗଳ 31/12/1997 | ବୁଧ 28/08/2001 | ଶନି 03/12/2003 | ରାହୁ 07/08/2004 | ଶୁକ୍ର 15/06/2005 |
| ବୁଧ 22/04/1998 | ଶନି 31/12/2001 | ଶୁକ୍ର 01/05/2004 | ଶୁକ୍ର 31/08/2004 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 01/07/2005 |

| ସୂର୍ଯ୍ୟ - ମଙ୍ଗଳ | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ବୁଧ | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଶନି | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଶୁକ୍ର | ସୂର୍ଯ୍ୟ - ରାହୁ |
|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|--------------------|
| 01/07/2005 | 11/12/2005 | 21/11/2006 | 12/06/2007 | 01/07/2008 |
| 11/12/2005 | 21/11/2006 | 12/06/2007 | 01/07/2008 | 02/03/2009 |
| ମଙ୍ଗଳ 13/07/2005 | ବୁଧ 03/02/2006 | ଶନି 10/12/2006 | ଶୁକ୍ର 18/08/2007 | ରାହୁ 28/07/2008 |
| ବୁଧ 08/08/2005 | ଶନି 07/03/2006 | ଶୁକ୍ର 14/01/2007 | ରାହୁ 30/09/2007 | ଶୁକ୍ର 14/09/2008 |
| ଶନି 23/08/2005 | ଶୁକ୍ର 07/05/2006 | ରାହୁ 06/02/2007 | ଶୁକ୍ର 14/12/2007 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 27/09/2008 |
| ଶୁକ୍ର 21/09/2005 | ରାହୁ 14/06/2006 | ଶୁକ୍ର 17/03/2007 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 05/01/2008 | ଚନ୍ଦ୍ର 31/10/2008 |
| ରାହୁ 09/10/2005 | ଶୁକ୍ର 20/08/2006 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 28/03/2007 | ଚନ୍ଦ୍ର 27/02/2008 | ମଙ୍ଗଳ 18/11/2008 |
| ଶୁକ୍ର 09/11/2005 | ସୂର୍ଯ୍ୟ 08/09/2006 | ଚନ୍ଦ୍ର 26/04/2007 | ମଙ୍ଗଳ 27/03/2008 | ବୁଧ 26/12/2008 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ 18/11/2005 | ଚନ୍ଦ୍ର 26/10/2006 | ମଙ୍ଗଳ 11/05/2007 | ବୁଧ 26/05/2008 | ଶନି 18/01/2009 |
| ଚନ୍ଦ୍ର 11/12/2005 | ମଙ୍ଗଳ 21/11/2006 | ବୁଧ 12/06/2007 | ଶନି 01/07/2008 | ଶୁକ୍ର 02/03/2009 |

ଅକ୍ଷେପ୍ଟରା ଦଶା - ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷର

| ସୂର୍ଯ୍ୟ - ଶୁକ୍ର | | ଚନ୍ଦ୍ର - ଚନ୍ଦ୍ର | | ଚନ୍ଦ୍ର - ମଙ୍ଗଳ | | ଚନ୍ଦ୍ର - ବୁଧ | | ଚନ୍ଦ୍ର - ଶନି | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 02/03/2009 | | 02/05/2010 | | 01/06/2012 | | 12/07/2013 | | 21/11/2015 | |
| 02/05/2010 | | 01/06/2012 | | 12/07/2013 | | 21/11/2015 | | 11/04/2017 | |
| ଶୁକ୍ର | 24/05/2009 | ଚନ୍ଦ୍ର | 15/08/2010 | ମଙ୍ଗଳ | 01/07/2012 | ବୁଧ | 24/11/2013 | ଶନି | 07/01/2016 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 16/06/2009 | ମଙ୍ଗଳ | 11/10/2010 | ବୁଧ | 03/09/2012 | ଶନି | 12/02/2014 | ଗୁରୁ | 05/04/2016 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 14/08/2009 | ବୁଧ | 08/02/2011 | ଶନି | 10/10/2012 | ଗୁରୁ | 14/07/2014 | ରାହୁ | 01/06/2016 |
| ମଙ୍ଗଳ | 15/09/2009 | ଶନି | 19/04/2011 | ଗୁରୁ | 21/12/2012 | ରାହୁ | 18/10/2014 | ଶୁକ୍ର | 07/09/2016 |
| ବୁଧ | 21/11/2009 | ଗୁରୁ | 31/08/2011 | ରାହୁ | 04/02/2013 | ଶୁକ୍ର | 03/04/2015 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 05/10/2016 |
| ଶନି | 30/12/2009 | ରାହୁ | 24/11/2011 | ଶୁକ୍ର | 24/04/2013 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 21/05/2015 | ଚନ୍ଦ୍ର | 15/12/2016 |
| ଗୁରୁ | 15/03/2010 | ଶୁକ୍ର | 19/04/2012 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 16/05/2013 | ଚନ୍ଦ୍ର | 18/09/2015 | ମଙ୍ଗଳ | 21/01/2017 |
| ରାହୁ | 02/05/2010 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 01/06/2012 | ଚନ୍ଦ୍ର | 12/07/2013 | ମଙ୍ଗଳ | 21/11/2015 | ବୁଧ | 11/04/2017 |
| 11/04/2017 | | 01/12/2019 | | 01/08/2021 | | 01/07/2024 | | 02/05/2025 | |
| 01/12/2019 | | 01/08/2021 | | 01/07/2024 | | 02/05/2025 | | 04/12/2025 | |
| ଗୁରୁ | 28/09/2017 | ରାହୁ | 07/02/2020 | ଶୁକ୍ର | 24/02/2022 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 18/07/2024 | ମଙ୍ଗଳ | 18/05/2025 |
| ରାହୁ | 13/01/2018 | ଶୁକ୍ର | 04/06/2020 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 24/04/2022 | ଚନ୍ଦ୍ର | 29/08/2024 | ବୁଧ | 21/06/2025 |
| ଶୁକ୍ର | 19/07/2018 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 08/07/2020 | ଚନ୍ଦ୍ର | 19/09/2022 | ମଙ୍ଗଳ | 21/09/2024 | ଶନି | 11/07/2025 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 11/09/2018 | ଚନ୍ଦ୍ର | 30/09/2020 | ମଙ୍ଗଳ | 07/12/2022 | ବୁଧ | 08/11/2024 | ଗୁରୁ | 18/08/2025 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 23/01/2019 | ମଙ୍ଗଳ | 15/11/2020 | ବୁଧ | 24/05/2023 | ଶନି | 06/12/2024 | ରାହୁ | 11/09/2025 |
| ମଙ୍ଗଳ | 04/04/2019 | ବୁଧ | 18/02/2021 | ଶନି | 30/08/2023 | ଗୁରୁ | 29/01/2025 | ଶୁକ୍ର | 23/10/2025 |
| ବୁଧ | 03/09/2019 | ଶନି | 16/04/2021 | ଗୁରୁ | 05/03/2024 | ରାହୁ | 03/03/2025 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 04/11/2025 |
| ଶନି | 01/12/2019 | ଗୁରୁ | 01/08/2021 | ରାହୁ | 01/07/2024 | ଶୁକ୍ର | 02/05/2025 | ଚନ୍ଦ୍ର | 04/12/2025 |
| 04/12/2025 | | 09/03/2027 | | 05/12/2027 | | 02/05/2029 | | 22/03/2030 | |
| 09/03/2027 | | 05/12/2027 | | 02/05/2029 | | 22/03/2030 | | 11/10/2031 | |
| ବୁଧ | 14/02/2026 | ଶନି | 03/04/2027 | ଗୁରୁ | 04/03/2028 | ରାହୁ | 07/06/2029 | ଶୁକ୍ର | 11/07/2030 |
| ଶନି | 29/03/2026 | ଗୁରୁ | 21/05/2027 | ରାହୁ | 30/04/2028 | ଶୁକ୍ର | 09/08/2029 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 11/08/2030 |
| ଗୁରୁ | 18/06/2026 | ରାହୁ | 20/06/2027 | ଶୁକ୍ର | 08/08/2028 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 27/08/2029 | ଚନ୍ଦ୍ର | 29/10/2030 |
| ରାହୁ | 08/08/2026 | ଶୁକ୍ର | 11/08/2027 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 06/09/2028 | ଚନ୍ଦ୍ର | 11/10/2029 | ମଙ୍ଗଳ | 10/12/2030 |
| ଶୁକ୍ର | 05/11/2026 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 26/08/2027 | ଚନ୍ଦ୍ର | 16/11/2028 | ମଙ୍ଗଳ | 04/11/2029 | ବୁଧ | 10/03/2031 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 01/12/2026 | ଚନ୍ଦ୍ର | 03/10/2027 | ମଙ୍ଗଳ | 24/12/2028 | ବୁଧ | 25/12/2029 | ଶନି | 01/05/2031 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 03/02/2027 | ମଙ୍ଗଳ | 23/10/2027 | ବୁଧ | 15/03/2029 | ଶନି | 24/01/2030 | ଗୁରୁ | 09/08/2031 |
| ମଙ୍ଗଳ | 09/03/2027 | ବୁଧ | 05/12/2027 | ଶନି | 02/05/2029 | ଗୁରୁ | 22/03/2030 | ରାହୁ | 11/10/2031 |

ଅକ୍ଷେପ୍ତରୀ ଦଶା - ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷର

| ମଙ୍ଗଳ - ପୂର୍ଣ୍ଣିମା | | ମଙ୍ଗଳ - ଚନ୍ଦ୍ର | | ବୁଧ - ବୁଧ | | ବୁଧ - ଶନି | | ବୁଧ - ଗୁରୁ | |
|--------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 11/10/2031 | | 22/03/2032 | | 02/05/2033 | | 04/01/2036 | | 01/08/2037 | |
| 22/03/2032 | | 02/05/2033 | | 04/01/2036 | | 01/08/2037 | | 28/07/2040 | |
| ପୂର୍ଣ୍ଣିମା | 20/10/2031 | ଚନ୍ଦ୍ର | 17/05/2032 | ବୁଧ | 02/10/2033 | ଶନି | 26/02/2036 | ଗୁରୁ | 09/02/2038 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 12/11/2031 | ମଙ୍ଗଳ | 16/06/2032 | ଶନି | 01/01/2034 | ଗୁରୁ | 06/06/2036 | ରାହୁ | 10/06/2038 |
| ମଙ୍ଗଳ | 24/11/2031 | ବୁଧ | 19/08/2032 | ଗୁରୁ | 22/06/2034 | ରାହୁ | 09/08/2036 | ଶୁକ୍ର | 09/01/2039 |
| ବୁଧ | 20/12/2031 | ଶନି | 26/09/2032 | ରାହୁ | 08/10/2034 | ଶୁକ୍ର | 29/11/2036 | ପୂର୍ଣ୍ଣିମା | 11/03/2039 |
| ଶନି | 04/01/2032 | ଗୁରୁ | 06/12/2032 | ଶୁକ୍ର | 16/04/2035 | ପୂର୍ଣ୍ଣିମା | 31/12/2036 | ଚନ୍ଦ୍ର | 09/08/2039 |
| ଗୁରୁ | 01/02/2032 | ରାହୁ | 20/01/2033 | ପୂର୍ଣ୍ଣିମା | 10/06/2035 | ଚନ୍ଦ୍ର | 21/03/2037 | ମଙ୍ଗଳ | 29/10/2039 |
| ରାହୁ | 19/02/2032 | ଶୁକ୍ର | 09/04/2033 | ଚନ୍ଦ୍ର | 24/10/2035 | ମଙ୍ଗଳ | 02/05/2037 | ବୁଧ | 18/04/2040 |
| ଶୁକ୍ର | 22/03/2032 | ପୂର୍ଣ୍ଣିମା | 02/05/2033 | ମଙ୍ଗଳ | 04/01/2036 | ବୁଧ | 01/08/2037 | ଶନି | 28/07/2040 |
| 28/07/2040 | | 18/06/2042 | | 08/10/2045 | | 17/09/2046 | | 27/01/2049 | |
| 18/06/2042 | | 08/10/2045 | | 17/09/2046 | | 27/01/2049 | | 02/05/2050 | |
| ରାହୁ | 13/10/2040 | ଶୁକ୍ର | 08/02/2043 | ପୂର୍ଣ୍ଣିମା | 27/10/2045 | ଚନ୍ଦ୍ର | 15/01/2047 | ମଙ୍ଗଳ | 02/03/2049 |
| ଶୁକ୍ର | 24/02/2041 | ପୂର୍ଣ୍ଣିମା | 16/04/2043 | ଚନ୍ଦ୍ର | 14/12/2045 | ମଙ୍ଗଳ | 20/03/2047 | ବୁଧ | 13/05/2049 |
| ପୂର୍ଣ୍ଣିମା | 03/04/2041 | ଚନ୍ଦ୍ର | 01/10/2043 | ମଙ୍ଗଳ | 08/01/2046 | ବୁଧ | 03/08/2047 | ଶନି | 25/06/2049 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 08/07/2041 | ମଙ୍ଗଳ | 29/12/2043 | ବୁଧ | 03/03/2046 | ଶନି | 22/10/2047 | ଗୁରୁ | 14/09/2049 |
| ମଙ୍ଗଳ | 28/08/2041 | ବୁଧ | 06/07/2044 | ଶନି | 04/04/2046 | ଗୁରୁ | 21/03/2048 | ରାହୁ | 04/11/2049 |
| ବୁଧ | 15/12/2041 | ଶନି | 26/10/2044 | ଗୁରୁ | 04/06/2046 | ରାହୁ | 25/06/2048 | ଶୁକ୍ର | 01/02/2050 |
| ଶନି | 17/02/2042 | ଗୁରୁ | 26/05/2045 | ରାହୁ | 12/07/2046 | ଶୁକ୍ର | 10/12/2048 | ପୂର୍ଣ୍ଣିମା | 27/02/2050 |
| ଗୁରୁ | 18/06/2042 | ରାହୁ | 08/10/2045 | ଶୁକ୍ର | 17/09/2046 | ପୂର୍ଣ୍ଣିମା | 27/01/2049 | ଚନ୍ଦ୍ର | 02/05/2050 |
| 02/05/2050 | | 05/04/2051 | | 07/01/2053 | | 16/02/2054 | | 28/01/2056 | |
| 05/04/2051 | | 07/01/2053 | | 16/02/2054 | | 28/01/2056 | | 18/08/2056 | |
| ଶନି | 02/06/2050 | ଗୁରୁ | 27/07/2051 | ରାହୁ | 21/02/2053 | ଶୁକ୍ର | 05/07/2054 | ପୂର୍ଣ୍ଣିମା | 08/02/2056 |
| ଗୁରୁ | 01/08/2050 | ରାହୁ | 06/10/2051 | ଶୁକ୍ର | 11/05/2053 | ପୂର୍ଣ୍ଣିମା | 13/08/2054 | ଚନ୍ଦ୍ର | 07/03/2056 |
| ରାହୁ | 07/09/2050 | ଶୁକ୍ର | 08/02/2052 | ପୂର୍ଣ୍ଣିମା | 02/06/2053 | ଚନ୍ଦ୍ର | 20/11/2054 | ମଙ୍ଗଳ | 22/03/2056 |
| ଶୁକ୍ର | 12/11/2050 | ପୂର୍ଣ୍ଣିମା | 15/03/2052 | ଚନ୍ଦ୍ର | 28/07/2053 | ମଙ୍ଗଳ | 11/01/2055 | ବୁଧ | 23/04/2056 |
| ପୂର୍ଣ୍ଣିମା | 01/12/2050 | ଚନ୍ଦ୍ର | 12/06/2052 | ମଙ୍ଗଳ | 28/08/2053 | ବୁଧ | 03/05/2055 | ଶନି | 12/05/2056 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 17/01/2051 | ମଙ୍ଗଳ | 30/07/2052 | ବୁଧ | 30/10/2053 | ଶନି | 08/07/2055 | ଗୁରୁ | 17/06/2056 |
| ମଙ୍ଗଳ | 11/02/2051 | ବୁଧ | 08/11/2052 | ଶନି | 07/12/2053 | ଗୁରୁ | 10/11/2055 | ରାହୁ | 09/07/2056 |
| ବୁଧ | 05/04/2051 | ଶନି | 07/01/2053 | ଗୁରୁ | 16/02/2054 | ରାହୁ | 28/01/2056 | ଶୁକ୍ର | 18/08/2056 |

ଅକ୍ଷେପ୍ଟର ଦଶା - ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷର

| ଶନି - ଚନ୍ଦ୍ର | | ଶନି - ମଙ୍ଗଳ | | ଶନି - ବୁଧ | | ଗୁରୁ - ଗୁରୁ | | ଗୁରୁ - ରାହୁ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 18/08/2056 | | 07/01/2058 | | 04/10/2058 | | 01/05/2060 | | 04/09/2063 | |
| 07/01/2058 | | 04/10/2058 | | 01/05/2060 | | 04/09/2063 | | 14/10/2065 | |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 27/10/2056 | ମଙ୍ଗଳ | 27/01/2058 | ବୁଧ | 03/01/2059 | ଗୁରୁ | 02/12/2060 | ରାହୁ | 29/11/2063 |
| ମଙ୍ଗଳ | 04/12/2056 | ବୁଧ | 10/03/2058 | ଶନି | 25/02/2059 | ରାହୁ | 17/04/2061 | ଶୁକ୍ର | 27/04/2064 |
| ବୁଧ | 21/02/2057 | ଶନି | 05/04/2058 | ଗୁରୁ | 06/06/2059 | ଶୁକ୍ର | 10/12/2061 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 09/06/2064 |
| ଶନି | 09/04/2057 | ଗୁରୁ | 22/05/2058 | ରାହୁ | 09/08/2059 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 16/02/2062 | ଚନ୍ଦ୍ର | 24/09/2064 |
| ଗୁରୁ | 08/07/2057 | ରାହୁ | 21/06/2058 | ଶୁକ୍ର | 29/11/2059 | ଚନ୍ଦ୍ର | 05/08/2062 | ମଙ୍ଗଳ | 20/11/2064 |
| ରାହୁ | 02/09/2057 | ଶୁକ୍ର | 13/08/2058 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 31/12/2059 | ମଙ୍ଗଳ | 03/11/2062 | ବୁଧ | 21/03/2065 |
| ଶୁକ୍ର | 10/12/2057 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 28/08/2058 | ଚନ୍ଦ୍ର | 20/03/2060 | ବୁଧ | 14/05/2063 | ଶନି | 01/06/2065 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 07/01/2058 | ଚନ୍ଦ୍ର | 04/10/2058 | ମଙ୍ଗଳ | 01/05/2060 | ଶନି | 04/09/2063 | ଗୁରୁ | 14/10/2065 |
| 14/10/2065 | | 25/06/2069 | | 15/07/2070 | | 05/03/2073 | | 01/08/2074 | |
| 25/06/2069 | | 15/07/2070 | | 05/03/2073 | | 01/08/2074 | | 28/07/2077 | |
| ଶୁକ୍ର | 04/07/2066 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 16/07/2069 | ଚନ୍ଦ୍ର | 26/11/2070 | ମଙ୍ଗଳ | 12/04/2073 | ବୁଧ | 20/01/2075 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 17/09/2066 | ଚନ୍ଦ୍ର | 08/09/2069 | ମଙ୍ଗଳ | 05/02/2071 | ବୁଧ | 02/07/2073 | ଶନି | 01/05/2075 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 23/03/2067 | ମଙ୍ଗଳ | 06/10/2069 | ବୁଧ | 07/07/2071 | ଶନି | 19/08/2073 | ଗୁରୁ | 09/11/2075 |
| ମଙ୍ଗଳ | 01/07/2067 | ବୁଧ | 06/12/2069 | ଶନି | 04/10/2071 | ଗୁରୁ | 17/11/2073 | ରାହୁ | 10/03/2076 |
| ବୁଧ | 29/01/2068 | ଶନି | 11/01/2070 | ଗୁରୁ | 22/03/2072 | ରାହୁ | 13/01/2074 | ଶୁକ୍ର | 08/10/2076 |
| ଶନି | 02/06/2068 | ଗୁରୁ | 19/03/2070 | ରାହୁ | 07/07/2072 | ଶୁକ୍ର | 23/04/2074 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 08/12/2076 |
| ଗୁରୁ | 26/01/2069 | ରାହୁ | 01/05/2070 | ଶୁକ୍ର | 11/01/2073 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 22/05/2074 | ଚନ୍ଦ୍ର | 09/05/2077 |
| ରାହୁ | 25/06/2069 | ଶୁକ୍ର | 15/07/2070 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 05/03/2073 | ଚନ୍ଦ୍ର | 01/08/2074 | ମଙ୍ଗଳ | 28/07/2077 |
| 28/07/2077 | | 02/05/2079 | | 31/08/2080 | | 31/12/2082 | | 01/09/2083 | |
| 02/05/2079 | | 31/08/2080 | | 31/12/2082 | | 01/09/2083 | | 02/05/2085 | |
| ଶନି | 26/09/2077 | ରାହୁ | 25/06/2079 | ଶୁକ୍ର | 13/02/2081 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 14/01/2083 | ଚନ୍ଦ୍ର | 24/11/2083 |
| ଗୁରୁ | 17/01/2078 | ଶୁକ୍ର | 28/09/2079 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 01/04/2081 | ଚନ୍ଦ୍ର | 17/02/2083 | ମଙ୍ଗଳ | 08/01/2084 |
| ରାହୁ | 29/03/2078 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 25/10/2079 | ଚନ୍ଦ୍ର | 28/07/2081 | ମଙ୍ଗଳ | 07/03/2083 | ବୁଧ | 13/04/2084 |
| ଶୁକ୍ର | 01/08/2078 | ଚନ୍ଦ୍ର | 01/01/2080 | ମଙ୍ଗଳ | 30/09/2081 | ବୁଧ | 14/04/2083 | ଶନି | 09/06/2084 |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 06/09/2078 | ମଙ୍ଗଳ | 06/02/2080 | ବୁଧ | 11/02/2082 | ଶନି | 07/05/2083 | ଗୁରୁ | 24/09/2084 |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 04/12/2078 | ବୁଧ | 22/04/2080 | ଶନି | 01/05/2082 | ଗୁରୁ | 18/06/2083 | ରାହୁ | 30/11/2084 |
| ମଙ୍ଗଳ | 21/01/2079 | ଶନି | 06/06/2080 | ଗୁରୁ | 28/09/2082 | ରାହୁ | 15/07/2083 | ଶୁକ୍ର | 29/03/2085 |
| ବୁଧ | 02/05/2079 | ଗୁରୁ | 31/08/2080 | ରାହୁ | 31/12/2082 | ଶୁକ୍ର | 01/09/2083 | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 02/05/2085 |

ଘୋଷିନୀ ଦଶା

ଭୋଗ୍ୟ ଦଶା କାଳ : ଭଦ୍ରିକା 1 ବର୍ଷ 4 ମାସ 3 ଦିନ

| ଭଦ୍ରିକା 5 ବର୍ଷ | | ଉଲ୍ଲା 6 ବର୍ଷ | | ସିଦ୍ଧା 7 ବର୍ଷ | | ସଙ୍କଟା 8 ବର୍ଷ | | ମଙ୍ଗଳା 1 ବର୍ଷ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 05/03/1987 | | 07/07/1988 | | 08/07/1994 | | 07/07/2001 | | 07/07/2009 | |
| 07/07/1988 | | 08/07/1994 | | 07/07/2001 | | 07/07/2009 | | 08/07/2010 | |
| 00/00/0000 | ଉଲ୍ଲା | 07/07/1989 | ସିଦ୍ଧା | 17/11/1995 | ସଙ୍କ | 18/04/2003 | ମଙ୍ଗ | 18/07/2009 | |
| 00/00/0000 | ସିଦ୍ଧା | 06/09/1990 | ସଙ୍କ | 07/06/1997 | ମଙ୍ଗ | 08/07/2003 | ପିଙ୍ଗ | 07/08/2009 | |
| 00/00/0000 | ସଙ୍କ | 06/01/1992 | ମଙ୍ଗ | 17/08/1997 | ପିଙ୍ଗ | 17/12/2003 | ଧାନ୍ୟା | 06/09/2009 | |
| 05/03/1987 | ମଙ୍ଗ | 07/03/1992 | ପିଙ୍ଗ | 06/01/1998 | ଧାନ୍ୟା | 17/08/2004 | ଭ୍ରାମ | 17/10/2009 | |
| ମଙ୍ଗ | 08/04/1987 | ପିଙ୍ଗ | 07/07/1992 | ଧାନ୍ୟା | 07/08/1998 | ଭ୍ରାମ | 07/07/2005 | ଭଦ୍ରି | 07/12/2009 |
| ପିଙ୍ଗ | 18/07/1987 | ଧାନ୍ୟା | 06/01/1993 | ଭ୍ରାମ | 18/05/1999 | ଭଦ୍ରି | 17/08/2006 | ଉଲ୍ଲା | 05/02/2010 |
| ଧାନ୍ୟା | 17/12/1987 | ଭ୍ରାମ | 06/09/1993 | ଭଦ୍ରି | 07/05/2000 | ଉଲ୍ଲା | 17/12/2007 | ସିଦ୍ଧା | 17/04/2010 |
| ଭ୍ରାମ | 07/07/1988 | ଭଦ୍ରି | 08/07/1994 | ଉଲ୍ଲା | 07/07/2001 | ସିଦ୍ଧା | 07/07/2009 | ସଙ୍କ | 08/07/2010 |
| | | | | | | | | | |
| ପିଙ୍ଗଳା 2 ବର୍ଷ | | ଧାନ୍ୟା 3 ବର୍ଷ | | ଭ୍ରାମରା 4 ବର୍ଷ | | ଭଦ୍ରିକା 5 ବର୍ଷ | | ଉଲ୍ଲା 6 ବର୍ଷ | |
| 08/07/2010 | | 07/07/2012 | | 08/07/2015 | | 08/07/2019 | | 07/07/2024 | |
| 07/07/2012 | | 08/07/2015 | | 08/07/2019 | | 07/07/2024 | | 08/07/2030 | |
| ପିଙ୍ଗ | 17/08/2010 | ଧାନ୍ୟା | 06/10/2012 | ଭ୍ରାମ | 17/12/2015 | ଭଦ୍ରି | 18/03/2020 | ଉଲ୍ଲା | 07/07/2025 |
| ଧାନ୍ୟା | 17/10/2010 | ଭ୍ରାମ | 05/02/2013 | ଭଦ୍ରି | 07/07/2016 | ଉଲ୍ଲା | 16/01/2021 | ସିଦ୍ଧା | 06/09/2026 |
| ଭ୍ରାମ | 06/01/2011 | ଭଦ୍ରି | 07/07/2013 | ଉଲ୍ଲା | 08/03/2017 | ସିଦ୍ଧା | 06/01/2022 | ସଙ୍କ | 06/01/2028 |
| ଭଦ୍ରି | 18/04/2011 | ଉଲ୍ଲା | 06/01/2014 | ସିଦ୍ଧା | 17/12/2017 | ସଙ୍କ | 16/02/2023 | ମଙ୍ଗ | 07/03/2028 |
| ଉଲ୍ଲା | 17/08/2011 | ସିଦ୍ଧା | 07/08/2014 | ସଙ୍କ | 06/11/2018 | ମଙ୍ଗ | 08/04/2023 | ପିଙ୍ଗ | 07/07/2028 |
| ସିଦ୍ଧା | 06/01/2012 | ସଙ୍କ | 08/04/2015 | ମଙ୍ଗ | 17/12/2018 | ପିଙ୍ଗ | 18/07/2023 | ଧାନ୍ୟା | 06/01/2029 |
| ସଙ୍କ | 17/06/2012 | ମଙ୍ଗ | 08/05/2015 | ପିଙ୍ଗ | 08/03/2019 | ଧାନ୍ୟା | 17/12/2023 | ଭ୍ରାମ | 06/09/2029 |
| ମଙ୍ଗ | 07/07/2012 | ପିଙ୍ଗ | 08/07/2015 | ଧାନ୍ୟା | 08/07/2019 | ଭ୍ରାମ | 07/07/2024 | ଭଦ୍ରି | 08/07/2030 |

ନୋଟ :- ଘୋଷିନୀ ର ସ୍ୱାମୀ ତଳେ ଦିଆ ଯାଇଛି :-

ମଙ୍ଗଳା : ଚନ୍ଦ୍ର ପିଙ୍ଗଳା : ରବି ଧାନ୍ୟା : ଶୁକ୍ର ଭ୍ରାମରା : ମଙ୍ଗଳ
 ଭଦ୍ରିକା : ବୁଧ ଉଲ୍ଲା : ଶନି ସିଦ୍ଧା : ଶୁକ୍ର ସଙ୍କଟା : ରାହୁ/କେତୁ

ଉପରୋକ୍ତ ତିଥୀ ଦଶାର ସମାପ୍ତ ହେବାର ସମୟ ଦର୍ଶାଉଛି ।
 ଘୋଷିନୀ ଦଶା ପୂରା ୩୬ ବର୍ଷ ର ଆୟୁ ନିର୍ଣ୍ଣୟ ଦିଆ ଯାଇଛି ।

ଘୋଷିତା ଦଶା

| ସିଦ୍ଧା 7 ବର୍ଷ | | ସଙ୍କଟା 8 ବର୍ଷ | | ମଙ୍ଗଳା 1 ବର୍ଷ | | ପିଙ୍ଗଳା 2 ବର୍ଷ | | ଧାନ୍ୟା 3 ବର୍ଷ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 08/07/2030 | | 07/07/2037 | | 07/07/2045 | | 08/07/2046 | | 07/07/2048 | |
| 07/07/2037 | | 07/07/2045 | | 08/07/2046 | | 07/07/2048 | | 08/07/2051 | |
| ସିଦ୍ଧା | 17/11/2031 | ସଙ୍କ | 18/04/2039 | ମଙ୍ଗ | 18/07/2045 | ପିଙ୍ଗ | 17/08/2046 | ଧାନ୍ୟା | 06/10/2048 |
| ସଙ୍କ | 07/06/2033 | ମଙ୍ଗ | 08/07/2039 | ପିଙ୍ଗ | 07/08/2045 | ଧାନ୍ୟା | 17/10/2046 | ଭ୍ରାମ | 05/02/2049 |
| ମଙ୍ଗ | 17/08/2033 | ପିଙ୍ଗ | 17/12/2039 | ଧାନ୍ୟା | 06/09/2045 | ଭ୍ରାମ | 06/01/2047 | ଭଦ୍ରି | 07/07/2049 |
| ପିଙ୍ଗ | 06/01/2034 | ଧାନ୍ୟା | 17/08/2040 | ଭ୍ରାମ | 17/10/2045 | ଭଦ୍ରି | 18/04/2047 | ଉଲ୍ଲା | 06/01/2050 |
| ଧାନ୍ୟା | 07/08/2034 | ଭ୍ରାମ | 07/07/2041 | ଭଦ୍ରି | 07/12/2045 | ଉଲ୍ଲା | 17/08/2047 | ସିଦ୍ଧା | 07/08/2050 |
| ଭ୍ରାମ | 18/05/2035 | ଭଦ୍ରି | 17/08/2042 | ଉଲ୍ଲା | 05/02/2046 | ସିଦ୍ଧା | 06/01/2048 | ସଙ୍କ | 08/04/2051 |
| ଭଦ୍ରି | 07/05/2036 | ଉଲ୍ଲା | 17/12/2043 | ସିଦ୍ଧା | 17/04/2046 | ସଙ୍କ | 17/06/2048 | ମଙ୍ଗ | 08/05/2051 |
| ଉଲ୍ଲା | 07/07/2037 | ସିଦ୍ଧା | 07/07/2045 | ସଙ୍କ | 08/07/2046 | ମଙ୍ଗ | 07/07/2048 | ପିଙ୍ଗ | 08/07/2051 |

| ଭ୍ରାମରା 4 ବର୍ଷ | | ଭଦ୍ରିକା 5 ବର୍ଷ | | ଉଲ୍ଲା 6 ବର୍ଷ | | ସିଦ୍ଧା 7 ବର୍ଷ | | ସଙ୍କଟା 8 ବର୍ଷ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 08/07/2051 | | 08/07/2055 | | 07/07/2060 | | 08/07/2066 | | 07/07/2073 | |
| 08/07/2055 | | 07/07/2060 | | 08/07/2066 | | 07/07/2073 | | 07/07/2081 | |
| ଭ୍ରାମ | 17/12/2051 | ଭଦ୍ରି | 18/03/2056 | ଉଲ୍ଲା | 07/07/2061 | ସିଦ୍ଧା | 17/11/2067 | ସଙ୍କ | 18/04/2075 |
| ଭଦ୍ରି | 07/07/2052 | ଉଲ୍ଲା | 16/01/2057 | ସିଦ୍ଧା | 06/09/2062 | ସଙ୍କ | 07/06/2069 | ମଙ୍ଗ | 08/07/2075 |
| ଉଲ୍ଲା | 08/03/2053 | ସିଦ୍ଧା | 06/01/2058 | ସଙ୍କ | 06/01/2064 | ମଙ୍ଗ | 17/08/2069 | ପିଙ୍ଗ | 17/12/2075 |
| ସିଦ୍ଧା | 17/12/2053 | ସଙ୍କ | 16/02/2059 | ମଙ୍ଗ | 07/03/2064 | ପିଙ୍ଗ | 06/01/2070 | ଧାନ୍ୟା | 17/08/2076 |
| ସଙ୍କ | 06/11/2054 | ମଙ୍ଗ | 08/04/2059 | ପିଙ୍ଗ | 07/07/2064 | ଧାନ୍ୟା | 07/08/2070 | ଭ୍ରାମ | 07/07/2077 |
| ମଙ୍ଗ | 17/12/2054 | ପିଙ୍ଗ | 18/07/2059 | ଧାନ୍ୟା | 06/01/2065 | ଭ୍ରାମ | 18/05/2071 | ଭଦ୍ରି | 17/08/2078 |
| ପିଙ୍ଗ | 08/03/2055 | ଧାନ୍ୟା | 17/12/2059 | ଭ୍ରାମ | 06/09/2065 | ଭଦ୍ରି | 07/05/2072 | ଉଲ୍ଲା | 17/12/2079 |
| ଧାନ୍ୟା | 08/07/2055 | ଭ୍ରାମ | 07/07/2060 | ଭଦ୍ରି | 08/07/2066 | ଉଲ୍ଲା | 07/07/2073 | ସିଦ୍ଧା | 07/07/2081 |

| ମଙ୍ଗଳା 1 ବର୍ଷ | | ପିଙ୍ଗଳା 2 ବର୍ଷ | | ଧାନ୍ୟା 3 ବର୍ଷ | | ଭ୍ରାମରା 4 ବର୍ଷ | | ଭଦ୍ରିକା 5 ବର୍ଷ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 07/07/2081 | | 08/07/2082 | | 07/07/2084 | | 08/07/2087 | | 08/07/2091 | |
| 08/07/2082 | | 07/07/2084 | | 08/07/2087 | | 08/07/2091 | | 00/00/0000 | |
| ମଙ୍ଗ | 18/07/2081 | ପିଙ୍ଗ | 17/08/2082 | ଧାନ୍ୟା | 06/10/2084 | ଭ୍ରାମ | 17/12/2087 | ଭଦ୍ରି | 18/03/2092 |
| ପିଙ୍ଗ | 07/08/2081 | ଧାନ୍ୟା | 17/10/2082 | ଭ୍ରାମ | 05/02/2085 | ଭଦ୍ରି | 07/07/2088 | ଉଲ୍ଲା | 16/01/2093 |
| ଧାନ୍ୟା | 06/09/2081 | ଭ୍ରାମ | 06/01/2083 | ଭଦ୍ରି | 07/07/2085 | ଉଲ୍ଲା | 08/03/2089 | ସିଦ୍ଧା | 06/01/2094 |
| ଭ୍ରାମ | 17/10/2081 | ଭଦ୍ରି | 18/04/2083 | ଉଲ୍ଲା | 06/01/2086 | ସିଦ୍ଧା | 17/12/2089 | ସଙ୍କ | 16/02/2095 |
| ଭଦ୍ରି | 07/12/2081 | ଉଲ୍ଲା | 17/08/2083 | ସିଦ୍ଧା | 07/08/2086 | ସଙ୍କ | 06/11/2090 | ମଙ୍ଗ | 05/03/2095 |
| ଉଲ୍ଲା | 05/02/2082 | ସିଦ୍ଧା | 06/01/2084 | ସଙ୍କ | 08/04/2087 | ମଙ୍ଗ | 17/12/2090 | | 00/00/0000 |
| ସିଦ୍ଧା | 17/04/2082 | ସଙ୍କ | 17/06/2084 | ମଙ୍ଗ | 08/05/2087 | ପିଙ୍ଗ | 08/03/2091 | | 00/00/0000 |
| ସଙ୍କ | 08/07/2082 | ମଙ୍ଗ | 07/07/2084 | ପିଙ୍ଗ | 08/07/2087 | ଧାନ୍ୟା | 08/07/2091 | | 00/00/0000 |

ଘୋଷିନୀ ଦଶା - ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷର

| ଭଦ୍ର - ସଙ୍ଗ | | ଭଦ୍ର - ମଙ୍ଗ | | ଭଦ୍ର - ପିଙ୍ଗ | | ଭଦ୍ର - ଧାନ୍ୟା | | ଭଦ୍ର - ଭ୍ରାମ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 06/01/2022 | | 16/02/2023 | | 08/04/2023 | | 18/07/2023 | | 17/12/2023 | |
| 16/02/2023 | | 08/04/2023 | | 18/07/2023 | | 17/12/2023 | | 07/07/2024 | |
| ସଙ୍ଗ | 06/04/2022 | ମଙ୍ଗ | 17/02/2023 | ପିଙ୍ଗ | 13/04/2023 | ଧାନ୍ୟା | 31/07/2023 | ଭ୍ରାମ | 09/01/2024 |
| ମଙ୍ଗ | 17/04/2022 | ପିଙ୍ଗ | 20/02/2023 | ଧାନ୍ୟା | 22/04/2023 | ଭ୍ରାମ | 17/08/2023 | ଭଦ୍ର | 06/02/2024 |
| ପିଙ୍ଗ | 10/05/2022 | ଧାନ୍ୟା | 24/02/2023 | ଭ୍ରାମ | 03/05/2023 | ଭଦ୍ର | 07/09/2023 | ଉଲ୍ଲା | 11/03/2024 |
| ଧାନ୍ୟା | 13/06/2022 | ଭ୍ରାମ | 02/03/2023 | ଭଦ୍ର | 17/05/2023 | ଉଲ୍ଲା | 02/10/2023 | ସିଦ୍ଧା | 19/04/2024 |
| ଭ୍ରାମ | 28/07/2022 | ଭଦ୍ର | 09/03/2023 | ଉଲ୍ଲା | 03/06/2023 | ସିଦ୍ଧା | 01/11/2023 | ସଙ୍ଗ | 03/06/2024 |
| ଭଦ୍ର | 22/09/2022 | ଉଲ୍ଲା | 17/03/2023 | ସିଦ୍ଧା | 23/06/2023 | ସଙ୍ଗ | 05/12/2023 | ମଙ୍ଗ | 09/06/2024 |
| ଉଲ୍ଲା | 29/11/2022 | ସିଦ୍ଧା | 27/03/2023 | ସଙ୍ଗ | 15/07/2023 | ମଙ୍ଗ | 09/12/2023 | ପିଙ୍ଗ | 20/06/2024 |
| ସିଦ୍ଧା | 16/02/2023 | ସଙ୍ଗ | 08/04/2023 | ମଙ୍ଗ | 18/07/2023 | ପିଙ୍ଗ | 17/12/2023 | ଧାନ୍ୟା | 07/07/2024 |

| ଉଲ୍ଲା - ଉଲ୍ଲା | | ଉଲ୍ଲା - ସିଦ୍ଧା | | ଉଲ୍ଲା - ସଙ୍ଗ | | ଉଲ୍ଲା - ମଙ୍ଗ | | ଉଲ୍ଲା - ପିଙ୍ଗ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 07/07/2024 | | 07/07/2025 | | 06/09/2026 | | 06/01/2028 | | 07/03/2028 | |
| 07/07/2025 | | 06/09/2026 | | 06/01/2028 | | 07/03/2028 | | 07/07/2028 | |
| ଉଲ୍ଲା | 06/09/2024 | ସିଦ୍ଧା | 28/09/2025 | ସଙ୍ଗ | 24/12/2026 | ମଙ୍ଗ | 08/01/2028 | ପିଙ୍ଗ | 14/03/2028 |
| ସିଦ୍ଧା | 16/11/2024 | ସଙ୍ଗ | 01/01/2026 | ମଙ୍ଗ | 06/01/2027 | ପିଙ୍ଗ | 12/01/2028 | ଧାନ୍ୟା | 24/03/2028 |
| ସଙ୍ଗ | 05/02/2025 | ମଙ୍ଗ | 13/01/2026 | ପିଙ୍ଗ | 02/02/2027 | ଧାନ୍ୟା | 17/01/2028 | ଭ୍ରାମ | 07/04/2028 |
| ମଙ୍ଗ | 15/02/2025 | ପିଙ୍ଗ | 05/02/2026 | ଧାନ୍ୟା | 15/03/2027 | ଭ୍ରାମ | 23/01/2028 | ଭଦ୍ର | 24/04/2028 |
| ପିଙ୍ଗ | 08/03/2025 | ଧାନ୍ୟା | 13/03/2026 | ଭ୍ରାମ | 08/05/2027 | ଭଦ୍ର | 01/02/2028 | ଉଲ୍ଲା | 14/05/2028 |
| ଧାନ୍ୟା | 07/04/2025 | ଭ୍ରାମ | 29/04/2026 | ଭଦ୍ର | 15/07/2027 | ଉଲ୍ଲା | 11/02/2028 | ସିଦ୍ଧା | 07/06/2028 |
| ଭ୍ରାମ | 18/05/2025 | ଭଦ୍ର | 27/06/2026 | ଉଲ୍ଲା | 04/10/2027 | ସିଦ୍ଧା | 23/02/2028 | ସଙ୍ଗ | 04/07/2028 |
| ଭଦ୍ର | 07/07/2025 | ଉଲ୍ଲା | 06/09/2026 | ସିଦ୍ଧା | 06/01/2028 | ସଙ୍ଗ | 07/03/2028 | ମଙ୍ଗ | 07/07/2028 |

| ଉଲ୍ଲା - ଧାନ୍ୟା | | ଉଲ୍ଲା - ଭ୍ରାମ | | ଉଲ୍ଲା - ଭଦ୍ର | | ସିଦ୍ଧା - ସିଦ୍ଧା | | ସିଦ୍ଧା - ସଙ୍ଗ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 07/07/2028 | | 06/01/2029 | | 06/09/2029 | | 08/07/2030 | | 17/11/2031 | |
| 06/01/2029 | | 06/09/2029 | | 08/07/2030 | | 17/11/2031 | | 07/06/2033 | |
| ଧାନ୍ୟା | 22/07/2028 | ଭ୍ରାମ | 02/02/2029 | ଭଦ୍ର | 19/10/2029 | ସିଦ୍ଧା | 12/10/2030 | ସଙ୍ଗ | 22/03/2032 |
| ଭ୍ରାମ | 12/08/2028 | ଭଦ୍ର | 08/03/2029 | ଉଲ୍ଲା | 08/12/2029 | ସଙ୍ଗ | 31/01/2031 | ମଙ୍ଗ | 07/04/2032 |
| ଭଦ୍ର | 06/09/2028 | ଉଲ୍ଲା | 17/04/2029 | ସିଦ୍ଧା | 05/02/2030 | ମଙ୍ଗ | 14/02/2031 | ପିଙ୍ଗ | 08/05/2032 |
| ଉଲ୍ଲା | 06/10/2028 | ସିଦ୍ଧା | 04/06/2029 | ସଙ୍ଗ | 14/04/2030 | ପିଙ୍ଗ | 13/03/2031 | ଧାନ୍ୟା | 25/06/2032 |
| ସିଦ୍ଧା | 11/11/2028 | ସଙ୍ଗ | 28/07/2029 | ମଙ୍ଗ | 23/04/2030 | ଧାନ୍ୟା | 24/04/2031 | ଭ୍ରାମ | 27/08/2032 |
| ସଙ୍ଗ | 22/12/2028 | ମଙ୍ଗ | 03/08/2029 | ପିଙ୍ଗ | 09/05/2030 | ଭ୍ରାମ | 18/06/2031 | ଭଦ୍ର | 14/11/2032 |
| ମଙ୍ଗ | 27/12/2028 | ପିଙ୍ଗ | 17/08/2029 | ଧାନ୍ୟା | 04/06/2030 | ଭଦ୍ର | 26/08/2031 | ଉଲ୍ଲା | 16/02/2033 |
| ପିଙ୍ଗ | 06/01/2029 | ଧାନ୍ୟା | 06/09/2029 | ଭ୍ରାମ | 08/07/2030 | ଉଲ୍ଲା | 17/11/2031 | ସିଦ୍ଧା | 07/06/2033 |

ଘୋଷିତା ଦଶା - ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ

| ସିଦ୍ଧା - ମଙ୍ଗ | | ସିଦ୍ଧା - ପିଙ୍ଗ | | ସିଦ୍ଧା - ଧାନ୍ୟା | | ସିଦ୍ଧା - ଭ୍ରାମ | | ସିଦ୍ଧା - ଭଦ୍ର | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 07/06/2033 | | 17/08/2033 | | 06/01/2034 | | 07/08/2034 | | 18/05/2035 | |
| 17/08/2033 | | 06/01/2034 | | 07/08/2034 | | 18/05/2035 | | 07/05/2036 | |
| ମଙ୍ଗ | 09/06/2033 | ପିଙ୍ଗ | 25/08/2033 | ଧାନ୍ୟା | 24/01/2034 | ଭ୍ରାମ | 08/09/2034 | ଭଦ୍ର | 06/07/2035 |
| ପିଙ୍ଗ | 13/06/2033 | ଧାନ୍ୟା | 06/09/2033 | ଭ୍ରାମ | 16/02/2034 | ଭଦ୍ର | 17/10/2034 | ଭଲ୍ଲା | 04/09/2035 |
| ଧାନ୍ୟା | 19/06/2033 | ଭ୍ରାମ | 21/09/2033 | ଭଦ୍ର | 18/03/2034 | ଭଲ୍ଲା | 03/12/2034 | ସିଦ୍ଧା | 12/11/2035 |
| ଭ୍ରାମ | 27/06/2033 | ଭଦ୍ର | 11/10/2033 | ଭଲ୍ଲା | 23/04/2034 | ସିଦ୍ଧା | 28/01/2035 | ସଙ୍ଗ | 30/01/2036 |
| ଭଦ୍ର | 07/07/2033 | ଭଲ୍ଲା | 04/11/2033 | ସିଦ୍ଧା | 03/06/2034 | ସଙ୍ଗ | 01/04/2035 | ମଙ୍ଗ | 08/02/2036 |
| ଭଲ୍ଲା | 18/07/2033 | ସିଦ୍ଧା | 01/12/2033 | ସଙ୍ଗ | 20/07/2034 | ମଙ୍ଗ | 09/04/2035 | ପିଙ୍ଗ | 28/02/2036 |
| ସିଦ୍ଧା | 01/08/2033 | ସଙ୍ଗ | 02/01/2034 | ମଙ୍ଗ | 26/07/2034 | ପିଙ୍ଗ | 24/04/2035 | ଧାନ୍ୟା | 29/03/2036 |
| ସଙ୍ଗ | 17/08/2033 | ମଙ୍ଗ | 06/01/2034 | ପିଙ୍ଗ | 07/08/2034 | ଧାନ୍ୟା | 18/05/2035 | ଭ୍ରାମ | 07/05/2036 |

| ସିଦ୍ଧା - ଭଲ୍ଲା | | ସଙ୍ଗ - ସଙ୍ଗ | | ସଙ୍ଗ - ମଙ୍ଗ | | ସଙ୍ଗ - ପିଙ୍ଗ | | ସଙ୍ଗ - ଧାନ୍ୟା | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 07/05/2036 | | 07/07/2037 | | 18/04/2039 | | 08/07/2039 | | 17/12/2039 | |
| 07/07/2037 | | 18/04/2039 | | 08/07/2039 | | 17/12/2039 | | 17/08/2040 | |
| ଭଲ୍ଲା | 17/07/2036 | ସଙ୍ଗ | 29/11/2037 | ମଙ୍ଗ | 20/04/2039 | ପିଙ୍ଗ | 17/07/2039 | ଧାନ୍ୟା | 06/01/2040 |
| ସିଦ୍ଧା | 08/10/2036 | ମଙ୍ଗ | 17/12/2037 | ପିଙ୍ଗ | 24/04/2039 | ଧାନ୍ୟା | 30/07/2039 | ଭ୍ରାମ | 03/02/2040 |
| ସଙ୍ଗ | 11/01/2037 | ପିଙ୍ଗ | 22/01/2038 | ଧାନ୍ୟା | 01/05/2039 | ଭ୍ରାମ | 17/08/2039 | ଭଦ୍ର | 07/03/2040 |
| ମଙ୍ଗ | 23/01/2037 | ଧାନ୍ୟା | 17/03/2038 | ଭ୍ରାମ | 10/05/2039 | ଭଦ୍ର | 09/09/2039 | ଭଲ୍ଲା | 17/04/2040 |
| ପିଙ୍ଗ | 15/02/2037 | ଭ୍ରାମ | 28/05/2038 | ଭଦ୍ର | 22/05/2039 | ଭଲ୍ଲା | 06/10/2039 | ସିଦ୍ଧା | 03/06/2040 |
| ଧାନ୍ୟା | 23/03/2037 | ଭଦ୍ର | 26/08/2038 | ଭଲ୍ଲା | 04/06/2039 | ସିଦ୍ଧା | 07/11/2039 | ସଙ୍ଗ | 27/07/2040 |
| ଭ୍ରାମ | 09/05/2037 | ଭଲ୍ଲା | 12/12/2038 | ସିଦ୍ଧା | 20/06/2039 | ସଙ୍ଗ | 13/12/2039 | ମଙ୍ଗ | 03/08/2040 |
| ଭଦ୍ର | 07/07/2037 | ସିଦ୍ଧା | 18/04/2039 | ସଙ୍ଗ | 08/07/2039 | ମଙ୍ଗ | 17/12/2039 | ପିଙ୍ଗ | 17/08/2040 |

| ସଙ୍ଗ - ଭ୍ରାମ | | ସଙ୍ଗ - ଭଦ୍ର | | ସଙ୍ଗ - ଭଲ୍ଲା | | ସଙ୍ଗ - ସିଦ୍ଧା | | ମଙ୍ଗ - ମଙ୍ଗ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 17/08/2040 | | 07/07/2041 | | 17/08/2042 | | 17/12/2043 | | 07/07/2045 | |
| 07/07/2041 | | 17/08/2042 | | 17/12/2043 | | 07/07/2045 | | 18/07/2045 | |
| ଭ୍ରାମ | 22/09/2040 | ଭଦ୍ର | 02/09/2041 | ଭଲ୍ଲା | 06/11/2042 | ସିଦ୍ଧା | 06/04/2044 | ମଙ୍ଗ | 08/07/2045 |
| ଭଦ୍ର | 06/11/2040 | ଭଲ୍ଲା | 08/11/2041 | ସିଦ୍ଧା | 09/02/2043 | ସଙ୍ଗ | 10/08/2044 | ପିଙ୍ଗ | 08/07/2045 |
| ଭଲ୍ଲା | 30/12/2040 | ସିଦ୍ଧା | 26/01/2042 | ସଙ୍ଗ | 28/05/2043 | ମଙ୍ଗ | 26/08/2044 | ଧାନ୍ୟା | 09/07/2045 |
| ସିଦ୍ଧା | 03/03/2041 | ସଙ୍ଗ | 26/04/2042 | ମଙ୍ଗ | 11/06/2043 | ପିଙ୍ଗ | 26/09/2044 | ଭ୍ରାମ | 10/07/2045 |
| ସଙ୍ଗ | 14/05/2041 | ମଙ୍ଗ | 08/05/2042 | ପିଙ୍ଗ | 08/07/2043 | ଧାନ୍ୟା | 13/11/2044 | ଭଦ୍ର | 12/07/2045 |
| ମଙ୍ଗ | 23/05/2041 | ପିଙ୍ଗ | 30/05/2042 | ଧାନ୍ୟା | 17/08/2043 | ଭ୍ରାମ | 15/01/2045 | ଭଲ୍ଲା | 13/07/2045 |
| ପିଙ୍ଗ | 10/06/2041 | ଧାନ୍ୟା | 03/07/2042 | ଭ୍ରାମ | 11/10/2043 | ଭଦ୍ର | 04/04/2045 | ସିଦ୍ଧା | 15/07/2045 |
| ଧାନ୍ୟା | 07/07/2041 | ଭ୍ରାମ | 17/08/2042 | ଭଦ୍ର | 17/12/2043 | ଭଲ୍ଲା | 07/07/2045 | ସଙ୍ଗ | 18/07/2045 |

କାଳଚକ୍ର ଦଶା

ଭୋଗ୍ୟ ଦଶା କାଳ : ଜନ୍ମ 6 ବର୍ଷ 1 ମାସ 18 ଦିନ

ସମୁଦାୟ ଦଶାକାଳ : 83 ବର୍ଷ

ତିଥୀ : ଭରଣୀ - 3 ସୁୟ

ଦିନ : ବୁଧ ଶ୍ରୀବ : ମିଥୁନ

| ଜନ୍ମ 9 ବର୍ଷ | | ତୁଳା 16 ବର୍ଷ | | ବିଛା 7 ବର୍ଷ | | ଧନୁ 10 ବର୍ଷ | | ମକର 4 ବର୍ଷ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 05/03/1987 | | 22/04/1993 | | 22/04/2009 | | 22/04/2016 | | 23/04/2026 | |
| 22/04/1993 | | 22/04/2009 | | 22/04/2016 | | 23/04/2026 | | 23/04/2030 | |
| | 00/00/0000 | ତୁଳା | 23/05/1996 | ବିଛା | 24/11/2009 | ଧନୁ | 06/07/2017 | ମକର | 02/07/2026 |
| | 05/03/1987 | ବିଛା | 28/09/1997 | ଧନୁ | 28/09/2010 | ମକର | 29/12/2017 | କୁମ୍ଭ | 10/09/2026 |
| ବିଛା | 11/10/1987 | ଧନୁ | 02/09/1999 | ମକର | 29/01/2011 | କୁମ୍ଭ | 23/06/2018 | ମୀନ | 05/03/2027 |
| ଧନୁ | 10/11/1988 | ମକର | 09/06/2000 | କୁମ୍ଭ | 01/06/2011 | ମୀନ | 06/09/2019 | ବିଛା | 07/07/2027 |
| ମକର | 18/04/1989 | କୁମ୍ଭ | 18/03/2001 | ମୀନ | 04/04/2012 | ବିଛା | 10/07/2020 | ତୁଳା | 13/04/2028 |
| କୁମ୍ଭ | 23/09/1989 | ମୀନ | 20/02/2003 | ବିଛା | 06/11/2012 | ତୁଳା | 14/06/2022 | ଜନ୍ମ | 19/09/2028 |
| ମୀନ | 24/10/1990 | ବିଛା | 27/06/2004 | ତୁଳା | 14/03/2014 | ଜନ୍ମ | 15/07/2023 | ତୁଳା | 27/06/2029 |
| ବିଛା | 29/07/1991 | ତୁଳା | 29/07/2007 | ଜନ୍ମ | 16/12/2014 | ତୁଳା | 18/06/2025 | ବିଛା | 28/10/2029 |
| ତୁଳା | 22/04/1993 | ଜନ୍ମ | 22/04/2009 | ତୁଳା | 22/04/2016 | ବିଛା | 23/04/2026 | ଧନୁ | 23/04/2030 |

| କୁମ୍ଭ 4 ବର୍ଷ | | ମୀନ 10 ବର୍ଷ | | ବିଛା 7 ବର୍ଷ | | ତୁଳା 16 ବର୍ଷ | | ଜନ୍ମ 9 ବର୍ଷ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 23/04/2030 | | 23/04/2034 | | 22/04/2044 | | 23/04/2051 | | 23/04/2067 | |
| 23/04/2034 | | 22/04/2044 | | 23/04/2051 | | 23/04/2067 | | 00/00/0000 | |
| କୁମ୍ଭ | 02/07/2030 | ମୀନ | 07/07/2035 | ବିଛା | 24/11/2044 | ତୁଳା | 23/05/2054 | ଜନ୍ମ | 13/04/2068 |
| ମୀନ | 25/12/2030 | ବିଛା | 10/05/2036 | ତୁଳା | 01/04/2046 | ଜନ୍ମ | 16/02/2056 | ତୁଳା | 07/01/2070 |
| ବିଛା | 27/04/2031 | ତୁଳା | 14/04/2038 | ଜନ୍ମ | 03/01/2047 | ତୁଳା | 19/03/2059 | ବିଛା | 05/03/2070 |
| ତୁଳା | 03/02/2032 | ଜନ୍ମ | 15/05/2039 | ତୁଳା | 10/05/2048 | ବିଛା | 23/07/2060 | | 00/00/0000 |
| ଜନ୍ମ | 10/07/2032 | ତୁଳା | 18/04/2041 | ବିଛା | 11/12/2048 | ଧନୁ | 28/06/2062 | | 00/00/0000 |
| ତୁଳା | 18/04/2033 | ବିଛା | 20/02/2042 | ଧନୁ | 15/10/2049 | ମକର | 05/04/2063 | | 00/00/0000 |
| ବିଛା | 19/08/2033 | ଧନୁ | 06/05/2043 | ମକର | 16/02/2050 | କୁମ୍ଭ | 12/01/2064 | | 00/00/0000 |
| ଧନୁ | 11/02/2034 | ମକର | 29/10/2043 | କୁମ୍ଭ | 19/06/2050 | ମୀନ | 16/12/2065 | | 00/00/0000 |
| ମକର | 23/04/2034 | କୁମ୍ଭ | 22/04/2044 | ମୀନ | 23/04/2051 | ବିଛା | 23/04/2067 | | 00/00/0000 |

ନୋଟ : ଉପରୋକ୍ତ ତିଥୀ ଦଶା ଯମାତ ହେବାର ସମୟ ଦର୍ଶାଉଛି ।

କାଳଚକ୍ର ଦଶା - ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ

| ଧନୁ - ତୁଳା | | ଧନୁ - କନ୍ୟା | | ଧନୁ - ତୁଳା | | ଧନୁ - ବିଛା | | ମକର - ମକର | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 10/07/2020 | | 14/06/2022 | | 15/07/2023 | | 18/06/2025 | | 23/04/2026 | |
| 14/06/2022 | | 15/07/2023 | | 18/06/2025 | | 23/04/2026 | | 02/07/2026 | |
| ତୁଳା | 23/11/2020 | କନ୍ୟା | 27/07/2022 | ତୁଳା | 28/11/2023 | ବିଛା | 14/07/2025 | ମକର | 26/04/2026 |
| କନ୍ୟା | 07/02/2021 | ତୁଳା | 12/10/2022 | ବିଛା | 26/01/2024 | ଧନୁ | 21/08/2025 | କୁମ୍ଭ | 29/04/2026 |
| ତୁଳା | 23/06/2021 | ବିଛା | 14/11/2022 | ଧନୁ | 20/04/2024 | ମକର | 04/09/2025 | ମୀନ | 08/05/2026 |
| ବିଛା | 21/08/2021 | ଧନୁ | 01/01/2023 | ମକର | 24/05/2024 | କୁମ୍ଭ | 19/09/2025 | ବିଛା | 14/05/2026 |
| ଧନୁ | 14/11/2021 | ମକର | 20/01/2023 | କୁମ୍ଭ | 27/06/2024 | ମୀନ | 26/10/2025 | ତୁଳା | 27/05/2026 |
| ମକର | 18/12/2021 | କୁମ୍ଭ | 08/02/2023 | ମୀନ | 20/09/2024 | ବିଛା | 21/11/2025 | କନ୍ୟା | 04/06/2026 |
| କୁମ୍ଭ | 21/01/2022 | ମୀନ | 28/03/2023 | ବିଛା | 18/11/2024 | ତୁଳା | 20/01/2026 | ତୁଳା | 18/06/2026 |
| ମୀନ | 16/04/2022 | ବିଛା | 30/04/2023 | ତୁଳା | 03/04/2025 | କନ୍ୟା | 22/02/2026 | ବିଛା | 23/06/2026 |
| ବିଛା | 14/06/2022 | ତୁଳା | 15/07/2023 | କନ୍ୟା | 18/06/2025 | ତୁଳା | 23/04/2026 | ଧନୁ | 02/07/2026 |

| ମକର - କୁମ୍ଭ | | ମକର - ମୀନ | | ମକର - ବିଛା | | ମକର - ତୁଳା | | ମକର - କନ୍ୟା | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 02/07/2026 | | 10/09/2026 | | 05/03/2027 | | 07/07/2027 | | 13/04/2028 | |
| 10/09/2026 | | 05/03/2027 | | 07/07/2027 | | 13/04/2028 | | 19/09/2028 | |
| କୁମ୍ଭ | 05/07/2026 | ମୀନ | 02/10/2026 | ବିଛା | 16/03/2027 | ତୁଳା | 30/08/2027 | କନ୍ୟା | 30/04/2028 |
| ମୀନ | 14/07/2026 | ବିଛା | 16/10/2026 | ତୁଳା | 09/04/2027 | କନ୍ୟା | 29/09/2027 | ତୁଳା | 31/05/2028 |
| ବିଛା | 20/07/2026 | ତୁଳା | 19/11/2026 | କନ୍ୟା | 22/04/2027 | ତୁଳା | 23/11/2027 | ବିଛା | 13/06/2028 |
| ତୁଳା | 02/08/2026 | କନ୍ୟା | 08/12/2026 | ତୁଳା | 16/05/2027 | ବିଛା | 16/12/2027 | ଧନୁ | 02/07/2028 |
| କନ୍ୟା | 10/08/2026 | ତୁଳା | 11/01/2027 | ବିଛା | 26/05/2027 | ଧନୁ | 19/01/2028 | ମକର | 10/07/2028 |
| ତୁଳା | 24/08/2026 | ବିଛା | 26/01/2027 | ଧନୁ | 10/06/2027 | ମକର | 02/02/2028 | କୁମ୍ଭ | 18/07/2028 |
| ବିଛା | 29/08/2026 | ଧନୁ | 16/02/2027 | ମକର | 16/06/2027 | କୁମ୍ଭ | 16/02/2028 | ମୀନ | 06/08/2028 |
| ଧନୁ | 07/09/2026 | ମକର | 25/02/2027 | କୁମ୍ଭ | 22/06/2027 | ମୀନ | 20/03/2028 | ବିଛା | 19/08/2028 |
| ମକର | 10/09/2026 | କୁମ୍ଭ | 05/03/2027 | ମୀନ | 07/07/2027 | ବିଛା | 13/04/2028 | ତୁଳା | 19/09/2028 |

| ମକର - ତୁଳା | | ମକର - ବିଛା | | ମକର - ଧନୁ | | କୁମ୍ଭ - କୁମ୍ଭ | | କୁମ୍ଭ - ମୀନ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 19/09/2028 | | 27/06/2029 | | 28/10/2029 | | 23/04/2030 | | 02/07/2030 | |
| 27/06/2029 | | 28/10/2029 | | 23/04/2030 | | 02/07/2030 | | 25/12/2030 | |
| ତୁଳା | 12/11/2028 | ବିଛା | 08/07/2029 | ଧନୁ | 19/11/2029 | କୁମ୍ଭ | 26/04/2030 | ମୀନ | 23/07/2030 |
| ବିଛା | 06/12/2028 | ଧନୁ | 23/07/2029 | ମକର | 27/11/2029 | ମୀନ | 04/05/2030 | ବିଛା | 07/08/2030 |
| ଧନୁ | 09/01/2029 | ମକର | 28/07/2029 | କୁମ୍ଭ | 06/12/2029 | ବିଛା | 10/05/2030 | ତୁଳା | 10/09/2030 |
| ମକର | 22/01/2029 | କୁମ୍ଭ | 03/08/2029 | ମୀନ | 27/12/2029 | ତୁଳା | 24/05/2030 | କନ୍ୟା | 29/09/2030 |
| କୁମ୍ଭ | 05/02/2029 | ମୀନ | 18/08/2029 | ବିଛା | 11/01/2030 | କନ୍ୟା | 01/06/2030 | ତୁଳା | 02/11/2030 |
| ମୀନ | 11/03/2029 | ବିଛା | 29/08/2029 | ତୁଳା | 14/02/2030 | ତୁଳା | 14/06/2030 | ବିଛା | 17/11/2030 |
| ବିଛା | 03/04/2029 | ତୁଳା | 21/09/2029 | କନ୍ୟା | 05/03/2030 | ବିଛା | 20/06/2030 | ଧନୁ | 08/12/2030 |
| ତୁଳା | 28/05/2029 | କନ୍ୟା | 05/10/2029 | ତୁଳା | 08/04/2030 | ଧନୁ | 29/06/2030 | ମକର | 16/12/2030 |
| କନ୍ୟା | 27/06/2029 | ତୁଳା | 28/10/2029 | ବିଛା | 23/04/2030 | ମକର | 02/07/2030 | କୁମ୍ଭ | 25/12/2030 |

କାଳଚକ୍ର ଦଶା - ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ

| କୁମ୍ଭ - ବିଛା | | କୁମ୍ଭ - ତୁଳା | | କୁମ୍ଭ - କନ୍ୟା | | କୁମ୍ଭ - ମିଥୁନ | | କୁମ୍ଭ - ବିଛା | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 25/12/2030 | | 27/04/2031 | | 03/02/2032 | | 10/07/2032 | | 18/04/2033 | |
| 27/04/2031 | | 03/02/2032 | | 10/07/2032 | | 18/04/2033 | | 19/08/2033 | |
| ବିଛା | 04/01/2031 | ତୁଳା | 20/06/2031 | କନ୍ୟା | 20/02/2032 | ତୁଳା | 03/09/2032 | ବିଛା | 28/04/2033 |
| ତୁଳା | 28/01/2031 | କନ୍ୟା | 21/07/2031 | ତୁଳା | 22/03/2032 | ବିଛା | 26/09/2032 | ଧନୁ | 13/05/2033 |
| କନ୍ୟା | 10/02/2031 | ତୁଳା | 13/09/2031 | ବିଛା | 04/04/2032 | ଧନୁ | 30/10/2032 | ମକର | 19/05/2033 |
| ତୁଳା | 06/03/2031 | ବିଛା | 07/10/2031 | ଧନୁ | 23/04/2032 | ମକର | 13/11/2032 | କୁମ୍ଭ | 25/05/2033 |
| ବିଛା | 17/03/2031 | ଧନୁ | 10/11/2031 | ମକର | 01/05/2032 | କୁମ୍ଭ | 26/11/2032 | ମୀନ | 09/06/2033 |
| ଧନୁ | 31/03/2031 | ମକର | 24/11/2031 | କୁମ୍ଭ | 08/05/2032 | ମୀନ | 30/12/2032 | ବିଛା | 19/06/2033 |
| ମକର | 06/04/2031 | କୁମ୍ଭ | 07/12/2031 | ମୀନ | 27/05/2032 | ବିଛା | 23/01/2033 | ତୁଳା | 13/07/2033 |
| କୁମ୍ଭ | 12/04/2031 | ମୀନ | 10/01/2032 | ବିଛା | 10/06/2032 | ତୁଳା | 18/03/2033 | କନ୍ୟା | 26/07/2033 |
| ମୀନ | 27/04/2031 | ବିଛା | 03/02/2032 | ତୁଳା | 10/07/2032 | କନ୍ୟା | 18/04/2033 | ତୁଳା | 19/08/2033 |
| | | | | | | | | | |
| କୁମ୍ଭ - ଧନୁ | | କୁମ୍ଭ - ମକର | | ମୀନ - ମୀନ | | ମୀନ - ବିଛା | | ମୀନ - ତୁଳା | |
| 19/08/2033 | | 11/02/2034 | | 23/04/2034 | | 07/07/2035 | | 10/05/2036 | |
| 11/02/2034 | | 23/04/2034 | | 07/07/2035 | | 10/05/2036 | | 14/04/2038 | |
| ଧନୁ | 09/09/2033 | ମକର | 15/02/2034 | ମୀନ | 15/06/2034 | ବିଛା | 02/08/2035 | ତୁଳା | 22/09/2036 |
| ମକର | 18/09/2033 | କୁମ୍ଭ | 18/02/2034 | ବିଛା | 22/07/2034 | ତୁଳା | 30/09/2035 | କନ୍ୟା | 08/12/2036 |
| କୁମ୍ଭ | 26/09/2033 | ମୀନ | 26/02/2034 | ତୁଳା | 14/10/2034 | କନ୍ୟା | 02/11/2035 | ତୁଳା | 22/04/2037 |
| ମୀନ | 17/10/2033 | ବିଛା | 04/03/2034 | କନ୍ୟା | 01/12/2034 | ତୁଳା | 01/01/2036 | ବିଛା | 21/06/2037 |
| ବିଛା | 01/11/2033 | ତୁଳା | 18/03/2034 | ତୁଳା | 24/02/2035 | ବିଛା | 27/01/2036 | ଧନୁ | 14/09/2037 |
| ତୁଳା | 05/12/2033 | କନ୍ୟା | 26/03/2034 | ବିଛା | 02/04/2035 | ଧନୁ | 04/03/2036 | ମକର | 18/10/2037 |
| କନ୍ୟା | 24/12/2033 | ତୁଳା | 08/04/2034 | ଧନୁ | 25/05/2035 | ମକର | 19/03/2036 | କୁମ୍ଭ | 21/11/2037 |
| ତୁଳା | 27/01/2034 | ବିଛା | 14/04/2034 | ମକର | 15/06/2035 | କୁମ୍ଭ | 03/04/2036 | ମୀନ | 13/02/2038 |
| ବିଛା | 11/02/2034 | ଧନୁ | 23/04/2034 | କୁମ୍ଭ | 07/07/2035 | ମୀନ | 10/05/2036 | ବିଛା | 14/04/2038 |
| | | | | | | | | | |
| ମୀନ - କନ୍ୟା | | ମୀନ - ତୁଳା | | ମୀନ - ବିଛା | | ମୀନ - ଧନୁ | | ମୀନ - ମକର | |
| 14/04/2038 | | 15/05/2039 | | 18/04/2041 | | 20/02/2042 | | 06/05/2043 | |
| 15/05/2039 | | 18/04/2041 | | 20/02/2042 | | 06/05/2043 | | 29/10/2043 | |
| କନ୍ୟା | 27/05/2038 | ତୁଳା | 28/09/2039 | ବିଛା | 14/05/2041 | ଧନୁ | 14/04/2042 | ମକର | 14/05/2043 |
| ତୁଳା | 11/08/2038 | ବିଛା | 26/11/2039 | ଧନୁ | 20/06/2041 | ମକର | 05/05/2042 | କୁମ୍ଭ | 23/05/2043 |
| ବିଛା | 13/09/2038 | ଧନୁ | 19/02/2040 | ମକର | 05/07/2041 | କୁମ୍ଭ | 26/05/2042 | ମୀନ | 13/06/2043 |
| ଧନୁ | 31/10/2038 | ମକର | 24/03/2040 | କୁମ୍ଭ | 20/07/2041 | ମୀନ | 18/07/2042 | ବିଛା | 28/06/2043 |
| ମକର | 19/11/2038 | କୁମ୍ଭ | 27/04/2040 | ମୀନ | 26/08/2041 | ବିଛା | 24/08/2042 | ତୁଳା | 01/08/2043 |
| କୁମ୍ଭ | 08/12/2038 | ମୀନ | 20/07/2040 | ବିଛା | 21/09/2041 | ତୁଳା | 17/11/2042 | କନ୍ୟା | 20/08/2043 |
| ମୀନ | 25/01/2039 | ବିଛା | 18/09/2040 | ତୁଳା | 19/11/2041 | କନ୍ୟା | 04/01/2043 | ତୁଳା | 23/09/2043 |
| ବିଛା | 27/02/2039 | ତୁଳା | 01/02/2041 | କନ୍ୟା | 23/12/2041 | ତୁଳା | 30/03/2043 | ବିଛା | 08/10/2043 |
| ତୁଳା | 15/05/2039 | କନ୍ୟା | 18/04/2041 | ତୁଳା | 20/02/2042 | ବିଛା | 06/05/2043 | ଧନୁ | 29/10/2043 |

ଢ଼ର ଦଶା

ଭୋଗ୍ୟ ଦଶା କାଳ : ମାନ 12 ବର୍ଷ 0 ମାସ 0 ଦିନ

ମାନ 12 ବର୍ଷ
05/03/1987
05/03/1999

| | |
|-------|------------|
| ମେଷ | 04/03/1988 |
| ବୃଷ | 04/03/1989 |
| ମିଥୁନ | 05/03/1990 |
| କର୍କଟ | 05/03/1991 |
| ସିଂହ | 04/03/1992 |
| କନ୍ୟା | 04/03/1993 |
| ତୁଳା | 05/03/1994 |
| ବିଛା | 05/03/1995 |
| ଧନୁ | 04/03/1996 |
| ମକର | 04/03/1997 |
| କୁମ୍ଭ | 05/03/1998 |
| ମୀନ | 05/03/1999 |

ମେଷ 12 ବର୍ଷ
05/03/1999
05/03/2011

| | |
|-------|------------|
| ବୃଷ | 04/03/2000 |
| ମିଥୁନ | 04/03/2001 |
| କର୍କଟ | 05/03/2002 |
| ସିଂହ | 05/03/2003 |
| କନ୍ୟା | 04/03/2004 |
| ତୁଳା | 04/03/2005 |
| ବିଛା | 05/03/2006 |
| ଧନୁ | 05/03/2007 |
| ମକର | 04/03/2008 |
| କୁମ୍ଭ | 04/03/2009 |
| ମୀନ | 05/03/2010 |
| ମେଷ | 05/03/2011 |

ବୃଷ 8 ବର୍ଷ
05/03/2011
05/03/2019

| | |
|-------|------------|
| ମେଷ | 03/11/2011 |
| ମାନ | 04/07/2012 |
| କୁମ୍ଭ | 04/03/2013 |
| ମକର | 03/11/2013 |
| ଧନୁ | 04/07/2014 |
| ବିଛା | 05/03/2015 |
| ତୁଳା | 03/11/2015 |
| କନ୍ୟା | 04/07/2016 |
| ସିଂହ | 04/03/2017 |
| କର୍କଟ | 03/11/2017 |
| ମିଥୁନ | 04/07/2018 |
| ବୃଷ | 05/03/2019 |

ମିଥୁନ 8 ବର୍ଷ
05/03/2019
05/03/2027

| | |
|-------|------------|
| ବୃଷ | 03/11/2019 |
| ମେଷ | 04/07/2020 |
| ମାନ | 04/03/2021 |
| କୁମ୍ଭ | 03/11/2021 |
| ମକର | 04/07/2022 |
| ଧନୁ | 05/03/2023 |
| ବିଛା | 03/11/2023 |
| ତୁଳା | 04/07/2024 |
| କନ୍ୟା | 04/03/2025 |
| ସିଂହ | 03/11/2025 |
| କର୍କଟ | 04/07/2026 |
| ମିଥୁନ | 05/03/2027 |

କର୍କଟ 3 ବର୍ଷ
05/03/2027
05/03/2030

| | |
|-------|------------|
| ମିଥୁନ | 04/06/2027 |
| ବୃଷ | 03/09/2027 |
| ମେଷ | 04/12/2027 |
| ମାନ | 04/03/2028 |
| କୁମ୍ଭ | 03/06/2028 |
| ମକର | 03/09/2028 |
| ଧନୁ | 03/12/2028 |
| ବିଛା | 04/03/2029 |
| ତୁଳା | 04/06/2029 |
| କନ୍ୟା | 03/09/2029 |
| ସିଂହ | 03/12/2029 |
| କର୍କଟ | 05/03/2030 |

ସିଂହ 6 ବର୍ଷ
05/03/2030
04/03/2036

| | |
|-------|------------|
| କନ୍ୟା | 03/09/2030 |
| ତୁଳା | 05/03/2031 |
| ବିଛା | 03/09/2031 |
| ଧନୁ | 04/03/2032 |
| ମକର | 03/09/2032 |
| କୁମ୍ଭ | 04/03/2033 |
| ମୀନ | 03/09/2033 |
| ମେଷ | 05/03/2034 |
| ବୃଷ | 03/09/2034 |
| ମିଥୁନ | 05/03/2035 |
| କର୍କଟ | 03/09/2035 |
| ସିଂହ | 04/03/2036 |

କନ୍ୟା 7 ବର୍ଷ
04/03/2036
05/03/2043

| | |
|-------|------------|
| ତୁଳା | 03/10/2036 |
| ବିଛା | 04/05/2037 |
| ଧନୁ | 03/12/2037 |
| ମକର | 04/07/2038 |
| କୁମ୍ଭ | 02/02/2039 |
| ମୀନ | 03/09/2039 |
| ମେଷ | 03/04/2040 |
| ବୃଷ | 03/11/2040 |
| ମିଥୁନ | 04/06/2041 |
| କର୍କଟ | 03/01/2042 |
| ସିଂହ | 04/08/2042 |
| କନ୍ୟା | 05/03/2043 |

ତୁଳା 3 ବର୍ଷ
05/03/2043
05/03/2046

| | |
|-------|------------|
| ବିଛା | 04/06/2043 |
| ଧନୁ | 03/09/2043 |
| ମକର | 04/12/2043 |
| କୁମ୍ଭ | 04/03/2044 |
| ମୀନ | 03/06/2044 |
| ମେଷ | 03/09/2044 |
| ବୃଷ | 03/12/2044 |
| ମିଥୁନ | 04/03/2045 |
| କର୍କଟ | 04/06/2045 |
| ସିଂହ | 03/09/2045 |
| କନ୍ୟା | 03/12/2045 |
| ତୁଳା | 05/03/2046 |

ବିଛା 5 ବର୍ଷ
05/03/2046
05/03/2051

| | |
|-------|------------|
| ତୁଳା | 04/08/2046 |
| କନ୍ୟା | 03/01/2047 |
| ସିଂହ | 04/06/2047 |
| କର୍କଟ | 03/11/2047 |
| ମିଥୁନ | 03/04/2048 |
| ବୃଷ | 03/09/2048 |
| ମେଷ | 02/02/2049 |
| ମୀନ | 04/07/2049 |
| କୁମ୍ଭ | 03/12/2049 |
| ମକର | 04/05/2050 |
| ଧନୁ | 04/10/2050 |
| ବିଛା | 05/03/2051 |

ଧନୁ 3 ବର୍ଷ
05/03/2051
05/03/2054

| | |
|-------|------------|
| ବିଛା | 04/06/2051 |
| ତୁଳା | 03/09/2051 |
| କନ୍ୟା | 04/12/2051 |
| ସିଂହ | 04/03/2052 |
| କର୍କଟ | 03/06/2052 |
| ମିଥୁନ | 03/09/2052 |
| ବୃଷ | 03/12/2052 |
| ମେଷ | 04/03/2053 |
| ମୀନ | 04/06/2053 |
| କୁମ୍ଭ | 03/09/2053 |
| ମକର | 03/12/2053 |
| ଧନୁ | 05/03/2054 |

ମକର 2 ବର୍ଷ
05/03/2054
04/03/2056

| | |
|-------|------------|
| ଧନୁ | 04/05/2054 |
| ବିଛା | 04/07/2054 |
| ତୁଳା | 03/09/2054 |
| କନ୍ୟା | 03/11/2054 |
| ସିଂହ | 03/01/2055 |
| କର୍କଟ | 05/03/2055 |
| ମିଥୁନ | 05/05/2055 |
| ବୃଷ | 05/07/2055 |
| ମେଷ | 03/09/2055 |
| ମୀନ | 03/11/2055 |
| କୁମ୍ଭ | 03/01/2056 |
| ମକର | 04/03/2056 |

କୁମ୍ଭ 11 ବର୍ଷ
04/03/2056
05/03/2067

| | |
|-------|------------|
| ମୀନ | 02/02/2057 |
| ମେଷ | 03/01/2058 |
| ବୃଷ | 03/12/2058 |
| ମିଥୁନ | 03/11/2059 |
| କର୍କଟ | 03/10/2060 |
| ସିଂହ | 03/09/2061 |
| କନ୍ୟା | 04/08/2062 |
| ତୁଳା | 05/07/2063 |
| ବିଛା | 03/06/2064 |
| ଧନୁ | 04/05/2065 |
| ମକର | 04/04/2066 |
| କୁମ୍ଭ | 05/03/2067 |

ନୋଟ : ଉପରୋକ୍ତ ତିଥୀ ଦଶା ଯମାତ୍ ହେବାର ସମୟ ଦର୍ଶାଉଛି ।



ଚର ଦଶା - ପୂର୍ବଭାଗ

| ମିଥୁନ - ମକର | | ମିଥୁନ - ଧନୁ | | ମିଥୁନ - ବିଛା | | ମିଥୁନ - ତୁଳା | | ମିଥୁନ - କନ୍ୟା | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 03/11/2021 | | 04/07/2022 | | 05/03/2023 | | 03/11/2023 | | 04/07/2024 | |
| 04/07/2022 | | 05/03/2023 | | 03/11/2023 | | 04/07/2024 | | 04/03/2025 | |
| ଧନୁ | 23/11/2021 | ବିଛା | 25/07/2022 | ତୁଳା | 25/03/2023 | ବିଛା | 24/11/2023 | ତୁଳା | 24/07/2024 |
| ବିଛା | 13/12/2021 | ତୁଳା | 14/08/2022 | କନ୍ୟା | 14/04/2023 | ଧନୁ | 14/12/2023 | ବିଛା | 13/08/2024 |
| ତୁଳା | 03/01/2022 | କନ୍ୟା | 03/09/2022 | ସିଂହ | 05/05/2023 | ମକର | 03/01/2024 | ଧନୁ | 03/09/2024 |
| କନ୍ୟା | 23/01/2022 | ସିଂହ | 23/09/2022 | କର୍କଟ | 25/05/2023 | କୁମ୍ଭ | 23/01/2024 | ମକର | 23/09/2024 |
| ସିଂହ | 12/02/2022 | କର୍କଟ | 14/10/2022 | ମିଥୁନ | 14/06/2023 | ମୀନ | 13/02/2024 | କୁମ୍ଭ | 13/10/2024 |
| କର୍କଟ | 05/03/2022 | ମିଥୁନ | 03/11/2022 | ବୃଷ | 05/07/2023 | ମେଷ | 04/03/2024 | ମୀନ | 03/11/2024 |
| ମିଥୁନ | 25/03/2022 | ବୃଷ | 23/11/2022 | ମେଷ | 25/07/2023 | ବୃଷ | 24/03/2024 | ମେଷ | 23/11/2024 |
| ବୃଷ | 14/04/2022 | ମେଷ | 14/12/2022 | ମୀନ | 14/08/2023 | ମିଥୁନ | 14/04/2024 | ବୃଷ | 13/12/2024 |
| ମେଷ | 04/05/2022 | ମୀନ | 03/01/2023 | କୁମ୍ଭ | 03/09/2023 | କର୍କଟ | 04/05/2024 | ମିଥୁନ | 02/01/2025 |
| ମୀନ | 25/05/2022 | କୁମ୍ଭ | 23/01/2023 | ମକର | 24/09/2023 | ସିଂହ | 24/05/2024 | କର୍କଟ | 23/01/2025 |
| କୁମ୍ଭ | 14/06/2022 | ମକର | 13/02/2023 | ଧନୁ | 14/10/2023 | କନ୍ୟା | 14/06/2024 | ସିଂହ | 12/02/2025 |
| ମକର | 04/07/2022 | ଧନୁ | 05/03/2023 | ବିଛା | 03/11/2023 | ତୁଳା | 04/07/2024 | କନ୍ୟା | 04/03/2025 |

| ମିଥୁନ - ସିଂହ | | ମିଥୁନ - କର୍କଟ | | ମିଥୁନ - ମିଥୁନ | | କର୍କଟ - ମିଥୁନ | | କର୍କଟ - ବୃଷ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 04/03/2025 | | 03/11/2025 | | 04/07/2026 | | 05/03/2027 | | 04/06/2027 | |
| 03/11/2025 | | 04/07/2026 | | 05/03/2027 | | 04/06/2027 | | 03/09/2027 | |
| କନ୍ୟା | 25/03/2025 | ମିଥୁନ | 23/11/2025 | ବୃଷ | 25/07/2026 | ବୃଷ | 12/03/2027 | ମେଷ | 12/06/2027 |
| ତୁଳା | 14/04/2025 | ବୃଷ | 13/12/2025 | ମେଷ | 14/08/2026 | ମେଷ | 20/03/2027 | ମୀନ | 19/06/2027 |
| ବିଛା | 04/05/2025 | ମେଷ | 03/01/2026 | ମୀନ | 03/09/2026 | ମୀନ | 28/03/2027 | କୁମ୍ଭ | 27/06/2027 |
| ଧନୁ | 24/05/2025 | ମୀନ | 23/01/2026 | କୁମ୍ଭ | 23/09/2026 | କୁମ୍ଭ | 04/04/2027 | ମକର | 05/07/2027 |
| ମକର | 14/06/2025 | କୁମ୍ଭ | 12/02/2026 | ମକର | 14/10/2026 | ମକର | 12/04/2027 | ଧନୁ | 12/07/2027 |
| କୁମ୍ଭ | 04/07/2025 | ମକର | 05/03/2026 | ଧନୁ | 03/11/2026 | ଧନୁ | 19/04/2027 | ବିଛା | 20/07/2027 |
| ମୀନ | 24/07/2025 | ଧନୁ | 25/03/2026 | ବିଛା | 23/11/2026 | ବିଛା | 27/04/2027 | ତୁଳା | 27/07/2027 |
| ମେଷ | 14/08/2025 | ବିଛା | 14/04/2026 | ତୁଳା | 14/12/2026 | ତୁଳା | 05/05/2027 | କନ୍ୟା | 04/08/2027 |
| ବୃଷ | 03/09/2025 | ତୁଳା | 04/05/2026 | କନ୍ୟା | 03/01/2027 | କନ୍ୟା | 12/05/2027 | ସିଂହ | 12/08/2027 |
| ମିଥୁନ | 23/09/2025 | କନ୍ୟା | 25/05/2026 | ସିଂହ | 23/01/2027 | ସିଂହ | 20/05/2027 | କର୍କଟ | 19/08/2027 |
| କର୍କଟ | 14/10/2025 | ସିଂହ | 14/06/2026 | କର୍କଟ | 13/02/2027 | କର୍କଟ | 28/05/2027 | ମିଥୁନ | 27/08/2027 |
| ସିଂହ | 03/11/2025 | କର୍କଟ | 04/07/2026 | ମିଥୁନ | 05/03/2027 | ମିଥୁନ | 04/06/2027 | ବୃଷ | 03/09/2027 |

| କର୍କଟ - ମେଷ | | କର୍କଟ - ମୀନ | | କର୍କଟ - କୁମ୍ଭ | | କର୍କଟ - ମକର | | କର୍କଟ - ଧନୁ | |
|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|-------------------|------------|
| 03/09/2027 | | 04/12/2027 | | 04/03/2028 | | 03/06/2028 | | 03/09/2028 | |
| 04/12/2027 | | 04/03/2028 | | 03/06/2028 | | 03/09/2028 | | 03/12/2028 | |
| ବୃଷ | 11/09/2027 | ମେଷ | 11/12/2027 | ମୀନ | 12/03/2028 | ଧନୁ | 11/06/2028 | ବିଛା | 10/09/2028 |
| ମିଥୁନ | 19/09/2027 | ବୃଷ | 19/12/2027 | ମେଷ | 19/03/2028 | ବିଛା | 19/06/2028 | ତୁଳା | 18/09/2028 |
| କର୍କଟ | 26/09/2027 | ମିଥୁନ | 27/12/2027 | ବୃଷ | 27/03/2028 | ତୁଳା | 26/06/2028 | କନ୍ୟା | 26/09/2028 |
| ସିଂହ | 04/10/2027 | କର୍କଟ | 03/01/2028 | ମିଥୁନ | 03/04/2028 | କନ୍ୟା | 04/07/2028 | ସିଂହ | 03/10/2028 |
| କନ୍ୟା | 11/10/2027 | ସିଂହ | 11/01/2028 | କର୍କଟ | 11/04/2028 | ସିଂହ | 11/07/2028 | କର୍କଟ | 11/10/2028 |
| ତୁଳା | 19/10/2027 | କନ୍ୟା | 18/01/2028 | ସିଂହ | 19/04/2028 | କର୍କଟ | 19/07/2028 | ମିଥୁନ | 18/10/2028 |
| ବିଛା | 27/10/2027 | ତୁଳା | 26/01/2028 | କନ୍ୟା | 26/04/2028 | ମିଥୁନ | 27/07/2028 | ବୃଷ | 26/10/2028 |
| ଧନୁ | 03/11/2027 | ବିଛା | 03/02/2028 | ତୁଳା | 04/05/2028 | ବୃଷ | 03/08/2028 | ମେଷ | 03/11/2028 |
| ମକର | 11/11/2027 | ଧନୁ | 10/02/2028 | ବିଛା | 12/05/2028 | ମେଷ | 11/08/2028 | ମୀନ | 10/11/2028 |
| କୁମ୍ଭ | 19/11/2027 | ମକର | 18/02/2028 | ଧନୁ | 19/05/2028 | ମୀନ | 18/08/2028 | କୁମ୍ଭ | 18/11/2028 |
| ମୀନ | 26/11/2027 | କୁମ୍ଭ | 25/02/2028 | ମକର | 27/05/2028 | କୁମ୍ଭ | 26/08/2028 | ମକର | 25/11/2028 |
| ମେଷ | 04/12/2027 | ମୀନ | 04/03/2028 | କୁମ୍ଭ | 03/06/2028 | ମକର | 03/09/2028 | ଧନୁ | 03/12/2028 |

ଚର ଦଶା - ପୂର୍ବଭାଗ

| କର୍କଟ - ବିଛା | | କର୍କଟ - ତୁଳା | | କର୍କଟ - କନ୍ୟା | | କର୍କଟ - ସିଂହ | | କର୍କଟ - କର୍କଟ | |
|--------------------------|------------|--------------------------|------------|--------------------------|------------|--------------------------|------------|--------------------------|------------|
| 03/12/2028 04/03/2029 | | 04/03/2029 04/06/2029 | | 04/06/2029 03/09/2029 | | 03/09/2029 03/12/2029 | | 03/12/2029 05/03/2030 | |
| ତୁଳା | 11/12/2028 | ବିଛା | 12/03/2029 | ତୁଳା | 11/06/2029 | କନ୍ୟା | 11/09/2029 | ମିଥୁନ | 11/12/2029 |
| କନ୍ୟା | 18/12/2028 | ଧନୁ | 20/03/2029 | ବିଛା | 19/06/2029 | ତୁଳା | 18/09/2029 | ବୃଷ | 18/12/2029 |
| ସିଂହ | 26/12/2028 | ମକର | 27/03/2029 | ଧନୁ | 26/06/2029 | ବିଛା | 26/09/2029 | ମେଷ | 26/12/2029 |
| କର୍କଟ | 02/01/2029 | କୁମ୍ଭ | 04/04/2029 | ମକର | 04/07/2029 | ଧନୁ | 03/10/2029 | ମୀନ | 03/01/2030 |
| ମିଥୁନ | 10/01/2029 | ମୀନ | 11/04/2029 | କୁମ୍ଭ | 12/07/2029 | ମକର | 11/10/2029 | କୁମ୍ଭ | 10/01/2030 |
| ବୃଷ | 18/01/2029 | ମେଷ | 19/04/2029 | ମୀନ | 19/07/2029 | କୁମ୍ଭ | 19/10/2029 | ମକର | 18/01/2030 |
| ମେଷ | 25/01/2029 | ବୃଷ | 27/04/2029 | ମେଷ | 27/07/2029 | ମୀନ | 26/10/2029 | ଧନୁ | 26/01/2030 |
| ମୀନ | 02/02/2029 | ମିଥୁନ | 04/05/2029 | ବୃଷ | 03/08/2029 | ମେଷ | 03/11/2029 | ବିଛା | 02/02/2030 |
| କୁମ୍ଭ | 09/02/2029 | କର୍କଟ | 12/05/2029 | ମିଥୁନ | 11/08/2029 | ବୃଷ | 10/11/2029 | ତୁଳା | 10/02/2030 |
| ମକର | 17/02/2029 | ସିଂହ | 19/05/2029 | କର୍କଟ | 19/08/2029 | ମିଥୁନ | 18/11/2029 | କନ୍ୟା | 17/02/2030 |
| ଧନୁ | 25/02/2029 | କନ୍ୟା | 27/05/2029 | ସିଂହ | 26/08/2029 | କର୍କଟ | 26/11/2029 | ସିଂହ | 25/02/2030 |
| ବିଛା | 04/03/2029 | ତୁଳା | 04/06/2029 | କନ୍ୟା | 03/09/2029 | ସିଂହ | 03/12/2029 | କର୍କଟ | 05/03/2030 |
| ସିଂହ - କନ୍ୟା | | ସିଂହ - ତୁଳା | | ସିଂହ - ବିଛା | | ସିଂହ - ଧନୁ | | ସିଂହ - ମକର | |
| 05/03/2030 03/09/2030 | | 03/09/2030 05/03/2031 | | 05/03/2031 03/09/2031 | | 03/09/2031 04/03/2032 | | 04/03/2032 03/09/2032 | |
| ତୁଳା | 20/03/2030 | ବିଛା | 18/09/2030 | ତୁଳା | 20/03/2031 | ବିଛା | 19/09/2031 | ଧନୁ | 19/03/2032 |
| ବିଛା | 04/04/2030 | ଧନୁ | 04/10/2030 | କନ୍ୟା | 04/04/2031 | ତୁଳା | 04/10/2031 | ବିଛା | 03/04/2032 |
| ଧନୁ | 19/04/2030 | ମକର | 19/10/2030 | ସିଂହ | 19/04/2031 | କନ୍ୟା | 19/10/2031 | ତୁଳା | 19/04/2032 |
| ମକର | 04/05/2030 | କୁମ୍ଭ | 03/11/2030 | କର୍କଟ | 05/05/2031 | ସିଂହ | 03/11/2031 | କନ୍ୟା | 04/05/2032 |
| କୁମ୍ଭ | 20/05/2030 | ମୀନ | 18/11/2030 | ମିଥୁନ | 20/05/2031 | କର୍କଟ | 19/11/2031 | ସିଂହ | 19/05/2032 |
| ମୀନ | 04/06/2030 | ମେଷ | 03/12/2030 | ବୃଷ | 04/06/2031 | ମିଥୁନ | 04/12/2031 | କର୍କଟ | 03/06/2032 |
| ମେଷ | 19/06/2030 | ବୃଷ | 19/12/2030 | ମେଷ | 19/06/2031 | ବୃଷ | 19/12/2031 | ମିଥୁନ | 19/06/2032 |
| ବୃଷ | 04/07/2030 | ମିଥୁନ | 03/01/2031 | ମୀନ | 05/07/2031 | ମେଷ | 03/01/2032 | ବୃଷ | 04/07/2032 |
| ମିଥୁନ | 20/07/2030 | କର୍କଟ | 18/01/2031 | କୁମ୍ଭ | 20/07/2031 | ମୀନ | 18/01/2032 | ମେଷ | 19/07/2032 |
| କର୍କଟ | 04/08/2030 | ସିଂହ | 02/02/2031 | ମକର | 04/08/2031 | କୁମ୍ଭ | 03/02/2032 | ମୀନ | 03/08/2032 |
| ସିଂହ | 19/08/2030 | କନ୍ୟା | 18/02/2031 | ଧନୁ | 19/08/2031 | ମକର | 18/02/2032 | କୁମ୍ଭ | 18/08/2032 |
| କନ୍ୟା | 03/09/2030 | ତୁଳା | 05/03/2031 | ବିଛା | 03/09/2031 | ଧନୁ | 04/03/2032 | ମକର | 03/09/2032 |
| ସିଂହ - କୁମ୍ଭ | | ସିଂହ - ମୀନ | | ସିଂହ - ମେଷ | | ସିଂହ - ବୃଷ | | ସିଂହ - ମିଥୁନ | |
| 03/09/2032 04/03/2033 | | 04/03/2033 03/09/2033 | | 03/09/2033 05/03/2034 | | 05/03/2034 03/09/2034 | | 03/09/2034 05/03/2035 | |
| ମୀନ | 18/09/2032 | ମେଷ | 20/03/2033 | ବୃଷ | 18/09/2033 | ମେଷ | 20/03/2034 | ବୃଷ | 18/09/2034 |
| ମେଷ | 03/10/2032 | ବୃଷ | 04/04/2033 | ମିଥୁନ | 03/10/2033 | ମୀନ | 04/04/2034 | ମେଷ | 04/10/2034 |
| ବୃଷ | 18/10/2032 | ମିଥୁନ | 19/04/2033 | କର୍କଟ | 19/10/2033 | କୁମ୍ଭ | 19/04/2034 | ମୀନ | 19/10/2034 |
| ମିଥୁନ | 03/11/2032 | କର୍କଟ | 04/05/2033 | ସିଂହ | 03/11/2033 | ମକର | 04/05/2034 | କୁମ୍ଭ | 03/11/2034 |
| କର୍କଟ | 18/11/2032 | ସିଂହ | 19/05/2033 | କନ୍ୟା | 18/11/2033 | ଧନୁ | 20/05/2034 | ମକର | 18/11/2034 |
| ସିଂହ | 03/12/2032 | କନ୍ୟା | 04/06/2033 | ତୁଳା | 03/12/2033 | ବିଛା | 04/06/2034 | ଧନୁ | 03/12/2034 |
| କନ୍ୟା | 18/12/2032 | ତୁଳା | 19/06/2033 | ବିଛା | 18/12/2033 | ତୁଳା | 19/06/2034 | ବିଛା | 19/12/2034 |
| ତୁଳା | 02/01/2033 | ବିଛା | 04/07/2033 | ଧନୁ | 03/01/2034 | କନ୍ୟା | 04/07/2034 | ତୁଳା | 03/01/2035 |
| ବିଛା | 18/01/2033 | ଧନୁ | 19/07/2033 | ମକର | 18/01/2034 | ସିଂହ | 20/07/2034 | କନ୍ୟା | 18/01/2035 |
| ଧନୁ | 02/02/2033 | ମକର | 03/08/2033 | କୁମ୍ଭ | 02/02/2034 | କର୍କଟ | 04/08/2034 | ସିଂହ | 02/02/2035 |
| ମକର | 17/02/2033 | କୁମ୍ଭ | 19/08/2033 | ମୀନ | 17/02/2034 | ମିଥୁନ | 19/08/2034 | କର୍କଟ | 18/02/2035 |
| କୁମ୍ଭ | 04/03/2033 | ମୀନ | 03/09/2033 | ମେଷ | 05/03/2034 | ବୃଷ | 03/09/2034 | ମିଥୁନ | 05/03/2035 |

ଶୁଭାଶୁଭ ଜ୍ଞାନ

ଶୁଭା-ଶୁଭ ଖାନ ଆପଣଙ୍କୁ ଆପଣଙ୍କର ମିତ୍ର ଏବଂ ଶତ୍ରୁ ବର୍ଗ ଆଦି ସୂଚିତ କରାଇଥାଏ । ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ, ଭାଗ୍ୟାଙ୍କ ଏବଂ ମିତ୍ରାଙ୍କ ରୁ ମିତ୍ରତା ଏବଂ ସାଥେ ସାଥେ ଶୁଭ ଦିନ ଏବଂ ଶୁଭ ବର୍ଷ ଗୁଡ଼ିକ କିପରି ଭାବେ ଉନ୍ନତି ପଥରେ ସହାୟକ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଶୁଭ ଗ୍ରହ ଗୁଡ଼ିକର ଦଶା ଆପଣଙ୍କୁ ସୌଭାଗ୍ୟ ପ୍ରଦାନ କରିବ । ଏହି ପ୍ରକାର ମିତ୍ର ଲଗ୍ନ ଲାଭଦାୟକ ଏବଂ ମିତ୍ର ରାଶି ସହିତ ଘନିଷ୍ଟତା ହୋଇ ଥାଏ ।

ଫଳଦାୟକ ରତ୍ନ, ଧାତୁ ଇତ୍ୟାଦି ପରିଧାନ କରିଲେ ଶାରୀରିକ ଏବଂ ମାନସିକ କ୍ଷିରତା ବଜାୟ ରହିବ । ସୌଭାଗ୍ୟରେ ମଧ୍ୟ ଉନ୍ନତି ପରିଲକ୍ଷିତ ହେବ । ଆପଣ ଶୁଭ ସମୟରେ କୌଣସି କାର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରାରମ୍ଭ କଲେ ମନମୁତାବକ ଫଳ ପାଇପାରିବେ । ଇଚ୍ଛା ଦେବତାଙ୍କୁ ଧ୍ୟାନ ଏବଂ ଜପ କରିଲେ ମାନସିକ ଶାନ୍ତି ତଥା କାର୍ଯ୍ୟରେ ସଫଳତା ମିଳିବ । ଶୁଭ ପଦାର୍ଥ, ଅର୍ଥ, ଶୁଭ ଦ୍ରବ୍ୟାଦି ଦାନ ତଥା ବ୍ୟପାର ଶୁଭ ଦିଗରେ ଆରମ୍ଭ କଲେ ବ୍ୟାପାର ଆଦି କ୍ଷେତ୍ରରେ ମନୋବାଞ୍ଚିତ ଲାଭ ହେବ । ଏହି ପ୍ରକାର ଶୁଭାଶୁଭ ଜ୍ଞାନ ଦୈନନ୍ଦିନ ଜୀବନରେ ଶୁଭ ଫଳ ପ୍ରଦାନରେ ସହାୟକ ହେବ ।

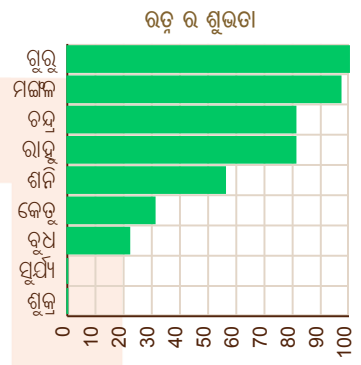
| | |
|--------------|-------------------------|
| ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ | 5 |
| ଭାଗ୍ୟାଙ୍କ | 6 |
| ମିତ୍ର ଅଙ୍କ | 3, 5, 9, 6 |
| ଶତ୍ରୁ ଅଙ୍କ | 2, 4, 8 |
| ଶୁଭ ବର୍ଷ | 23,32,41,50,59 |
| ଶୁଭ ଦିନ | ସୋମ, ମଙ୍ଗଳ, ଗୁରୁ |
| ଶୁଭ ଗ୍ରହ | ଚନ୍ଦ୍ର, ମଙ୍ଗଳ, ଗୁରୁ |
| ମିତ୍ର ରାଶି | କର୍କଟ, ଧନୁ |
| ମିତ୍ର ଲଗ୍ନ | ମିଥୁନ, ବିଛା, ମକର |
| ଅନୁକୂଳ ଦେବତା | ହନୁମାନ |
| ଶୁଭ ରତ୍ନ | ପୁଷ୍କରାଜ |
| ଶୁଭ ଉପରତ୍ନ | ସୁନହଳା, ହଳଦିଆ ହଳିକ |
| ଭାଗ୍ୟ ରତ୍ନ | ପୋହଳା |
| ଶୁଭ ଧାତୁ | କଂସା |
| ଶୁଭ ରଙ୍ଗ | ହଳଦିଆ |
| ଶୁଭ ଦିଗ | ପୂର୍ବୋତ୍ତର |
| ଶୁଭ ସମୟ | ସନ୍ଧ୍ୟା |
| ଦାନ ପଦାର୍ଥ | ହଳଦି, ପୁସ୍ତକ, ହଳଦିଆ ପୁଲ |
| ଅନୁଦାନ | ତୃଣା ଡାଲି |
| ଦ୍ରବ୍ୟଦାନ | ଗିଅ |

ରତ୍ନ ଚୟନ

ରତ୍ନ ଜୀବନ ରେ ଶୁଭତା ର ବୃଦ୍ଧି ପାଇଁ ଧାରଣ କରା ଯାଇ ଥାଏ । ବୈଜ୍ଞାନିକ ରୂପ ରେ, ରତ୍ନ ନିଜ ଗ୍ରହ ର ରାଶି କୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ମାତ୍ରା ରେ ମାନବ ଶରୀର ରେ ପ୍ରବାହିତ କରି ଗ୍ରହ ପ୍ରଭାବ ର ବୃଦ୍ଧି କରି ଥାଏ । ଏଥି ପାଇଁ ରତ୍ନ କେବଳ ଶୁଭ ଗ୍ରହ ର ହିଁ ଧାରଣ କରା ଯାଇ ଥାଏ । ଯଦି ଗ୍ରହ ଲଗ୍ନ, ତ୍ରିକୋଣ ଅଥବା କେନ୍ଦ୍ର ରେ ସ୍ଥାପିତ ହୋଇ ଥାଏ ଅଥବା ସ୍ୱାମୀ ହୋଇ ଥାଏ, ତାହା ହେଲେ ଗ୍ରହ ଶୁଭ ମାନା ଯାଇ ଥାଏ । ଯଦି ଗ୍ରହ ତ୍ରିକ ଭାବ ସହ ସମ୍ବନ୍ଧିତ ହୋଇ ଥାଏ, ତାହା ହେଲେ ଅଶୁଭ ମାନା ଯାଇ ଥାଏ । ମିତ୍ର ଜ୍ୱରୁ ଅଥବା ଦୃଷ୍ଟି ମଧ୍ୟ ଏହାର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇ ଥାଏ । ବାଧକ ଭାବ ର ସ୍ୱାମିତ୍ୱ ଶୁଭତା କମ କରି ଦେଇ ଥାଏ । ଚନ୍ଦ୍ର ଲଗ୍ନ ରେ ଏକାଦଶ, ଛିର ରେ ନବମ ଅଥବା ଦ୍ୱିପ୍ରଭାବ ରେ ସପ୍ତମ ଭାବ ର ବାଧକ ସଞ୍ଜା ଥାଏ । ଉପରୋକ୍ତ ତଥ୍ୟ ରତ୍ନ ଚୟନ ହେତୁ ଗ୍ରହ ର ଶୁଭତା ଦର୍ଶାଇ ଥାଏ ।

ତଳେ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ରେ ଗ୍ରହ ର ଶୁଭତା କୁ ସାରଣୀ ଏବଂ ଗ୍ରାଫ ରେ ଦର୍ଶିତ କରା ଯାଇ ଅଛି । ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ କେଉଁ ଗ୍ରହ କେଉଁ କ୍ଷେତ୍ର ରେ କାର୍ଯ୍ୟ ସିଦ୍ଧ କରିବ ତାହା ଦିଆ ଯାଇ ଅଛି । ବିଭିନ୍ନ ଦଶା ରେ ବିଭିନ୍ନ ରତ୍ନ ର ଶୁଭତା ମଧ୍ୟ ତଳେ ତାଲିକା ରେ ଦିଆ ଯାଇ ଅଛି । ଯେଉଁ ଗ୍ରହ କୁ ୭୫ ପ୍ରତିଶତ ଶୁଭତା ପ୍ରାପ୍ତ କରି ଥାଏ, ତାହାର ରତ୍ନ ଆମକୁ ସର୍ବଦା ବିନା ଦଶା ବିତ୍ତାର ରେ ଧାରଣ କରିବା ଦରକାର । ଯେଉଁ ରତ୍ନ ୫୦-୭୫ ପ୍ରତିଶତ ଶୁଭତା ପ୍ରାପ୍ତ କରି ଥାଏ, ତାଙ୍କୁ କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ଅନୁସାରେ କିମ୍ବା ଅନୁକୂଳ ଦଶା ରେ ଧାରଣ କରିବା ଦରକାର । ଯେଉଁ ରତ୍ନ କେବଳ ୨୫-୫୦ ପ୍ରତିଶତ ଶୁଭତା ପ୍ରାପ୍ତ କରି ଥାଏ, ସେହି ରତ୍ନ କେବଳ ନିଜର କିମ୍ବା ତାଙ୍କର ମିତ୍ର ଦଶା ରେ ଧାରଣ କରିବା ଦରକାର । ଅନ୍ତତଃ ଯାହାକୁ ୨୫ ପ୍ରତିଶତ ରୁ ଭା କମ ଶୁଭତା ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇ ଥାଏ, ସେହି ଗ୍ରହ ନିଜ ପାଇଁ ଅଶୁଭ ହିଁ ବୁଝା ଯିବ ଏବଂ ସେହି ରତ୍ନ କୁ ପିନ୍ଧିବା ଦରକାର ନାହିଁ ।

| ରତ୍ନ | ଗ୍ରହ | ଶୁଭତା | କ୍ଷେତ୍ର |
|-----------|---------|-------|--------------------------------|
| ପୁଞ୍ଜରାଜ | ଶୁଭ | 100% | ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ, ବ୍ୟବସାୟ ରୁ ଉନ୍ନତି |
| ପୋହଳା | ମଙ୍ଗଳ | 97% | ଧନ, ଭାଗ୍ୟ ଉଦୟ |
| ମୋତୀ | ଚନ୍ଦ୍ର | 81% | ଧନ, ସନ୍ତାନ ସୁଖ |
| ମରକତ | ରାହୁ | 81% | ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ |
| ନୀଳା | ଶନି | 56% | ଭାଗ୍ୟ ଉଦୟ, ଧନ ଅର୍ଜନ, କମ ଖର୍ଚ୍ଚ |
| ବୈଦୂର୍ଯ୍ୟ | କେନ୍ଦ୍ର | 31% | ଦାମତ୍ୟ କଷ୍ଟ ବ୍ୟୟ |
| ପତ୍ନୀ | ବୁଧ | 22% | ବ୍ୟୟ, ଗୃହ ଅଗାଧି, ଦାମତ୍ୟ କଷ୍ଟ |
| ମାଣିକ୍ୟ | ସୂର୍ଯ୍ୟ | 0% | ବ୍ୟୟ, ଶତ୍ରୁ କିମ୍ବା ରୋଗ |
| ହୀରା | ଶୁକ୍ର | 0% | ହାନି, ପରାକ୍ରମ ହାନି, ଦୂର୍ଘଟଣା |

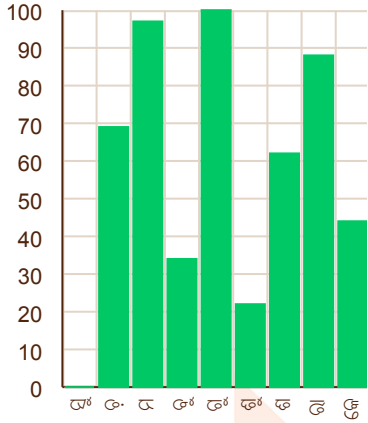


ଦଶାନ୍ୱୟର ରତ୍ନ ବିତ୍ତାର

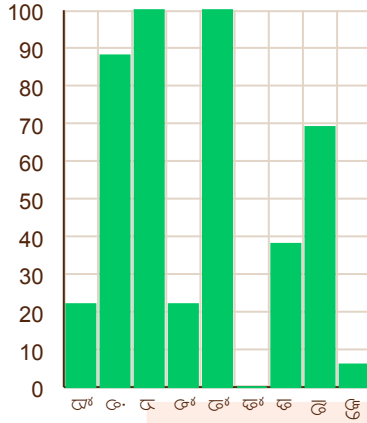
| ଦଶା | ସମାପ୍ତି | ମାଣିକ୍ୟ | ମୋତୀ | ପୋହଳା | ପତ୍ନୀ | ପୁଞ୍ଜରାଜ | ହୀରା | ନୀଳା | ମରକତ | ବୈଦୂର୍ଯ୍ୟ |
|---------|------------|---------|------|-------|-------|----------|------|------|------|-----------|
| ଶୁକ୍ର | 17/07/1992 | 0% | 69% | 97% | 34% | 100% | 22% | 62% | 88% | 44% |
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | 18/07/1998 | 22% | 88% | 100% | 22% | 100% | 0% | 38% | 69% | 6% |
| ଚନ୍ଦ୍ର | 17/07/2008 | 9% | 94% | 97% | 34% | 100% | 0% | 56% | 69% | 6% |
| ମଙ୍ଗଳ | 18/07/2015 | 9% | 88% | 100% | 0% | 100% | 0% | 56% | 69% | 44% |
| ରାହୁ | 17/07/2033 | 0% | 69% | 84% | 22% | 100% | 9% | 62% | 94% | 6% |
| ଶୁଭ | 17/07/2049 | 9% | 88% | 100% | 0% | 100% | 0% | 56% | 81% | 31% |
| ଶନି | 17/07/2068 | 0% | 69% | 84% | 34% | 100% | 9% | 69% | 88% | 6% |
| ବୁଧ | 17/07/2085 | 9% | 69% | 97% | 47% | 100% | 9% | 56% | 81% | 31% |
| କେନ୍ଦ୍ର | 17/07/2092 | 0% | 69% | 100% | 22% | 100% | 9% | 38% | 69% | 53% |

ଦଶା ଗ୍ରାଫ

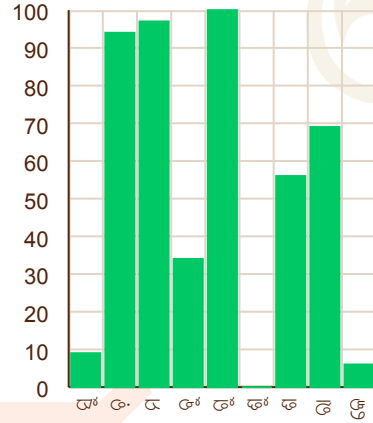
ଶୁକ୍ର - 17/07/1992



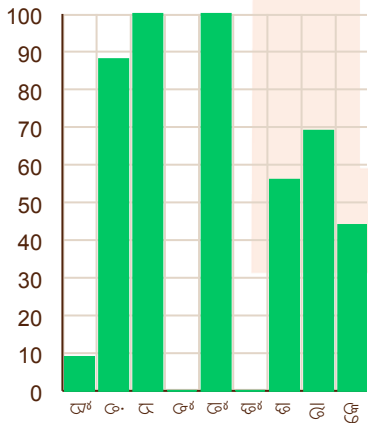
ଗୁରୁ - 18/07/1998



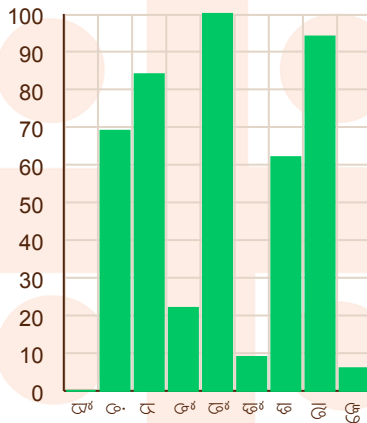
କରୁଣ - 17/07/2008



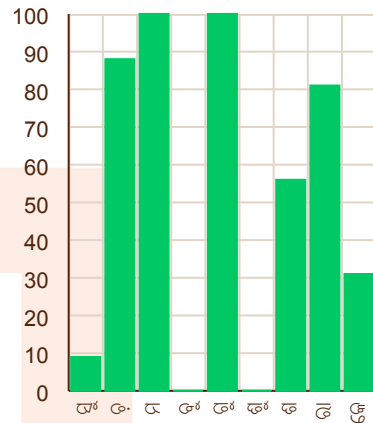
ମଙ୍ଗଳ - 18/07/2015



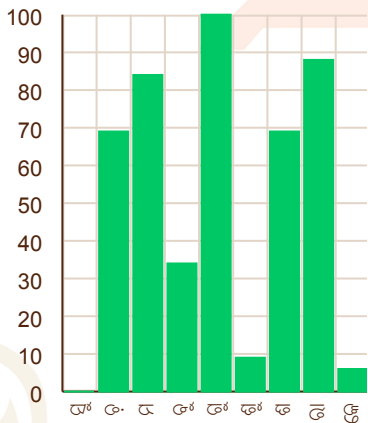
ରାହୁ - 17/07/2033



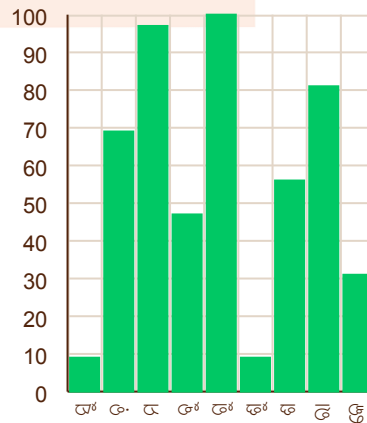
ଶୁକ୍ର - 17/07/2049



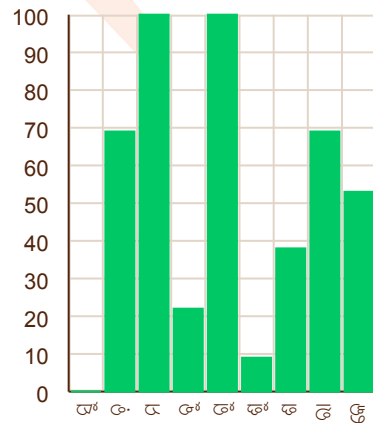
ଶନି - 17/07/2068



ବୁଧ - 17/07/2085



କେତୁ - 17/07/2092



Rudraksha

Rudraksha is a Sanskrit word. If we split this word into two we get these two words Rudra and Aksha. Rudra means Lord Shiva and Aksha means Aansu(tears) of Lord Shiva. According to Hindu Mythology tears of Shiva fell on earth in the form of Rudraksha tree. The Rudraksha tree belongs to Elaeocarpaceae family and is as huge as the Banyan tree which has seed covered with pulp and outer skin. After drying the skin turns black and grooves appear on the surface running from apex to the bottom, there by demarcating clear areas called 'Mukha or faces'. The Rudraksha are classified on the basis of number of faces, which can range from one to twenty one.

Sometimes Rudraksha are found in twins which are considered to be symbols of Lord Shiva and Parvati (Goddess). They are known as Gauri Shankar Rudraakshas. In the same way if three Rudrakshas are together they are considered the symbol of Shiva, Shakti and Ganesha or Bramha, Vishnu, Mahesh. But these types of Rudrakshas are very rarely available. Scriptures like Rudraksha Jabalopanished, Shiva Purana, Devi Purana and Padma Purana extol the value of Rudraksha seeds.

In general all Gods are fond of Rudrakshas but it is believed that it is most favourite of Lord Shiva. Modern scientific research came out with positive results about Rudraksha. It is found that it stores electromagnetic properties, which influences human physiology. Each type of Rudraksha has its own influence and property. Rudraksha is worn to get beneficial results and is helpful in curing diseases like epilepsy, hypertension, blood pressure, stress, whooping cough, wounds. Wearing of Rudraksha not only pleases Lord Shiva but also brings blessings of Lord Vishnu, Durga, and Ganesh and Navgrahas (nine planets) it reduces the ageing process and brings peace and harmony in life.

In Hindi, Bengali, Sanskrit, Bhojpuri, Gujrati and Panjabi it is known by the name Rudraksha. In Tamil, Kannad and Telgu it is

According to Hindu Mythology Rudraksha of Nepal is best in the world. Goddess of wealth always stays in the house where Rudraksha is worshipped. Rudraksha frees you from all the sins committed knowingly or unknowingly. Rudraksha fulfils your aspirations. It prevents sudden death. It frees you from worries, satiates the wrath of Gods, eliminates diseases and causes auspicious. It gives mental peace & brings peace to home. It is auspicious for business, wealth and prosperity. Controls temper and blood pressure. Wear Rudraksha for reputation, glory, name and fame.

It enhances your will power and memory. It is highly beneficial for high blood pressure, stomach disorder and obstruction from spirits. Rudraksha can be worn by anybody irrespective of age, sex and Rashi (Moon Sign). It frees you from problems and brings gain of progeny. Rudraksha never causes any negative impact; it is beneficial in every condition. Pregnant woman feels secure, protected, and gets rid of any type of fear after wearing it. Rudraksha causes union in the family and enhances mutual love, affection and respect. It enhances attraction of personality. Rudraksha is the favourite ornament of Lord Shiva. One faced Rudraksha has all above-mentioned qualities.

Significance of Rudrakshas at a Glance

1 Faced - Sun - Health, success, reputation, self-confidence, spirituality, happiness, sudden financial gains, development of personality, victory over enemies, good for rulers, administrators, kings and immense power.

2 Faced - Moon - Marital happiness, mental peace, contentment, good luck, concentration of mind, spiritual progress, and harmony in the family, business, and good for females.

3 Faced - Mars - Victory over enemies, removal of blood related diseases.

4 Faced - Mercury - Education, knowledge, intelligence, spiritual and discrimination, concentration, expression, communication skills.

5 Faced - Jupiter - Physical, Mental and spiritual strength, mental peace and happiness.

6 Faced - Venus - Love life, sexual power, attraction, strong memory, sharp intellect, accomplishment of tasks and amazing success in business.

7 Faced - Saturn - Removes malefic effects of Saturn, attainment of wealth, glory and victory, success in business.

Your Horoscope and Rudraksha

Your Lagna is Pisces because of which the influence of Jupiter can be seen clearly on your personality and therefore you are religious, disciplined and slightly stubborn. You easily succeed in earning lot of reputation and respect in life. You are a very good speaker and consultant. You are conservative and do not break connections from your roots easily. You are serious by nature and can forget everything. To follow religion is the integral part of your life. You are ambitious and prefer to enjoy your independence. You follow the orders and advice of your seniors. You do not lose your temper easily but when you are angry then fail to control your anger.

You are confident and acquire expertise in your area of work. Your method of working is simple and you are often seen giving knowledge to others. Your determination is also not weak therefore do not fail to accomplish your tasks on time. You also give punishment when somebody makes a mistake and at times you are hard and sometimes soft.

For your Pisces ascendant Sun is lord of 6th, Venus is 8th and 3rd lord and Saturn is 12th and 11th lord. The bad position of these planets creates troubles like health troubles, tensions from enemies and legal matters, uncontrolled expenses, lack of support of siblings and problems in consolidation of source of income.

6th, 8th and 12th house are known as trik bhavas. The lords of these houses and the planets placed there in create obstacles in life. 6th house denotes diseases debts and troubles created by enemies. On account of it the house occupied by this planet loses its auspiciousness. The native becomes the victim of troubles like diseases, debts and troubles from enemies thereby affecting your physical, mental, social, financial and domestic conditions very badly. Among trik bhavas 8th house is most notorious and inauspicious. It destroys the auspicious results of the house occupied by it. The maleficence of the planets occupying 8th house increases and eventually the inauspicious results also

increase. The 3rd trik bhava is 12th house. It denotes various types of expenses and that is why known as house of expenses. This is house of loss, tax, sleep, bed pleasure, jail, foreign journey and salvation. The lord and the planet placed in 12th house increase the inauspiciousness of this house.

Because of placement of Sun in 12th house you might have lot of enemies however you are victorious over enemies. You attain lot of wealth and become a successful politician, administrator etc. This sun proves negative for your eye sight, brings troubles to maternal uncle and creates the probability of physical injury etc from vehicle.

Mercury placed in 12th house indicates that you control your enemies very cleverly, avoid being lazy, your hard words can affect your relations with your friends.

For getting the auspicious results of all these planets you should wear Rudraksha Kavach comprised of 1, 4, 6, 7 faced Rudrakshas. This Kavach should be worn in white thread on Monday after sanctifying it with sprinkling of Gangajal and chanting of "Om Namah Shivay" Mantra atleast 108 times. After that offer raw milk to lord Shiva and donate as per your strength. This would help you in overcoming the difficult situations of life. There shall be substantial relief in serious problems too. For giving extra strength to all the planets of horoscope you can also wear Shivkripa Rudraksha Mala comprised of 1 to 14 faced Rudrakshas which yields miraculous results.

The above kavacham can be worn throughout life irrespective of the consideration of dasha and gochar. This kavach is essential for overcoming the malefic effects of lagna and the planets placed in lagna.

ସାଢ଼େସାତି ବିଚାର

ତମ୍ଭୁ ଠାରୁ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀରେ ଯଦି ଗୋଡ଼ରବଣ ଶନି ଦ୍ଵାଦଶ, ପ୍ରଥମ ଏବଂ ଦ୍ଵିତୀୟ ସ୍ଥାନରେ ଅବସ୍ଥାନ କରିଥାଏ ତେବେ ଏହା କୁ ସାଢ଼େସାତି ଦଶା କୁହାଯାଏ । ଶନି ଚନ୍ଦ୍ରର ଚତୁର୍ଥ ଓ ଅଷ୍ଟମ ଭାଗରେ ଅବସ୍ଥାନ କରିଥିଲେ ହାଲିଆର ପ୍ରଭାବ (ଦଶା) ପଡ଼େ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଶାରୀରିକ, ମାନସିକ ଇତ୍ୟାଦି କଷ୍ଟ ଭୋଗ କରିବାକୁ ପଡ଼ିଥାଏ । କିନ୍ତୁ ସମୟେ ସମୟେ ଏହାର ଫଳ ଭିନ୍ନ ପ୍ରକାର କରିବାରେ ସହାୟକ ହୋଇଥାଏ । ସାଢ଼େସାତିର ପ୍ରଭାବ ସାତ ବର୍ଷ ଏବଂ ହାଲିଆର ପ୍ରଭାବ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ ବଳବତ୍ତର ରହିଥାଏ ।

ସାଧାରଣତ ପ୍ରତ୍ୟେକ ମନୁଷ୍ୟ ଜୀବନରେ ସାଢ଼େସାତି ତିନି ଥର ଆସିଥାଏ । ପ୍ରଥମ ଥର ବାଲ୍ୟ କାଳରେ ଦ୍ଵିତୀୟ ଥର ଯୁବକାବସ୍ଥାରେ ତଥା ତୃତୀୟ ଥର ବୃଦ୍ଧାବସ୍ଥାରେ । ପ୍ରଥମ ସାଢ଼େସାତିର ପ୍ରଭାବ ଶିକ୍ଷା ଏବଂ ମାତା-ପିତାଙ୍କ ଉପରେ ପଡ଼ିଥାଏ । ଦ୍ଵିତୀୟ ସାଢ଼େସାତିର ପ୍ରଭାବ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ଷେତ୍ର ତଥା ତୃତୀୟ ସାଢ଼େସାତିର ପ୍ରଭାବ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ଉପରେ ଅଧିକ ପ୍ରଭାବ ପକାଇଥାଏ ।

ନିମ୍ନଲିଖିତ ତାଲିକାରେ ସାଢ଼େସାତିର ସମୟ ତଥା ହାଲିଆର ଶୁଭା-ଶୁଭ ଫଳ ଇତ୍ୟାଦି କରାଯାଇ ଅଛି ।

ପ୍ରଥମ ଚକ୍ର:

| | | |
|----------------------------------|-----------------------|---|
| ଅଷ୍ଟମ ସ୍ଥାନରେ ଶନିଙ୍କ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | 05/03/1987-17/12/1987 | ----- |
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ପ୍ରଥମ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | 02/06/1995-10/08/1995 | 16/02/1996-17/04/1998 ----- |
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ଦ୍ଵିତୀୟ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | 17/04/1998-07/06/2000 | ----- |
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ତୃତୀୟ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | 07/06/2000-23/07/2002 | 08/01/2003-07/04/2003 ----- |
| ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନରେ ଶନିଙ୍କ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | 06/09/2004-13/01/2005 | 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007 ----- |

ଦ୍ଵିତୀୟ ଚକ୍ର:

| | | |
|----------------------------------|-----------------------|---|
| ଅଷ୍ଟମ ସ୍ଥାନରେ ଶନିଙ୍କ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | 02/11/2014-26/01/2017 | 21/06/2017-26/10/2017 ----- |
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ପ୍ରଥମ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | 29/03/2025-03/06/2027 | 03/06/2027-23/02/2028 ----- |
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ଦ୍ଵିତୀୟ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | 03/06/2027-03/06/2027 | 23/02/2028-08/08/2029 05/10/2029-17/04/2030 ----- |
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ତୃତୀୟ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | 08/08/2029-05/10/2029 | 17/04/2030-31/05/2032 ----- |
| ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନରେ ଶନିଙ୍କ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | 13/07/2034-27/08/2036 | ----- |

ତୃତୀୟ ଚକ୍ର:

| | | |
|----------------------------------|-----------------------|---|
| ଅଷ୍ଟମ ସ୍ଥାନରେ ଶନିଙ୍କ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | 11/12/2043-23/06/2044 | 30/08/2044-08/12/2046 ----- |
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ପ୍ରଥମ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | 14/05/2054-02/09/2054 | 05/02/2055-07/04/2057 ----- |
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ଦ୍ଵିତୀୟ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | 07/04/2057-27/05/2059 | ----- |
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ତୃତୀୟ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | 27/05/2059-11/07/2061 | 13/02/2062-07/03/2062 ----- |
| ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନରେ ଶନିଙ୍କ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | 24/08/2063-06/02/2064 | 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066 ----- |

ଶନିର ହୈୟା ଫଳ

| ହାଲିଆ ର ପ୍ରକାର | ଫଳ | କ୍ଷେତ୍ର |
|----------------------------------|------|-------------|
| ଅଷ୍ଟମ ସ୍ଥାନରେ ଶନିଙ୍କ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | ସମ | ବନ୍ଦନାମ |
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ପ୍ରଥମ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | ସମ | ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ |
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ଦ୍ଵିତୀୟ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | ଅଶୁଭ | ଧନ |
| ସପ୍ତ ଶନିଙ୍କ ତୃତୀୟ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | ଶୁଭ | ସାହାସ |
| ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନରେ ଶନିଙ୍କ ଅଢ଼େଇ ବର୍ଷ | ସମ | ସନ୍ତାନ କଷ୍ଟ |



ସାଢ଼େସାତି ଉପାୟ

ଶନିଙ୍କ ସାଢ଼େସାତିର ଅଶୁଭ ପ୍ରଭାବ ଗୁଡ଼ିକୁ କମ କରିବା ପାଇଁ ଦାନ, ପୂଜା, ବ୍ରତ ଓ ମନ୍ତ୍ର ଆଦି ଉପାୟ କରା ଯାଇ ପାରେ ଏବଂ ଉପରୋକ୍ତ କର୍ମ ପାଇଁ ଶନିବାର ଉତ୍ତମ ଅଟେ । ଏହି ଦିନ କଳା କମ୍ପଳ, ହରଡ଼ ଡାଲି, ଶୋରିଷ, ଚମଡ଼ା ଚପଲ, କଳା କପଡ଼ା, ମୋଟା ପନିପରିବା, ଶୋରିଷ ତଥା ଲୁହା ଦାନ କରିବା ଉଚିତ । ଶନି ପୂଜା ଏବଂ ଶନିବାର ବ୍ରତ ପାଳନ କରିବା ଉଚିତ । ତତ୍ ସଙ୍ଗେ ସଙ୍ଗେ କୌଣସି ବିଜ୍ଞ ବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ୧୯୦୦୦ ଥର ନିମ୍ନ ମନ୍ତ୍ର କୁ ଜପ କରିବା ଉଚିତ ।

ଓଁ ପ୍ରାଁ ପ୍ରାଁ ଶ୍ରେୀଂ ସଃ ଶନୈଃଶ୍ଵରାୟ ନମଃ । ।

ଶନିଙ୍କ ସାଢ଼େସାତି ଶାରୀରିକ, ମାନସିକ, ପାରିବାରିକ ଶାନ୍ତି ଏବଂ ସମୃଦ୍ଧି, ଆର୍ଥିକ ସୁବୃଦ୍ଧତା ତଥା କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉନ୍ନତି ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ମନ୍ତ୍ର କୁ ୧୨୫୦୦୦ ଥର ଜପ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ ।

ଓଁ ତ୍ଵୟମ୍ବକମ ଯଜ୍ଞମହେ ସୁଗନ୍ଧି ପୁଷ୍ଟିବର୍ଧନମ୍ ।

ଉର୍ବାରୁକମିବ ବନ୍ଧନାମୃତୋମୁକ୍ଷାୟ ମା ମୃତାତ । ।

ବିକଳ ରୂପେ ନିମ୍ନଲିଖିତ ମନ୍ତ୍ର ପ୍ରତିଦିନ ୧୦୮ ଥର ଜପ କରନ୍ତୁ ।

ଓଁ ହୋଁ ଜ୍ଞଂ ସ ଓଁ ଭୂର୍ଭୁବ ସ୍ଵ ଓଁ । ।

ଶନିଙ୍କ ସାଢ଼େସାତିର ଶୁଭତ୍ଵ କୁ ବଢ଼ାଇବାକୁ ହେଲେ ଶନିବାର ଦିନ ଆପଣ ୨/୪ ରତିର ନୀଳା ରତ୍ନ ପଞ୍ଚଧାତୁ (ସୁନା, ରୂପା, ତମ୍ବା, ଲୁହା ଓ ଦସ୍ତା) କିମ୍ବା ଘୋଡ଼ାର ନାଳ ବା ନାବର କାଳରେ ନିର୍ମିତ ମୁଦି ଧାରଣ କରନ୍ତୁ । ଲୁହା ମୁଦି ଆପଣ ଡାହାଣ ହାତର ମଧ୍ୟମା ଆଙ୍ଗୁଳିରେ ଧାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ମୁଦି ଶୁକ୍ଳପକ୍ଷ ଶନିବାର ଦିନ ସଂନ୍ଧ୍ୟା ସମୟରେ ସୂର୍ଯ୍ୟାସ୍ତ ପରେ ଧାରଣ କରିବେ । ପୁଷ୍ୟା, ଅନୁରାଧା କିମ୍ବା ଉତ୍ତରା ଭାଦ୍ରପଦ ନକ୍ଷତ୍ର ଆଦି ଏହି କାର୍ଯ୍ୟ ପାଇଁ ପ୍ରଶସ୍ତ ଅଟେ । ଉକ୍ତ ଦିନ ଶନି ଉପବାସ କରିବେ । ମୁଦି ଧାରଣ କରିବା ପୂର୍ବରୁ ମୁଦି କୁ ଶୁଦ୍ଧ କରିବା ପାଇଁ ଏହା କୁ ଗଙ୍ଗା ଜଳରେ ସ୍ନାନ କରାଇବେ । ଧୂପ, ଦ୍ଵାପାଦି ଦ୍ଵାରା ଶନି ଦେବତାଙ୍କୁ ପୂଜା କରିବେ ଏବଂ ନିମ୍ନ ମନ୍ତ୍ର କୁ ୧୦୮ ଥର ଜପ କରିବେ । ତାପରେ ନୀଳା ରତି କୁ ମଧ୍ୟମା ଆଙ୍ଗୁଳିରେ ଧାରଣ କରିବେ ।

ଓଁ ଶଂ ଶନୈଃଶ୍ଵରାୟ ନମଃ ।

ମୁଦି ଧାରଣ କରିସାରିବା ପରେ ଶନିଙ୍କ ଦାନ ସାମଗ୍ରୀ ଗୁଡ଼ିକୁ ଦାନ କରିଦେବେ । ଏଥିରେ, ଶନି ଦେବ ଖୁସି ହେବେ ଏବଂ ତାଙ୍କର ଅଶୁଭ ପ୍ରଭାବ ଆପଣଙ୍କ ଉପରେ ପଡ଼ିବ ନାହିଁ । ଫଳରେ, ଆପଣ ସୁଖ, ଶାନ୍ତି ତଥା ଜୀବନରେ ସମୃଦ୍ଧି ପାଇ ପାରିବେ ।

ଶ୍ରୀ ହନୁମାନ ଚାଳିଶା ଓ ହନୁମାନ ଅଷ୍ଟକ ସର୍ବଦା ପାଠ କରିବା ଉଚିତ ।

ମାଙ୍ଗଳିକ ବିଚାର

ଯଦି ଜାତକ ଜାତିକା କୋଷ୍ଠରେ ମଙ୍ଗଳ ଗ୍ରହ ଚତୁର୍ଥ ଘର, ସପ୍ତମ ଘର, ଅଷ୍ଟମ ଘର ବା ଦ୍ଵାଦଶତମ ଘରେ ପ୍ରବଳ ହେଲେ ଏହାକୁ ମାଙ୍ଗଳିକ ଦୋଷ କୁହନ୍ତି । ଯେତେବେଳେ ମଙ୍ଗଳ ଚନ୍ଦ୍ର ସାଙ୍ଗରେ ଯୁକ୍ତ ହୋଇ ପ୍ରବଳ ହୁଏ । ଶାସ୍ତ୍ରାନୁସାରେ ଜାତକ ଓ ଜାତିକା କୁ ମାଙ୍ଗଳିକ ଦୋଷ ମୁକ୍ତ କରାଗଲେ ସେମାନେ ଭଲରେ ବୈବାହିକ ଜୀବନ ଜାପନ କରିବେ । ଅନ୍ୟଭାବେ ଯଦି ସେମାନେ ଏଇ ଦୋଷମୁକ୍ତ ନ ହୁଅନ୍ତି ତା'ହେଲେ ସେମାନେ ଅଯଥା ସମସ୍ୟାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେବେ । ସୁତରାଂ ପୁରୁଷ ଓ ମହିଳା ବୈବାହିକ ଜୀବନ ଆରମ୍ଭ କରିବା ପୂର୍ବରୁ ଉଭୟଙ୍କ କୋଷ୍ଠ କୁ ଭଲ ଭାବରେ ବିଚାର କରିବା ଉଚିତ୍ । ମାଙ୍ଗଳିକ ଦୋଷ ଭଲ ଭାବରେ ମୁକ୍ତ କରିବା ପରେ ସେମାନେ ଶାନ୍ତିପୂର୍ଣ୍ଣ ବୈବାହିକ ଜୀବନ ଜାପନ କରିପାରିବେ ।

ଜନ୍ମ ସମୟରେ ମଙ୍ଗଳ ଚନ୍ଦ୍ର ସାଙ୍ଗରେ କୋଷ୍ଠରେ ଅବସ୍ଥାନ କରିଲେ ଆପଣ ମାଙ୍ଗଳିକ କିନ୍ତୁ ଶାସ୍ତ୍ରାନୁସାରେ ଦୋଷ ମୁକ୍ତ କରିବାକୁ ହେବ । ସୁତରାଂ କ୍ଷତି ତୁଳନାରେ ଭଲ ଫଳ ମଧ୍ୟ ପାଇବେ । ମାନସିକ ଓ ଶାରୀରିକ ଭାବେ ସୁସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟର ଅଧିକାରୀ ହେବେ । କୌଣସି କୌଣସି ସମୟରେ ମାନସିକ ଅଶାନ୍ତି ଭୋଗ କରିପାରନ୍ତି । ମଙ୍ଗଳ ର ପ୍ରଭାବ ହେତୁ ବିବାହ ତେରି ହୋଇପାରେ । କିନ୍ତୁ ମନୋରମ ପରିବେଶ ହେବ । ସ୍ତ୍ରୀଙ୍କର ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କର ଦାମ୍ପତ୍ୟ ଜୀବନ ସୁଖୀ ଏବଂ ଶାନ୍ତିପୂର୍ଣ୍ଣ ହେବ ।

ମଙ୍ଗଳ ର ପ୍ରଭାବ ହେତୁ ବିବାହ ତେରି ହୋଇପାରେ । ଏପରିକି ବିବାହ ସମ୍ପର୍କର ସମୟ ମଧ୍ୟ ତେରି ହୋଇପାରେ । ଆପଣଙ୍କ ସ୍ଵାମୀ ସୁସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟର ଅଧିକାରୀ ହେବେ । ଆପଣ ମଧ୍ୟ ମାନସିକ ଭାବେ ଶାନ୍ତିପୂର୍ଣ୍ଣ ଓ ସୁଖୀ ରହିବେ । ମଙ୍ଗଳ ସାଙ୍ଗରେ ଚନ୍ଦ୍ର ରହିବା ଯୋଗୁଁ ଭଲ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟର ଅଧିକାରୀ ହେବେ । ଚତୁର୍ଥ ଘରେ ଅବସ୍ଥାନ ହେତୁ ବିଳାସିତା ଏବଂ ସମ୍ପଦ ମଧ୍ୟ ଅର୍ଜନ କରବେ । ଅନେକ ସମ୍ପତ୍ତିର ମାଲିକ ହେବେ । ମଙ୍ଗଳ ସପ୍ତମରେ ଅବସ୍ଥାନ ହେତୁ ସୁସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟର ଅଧିକାରୀ ହେବେ । ଯଦିଓ ସେ ହାଲୁକା ମିଞ୍ଜାସର ଅଧିକାରୀ ତଥାପି ଦାମ୍ପତ୍ୟ ଜୀବନ ପ୍ରଭାବିତ ହେବ ନାହିଁ । ମଙ୍ଗଳ ଅଷ୍ଟମ ଘରେ ଅବସ୍ଥାନ ହେତୁ ସୁସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟର ଅଧିକାରୀ ହେବେ ଓ ଅଧିକାଂଶ ଶାନ୍ତିପୂର୍ଣ୍ଣ କରିବ । ଏପରିକି ଦାମ୍ପତ୍ୟ ଜୀବନ ମଧ୍ୟ ଶାନ୍ତିପୂର୍ଣ୍ଣ ଓ ସୁଖମୟ ହେବ ।

ଆପଣଙ୍କ ଦାମ୍ପତ୍ୟ ଜୀବନ ସୁଖମୟ କରିବା ପାଇଁ ଏପରି ମାଙ୍ଗଳିକ ବିହୀନ କନ୍ୟାକୁ ବିବାହ କରିବେ ଯାହାର ମାଙ୍ଗଳିକ ଦୋଷ ମୁକ୍ତ କରାଯାଇଛି । ଏ ବିଷୟରେ ଜୀବନ ବିଳାସିତାପୂର୍ଣ୍ଣ ଓ ପରିଚିତ ହେବେ । ସ୍ତ୍ରୀ ଆପଣଙ୍କୁ ଭାଗ୍ୟବାନ କରାଇବେ ଯାହାଫଳରେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ତ୍ରୀ ସାଙ୍ଗରେ ଭଲରେ ରହିବେ । ଯଦି ସ୍ତ୍ରୀର କୋଷ୍ଠରେ ମଙ୍ଗଳ ଓ ଆପଣଙ୍କ କୋଷ୍ଠ ଜାଗାରେ ଅବସ୍ଥାନ କରେ ତା'ହେଲେ ଏଇ ବିବାହ କରିବେ ନାହିଁ । କାରଣ ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ଅପ୍ରୟୋଜନୀୟ ସମସ୍ୟାର ପୀଡ଼ିତ ରହିବ । ଯଦି ମଙ୍ଗଳ ଘରେ ରୁହେ ତା'ହେଲେ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସୌଭାଗ୍ୟ ବହନ କରିବ ଏବଂ ସୁଖୀ ଦାମ୍ପତ୍ୟ ଜୀବନଯାପନ କରିବେ । ସୁତରାଂ ବିବାହ ପୂର୍ବରୁ କୋଷ୍ଠକୁ ଭଲଭାବରେ ମିଳାଇ ନିଅନ୍ତୁ ।

କାଳଶର୍ପ ଯୋଗ

ଅଗ୍ରେ ରାହୁରଧ୍ୟ କେତୁ ସର୍ବେ ମଧ୍ୟଗତା ଗ୍ରହ ।
ଯୋଗ ଯଃ କାଳସର୍ପୋଷୋ ଶାନ୍ତଃ ତଂ ତୁ ବିନାଶୟ ॥

ଯଦି ସମସ୍ତ(ସୋତରୀ) ଗ୍ରହ ରାହୁ ଏବଂ କେତୁ ମଧ୍ୟରେ ସ୍ଥିତ ହୁଏ । ତାହା ହେଲେ କାଳଶର୍ପ ଯୋଗ ବନିଥାଏ । ଅର୍ଥାତ୍ ଏହି ଯୋଗ ର ନିବାସି କିପରି କାଳଶର୍ପ ଯୋଗ ରୁ ବଞ୍ଚିବେ, ତାହାର ଉପାୟ ଆବଶ୍ୟକ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଜାତକ କୁ ଶୁଭ ଯୋଗ ର ଫଳ ମିଳିଥାଏ ।

ଦ୍ଵାଦଶ ଘରେ ରାହୁର ସ୍ଥିତି ଅନୁସାରେ କାଳଶର୍ପ ଯୋଗ ମୁଖ୍ୟତଃ ୧୨ ପ୍ରକାରର ହୋଇଥାଏ । ତାହା

୧. ଅନନ୍ତ ୨. କୁଳିକ ୩. ବାସୁକି ୪. ଶଙ୍ଖପାଳ ୫. ପଦ୍ମ ୬. ମହା ପଦ୍ମ ୭. ଚକ୍ର ୮. କର୍କୋଟକ ୯. ଶଙ୍ଖଚୂଡ଼ ୧୦. ଘାତକ ୧୧. ବିଷଧର ୧୨. ଶେଷନାଗ

କାଳଶର୍ପ ଯୋଗ ଦୁଇ ପ୍ରକାରର ହୋଇଥାଏ – ଉଦ୍ଦିତ ଏବଂ ଅନୁଦିତ । ଯଦି ରାହୁର ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣରେ ସମସ୍ତ(ସୋତରୀ) ଗ୍ରହ ନିବାସି ହେଲେ ଉଦ୍ଦିତ କାଳଶର୍ପ ଯୋଗ ବନିଥାଏ । ଯଦି ରାହୁର ପୃଷ୍ଠରେ ସମସ୍ତ ଗ୍ରହ ନିବାସି ହେଲେ ଅନୁଦିତ କାଳଶର୍ପ ଯୋଗ ବନି ଥାଏ ।

ଯଦି ଲଗ୍ନ ଜାତକରେ ସମସ୍ତ(ସୋତରୀ) ଗ୍ରହ ରାହୁ ଏବଂ କେତୁ ମଧ୍ୟରେ ସ୍ଥିତ ହୁଏ କିନ୍ତୁ ଅଂଶନୁସାରେ ଯଦି କିଛି ଗ୍ରହ ରାହୁ ଏବଂ କେତୁର ସୀମା ମଧ୍ୟରୁ ବାହାରେ ସ୍ଥିତ ଥିଲେ ଆଂଶିକ କାଳଶର୍ପ ଯୋଗ କୁହା ଯାଇଥାଏ । ଯଦି କୌଣସି ଗୋଟିଏ ଗ୍ରହ ରାହୁ ଏବଂ କେତୁର ସୀମା ମଧ୍ୟରୁ ବାହାରେ ସ୍ଥିତ ହୁଏ ତାହା ହେଲେ ମଧ୍ୟ ଆଂଶିକ କାଳଶର୍ପ ଯୋଗ ବନିଥାଏ ।

ଏହି ଯୋଗରେ ଉତ୍ପନ୍ନ ଜାତକ କୁ ମାନସିକ ଅଶାନ୍ତି, ଧନ ପ୍ରାପ୍ତିରେ ବାଧା, ସନ୍ତାନ ଅବରୋଧ, ବୈବାହିକ ଜୀବନରେ ବିବାଦ ହୋଇଥାଏ । ପ୍ରାୟତଃ ଜାତକ କୁ ଖରାପ ସମ୍ପନ୍ନ ଆସିଥାଏ । କିଛି ନା କିଛି ଅଶୁଭ ହେବାର ଆଶଙ୍କା ମନରେ ବନିଥାଏ । ଜାତକ କୁ ନିଜର କ୍ଷମତା ଏବଂ କାର୍ଯ୍ୟ କୁଶଳତାର ପୂର୍ଣ୍ଣ ଫଳ ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇ ନ ଥାଏ, କାର୍ଯ୍ୟ ବିଳମ୍ବରେ ସଫଳ ହୋଇଥାଏ । ଅଚାନକ ଧନ ହାନି ଏବଂ ମାନର କ୍ଷତି ଏହି ଯୋଗର ଲକ୍ଷଣ । ବିନା କାରଣରେ ଜାତକ କୁ ଅସାଧ୍ୟ ଜନକ ରୋଗ ଉତ୍ପନ୍ନ ହୋଇଥାଏ । ଏପରି ରୋଗ ପ୍ରତିଦିନ ପିଡ଼ା ଦେଇଥାଏ । ତଥା ଔଷଧ ନେବା ପରେ ଭି ଠିକ୍ ହୋଇ ନ ଥାଏ, କାଳଶର୍ପ ଯୋଗର କାରଣ ହୋଇଥାଏ । ଏପରି ଜାତକ ପାଇଁ କାଳଶର୍ପ ଯୋଗର ଶାନ୍ତି କରେଇବା ଅତି ଆବଶ୍ୟକ ।

ଜାତକରେ କାଳଶର୍ପ ଯୋଗର ପ୍ରଭାବ

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକାରେ କାଳଶର୍ପ ଯୋଗ ନାହିଁ । ଅର୍ଥାତ୍ ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ଯୋଗ ପାଇଁ ଶାନ୍ତି ଆଦିର ଆବଶ୍ୟକତା ନାହିଁ ଏବଂ ଆପଣ ପୂର୍ଣ୍ଣ ରୂପେ ସୁଖି ଜୀବନ ବିତେଇ ପାରିବେ ।

ଅଙ୍କବିଜ୍ଞାନ ପଲିତ

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ତାରିଖ ଓ ହେବାର କାରଣ ଅଙ୍କ ଜ୍ୟୋତିଷ ର ଅନୁସାରେ ଆପଣଙ୍କ ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ ଓ ହୋଇ ଥାଏ । ଏହାର ସ୍ୱାମୀ ବୁଧ ଗ୍ରହ ଅଟେ । ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ ଓ ର ପ୍ରଭାବ ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ରୋଜଗାର ର କ୍ଷେତ୍ର ରେ ଡାକିରୀ ର ଅପେକ୍ଷା ବ୍ୟାପାର ର ମାର୍ଗ ଆଡ଼ କୁ ଅଧିକ ଆକୃଷ୍ଟ ରହିବେ । ଯଦି ଆପଣ ଡାକିରୀ ର ମାର୍ଗ କୁ ଚୟନ କରନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ଏପରି ରୋଜଗାର ଆପଣଙ୍କୁ ଅଧିକ ପସନ୍ଦ ଆସିବ । ଯେଉଁଠାରେ ନେବା ଦେବା, ଲେଖା, ଯାତ୍ରିକ, ବାଣିଜ୍ୟ, ଇତ୍ୟାଦି ର କାର୍ଯ୍ୟ ହୋଇ ଥାଏ । କମ୍ପାନୀ, ଫେକ୍ଟରୀ, ଉଚ୍ଚ ବ୍ୟାପାର ଜଗତ ଆପଣଙ୍କୁ ଭଲ ସୁଜିବ ।

ବୁଧ ଗ୍ରହ ର ପ୍ରଭାବ ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ବାକ୍ପଦ୍ମତା, ଚର୍ଚ୍ଚ ଶକ୍ତି ଭଲ ରହିବ ଏବଂ ସାମନା ବାଲା ବ୍ୟକ୍ତି କୁ ଆପଣ ନିଜର କଥା ରେ ପ୍ରଭାବିତ କରିବା ରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଆପଣ ସବୁ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ଶୀଘ୍ର ସମାପ୍ତ କରିବା କୁ ପସନ୍ଦ କରିବେ ଏବଂ ଏପରି ରୋଜଗାର ଆଡ଼ କୁ ଉତ୍ସୁକ ହେବେ ଯେଉଁ ଥିରେ ଶୀଘ୍ର ସଫଳତା କମ ପରିଶ୍ରମ ତଥା ଅଧିକ ଲାଭ ପ୍ରାପ୍ତ ହେଉ ଥିବ । ଆପଣ ଅଳ୍ପ ବହୁତ ଚରତର ଏବଂ ଅଚିନ୍ତା ମଧ୍ୟ ରହିବେ । ଚରତର ର କାରଣ ଆପଣ ବେଳେ ବେଳେ ହାନି ର ମଧ୍ୟ ସାମନା କରିବେ ।

ଆପଣଙ୍କ ମାନସିକ ସ୍ଥିତି ବୃକ୍ଷଳ ହେବାର କାରଣ ଆପଣଙ୍କୁ ଶୀଘ୍ର କ୍ରୋଧ ଆସିବ ଏବଂ ବେଳେ ବେଳେ ବିତ୍ତ ବିତ୍ତ ମଧ୍ୟ ରହିବେ । ଆପଣ ଅଧିକାଂଶ ବୁଦ୍ଧି ଜନିତ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ରୁଚି ନେବେ । ଏହାର କାରଣ ଆପଣଙ୍କ ମସ୍ତିଷ୍କ ତାକତ ଅଧିକ ଖର୍ଚ୍ଚ ହେବାର କାରଣ ଅଧିକ ଆୟୁ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ସ୍ୱାୟତ୍ତବେଶ ଦ୍ୱାରା ଉତ୍ତମ ରୋଗ ର ମଧ୍ୟ ସାମନା କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ ।

ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ ଓ ର ସ୍ୱାମୀ ବୁଧ ଗ୍ରହ ହେବାର କାରଣ ଅଳ୍ପ ବହୁତ ବୁଧ ର ଶୁଣ-ଅବଶୁଣ ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ଆସିବ । ବିଦ୍ୟା, ଲେଖା ପଢ଼ା ଆଦି ରେ ଆପଣଙ୍କ ବିଶେଷ ରୁଚି ରହିବ ।

ଭାଗ୍ୟାଙ୍କ ୬ ର ସ୍ୱାମୀ ଶୁକ୍ର ଗ୍ରହ କୁ ମାନା ଯାଇ ଥାଏ । ଏହି ଗ୍ରହ ର ପ୍ରଭାବ ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ଭାଗ୍ୟ ଉତ୍ତମ ୬୪ କଳା ମଧ୍ୟ ରୁ ହିଁ ହେବ । ଶୁକ୍ର କଳା ର ଦାତା ଅଟେ । ଅଃଃ ଆପଣଙ୍କ ଭିତରେ ଲଳିତ କଳା ମଧ୍ୟ ରୁ କିଛି କଳା ର ସମାବେଶ ରହିବ । ଆପଣ କଳା ର କ୍ଷେତ୍ର ରେ, କଳା ଦ୍ୱାରା ଜୀବନ ଯାପନ କରିବେ । କଳାତ୍ମକ ବସ୍ତୁ ଆପଣଙ୍କୁ ଲାଭ ପ୍ରଦାନ କରିବ । ଆପଣ ବିପରୀତ ଲିଙ୍ଗ ପ୍ରତି ସହଜ ରେ ଆକର୍ଷଣ ର ଅବଶୁଣ ପାଇଁ ତନ ମନ ଏବଂ ଧନ ର ବ୍ୟୟ କରିବେ । ସୌନ୍ଦର୍ଯ୍ୟ ଏବଂ ଆକର୍ଷଣ ଆପଣଙ୍କ କମଜୋରୀ ରହିବ ।

ଆପଣଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା ର ସ୍ଥାନ ତଥା ରହିବା ସ୍ଥାନ କୁ ସଜେଇ ରଖିବା ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ ସବୁ ବେଳେ ଧନ ର ବ୍ୟୟ କରି ବାକୁ ହେବ । କାରଣ ଆପଣଙ୍କୁ ସୁସଜ୍ଜିତ ପରିବେଶ ରେ ରହିବାକୁ ଭଲ ଲାଗେ । ଆପଣ ବସ୍ତୁ ଆଭୁଷଣ ପ୍ରତି ଶୌକୀନ ରହିବେ । ଧନ ର ସ୍ଥିତି ଆପଣଙ୍କ ଠାକ ରହିବ । ଶାନ୍ତି ବନୀ ରହିବ । ଅନ୍ୟ ବ୍ୟକ୍ତି ମାନେ ଆପଣଙ୍କୁ ସବୁ ବେଳେ ଧନୀ ଭାବୁ ଥିବେ, ଦାହେ ଆପଣ ସତରେ ଗରିବ ହୋଇ ଥାନ୍ତୁ । କୌଣସି ମଧ୍ୟ କଳା ର କ୍ଷେତ୍ର କୁ ଯଦି ଆପଣ ନିଜ ରୋଜଗାର ର କ୍ଷେତ୍ର ଭାବେ ଚୟନ କରନ୍ତି, ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କ ଉନ୍ନତି ନିଶ୍ଚିତ ହିଁ ହେବ ।

ଆପଣଙ୍କ ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ ଓ ଅଟେ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ଭାଗ୍ୟାଙ୍କ ୬ ଅଟେ । ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ ଓ ର ସ୍ୱାମୀ ବୁଧ ଅଟେ, ତଥା ଭାଗ୍ୟାଙ୍କ ୬ ର ସ୍ୱାମୀ ଶୁକ୍ର ଅଟେ । ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ ଓ ଏବଂ ଭାଗ୍ୟାଙ୍କ ୬ ମଧ୍ୟ ରେ ସମ ସମ୍ବନ୍ଧ ଅଛି । ଏହାର ପ୍ରଭାବ ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ-ଭାଗ୍ୟାଙ୍କ ର ମିଶ୍ରିତ ଫଳ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଆପଣ ୬୪ କଳା ମଧ୍ୟ ରୁ କୌଣସି ଏକ କଳା ଦ୍ୱାରା ନିଜର ରୋଜଗାର-ବ୍ୟାପାର ଚଳେଇବେ । ଆପଣଙ୍କୁ ବିଭିନ୍ନ କଳା ରେ ସଫଳତା ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ତଥା ଆପଣ ଏହି କଳା ମାଧ୍ୟମ ରେ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରା ରେ ଧନାର୍ଜନ କରିବେ । ସ୍ୱଭାବ ରେ ଆପଣ କୋମଳ ହୃଦୟ ର ବ୍ୟକ୍ତି ରହିବେ ତଥା ସମାଜ ରେ ଆପଣ ଶୀଘ୍ର ମିଳା ମିଶା ର କଳା ରେ ନିପୁଣ ରହିବେ । ଧନ ସଂଗ୍ରହ ର ଅପେକ୍ଷା ଆପଣ ଭୌତିକ ସୁଖ-ସାଧନ ଉପରେ ଅଧିକ ଧ୍ୟାନ ଦେବେ, ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ସମ୍ପତ୍ତି ଭଲ ଏକତ୍ରିତ ହେବ ଏବଂ ନିଜ କାର୍ଯ୍ୟ ଦ୍ୱାରା ପ୍ରାୟ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଉପଲବ୍ଧି କୁ ଆପଣ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଜୀବନ ର ମଧ୍ୟ ଅବସ୍ଥା ରେ ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ପାୟ ମଜବୁତ ହୋଇ ଚାଲି ଯିବ, ତାହା ଅନ୍ତିମ ଅବସ୍ଥା ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ସ୍ଥାୟୀ ରହିବ । ସମାଜ ରେ ଆପଣଙ୍କ ପର୍ଯ୍ୟାୟ ମାତା ରେ

ମାନ-ସମ୍ମାନ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ଏବଂ ଲୋକେ ଆପଣଙ୍କୁ ଠିକ୍ ସମୟରେ ଉଚିତ ଆଦର ପ୍ରଦାନ କରିବେ ।

ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ ୫ ତଥା ଭାଗ୍ୟାଙ୍କ ୬ ର ପ୍ରଭାବ ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରାରମ୍ଭିକ ଭାଗ୍ୟ ଉଦୟ ୨୪ ବର୍ଷ ର ବୟସରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହେବ ଏବଂ ୩୩ ବର୍ଷ ର ବୟସରେ ଆପଣ ବିଶେଷ ଉନ୍ନତି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ୪୨ ବର୍ଷ ର ବୟସରେ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁଣି ଭାଗ୍ୟ ଉଦୟ ର ଲାଭ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ।

ଆପଣଙ୍କ ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ ୫ ର ମିତ୍ରତା ୩ ଏବଂ ୯ ସହ ହୋଇ ଥାଏ, ତଥା ଭାଗ୍ୟାଙ୍କ ୬ ର ମିତ୍ରତା ୩ ଏବଂ ୯ ସହ ହୋଇ ଥାଏ । ଅତଃ ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନରେ ୩, ୫, ୬, ୯ ଏହି ଅଙ୍କ ବିଶେଷ ଘଟନାକ୍ରମ ବାଲା ରହିବ । ଏହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନରେ କିଛି ବିଶେଷ ଘଟଣା ଘଟିତ ହେବ ।

ଆପଣଙ୍କ ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ଭାଗ୍ୟାଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ସମ ସମ୍ବନ୍ଧ ହେବାର କାରଣ ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ ଏବଂ ଭାଗ୍ୟାଙ୍କର ପ୍ରଭାବ ଦ୍ୱାରା ଅଳ୍ପ ବହୁତ ମାତ୍ରାରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଶୁଭ ଫଳ ମିଳିବ । ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନରେ ପ୍ରମୁଖ ଘଟଣା ଏହି ଅଙ୍କର ଚାରିଖ, ମାସ, ବର୍ଷ କିମ୍ବା ଆୟୁର ବର୍ଷରେ ହିଁ ଘଟିତ ହେବ । ଯଦି କେବେ ଏହି ଅଙ୍କର ଚାରାଖ, ମାସ, ବର୍ଷ ସହିତ ଆପଣଙ୍କ ନିର୍ଧାରିତ ଶୁଭ ଦିନର ମିଳନ ହୋଇ ଥାଏ, ତାହା ହେଲେ ଏପରି ଦିନର ବୟସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବିଶେଷ ଫଳ ଦାୟକ ତଥା କୌଣସି ମଧ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟକୁ ପ୍ରାରମ୍ଭ କରିବା ପାଇଁ, ପତ୍ର ଲେଖିବା ପାଇଁ କିମ୍ବା ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ/ବ୍ୟକ୍ତିଙ୍କ ସହ ମିଶିବା ପାଇଁ ମଧ୍ୟ ଅଧିକ ଉପଯୁକ୍ତ ରହିବ । ଯଦି ଆପଣ ନିଜ ବିଗତ ଜୀବନରେ ଘଟି ଥିବା ଘଟଣାକୁ ନିରୀକ୍ଷଣ କରିବେ, ତାହା ହେଲେ ପାଇବେ କି ପ୍ରାୟ ଘଟଣା ଏହି ଅଙ୍କର ମାସ, ବର୍ଷ କିମ୍ବା ଦିନରେ ହିଁ ଘଟିତ ହୋଇ ଥିବ ।

ଆପଣ ନିଜ ବିଗତ ଜୀବନରେ ଘଟିଥିବା ଘଟଣା ର ଉପଯୁକ୍ତ ସବୁ ଅଙ୍କର ବିଶ୍ଳେଷଣ କରିବା ପରେ ଯେଉଁ ଅଙ୍କ ଆପଣଙ୍କୁ ଅଧିକ ଅନୁକୂଳ ଲାଗି ଥାଏ, ସେହି ଅଙ୍କକୁ ନେଇ ଭଲ ଭାବେ ଭାବୀ ଯୋଜନା ବନେଇବେ, ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅଧିକ ଲାଭପ୍ରଦ ରହିବ ।

ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ମାର୍ଚ୍ଚ, ମଇ, ଜୁନ, ସେପ୍ଟେମ୍ବର ର ମାସ ବିଶେଷ ଲାଭ ଦାୟକ ରହିବ, ତଥା ଆପଣ କୌଣସି ମଧ୍ୟ ନୂଆ କାର୍ଯ୍ୟ ଏପରି ହିଁ ଦିନରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ କରନ୍ତୁ, ଯେବେ ଦିନ, ଚାରିଖ, ମାସ ତଥା ବର୍ଷ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ ତଥା ଭାଗ୍ୟାଙ୍କ ସହ ମେଳ ସ୍ଥାପିତ କରୁ ଥିବ ତଥା ଏକ ହିଁ ସମୟରେ କରିବା ଦ୍ୱାରା ସମସ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ ଶୁଭ ରହିବ ।

ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ ୫ ଏବଂ ଭାଗ୍ୟାଙ୍କ ୬ ର ପ୍ରଭାବ ଦ୍ୱାରା ଏପରି ବର୍ଷ, ଯେଉଁ ବର୍ଷର ଯୋଗ ୩, ୫, ୬, ୯ ହୋଇ ଥାଏ, ସେହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବିଶେଷ ଫଳ ଦାୟକ ରହିବ ।

ଏହି ପରି ଆପଣଙ୍କ ବୟସ ମଧ୍ୟରେ ଏପରି ବର୍ଷ, ଯାହାର ଯୋଗ ୩, ୫, ୬, ୯ ହୋଇ ଥାଏ, ସେହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭ ଫଳ ଦାୟକ ରହିବ ।

- ୩. ୧୨, ୨୧, ୩୦, ୩୯, ୪୮, ୫୭, ୬୬, ୭୫
- ୫. ୧୪, ୨୩, ୩୨, ୪୧, ୫୦, ୫୯, ୬୮
- ୬. ୧୫, ୨୪, ୩୩, ୪୨, ୫୧, ୬୦, ୬୯
- ୯. ୧୮, ୨୭, ୩୬, ୪୫, ୫୪, ୬୩, ୭୨

ଉପଯୁକ୍ତ ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନରେ ପରିବର୍ତ୍ତନଶୀଳ ରହିବ । ଏହି ବର୍ଷରେ କିଛି ବିଶେଷ ଘଟଣା ଘଟିତ ହେବ, ଯାହା ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନରେ ଦଶା ବଦଳାଇବ ତଥା କିଛି ଘଟଣା ସବୁ ଦିନ ପାଇଁ ମନେ ରହି ଯିବ ।



ଅଙ୍କ ଜ୍ୟୋତିଷ ଉପାୟ ବିଚାର

ଅନୁକୂଳ ସମୟ

ବୁଧ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ତାରିଖ ୨୨ ମଇ ରୁ ୨୧ ଜୁନ ଏବଂ ୨୪ ଅଗଷ୍ଟ ରୁ ୨୩ ସେପ୍ଟେମ୍ବର ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ, ପାଞ୍ଚତ୍ୟ ମତ ଅନୁସାରେ ସୂର୍ଯ୍ୟ ମିଥୁନ ଏବଂ କନ୍ୟା ରାଶି ରେ ରହି ଥାଏ ତଥା, ଭାରତୀୟ ମତ ଅନୁସାରେ, ୧୫ ଜୁନ ରୁ ୧୫ ଜୁଲାଇ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଏବଂ ୧୭ ସେପ୍ଟେମ୍ବର ରୁ ୧୬ ଅକଟୋବର ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ସୂର୍ଯ୍ୟ ମିଥୁନ ତଥା କନ୍ୟା ରାଶି ରେ ରହି ଥାଏ । ମିଥୁନ ବୁଧ ର ସ୍ୱରାଶି ତଥା କନ୍ୟା ର ଉଚ୍ଚ ରାଶି ଅଟେ । ଅର୍ଥାତ୍ ଏହି ସମୟ ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ ୫ ପାଇଁ କୌଣସି ମଧ୍ୟ ନୂଆ କାର୍ଯ୍ୟ କିମ୍ବା ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା ପାଇଁ ଅଧିକ ଉପଯୁକ୍ତ ରହି ଥାଏ ।

ଅନୁକୂଳ ଦିବସ

ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ କୌଣସି ମଧ୍ୟ ମାସ ର ବୁଧବାର, ଗୁରୁବାର ଏବଂ ଶୁକ୍ରବାର ଦିନ ବିଶେଷ ଶୁଭ ଫଳ ଦାୟକ ରହିବ । ପଦି ଆପଣଙ୍କ ଅନୁକୂଳ ତାରିଖ ମଧ୍ୟ ରୁ ହିଁ କୌଣସି ତାରାଖ ରେ ବୁଧବାର, ଗୁରୁବାର ଏବଂ ଶୁକ୍ରବାର ପଢ଼ୁ ଥାଏ, ତାହା ହେଲେ ଆପଣ ନିଜର କୌଣସି ମଧ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟ ଏହି ଦିନ ରେ ତଥା ଅନୁକୂଳ ତାରିଖ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ କରନ୍ତୁ, ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭ ରହିବ ।

ଶୁଭ ତାରିଖ

ଆପଣଙ୍କୁ ନିଜର କୌଣସି ବିଶିଷ୍ଟ ବ୍ୟକ୍ତି ଙ୍କ ସହ, ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ଙ୍କ ସହ ମିଶିବା ପାଇଁ ଯିବାକୁ ଥାଏ କିମ୍ବା ପଢ଼ୁ ଲକ୍ଷ୍ୟାଦି ଲେଖିବା ଅଥବା କାହା ସହ ମିଶିବା, କୌଣସି ନୂଆ କାର୍ଯ୍ୟ କିମ୍ବା ବ୍ୟାପାର ଆଦି ପ୍ରାରମ୍ଭ କରିବା ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ କୌଣସି ମଧ୍ୟ ଇଂରାଜୀ ମାସ ର ୩, ୫, ୯, ୧୨, ୧୪, ୧୮, ୨୧, ୨୩, ୨୭ ଏବଂ ୩୦ ତାରିଖ ଅନୁକୂଳ ରହିବ । ଅର୍ଥାତ୍ ଆପଣ ପଦି କୌଣସି କାର୍ଯ୍ୟ ଏହି ତାରିଖ ରେ ହିଁ ପ୍ରାରମ୍ଭ କରନ୍ତୁ, ତାହା ହେଲେ ଅଧିକ ସୁବିଧା ପୁର୍ଣ୍ଣ ଏବଂ ଶୀଘ୍ର ସଫଳ ହେବ ।

ଅଶୁଭ ତାରିଖ

ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ କୌଣସି ମଧ୍ୟ ଇଂରାଜୀ ମାସ ର ୨, ୪, ୧୧, ୧୩, ୨୦, ୨୨, ୨୯ ଏବଂ ୩୧ ତାରିଖ ପ୍ରତିକୂଳ ଅଟେ । ଏହି ତାରିଖ ରେ ରୋଜଗାର-ବ୍ୟାପାର ସମ୍ପନ୍ନା କାର୍ଯ୍ୟ, ପଢ଼ୁ ବ୍ୟବହାର କିମ୍ବା କୌଣସି ମଧ୍ୟ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରାରମ୍ଭ କରିବା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅନୁକୂଳ ରହିବ ନାହିଁ । ଅର୍ଥାତ୍ ଆପଣ ଏହି ତାରିଖ ର ଦୁଷ୍ଟଭାବ ଠାରୁ ବଞ୍ଚନ୍ତୁ ।

ମିତ୍ରତା ଓ ସହଚର

ଆପଣ ଏପରି ବ୍ୟକ୍ତି ଙ୍କ ସହ ମିତ୍ରତା କିମ୍ବା ସାଥୀ ସ୍ଥାପିତ କରନ୍ତୁ, ଯାହାର ଜନ୍ମ ୩, ୫, ୯, ୧୨, ୧୪, ୧୮, ୨୧, ୨୩, ୨୭ ଏବଂ ୩୦ ତାରିଖ ରେ ଅଥବା ତାରିଖ ୧୫ ଜୁନ ରୁ ୧୫ ଜୁଲାଇ ଏବଂ ୧୭ ସେପ୍ଟେମ୍ବର ରୁ ୧୬ ଅକଟୋବର ମଧ୍ୟରେ ହୋଇ ଥିବ । ଏପରି ବ୍ୟକ୍ତି ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅନୁକୂଳ ସହଯୋଗୀ ଏବଂ ବିଶ୍ୱାସପାତ୍ର ଯିବ ହେବେ । ଏହି ପ୍ରକାର ର ବ୍ୟକ୍ତି ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମିତ୍ରତା ସ୍ଥାପନା ଏବଂ ଦୀର୍ଘ ରହିବ ତଥା ରୋଜଗାର, ବ୍ୟବସାୟ, ସାଥୀ ଆଦି ରେ ସହାୟକ ହେବ ।

ପ୍ରେମ ସମ୍ପର୍କ ଏବଂ ବିବାହ

ଆପଣଙ୍କୁ ବିବାହ କିମ୍ବା ପ୍ରେମ ସମ୍ପର୍କ ସ୍ଥାପିତ କରିବା ପାଇଁ ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ ୩, ୫ କିମ୍ବା ୯ ପ୍ରଭାବିତ ମହିଳା ଭଲ ସାଥୀ ଯିବ ହୋଇ ପାରନ୍ତି । ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ ବାଲୀ ମହିଳା ଙ୍କ ସହ ମିତ୍ରତା ଲକ୍ଷ୍ୟାଦି ରଖିବା ଦରକାର କିମ୍ବା ଏପରି ମହିଳା ଯାହାର ଜନ୍ମ କୌଣସି ମଧ୍ୟ ମାସ ର ୩, ୫, ୯, ୧୨, ୧୪, ୧୮, ୨୧, ୨୩, ୨୭ ଏବଂ ୩୦ ତାରିଖ ରେ ହୋଇ ଥିବ, ତାହା ହେଲେ ଏପରି ବିବାହ ପ୍ରତିକୂଳ ଅଟେ ।

ଅନୁକୂଳ ରଙ୍ଗ

ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅଧିକ ଅନୁକୂଳ ରଙ୍ଗ ହୁଏ ଖାକୀ, ଉଜ୍ଜ୍ୱଳ ଧଳା ଅଟେ । ଆପଣ ଯଥା ସମ୍ଭବ ବ୍ରୁଇଙ୍ଗ ରୁମ୍ ରେ ଏହି ରଙ୍ଗ ର ପରଦା, ଚାନ୍ଦର, ଚକିୟା, ପଟି ଆଦି ଉପଯୋଗ କରନ୍ତୁ । ଯଦି ସମ୍ଭବ ହୁଏ, ତାହା ହେଲେ ନିଜ ପାଖରେ ଏହି ରଙ୍ଗ ର ରୁମାଳ ଆପଣ ସବୁ ସମୟ ରେ ରଖନ୍ତୁ । ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଅଶୁଭ ସମୟ ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଏହି ରଙ୍ଗ ର ବସ୍ତ୍ର ପିନ୍ଧିବେ, ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଶୀଘ୍ର ଠିକ ହୋଇ ଯିବ ।

ବସ୍ତ୍ର ଏବଂ ଘର

ଆପଣଙ୍କ ଏପରି ରାଷ୍ଟ୍ର ଦେଶ, ପ୍ରଦେଶ, ସହର, ଗ୍ରାମ, ବଙ୍ଗର, ଘର, କମ୍ପଲେକ୍ସ କିମ୍ବା ପ୍ଲଟ୍ ରେ ନିବାସ କରିବା ଶୁଭ ରହିବ, ଯାହାର ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ କିମ୍ବା ନାମାଙ୍କ ୫ ହୋଇ ଥାଏ । ଉତ୍ତର ଦିଗ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସବୁ ବେଳେ ଶୁଭ ରହିବ । ଅର୍ଥାତ୍ ଆପଣ ନିଜ ସହର ର ଉତ୍ତର କ୍ଷେତ୍ର ରେ କିମ୍ବା ଭବନ ର ଉତ୍ତର କ୍ଷେତ୍ର ରେ ନିବାସ କରନ୍ତୁ । ଆପଣଙ୍କ ବୈଠକ ଉତ୍ତର ଦିଗ ରେ ରହିବା ଲାଭପ୍ରଦ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଉତ୍ତର କ୍ଷେତ୍ର ର ବ୍ୟକ୍ତି, ଉତ୍ତର ଦେଶ, ଉତ୍ତର ସ୍ଥାନ ରେ ଚାକିରୀ, ରୋଜଗାର, ବ୍ୟାପାର କରିବା ଶୁଭ ରହିବ । ପିନ୍ଧିବା ବସ୍ତ୍ର ର ଚୟନ କରିବା ସମୟ ରେ ଖାକୀ, ଚୂନକୀଳା ଧଳା ରଙ୍ଗ ର ସମାବେଶ ଆପଣଙ୍କ ପୋଷାକ ରେ ହେବାର କାରଣ ଆପଣଙ୍କ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ ରେ ସଜ୍ଜ ଆସିବ । ଭବନ, ବାହନ, କାନ୍ଥ, ପରଦା, ଫର୍ନିଚର୍ ଇତ୍ୟାଦି ର ରଙ୍ଗ ମଧ୍ୟ ଯଦି ଆପଣ ଖାକୀ, ଚୂନକୀଳା ଧଳା ରଙ୍ଗ ର ରଖିବେ, ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କ ପାରିବାରିକ ବାତାବରଣ ରେ ଖୁସୀ ବଢ଼ିବ ।

ଶୁଭ ବାହନ

ଯଦି ଆପଣ ବାହନ ଆଦି କ୍ରୟ କରନ୍ତି, ତାହା ହେଲେ ତାହାର ପଞ୍ଜୀକରଣ ପାଇଁ ନମ୍ବର ଆପଣଙ୍କ ନିଜ ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ ତଥା ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ ର ମିତ୍ର ଅଙ୍କ ସହ ମେଳ ରଖିବା ବାଲା ଅଙ୍କ କୁ ନେବା ହିତକର ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ମୂଲ୍ୟାଙ୍କ ୫ ଅଟେ । ଅର୍ଥାତ୍ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅଙ୍କ ୩, ୯ ଭଲ ରହିବ । ଏଥି ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କ ବାହନ ପଞ୍ଜୀକରଣ କ୍ରମାଙ୍କ ର ଯୋଗ ୩ କିମ୍ବା ୯ ରହିବ, ଯାହା ଅଧିକ ଭଲ ରହିବ, ଯେପରି ପଞ୍ଜୀକରଣ କ୍ରମାଙ୍କ ୫୨୩୪ ର ଯୋଗ ୫ ଇତ୍ୟାଦି । ଆପଣଙ୍କ ଯାତ୍ରା ର ବାହନ ଯଦି ଏହି ଅଙ୍କ ୩ କିମ୍ବା ୯ ଅଟେ, ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କ ଯାତ୍ରା ଲାଭପ୍ରଦ ରହିବ । ଯଦି ଆପଣ ହୋଟଲ ରେ ରୁମ୍ ବୁକ୍ କରନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ତାହାର ଉପକା ନମ୍ବର ୧୦୪ ର ଯୋଗ ୫ ଇତ୍ୟାଦି ହୁଏ, ସେହି ରୁମ୍ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ହିତକର ରହିବ ।

ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ତଥା ରୋଗ

ଆପଣଙ୍କ ହୃଦୟ କମଜୋର ରହିବ ତଥା ହୃଦୟ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ କୌଣସି କଷ୍ଟ ଆପଣଙ୍କୁ ଅଧିକ ବୟସ ପରେ ହେବାର ଆଶଙ୍କା ଅଛି । ରକ୍ତ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ରୋଗ ମଧ୍ୟ କେବେ କେବେ ହୋଇ ପାରେ । ବୃଦ୍ଧାବସ୍ଥା ରେ ଚର୍ମ ରୋଗ, ସ୍ନାୟୁ ନିର୍ବଳତା, ମାନସିକ ଚିନ୍ତା, ଦୁର୍ବଳତା, ଶାରୀରିକ କମଜୋରୀ ତଥା ମାନସିକ ଦୁର୍ବଳତା ଆଦି ରୋଗ ର ସମ୍ଭାବନା ରହିବ, ଭକ୍ତ ରୋଗ ରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ସବୁ ସମୟ ରେ ସାବଧାନ ରହିବାକୁ ହେବ । ରୋଗ, କଷ୍ଟ ତଥା ବିପତ୍ତି ର ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ବିଷ୍ଣୁ ଜ୍ଞ ପୂଜା, ପୁଣିମା ବ୍ରତ କରି, କଦଳି ର ଭୋଗ ଲଗାନ୍ତୁ ।

ବ୍ୟବସାୟ

ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଚାର ଏବଂ ଟେଲିଫୋନ ବିଭାଗ, ଜ୍ୟୋତିଷ, ସେଲସମେନ, ଡାକଘର, ପୋଷ୍ଟମେନ, ବୀମା ବିଭାଗ, ବେଙ୍କ, ବଜେଟ୍ ନିର୍ମାଣ, ରେଳ ଇଞ୍ଜିନିୟରୀ, ସମ୍ପାଦକ, ତମାଖୁ ବ୍ୟବସାୟ, ରେଡିଓ ବ୍ୟବସାୟ, ଲେଖକ, ପତ୍ରକାର, ଅନୁବାଦକ, ରାଜନୀତି ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ, ମୁଦ୍ରଣାଳୟ, ସଞ୍ଚାର ବ୍ୟବସାୟ, ପୁସ୍ତକ ବିକ୍ରୋତା, ପୁସ୍ତକାଳୟ, ଲାଇବ୍ରେରିୟନ, ଯାତାୟତ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ, ଇତିହାସ, ଖୋଜ ଏବଂ ପୁରାତତ୍ତ୍ୱ ବିଭାଗ, ଆବିଷ୍କାରକ, ମୁନୀମ, ପର୍ଯ୍ୟଟକ ଏବଂ ବୁଦ୍ଧି ବଳ ର ସମସ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା ଲାଭପ୍ରଦ ରହିବ ।

ବ୍ରତୋପବାସ

ବୁଧବାର ଦିନ ବୁଧ ଅରିଷ୍ଟ ଦୋଷ ନିବାରଣ ପାଇଁ ବ୍ରତ କରନ୍ତୁ । ୪୫ କିମ୍ବା ୧୭ ବୁଧବାର ଏହି ବ୍ରତ କରନ୍ତୁ । ସବୁଜ ରଙ୍ଗ ର କପଡ଼ା ପିନ୍ଧନ୍ତୁ ଏବଂ ସବୁଜ ପଦାର୍ଥ ର ଦାନ କରନ୍ତୁ । ତୁଳସୀ ର ପତ୍ର ଖାଇବା ଏବଂ ଚଢ଼େଇବା ଲାଭପ୍ରଦ ରହି ଥାଏ । ପତ୍ନୀ କିମ୍ବା ମରଗଜ ର ମାଲା ନେଇ ବୁଧ ମନ୍ତ୍ର ର ଜପ କରନ୍ତୁ ।

ଅନୁକୂଳ ରତ୍ନ, ଉପରତ୍ନ

ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ପତ୍ନୀ ଶୁଭ ରତ୍ନ ଅଟେ । ଏହା ଯଦି ନ ମିଳେ, ତାହା ହେଲେ ଉପରତ୍ନ ମରଗଜ, ହୋନେକ୍ସ ଧାରଣ କରନ୍ତୁ । ଏହାକୁ ଆପଣ ସୁନା କିମ୍ବା ରୂପା ର ମୁଦି ରେ ୩ ରୁ ୬ ରତ୍ନ ରେ ବନେଇ କରି, ବୁଧବାର ଦିନ, ଶୁକ୍ଳ ପକ୍ଷ ରେ ଡ଼ାହାଣ ହାତ ର କନିଷ୍ଠା ଆଙ୍ଗୁଳି ରେ, ତୃତୀୟ କୁ ସ୍ପର୍ଶ କଲା ଭଳି ଧାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ଅନୁକୂଳ ଦେବତା

ଆପଣ ବୁଧ ଗ୍ରହ ର ଉପାସନା କରନ୍ତୁ ଅଥବା ଲକ୍ଷ୍ମୀ ନାରାୟଣ ଙ୍କ ଆରାଧନା କରନ୍ତୁ । ଭଗବାନ ଲକ୍ଷ୍ମୀ ନାରାୟଣ ଙ୍କ ଚତୁର୍ଦ୍ଦଶାକ୍ଷରୀ ମନ୍ତ୍ର “ଆମ୍ଭ ଦ୍ରୁଂ ଦ୍ରୁଂ ଶ୍ରୀ ଶ୍ରୀ ଲକ୍ଷ୍ମୀ ବାସୁଦେବୀୟ ନମଃ” ର ପ୍ରତି ଦିନ ଜପ କରନ୍ତୁ । ପ୍ରତିଦିନ କମ ସେ କମ ୪୫ ଶହ ଆଠ ମନ୍ତ୍ର ର ଜପ କରନ୍ତୁ ତଥା ପୂର୍ଣ୍ଣିମା ର ଦିନ ସତ୍ୟନାରାୟଣ କଥା ର ଶ୍ରବଣ କରିବେ, ଏହି କ୍ରିୟା କୁ କରିବା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ବିଭିନ୍ନ ରୋଗ ଏବଂ ସମସ୍ୟା ରୁ ମୁକ୍ତ ହେବେ । ଯଦି ଏହା ସମ୍ଭବ ନ ହୋଇ ପାରେ, ତାହା ହେଲେ ଭଗବାନ ଲକ୍ଷ୍ମୀ ନାରାୟଣ ଙ୍କ ଫେଟୋ କୁ ହିଁ ପ୍ରତି ଦିନ ପ୍ରାତଃ ଦର୍ଶନ କରନ୍ତୁ ।

ଗ୍ରହ ଗାୟତ୍ରୀ ମନ୍ତ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବୁଧ ର ଶୁଭ ପ୍ରଭାବ ର ବୃଦ୍ଧି ପାଇଁ ପ୍ରାତଃ ସ୍ନାନ କରିବା ପରେ ବୁଧ ଙ୍କ ଗାୟତ୍ରୀ ମନ୍ତ୍ର ର ୧୧, ୨୧ କିମ୍ବା ୪୫ ଶହ ଆଠ ଥର ଜପ କରିବା ଲାଭପ୍ରଦ ରହିବ ।

ବୁଧ ଗାୟତ୍ରୀ ମନ୍ତ୍ର - ଓଁ ସୌମ୍ୟରୂପାୟ ବିବ୍ରହ୍ମହେ ବାଣେଶାୟ ଧୀମହି ତୋ ସୌମ୍ୟଃ ପ୍ରଚୋଦୟାତ୍ । ।

ଗ୍ରହ ଧ୍ୟାନ ମନ୍ତ୍ର

ଆପଣ ପ୍ରାତଃ ଉଠି କରି ବୁଧ ଙ୍କ ଧ୍ୟାନ କରନ୍ତୁ, ମନ ରେ ବୁଧ ଙ୍କ ମୂର୍ତ୍ତି ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ କରନ୍ତୁ ଏବଂ ତା ପରେ ନିମ୍ନ ମନ୍ତ୍ର ର ପାଠ କରନ୍ତୁ ।

ପ୍ରିୟଲୁକ୍ଲିକାଶ୍ୟାମଂ ରୂପେଣାପ୍ରତିମଂ ବୁଧମ୍ ।

ସୌମ୍ୟଂ ସୌମ୍ୟଗୁଣୋପେତଂ ତଂ ବୁଧଂ ପ୍ରଣମାମ୍ୟହମ୍ । ।

ଗ୍ରହ ଜପ ମନ୍ତ୍ର

ଅଶୁଭ ବୁଧ କୁ ଅନୁକୂଳ ବନେଇବା ପାଇଁ ବୁଧ ଙ୍କ ମନ୍ତ୍ର ର ଜପ କରିବା ଦରକାର । ପ୍ରତି ଦିନ କମ ସେ କମ ୪୫ ମାଲା, ୪୫ ଶହ ଆଠ ଥର ଜପ କରିବା ଦ୍ୱାରା ବାଞ୍ଛିତ ଲାଭ ମିଳି ଥାଏ । ପୁରା ଅନୁଷ୍ଠାନ ୯୦ ମାଲା ର ହୋଇ ଥାଏ । ମନ୍ତ୍ର ଜପ ର ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ ଫଳ ଆପଣ ନିଜେ ଦେଖି ପାରିବେ ।

ଓଁ ବ୍ରାଁ ବ୍ରୀଂ ବ୍ରୌଂ ସଃ ବୁଧାୟ ନମଃ । । ଜପ ସଂଖ୍ୟା ୯୦୦୦ । ।

ବନଞ୍ଚି ଧାରଣ

ଆପଣ ବୁଧବାର ଦିନ ଏକ ଇଞ୍ଚ ଲମ୍ବା ବିଧାରା ର ଚେର କୁ ଆଣି, ସବୁଜ ସୁତା ରେ ଗୁଡ଼େଇ, ଡାହାଣ ହାତ ରେ ବାନ୍ଧନ୍ତୁ କିମ୍ବା ସୁନା କିମ୍ବା ରୂପା ର ଡାକ୍ତାରେ ଭରି କରି ବେକ ରେ ଧାରଣ କରନ୍ତୁ । ଏହା ଦ୍ୱାରା ବୁଧ ଗ୍ରହ ର ଅଶୁଭ ପ୍ରଭାବ କମ ହେବ ତଥା ଶୁଭ ପ୍ରଭାବ ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ ।

ବନଞ୍ଚି ସ୍ନାନ

ଆପଣ ପ୍ରତ୍ୟେକ ବୁଧବାର ଦିନ ଏକ ବାଲଟୀ କିମ୍ବା ହାଣ୍ଡି ରେ ହରଡ଼, ବାହାଡ଼ା, ଗୋମୟ, ଡାଉଳ, ଗୋରୋଡ଼ନ, ସୁଣ୍ଠ, ଅଁଅଳା ଏବଂ ମଧୁ ଆଦି ଔଷଧ କୁ ଗୁଣ୍ଠ କରି, ପାଣି ରେ ମିଶେଇ ସ୍ନାନ କରିବା ଦ୍ୱାରା ସବୁ ପ୍ରକାର ର ରୋଗ ରୁ ମୁକ୍ତିପାୟକ ହୋଇ ଥାଏ । ହର୍ବଲ ସ୍ନାନ ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ଚିତ୍ତ ର କ୍ରାନ୍ତି ରେ ବୃଦ୍ଧି ହୋଇ ଥାଏ । ଅଶୁଭ ବୁଧ ଙ୍କ ପ୍ରଭାବ କ୍ଷୀଣ ହୋଇ ଆପଣଙ୍କ ଭଲ ପ୍ରଭାବ ରେ ବାଞ୍ଛିତ ଲାଭ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ସବୁ ଗ୍ରହ ର ଶାନ୍ତି ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ କୁଠ୍, ଖିଲ୍ଲା, କାଙ୍ଗନୀ, ସୋରିଷ, ଦେବଦାରୁ, ହଳଦୀ, ସର୍ବୋଷଧି ତଥା ଲୋଧ, ଏହି ସବୁ କୁ ମିଶେଇ ଗୁଣ୍ଠ କରି, କୌଣସି ତୀର୍ଥ ର ପାଣି ରେ ମିଶେଇ, ଭଗବାନ ଙ୍କ ସ୍ମରଣ କରି ସ୍ନାନ କରନ୍ତୁ, ତାହା ହେଲେ ଗ୍ରହ ର ଶାନ୍ତି ଏବଂ ସୁଖ-ସମୃଦ୍ଧି ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ।

ଦାନ ପଦାର୍ଥ

ବୁଧ ର ଶାନ୍ତି ପାଇଁ ଯୋଗ୍ୟ ବ୍ୟକ୍ତି ଙ୍କୁ ବୁଧ ର ପଦାର୍ଥ କଂସା, ହାତୀ ଦାନ୍ତ, ସବୁଜ ବସ୍ତ୍ର, ମୁଖା, ପନ୍ନା, ସୁବର୍ଣ୍ଣ, କର୍ପୂର, ଶାସ୍ତ୍ର, ଫଳ, ଭୋଜନ, ଘୃତ, ସର୍ବ ପୁଷ୍ଟ ଆଦି ର ଦାନ କରିବା ଲାଭପ୍ରଦ ରହିବ ।

ଘୃତ

ବୁଧ କୁ ଅନୁକୂଳ ବନେଇ ରଖିବା ପାଇଁ ବୁଧ ଯନ୍ତ୍ର କୁ ଭୋଜ ପତ୍ର ଉପରେ ଅଷ୍ଟଗଣ (କେଶର, କର୍ପୂର, ଅଗର, ଚଂଗର, କସ୍ତୁରୀ, ଅମ୍ବର, ଧଳା ଚନ୍ଦନ ଏବଂ ରକ୍ତ ଚନ୍ଦନ କିମ୍ବା ଶ୍ୱେତ ଚନ୍ଦନ) ସାହାରେ ଲେଖି କରି, ସୁନା କିମ୍ବା ତମ୍ବା ର ଡାକ୍ତାରେ, ଧୂପ-ଦୀପ ଦ୍ୱାରା ପୂଜା କରି, ସୁନା ର ଚେନ୍ କିମ୍ବା ହଳଦିଆ ସୁତା ରେ, ବୁଧବାର ଦିନ ଶୁକ୍ଳ ପକ୍ଷ ରେ, ପ୍ରାତଃ କାଳ ରେ ଧାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ଲଗ୍ନ ପଞ୍ଜି

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟକୁ ମାନ ଉଦୀୟମାନ ଲଗ୍ନ କନ୍ୟା ନବମାଂଶ ଓ ମୀନ ଦ୍ଵେଷାଣ ସହିତ ଉତ୍ତର ଭାଦ୍ରପଦ ନକ୍ଷତ୍ର ର ଦ୍ଵୀତୀୟ ପାଦରେ ଉଦୀୟମାନ ଯିବାରୁ ସୁତୀତ ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନରେ ସୁଖ ସଂଭୋଗ ଓ ଧନ ସମ୍ପଦ ପ୍ରଚୁର ରହିଛି । ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସମସ୍ତ ସୁଯୋଗ ଅନୁକୂଳରେ ଯିବାରୁ ତାର ସର୍ବ ବ୍ୟବହାର ଓ କୃତକାର୍ଯ୍ୟ ହେବା ଆପଣଙ୍କ ଉପରେ ନିର୍ଭର କରୁଛି ।

ସମସ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ ଆପଣଙ୍କର ସମର୍ପିତ ଭାବରେ କରିବା ଉଚିତ, କାରଣ ଆପଣ ଯୌନତାକୁ ଅଧିକ ପ୍ରାଧାନ୍ୟ ଦେବେ । ଯଦି ଅସତର୍କ ରହିବେ ଏହା ଆପଣଙ୍କୁ ଜଟୀଳ ସମସ୍ୟାର ସମ୍ମୁଖୀନ କରାଇପାରେ । ନିଜ ଇଚ୍ଛାକୁ ନିୟନ୍ତ୍ରଣରେ ରଖିବାକୁ ହେବ- ନଚେତ୍ ଆପଣଙ୍କ ପାରିବାରିକ ଜୀବନ ବିଘ୍ନିତ ହେବ, ଚିନ୍ତିତ ରହିବେ ଏବଂ କ୍ଷତି ଗ୍ରସ୍ତ ହେବେ । ଏଇ ଲୋଭ ସମ୍ବରଣ କରି ପାରିଲେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରଗତି ହେବ, ଅନେକ ଧନ ଉପାର୍ଜନ କରିବେ ।

ଆପଣଙ୍କର ଏକ ସୁଖୀ ପରିବାର ହେବ । କୁଳ ଓ ସାମାଜିକ ଅନୁଷ୍ଠାନର ସଦସ୍ୟ ହୋଇ ଅନେକ ବନ୍ଧୁ ବାନ୍ଧବ ପାଇବେ । ସତ୍ୟତା ଓ ଅତିଥି ପରାୟଣ ପାଇଁ ଖୁବ୍ ଜନପ୍ରିୟ ହେବେ । କିନ୍ତୁ ଅନ୍ୟ ଉପରେ ଅଧିକ ନିର୍ଭର କରିବା ଯୋଗୁଁ ଅସୁବିଧାରେ ପଡ଼ି ପାରନ୍ତି । ଖୁବ୍ ନିଜ ଲୋକ ବୋଲି ଯାହାକୁ ଭାବୁ ଥିଲେ ସେ ମଧ୍ୟ ପ୍ରୟୋଜନ ବେଳେ ଠକି ଦେଇ ପାରେ ।

ଯଦି ଆପଣ ସର୍ବ ମାର୍ଗରେ ପରିଚାଳିତ ହୁଅନ୍ତି ତାହେଲେ ପରିବାରର ସଦସ୍ୟ ଗଣ ଓ ସାଧାରଣ ଲୋକେ ଆପଣଙ୍କ ଉଦାହରଣ ଓ ଦାନଶୀଳତାର ପ୍ରଶଂସା କରିବେ ।

ଧର୍ମ କର୍ମ ପ୍ରତି ମନ ଦେବେ ଓ ବୟସ ବୃଦ୍ଧି ସଙ୍ଗେ ସଙ୍ଗେ ଅନେକ ତୀର୍ଥ ସ୍ଥାନ ଭ୍ରମଣ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଧାର୍ମିକ ମନୋବୃତ୍ତି ଯୋଗୁଁ ଦର୍ଶନ ଓ ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ବିଜ୍ଞାନ ପ୍ରତି ଅଧିକ ରୁଚି ରଖିବେ । ଇଚ୍ଛା କଲେ ଜଣେ ଧର୍ମ ପ୍ରବର୍ତ୍ତକ ମଧ୍ୟ ହୋଇ ପାରନ୍ତି ।

ଗୁରୁ, ମଙ୍ଗଳ ଓ ରବିବାର ଆପଣଙ୍କ ପସନ୍ଦର ଦିନ । ଅନ୍ୟ ଦିନ ଗୁଡ଼ିକ ସାଧାରଣ । ୧, ୩, ୪, ୯ ସଂଖ୍ୟା ଉପରେ ବିଶ୍ଵାସ ରଖି ପାରନ୍ତି । କିନ୍ତୁ ୮ ସଂଖ୍ୟା ଉପରେ ଭରସା ନ ରଖିବା ଭଲ ।

ହଳଦିଆ, ଲାଲ, ଗୋଲାପୀ ଏବଂ କମଳା ରଙ୍ଗ ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଶୁଭ । କିନ୍ତୁ ନୀଳ ରଙ୍ଗ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଆଦୌ ଉପଯୁକ୍ତ ନୁହେଁ ।

ଗ୍ରହ ପଳ

ସୂର୍ଯ୍ୟ

ବାରହବେଂ ଭାବ ମେଂ ସୂର୍ଯ୍ୟ ହୋ ତୋ ଜାତକ ବାମ ନେତ୍ର ତଥା ମସ୍ତକ ରୋଗୀ ,ଆଲସୀ, ଉଦାସୀନ, ପରଦେ ଶବାସୀ, ମିତ୍ର-ଦ୍ୱେଷୀ ଏବଂ କୃଶ ଶରୀର ହୋତା ହେ ।

କମ୍ପୁ ରାଶି ମେଂ ରବି ହୋ ତୋ ଜାତକ ସ୍ଥିରଚିତ୍ତ, ସ୍ୱାର୍ଥୀ, କାର୍ଯ୍ୟଦକ୍ଷ, କ୍ରୋଧୀ, ଦୁଃଖୀ, ନିର୍ଧନ, ଅଜ୍ଞା ଜ୍ୟୋତିଷୀ ଏବଂ ମଧ୍ୟ ଅବସ୍ଥା କେ ପଶ୍ଚାତ୍ ସନ୍ତୋଷ ଲେନେ ବାଲା ହୋତା ହେ ।

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଦ୍ୱାଦଶ ଭାବରେ ସ୍ଥିତ ଅଛି । ଅର୍ଥାତ୍ ଆପଣଙ୍କ ପିତା ଜ୍ଞ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ସାମାନ୍ୟ ରୂପରେ ଭଲ ରହିବ ଏବଂ ବେଳେ ବେଳେ ଶାରୀରିକ ଅସୁସ୍ଥତା ମଧ୍ୟ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ତାଙ୍କ ମନରେ ସ୍ନେହ ର ଭାବ ରହିବ । ଧନ ସମ୍ପତ୍ତିରେ ସେ ପ୍ରାୟଶ୍ଚୟ ଯୁକ୍ତ ହିଁ ରହିବେ ଏବଂ ଜୀବନରେ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟରେ ଆପଣଙ୍କୁ ନିତ୍ୟ ନିଜର ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରୁଥିବେ । ଦାନଶୀଳତା ର ପ୍ରବୃତ୍ତିରେ ସେ ଯୁକ୍ତ ରହିବେ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କୁ ମଧ୍ୟ ପୁଣ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟକୁ କରିବାରେ ନିତ୍ୟ ପ୍ରେରଣା ପ୍ରଦାନ କରୁଥିବେ ।

ଆପଣଙ୍କ ମଧ୍ୟ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ମନରେ ପୁଣ୍ୟ ଆଦର ର ଭାବ ରହିବ ଏବଂ ସମୟ ଅନୁସାରେ ତାଙ୍କର ଆଜ୍ଞାକୁ ଆପଣ ଅନୁଯାୟୀ କରୁଥିବେ । ଆପଣଙ୍କ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଭଲ ରହିବ ପରସ୍ପର ବେଳେ ବେଳେ ମଝିରେ ସୈଦ୍ଧାନ୍ତିକ ମତଭେଦ ମଧ୍ୟ ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣରେ ତନାବ କିମ୍ବା କରୁତା ଆସିବ କିନ୍ତୁ କିଛି ସମୟ ପରେ ଆପେ ଆପେ ହିଁ ସବୁ କିଛି ଠିକ୍ ହୋଇଯିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଜୀବନରେ ସବୁ ବେଳେ ତାଙ୍କର ସହଯୋଗ ଏବଂ ସହାୟତା କରିବା ପାଇଁ ସର୍ବଦା ତପ୍ତ ରହିବେ ଏବଂ ତାଙ୍କୁ କୌଣସି ମଧ୍ୟ ପ୍ରକାରର କଷ୍ଟ ହେବାକୁ ଦେବେ ନାହିଁ । ତଥା ସମୟ ଅନୁସାରେ ଆର୍ଥିକ କିମ୍ବା ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାରର ବାଞ୍ଛିତ ସହଯୋଗ ମଧ୍ୟ ପ୍ରଦାନ କରିବେ ।

ଚନ୍ଦ୍ର

ଦ୍ୱିତୀୟଭାବ ମେଂ ଚନ୍ଦ୍ରମା ହୋ ତୋ ଜାତକ ପରଦେଶବାସୀ, ଭୋଗୀ, ସୁନ୍ଦର ମଧୁରଭାଷୀ, ଭାଗ୍ୟବାନ୍, ସହନଶୀଳ ଏବଂ ଶାନ୍ତିପ୍ରିୟ ହୋତା ହେ ।

ମେଷ ରାଶି ମେଂ ଚନ୍ଦ୍ରମା ହୋ ତୋ ଜାତକ ସ୍ଥିର ସ-ଭିବାନ୍, ଶୂର, ଦୃଢ଼ ଶରୀରବାଲା, ବନ୍ଧୁହୀନ, କାମୀ, ଉଦାସୀନ, ଜଳଭୀରୁ, ଯାତ୍ରା କରନେ କା ଶୈଳୀକାମୀ ,ଆତ୍ମାଭିମାନୀ ଏବଂ ସାହସୀ ହୋତା ହେ ।

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ଚନ୍ଦ୍ରମା ଦ୍ୱିତୀୟ ଭାବରେ ସ୍ଥିତ ଅଛି । ଅର୍ଥାତ୍ ଆପଣଙ୍କ ମାତା ଜ୍ଞ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ଏବଂ କୌଣସି ବିଶେଷ ଶାରୀରିକ ରୁଗଣତା ରହିବ ନାହିଁ । ସେ ଆପଣଙ୍କୁ ସବୁ ବେଳେ ଧନାର୍ଜନ ଏବଂ ବିଦ୍ୟାଧ୍ୟୟନ ସମ୍ପନ୍ନା କାର୍ଯ୍ୟରେ ପୁଣ୍ୟ ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ପାରିବାରିକ ଉନ୍ନତି ଏବଂ ପାଳନ କରିବାରେ ମଧ୍ୟ ତାଙ୍କର ମୁଖ୍ୟ ଭୂମିକା ରହିବ । ବେଳେ ବେଳେ ସେ ଆପଣଙ୍କୁ ନୈତିକ ଶିକ୍ଷା ମଧ୍ୟ ଦେବେ ତଥା ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ତାଙ୍କ ହୃଦୟରେ ପୁଣ୍ୟ ବାସ୍ତବ୍ୟ ର ଭାବ ରହିବ । ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ଜୀବନରେ ଅନେକ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟର ସିଦ୍ଧି ଆପଣ ତାଙ୍କ ସହଯୋଗ ଦ୍ୱାରା ହିଁ କରିବେ ।

ଆପଣଙ୍କ ମଧ୍ୟ ମାତା ଜ୍ଞ ପ୍ରତି ହାର୍ଦ୍ଦିକ ଶ୍ରଦ୍ଧା ରହିବ ଏବଂ ତାଙ୍କର ଆଜ୍ଞା ପାଳନ କରିବାରେ ଆପଣ ଗୌରବ ର ଅନୁଭୂତି କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଜୀବନରେ ସର୍ବ ପ୍ରକାରର ତାଙ୍କର ସେବା କରିବାକୁ ଆପଣ ନିଜର କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ବୁଝିବେ ତଥା ସମୟାନୁସାରେ ତାଙ୍କୁ ଆର୍ଥିକ ସହଯୋଗ ମଧ୍ୟ ପ୍ରଦାନ କରୁଥିବେ । ଅର୍ଥାତ୍ ଆପଣଙ୍କ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ମଧୁର ରହିବ ଏବଂ ଜୀବନରେ ଜଣେ ଅନ୍ୟର ସହାୟତା ଏବଂ ସହଯୋଗର ଆଦାନ ପ୍ରଦାନ କରି ସୁଖାନୁଭୂତି କରିବେ ।

ମଙ୍ଗଳ

ଦ୍ଵିତୀୟ ଭାବ ମେଂ ମଙ୍ଗଳ ହୋ ତୋ ଜାତକ କରୁଭାଷୀ, ନେତ୍ରକର୍ଣ ରୋଗୀ, କରୁତିକ୍ତ ରସପ୍ରିୟ, ଧର୍ମପ୍ରେମୀ, ଡୋର ସେ ଭକ୍ତି, କୁଟୁମ୍ବ କ୍ଳେଶ ବାଲା, ପଶୁପାଲକ, ନିର୍ବୁଦ୍ଧି ଏବଂ ନିର୍ଧନ ହୋତା ହେ ।

ମେଷ ରାଶି ମେଂ ମଙ୍ଗଳ ହୋ ତୋ ଜାତକ ସତ୍ୟବକ୍ତା, ତେଜସ୍ଵୀ, ଶୁଭବୀର, ନେତା, ସାହସୀ, ଧନବାନ୍, ଲୋକମାନସ, ଦାନୀ ଏବଂ ରାଜମାନସ ହୋତା ହେ ।

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟ ରେ ମଙ୍ଗଳ ଦ୍ଵିତୀୟ ଭାବ ରେ ସ୍ଥିତ ଅଛି । ଅର୍ଥାତ ଆପଣଙ୍କ ଭାଇ ଭଉଣୀ ଙ୍କ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ମଧ୍ୟମ ରହିବ ଏବଂ ବେଳେ ବେଳେ ସେ ଶାରୀରିକ ରୂପେ ବ୍ୟାକୁଳତା ର ଅନୁଭୂତି ମଧ୍ୟ କରୁ ଥିବେ । ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ତାଙ୍କ ମନ ରେ ପୁଣି ସ୍ନେହ ଭାବ ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ । ଧନାର୍ଜନ ଏବଂ ବିଦ୍ୟାର୍ଜନ ସମ୍ବନ୍ଧୀ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ସେ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁଣି ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଜୀବନ ରେ ଅନ୍ୟ ମହତ୍ତ୍ଵପୁର୍ଣ୍ଣ ଏବଂ ଶୁଭ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ତାଙ୍କର ପୁଣି ସହଯୋଗ ଏବଂ ସଦ୍ଭାବ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ।

ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ମଧ୍ୟ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ପୁଣି ସ୍ନେହ ର ଭାବନା ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ସମ୍ବନ୍ଧ ମଧୁର ହେବ ପରନ୍ତୁ ବେଳେ ବେଳେ ସେଥିରେ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ମତଭେଦ ର କାରଣ ଅନିଶ୍ଚିତ ସମୟ ପାଇଁ କରୁତା କିମ୍ବା ତନାବ ର ବାତାବରଣ ହେବ । ଜୀବନ ରେ ଆପଣ ସବୁ ବେଳେ ଭାଇ ଭଉଣୀ ଙ୍କ ସୁଖ ଦୁଃଖ ରେ ଧ୍ୟାନ ରଖିବେ ତଥା ନିଜ ଆତ୍ମ ସବୁ ବେଳେ ତାଙ୍କୁ ପୁଣି ଆର୍ଥିକ ଏବଂ ଅନ୍ୟ ରୂପ ରେ ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରୁ ଥିବେ ।

ବୁଧ

ବାରହବେଂ ଭାବ ମେଂ ବୁଧ ହୋ ତୋ ଜାତକ ଅଳ୍ପଭାଷୀ, ବିଦ୍ଵାନ୍, ଆଲସୀ ଧର୍ମାର୍ଥୀ, ବକୀଲ, ସୁନ୍ଦର, ବେଦାନ୍ତୀ, ଲେଖକ, ଦାନୀ ଏବଂ ଶାସ୍ତ୍ରଜ୍ଞ ହୋତା ହେ ।

କୁମ୍ଭ ରାଶି ମେଂ ବୁଧ ହୋ ତୋ ଜାତକ କୁଟୁମ୍ବଦ୍ଵୀନ, ଦୁଃଖୀ, ଅଲ୍ପଧନୀ, ଝଗଡ଼ାଲୁ, ପ୍ରସିଦ୍ଧ ନିର୍ବଳ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ଏବଂ ପ୍ରଗତି କରନେ ବାଲା ହୋତା ହେ ।

ଗୁରୁ

ଲଗ୍ନ (ପ୍ରଥମ) ମେଂ ଗୁରୁ ହୋ ତୋ ଜାତକ ବିଦ୍ଵାନ୍ ଦୀର୍ଘାୟୁ, ଜ୍ୟୋତିଷୀ କାର୍ଯ୍ୟପରାୟଣ, ଲୋକସେବକ, ତେଜସ୍ଵୀ, ପ୍ର ଚିକ୍ଷିତ, ସ୍ଵଚ୍ଛବକ୍ତା, ସ୍ଵାଭିମାନୀ, ସୁନ୍ଦର, ସୁଖୀ, ବିନୀତ, ପୁତ୍ରବାନ୍ ଧନବାନ୍, ରାଜ୍ୟମାନ, ସୁନ୍ଦର ଏବଂ ଧର୍ମାର୍ଥୀ ହୋତା ହେ ।

ମୀନ ରାଶି ମେଂ ଗୁରୁ ହୋ ତୋ ଜାତକ ଲେଖକ, ଶାସ୍ତ୍ରଜ୍ଞ, ଗର୍ବହୀନ, ରାଜମାନସ, ଶାନ୍ତ, ବ୍ୟବହାର କୁଶଳ, ଦୟାଲୁ, ସାହିତ୍ୟ ପ୍ରେମୀ, ବିରାସତ ମେଂ ଧନ ସ-ଭି ପ୍ରାପ୍ତ କରନେ ବାଲା, ସାହସୀ ଏବଂ ଭଜପଦ ପର ଆସୀନ ହୋତା ହେ ।

ଶୁକ୍ର

ଗ୍ୟାହବେଂ ଭାବ ମେଂ ଶୁକ୍ର ହୋ ତୋ ଜାତକ ପରୋପକାରୀ, ଲୋକପ୍ରିୟ, ଜୈହରୀ, ବିଲାସୀ, ବାହନସୁଖୀ, ସ୍ଥିରଲକ୍ଷ୍ମୀବାନ୍, ଧନବାନ୍ ଗୁଣଜ୍ଞ, କାମୀ ଏବଂ ପୁତ୍ରବାନ୍ ହୋତା ହେ ।

ମକର ରାଶି ମେଂ ଶୁକ୍ର ହୋ ତୋ ଜାତକ ବଲ୍ଲହୀନ, କୃପଣ, ?ଦୟାରୋଗୀ, ଦୁଃଖୀ, ମାନୀ, ନୀଚ ଜାତି କୀ ସ୍ତ୍ରୀୟେ ମେଂ ରୁଚି, ସିଦ୍ଧାନ୍ତହୀନ ଏବଂ ଅନୈତିକ ଚରିତ୍ର ହୋତା ହେ ।

ଶନି

ନବମ ଭାବ ମେ ଶନି ହୋ ତୋ ଜାତକ ଧର୍ମାତ୍ମା, ସାହସୀ, ପ୍ରବାସୀ, କୃଷଦେହୀ, ଭୀରୁ, ଭ୍ରାତୃହୀନ, ଶତ୍ରୁନାଶକ ରୋଗୀ ବାତରୋଗୀ, ଭ୍ରମଣଶୀଳ ଏବଂ ବାଡ଼ାଲ ହୋତା ହେ ।

ବୃଷ୍ଟିକ ରାଶି ମେ ଶନି ହୋ ତୋ ଜାତକ ସଂକୀର୍ଣ୍ଣ ବିଚାରୋ ବାଲା, ହିଂସକ, କଠୋର?ଦୟା, ଉତାବଲା, କମଜୋର ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ, ବୁରୀ ଆଦତେ, ଦୁଃଖୀ, ବିଷ ସେ ଖତରା, ନିର୍ଧନ ସ୍ତ୍ରୀହୀନ, କ୍ରୋଧୀ, କଠୋର ଏବଂ ଲୋଭୀ ହୋତା ହେ ।

ରାହୁ

ଲଗ୍ନ (ପ୍ରଥମ) ମେ ରାହୁ ହୋ ତୋ ଜାତକ କାମୀ, ଦୁର୍ବଳ, ମନସ୍ତୀ, ଅଳ୍ପସନ୍ତତି ଯୁକ୍ତ, ରାଜଦୃଷ୍ଟୀ, ନୀଚକର୍ମରତ ଦୁଷ୍ଟ ପ୍ରକରୋଗୀ, ସ୍ୱାର୍ଥୀ ଏବଂ ବାତ-ବାତ ପର ସନ୍ଦେହ କରନେ ବାଲା ହୋତା ହେ ।

ମୀନ ରାଶି ମେ ରାହୁ ହୋ ତୋ ଜାତକ ଆତ୍ରିକ, କୁଲୀନ, ଶାନ୍ତ, କଳାପ୍ରିୟ ଓର ଦକ୍ଷ ହୋତା ହେ ।

କେତୁ

ସପ୍ତମ ଭାବ ମେ କେତୁ ହୋ ତୋ ଜାତକ ମତିମନ୍ଦ, ମୂର୍ଖ, ଦୁଖଦ ବିବାହିତ ଜୀବନ, ପତି-ପତ୍ନୀ ମେ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ବିଚ୍ଛେଦ, ଶତ୍ରୁଭୀରୁ ଏବଂ ସୁଖହୀନ ହୋତା ହେ ।

କନ୍ୟା ରାଶି ମେ କେତୁ ହୋ ତୋ ଜାତକ ସଦାରୋଗୀ, ମୂର୍ଖ, ମନ୍ଦାଗ୍ନିରୋଗ ଏବଂ ବ୍ୟର୍ଥବାଦୀ ହୋତା ହେ ।

ଶାରୀରିକ ଗଠନ, ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱ ଏବଂ ପ୍ରକୃତି

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ମୀନ ଲଗ୍ନରେ ହୋଇଛି ଅର୍ଥାତ ଶାରୀରିକ ରୂପେ ଆପଣ ସାମାନ୍ୟତଃ ସୁସ୍ଥ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରକୃତି ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ସରଳ ହେବ ତଥା ସମାନତାର ପ୍ରତୀକ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ମୁଖରେ ସର୍ବଦା ସୋମ୍ୟତାର ଭାବ ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ । ଆପଣ ଏକ ବିଦ୍ୱାନ ପୁରୁଷ ହେବେ ତଥା ନୁଆ ବିଦ୍ୱାରକୁ ସୃଜନ କରିବାରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଏଥିରେ ଆପଣଙ୍କୁ ସଫଳତା ତଥା ସମ୍ମାନ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ବିଦ୍ୱାର ଅନ୍ୟ ଲୋକଙ୍କ ପ୍ରତି ଶୀଘ୍ର ହିଁ ପ୍ରଭାବ ହେବ ତଥା ସେମାନେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପ୍ରଭାବିତ ହୋଇଯିବେ ଫଳରେ ସମାଜରେ ଆପଣ ପୁଣି ମାନ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଅର୍ଜିତ କରିବାରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ସାହିତ୍ୟ ଏବଂ ସଙ୍ଗୀତ ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ଆକର୍ଷଣ ରହିବ ତଥା ଏହି କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣ ସଫଳ ମଧ୍ୟ ହୋଇପାରନ୍ତି । ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରକୃତି ଭୋଗୀ ରହିବ ତଥା ସାଂସାରିକ ସୁଖର ଉପଭୋଗ କରିବେ ତଥା ଭୌତିକ ସୁଖ ସଂସ୍ଥାପନରେ ମଧ୍ୟ ଯୁକ୍ତ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱର ପ୍ରମୁଖ ବିଶେଷତା ଏହା ରହିବ କି ଆପଣ କେବେ ମଧ୍ୟ ନିଜ ସ୍ୱାର୍ଥ ପାଇଁ ଅନ୍ୟର ଅନ୍ୟାୟ କରିବେ ନାହିଁ ତଥା ନିଜ ଅଧିକାରକୁ ଦୁରୁପଯୋଗ ମଧ୍ୟ କରିବେ ନାହିଁ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣ କ୍ରୋଧିତ ମଧ୍ୟ ଶୀଘ୍ର ହେବେ ନାହିଁ କିନ୍ତୁ ଯଦି ଥରେ ରାଗି ଯାଆନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ଶାନ୍ତ ମଧ୍ୟ ଶୀଘ୍ର ହେବେ ନାହିଁ । ଧନ ପ୍ରାପ୍ତି ପାଇଁ ଆପଣ ଅନେକ କାର୍ଯ୍ୟକୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ ତଥା ସେଥିରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଲାଭ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ତଥା ଧନ ଶୈଶ୍ୱର୍ଯ୍ୟ ଏବଂ ବୈଭବରେ ସୁସମ୍ପନ୍ନ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ଚିତ୍ତିତ ଏବଂ ମନଶୀଳ ବ୍ୟକ୍ତି ଅଟନ୍ତି ତଥା ନିଜର ଅଧିକାଂଶ ସମୟ ଏ ଥିରେ ବ୍ୟତୀତ କରିବେ ।

ପ୍ରାକୃତିକ ଦୃଶ୍ୟ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ଆକର୍ଷଣ ରହିବ ତଥା ଏହାକୁ ଦେଖି ଆପଣଙ୍କୁ ଅତ୍ୟଧିକ ପ୍ରସନ୍ନତା ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଦାନ ଦୁଃଖୀଙ୍କ ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ମନରେ ପୁଣି ସମ୍ମାନ ତଥା ସହାନୁଭୂତିର ଭାବନା ରହିବ । ଏପରି ଆପଣ ପ୍ରକୃତି ଏବଂ ପୁରୁଷ ପ୍ରେମୀ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରେମ ମଧ୍ୟ ସରଳ ଏବଂ ଭାବୁକତାରେ ଯୁକ୍ତ ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ସ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନରେ ପୁଣି ଆକର୍ଷଣ ରହିବ ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣ ପରାଜିତ ରହିବେ ତଥା ତାଙ୍କ ଅନୁସାରେ ଆଡ଼ରଣ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଚର୍ଚ୍ଚ ଶକ୍ତି ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ପ୍ରବଳ ହେବ ତଥା ସମସ୍ତ ଲୋକେ ଆପଣଙ୍କ ଚର୍ଚ୍ଚରେ ସହମତ ରହିବେ । ବୁଦ୍ଧି ଆଦି ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ମନରେ ଜିଜ୍ଞାସା ରହିବ ତଥା ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକତା ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କର ସମ୍ମାନ ରହିବ ତଥା ଏହି କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣଙ୍କୁ କୌଣସି ବିଶିଷ୍ଟ ଉପଲବ୍ଧି ମଧ୍ୟ ମିଳିପାରେ । ସମୟାନୁସାରେ ଆପଣ ଭୌତିକତା ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆକର୍ଷିତ ରହିବେ ତଥା ସୁଖୋପଭୋଗ କରିବାରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ମିତ୍ର ଏବଂ ସମ୍ପର୍କୀୟ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମଧୁର ସମ୍ପର୍କ ରହିବ ତଥା ତାଙ୍କୁ ନିଜ ଆଡ଼ରୁ ପୁଣି ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ଆପଣ ଏକ ବ୍ୟବହାର କୁଶଳ ବ୍ୟକ୍ତି ଅଟନ୍ତି ତଥା ସମସ୍ତ ଲୋକେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ସହମତ ରହିବେ । ଭୋଜନରେ ଆପଣ ଅଳ୍ପହାର କରିବାକୁ ସାମାନ୍ୟତଃ ପସନ୍ଦ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ମାନସିକ ଚଞ୍ଚଳତା ମଧ୍ୟ କେବେ କେବେ ଉପସ୍ଥାନ ହେବ ତଥା ଅନେକ ନୁଆ ବସ୍ତୁକୁ ଉପାଦାନ କରିବାରେ ମଧ୍ୟ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଏପରି ଆପଣ ସ୍ୱପ୍ନ ଦୁଷ୍ଟ, ପ୍ରେମୀ, କବି, ବିଦ୍ୱାରକ ତଥା ମନଶୀଳ ରହିବେ ତ ଥା ଆନନ୍ଦ ପୂର୍ବକ ନିଜର ଜୀବନ ବ୍ୟତୀତ କରିବେ ।

ଦକ୍ଷୋଳକ୍ଷମକ୍ଷୋଳକ୍ଷନୋଭବଶ୍ଚ ସଦୁତ୍ତୁହେମା ଚ୍ଚପଲୋଳର୍ଥଧୁର୍ଣ୍ଣଃ ।

ସ୍ୟାତ୍ତା ଚ୍ଚ ନାନାରଚନାବିଧାନେ ମୀନାଭିଧାନେ ଜନନେ ବିଲଗ୍ନେ । ।

। । ଜାତକାଭରଣମ୍ । ।

ଅର୍ଥାତ୍ ଯାହାର ଜନ୍ମ ମୀନ ଲଗ୍ନରେ ହୁଏ, ସେ କୁଶଳ, ଅଳ୍ପହାରୀ, କାମ କରିବା ବାଲା, ରତ୍ନ-ସୁବର୍ଣ୍ଣ ଆଦିରେ ଯୁକ୍ତ, ଚଞ୍ଚଳ, ଦୃଢ଼ ତଥା ଅନେକ ବସ୍ତୁର ନିର୍ମାତା ହେବେ ।

ଧନ, ପରିବାର, ଆଶି ଏବଂ ବାଣୀ

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ଦ୍ୱିତୀୟ ଭାବରେ ମେଷ ରାଶି ଉଦିତ ହୋଇ ଥିଲା ଯାହାର ସ୍ତମ୍ଭ ମଙ୍ଗଳ ଅଟେ । ଅର୍ଥାତ୍ ଏହାର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣ ଭାବନାତ୍ମକ ରୂପେ ପରିବାର ସହିତ ମିଶି ରହିବେ ତଥା ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ପୁଣି ଚିନ୍ତିତ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ତାଙ୍କର ଖୁସି ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନତା ପାଇଁ ଯତ୍ନ ପୂର୍ବକ ସଂସାଧନ କୁ ଅର୍ଜିତ କରିବେ କିନ୍ତୁ ବେଳେ ବେଳେ ନିଜର କୌଣସି ବ୍ୟକ୍ତିଗତ ଇଚ୍ଛାକୁ ଆପଣ ପାରିବାରିକ ସୁଖର ଶ୍ରେଷ୍ଠ ବୁଝିବେ ତଥା ଆଗେ ନିଜ ଇଚ୍ଛାକୁ ପୁଣି କରିବେ । ଘରର ସୁନ୍ଦରତା ଏବଂ ଆକର୍ଷଣ ପ୍ରତି ଆପଣ ସବୁ ବେଳେ ସଜାଗ ରହିବେ ତଥା ଯତ୍ନ ପୂର୍ବକ ଘରକୁ ଆକର୍ଷକ ରୂପେ ବନେଇ ରଖିବା ପାଇଁ ଚପ୍ପର ରହିବେ । ଏହାର ଛଡ଼ା ଆପଣ ଆକର୍ଷକ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱର ସ୍ତମ୍ଭ ହେବେ ତଥା ଆପଣଙ୍କ ମିତ୍ର ମଧ୍ୟ ଗୁଣବାନ ତଥା ଶିକ୍ଷିତ ହେବେ ।

ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରକାର ସ୍ୱାଦର ଆସ୍ୱାଦନ କରିବାରେ ଆପଣ ଇଚ୍ଛୁକ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ମିଷ୍ଟାନ ଏବଂ ନମକୀନ ପ୍ରତି ବିଶେଷ ରୁଚି ରହିବ । ସାମାନ୍ୟତଃ ଆପଣ ସୁନ୍ଦର ଏବଂ ସୁସ୍ୱାଦ ଏବଂ ପୋଷ୍ଟିକ ଭୋଜନ ହିଁ କରିବେ । ଧନ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନରେ ଲୋଭ ରହିବ ତଥା ପରିଶ୍ରମ ଏବଂ ଯତ୍ନ ପୂର୍ବକ ଧନାର୍ଜନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ମୂଲ୍ୟ ଆଭିଷେଷ କିମ୍ବା ଧାତୁ କୁ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିପାରନ୍ତି । ଆପଣଙ୍କ ବାଣୀ ମଧ୍ୟ ଔଜ୍ଜ୍ୱଳତା ଭାବେ ଯୁକ୍ତ ରହିବ କିନ୍ତୁ ବେଳେ ବେଳେ ମଧୁରତାର ନ୍ୟୁନତା ହେବ । ଆପଣ ଘରେ ସମୟ ସମୟରେ ଧାର୍ମିକ କାର୍ଯ୍ୟ କଳାପ କିମ୍ବା ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାର ଉତ୍ସବ କୁ ଆୟୋଜନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣ କୌଣସି ଉତ୍ସବର ଆୟୋଜନ କୁ ହାଥ ଛଡ଼ା କରିବେ ନାହିଁ ତଥା ଅବଶ୍ୟ ସେଥିରେ ଭାଗ ନେବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣ ନୀତିର ଜ୍ଞାତା ହେବେ ତଥା ଘର ବାହାନ ତଥା ପୁତ୍ର ଯୁକ୍ତ ହୋଇ ନିଜର ଜୀବନ ବ୍ୟତୀତ କରିବେ ।

ପରାକ୍ରମ, ସହୋଦର, ପ୍ରକାଶନ, ଲଘୁ ଯାତ୍ରା

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ତୃତୀୟ ଭାବରେ ବୃଷ ରାଶି ଉଦିତ ହୋଇ ଥିଲା ଯାହାର ସ୍ୱାମୀ ଶୁକ୍ର ଅଟେ । ଏହାର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣ ସତର୍କ, ସକ୍ରିୟ ତଥା ବୌଦ୍ଧିକ ପ୍ରବୃତ୍ତିର ବ୍ୟକ୍ତି ଅଟନ୍ତି ତଥା ଆପଣଙ୍କ ସ୍ମରଣ ଶକ୍ତି ମଧ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ ଏବଂ ସହଜରେ କୌଣସି ବସ୍ତୁ କୁ ଭୁଲିବେ ନାହିଁ । ଭାଇ ଭଉଣୀଙ୍କ ସୁଖ ଏବଂ ସହଯୋଗ କୁ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବାରେ ଆପଣ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ସେମାନେ ମଧ୍ୟ ସାହସୀ ଏବଂ ପରୋପକାରୀ ହେବେ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କୁ ଯଥୋଚିତ ମାନ ସମ୍ମାନ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ସେ ମହତ୍ତ୍ୱକାକ୍ଷୀ ମଧ୍ୟ ହେବେ ତଥା ଆପଣଙ୍କ ପୁର୍ଣ୍ଣ ବିଶ୍ୱାସ ପାତ୍ର ତଥା ଆଜ୍ଞାକାରୀ ରହିବେ । ପାରିବାରିକ ଶାନ୍ତି ଏବଂ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ସୁଖ ଭାବ ରଖିବା ପାଇଁ ସମୟ ସମୟରେ ଆପଣ ଜଣେ ଅନ୍ୟର ଭୁଲ କୁ ଅପେକ୍ଷା କରିବେ ଯାହା ଦ୍ୱାରା ରାଗ ଏବଂ ମତଭେଦରେ ନ୍ୟୁନତା ରହିବ ।

ଆପଣ ନେତୃତ୍ୱ ଗୁଣରେ ସମ୍ପନ୍ନ ରହିବେ ତଥା ସମାଜରେ ସମସ୍ତ ଲୋକେ ଆପଣଙ୍କ ସଙ୍ଗଠନ ଶକ୍ତି ପ୍ରତି ପ୍ରଭାବିତ ହେବେ ତଥା ଆପଣଙ୍କୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ଆପଣ ସୁଚ୍ଛନ୍ଦ ପ୍ରବୃତ୍ତିର ବ୍ୟକ୍ତି ଅଟନ୍ତି ତଥା ଦାର୍ଶନିକ ସ୍ୱଭାବ ସଜ୍ଜତ ତଥା ସ୍ୱଚ୍ଛବାଦିତାରେ ଆପଣଙ୍କର ପ୍ରମୁଖ ଗୁଣ ରହିବ । ଅର୍ଥାତ ଏହାର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣ ଉନ୍ନତର ମାର୍ଗରେ ଅଗ୍ରସର ରହିବେ ତଥା ସମାଜରେ ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ପଦକୁ ଅର୍ଜିତ କରିବେ । ଆଧୁନିକ ସମ୍ପର୍କ ସୁବିଧାକୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ପ୍ରସନ୍ନତା ପୂର୍ବକ ଗ୍ରହଣ କରିବେ । ଯଥା ଟେଲିଫୋନ, ଟେଲିଭିଜନ, ବାହାନ କିମ୍ବା ଅନ୍ୟ ସାଧନରେ ଆପଣ ସର୍ବଦା ଉପଲବ୍ଧ ରହିବେ । ସଙ୍ଗତ ଏବଂ କଳା ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ବିଶେଷ ଧ୍ୟାନ ରହିବ ତଥା ସମୟ ସମୟରେ ଆପଣ ଏଥିରେ ମନୋରଞ୍ଜନ କରି ମାନସିକ ସନ୍ତୁଷ୍ଟି ଅନୁଭବ କରିବେ । ଜୀବନରେ ଦୂର ସମୀପ ଯାତ୍ରାରେ ଆପଣ ଲାଭ ଏବଂ ଖ୍ୟାତି ଅର୍ଜିତ କରିବେ ତଥା ଯାତ୍ରାରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ଅନେକ ମିତ୍ର ବନିବେ । ଜ୍ଞାନବର୍ଦ୍ଧକ ପୁସ୍ତକ ଅଧ୍ୟୟନରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ରୁଚି ରହିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣ ଉଚ୍ଚାଧିକାରୀ ବର୍ଗର ମିତ୍ର, ପ୍ରତାପୀ, ଅତିଥୀ ସତ୍ୱକାର କରିବା ବାଲା, ଦାନୀ, ବିଦ୍ୱାନ ତଥା ଭଲ ବିଚାରରେ ସର୍ବଦା ଯୁକ୍ତ ରହିବେ ।

ମାତା, ବାହନ, ଭୌତିକ ଐଶ୍ୱର୍ଯ୍ୟ, ସ-ଉଁ ଏବଂ ଶିକ୍ଷା

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ଚତୁର୍ଥ ଭାବରେ ମିଥୁନ ରାଶି ଉଦ୍ଭିତ ହୋଇ ଥିଲା ଯାହାର ସ୍ୱାମୀ ବୁଧ ଅଟେ । ଅର୍ଥାତ୍ ଏହାର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣଙ୍କ ମାତା ଏକ ବୁଦ୍ଧିମାନ ମହିଳା ହେବେ ତଥା ପରିବାରର ପାଳନ ଯୋଷଣରେ ତତ୍ପର ରହିବେ କିନ୍ତୁ ସହନ ଶକ୍ତିର ଭାବରେ ନ୍ୟୁନତା ରହିବ । ଆନନ୍ଦ ଦାୟକ ଜୀବନ କୁ ବ୍ୟତୀତ କରିବା ପାଇଁ ସେ ସର୍ବଦା ଯତ୍ନଶୀଳ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ତାଙ୍କୁ ସହଜରେ ପ୍ରଭାବିତ କରିପାରିବେ ନାହିଁ । ଆପଣ ଘରକୁ ସୁନ୍ଦର ଏବଂ ଆକର୍ଷକ ବନେଇବା ପାଇଁ ରୁଚିଶୀଳ ରହିବେ ।

ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ଉତ୍ତମ ଆବାସ ସ୍ଥଳ ରହିବ ତଥା ଘର କୁ ଆପଣ ସମ୍ପଦ ଏବଂ ସୁସଜ୍ଜିତ ରଖିବେ ତଥା ଆଧୁନିକ, ଭୌତିକ ସାଧନରେ ଯୁକ୍ତ ଆପଣଙ୍କ ଆବାସ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ଆକର୍ଷକ ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଭୌତିକ ଉପକରଣ ଦ୍ୱାରା ମନୋରଞ୍ଜନ ସାଧନରେ ମଧ୍ୟ ଉପଲବ୍ଧ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ପାରିବାରିକ ଜୀବନ ସୁଖ ପ୍ରତୀତ ହେବ ତଥା ବାସ୍ତବିକ ଶାନ୍ତି ଘରେ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ।

ବାହାନ ସୁଖ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ତଥା ଉତ୍ତମ ବାହାନରେ ଯୁକ୍ତ ରହିବେ ତଥା ପ୍ରସନ୍ନତା ପୂର୍ବକ ଏହାର ଉପଭୋଗ କରିବେ । ପିତୃ ସମ୍ପତ୍ତି ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ତଥା ଜମୀ ବାଡ଼ି ସମୃଦ୍ଧି ଲାଭ ମଧ୍ୟ ହେବ । ଆପଣ ଏକ ପ୍ରତିଭାଶାଳୀ ପୁରୁଷ ହେବେ ତଥା ଉଚ୍ଚ ଶିକ୍ଷା ଅର୍ଜିତ କରିବାରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଏକ ଶିକ୍ଷିତ ବ୍ୟକ୍ତିର ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣ ବ୍ୟବହାରିକ ମଧ୍ୟ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କୁ ଜ୍ୟୋତିଷ, ଚନ୍ଦ୍ର ମନ୍ତ୍ର ତଥା ଅନ୍ୟ ଗୁପ୍ତ ବିଦ୍ୟାର ଜ୍ଞାନ ମଧ୍ୟ ରହିବ । ଏହି ପରି ଆପଣ ଜଣେ ଭଲ ଜ୍ୟୋତିଷୀ ମଧ୍ୟ ହୋଇପାରନ୍ତି । ସାଥେ ସାଥେ ଧାରା ପ୍ରବାହ ଭାଷଣ କରିବାରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣ ଗ୍ରୀଷ୍ମ କାଳରେ ଜଳ କ୍ରୀଡ଼ା ଦ୍ୱାରା କିମ୍ବା ବନ ପ୍ରଦେଶ ଭ୍ରମଣ ଆଦିରେ ପ୍ରସନ୍ନତା ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ତଥା ସୁଗନ୍ଧିତ ଦ୍ରବ୍ୟ ପଦାର୍ଥ କୁ ଉପଭୋଗ କରି ଅତ୍ୟନ୍ତ ସୁଖ ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନତା ଅନୁଭବ କରିବେ ।

ବୁଦ୍ଧି, ସନ୍ତାନ ଏବଂ ପ୍ରଣୟ ସଂବନ୍ଧ

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ପଞ୍ଚମ ଭାବରେ କର୍କଟ ରାଶି ଉଦ୍ଭିତ ହୋଇ ଥିଲା ଯାହାର ସ୍ତ୍ରୀମୀ ଚନ୍ଦ୍ର ଅଟେ । ଅର୍ଥାତ୍ ଏହାର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣ ଏକ ବୁଦ୍ଧିମାନ ବ୍ୟକ୍ତି ଅଟନ୍ତି ତଥା ଜୀବନରେ ଆନନ୍ଦ ଦାୟକ ପରିବର୍ତ୍ତନ ଆଣିବା ପାଇଁ ନିତ୍ୟ ଯତ୍ନଶୀଳ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ କଲ୍ପନା ଶକ୍ତି ପ୍ରବଳ ରହିବ ତଥା ଅନ୍ୟତ୍ର ମଧ୍ୟ ଉତ୍ସାହ ପୂର୍ବକ ଆପଣ କାର୍ଯ୍ୟକୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ବିଚାର ଜୀବନ ବିନା ରୋମାଂସରେ ନୀରାସ ଅଟେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣ ସୁଖୀ ପାରିବାରିକ ଜୀବନରେ ପ୍ରସନ୍ନ ତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ବିବାହ ପରେ ଆପଣ ପୁଣି ରୂପେ ବ୍ୟବସ୍ଥିତ ରହିବେ ତଥା ନିଜ ପତ୍ନୀଙ୍କୁ ସବୁ ବେଳେ ପ୍ରସନ୍ନ ତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରଖିବାରେ ତତ୍ପର ରହିବେ ।

ସନ୍ତାନରେ ଆପଣ ଯୁକ୍ତ ରହିବେ ତଥା ତାଙ୍କର ପାଳନ ପୋଷଣ ତଥା ଶିକ୍ଷା ଆଦିରେ ଉଦ୍ଭିତ ପ୍ରବନ୍ଧ ଏବଂ ବ୍ୟବସ୍ଥା କରିବେ । ଆପଣ ନିଜ ତରଫରୁ ଯଥାଶକ୍ତି ତାଙ୍କୁ ସମସ୍ତ ଭୌତିକ ସୁବିଧା ତଥା ଆରାମ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ବେଳେ ବେଳେ ଆପଣ ନିଜ ବ୍ୟକ୍ତିଗତ ଇଚ୍ଛାକୁ ଅପେକ୍ଷା କରି ତାଙ୍କ ପାଇଁ ବିଶେଷ ପ୍ରବନ୍ଧ କିମ୍ବା ସୁବିଧା ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଆଜ୍ଞାକାରୀ, କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ପରାୟଣ, ତଥା ବିଶ୍ୱାସ ପାତ୍ର ରହିବେ । ସେ ମଧ୍ୟ ବୁଦ୍ଧିମାନ ଏବଂ ଧନବାନ ହେବେ ତଥା ଜୀବନରେ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ରୂପେ ବିଶିଷ୍ଟ ଉପଲବ୍ଧି ଅର୍ଜିତ କରିବେ । ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ଆଧୁନିକ ବିଚାର ଧାରାର ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣ ପୁରାତନ ରୀତି ନିତୀକୁ ମଧ୍ୟ ସ୍ୱୀକାର କରିବେ । ବୈଦିକ ଜ୍ଞାନ ତଥା ଜ୍ୟୋତିଷ ଆଦି ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଶ୍ରଦ୍ଧା ପ୍ରଦର୍ଶନ କରିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣ ପ୍ରସିଦ୍ଧ ପିତାଙ୍କୁ ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରଖିବା ବାଲା, ମନ୍ଦିର କିମ୍ବା ଧର୍ମଶାଳା ଆଦିର ନିର୍ମାଣ କରି କାର୍ତ୍ତି ଅର୍ଜିତ କରିବେ ତଥା ବିଦ୍ୟାରେ ଯୁକ୍ତ ହୋଇ ସମ୍ପନ୍ନ ଏବଂ ବୈଭବଶାଳୀ ଜୀବନ ବ୍ୟତୀତ କରିବେ ।

ରୋଗ, ଶତ୍ରୁ, ସେବକ ଏବଂ ମାମୁଁ

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ଷଷ୍ଠ ଭାବରେ ସିଂହ ରାଶି ଉଦିତ ହୋଇ ଥିଲା ଯାହାର ସ୍ଵାମୀ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଅଟେ । ଅର୍ଥାତ୍ ଏହାର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣ ରକ୍ତ ସମୃଦ୍ଧି ଠାରୁ ସମୟ ସମୟରେ ବିରୋଧର ସାମନା କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ଅନୁକୂଳ ସହଯୋଗ ମଧ୍ୟ ମିଳିବ ନାହିଁ । ଆପଣଙ୍କ ଉଚ୍ଚକୃଷ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ କଳାପ ପାଇଁ ତାଙ୍କ ମନରେ ଇର୍ଷାର ଭାବନା ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ବେଳେ ବେଳେ ବରିଷ୍ଠ ଅଧିକାରୀଙ୍କ ବିରୋଧର କାରଣ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ହଇରାଣର ସାମନା କରିବାକୁ ପଡ଼ିପାରେ । ଆପଣଙ୍କ ଶତ୍ରୁ ଉଚ୍ଚାଧିକାର ପ୍ରାପ୍ତ ବ୍ୟକ୍ତି ଅଟନ୍ତି ଯେଉଁ ମାନେ ସମାଜ କିମ୍ବା ସରକାରର ବିଭିନ୍ନ କ୍ଷେତ୍ରରେ ରହିବେ ତଥା ସେ ସବୁ ବେଳେ ଆପଣଙ୍କ ମାନ ସମ୍ମାନରେ ନ୍ୟୁନତା କରିବା ପାଇଁ ଚପୁର ରହିବେ । କିନ୍ତୁ ଆପଣ ନିଜ ବୁଦ୍ଧିମତା, ଚତୁର ଶକ୍ତି ତଥା ଅନ୍ୟ ଗୁପ୍ତ ସୁତ୍ର ଦ୍ଵାରା ତାଙ୍କର ସାମନା ତଥା ପରାଜିତ କରିବାରେ ସଫଳ ସିଦ୍ଧ ହେବେ ।

ସେବକ ବର୍ଗଙ୍କ ସେବା ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ପାଇଁ ଆପଣ ପ୍ରାୟଶ୍ଚିତ୍ତ ଲକ୍ଷ୍ମୀକ ରହିବେ ତଥା ଏହାର ବିନା ଆପଣଙ୍କ ଅନେକ କାର୍ଯ୍ୟ ପୂର୍ଣ୍ଣ ମଧ୍ୟ ହେବ ନାହିଁ । ଆପଣଙ୍କ ଦ୍ଵାନ୍ଦ୍ଵ ଭଲ ହେବେ ତଥା ଆପଣଙ୍କ ଲକ୍ଷ୍ମୀ ଅନୁସାରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାରେ ସେ ସର୍ବଦା ଚପୁର ରହିବେ କିନ୍ତୁ ସେ ଆପଣଙ୍କ ବ୍ୟକ୍ତିଗତ ଗୁପ୍ତ ରହସ୍ୟକୁ ଅନ୍ୟ ଲୋକଙ୍କ ସମ୍ମୁଖରେ ଉଜାଗର କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ସେ ବେଳେ ବେଳେ ଡୋରୀ ଆଦି କରିବା ପାଇଁ ମଧ୍ୟ ଚପୁର ହୋଇପାରନ୍ତି । ଅର୍ଥାତ୍ ମୁଲ୍ୟ ବସ୍ତୁକୁ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଦୁରେଇ ରଖିବା ଦରକାର । ଆପଣ ନିଜ ଉଚ୍ଚ ସ୍ତର କୁ ବନେଇବା ପାଇଁ ଅନାବଶ୍ୟକ ବ୍ୟୟ କରିବେ । ଏହି ବ୍ୟୟ ଆପଣଙ୍କ ଆୟରୁ ଅଧିକ ହେବ । ଆପଣ ଭାବି ଚିନ୍ତି ବ୍ୟୟ କରିବେ କିନ୍ତୁ ବେଳେ ବେଳେ ବ୍ୟୟଧିକର କାରଣ ଆପଣଙ୍କୁ ରଣ ମଧ୍ୟ ନେବାକୁ ପଡ଼ିପାରେ କିନ୍ତୁ ସମୟରେ ଫେରସ୍ତ ନ କରିବାର କାରଣ ଆପଣଙ୍କ ମାନ ସମ୍ମାନରେ ନ୍ୟୁନତା ଆସିବ । ଅର୍ଥାତ୍ ରଣ ଆଦି ନେବା ପାଇଁ ଯତ୍ନ ପୂର୍ବକ ଅପେକ୍ଷା କରିବା ଦରକାର ।

ମାମୁଁ ମାଇଁଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ସମୟ ସମୟରେ ଲକ୍ଷ୍ମୀକ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କୁ ସେ ପୂର୍ଣ୍ଣ ରୂପେ ସହାୟତା କରିବେ କିନ୍ତୁ କେବେ କେବେ ସେ ଆପଣଙ୍କୁ ସହାୟତା କରିବେ ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କ ସ୍ଵାଭିମାନ କୁ ଠେସ ଆସିବ । ଦୀବାନା କିମ୍ବା ଫୋଜଦାରୀ ମକଦ୍ଦମାରେ ଆପଣ ସାମାନ୍ୟତଃ ଧନ ତଥା ସମୟ ନଷ୍ଟ କରିବେ । କିନ୍ତୁ ଯଦି ଆପଣ ନିୟମାନୁସାରେ ଏହି କାର୍ଯ୍ୟ କୁ କରିବେ ତାହା ହେଲେ ଏଥିରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ଲକ୍ଷ୍ମୀକ ଲାଭ ତଥା ବିଜୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇପାରେ । ସାଥେ ସାଥେ ଉତ୍ତମ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ପାଇଁ ଖାନ ପାନର ଉଚିତ ଧ୍ୟାନ ରଖିବା ଦରକାର ତଥା ଗରମ ପଦାର୍ଥ କୁ ଯତ୍ନ ପୂର୍ବକ ଅପେକ୍ଷା କରିବା ଦରକାର ।

ଦ-ଊ, ବିବାହ ଏବଂ ସହଚର

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ସପ୍ତମ ଭାବରେ କନ୍ୟା ରାଶି ଭବିତ ହୋଇ ଥିଲା ଯାହାର ସ୍ତମ୍ଭୀ ବୁଧ ଅଟେ । ଅର୍ଥାତ୍ ଏହାର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣଙ୍କ ପତ୍ନୀ ସୁନ୍ଦର, ବୁଦ୍ଧିମାନ, ଶିକ୍ଷିତ ତଥା ଆକର୍ଷକ ବ୍ୟକ୍ତିତ୍ୱର ମହିଳା ହେବେ ତଥା ଆପଣଙ୍କୁ ଜୀବନରେ ପୁଣ୍ୟ ପୁଣ୍ୟ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବା ପାଇଁ ଯତ୍ନଶୀଳ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଦାମ୍ପତ୍ୟ ଜୀବନ ସୁଖୀ ରହିବ ତଥା ଆପଣ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ପ୍ରକୃତିର ବ୍ୟକ୍ତି ମଧ୍ୟ ହେବେ କିନ୍ତୁ ରାଶିର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣ ବେଳେ ବେଳେ ନିଜ ଜୀବନ ସାଥୀ କିମ୍ବା ସାଙ୍ଗ ମାନଙ୍କ ଉପରେ ସନ୍ଦେହ ମଧ୍ୟ କରିପାରନ୍ତି କିନ୍ତୁ ଏପରି ପରିସ୍ଥିତି କୁ ଆପଣଙ୍କୁ ଅପେକ୍ଷା କରିବା ଦରକାର ନହେତ କୌଣସି ଅପ୍ରିୟ ସ୍ଥିତି ଉତ୍ପନ୍ନ ହୋଇପାରେ । ପରିବାରରେ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ତଥା ସମୃଦ୍ଧି ରଖିବା ପାଇଁ ଆପଣ ସବୁ ବେଳେ ରୁଚିଶୀଳ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଏହି କାମ ଆପଣ ସଜ୍ଜ ସହ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ । ଘରକୁ ଆପଣ ପୁଣ୍ୟ ରୂପେ ଆଧୁନିକ ସାଜ ସଜ୍ଜାରେ ଯୁକ୍ତ ରଖିବେ । କନ୍ୟା ତଥା କର୍କଟ ଲଗ୍ନରେ ଉତ୍ପନ୍ନ ଜାତକ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଉପଯୋଗୀ ତଥା ବିଶ୍ୱାସନୀୟ ଜୀବନ ସାଥୀ କିମ୍ବା ସାଙ୍ଗ ସିଦ୍ଧ ହୋଇପାରନ୍ତି ।

ବ୍ୟାପାରିକ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ କରିବାରେ ଆପଣ ଦକ୍ଷ ରହିବେ ତଥା ଧନ ଏବଂ ଅଧିକାରରେ ସୁସମ୍ପନ୍ନ ରହି ନିଜର ଜୀବନ ବ୍ୟତୀତ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ବୃଦ୍ଧାବସ୍ଥା ପାଇଁ ମଧ୍ୟ ଧନକୁ ସଜ୍ଜୁତ କରି ରଖିବେ । ଆପଣଙ୍କୁ ଲେଖା ବିଭାଗ, ବେଙ୍କ, ସିନେମା, ଜ୍ୟୋତିଷ କିମ୍ବା ତନ୍ତ୍ର ମନ୍ତ୍ର କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆଜୀବିକା ସମୃଦ୍ଧି ସଫଳତା ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇପାରେ । ସାଥେ ସାଥେ ଦ୍ରବ୍ୟ ସମୃଦ୍ଧି କାର୍ଯ୍ୟ, ଔଷଧ କିମ୍ବା ଶିକ୍ଷା ବିଭାଗରେ ମଧ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟରତ ହୋଇପାରନ୍ତି । ଯଦି ଆପଣ ଏଥି ମଧ୍ୟରୁ କୌଣସି ବିଭାଗରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବେ ତାହା ହେଲେ ନିଶ୍ଚିତ ରୂପେ ମାନ ସମ୍ମାନ ଖ୍ୟାତି ଏବଂ ଧନ ବୈଭବ ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ଏହା ଛଡ଼ା ସେ ସୁନ୍ଦର ଆକୃତି ବାଳୀ, ଅଳ୍ପ ସନ୍ତାନ ଯୁକ୍ତ, ସୋଭାଗ୍ୟ ଶାଳୀ, ଗୃହନୀତିର ଗୁଣରେ ସମ୍ପନ୍ନ, ମଧୁର ଏବଂ ସତ୍ୟଭାଷିଣୀ, ଦୃଢ଼ ପ୍ରତିଜ୍ଞା ତଥା ଆପଣଙ୍କ ସବୁ ବେଳେ ପ୍ରିୟ ରହିବେ ।

ଜୈତୁକ, ବୀମା, ଆୟୁ ଏବଂ ଦୁର୍ଘଟଣା

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ଅକ୍ଷୟ ଭାବରେ ତୁଳା ରାଶି ଉଦିତ ହୋଇ ଥିଲା ଯାହାର ସ୍ୱାମୀ ଶୁକ୍ର ଅଟେ । ଅର୍ଥାତ୍ ଏହାର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣ ଆଧ୍ୟାତ୍ମ ତଥା ଜ୍ୟୋତିଷ ଏବଂ ତନ୍ତ୍ର ମନ୍ତ୍ର ଆଦିରେ ବିଶ୍ୱାସ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ପୂର୍ବାଭାସ ତଥା ଅନ୍ତର୍ପ୍ରଜ୍ଞା ଶକ୍ତି ମଧ୍ୟ ପ୍ରବଳ ରହିବ ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ଠିକ୍ ରୂପେ ଭବିଷ୍ୟବାଣୀ କରିବାରେ ସମର୍ଥ ହେବେ । ଏହି କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣଙ୍କ ବହୁତ ରୁଚି ରହିବ ତଥା ପ୍ରୟତ୍ନ ପୂର୍ବକ ଏହାର ଜ୍ଞାନ ଅର୍ଜିତ କରିବେ ଏବଂ ଏଥିରେ ଶୋଧ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ କରିପାରନ୍ତି । ଏଥିରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଧନାର୍ଜନ ମଧ୍ୟ ହେବ ଏବଂ ସମାଜରେ ଆପଣଙ୍କୁ ପ୍ରସିଦ୍ଧି ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ସାଥେ-ସାଥେ ଏଥିରେ ଆପଣଙ୍କ ମିତ୍ରଙ୍କ ସଙ୍ଗରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ ତଥା ଅନେକ ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ଏବଂ ପରବିଦ୍ୟା ଆପଣଙ୍କ ମିତ୍ର ହେବେ ।

ଆପଣଙ୍କୁ ପିତୃ ସମ୍ପତ୍ତି ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ ତଥା ଏଥିରେ ଆପଣଙ୍କୁ ବହୁତ ଲାଭ ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଜମି ବାଡ଼ିର କାର୍ଯ୍ୟରେ ଆପଣଙ୍କୁ ସମୟ ସମୟରେ ଲାଭ ମଧ୍ୟ ହେଉ ଥିବ । ଆପଣଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟରେ ଲୋକେ ସାମାନ୍ୟତଃ ପ୍ରସନ୍ନ ରହିବେ ତଥା ଆପଣଙ୍କ କଥା କୁ ମାନିବେ । ବାହାଘରରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ଉଚିତ ଲାଭ ହେବ ତଥା କୌଣସି ପ୍ରକାର ସମ୍ପତ୍ତିର ପ୍ରାପ୍ତି ମଧ୍ୟ ହୋଇପାରେ । ଏଥିରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଯୌତୁକ ରୂପରେ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରାରେ ଧନ ଆଭୂଷଣ ଏବଂ ଅନ୍ୟ ଆଧୁନିକ ଉପକରଣ ଉପହାର ସ୍ୱରୂପରେ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଏଥିରେ ଆପଣ ତଥା ଆପଣଙ୍କ ପତ୍ନୀ, ଶଶୁର ଘର ପ୍ରତି କୃତଜ୍ଞ ରହିବେ । ବୀମା ଆଦିରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ସମୟ ସମୟରେ ଲାଭ ହେଉ ଥିବ ଅର୍ଥାତ୍ ନ୍ୟୁନାଧିକ ରୂପେ ଆପଣଙ୍କୁ ବୀମା ଅବଶ୍ୟ କରିବା ଦରକାର । ଆପଣଙ୍କ କୁଣ୍ଡଳୀରେ ଦୋରା କିମ୍ବା ଦୁର୍ଘଟନାର କୌଣସି ବିଶେଷ ଅବସର ଆସିବ ନାହିଁ । ଯଦି ଏପରି କୌଣସି ଘଟନା ଘଟିଲେ ମଧ୍ୟ ତାହାର ପ୍ରଭାବ ମାମୁଲୀ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ଆୟୁ ଭଲ ରହିବ ତଥା ଉତ୍ତମ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟରେ ଯୁକ୍ତ ହୋଇ ଆପଣ ନିଜର ସାମାନ୍ୟ ଜୀବନ ବ୍ୟତୀତ କରିବାରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ ।

ସୌଭାଗ୍ୟ, ପ୍ରସିଦ୍ଧି, ପୁଜା, ଭଜ ଶିକ୍ଷା ଏବଂ ଲମ୍ବା ଯାତ୍ରା

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ବୃଷ୍ଟିକ ରାଶି ଭଦିତ ହୋଇ ଥିଲା ଯାହାର ସ୍ଥାନୀ ମଙ୍ଗଳ ଅଟେ ଅର୍ଥାତ୍ ଏହାର ପ୍ରଭାବ ପାଇଁ ପ୍ରାରମ୍ଭରେ ଧର୍ମ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନରେ କୌଣସି ବିଶେଷ ଶ୍ରଦ୍ଧା ରହିବ ନାହିଁ କିନ୍ତୁ ଆପଣଙ୍କ ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣ ମନ୍ଦିର କିମ୍ବା ତୀର୍ଥ ସ୍ଥାନକୁ ଯାଇ ଧାର୍ମିକ କାର୍ଯ୍ୟ କଳାପ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ ତଥା ଦୈନିକ ପୁଜା କୁ ମଧ୍ୟ ଆରମ୍ଭ କରିବେ । ଭାଗ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ପ୍ରାୟଶ୍ଚୟ ସହାୟକ ରହିବ । ଦୂର ଯାତ୍ରା ପାଇଁ ଆପଣ ସବୁ ବେଳେ ରୁଚିଶୀଳ ରହିବେ ତଥା ଅଧ୍ୟାତ୍ମ, ଜ୍ୟୋତିଷ କିମ୍ବା ତନ୍ତ୍ର ମନ୍ତ୍ର ସମ୍ବନ୍ଧେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ରୁଚି ରହିବ ଏବଂ ପରିଶ୍ରମ ପୂର୍ବକ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଗ୍ରହଣ ଅଧ୍ୟୟନ କରି ଏହାର ଜ୍ଞାନ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଆପଣ ନିଜ ନିବାସ ସ୍ଥାନରେ ପୁଜା ସ୍ଥଳ ମଧ୍ୟ ନିର୍ମାଣ କରିବେ । ପରୋପକାର ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ତଥା ଭଗବାନଙ୍କ ପ୍ରତି ପୂର୍ଣ୍ଣ ଶ୍ରଦ୍ଧା ରହିବ । ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ଥ ଆପଣ ଅନେକ ଶୁଭ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ ତଥା ସବୁ ବେଳେ ପ୍ରସନ୍ନଚିତ୍ତ ରହିବେ ।

ଯୁବକବୟାଳରେ ଆପଣ ଧ୍ୟାନ, ଯୋଗାଦିକ୍ରିୟାରେ ମଧ୍ୟ ରୁଚି ନେବେ ତଥା ପରିଶ୍ରମ ପୂର୍ବକ ଏହାକୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ ତଥା ଏଥି ସମ୍ପର୍କିତ ଗ୍ରହଣ ପଢ଼ିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଅନ୍ତର୍ପ୍ରଜ୍ଞା ଶକ୍ତି ପ୍ରବଳ ରହିବ ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ପୂର୍ବାଭାସ କିମ୍ବା ଭବିଷ୍ୟ ସମ୍ପର୍କି ଜ୍ଞାନ ହୋଇପାରେ । ଆପଣ ନିଜ ଜୀବନରେ ନିଶ୍ଚୟ ହିଁ କୌଣସି ଧାର୍ମିକ ଏବଂ ପୁଣ୍ୟ ସମ୍ପର୍କି କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ । ଯେପରିକି ମନ୍ଦିର, ହସପିଟାଲ କିମ୍ବା ଯୋଗରୀ ଆଦିର ନିର୍ମାଣ । ସାଥେ ସାଥେ ଅନ୍ୟତ୍ର ଦାନ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ କରିବେ । ପ୍ରାରମ୍ଭିକ ଅବସ୍ଥାରେ ଦୂର ଯାତ୍ରାକୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିପାରନ୍ତି । ଏହି ଯାତ୍ରା ଶିକ୍ଷା ସମ୍ପର୍କି ମଧ୍ୟ ହୋଇପାରେ କିମ୍ବା ବ୍ୟାପାରିକ ଏବଂ ଧାର୍ମିକ କାର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପର୍କି କିନ୍ତୁ ଏଥିରେ ଆପଣଙ୍କୁ ସମ୍ମାନ ଲାଭ ଏବଂ ଖ୍ୟାତି ଅବଶ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ତଥା ସମାଜରେ ଆପଣ ସତକର୍ମ ଦ୍ଵାରା ଖ୍ୟାତି ଅର୍ଜନ କରିବେ । ବୃଦ୍ଧାବସ୍ଥାରେ ପୁତ୍ର ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ସୋଭାଗ୍ୟ, ସୁଖ ଏବଂ ସୌଖର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ ତଥା ଆପଣ ପୂର୍ବ ଜନ୍ମର ପୁଣ୍ୟର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣଙ୍କ ଏହି ଜୀବନ ସୁଖ ଏବଂ ସୌଖର୍ଯ୍ୟରେ ସୁକ୍ତ ହୋଇ ବ୍ୟତୀତ ହେବ ।

ପିତା, ବ୍ୟବସାୟ ଏବଂ ସାମାଜିକ ସ୍ତର

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ଦଶମ ଭାବରେ ଧନୁ ରାଶି ଉଦିତ ହୋଇ ଥିଲା ଯାହାର ସ୍ୱାମୀ ବୃହସ୍ପତି ଅଟେ । ଅର୍ଥାତ ଏହାର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣଙ୍କ ପିତାଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ତଥା ମାନସିକ ରୂପେ ମଧ୍ୟ ସେ ପ୍ରସନ୍ନ ତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ସେ ସାହସୀ ନିର୍ଭୀକ ତଥା ସକ୍ରିୟ ପ୍ରକୃତିର ବ୍ୟକ୍ତି ଅଟନ୍ତି ତଥା ଅତ୍ୟଧିକ ଭାବି ବିଚାରି କୌଣସି ଭି କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ମତ କରିବେ । ସ୍ୱଭାବରେ ଉଦାର ତଥା ଦୟାଳୁ ରହିବେ ତଥା ସାମାଜିକ ଜନଙ୍କ ପରୋପକାର ସମ୍ପନ୍ନ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ମଧ୍ୟ ସମ୍ମତ କରିବେ ଫଳରେ ସମାଜରୁ ତାଙ୍କୁ ଇଚ୍ଛିତ ସମ୍ମାନ ଏବଂ ଖ୍ୟାତି ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ।

ଆପଣ ଲେଖା ସମ୍ପନ୍ନ କିମ୍ବା ବେଙ୍ଗ ଆଦି ସମ୍ପନ୍ନ କାର୍ଯ୍ୟରେ ଇଚ୍ଛିତ ଉନ୍ନତି ଏବଂ ସଫଳତା ଅର୍ଜିତ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ସଙ୍ଗତ, ସିନେମା, ଚଳ୍ଚଳ ମନ୍ତ୍ର କିମ୍ବା ଜ୍ୟୋତିଷ ଆଦିରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ଖ୍ୟାତି ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇପାରେ । ଆପଣ ନିୟନ୍ତ୍ରକ, ପ୍ରବନ୍ଧକ, ନିର୍ଦ୍ଦେଶକ, ଅଧ୍ୟକ୍ଷ ଆଦି ଭଳ ପଦକୁ ସରକାରୀ କିମ୍ବା ବେସରକାରୀ ଉଦ୍ୟମରେ ଅର୍ଜିତ କରିପାରନ୍ତି । ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ଦ୍ରବ୍ୟ, ରାସାୟନିକ ଔଷଧ ବିଜ୍ଞାନ ତଥା ଶିକ୍ଷା ବିଭାଗରେ ମଧ୍ୟ ଉଚ୍ଚ ପଦ ତଥା ସମ୍ମାନ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ଏବଂ ଏହି କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣଙ୍କୁ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରାରେ ଲାଭ ହେବ । ସରକାରଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଜୀବନରେ ସମୟ ସମୟରେ ଲାଭ ଅର୍ଜିତ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କୁ ମକଦ୍ଦମା ଆଦିର ଅପେକ୍ଷା କରିବା ଦରକାର କାରଣ ଏଥିରେ ଲାଭ ଅପେକ୍ଷା ହାନିର ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣ ଦକ୍ଷତା ପୂର୍ବକ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ କରିବା ବାଲା, ପୁର୍ଣ୍ଣ ଲାଭର ଇଚ୍ଛା ବାଲା, ପରୋପକାରୀ, ରାଜା ବୈଭବରେ ଯୁକ୍ତ ଜମୀ ବାଡ଼ିର ସ୍ୱାମୀ ତଥା ସମାଜରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ଯଶ ଏବଂ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଅର୍ଜିତ କରିବେ ।

ଲାଭ, ମିତ୍ର, ସମାଜ, ଜ୍ୟେଷ୍ଠ ଭ୍ରାତା ଏବଂ ଆକାଂକ୍ଷା

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ଏକାଦଶ ଭାବରେ ମକର ରାଶି ଉଦିତ ହୋଇ ଥିଲା ଯାହାର ସ୍ତ୍ରୀ ଶନି ଅଟେ । ଅର୍ଥାତ୍ ଏହାର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣ କୌଣସି ଭି କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ଭାବି ଚିନ୍ତିତ ଥାନ୍ତି ବ୍ୟାପାରିକ ଦୃଷ୍ଟିରେ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ମାନସିକ ଶକ୍ତି ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ପ୍ରବଳତା ରହିବ । ପ୍ରବନ୍ଧ ଏବଂ ସଞ୍ଚନ ଶକ୍ତି ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ ତଥା ଏକ ପରାକ୍ରମୀ, ପରିଶ୍ରମୀ ତଥା ଯୋଗ୍ୟ ବ୍ୟକ୍ତି ଅଟନ୍ତି ଅର୍ଥାତ୍ ଜୀବନରେ ନିଜର ଅଧିକାଂଶ ଲକ୍ଷ୍ୟ ତଥା ଆକାଂକ୍ଷା କୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ କରିବାରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଆପଣ ଏକ ଦୂରଦର୍ଶୀ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱାକାଂକ୍ଷୀ ପୁରୁଷ ମଧ୍ୟ ହେବେ ତଥା ପ୍ରସିଦ୍ଧ ଧନ-ଐଶ୍ୱର୍ଯ୍ୟ ଏବଂ ମାନ ସମ୍ମାନ ଅର୍ଜିତ କରିବା ପାଇଁ ସର୍ବଦା ଯତ୍ନଶୀଳ ରହିବେ । ଜୀବନରେ ଉନ୍ନତି କିମ୍ବା ଲାଭାର୍ଜନରେ ଆପଣ କୌଣସି ଭି ଅବସର ଛାଡ଼ିବେ ନାହିଁ ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ସୁଦୃଢ଼ ରହିବ ତଥା ଆୟ ସ୍ରୋତରେ ନିତ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ ଯାହା ଦ୍ୱାରା ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରାରେ ଧନାର୍ଜନ ହେବ । ଆର୍ଥିକ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣ କୌଣସି ପ୍ରକାର କ୍ଷତି ଉଠାଇବେ ନାହିଁ । କାଠ କିମ୍ବା ଲୁହା ସମ୍ବନ୍ଧିତ ବ୍ୟାପାର କିମ୍ବା କାର୍ଯ୍ୟରେ ଆପଣ ବିଶିଷ୍ଟ ଲାଭ ଅର୍ଜିତ କରିବାରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ ।

ଆପଣଙ୍କୁ ବଡ଼ ଭାଇଙ୍କ ଅପେକ୍ଷା ଭଉଣୀଙ୍କ ଠାରୁ ଜୀବନରେ ବିଶିଷ୍ଟ ଲାଭ ସହଯୋଗ ଏବଂ ସ୍ନେହ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ତଥା ସେ ଆପଣଙ୍କ ପୁତ୍ରବତ ପାଳନ କରିବେ ତଥା ସମୟ ସମୟରେ ମାର୍ଗ ଦର୍ଶନ ମଧ୍ୟ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ମିତ୍ରତା ସ୍ଥାୟୀ ରହିବ ତଥା ମିତ୍ରତାର କ୍ଷେତ୍ର ଅଧିକ ବିସ୍ତୃତ ହେବ ନାହିଁ କିନ୍ତୁ ମିତ୍ରବର୍ଗ ମଧ୍ୟ ଆଦରଣୀୟ, ବିଶ୍ୱାସନୀୟ ତଥା ପ୍ରତିଷ୍ଠାରେ ଯୁକ୍ତ ରହିବେ । ସମାଜରେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ତର ଉଚ୍ଚ ରହିବ ତଥା ସମସ୍ତ ସାମାଜିକ ଲୋକଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କର ଭଲ ସମ୍ବନ୍ଧ ରହିବ ଏବଂ ତାଙ୍କର ସେବା ତଥା ସହାୟତା କରିବା ପାଇଁ ସବୁ ବେଳେ ତତ୍ପର ରହିବେ । ଅର୍ଥାତ୍ ନିଜ କ୍ଷେତ୍ର କିମ୍ବା ସମାଜରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଭଲ ଖ୍ୟାତି ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ କିନ୍ତୁ ବେଳେ ବେଳେ ବାମ କାନ ସମ୍ବନ୍ଧିତ ହଇରାଣରେ ଆପଣ କଷ୍ଟ ଅନୁଭବ କରିପାରନ୍ତି । କିନ୍ତୁ ଆପଣଙ୍କ ସାମାନ୍ୟ ଜୀବନ ସୁଖ ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନତା ପୂର୍ବକ ବ୍ୟତୀତ ହେବ ।

ହାନି, ବନ୍ଧନ, ଧାର, ଆଭାସ ପରିବର୍ତ୍ତନ ଏବଂ ମୋକ୍ଷ

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ଦ୍ଵାଦଶ ଭାବରେ କୁମ୍ଭ ରାଶି ଉଦିତ ହୋଇ ଥିଲା ଯାହାର ସ୍ଵାମୀ ଶନି ଅଟେ । ଅର୍ଥାତ୍ ଏହାର ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣଙ୍କର ଭଲ ବ୍ୟାପାରିକ କ୍ଷମତା ରହିବ ତଥା ଧନ ଏବଂ ଶକ୍ତିରେ ସବୁ ବେଳେ ଯୁକ୍ତ ରହିବେ । ବୃଦ୍ଧାବସ୍ଥାରେ ଆପଣ ନିଜ କୁମ୍ଭା କିମ୍ବା କୌଣସି ଅନ୍ୟ ସମ୍ପତ୍ତି ଉପରେ ନିର୍ଭର କରିବେ ନାହିଁ କାରଣ ଆଗରୁ ହିଁ ଆପଣ ଏହି ସମୟ ପାଇଁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ଧନ ସୁରକ୍ଷିତ ରଖିବେ । ଅନ୍ୟ ଲୋକଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନରେ ସହାନୁଭୂତି ରହିବ ତଥା ଯତ୍ନପୂର୍ବକ ତାଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ତଥା ଅନ୍ୟ ରୂପେ ସହାୟତା କରିବେ ।

ଆପଣଙ୍କୁ ମଧ୍ୟମବୟସରେ ପୂର୍ଣ୍ଣ ଧନ ମାନ ଏବଂ ସମ୍ମାନ ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ ତଥା ଧନ କୁ ଆପଣ ବୁଦ୍ଧିମତା ଏବଂ ସାବଧାନ ପୂର୍ବକ ଉପଯୋଗ କରିବେ । ଏପରି ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ପ୍ରାୟଶ୍ଚ ଭଲ ରହିବ । ପରିବାରଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣ ପୂର୍ଣ୍ଣ ରୂପେ ସମର୍ପିତ ରହିବେ ତଥା ତାଙ୍କର ସୁଖ ସୁବିଧା, ରତ୍ନ ସହନ ଏବଂ ପଢ଼ା ପଢ଼ି ସ୍ତର ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିତ୍ୟ ଯତ୍ନଶୀଳ ରହିବେ ତଥା ଏପରି କାର୍ଯ୍ୟରେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରାରେ ବ୍ୟୟ ହେବ । ସାମ୍ପାରିକ ସୁଖ ସଂସାଧନ ତଥା ଭୌତିକ ଉପକରଣ ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ମନରେ ତୀବ୍ର ଆଶା ରହିବ ତଥା ଏଥି ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରାରେ ବ୍ୟୟ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆବାସ ସମ୍ପତ୍ତି ସାଜ ସଜ୍ଜାରେ ମଧ୍ୟ ଉପଯୁକ୍ତ ବ୍ୟୟ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ଉପରେ ଏହାର କୌଣସି ପ୍ରଭାବ ହେବ ନାହିଁ । ଏହା ଛଡ଼ା ଦାନ କିମ୍ବା ଧାର୍ମିକ କାର୍ଯ୍ୟ କଳାପ ଉପରେ ମଧ୍ୟ ସମୟ ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ବ୍ୟୟ ହେଉଥିବ ।

ଘାତ୍ରା ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ରୁଚି ବନି ରହିବ ତଥା ସମୟ ସମୟରେ ବ୍ୟବସାୟ କିମ୍ବା କାର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପତ୍ତି ଘାତ୍ରା ହେଉଥିବ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଲାଭ ଏବଂ ସମ୍ମାନ ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଜୀବନରେ ବ୍ୟାପାରିକ ତଥା ଭ୍ରମଣ ସମ୍ପତ୍ତି ବିଦେଶ ଘାତ୍ରାର ମଧ୍ୟ ସମ୍ପ୍ରାବନା ରହିବ ।

ଆପ ସମୟ ସମୟ ପର ମାନସିକ ତଥା ଶାରୀରିକ ବ୍ୟାକୁଲତା କା ଅନୁଭବ କରେଙ୍ଗେ ତଥା ଲୋଗ ଆପକେ ଚିତ୍ତ ପର ଭୀ କଭୀ କଭୀ ସନ୍ଦେହ ପ୍ରକଟ କରେଙ୍ଗେ। ଆପ କେ ଦୃଢ଼ତା ମେ ଯୁବା କବା କଠୋରତା କା ଭାବ ଭୀ ରହେଗା । ଆପକେ ପାସ ଧନ ପର୍ଯ୍ୟୁତ ମାତ୍ରା ମେ ରହେଗା ତଥା ସଂସାର ମେ ଧନବାନ ବନ କର ରହେଙ୍ଗେ।

ଘ୍ନମ୍ୟର୍ଷେ ବିକଲୋଳନ୍ୟଦାନିରତ: କୁର: କୃତଧ୍ନୋ ଧନା ।
ଜାତକପରିଜାତ:

ଅର୍ଥାତ୍ ଭରଣୀ ନକ୍ଷତ୍ର ମେ ଉତ୍ତମ ବାଲକ ଶାରୀରିକ ତଥା ମାନସିକ ରୂପ ସେ ବ୍ୟାକୁଲ, ଦୁସରେ କୀ ସ୍ତ୍ରୀ ମେ ଅନୁରକ୍ତ, କୁର ତଥା କୃତଧନ ଏବଂ ଧନୀ ହୋତା ହେ ।

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ରଜତ ପାଦ ରେ ହୋଇ ଅଛି । ଅର୍ଥାତ ଧନ ସମ୍ପତି ରେ ଆପଣ ସର୍ବଦା ସୁସମ୍ପନ୍ନ ରହିବେ ତଥା ଜୀବନ ରେ ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ଏହାର ଅଭାବ ରହିବ ନାହିଁ । ସାଥେ ସାଥେ ସମସ୍ତ ଭୌତିକ ସୁଖ ସଂସାଧନ କୁ ଆପଣ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ଏବଂ ସୁଖ ପୂର୍ବକ ଏହାର ଉପଭୋଗ ମଧ୍ୟ କରିବେ । ଆପଣ ଏକ ବୁଦ୍ଧିମାନ ପୁରୁଷ ହେବେ ତଥା ଦାନ ଶୀଳତା ର ପ୍ରବୃତ୍ତି ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ନିତ୍ୟ ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ସହନ ଶୀଳତା ର ଭାବ ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଯୁକ୍ତ ରହିବେ । ଆପଣ ନିଜର ସବୁ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ପ୍ରାୟଶ୍ଚ ସଫଳତା ହିଁ ଅର୍ଜିତ କରିବେ । ଆପଣ ଙ୍କ ଶାରୀରିକ କାନ୍ତି ଦର୍ଶନୀୟ ରହିବ ତଥା ମୁଖାକୃତି ସୁନ୍ଦର ଏବଂ ଆକର୍ଷକ ହେବ । ସମାଜ ରେ ଆପଣ ଏକ ଆଦରଣୀୟ ଏବଂ ଶୁଭେୟ ପୁରୁଷ ବୁଝା ଯିବେ । ଆପଣ ବିସ୍ତୃତ ପରିବାର ର ମଧ୍ୟ ସ୍ତ୍ରୀମୀ ହେବେ । ନିଜ ସମ୍ପ୍ରାଣୀ ରେ ଆପଣ ନିତ୍ୟ ପ୍ରିୟ ଏବଂ ମଧୁର ବାଣୀ ର ଉପଯୋଗ କରିବେ ତଥା ସବୁ ପ୍ରକାର ର ସାଂସାରିକ ସୁଖ କୁ ପ୍ରସନ୍ନତା ପୂର୍ବକ ଉପଭୋଗ କରିବେ । ବିଦ୍ୟା ଅଧ୍ୟୟନ ରେ ଆପଣ ରୁଚିଶୀଳ ରହିବେ ତଥା ଏକ ବିଦ୍ୱାନ ଙ୍କ ରୂପ ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଖ୍ୟାତି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ କହିବା କୁ ପସନ୍ଦ କରିବେ ।

ମେଷ ରାଶି ମେ ପୈଦା ହୋନେ କେ କାରଣ ଆପ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ମେ ଭୋଜନ କରନେ ବାଲେ ହୋଙ୍ଗେ। ତଥା ଆପ ଅପନେ ଅନ୍ୟ ଭାଇ-ବହୁନୋ ମେ ଅକେଲେ ଶ୍ରେଷ୍ଠ ରହେଙ୍ଗେ।

ମେଷସ୍ଥେ ଯଦି ଶାତଗେଶ ଚ୍ଚ ଲୟୁଭୁକ୍ କାମୀ ମହୋତ୍ଥାଗ୍ରଜେ । ।
ଜାତକପରିଜାତ:

ଆପକା ଶରୀର ତାମ୍ରବର୍ଣ୍ଣ କେ ସମାନ ଗୋରବର୍ଣ୍ଣ କା ହୋଗା ତଥା ଆଖେ ଲାଲିମା ଯୁକ୍ତ ଗୋଲାକାର ହୋଙ୍ଗା । ଆପକେ ସିର ପର କିସୀ ଚୋଟ ଯୁ ଘାବ କା ନିଶାନ ହୋ ସକତା ହେ ।

ସିର ପର ଅଳ୍ପ କେଶ ହୋଙ୍ଗେ ତଥା ହାଥ ପୈର କମଳ କୀ କାନ୍ତି କେ ସମାନ ସୁନ୍ଦର ହୋଙ୍ଗେ। ଜଲ ସେ ଆପ ସ୍ୱଭାବିକ ରୂପ ସେ ଭୟ କରେଙ୍ଗେ। ଧନ କୋ ଆପ ସମ୍ପନ୍ନ ସମଝେଙ୍ଗେ ତଥା ଉସେ ଇସସେ ଭୀ ଅଧିକ ମହତ୍ତ୍ୱ ପ୍ରଦାନ କରେଙ୍ଗେ। ସାହସ ଏବଂ ବୁଦ୍ଧି କା ଆପକେ ପାସ ଅଭାବ ନହୁଁ ହୋଗା ଜେ ଭୀ କାର୍ଯ୍ୟ କରେଙ୍ଗେ ସାହସ ତଥା ବୁଦ୍ଧିବଲ ସେ ଉସେ ପୁର୍ଣ୍ଣ କରେଙ୍ଗେ। ପୁତ୍ରୋ, ସହଯୋଗିୟୋ ତଥା ମିତ୍ରୋ କୀ ଆପକେ ପାସ କଭୀ ଭୀ କମୀ ନହୁଁ ହୋଗା। ଯେ ବତ.1 ସଙ୍ଗା ମେ ଆପକେ ସାଥ ହମେଶା ରହେଙ୍ଗେ। ସ୍ତ୍ରୀ ବର୍ଣ୍ଣ ସେ ଆପ ପରାଜିତ ରହେଙ୍ଗେ। ଆପକା ବ୍ୟବହାର ଅନ୍ୟ ଲୋଗୋ କେ ପ୍ରତି ଭୀ ସ୍ନେହଶୀଳ ରହେଗା । ଜିସସେ ଆପ ସମାଜ ମେ ମାନ ସମ୍ପନ୍ନ ତଥା ଆଦର ପ୍ରାପ୍ତ କରେଙ୍ଗେ।

ସେଶବବର୍ଣ୍ଣାତ୍.ଗ: ସ୍ଥିରସ୍ତ: ସହଜବିରହିତ: ସାହସୀ ମାନଭଦ୍ର: ।
କାମାର୍ତ୍ତ: କ୍ଷାମଜାନୁ: କୁନଖତନୁକଚ୍ଚକ୍ଷତ୍ତଲୋ ମାନବିଭ: । ।
ପଦ୍ମାଭୈ: ପାଣିପାଦୈବିତତ ସୁତଜନୋ ବର୍ତ୍ତୁଲକାରନେତ୍ର: ।
ସସ୍ନେହତୋୟଭାରୁ ବୃଣବିକୃତଶିରା: ସ୍ତ୍ରୀଜିତୋ ମେଷ ଇନ୍ଦେଶ: । ।

ସାରାବଳୀ



ଆପ ଶୀଘ୍ର ହୀ ନାରାଜ ହୋ ଜାଏଙ୍ଗେ ପରନ୍ତୁ ଜଳଦୀ ପ୍ରସନ୍ନ ଭୀ ହୋ ଜାଏଙ୍ଗେ ଯୁଦ୍ଧ ଆପକୀ ସ୍ଵାଭାବିକ ପ୍ରକୃତି ହୋଗୀ । ଆପ ଭ୍ରମଣ ପ୍ରିୟ ହୋଙ୍ଗେ ତଥା ସୈର ସପାଚା କରନା ଆପକୋ ଅଛା ଲଗେଗା । ଆପକୀ ହସେଲୀ ମେ ଶୋର୍ଯ୍ୟ ସୁବୁକ ଚିହ୍ନ ଯଥା ଚକ୍ର ପତାକା ଆଦି ହୋ ସକତେ ହେଁ । ଆପ ସ୍ତ୍ରୀୟେ କେ ଅତି ପ୍ରିୟ ତଥା ସମ୍ମାନନୀୟ ହୋଙ୍ଗେ । ଦୁସରେ ଲୋଗୋ କୀ ସେବା କରନା ତଥା ଉଦ୍ଧେ ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରନା ଆପ ଅପନା ବିଶିଷ୍ଟ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ସମସ୍ତେଙ୍ଗେ ବାହେ ଆପକୀ ପରିସ୍ଥିତିୟା କୈସୀ ହୀ ହୋ ଇସକୀ ଆପ ଚିନ୍ତା ନହୀ କରେଙ୍ଗେ ।

ବୃତାତାମୃତୁଗୁଷ୍ଠାକଲୟୁଭୁକ୍ ସିପ୍ରପ୍ରସାଦୋତନଃ ।
କାମୀ ଦୁର୍ବଲଜାନୁରାକ୍ଷିରଧନଃ ଶୁଭୋତ୍ତନା ବଲୁଭଃ । ।
କୁନଶୀ ବ୍ରଣାତ୍ କତଶିରା ମାନୀ ସହୋତ୍ଥାଗ୍ରଜଃ ।
ଶକ୍ତ୍ୟାପଶିତଲେତତୋଳତି ଚପଲସ୍ତୋୟେ ଚ ଭାରୁଃ କ୍ରିୟେ । ।
ବୃହଜ୍ଞାତକମ୍

ଧନ କୋ ଅନାବଶ୍ୟକ ମହତ୍ ପ୍ରଦାନ କରନା ସେ ଆପକେ ବୁଦ୍ଧି ତଥା ଶ୍ରେଷ୍ଠ ସମ୍ପତ୍ତୀ ଅସବୁଷ୍ଟ ହୋଙ୍ଗେ । ଇସକେ ଫଳସ୍ଵରୂପ ଯୁ ତୋ ବେ ଆପସେ ଅଲଗ ହୋ ସକତେ ହେଁ ଯୁ ଆପ ଖୁଦ ଉନସେ ଅଲଗ ହୋଙ୍ଗେ । ଆପକେ ଘର କେ ସାରେ କାର୍ଯ୍ୟ ଚୁକ୍ତି ଅପନୀ ପତ୍ନୀ କେ ସଲହ ସେ ହୀ ସ-ନ ହୋଙ୍ଗେ ତଥା ଦୁସରେ ଲୋଗୋ କୀ ରାୟ କୋ କୋଇ ମହତ୍ ନହୀ ଦେଙ୍ଗେ । ଅତଃ ଯୁଦ୍ଧ ଭୀ ଏକ ଅଲଗାବ କା ମୁଖ୍ୟ କାରଣ ବନେଗା । ଧନ ପୁତ୍ର ତଥା ବୈଭବ ସେ ଆପ ହମେଶା ଯୁକ୍ତ ରହେଙ୍ଗେ ତଥା ସମାଜ ମେ ଅପନେ ବୈଭବ ସେ କୀର୍ତ୍ତି ପ୍ରାପ୍ତ କରେଙ୍ଗେ ।

କ୍ଷିରଧନୋଃ ରହିତଃ ସୁଜନୈର୍ନରଃ ସୁତୟୁତଃ ପ୍ରମଦା ବିଜିତୋ ଭବେତ ।
ଅଜଗତୋ ଦୁଜରାଜ ଇତାରିତଂ ବିଭୂତୟାଦ୍ଭୂତୟା ସୁସୁକୀର୍ତ୍ତଭାକ୍ । ।
ଜାତକାଭରଣମ୍

ଭ୍ରମଣ କେ ଲିଏ ଆପ ଯୈସେ ସ୍ଥାନ ପର ଜାନା ପସନ୍ଦ କରତେ ହେଁ ଜୋ ଅଗମ୍ୟ ହୋ ଅର୍ଥାତ୍ ଜହୀ ଆସାନୀ ସେ ନହୀ ପହୁଁଚା ଜା ସକତା ହୋ । ସାମାଜିକ ସମ୍ପତ୍ତୀ ଭୀ ଆପକେ ବିଚ୍ଛିତ ହୋଙ୍ଗେ । ଅତଃ ଅବସରାନୁକୂଳ ଆପ ଅଭକ୍ଷ୍ୟ ପଦାର୍ଥୋ ଅର୍ଥା ଚ ମାସ୍ତ, ମଦିରା ଆଦି କା ଭୀ ଭକ୍ଷଣ ଯୁ ସେବନ କର ସକତେ ହେଁ ।

ମେଷେ ତ୍ଵଗମ୍ୟାଗମନପ୍ରିୟଃ ତ୍ଵଭକ୍ଷ୍ୟଭକ୍ଷୟୋଃ ।
ବୃହସ୍ପୀରାଶର ହୋରାଶାସ୍ତ୍ର

ଆପକେ ସ୍ଵଭାବ ମେ କଭୀ କଭୀ ଉଗ୍ରତା କୀ ଝଲକ ଭୀ ଦେଖନେ କୋ ମିଲେଗୀ । ଲେକିନ ଜବ କଭୀ ଆପ ଅନାବଶ୍ୟକ ଉଗ୍ରତା କା ପ୍ରଦର୍ଶନ କରେଙ୍ଗେ ଆପକେ ଲିଏ ସମସ୍ୟାଏ ଉପ୍ସନ୍ନ ହୋଙ୍ଗେ । ଆପକୀ ପ୍ରକୃତି ବୃକ୍ଷଲ ହୋଗୀ ତଥା ମୋକା ପତ୍ରନେ ପର ଆପ ମିଥ୍ୟା ଭାଷଣ ଭୀ କରେଙ୍ଗେ ।

ବୃତେଷଶୋ ଦୁର୍ବଲଜାନୁରୁଗ୍ଣୋ ଭାରୁଜର୍ଲେ ସ୍ୟାଲୁୟୁଭୁକ୍ ସୁକାମୀ ।
ସଞ୍ଚାରଶୀଲକ୍ଷପଲୋତନୁତୋକ୍ତି ବ୍ରଣାତ୍ କତାତ୍ତନଃ କ୍ରିୟରେ ପ୍ରଜାତଃ । ।
ଫଳଦୀପିକା

ଘୋରିକ କ୍ରିୟାଏ ଆପକୋ ରୁଚିକର ଲଗେଗୀ । ଆପକେ ସିର ମେ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ମେ କେଶ ହୋଙ୍ଗେ । ପିତ୍ତ ଯୁ ଗରମୀ ପ୍ରଦାନ କରନେ ବାଲେ ପ୍ରଦାର୍ଥୋ କା ପରହେଜ ରଖେ ନହୀ ତୋ ମହିଷ ବିକାର କା ଭୀ ଘୋଗ ବନତା ହେଁ । ସାଥ ହୀ ଶରୀର କୀ ସୁରକ୍ଷା କା ଭୀ ପୁରା ଧ୍ୟାନ ରଖେ ।

ଭବତି ବିକଳକେଶୋ ଯୋଗକର୍ମାନୁଶୀଲୋ ।



ନ ଭବତି ସୁସମୃଦ୍ଧୋ ନୈବ ଦାରିଦ୍ର୍ୟଃ କ୍ଷୁଦ୍ରଃ । ।

ବ୍ରହ୍ମତି ଚ ସବିକାରଂ ଭୂତିକ୍ଷୁଦ୍ରଃ ପ୍ରଲାପୀ ।

ସମ୍ଭବତି ପୁରୁଷୋଳକ୍ଷ୍ଣଂ ମେଷ ରାଶେଶା । ।

ଜାତକ ଦୀପିକା

ଆପକା ଜନ୍ମ ମନୁଷ୍ୟ ଗଣ ମେଂ ହୁଅ ହେଁ । ଅତଃ ଆପ ଧାର୍ମିକ ପ୍ରବୃତ୍ତି କେ ବ୍ୟକ୍ତି ହୋଇଲେ । ବ୍ରାହ୍ମଣମଣେ ତଥା ଦେବ ତାଥୋ କୀ ଆପ ଶୁଦ୍ଧାପୂର୍ବକ ସେବା କରେଇେ । ଅଭିମାନ ଭୀ ଆପକେ ସ୍ୱଭାବ ମେଂ ରହେଗା । ଧନ କୀ ଆପକେ ପାସ କମୀ ନହୁଂ ରହେଗୀ । ଦୟା କା ଭାବ ଆପକେ ଅନ୍ତଃକରଣ ମେଂ ବିଦ୍ୟମାନ ରହେଗା ତଥା ଦୀନ ଦୃଷ୍ଟିୟୋ କେ ପ୍ରତି ଆପ ବିଶେଷ ରୂପ ସେ ଦ ଯୁଲୁ ରହେଇେ । ଆପ ଶରୀର ସେ ବଲିଷ୍ଠ ରହେଇେ । ଆପ କଲ କଲାଥୋ ଯୁ କାର୍ଯ୍ୟେ ମେଂ ନିପୁଣ ହୋ ସକତେ ହେଁ । ଜ୍ଞାନାର୍ଜନ ମେଂ ଆପକୀ ଗହନ ରୁଚି ହୋଗୀ । ଶରୀର ଆପକା କାନ୍ତିପୁଲ୍ଲ ରହେଗା ତଥା ଆପକେ ଦ୍ୱାରା କଲ ଲୋଗୋଂ କୋ ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଗା ।

ଲୋଲନେତ୍ରଃ ସଦା ରୋଗୀ, ଧର୍ମାର୍ଥକୃତ ନିଷ୍ଠୟଃ ।

ପୃଥୁଜଡ଼,ଘଃ କୃତଘନଞ୍ଜ ନିଷ୍ଠପୋ ରାଜପୁଞ୍ଜିତଃ । ।

କାମିନୀହୃଦୟାନନ୍ଦୋ ଦାତା ଭୀତୋ ଜଲଦପି ।

ଚଣ୍ଡକର୍ମୀ ମୃଦୁକ୍ଷେତ୍ରେ ମେଷରାଶେଶା ଭବେନ୍ନରଃ । ।

ମାନସାଗରା

ମାନ ସମ୍ପନ୍ନ ସେ ଆପ ହମେଶା ପରିପୁର୍ଣ୍ଣ ରହେଇେ ତଥା ଆଜୀବନ ବିପୁଲ ଧନ କେ ସ୍ୱାମୀ ବନେ ରହେଇେ । ଆଖ୍ୟୋ ଆପକୀ ବତଃ ବତଃ ହୋଇେ ତଥା ନିଶାନେବାଜୀ ମେଂ ସିଦ୍ଧହସ୍ତ ହୋଇେ । ଶରୀର କା ବର୍ଣ୍ଣ ଗୋରବର୍ଣ୍ଣ ହୋଗା ତଥା ନଗରବାସିୟୋ କୋ ଆପ ବଶ ମେଂ କରନେ ବାଲେ ହୋଇେ । ଆପ ନଗର କେ ସମ୍ପନ୍ନୀୟ ନେତା ଯୁ ଅଧିକାରୀ ଭୀ ହୋ ସକତେ ହେଁ ।

ଦେବିଦୁର୍ଜାର୍ତ୍ତଭିରତୋଭିମାନୀ ଦୟାଲୁର୍ବଲବାନ କଲାଞ୍ଜଃ ।

ପ୍ରାଞ୍ଜଃ ସୁକାନ୍ତି ସୁଖଦୋ ବହୁନାଂ ମର୍ତ୍ୟାଭବେ ମର୍ତ୍ୟଗଣେ ପ୍ରସୂତଃ । ।

ଜାତକାଭରଣମ୍

ଅର୍ଥାତ୍ ମନୁଷ୍ୟ ଗଣ ମେଂ ଉତ୍ପନ୍ନ ଜାତକ ବ୍ରାହ୍ମଣ ତଥା ଦେବତାଥୋ କା ଭକ୍ତ, ଅଭିମାନୀ, ଦୟାଲୁ, ବଲବାନ, କଲା କା ଜ୍ଞାତା, ବିଦ୍ୱାନ, କାନ୍ତିପୁଲ୍ଲ ତଥା ବହୁତ ସେ ମନୁଷ୍ୟୋ କୋ ସୁଖ ତଥା ଆଶ୍ରୟ ପ୍ରଦାନ କରନେ ବାଲା ହୋତା ହେଁ ।

ଗଜଘ୍ରେନି ମେଂ ଜନ୍ମ ଲେନେ କେ କାରଣ ଆପ ରାଜା କେ ପ୍ରିୟ ହୋଇେ ଅର୍ଥାତ୍ ବଡେ ବଡେ ମନ୍ଦିୟୋ ତଥା ଅଧିକାରିୟୋ ସେ ଆପକେ ମିତ୍ରତାପୁର୍ଣ୍ଣ ସମ୍ପନ୍ନ ହୋଇେ ତଥା ବେ ସବ ଆପକା ସମ୍ପନ୍ନ କରେଇେ । ଆପ ଆତ୍ମବଲ, ବାହୁବଲ ତଥା ବୁଦ୍ଧିବଲ ସେ ସୁଶୋଭିତ ରହେଇେ ତଥା ଅପନେ ସାରେ କାର୍ଯ୍ୟ ଆପ ଅପନେ ହୀ ବଲ ପର ସୁସ-ନ୍ନ କରେଇେ । ସମସ୍ତ ଭୌତିକ ତଥା ସାଂସାରିକ ସୁଖୋଂ କା ଆପ ଉପଭୋଗ କରେଇେ । ଆପ କିସୀ ମନ୍ତ୍ରୀ ଯୁ ଉଚ୍ଚାଧିକାରୀ କେ ସହଯୋଗୀ ଯୁ ଶୁଭ ଭୀ ଉଚ୍ଚାଧିକାରୀ ହୋ ସକତେ ହେଁ । ଆପକୀ ପ୍ରବୃତ୍ତି ଉତ୍ସାହୀ ରହେଗୀ ତଥା ଇସୀ ପ୍ରବୃତ୍ତି ସେ ଆପ ଭନ୍ନତ ଶିଖର ପର ପହୁଡ଼େଇେ ।

ରାଜମାନ୍ୟୋ ବଲା ରୋଗୀ ଭୂପସ୍ଥାନ ବିଭୂଷଣଃ ।

ଆତ୍ମୋତ୍ସାହୀ ନରୋ ଜାତଃ ଗଜଘ୍ରେନେନ ନ ସଂଶୟଃ । ।

ମାନସାଗରା

ଅର୍ଥାତ୍ ଗଜଘ୍ରେନି ମେଂ ଉତ୍ପନ୍ନ ଜାତକ ରାଜମାନ୍ୟ, ବଲା, ରୋଗୀ, ରାଜ୍ୟସ୍ଥାନ କୋ ସୁଶୋଭିତ କରନେ ବାଲା ତଥା ଉତ୍ସାହୀ ହୋତା ହେଁ ।



ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ଚନ୍ଦ୍ରମା ଦ୍ଵିତୀୟ ଭାବରେ ଛିଡ଼ି ଅଛି । ଅର୍ଥାତ୍ ଆପଣଙ୍କ ମାତା ଙ୍କ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ଏବଂ କୌଣସି ବିଶେଷ ଶାରୀରିକ ରୁଗଣତା ରହିବ ନାହିଁ । ସେ ଆପଣଙ୍କୁ ସବୁ ବେଳେ ଧନାର୍ଜନ ଏବଂ ବିଦ୍ୟାଧ୍ୟୟନ ସମ୍ପନ୍ନା କାର୍ଯ୍ୟରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ପାରିବାରିକ ଉନ୍ନତି ଏବଂ ପାଳନ କରିବାରେ ମଧ୍ୟ ତାଙ୍କର ମୁଖ୍ୟ ଭୂମିକା ରହିବ । ବେଳେ ବେଳେ ସେ ଆପଣଙ୍କୁ ନୈତିକ ଶିକ୍ଷା ମଧ୍ୟ ଦେବେ ତଥା ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ତାଙ୍କ ହୃଦୟରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ବାସ୍ତବ୍ୟ ର ଭାବ ରହିବ । ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ଜୀବନରେ ଅନେକ ମହତ୍ଵପୁର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟର ସିଦ୍ଧି ଆପଣ ତାଙ୍କ ସହଯୋଗ ଦ୍ଵାରା ହିଁ କରିବେ ।

ଆପଣଙ୍କ ମଧ୍ୟ ମାତା ଙ୍କ ପ୍ରତି ହାର୍ଦ୍ଦିକ ଶ୍ରଦ୍ଧା ରହିବ ଏବଂ ତାଙ୍କର ଆଜ୍ଞା ପାଳନ କରିବାରେ ଆପଣ ଗୌରବ ର ଅନୁଭୂତି କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଜୀବନରେ ସର୍ବ ପ୍ରକାରର ତାଙ୍କର ସେବା କରିବାକୁ ଆପଣ ନିଜର କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ବୁଝିବେ ତଥା ସମୟାନୁସାରେ ତାଙ୍କୁ ଆର୍ଥିକ ସହଯୋଗ ମଧ୍ୟ ପ୍ରଦାନ କରୁଥିବେ । ଅର୍ଥାତ୍ ଆପଣଙ୍କ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ମଧୁର ରହିବ ଏବଂ ଜୀବନରେ ଜଣେ ଅନ୍ୟର ସହାୟତା ଏବଂ ସହଯୋଗର ଆଦାନ ପ୍ରଦାନ କରି ସୁଖାନୁଭୂତି କରିବେ ।

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଦ୍ଵାଦଶ ଭାବରେ ଛିଡ଼ି ଅଛି । ଅର୍ଥାତ୍ ଆପଣଙ୍କ ପିତା ଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ସାମାନ୍ୟ ରୂପରେ ଭଲ ରହିବ ଏବଂ ବେଳେ ବେଳେ ଶାରୀରିକ ଅସୁସ୍ଥତା ମଧ୍ୟ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ତାଙ୍କ ମନରେ ସ୍ନେହର ଭାବ ରହିବ । ଧନ ସମ୍ପତ୍ତିରେ ସେ ପ୍ରାୟଶ୍ଚୟ ଯୁକ୍ତ ହିଁ ରହିବେ ଏବଂ ଜୀବନରେ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ଵପୁର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟରେ ଆପଣଙ୍କୁ ନିତ୍ୟ ନିଜର ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରୁଥିବେ । ଦାନଶୀଳତା ର ପ୍ରକୃତିରେ ସେ ଯୁକ୍ତ ରହିବେ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କୁ ମଧ୍ୟ ପୁନ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟକୁ କରିବାରେ ନିତ୍ୟ ପ୍ରେରଣା ପ୍ରଦାନ କରୁଥିବେ ।

ଆପଣଙ୍କ ମଧ୍ୟ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ମନରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ଆଦରର ଭାବ ରହିବ ଏବଂ ସମୟ ଅନୁସାରେ ତାଙ୍କର ଆଜ୍ଞାକୁ ଆପଣ ଅନୁପାଳନ କରୁଥିବେ । ଆପଣଙ୍କ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଭଲ ରହିବ ପରନ୍ତୁ ବେଳେ ବେଳେ ମଝିରେ ସୈଦ୍ଧାନ୍ତିକ ମତଭେଦ ମଧ୍ୟ ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣରେ ତନାବ କିମ୍ବା କରୁତା ଆସିବ କିନ୍ତୁ କିଛି ସମୟ ପରେ ଆପେ ଆପେ ହିଁ ସବୁ କିଛି ଠିକ୍ ହୋଇ ଯିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଜୀବନରେ ସବୁ ବେଳେ ତାଙ୍କର ସହଯୋଗ ଏବଂ ସହାୟତା କରିବା ପାଇଁ ସର୍ବଦା ତତ୍ପର ରହିବେ ଏବଂ ତାଙ୍କୁ କୌଣସି ମଧ୍ୟ ପ୍ରକାରର କଷ୍ଟ ହେବାକୁ ଦେବେ ନାହିଁ । ତଥା ସମୟ ଅନୁସାରେ ଆର୍ଥିକ କିମ୍ବା ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାରର ବାଞ୍ଛିତ ସହଯୋଗ ମଧ୍ୟ ପ୍ରଦାନ କରିବେ ।

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ସମୟରେ ମଙ୍ଗଳ ଦ୍ଵିତୀୟ ଭାବରେ ଛିଡ଼ି ଅଛି । ଅର୍ଥାତ୍ ଆପଣଙ୍କ ଭାଇ ଭଉଣୀ ଙ୍କ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ମଧ୍ୟମ ରହିବ ଏବଂ ବେଳେ ବେଳେ ସେ ଶାରୀରିକ ରୂପେ ବ୍ୟାକୂଳତା ର ଅନୁଭୂତି ମଧ୍ୟ କରୁଥିବେ । ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ତାଙ୍କ ମନରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସ୍ନେହ ଭାବ ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ । ଧନାର୍ଜନ ଏବଂ ବିଦ୍ୟାର୍ଜନ ସମ୍ପନ୍ନା କାର୍ଯ୍ୟରେ ସେ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଜୀବନରେ ଅନ୍ୟ ମହତ୍ଵପୁର୍ଣ୍ଣ ଏବଂ ଶୁଭ କାର୍ଯ୍ୟରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ତାଙ୍କର ପୁର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ଏବଂ ସଦ୍ଭାବ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ।

ଆପଣଙ୍କ ମନରେ ମଧ୍ୟ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ପୁର୍ଣ୍ଣ ସ୍ନେହର ଭାବନା ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ମଧୁର ହେବ ପରନ୍ତୁ ବେଳେ ବେଳେ ସେଥିରେ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ମତଭେଦର କାରଣ ଅନିଶ୍ଚିତ ସମୟ ପାଇଁ କରୁତା କିମ୍ବା ତନାବର ବାତାବରଣ ହେବ । ଜୀବନରେ ଆପଣ ସବୁ ବେଳେ ଭାଇ ଭଉଣୀ ଙ୍କ ସୁଖ ଦୁଃଖରେ ଧ୍ୟାନ ରଖିବେ ତଥା ନିଜ ଆତ୍ମ ସବୁ ବେଳେ ତାଙ୍କୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ଆର୍ଥିକ ଏବଂ ଅନ୍ୟ ରୂପରେ ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରୁଥିବେ ।

କାର୍ତ୍ତିକ ମାସ, ପ୍ରତିପଦା, ଷଷ୍ଠୀ, ଏକାଦଶୀ ତିଥିୟା ଶୁକ୍ଳ ତଥା କୃଷ୍ଣ ଦୋନୋ ପକ୍ଷୋ କୀ, ମଦା ନକ୍ଷତ୍ର, ରବିବାର, ବିଷ୍ଣୁ ଯୋଗ, ପ୍ରଥମ ପ୍ରହର ତଥା ମେଷ ରାଶିର ଚନ୍ଦ୍ରମା ଯୁକ୍ତ ସମୟ ଆପଣଙ୍କୁ ଲିଏ ଅଶୁଭ ହିଁ ଅତଃ ଆପଣ ୧୫ ଅକଟବର ସେ ୧୪ ନବମ୍ବର କେ ମଧ୍ୟ, ପ୍ରତିପଦା, ଷଷ୍ଠୀ, ଏକାଦଶୀ ତିଥିୟା ତଥା ମଦା ନକ୍ଷତ୍ର ଏବଂ ବିଷ୍ଣୁ ଯୋଗ ମେଂ କୋଇ ଭୀ ଶୁଭ କାର୍ଯ୍ୟ ନ କରେ । ଇସସେ ଲାଭ କେ ସ୍ଥାନ ପର ହାନି ହୀ ହୋଗୀ । ସାଥ ହୀ ରବିବାର ପ୍ରଥମ ପ୍ରହର ତଥା ମେଷରାଶିର ଚନ୍ଦ୍ରମା ମେଂ ଭୀ କୋଇ ଶୁଭ କାର୍ଯ୍ୟ ନ କରେ ଅନିଷ୍ଟ ହୀ ହୋଗୀ ତଥା ଇନ ଦିନୋ ଶରୀର କୀ ସୁରକ୍ଷା କା ଭୀ ପୁରା ଧ୍ୟାନ ରଖେ ।

ଜବ ସମୟ ଆପଣଙ୍କୁ ଲିଏ ଅନୁକୂଳ ନ ଲାଗୁ ରହା ହୋ ମାନସିକ ତଥା ଶାରୀରିକ ବିକଳତା କା ଅହସାସ ହୋ ରହା

ହୋ, ବ୍ୟାପାର ମେଂ ହାନି, ନୋକରା ଯୁ ପଦୋନ୍ନତି ମେଂ ବ୍ୟବଧାନ ହୋ ରହା ହୋ ତୋ ଖେସେ ସମୟ ମେଂ ଆପ କୋ ଅପନେ ଇଷ୍ଟ ଶ୍ରୀ ହନୁମାନ ଜୀ କୀ ଆରାଧନା କରନୀ ଚାହିଏ । ସାଥ ହୀ ସୋନା, ତାମ୍ବା, ଚୈତ୍ତୁ, ଗୁଡ଼., ଘୀ, ଲାଲ ବସ୍ତ୍ର, ରଜ୍ଜ ବସ୍ତ୍ର ଆଦି ପଦାର୍ଥୋ କା ଦାନ କରନା ଚାହିଏ । ତଥା ସାଥ ହୀ ମଙ୍ଗଲ କେ ତାହାୟ ମନ୍ତ୍ର କେ ୭୦୦୦ ଜପ କରବାନେ ଚାହିଏ । ଇସସେ ଆପକୋ ମାନସିକ ଶାନ୍ତି ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଗୀ ତଥା ଅଶୁଭ ଫରଲ୍ କେ ପ୍ରଭାବ ମେଂ ଭୀ ନ୍ୟୁନତା ଆସଗୀ । ସାଥ ହୀ ମଙ୍ଗଲବାର କେ ଉପବାସ କରନେ ସେ ଭୀ ଶୁଭ ଫଲ ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଙ୍ଗେ ।

ଉଁ କ୍ରୀଁ କ୍ରୀଁ କ୍ରୀଁ ସଃ ଭୋମାୟ ନମଃ ।

ମନ୍ତ୍ର- ଓଁ ଶ୍ରୀଁ ଭୋମାୟ ନମଃ ।



ଲାଲ ବହିର ଅନୁସାରେ ରଣ ଭାର

କୁଣ୍ଡଳି ରେ ଖରାପ ଗ୍ରହର କାରଣ କେତେ ପ୍ରକାର ରଣ ହୋଇଥାଏ । ଅର୍ଥାତ୍ କେତେ ପ୍ରକାର ରଣ ଭାର ଜାତକ ର ଉପରେ ରହିଥାଏ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଜାତକ ର ଜୀବନ ବୃଦ୍ଧିରେ ବାଧା ହୋଇଥାଏ । କାରଣ ଖରାପ ଗ୍ରହ ର ଦୋଷ ଯୁକ୍ତ ପ୍ରଭାବରେ ଶୁଭ ଗ୍ରହ ଭି ଅନୁକୂଳ ଫଳ ଦେବା ବନ୍ଦ କରିଦେଇଥାଏ । ଏଥି ପାଇଁ ରଣ ଭାର ରୁ ଜାତକ କୁ ଅଲଗା ହେବା କୁ ପଡ଼ିଥାଏ । ତାହା ହେଲେ ଶେଷ ଜୀବନ ଉପରେ ଶୁଭ ବା ଭଲ ଗ୍ରହର ଭଲ ପ୍ରଭାବ ପଡ଼ିବା ଦ୍ୱାରା ଲଗ୍ନ ଅନୁସାରେ ଶୁଭ ଫଳ ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇଥାଏ । ନିମ୍ନ ରଣ ଅନୁସାରେ କେଉଁ ପରିସ୍ଥିତିରେ ଜାତକ ଉପରେ ଅଦୃଶ୍ୟ ରଣ ପଡ଼ିଥାଏ ତଥା ତାହାର ନିରାକରଣ ଅନୁକୂଳିତ କରାଯାଇଥାଏ ।

ସ୍ୱରଣ

ଗ୍ରହ ସ୍ଥିତି :

ଯଦି ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ପଞ୍ଚମ ସ୍ଥାନରେ ଶୁକ୍ର କିମ୍ବା ଶନି କିମ୍ବା ରାହୁ କିମ୍ବା ତିନୋଟି ମଧ୍ୟରୁ ଯଦି ଦୁଇଟି କିମ୍ବା ତିନୋଟି ଜାକ ଗ୍ରହ ସ୍ଥିତ ହୋଇ ଥାଏ, ତାହା ହେଲେ ସ୍ୱରଣ ହୋଇ ଥାଏ ।

ସୂଚନା :

ଆପଣଙ୍କୁ ରାଜ ଭୟ ନିଦୋଷି ହୋଇ ଥିଲେ ମଧ୍ୟ ମକଦ୍ଦମା ରେ ଦଣ୍ଡ କିମ୍ବା ଜରିମାନା ଭୋଗୀ ବାକ୍ସ ପଡ଼ି ଥାଏ । ଦୁର୍ଦ୍ଦୟ ରୋଗ, ହାତ ଗୋଡ଼ ରେ ବଥା, ଶାରୀରିକ କମଜୋର, ଆଖି ରେ କଷ୍ଟ ଜୀବନ ଖରାପ ହୋଇ ଥାଏ ।

ଘଟଣା :

ଜାତକ ନାସ୍ତିକ ହୋଇ ଯାଇ ଥାଏ, ଧର୍ମ ର ଅପେକ୍ଷା କରି ଥାଏ, ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଅନୁକୂଳ ରହି ନଥାଏ, ପୂର୍ବ ପୁରୁଷ ଜ୍ଞ ରୀତି-ନୀତି ଅନୁସାରେ ଚାଲି ନଥାଏ ।

ସାରାସଂ

ଆପଣଙ୍କ ପତ୍ନୀ ସ୍ୱରଣ ରୁ ମୁକ୍ତ ଅଟେ ।

ମାତୃ ରଣ

ଗ୍ରହ ସ୍ଥିତି :

ଯଦି ଜାତକ ର ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନରେ କେତୁ ସ୍ଥିତ ହୋଇ ଥାଏ, ତାହା ହେଲେ ମାତୃ ରଣ ର ବୋଧ ହୋଇ ଥାଏ ।

ସୂଚନା :

ଜାତକ କୁ କୌଣସି ସହାୟତା ମିଳି ନ ଥାଏ, ତାହାର ସବୁ ପ୍ରୟାସ ନିଷ୍ଫଳ ହୋଇ ଥାଏ । ସରକାରୀ ଦଣ୍ଡ କିମ୍ବା ଜରିମାନା ଭୋଗୀ ବାକ୍ସ ପଡ଼ି ଥାଏ । ଜୀବନ ଅଶାନ୍ତି ରେ ବ୍ୟତୀତ ହୋଇ ଥାଏ, ଅନ୍ୟ ର ଇଚ୍ଛା ଖରାପ କରିବା କିମ୍ବା ଜୋତା ଡୋରେଇବା, ବିଦ୍ୟା ର ଲାଭ ନ ମିଳିବା । ବନ୍ଧୁ ବାନ୍ଧବ ଜ୍ଞ ବେମାର ଉପରେ ଧନ ର ଅପବ୍ୟୟ ଆଦି ଅଶୁଭ ଫଳ ହୋଇ ଥାଏ ।

ଘଟଣା :

ମାତୃ ରଣ ରେ ପ୍ରଭାବିତ ଜାତକ ମାତା ଜ୍ଞ ସହିତ ଦୁଃଖବହାର କରି ଥାଏ । ମାତା ଜ୍ଞ ସୁଖ-ଦୁଃଖ ର ଧ୍ୟାନ ରଖି ନ ଥାଏ । ମାତା ଜ୍ଞ ଠାରୁ ଦୂର ରେ ରହେ କିମ୍ବା ମାତା ଜ୍ଞ ଘରୁ ବାହାରକୁ କାଢ଼ି ଦେଇ ଥାଏ । ମାତୃ ରଣ ବାଲା ଜାତକ ର ଘର ପାଖରେ କିମ୍ବା ଘରେ କୁଅଁ ଥିବ । ଘର ପାଖରେ ଜଳାଶୟ ଥିବ । ସେହି କୁଅଁ ରେ ଅଶନା ଭାଳା ଯାଉ ଥିବ କିମ୍ବା ଜଳାଶୟ କୁ ଖରାପ କରୁ ଥିବ ।

ସାରାଂଶ

ଆପଣଙ୍କ ପତ୍ନୀ ମାତୃ ରଣ ରୁ ମୁକ୍ତ ଅଟେ ।

ପାରିବାରିକ ରଣ

ଗୃହ ସ୍ଥିତି :

ଜାତକ ର ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ପ୍ରଥମ କିମ୍ବା ଅଷ୍ଟମ ସ୍ଥାନ ରେ ବୃଧ କିମ୍ବା କେତୁ କିମ୍ବା ଦୁହେଁ ସ୍ଥିତ ହୋଇ ଥାନ୍ତି, ତାହା ହେଲେ ବନ୍ଧୁ ବାନ୍ଧବ ଙ୍କ ରଣ ହୋଇ ଥାଏ ।

ସୂଚନା :

କୌଣସି ଗାଈ ଯଦି ଛୁଆ ଦେବା କୁ ହୋଇ ଥାଏ, ତାହା ହେଲେ ତାକୁ ମାରି ଦେବା କିମ୍ବା ମରେଇ ଦେବା । କାହାର ଘର ବନ୍ଧୁ ଥିବ କିମ୍ବା ପୁନାଦି ଖୋଲିବା ସମୟରେ ଯାଦୁ-ଗୁଣିଆ କରି ଦେବା କିମ୍ବା ବନ୍ଧୁ ବାନ୍ଧବ ଙ୍କ ସହ ମିଳା-ମିଶା କରିବା ଲୋକ ଙ୍କୁ ଦୃଶା କରିବା କିମ୍ବା ଛୁଆ ଙ୍କ ଜନ୍ମ ଦିନ ଏବଂ ପରିବାର ଠାରୁ ପର୍ବ କିମ୍ବା ଖୁସୀ ସମୟ ରେ ଦୂର ରେ ରହିବା ।

ଘଟଣା :

ଜାତକ ମିତ୍ର ସହ ଯୋଦ୍ଧା କରି ଥାଏ । କାହାର ବନ୍ଦି ଯାଇ ଥିବା କାମ କୁ ଖରାପ କରିବା କିମ୍ବା କାହାର ପାଟିଲା ଫସଲ ରେ ନିଆଁ ଲଗେଇବା ।

ସାରାଂଶ

ଆପଣଙ୍କ ପତ୍ନୀ ପାରିବାରିକ ରଣ ରୁ ମୁକ୍ତ ଅଟେ ।

କନ୍ୟା/ଭଉଣୀ ର ରଣ

ଗୃହ ସ୍ଥିତି :

ଯଦି ଜାତକ ର କୁଣ୍ଡଳୀ ରେ ଚୂଡ଼ାୟ କିମ୍ବା ଷଷ୍ଠ ସ୍ଥାନ ରେ ଚନ୍ଦ୍ରମା ସ୍ଥିତ ହୋଇ ଥାନ୍ତି, ତାହା ହେଲେ ଭଉଣୀ/କନ୍ୟା ର ରଣ ହୋଇ ଥାଏ ।

ସୂଚନା :

ପୌରଣ ରେ ଯୋଦ୍ଧା ଦେବା, ଭଉଣୀ/ଝିଅ ଙ୍କ ହତ୍ୟା କିମ୍ବା ତାଙ୍କୁ ଦଣ୍ଡ ଦେବା । ଛୋଟ ଛୁଆ କୁ ବିକିବା କିମ୍ବା ଲୋଭ ପାଇଁ ବଦଲେଇ ଦେବା, ଯାହାର ଭେଦ ସାରା ଜୀବନ ଅଦୃଶ୍ୟ ରହିବ, ଏପରି ରହସ୍ୟ କାମ ଆଦି କରିବା ।

ଘଟଣା :

ଜାତକ ର କାହା ସହିତ ପାଟି ତୁଣ୍ଡ ରେ ଗାଳି କରିବା ଖଣ୍ଡା ଠାରୁ ଅଧିକ ଭୟଙ୍କର ବନ୍ଦି ଥାଏ, ପୁଅ ଜନ୍ମ କରି ଥିବା ପିତା ଙ୍କ ଧନ-ଦୌଲତ, ଆୟୁ ଉପରେ ଅଶୁଭ ଫଳ ମିଳି ଥାଏ କିମ୍ବା ମାତା ଙ୍କ ମୃତ୍ୟୁ ହୋଇ ପାରେ । ଖୁସୀ ରେ ଶଶୁର ଘର-ବାପା ଘର ଉପରେ ଅଶୁଭ ଫଳ ମିଳି ଥାଏ, ବର୍ଷ ର କମେଇ ଥିବା ଧନ ବର୍ଷା ରତ୍ନ ରେ ଘାଟା ହୋଇ ଯିବା ।

ସାରାଂଶ

ଆପଣଙ୍କ ପତ୍ନୀ କନ୍ୟା/ଭଉଣୀ ର ରଣ ରୁ ମୁକ୍ତ ଅଟେ ।

ପିତୃ ରଣ

ଗ୍ରହ ସ୍ଥିତି :

ଜାତକ ର ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ରେ ୨ କିମ୍ବା ୫ କିମ୍ବା ୯ କିମ୍ବା ୧୨ ସ୍ଥାନ ରେ ଶୁକ୍ର କିମ୍ବା ବୁଧ କିମ୍ବା ରାହୁ କିମ୍ବା ଚାନୋତି ମଧ୍ୟରୁ ଦୁଇଟି କିମ୍ବା ଚାନୋତି ଯାକ ଗ୍ରହ ସ୍ଥିତ ହୋଇ ଥାଏ, ତାହା ହେଲେ ଜାତକ ଉପରେ ପିତୃ ରଣ ହୋଇ ଥାଏ ।

ସୂଚନା :

କୂଳ ପୁରୋହିତ ବଦଳିବା କିମ୍ବା କୂଳ ପୁରୋହିତ ସହ ଝଗଡ଼ା ଲାଗିବା, ଘରେ ବନ୍ଦି ଥିବା ମନ୍ଦିର କୁ ଭାଙ୍ଗି ଦେବା । ନିମ ଗଛ କାଟିବା । ଘରେ ନିମ ଗଛ ଆଦି ଥିବ ।

ଘଟଣା :

ପରିବାର ର କୌଣସି ବୃଦ୍ଧ ଲୋକଙ୍କ କେଶ ଧଳା ହୋଇ ଯିବା । କେଶ ଧଳା ହେବା ପରେ କେଶ ହଳଦିଆ ହେବାର ଆରମ୍ଭ ହୋଇ ଯିବ, ଖାସ ହୋଇ ପାରେ ଅଥବା ମୁଣ୍ଡ ଉପରେ ଦୁନିୟୁ ର କଳଙ୍କ ଲାଗିଲା ଭଳି ଆଦି ଘଟଣା ଘଟି ଥାଏ ।

ସାରାଂଶ

ଉପାୟ :

ଆପଣଙ୍କ ପତ୍ନୀ ପିତୃ ରଣ ରେ ଯୁକ୍ତ ଅଛି, ଏଥି ପାଇଁ ପରିବାର ର ନିଜ ରକ୍ତ ସମ୍ପର୍କ (ଜାତକ ର ଜେଜେ ବାପା-ଜେଜେ ମା, ମାତା-ପିତା, ଭଉଣୀ, ଝିଅ-ପିଉସି ନାନି, ଭାଇ, ଦାଦା-ବଡ଼ ବାପା ଙ୍କ ପରିବାର ର ସଦସ୍ୟ ଆଦି) ଙ୍କ ଠାରୁ ସମାନ-ସମାନ ଧନ (ଏକ-ଏକ କିମ୍ବା ପାଞ୍ଚ-ପାଞ୍ଚ କିମ୍ବା ଅଧିକ ରୁ ଅଧିକ ଦସ-ଦସ ଟଙ୍କା ଯିଏ ଯେତେ ଦେଇ ପାରିବେ) ସବୁ ମିଶେଇ ସେହି ଦିନ ମନ୍ଦିର ରେ ଦାନ କରି ଦିଅନ୍ତୁ ।

ସ୍ତ୍ରୀ ରଣ

ଗ୍ରହ ସ୍ଥିତି :

ଜାତକ ର ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ରେ ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନ ରେ ସୂର୍ଯ୍ୟ କିମ୍ବା ବୃହସ୍ପତି କିମ୍ବା ରାହୁ କିମ୍ବା ଚାନୋତି ମଧ୍ୟରୁ ଦୁଇଟି କିମ୍ବା ଚାନୋତି ଯାକ ଗ୍ରହ ସ୍ଥିତ ହୋଇ ଥାଏ, ତାହା ହେଲେ ଜାତକ ଉପରେ ସ୍ତ୍ରୀ ରଣ ହୋଇ ଥାଏ ।

ସୂଚନା :

ପରିବାର ର ପେଟ ଉପରେ ଲାତ ମାରିବା, କନ୍ୟା ଛୁଆ ଜନ୍ମ ହେବା କିମ୍ବା କନ୍ୟା ଛୁଆ ଜନ୍ମ ହେବ ଆଶା ରେ ମାରି ଦେବା । ଦାନ୍ତ ଥିବା ପଶୁ କୁ ପାଳିବା ଦ୍ଵାରା ପରିବାର ରେ ଅସୁବିଧା ହୋଇ ଥାଏ । ଘର ର ଗେଟ କବାଟ ଦକ୍ଷିଣ ଦିଗ ରେ ରହିବା, ଜୀବ ହତ୍ୟା କରିବା, ଘର କିମ୍ବା ମଶାନ କିଣିବା ରେ କ୍ଷତି, କାହାର ଜିନିଷ ଚୋରି କରି ବ୍ୟବହାର କରିବା ଆଦି ।

ଘଟଣା :

ନର ସନ୍ତାନ ର ଫଳ ମାନ୍ଦା ହୋଇ ଯାଇ ଥାଏ, ବ୍ରମତା ରେ ରୋଗ, ଗୁପ୍ତାଙ୍ଗ ରେ ରୋଗ ହୋଇ ଯିବା, କାହାର ବିବାହ ସମୟ ରେ ସବ ଜଳେଇବା । ପ୍ରଥମ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ସହିତ ବୈବାହିକ ସମ୍ପର୍କ ଭାଙ୍ଗିବା ପରେ ଦ୍ଵିତୀୟ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ସହିତ ସମ୍ପର୍କ ଯୋଡ଼ି ଦେବା ଅର୍ଥାତ ଦ୍ଵିତୀୟ ବିବାହ କରିବା ଆଦି ।

ସାରାଂଶ

ଉପାୟ :

ଆପଣଙ୍କ ପତ୍ନୀ ସ୍ତ୍ରୀ ରଣ ରେ ଯୁକ୍ତ ଅଛି, ଏଥି ପାଇଁ ପରିବାର ର ନିଜ ରକ୍ତ ସମ୍ବନ୍ଧ (ଜାତକ ର ଜେଜେ ବାପା-ଜେଜେ ମା, ମାତା-ପିତା, ଭଉଣୀ, ଝିଅ-ପିଉସି ନାନି, ଭାଇ, ଦାଦା-ବଡ଼ ବାପା ଙ୍କ ପରିବାର ର ସଦସ୍ୟ ଆଦି) ଙ୍କ ଠାରୁ ସମାନ-ସମାନ ଧନ ନେଇ ଗଭ ଶାଳା ରେ ୧୦୦ ଗାଇ କୁ ଡ଼ାରା ଖୁଆନ୍ତୁ (ସେଥିରେ କୌଣସି ମଧ୍ୟ ଗାଇ ଅଙ୍ଗହୀନ ହୋଇ ନଥିବ) ଆଦି ।

ଶତ୍ରୁ ରଣ

ଗ୍ରହ ସ୍ଥିତି :

ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ରେ ୧୦ କିମ୍ବା ୧୧ ସ୍ଥାନ ରେ ସୂର୍ଯ୍ୟ କିମ୍ବା ଚନ୍ଦ୍ର କିମ୍ବା ମଙ୍ଗଳ କିମ୍ବା ଚୀନୋଟି ମଧ୍ୟରୁ ଦୁଇଟି କିମ୍ବା ଚୀନୋଟି ଯାକ ଗ୍ରହ ସ୍ଥିତ ହୋଇ ଥାଏ, ତାହା ହେଲେ ଶତ୍ରୁ ରଣ ହୋଇ ଥାଏ ।

ସୂଚନା :

ମଶାନ କିମ୍ବା ଘର ପାଇଁ ବହୁଶା ଦେବା ପରେ ମଧ୍ୟ ନ କିଛି ପାରିବା, ପରୀକ୍ଷା ହଲ୍ ରୁ ଅକାରଣେ ବାହାରକୁ ବାହାରିବା, ବଡ଼ ଲୋକ ଙ୍କ ସହ ଅକାରଣେ ଝଗଡ଼ା କିମ୍ବା ମକଦ୍ଦମା ଲଢ଼ିବା ଆଦି ।

ଘଟଣା :

ସନ୍ତାନ ଏବଂ ଶଶୁର ଙ୍କ ଅସମୟ ରେ ମୃତ୍ୟୁ, ତେଲ କିମ୍ବା ନଡ଼ିଆ କିମ୍ବା କାଠ କିମ୍ବା ଅନ୍ୟ କୌଣସି ଗୋଦାନ ରେ ନିଆଁ ଲାଗି ଯିବା । ଘର କିଛି ସେଥିରେ ରହିବାର ଭାଗ୍ୟ ନାହିଁ, ଘର କିଛି ତାହାର ସିଡ଼ି ମରାମତି କରିବାକୁ ପଡ଼େ କିମ୍ବା ଭାଙ୍ଗି କରି ଥାର ଥରେ ବନେଇ ବାକୁ ପଡ଼େ, ସାପ ଏବଂ ବିଷ ଖାଇବାର ଘଟଣା, ହୃଦୟର ଦ୍ଵାରା ମୃତ୍ୟୁ ହେବା ଆଦି ।

ସାରାଂଶ

ଆପଣଙ୍କ ପତ୍ନୀ ଶତ୍ରୁ ରଣ ରୁ ମୁକ୍ତ ଅଟେ ।

ସାରା ଜୀବନ ର ରଣ

ଗ୍ରହ ସ୍ଥିତି :

ଜାତକ ର ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ରେ ୧୨ ସ୍ଥାନ ରେ ସୂର୍ଯ୍ୟ କିମ୍ବା ଶୁକ୍ର କିମ୍ବା ଦୁଇଟି ଯାକ ଗ୍ରହ ସ୍ଥିତ ହୋଇ ଥାଏ, ତାହା ହେଲେ ସାରା ଜୀବନ ର ରଣ ହୋଇ ଥାଏ ।

ସୂଚନା :

ବିଜୁଳୀ ର ତାର ଖରାପ ହେବା, ଘର ଜଳି ଯିବା, ଲକ୍ଷ କୋରଡ଼ ପତି କିଛି ସମୟରେ କେମିତି ମଧ୍ୟ ବର୍ବାଦ ହୋଇ ଯିବା, ସୁନା ହଜିବା କିମ୍ବା ଡ଼ୋରୀ-ଠକ ର ଘଟଣା, ଥଣ୍ଡା କାସ କିମ୍ବା ମୁଣ୍ଡ ବଥା ଆଦି ରୋଗ, ଛୁଆ ଠାରୁ ବୁଢ଼ା ହେବା ଯାଏଁ ଅକାମି ବନିବା, ବୁଝି ସୁଝି କାମ କରିବା ପରେ ମଧ୍ୟ ଗରୀବ ଏବଂ ବେସାହାରା, ସ୍ଵାସ, ଗଳା କାସ, ଶାଶୁ ଙ୍କୁ କଷ୍ଟ ଅତୀତକ ମୃତ୍ୟୁ, ଘର ର ବାରଣ୍ଡା ତଳେ ନାଳ ର ଖରାପ ପାଣି ବହିବା ଅଥବା ବାସ କରୁ ଥିବା ଘର ର ଆଗ ପଛ ରେ ଖରାପ ଜିନିଷ ଗବା ହେବା ।

ଘଟଣା :

ମକଦ୍ଦମା ରେ ଫୈସଲା ପାଇଁ ଭାରୀ ଜରିମାନା/ଜେଲ, ଶଶୁର ଘରେ କିମ୍ବା ଦୁନିୟା ଲୋକ ଙ୍କୁ ଠକିବା କିମ୍ବା ଏପରି ବ୍ୟବହାର କରିବେ ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଅନ୍ୟ ର ପରିବାର କିମ୍ବା ଡ଼ାକିରୀ-ବ୍ୟାପାର ନଷ୍ଟ ହୋଇ ଯିବା ଆଦି ।

ସାରାଂଶ

ଉପାୟ :

ଆପଣଙ୍କ ପତ୍ନୀ ସାରା ଜୀବନ ର ରଣ ରେ ଯୁକ୍ତ ଅଛି, ଏଥି ପାଇଁ ପରିବାର ର ନିଜ ରକ୍ତ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ (ଜାତକ ର ଜେଜେ ବାପା-ଜେଜେ ମା, ମାତା-ପିତା, ଭଉଣୀ, ଝିଅ-ପିଉସି ନାନି, ଭାଇ, ଦାଦା-ବଡ଼ ବାପା ଙ୍କ ପରିବାର ର ସଦସ୍ୟ ଆଦି) ସମସ୍ତ ଙ୍କ ଠାରୁ ଏକ-ଏକ ନଡ଼ିଆ ନେଇ ସେହି ଦିନ ଜଳ ରେ ପ୍ରବାହ କରିବା ଦରକାର ।

ଭଗବାନ ଙ୍କ ରଣ

ଗୃହ ସ୍ଥିତି :

ଜାତକ ର ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ରେ ଷଷ୍ଠ ସ୍ଥାନ ରେ ଚନ୍ଦ୍ରମା ହୋଇ ଥାଏ, ତାହା ହେଲେ ଭଗବାନ ଙ୍କ ରଣ ହୋଇ ଥାଏ ।

ସୂଚନା :

କୁକୁର କାମୁଡ଼ିବା, ଛାତ ଉପରୁ ଛୁଆ ପଡ଼ି ଯିବା କିମ୍ବା ଛୁଆ ଗାଡ଼ୀ ର ତଳେ ପଡ଼ି ଯିବା, କାନ କୁ ନ ଶୁଭିବା, ମେରୁ ଦଣ୍ଡ ର ହାଡ଼ ରେ କଷ୍ଟ ସନ୍ତାନ ଜନ୍ମ ନ ହେବା କିମ୍ବା ହୋଇ ମରି ଯିବା, ସନ୍ତାନ ସୁଖ ରେ ବାଧା, ମୁତ୍ର ଜନିତ ରୋଗ, ବାପା ଘର ନଷ୍ଟ ହୋଇ ଯିବା, ଯାତ୍ରା ରେ ହାନି ଅଥବା ଦୁର୍ଘଟଣା ହେବା ଆଦି ।

ଘଟଣା :

କାହାକୁ ବିଶ୍ୱାସ କରି ତା ଠାରୁ ଧୋକା ପାଇବା, କୁକୁର କୁ ମାରିବା କିମ୍ବା ମରେଇବା, ଗରୀବ କିମ୍ବା ଫକୀର ଙ୍କ ନିଶ୍ୱାସ ପଡ଼ିବା, କାହାର ପୁଅ କୁ କ୍ଷରାପ କରିବା କିମ୍ବା କରେଇବା, କ୍ଷରାପ ବ୍ୟବହାର, ଲୋଭ ରେ ପଡ଼ି ଅନ୍ୟର କ୍ଷତି କରିବା ଆଦି ।

ସାରାଂଶ

ଆପଣଙ୍କ ପତ୍ନୀ ସ୍ୱରଣ ରୁ ମୁକ୍ତ ଅଟେ ।

ଲାଲ ବହି ଗ୍ରହ ଫଳ

ସୂର୍ଯ୍ୟ

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀର ଦ୍ଵାଦଶ ସ୍ଥାନରେ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଉପସ୍ଥିତ ଅଛି । ଏହାର ପ୍ରଭାବ ପାଇଁ ଆପଣ ଘର ଠାରୁ ବାହାରକୁ ଯାଇ ସାଧୁ ବନ୍ଧିବାକୁ ଚାହୁଁବେ ତାହା ହେଲେ ସାଧୁ ନ ବନ୍ଧି ବଡ଼ ଲୋକ ବନ୍ଧିବେ । ଆପଣଙ୍କୁ ବଡ଼-ବଡ଼ କାମ ରୁ ଧନ ମିଳିବ । ଡାକ୍ତର/କେମିଷ୍ଟ ଆଦି କାମରେ ଲାଭ ମିଳିବ । ସୁଖ ଶାନ୍ତିରେ ରହିବେ । ଚାକିରୀ-ବ୍ୟାପାର ଆଦିରେ ଶୁଭ ଫଳ ମିଳିବ । ଆପଣଙ୍କ ଉପରେ ପିତୃ ଲୋକଙ୍କ ଆଶୀର୍ବାଦ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ଘରେ ସୁଖ ରହିବ । ଆପଣ ଅକ୍ତିମ ସମୟରେ ମଧ୍ୟ ସୁଖରେ ସମୟ ବିତେଇବେ । ଜାତି ଏବଂ ପରିବାର ମାର୍ଗ ରେ ସଫଳତା ମିଳିବ । ଗୁପ୍ତ ବିଦ୍ୟା ରେ ରୁଚି ରହିବ, ବିଦେଶ ସମ୍ପର୍କୀ କାମ ରେ ଲାଭ ମିଳିବ କିମ୍ବା ବିଦେଶ ରେ ନିବାସ ର ଯୋଗ ଅଛି । ଅତୀ କିମ୍ବା ରୁନା ର କାମରେ ମଧ୍ୟ ଲାଭ ମିଳି ପାରେ ।

ଯଦି ଆପଣଙ୍କ ଅଗଣା ର ବିନା ଘରେ ରହିବେ, ନୀଚ କିମ୍ବା ବିଧବା ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ବନ୍ଧ ରଖିବେ, ଅନ୍ୟ କୁ ହଇରାଣ କରିବେ, ବିଚ୍ଛୁଳା ର ସାମାନ ମାଗଣାରେ ନିଅନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କ ସୂର୍ଯ୍ୟ ମାନ୍ଦା ହୋଇ ପାରେ କିମ୍ବା କୌଣସି କାରଣ ବଶ ସୂର୍ଯ୍ୟ ମାନ୍ଦା ହୋଇ ଯାଇ ଥାଏ । ତାହା ହେଲେ ସୂର୍ଯ୍ୟ ର ମାନ୍ଦା ପ୍ରଭାବ ଦ୍ଵାରା ଆପଣ ଅଧମ, ନେତ୍ର ରୋଗୀ, ମୁଣ୍ଡ ଖରାପ, ରାଗରେ ଜଳିବାର ସ୍ଵଭାବ ହେବ । ଆଖି ର ଦୃଷ୍ଟି ଉପରେ ପ୍ରତିକୂଳ ପ୍ରଭାବ ପଡ଼ିବ । ଆପଣ କଳା ଜିନିଷ, କାଠ, ବିଚ୍ଛୁଳା ର କାମ ସମ୍ପର୍କିତ ଚାକିରୀ-ବ୍ୟାପାର ରେ କ୍ଷତି ଉଠାଇବେ । ଆପଣଙ୍କୁ ମେକାନିକାଳ କାମରେ ମଧ୍ୟ କ୍ଷତି ହେବ । ଘର ବନେଇବାରେ, ଲୁହା, ତେଲ, ରାଗନ, କୋଇଲା ର କାମ ରେ ପ୍ରବଳ କ୍ଷତି ହେବ । ଆପଣ ନୀଚ କିମ୍ବା ବିଧବା ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ବନ୍ଧ ରଖିବା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କର ଏବଂ ପିତୃ ଙ୍କ ସମ୍ପତ୍ତି ର ନାଶ ହେବ ।

ଯଦି ଆପଣ ଉପରୋକ୍ତ କଷ୍ଟ କୁ ଅନୁଭବ କରନ୍ତି । ତାହା ହେଲେ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ ଏବଂ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ବିଚ୍ଛୁଳି ର ସାମାନ ମାଗଣାରେ ନିଅନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. କାହାରି କୁ ହଇରାଣ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଉପାୟ :

୧. ପିମ୍ପୁଡ଼ି କୁ ଖାଇବାକୁ ଦିଅନ୍ତୁ ।
୨. ପାଣି ରେ ଚିନି ମିଶେଇ ସୂର୍ଯ୍ୟ କୁ ଜଳ ଦେବେ ।

ଚନ୍ଦ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀର ଦ୍ଵିତୀୟ ସ୍ଥାନରେ ଚନ୍ଦ୍ରମା ଉପସ୍ଥିତ ଅଛି । ଏହାର ପ୍ରଭାବ ପାଇଁ ଏହା ଆପଣଙ୍କ ଭାଗ୍ୟ କୁ ସତର୍କ କରିବ । ଧନ-ସମ୍ପଦ ରେ ସମ୍ପନ୍ନ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ବଂଶ ର ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ପିତୃ ସୁଖ ଏବଂ ସମ୍ପତ୍ତି ମଧ୍ୟ ପୂରା ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ଘରେ ଲକ୍ଷ୍ମୀ ଙ୍କ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଆପଣଙ୍କୁ ଜମି-ସମ୍ପତ୍ତି ଏବଂ ଘର ର ଭାଗ ଅବଶ୍ୟ ମିଳିବ । ଆପଣଙ୍କୁ ବୃଦ୍ଧା ଅବସ୍ଥାରେ ସବୁ ଶୁଭ ଫଳ ଅବଶ୍ୟ ମିଳିବ । ଶେଷ ସମୟ ସୁଖ କାରକ ସମୟ ହେବ । ଆପଣଙ୍କୁ ଭାଇ ଙ୍କ ସୁଖ ଅବଶ୍ୟ ମିଳିବ । ଆପଣ ସଫଳ ପ୍ରେମୀ ହେବେ । ଆପଣ ଧନବାନ ଏବଂ ଉଚ୍ଚାଧିକାରୀ ବନ୍ଧିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଶଶୁର ଘର ର ସ୍ଥିତି ଭଲ ରହିବ । ପିତା ଏବଂ ଶଶୁର ଘର ଠାରୁ ଧନ-ସମ୍ପତ୍ତି ର ଲାଭ ମିଳିବ । ୪୮ ବର୍ଷ ବୟସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମାତା ଙ୍କ ସୁଖ ମିଳିବ । ପରିବାର ରେ କୌଣସି ଜଣଙ୍କର ଯାଆଁଳା ଛୁଆ ମଧ୍ୟ ଜନ୍ମ ହୋଇ ପାରେ । ଧଳା ଜାନ୍ତିଷ (ଡାଉଳ, ରୁପା, କ୍ଷୀର ଆଦି) ରୁ ଅଧିକ ଲାଭ ମିଳି ପାରେ ।

ଯଦି ଆପଣ ବୁଢ଼ୀ ସ୍ତ୍ରୀ କିମ୍ବା ମାତା ଙ୍କ ଅପମାନ କରନ୍ତି, ଶଶୁର ଘର ଲୋକ କୁ ହଇରାଣ କରି ଧନ ପ୍ରାପ୍ତ କରନ୍ତି, ମାଂସ-ମଦ କୁ ସେବନ କରନ୍ତି, ଘରେ ମନ୍ଦିର ବନେଇ ପୂଜା-ପାଠ କରନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କ ଚନ୍ଦ୍ରମା ମାନ୍ଦା ହୋଇ ପାରେ କିମ୍ବା

କୌଣସି କାରଣ ବଶ ଚନ୍ଦ୍ରମା ମାନ୍ଦା ହୋଇ ଯାଇ ଥାଏ । ତାହା ହେଲେ ଚନ୍ଦ୍ରମା ର ମାନ୍ଦା ପ୍ରଭାବ ଦ୍ୱାରା ୨୫ ଏବଂ ୩୪ ବର୍ଷ ର ବୟସରେ ଗରାବୀ ର ସାମନା କରି ବାକ୍ସ ପଡ଼ି ପାରେ । ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରେମ ସମ୍ବନ୍ଧ ର କାରଣ ଜୀବନ ନଷ୍ଟ ହୋଇ ପାରେ । ଆପଣଙ୍କୁ ସନ୍ତାନ ର ବିଘ୍ନ କିମ୍ବା ସନ୍ତାନ ର ସୁଖ ବିଳମ୍ବରେ ମିଳିବ । ଆପଣଙ୍କୁ ଭଉଣୀ ର ସୁଖ ମିଳିବ ନାହିଁ ଏପରି ସମ୍ଭବ ଅଛି । ଭଉଣୀ-ଝିଅ କିମ୍ବା ପରିବାର ର କୌଣସି ଝିଅ କୁ ରୋଗ ହୋଇ ପାରେ ।

ଯଦି ଆପଣ ଉପରୋକ୍ତ କଷ୍ଟ କୁ ଅନୁଭବ କରନ୍ତି । ତାହା ହେଲେ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ ଏବଂ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଘର ମନ୍ଦିର ରେ ଶିବ ଲିଙ୍ଗ, ମୂର୍ତ୍ତି, ଘଣ୍ଟା, ଶଙ୍ଖ ଆଦି ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ମଦ ଏବଂ ମାଦକ ବସ୍ତୁ ର ପ୍ରୟୋଗ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଉପାୟ :

୧. ମାତା କିମ୍ବା ବୁଢ଼ୀ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ପାଦ ଛୁଇଁ ଆଶୀର୍ବାଦ ନିଅନ୍ତୁ ।
୨. ମାତା ଙ୍କ ଠାରୁ ଡାଉଲ, ରୁପା, ଧଳା କପଡ଼ା ଗୋଟିଏ ଜାଗାରେ ନେଇ ପାଖରେ ରଖନ୍ତୁ ।

ମଙ୍ଗଳ

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀର ଦ୍ୱିତୀୟ ସ୍ଥାନରେ ମଙ୍ଗଳ ଉପସ୍ଥିତ ଅଛି । ଏହାର ପ୍ରଭାବ ପାଇଁ ଆପଣ ବୟସ୍କ, ରକ୍ଷକ, ଭାଇ ଏବଂ ମିତ୍ର ଙ୍କ ପାଳନ କରିବେ, ଆପଣ ପର ଲୋକଙ୍କ ଦରକାର ସବୁ ବେଳେ ପୂରା କରିବେ । ଆପଣ କୌଣସି ସଂସ୍ଥା ର ପ୍ରଧାନ ମଧ୍ୟ ହୋଇ ପାରନ୍ତି । ଆପଣ ବହୁତ ଲୋକ ଙ୍କୁ ସାହାଯ୍ୟ ଦେବା ବାଲା ହେବେ । ଆପଣ ଅନ୍ୟ କୁ ଖାଲା ହାତରେ ଛାଡ଼ିବେ ନାହିଁ । ଆପଣଙ୍କୁ ଶଶୁର ଘର ଠାରୁ ସହାୟତା ମିଳିବ । ଆପଣ ଛୋଟ ଭାଇ ଙ୍କ ସହ ପୁତ୍ର ପରି ପ୍ରେମ କରିବେ ଏବଂ ତାଙ୍କୁ ସହାୟତା ଦେବେ । ଛୋଟ ଭାଇ ଙ୍କ ସହାୟତା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ଭାଗ୍ୟ ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଆପଣ ପର ଲୋକଙ୍କ ସହାୟତା କରୁ ଥିବେ । ଏଇଥି ପାଇଁ ଆପଣ ମଧ୍ୟ ଭଲରେ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କୁ ପର ଲୋକଙ୍କ ଉପକାର ପାଇଁ ଧନ-ସମ୍ପତ୍ତି ମିଳୁ ଥିବ । ଆପଣ ଅନ୍ୟ ପାଇଁ ମଧ୍ୟ ଦାନ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ବ୍ୟବହାର ଭଲ ରହିବ । ଆପଣ ପରିଶ୍ରମ ଦ୍ୱାରା ଧନୀ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କୁ ଖାଦ୍ୟ, ପୋଶାକ ତଥା ଅନ୍ୟ ଜୀବନ ର ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଦରକାର ପଡ଼ିଲେ ନିଜ ପଇସା ମିଶେଇବେ । ଆପଣଙ୍କୁ ଭଗବାନ ଙ୍କ କୃପା ଦ୍ୱାରା ବହୁତ ଧନ ମିଳିବ । ଆପଣ ଅଧିକାରୀ ବନି ହୁଅନ୍ତୁ କରିବେ । ଆପଣ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା କରିବା ଦ୍ୱାରା ଶୁଭ ଫଳ କୁ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ବାହାଘର ପରେ ଆପଣଙ୍କ ଧନ ଦୌଳତ ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଶଶୁର ଘର ପକ୍ଷ ରୁ ସୁଖୀ ରହିବେ ।

ଯଦି ଆପଣ ଅନ୍ୟ ର ଧନ-ସ୍ତ୍ରୀ ଉପରେ କ୍ଷରାପ ନଜର ରଖନ୍ତି, ଖରାପ ଅଭ୍ୟାସ ର ଶିକାର ହୁଅନ୍ତି କିମ୍ବା ଛନ୍ଦ-କପଟ କରନ୍ତି, ଭାଇ-ବନ୍ଧୁ, ମିତ୍ର ଙ୍କ ସହିତ ଠକଣି ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କ ମଙ୍ଗଳ ମାନ୍ଦା ହୋଇ ପାରେ କିମ୍ବା କୌଣସି କାରଣ ବଶ ଯଦି ମଙ୍ଗଳ ମାନ୍ଦା ହୋଇ ଯାଇ ଥାଏ । ତାହା ହେଲେ ମଙ୍ଗଳ ର ମାନ୍ଦା ପ୍ରଭାବ ଦ୍ୱାରା ଯଦି ବିଦ୍ୟା ରେ ବାଧା, ଦରକାର ପଡ଼ିବା ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଧନ ମିଳୁ ଥିବ । ବାକିରୀ-ବ୍ୟାପାର ରେ ଅନେକ ଧର ହାନି ହୋଇ ପାରେ । ୨୮ ବର୍ଷ ବୟସ ପୂର୍ବ ରୁ ବଡ଼ ଭାଇ ଙ୍କୁ ଶରୀର କଷ୍ଟ ସନ୍ତାନ ର ଚିନ୍ତା, ଧନ ହାନି ହେବ । ଯଦି ଆପଣଙ୍କ ବଡ଼ ଭାଇ ଅଛନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ତାଙ୍କର ସୁଖ ଆପଣଙ୍କୁ ମିଳିବ ନାହିଁ କିମ୍ବା ସେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ଥିତି ରେ କମଜୋର ହେବେ କିମ୍ବା ଆପଣ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ଭାଇ ନିଃସନ୍ତାନ ମଧ୍ୟ ହୋଇ ପାରନ୍ତି ।

ଯଦି ଆପଣ ଉପରୋକ୍ତ କଷ୍ଟ କୁ ଅନୁଭବ କରନ୍ତି । ତାହା ହେଲେ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ ଏବଂ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଲଢ଼େଇ-ଝଗଡ଼ା ଠାରୁ ଦୂର ରେ ରହନ୍ତୁ ।
୨. କୁଣ୍ଡିଆଁ ଙ୍କ ସେବା କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ଛୁଆ ଛୁ ଖରା ବେଳ ସମୟରେ ଗୁଡ଼-ଗହମ ବାଣ୍ଟନ୍ତୁ ।
୨. ଜଳଖିଆ ରେ ମୀଠା ଭୋଜନ କରନ୍ତୁ ।

ବୁଧ

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀର ଦ୍ଵାଦଶ ସ୍ଥାନରେ ବୁଧ ଉପସ୍ଥିତ ଅଛି । ଏହାର ପ୍ରଭାବ ପାଇଁ ଭଲ ଛିତି ବନି ପାରେ । ଏପରି ଆପଣଙ୍କୁ ଧନ-ସମ୍ପତ୍ତି ମିଳିବ ପରନ୍ତୁ ଆକର୍ଷକ ଖର୍ଚ୍ଚ ହେଉ ଥିବ । ଆପଣ ବିତ୍ତୀୟ କର କାର୍ଯ୍ୟ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଭଉଣୀ-ଝିଅ ନିଜ ଶଶୁର ଘରେ ହିଁ ସୁଖୀ ରହିବେ କିନ୍ତୁ ନିଜ ପିତା ଙ୍କ ଘରେ ଦୁଃଖୀ ରହିବେ । ଆପଣ ବୁଝି-ସୁଝି କାର୍ଯ୍ୟ କରିବେ । ପିତୃ ଙ୍କ ସମ୍ପତ୍ତି ର ଲାଭ ହେବ । ଜ୍ୟୋତିଷ କିମ୍ବା ଗୁପ୍ତ ବିଦ୍ୟା ରେ ରୁଚି ରହି ପାରେ ।

ଯଦି ଆପଣ କାହାରି କୁ ମିଛ କହି ଠକଣ୍ଡି କିମ୍ବା କଥା ବଦଳେଇ ବାର ଅଭ୍ୟାସ କରନ୍ତି, ମାଦକ ଜାନିଷ-ଦ୍ରବ୍ୟ ର ପ୍ରୟୋଗ କରନ୍ତି, ସବୁ ସମୟରେ କ୍ଷତି-କ୍ଷତି ର କଥା କରନ୍ତି, ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କ ବୁଧ ମାନ୍ଦା ହୋଇ ପାରେ କିମ୍ବା କୌଣସି କାରଣ ବଶ ବୁଧ ମାନ୍ଦା ହୋଇ ଯାଇ ଥାଏ । ତାହା ହେଲେ ବୁଧ ର ମାନ୍ଦା ପ୍ରଭାବ ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କ ମାନସିକ ଛିତି କ୍ଷରାପ ରହିବ । ମୁଣ୍ଡ ବଥା ବନି ରହିବ । ରାତ୍ରି ରେ ଠାକ ଢଳ ରେ ନୀଦ ଆସିବ ନାହିଁ । ଆପଣଙ୍କ ଘରେ ଭଉଣୀ, ଝିଅ, ଦୁଃଖୀ ରହିବେ । ଆପଣ ଧନୀ ହୋଇ ଥିଲେ ମଧ୍ୟ ଦୁଃଖୀ ରହିବେ । ବାଜୀ-ଲଟେରୀ ର କାମ କିମ୍ବା ଦଲାଇ ର କାମ ରେ ନୀଚ ପ୍ରଭାବ ମିଳିବ । କ୍ଷରାପ କାମ ରେ ଧନ ର ନଷ୍ଟ ହୋଇ ପାରେ । ପିତା ଙ୍କ ଧନ ଉପରେ କ୍ଷରାପ ପ୍ରଭାବ ପଡ଼ି ପାରେ । ଶଶୁର ଘରେ ମାନ୍ଦା ପ୍ରଭାବ ରହିବ । ବେଳେ-ବେଳେ ଭ୍ରମ କିମ୍ବା ଅଜ୍ଞାନତା ର କାରଣ କ୍ଷତି ହେବାର ଆଶଙ୍କା ଅଛି । ଆପଣଙ୍କ ଭାଇ ଙ୍କ ଜୀବନ ଉପରେ କ୍ଷରାପ ପ୍ରଭାବ ତଥା ଧନ ର ନାଶ ହେବ, ଏପରି ଆଶଙ୍କା ଅଛି । ୨୫ ବର୍ଷ ରେ ବିବାହ କରିବା ପିତା ଙ୍କ ପାଇଁ ଅଶୁଭ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ଭାଗ୍ୟ ମଧ୍ୟ ମାନ୍ଦା ହୋଇ ପାରେ ।

ଯଦି ଆପଣ ଉପରୋକ୍ତ କଷ୍ଟ କୁ ଅନୁଭବ କରନ୍ତି । ତାହା ହେଲେ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ ଏବଂ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଦେଇ ଥିବା ବଡ଼ନ ପୁରା କରନ୍ତୁ ।
୨. କ୍ରୋଧ ଠାରୁ ଦୂର ରେ ରହନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ଝିଲ୍ ର ଅପୋଡ଼ା ମୁଦି ବାମ ହାତରେ ପିନ୍ଧନ୍ତୁ ।
୨. ମାଟି ର ଖାଲୀ ହାଣ୍ଡିରେ ଘୋଡ଼ଣୀ ଲଗେଇ ଜଳ ପ୍ରବାହ କରନ୍ତୁ ।

ଗୁରୁ

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀର ପ୍ରଥମ ସ୍ଥାନରେ ବୃହସ୍ପତି ଉପସ୍ଥିତ ଅଛି । ଏହାର ପ୍ରଭାବ ପାଇଁ ଆପଣ ଏକ ପଢ଼ା-ଲେଖା କିମ୍ବା ଉପଦେଶକ କିମ୍ବା ଗୁରୁ ମଧ୍ୟ ହୋଇ ପାରନ୍ତି । ଆପଣ ବିଦ୍ଵାନ, ଭଲ ବୁଦ୍ଧି ର ସନ୍ତାନ ଯୁକ୍ତ, ଶାସନ ଦ୍ଵାରା ସମ୍ମାନ ପାଇବା ବାଲା ବଡ଼ ଲୋକ ବନିବେ । ବିଦ୍ୟା ର ମାଧ୍ୟମ ଦ୍ଵାରା ନିଜ ଆଜୀବିକା ଚଳେଇବେ । ପିତୃ ଧନ ଦ୍ଵାରା ଧନୀ ମଧ୍ୟ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କ ଶିକ୍ଷା ମଧ୍ୟ କମ ଥିବ ତାହା ହେଲେ ମଧ୍ୟ ଧନ ଆପଣଙ୍କୁ ପ୍ରାପ୍ତ ହେଉ ଥିବ । ଆପଣ ପଇସା ର କାରଣ ପାଇଁ ନାହିଁ, କର୍ମ ଗୁଣ ର କାରଣ ପାଇଁ ସମ୍ମାନ ପାଇବେ । ଆପଣ ବଡ଼ ଲୋକ ଙ୍କ ସହିତ ରହି ନିଜର ବୁଦ୍ଧି ଶକ୍ତି ଏବଂ ରାଜ ଦରବାର ରେ ସମ୍ବନ୍ଧିତ ରହି, ସମ୍ମାନ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ବାହାଘର ପରେ ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ଛିତି ଭଲ ହୋଇ ଯିବ ଏବଂ ଭାଗ୍ୟୋଦୟ ହେବ । ଆପଣ ନିଜ କମେଇ ରେ ନୁଆ ଘର ବନେଇବେ । ଆପଣଙ୍କୁ ବହୁତ ସମ୍ପତ୍ତି ର ଲାଭ ହେବ । ଆପଣ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନ ରହିବେ । ବୟସ ବଢ଼ିବାର ସହିତ ସୁଖ ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ପତ୍ନୀ ଆପଣଙ୍କ ଆଜ୍ଞାକାରି ଏବଂ ସେବିକା ରହିବେ ।

ଯଦି ଆପଣ ବିଦ୍ୟା ଅଧା ରେ ଛାଡ଼ି ଦିଅନ୍ତି, ଲୋକ ଙ୍କ ବ୍ୟର୍ଥ ନିନ୍ଦା କରନ୍ତି, ମାଗଣାର ମାଲ, ଦାନ ଆଦି ଦ୍ଵାରା ଜୀବନ



ବ୍ୟତୀତ କରିବାକୁ ଆରମ୍ଭ କରନ୍ତି, ଛୋଟ ବୟସ ରେ ମଦ-ବୀୟର ପିଇବା ଆରମ୍ଭ କରି ଦିଅନ୍ତି, ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କ ବୃହସ୍ପତି ମାତା ହୋଇ ପାରେ କିମ୍ବା କୌଣସି କାରଣ ବଶ ବୃହସ୍ପତି ମାତା ହୋଇ ଯାଇ ଥାଏ । ତାହା ହେଲେ ବୃହସ୍ପତି ର ମାତା ପ୍ରଭାବ ଦ୍ୱାରା ଅପ୍ତିୟ କର ଘଟନା ଏବଂ ଅବ୍ୟବସ୍ଥା ପ୍ରତି ସତର୍କ ରହନ୍ତୁ । ବିଦ୍ୟା ରେ ବାଧା ହୋଇ ପାରେ, ଆପଣଙ୍କ ପିତା ଙ୍କ ମୃତ୍ୟୁ, ସ୍ୱାସ କିମ୍ବା ହୃଦୟ ର ରୋଗ କିମ୍ବା ମାନସିକ ରୋଗ ହେବ, ଏପରି ଆଶଙ୍କା ଅଛି । ଆପଣଙ୍କୁ ଶ୍ୱାସ କିମ୍ବା ହୃଦୟ ର ରୋଗ ହେବ । ପ୍ରଥମ ପୁତ୍ର ସନ୍ତାନ ର ପ୍ରାପ୍ତି ଦ୍ୱାରା ଅଶୁଭ ଫଳ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବାର ଆଶଙ୍କା ଅଛି ।

ଯଦି ଆପଣ ଉପରୋକ୍ତ କଷ୍ଟ କୁ ଅନୁଭବ କରନ୍ତି । ତାହା ହେଲେ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ ଏବଂ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ମାଗଣାରେ ଉପହାର କିମ୍ବା ଦାନ ନିଅନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ଭାଗ୍ୟ ଉପରେ ଭରଷା ରଖନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. କେସର/ହଳଦୀ ର ଚିକା କରନ୍ତୁ ।
୨. ପିତୃ ଲୋକ ର ଆଶୀର୍ବାଦ ନିଅନ୍ତୁ ।
୩. ଶିକ୍ଷା ବୀ.ଏ. କିମ୍ବା ସମ କକ୍ଷ ଅବଶ୍ୟ ପଢନ୍ତୁ ।

ଶୁକ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀର ଏକାଦଶ ସ୍ଥାନରେ ଶୁକ୍ର ଉପସ୍ଥିତ ଅଛି । ଏହାର ପ୍ରଭାବ ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ କନ୍ୟା ସନ୍ତାନ ଅଧିକ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ପତ୍ନୀ ଦେଖି ବାକୁ ଠିକ୍-ଠାକ୍ ପରନ୍ତୁ କାମ ଧନ୍ୟ ର ସ୍ୱଭାବ ରେ ଭଲ ହେବେ । ବାହାଘର ପରେ ଖୁବ୍ ଆମଦାନୀ ହେବ । ଆପଣଙ୍କୁ କନ୍ୟା ସୁଖ ଅଧିକ ହେବ । ବିଳମ୍ବ ରେ ପୁତ୍ର ର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ, ଏପରି ଆଶଙ୍କା ଅଛି । ଆପଣଙ୍କ ଶଶୁର ଘର ପକ୍ଷ ର ଲୋକ ସହାୟକ ହେବେ ଏବଂ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ଲାଭ ହେବ । ଆପଣ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ପାଖରେ ସାମାନ୍ୟ କାମ ବାସନା ରହିବ । ଆପଣ ପଇସା ର ପଛେ ପଛେ ଡାଲୁ ଥିବେ । ଆପଣ ଭଲ ସ୍ୱଭାବ ର ପ୍ରାଣୀ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ଭଲ ଗୁଣ ମଧ୍ୟ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କୁ ଗୁପ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବାର ଅଭ୍ୟାସ ହୋଇ ଯିବ । ଆପଣ ନିଜ ବିଚାର ଧାରା କୁ ଶୀଘ୍ର ବଦଳାଇ ଦେବେ । ଏଥି ପାଇଁ ଧନ ଉପରେ କୌଣସି କ୍ଷରାପ ପ୍ରଭାବ ପଡ଼ିବ ନାହିଁ ।

ଯଦି ଆପଣ ପରିବାର ର ମୁଖ୍ୟ ବନ୍ଦି ରହନ୍ତି, ଡାଲି-ଡ଼ଳନ ଖରାପ କରନ୍ତି, ଅପ୍ରାକୃତିକ ଯୌନ ସମ୍ବନ୍ଧ କରନ୍ତି, କାମାନ୍ଧ ବନ୍ଦି କରି ପାପ କରନ୍ତି, ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କ ଶୁକ୍ର ମାତା ହୋଇ ପାରେ କିମ୍ବା କୌଣସି କାରଣ ବଶ ଶୁକ୍ର ମାତା ହୋଇ ଯାଇ ଥାଏ । ତାହା ହେଲେ ଶୁକ୍ର ର ମାତା ପ୍ରଭାବ ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ କାମ ଶକ୍ତି କମଜୋର ହେବ । (କୌଣସି ଯୋଗ୍ୟ ବୈଦ୍ୟ/ହାକୀମ ର ଆଦେଶ ନେଇ ଡାକ୍ତର କିମ୍ବା ମାଛ ର ତେଲ ପ୍ରୟୋଗ କରନ୍ତୁ, ଏପରି ରୂପା ର ଡାକ୍ତର ମଧ୍ୟ ଲାଭ ଦାୟକ ରହିବ) । ଆପଣଙ୍କ ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ହାତରେ ଧନ ର ଲାଭ ହେବ ନାହିଁ କିମ୍ବା ସ୍ତ୍ରୀ ଦ୍ୱାରା ଧନ ହାନି କିମ୍ବା ଅପବ୍ୟୟ ହେବ । ସରକାର ଦ୍ୱାରା ଦଣ୍ଡ, ଜେଲ ଯାତ୍ରା ର ଭୟ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ଡାଲି-ଡ଼ଳନ ଖରାପ ହେବ । ଆପଣ କେବେ-କେବେ ମୁର୍ଖାମି ମଧ୍ୟ କରି ବସିବେ । ଆପଣ ସନ୍ତାନ ପକ୍ଷ ରୁ ନିର୍ବଳ ରହିବେ ।

ଯଦି ଆପଣ ଉପରୋକ୍ତ କଷ୍ଟ କୁ ଅନୁଭବ କରନ୍ତି । ତାହା ହେଲେ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ ଏବଂ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ପତ୍ନୀ କୁ ଘର ର ମୁଖିଆ ବନାନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ଡାକିରା-ବ୍ୟାପାର ବାରମ୍ବାର ବଦଳାନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଉପାୟ :



୧. ସ୍ତ୍ରୀ ଜ୍ଞ ହାତ ରୁ ସୋରିସ ତେଲ ଦାନ କରନ୍ତୁ ।
୨. ବିବାହ ସମୟରେ କପିଳା ଗାଈ ର ଦାନ କରନ୍ତୁ ।

ଶନି

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀର ନବମ ସ୍ଥାନରେ ଶନି ଉପସ୍ଥିତ ଅଛି । ଏହାର ପ୍ରଭାବ ପାଇଁ ଆପଣ ଲୋକଙ୍କ ଉପରେ ପରୋପକାର କରିବେ ତଥା ଏହାର ଭଲ ଲାଭ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ମିଳିବ । ଆପଣ ବଡ଼ ପରିବାର ର ସଦସ୍ୟ ହେବେ । ଆପଣ ଭାଇ ଏବଂ ମିତ୍ର ଜ୍ଞ ସହ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରି ଧନବାନ ବନିବେ । ଆପଣଙ୍କୁ ଚଳା-ବୁଲାଇ କାମ ରୁ ଅଧିକ ଲାଭ ମିଳିବ । ଆପଣଙ୍କୁ ସନ୍ତାନ ର ସୁଖ ହେବ । ପରନ୍ତୁ ସନ୍ତାନ ର ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତି ରେ ବିଳମ୍ବ ହୋଇ ପାରେ । ଆପଣଙ୍କ ପତ୍ନୀ ଧନୀ ପରିବାର ରୁ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରା ରେ ଧନ ରହିବ । ଆପଣ ଧନ ର ବିଷୟରେ ଧ୍ୟାନ ଦେବେ ନାହିଁ । ଆପଣ ଉଦାର ପ୍ରକୃତି ର, ଜାଗୀର ଦାର, ସର୍ବଦା ସୁଖୀ ହେବେ । ମାତା-ପିତା ଜ୍ଞ ଉତ୍ତମ ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଆପଣ ବିଦ୍ଵାନ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କ ଉପରେ କେବେ ମଧ୍ୟ ବାକି ର ବୋଝ ପଡ଼ିବ ନାହିଁ । ଆପଣଙ୍କ ଭାଗ୍ୟ ନିଜ ମାତା-ପିତା ଜ୍ଞ ଭାଗ୍ୟ ଠାରୁ ଭଲ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ପତ୍ନୀ ଭାଗ୍ୟବାନ ଏବଂ ଧନି କୁଟୁମ୍ବ ର ହେବେ । ଆପଣ ପଇସା ପ୍ରତି ବହୁତ ମୋହ କରିବେ ନାହିଁ । ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା କରିବେ, ଭାଗ୍ୟୋନ୍ନତି ହେବ, ସେଥି ରୁ ଅଧିକ ଶୁଭ ଫଳ ପ୍ରାପ୍ତ ହେଉ ଥିବ । ଆପଣ ଧାର୍ମିକ ବିଚାର ବାଲା ହେବେ ।

ଯଦି ଆପଣ ଅନ୍ୟ ର ମାଲ ଉପରେ ଖରାପ ନଜର ରଖନ୍ତି, ତୁଆ ଆଦି ଖେଳନ୍ତି, କ୍ଷରାପ କାମ କରନ୍ତି, ଲୁହା/ମଶୀନ ଆଦି ର କାର୍ଯ୍ୟ କରନ୍ତି, ଘରେ ଶୀତ ଗଛ ର ବୃକ୍ଷ ଦୁଷ୍ଟ, ଯଦି ଆପଣଙ୍କ ନାମ ରେ ୩ଟି ଘର ବନି ଯାଏ, ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କ ଶନି ମାନ୍ଦା ହୋଇ ପାରେ କିମ୍ବା କୌଣସି କାରଣ ବଶ ଶନି ମାନ୍ଦା ହୋଇ ଯାଇ ଥାଏ । ତାହା ହେଲେ ଶନି ର ମାନ୍ଦା ପ୍ରଭାବ ଦ୍ଵାରା ଆପଣ କଳକ୍ରମ ଦେବା ର ଧନ୍ଦା କରନ୍ତି, ତାହା ହେଲେ କ୍ଷତି ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ହୃଦୟରେ ଅନ୍ୟ ର ବଦଲ ନେବା ର ଭାବନା ରହି ଥାଏ । ଅଗ୍ନିକାଣ୍ଡ ର ଆଶଙ୍କା ଅଛି । ଆପଣଙ୍କୁ ସ୍ଵାସ କିମ୍ବା ଗ୍ୟାସ୍ ର ରୋଗ ହୋଇ ପାରେ । ସନ୍ତାନ ସୁଖ ରେ ବିପ୍ଳ କିମ୍ବା ପୁତ୍ର ସନ୍ତାନ ର ଚିନ୍ତା ରହିବ । ମାନ୍ଦା କାମ ରୁ ବଦନାମୀ ମଧ୍ୟ ହୋଇ ପାରନ୍ତି । ଆଖି ର ଦୃଷ୍ଟି ଖରାପ ହେବ । ଏପରି ଆଶଙ୍କା ଅଛି । ଧନୀ ଲୋକଙ୍କ ଠାରୁ ଧନ ଲୁଚି ନେଇ ଗରୀବ ଜ୍ଞ ବାଣ୍ଟିବା, ଏପରି ଆପଣଙ୍କ ବିଚାର ରହିବ ।

ଯଦି ଆପଣ ଉପରୋକ୍ତ କଷ୍ଟ କୁ ଅନୁଭବ କରନ୍ତି । ତାହା ହେଲେ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ ଏବଂ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଅନ୍ୟ ର ମାଲ ଉପରେ ଖରାପ ବ୍ୟବହାର କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ଘର ର ଛାତ ଉପରେ ଇନ୍ଦନ-ସାମଗ୍ରୀ ଆଦି ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଉପାୟ :

୧. ମଥା ଉପରେ କେସର ର ଚିକା କରନ୍ତୁ ।
୨. ଘର ର ଅନ୍ତରେ ଅନ୍ଧାର କୋଠରୀ ବନାନ୍ତୁ ।

ରାହୁ

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀର ପ୍ରଥମ ସ୍ଥାନରେ ରାହୁ ଉପସ୍ଥିତ ଅଛି । ଏହାର ପ୍ରଭାବ ପାଇଁ ଆପଣ ଧନ ବାନ୍ଧ ତଥା ଶ୍ରେଷ୍ଠ ଶାସନ ଅଧିକାରୀ ହେବେ । ଯଦି ସରକାରୀ ଅଧିକାରୀ ତୁଅନ୍ତି, ତାହା ହେଲେ ରାଜ ଦରବାର ରେ ଆପଣଙ୍କ ବହୁତ ସମ୍ମାନ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ମା ଘର ଲୋକ ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପରେ ଧନି ହେବେ । ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ମା ଘରେ କିମ୍ବା ମେଡ଼ିକାଲ ରେ ହେବ କିମ୍ବା ଜନ୍ମ ର ସମୟରେ ଆକାଶ ଉପରେ ମେଘୁଆ ପାଗ ହୋଇ ଥିବ, ଏପରି ଆଶଙ୍କା ଅଛି । ୪୨ ବର୍ଷ ର ବୟସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ସମୟ ମଧ୍ୟମ ହେବ ଯାହା କିଛି ମଧ୍ୟ କ୍ଷରାପ ହେବାର ଥିବ ହେବ, ଏହାର ପରେ ବହୁତ ଭଲ ଏବଂ ଶୁଭ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ଯେଉଁ ଘରେ ହେବ ସେହି ଘର ର ସାମନା ଘର ନଷ୍ଟ ହୋଇ ଥିବ । ଆପଣଙ୍କ ଖାଇବା ପାଇଁ ଅନ୍ୟ କାମ ମଧ୍ୟ ଚାଲୁ ଥିବ । ଯଦି ଗୋଟିଏ କାମ କିମ୍ବା ଚାକିରୀ

ଡାଲି ଯାଏ, ତାହା ହେଲେ ଅନ୍ୟ ଡାକିରୀ କିମ୍ବା ବ୍ୟବସାୟ ଡାଲୁ ହୋଇ ଯିବ । ଆପଣ ଧନୀ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କୁ ସନ୍ତାନ ସୁଖ ଭଲ କିମ୍ବା ଖରାପ ହେଉ, ଅବଶ୍ୟ ମିଳିବ । ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସବୁ ସମୟ ରହି ବାକୁ ଭଲ କଥା ହେବ ନାହିଁ । ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ବେଳମାନୀ ଏବଂ ଯୋକାବାଜୀ ର ଅଭ୍ୟାସ ମଧ୍ୟ ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ । ଜୀବନ ରେ ଅନେକ ପରିବର୍ତ୍ତନ ଆସିବ । ମାତା ଏବଂ ମନ ର ଶାନ୍ତି ପାଇଁ ଶୁଭ ରହିବ ।

ଯଦି ଆପଣ ବିବାହ ର ପରେ ଶଶୁର ଘରୁ ଲୁହା, ବିଭୂଳି ର ସମାନ, କଳା-ନୀଳ କପଡ଼ା ମାଗଣାରେ କିମ୍ବା ଦାନ ରେ ନିଅନ୍ତି, ଘର ର ଅଗଣା ରେ ଧୁଆଁ କରନ୍ତି, ବିଲେଇ ର ଜେର, ଚମଡ଼ା ର ପର୍ଯ୍ୟ ରେ ରଖନ୍ତି, ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କ ରାହୁ ମାନ୍ଦା ହୋଇ ପାରେ କିମ୍ବା କୌଣସି କାରଣ ବଶ ରାହୁ ମାନ୍ଦା ହୋଇ ଯାଇ ଥାଏ । ତାହା ହେଲେ ରାହୁ ର ମାନ୍ଦା ପ୍ରଭାବ ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ବନିବା କାମ ରେ ବାଧା, ଉନ୍ନତି କମ କିନ୍ତୁ ବଦଳା-ବଦଳୀ ଅଧିକ ଥର ହେବ । ୧୧-୨୧-୪୨ ବର୍ଷ ବୟସ ରେ ପିତା ଙ୍କ ପାଇଁ ସମୟ ଅଶୁଭ, ପରିବାର ରେ କାହାରି କୁ ସ୍ୱାସ ର ରୋଗ ହୋଇ ପାରେ । ଆପଣ ଦୁଷ୍ଟ ଏବଂ ନାସ୍ତିକ ସ୍ୱଭାବ ର ହେବେ ।

ଯଦି ଆପଣ ଉପରୋକ୍ତ କଷ୍ଟ କୁ ଅନୁଭବ କରନ୍ତି । ତାହା ହେଲେ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ ଏବଂ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

- ୧. ଅଗଣା ରେ ଧୁଆଁ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
- ୨. ପେଟ ମୋଟା ନ ହୁଏ, ଏହାର ବିଶେଷ ଧ୍ୟାନ ରଖନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

- ୧. ଧର୍ମ ସ୍ଥାନରେ ଗୁଡ଼-ଗହମ ଦାନ ଦେବେ ।
- ୨. କ୍ଷୀର ରେ ସ୍ନାନ କରନ୍ତୁ ।

କେତୁ

ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀର ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନରେ କେତୁ ଉପସ୍ଥିତ ଅଛି । ଏହାର ପ୍ରଭାବ ପାଇଁ ଆପଣ ୨୪ ବର୍ଷ ର ବୟସ ରୁ ହିଁ ଧନ କମେଇବା ରେ ଲାଗି ଯିବେ । ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ର ବୟସ ବଢ଼ି ବାର ସାଥେ ସାଥେ ଧନ ର ଉନ୍ନତି ହେଉ ଥିବ । ଆଜୀବିକା ର ସାଧନ ବନି ରହିବ । ରୋଜଗାର ଦ୍ୱାରା ଭଲ କମେଇ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ବଳ ଶାଳୀ ହେବେ । ଆପଣ ନିଜ କଥା ରେ ପକ୍ଷା ହେବେ । ଆପଣଙ୍କ ପରି ସେ ସୁଖୀ ଏବଂ ସମ୍ପନ୍ନ ରହିବେ ତଥାପି ପଶ୍ଚାତ୍ତାପ କରୁ ଥିବେ । ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ସିଂହ ସହ ମୁକାବିଲା କରିବା ବାଲା ହେବେ । ଆପଣଙ୍କ ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ଯେତିକି ସଖ୍ୟା ରେ ଭାଇ-ଭଉଣୀ ହେବେ, ଆପଣଙ୍କ ସେତିକି ସଖ୍ୟା ରେ ସନ୍ତାନ ହେବ । ୩୪ ବର୍ଷ ର ବୟସ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ସମୟ କଷ୍ଟମୟ ରହିବ । ପରନ୍ତୁ ଏହାର ପରେ ସବୁ କିଛି ଠୀକ ହୋଇ ଯିବ । ଧନ ଧାନ୍ୟ ରେ ଉନ୍ନତି ହେବ । ୨୪ ବର୍ଷ ର ବୟସ ରେ ଯେତିକି ଧନ ଆସିବ, ତାହା ଭବିଷ୍ୟତ ର ୪୦ ବର୍ଷ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ସମୟ ପାଇଁ କାମ୍ପ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ଶତ୍ରୁ ଆପଣଙ୍କ କିଛି ମଧ୍ୟ ବିଚାଡ଼ିବେ ନାହିଁ । ଶତ୍ରୁ ଆପେ ଆପେ ଦୂର ହୋଇ ଯିବେ । ଜୀବନ ରେ କେବେ ନିରାଶା ର ସାମନା କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ ନାହିଁ ।

ଯଦି ଆପଣ ସବୁ ସମୟ ରେ ଲେଖିବାର କାମ କରନ୍ତି, ମିଛ କୁହନ୍ତି, ପର ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ସହ ଗମନ କରନ୍ତି । ନିଜ ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ସହ ଝଗଡ଼ା କରନ୍ତି, ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କ କେତୁ ମାନ୍ଦା ହୋଇ ପାରେ କିମ୍ବା କୌଣସି କାରଣ ବଶ କେତୁ ମାନ୍ଦା ହୋଇ ଯାଇ ଥାଏ । ତାହା ହେଲେ କେତୁ ର ମାନ୍ଦା ପ୍ରଭାବ ଦ୍ୱାରା ୭ ବର୍ଷ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ମା ଘର ସ୍ଥିତି ଖରାପ ରହିବ, ୩୪ ବର୍ଷ ପରେ ସୁଖ ନଷ୍ଟ ହେବା ର ଆରମ୍ଭ ହୋଇ ଯିବ । ମିଛ କହିବା, ଠକ କାମ କରିବା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କର ଅବନତି ହେବ । ଶରୀର ର ବଥା କିମ୍ବା ରୋଗ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ଉପରେ ମଧ୍ୟ ବିପରୀତ ପ୍ରଭାବ ପଡ଼ି ପାରେ । ଆପଣଙ୍କ ମନ ସ୍ତ୍ରୀ ଏବଂ ପୁତ୍ର ଙ୍କ ସମ୍ବନ୍ଧ ରେ ଅଶାନ୍ତି ରହିବ । ଆପଣ ନିଜ ପାଟି ରେ କ୍ଷରାପ କଥା କହିବେ । ଆପଣ ଅଭିମାନ ର କାରଣ ନଷ୍ଟ ହୋଇ ଯିବେ । କାହାରି କୁ ଦେଇ ଥିବା ଆଶ୍ୱାସନ ପୁରା ନ କରିବା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ହାନି କାରକ ହେବ ।

ଯଦି ଆପଣ ଉପରୋକ୍ତ କଷ୍ଟ କୁ ଅନୁଭବ କରନ୍ତି । ତାହା ହେଲେ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ ଏବଂ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।



ବାରଣ :

୧. ପର ସ୍ତ୍ରୀ କ୍ଷମା ସହ ଅନୈତିକ ସମ୍ବନ୍ଧ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. କଲମ ରେ ଲେଖିବାର ଅଧିକ କାମ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଉପାୟ :

୧. ଟାଟି କଦଳି ୪ ଦିନ ଜଳ ରେ ପ୍ରବାହ କରନ୍ତୁ ।
୨. ଟାଟି ଲେମ୍ବୁ ୪ ଦିନ ଜଳ ରେ ପ୍ରବାହ କରନ୍ତୁ ।



ଲାଲ ବହିର ଉପାୟ

ଲାଲ ବହି ର ଉପାୟ କେବେ ଆଉ କେମିତି କରାଯାଏ ?

୧. ଉପାୟ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଉଦୟ ୩୦ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଅସ୍ତ ମଧ୍ୟରେ ଦିନ ସମୟରେ କରନ୍ତୁ, ରାତ୍ର ସମୟରେ ଉପାୟ କରିଲେ ଅଶୁଭ ଫଳ ଦେବାର ସମ୍ଭାବନା ଥାଏ, କେବଳ ଚନ୍ଦ୍ର ଗ୍ରହଣ ର ଉପାୟ ରାତିରେ କରାଯାଇଥାଏ ।

୨. ଉପାୟ ଆରମ୍ଭ କରିବା ପାଇଁ କୌଣସି ଖାସ୍ ଦିନ ଯେପରି ସୋମବାର ବା ମଙ୍ଗଳବାର ଇତ୍ୟାଦି, ସଂକ୍ରାନ୍ତି, ଅମାବାସ୍ୟା ବା ପୂର୍ଣ୍ଣିମା ର ଆବଶ୍ୟକ ନଥାଏ ।

୩. ଆପଣଙ୍କ ରକ୍ତ ସମ୍ପଦ ର ବନ୍ଧୁ ଯେପରି ଭାଇ-ଭଉଣୀ, ମାତା-ପିତା, ଜେଜେବାପା-ଜେଜେମା, ପୁତ୍ର-ପୁତ୍ରି ମଧ୍ୟରୁ ଯିଏକି କରିପାରିଲେ ତାହା ଉପଯୋଗୀ ହୋଇଥାଏ ।

୪. ଦିନକୁ କେବଳ ଗୋଟିଏ ଉପାୟ କରିବେ, ୩୩ ଦିନରେ ଦୁଇଟି ଉପାୟ କଲେ ଶୁଭ ଫଳ ଦେଇ ନଥାଏ କିମ୍ବା କରିଥିବା ଉପାୟ ବି ଫଳ ହୋଇଥାଏ ।

୫. ଏହି ସବୁ ନ କରିବାକୁ ପଡ଼ିଥାଏ, ଯେପରି ମାଂସ-ମାଛ ଖାଇବେନି, ମଦ ପିଇବେନି, ଚାଲି ଚଳଣ ଠିକ୍ ରଖିବେ, ମିଛ କହିବେନି, ଅଇଁଠା ଖାଇବେନି କିମ୍ବା ଖୁଆଇବେନି, ଖରାପ ବ୍ୟବହାର କରିବେନି, ପର ସ୍ତ୍ରୀ-ପର ପୁରୁଷ ସହିତ ସମ୍ପର୍କ ରଖିବେନି ଆଦିର ବିଶେଷ ଧ୍ୟାନ ରଖିବେ ।

୬. ଯେଉଁ ଉପାୟ ଜେଡେ ସମୟ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କରିବା ପାଇଁ ଲେଖାଥାଏ ସେହି ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କରିବାକୁ ପଡ଼ିଥାଏ ।

୭. ଯଦି କୌଣସି କାରଣ ରୁ ଉପାୟ ବନ୍ଦ କରିବାକୁ ପଡ଼ିଲେ ଯେଉଁ ଦିନ ଉପାୟ ବନ୍ଦ କରିବାର ଥିବ ତାହାର ପୂର୍ବ ଦିନ ଚିକିତ୍ସା ଚାଉଳ ନେଇ କ୍ଷୀରରେ ଧୋଇ ତାକୁ ଧଳା କପଡ଼ାରେ ବାନ୍ଧି ପାଖରେ ରଖିବେ, ଯେବେ ଉପାୟ ପୁଣି ଆରମ୍ଭ କରିବାର ଥିବ ତାହେଲେ ସେହି ଚାଉଳ କୁ ଧର୍ମ ସ୍ଥାନରେ କିମ୍ବା ନଦିରେ କିମ୍ବା ବାଡ଼ି-ବଗିଚାରେ ପକେଇ ଦେଇ ପୁଣି ଉପାୟ ଆରମ୍ଭ କରିପାରିବେ, ଏମିତି କଲେ ଉପାୟ ଅଧିକାଂଶ ନିମାନ୍ ପୁରା ଫଳ ମିଳିଥାଏ ।

୮. ସବୁ ଉପାୟ ୪୩ ଦିନ କିମ୍ବା ୪୩ ସପ୍ତାହ କିମ୍ବା ୪୩ ମାସ କିମ୍ବା ୪୩ ବର୍ଷ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କରିବାକୁ ପଡ଼ିଥାଏ, ଉପାୟ ଚାଲୁଥିବା ସମୟରେ କିମ୍ବା ମଝିରେ ଭଙ୍ଗ କଲେ, ଚାହେ ୩୯୩ ଦିନ ହେଇଥିଲେ ମଧ୍ୟ ସବୁ ଉପାୟ ବିଫଳ ହୋଇଥାଏ ।

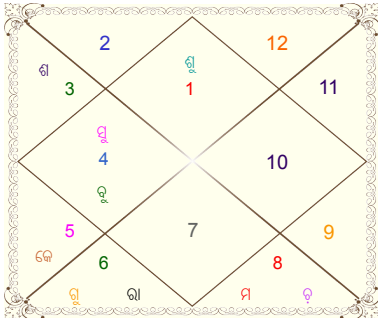
୯. ଜନ୍ମ ଲଗ୍ନ/ବର୍ଷ ଫଳ ଲଗ୍ନ ଉପରେ ଅଶୁଭ ଗ୍ରହ ଥିଲେ ଉପାୟ ନିଜ ଜନ୍ମଦିନ ୦ ନେଇ ୪୦-୪୩ ଦିନ ଭିତରେ କରିବେ ।

୧୦. ଘରେ କୌଣସି ଶୁଭକ କିମ୍ବା ପାତକ ହେଲେ ଉପାୟ ୪୦ ଦିନ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ କରିବେନି ।

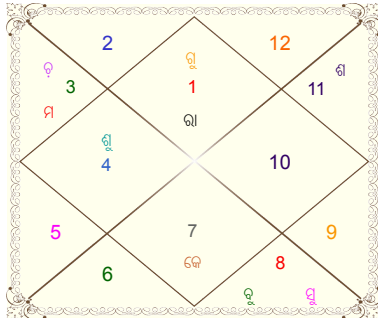
୧୧. ପୂର୍ବ ପୁରୁଷ ଙ୍କ ରୀତୀ-ନୀତି ୩୩ ସଂସ୍କାର ମାନିବାକୁ ପଡ଼ିଥାଏ ।

ଲୀଳା ବହି - ବର୍ଷ ଜୁଣ୍ଟୁଳୀ

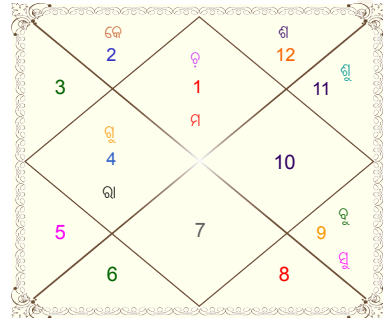
2022



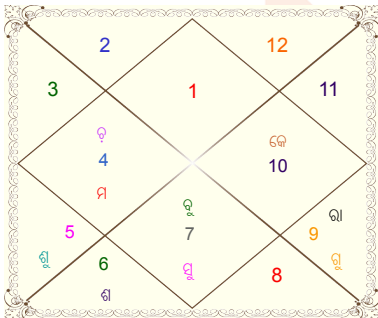
2023



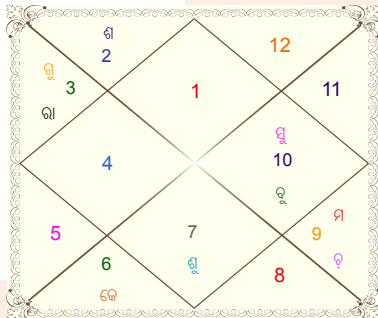
2024



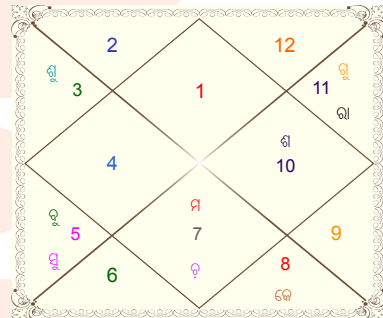
2025



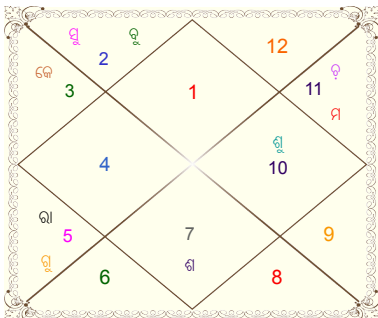
2026



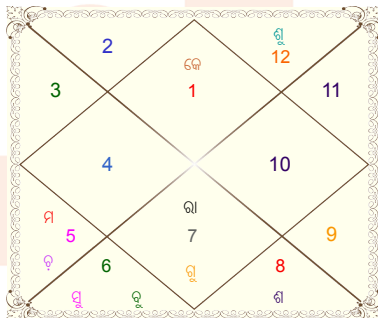
2027



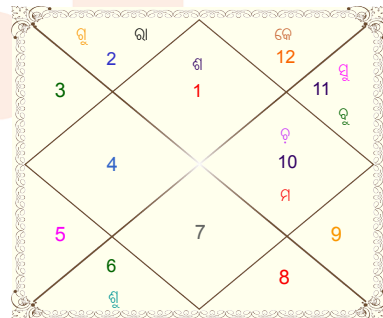
2028



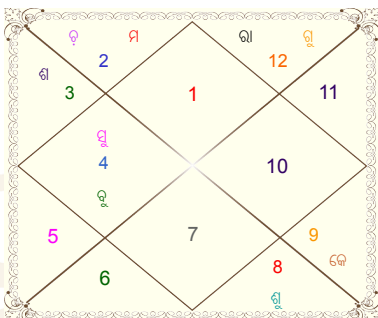
2029



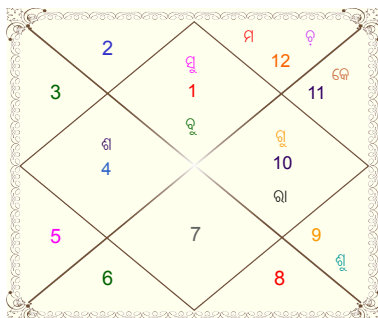
2030



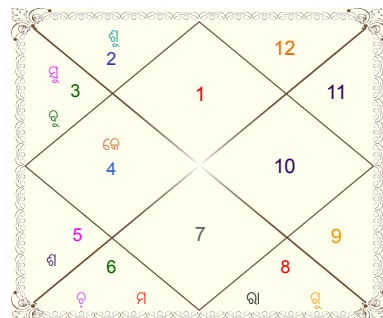
2031



2032



2033



ଲୀଳା ବହି ବର୍ଷପତ୍ର 2022-2023

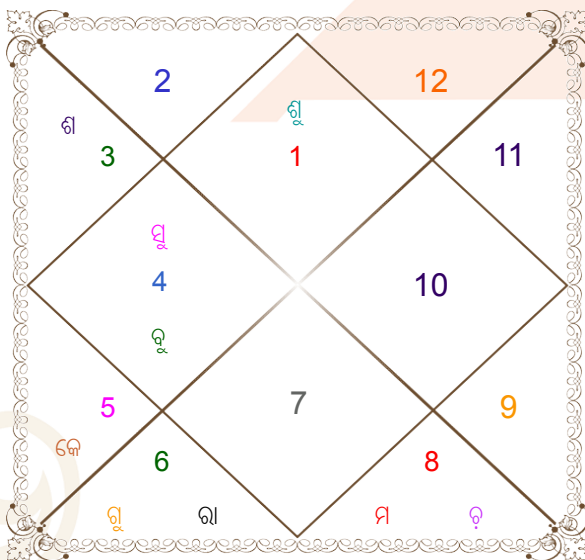
ବର୍ତ୍ତମାନ ଆୟୁ - 36
 ବର୍ତ୍ତମାନ ଦଶା - ଶନି

| ଗ୍ରହ | ଅକ୍ଷ | ଧାର୍ମିକ | ଶୋଭା | ଭଦ୍ର/ଧୀମା |
|---------|------|---------|------|-----------|
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | -- | ଅଃ | -- | ଭଦ୍ର |
| ଚନ୍ଦ୍ର | -- | ଅଃ | -- | ଧୀମା |
| ମଙ୍ଗଳ | -- | ଅଃ | -- | ଧୀମା |
| ବୁଧ | -- | ଅଃ | -- | ଭଦ୍ର |
| ଗୁରୁ | -- | ଅଃ | -- | ଧୀମା |
| ଶୁକ୍ର | -- | ଅଃ | -- | ଭଦ୍ର |
| ଶନି | -- | ଅଃ | -- | ଭଦ୍ର |
| ରାହୁ | -- | ଅଃ | -- | ଧୀମା |
| କେତୁ | -- | ଅଃ | -- | ଭଦ୍ର |

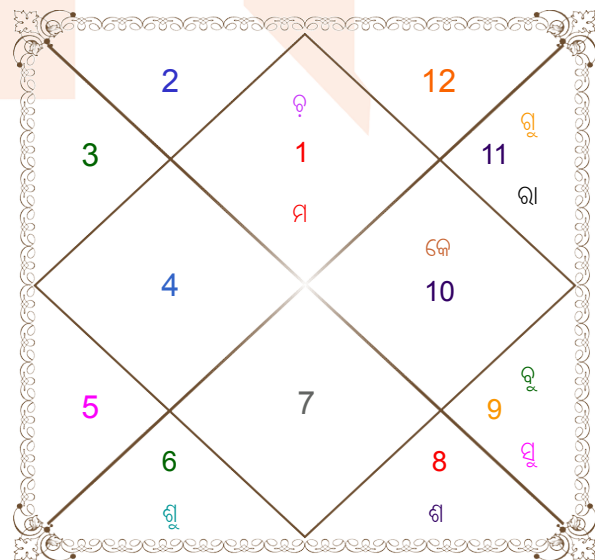
ଭାବ ସ୍ଥିତି

| ଖାଳା | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| ଧାର୍ମିକ | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- | -- |

ବର୍ଷ ଲଗ୍ନ ୨୦୨୨ - ୨୦୨୩



ବର୍ଷ ଚନ୍ଦ୍ର ଲଗ୍ନ ୨୦୨୨ - ୨୦୨୩



ଲାଲ ବହି ବର୍ଷପତ୍ର 2022-2023

ସୂର୍ଯ୍ୟ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନ ରେ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ଧନ ର ଉପଯୋଗ ଅନ୍ୟ ଲୋକ କରିବେ କିନ୍ତୁ ଆପଣ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଲାଭ ଉଠେଇବେ । ପରିବାର ରେ ନୂଆ କାର୍ଯ୍ୟ ଆରମ୍ଭ ହୋଇ ପାରେ ଯାହା ଲାଭଦାୟକ ରହିବ । ବସ୍ତ୍ର ର କାମ ଠାରୁ ଲାଭ ମିଳିବ, ରାତ୍ରି ସମୟ ରେ କରିବା କାର୍ଯ୍ୟ ଠାରୁ ଅଧିକ ଲାଭ ମିଳିବ, ସରକାରୀ ବିଭାଗ କିମ୍ବା ସମୁଦ୍ର ର ଯାତ୍ରା ରେ ମଧ୍ୟ ଲାଭ ମିଳିବ । ମାତା/ଶାଶୁ ଙ୍କ ସହ ଝଗଡ଼ା କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ସୂର୍ଯ୍ୟ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଡୋରୀ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ଏବଂ ଡୋରୀ ର ଧାରଣା ମନ ରେ ଆଣନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. କୌଣସି ମଧ୍ୟ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ସହ ଝଗଡ଼ା କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଚନ୍ଦ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଅଷ୍ଟମ ସ୍ଥାନ ରେ ଚନ୍ଦ୍ର ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ମାତା-ପିତା ଙ୍କ ସୁଖ କମ ମିଳିବ । ଜୁଆ-ଖେଳ ଆଦି କାମ ରେ ହାନି ହେବ । ବାପା ଘରେ କଷ୍ଟ କିମ୍ବା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଝଗଡ଼ା ହେବ । ମନ ର ଶକ୍ତି କ୍ଷୀଣ, ବିଦ୍ୟା ରେ ବାଧା କିମ୍ବା ମାତା ଙ୍କ ସୁଖ ମିଳିବ, ଘର ଠାରୁ ଦୂର ରେ ମଧ୍ୟ ରହି ବାକୁ ପଡ଼ି ପାରେ । ଅଣ୍ଟା-କାସ ଏବଂ ପାଣି ରେ କଷ୍ଟ ର ଭୟ, ହୃଦୟ ରୋଗ ର ଭୟ ରହିବ । ଶାଶୁ ଙ୍କୁ ସ୍ଵାସ ରୋଗ ର ଆଶଙ୍କା ଅଛି ।

ଚନ୍ଦ୍ର ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ମୀଠା ଭୋଜନ କିମ୍ବା କେସର-ଚୁଣା ଡାଲି କିମ୍ବା ଗୁଡ଼ ଧର୍ମ ସ୍ଥାନ ରେ ଦିଅନ୍ତୁ ।
୨. ଅମାବାସ୍ୟା ଦିନ କ୍ଷୀର-ଡାଉଳ ଧର୍ମ ସ୍ଥାନ ରେ ଦିଅନ୍ତୁ ।
୩. ସ୍ଵର୍ଗ ବାସୀ ପିତୃ ଙ୍କ ନାମ ରେ ଶ୍ରାଦ୍ଧ କରନ୍ତୁ ।

ମଙ୍ଗଳ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଅଷ୍ଟମ ସ୍ଥାନ ରେ ମଙ୍ଗଳ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କୁ କୌଣସି ବିଧବା ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ସହ ଝଗଡ଼ା କରିବା ଦରକାର ନାହିଁ । ବୈବାହିକ ସମସ୍ୟା କିମ୍ବା ପରିବାର ରେ କୌଣସି ସ୍ତ୍ରୀ ବିଧବା ହୋଇ ପାରେ । ଛୋଟ ଭାଇ ଯଦି ଥାନ୍ତି, ତାଙ୍କ ପାଇଁ ସମୟ ଠୀକ ରହିବ ନାହିଁ । ଆପଣଙ୍କ ପାଟି ରୁ ବାହାରିବା ଖରାପ କଥା ଲଢ଼େଇ-ଝଗଡ଼ା ର କାରଣ ହେବ । ଆପଣଙ୍କୁ ରାଗ କରିବା କ୍ଷତି କାରକ ହେବ, ସମୟ ଠିକ୍ ଭାବେ ବିତାନ୍ତୁ ।

ମଙ୍ଗଳ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ବିଧବା ସ୍ତ୍ରୀ କୁ ଉପହାର ଦେଇ ଚରଣ ସ୍ପର୍ଶ କରି ଆର୍ଶୀବାଦ ନିଅନ୍ତୁ ।
୨. ଚନ୍ଦ୍ର ରେ ମୀଠା ରୁଟି ଲଗେଇ କୁକୁର କୁ ଖୁଆନ୍ତୁ ।

ବୁଧ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନ ରେ ବୁଧ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ଧନ ଲାଭ, ପରିବାର ରେ ସବୁ ଖୁସୀ ଏବଂ ସୁଖ ର ସାଧନ ମିଳିବ । କହି ବାକୁ ଗଲେ ରାଜଯୋଗ ର ସମୟ ଅଛି, ବିଦେଶ ଯାତ୍ରା କିମ୍ବା ବିଦେଶ ରେ ଲାଭ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ, ଏପରି ଯୋଗ ଅଛି । ଭଉଣୀ-ଝିଅ, ପିଉସି ନାନି-ସାଳୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ଲାଭ ହୋଇ ପାରେ । ମାତା ଙ୍କ ଠାରୁ ଧନ-ସମ୍ପତ୍ତି ର ଲାଭ ହେବ କିନ୍ତୁ ମାତୃ ସୁଖ ରେ କମୀ ର ଆଶଙ୍କା ରହିବ ।

ବୁଧ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଝିଅ-ଭଉଣୀ, ପିଉସି ନାନି-ସାଳୀ ଙ୍କ ସହ ଝଗଡ଼ା କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ବିଧବା ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ବନ୍ଧ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଗୁରୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଷଷ୍ଠ ସ୍ଥାନ ରେ ଗୁରୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ମାମୁ ର ଚିନ୍ତା ରହିବ, କାହାରିକୁ କୌଣସି ଜିନିଷ ମାଗିବା ଦ୍ୱାରା ମଧ୍ୟ ମିଳିବ ନାହିଁ, ଏକା ବୁଲିବାର ଅଭ୍ୟାସ ଆପଣଙ୍କୁ ସବୁ ଜାଗାରେ ନଷ୍ଟ କରିବ । ମାମୁ/ ମଉସା/ଦାଦା ଙ୍କ ସହ ଝଗଡ଼ା ଆପଣଙ୍କୁ ହାନି ଦେବ । ବାକି କରିବା, ଦାନ/ଭିକ୍ଷା ମାଗିବା, ଆସିବା ସମୟ କୁ ଖରାପ କରି ପାରେ । ଶତ୍ରୁ ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବେ କିନ୍ତୁ ଶତ୍ରୁ ନିଜେ-ନିଜେ ମରି ଯିବେ ।

ଗୁରୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ଧର୍ମ ମନ୍ଦିର ର ପୂଜାରୀ କୁ ବସ୍ତ୍ର ଦାନ ଦେବେ ।
୨. ଶୁଖ ସୁନା, କେସର, ଚଣା ଡାଲି ଆଦି ହଳଦିଆ ଜିନିଷ ଧର୍ମ ସ୍ଥାନ ରେ ଦିଅନ୍ତୁ ।

ଶୁକ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ପ୍ରଥମ ସ୍ଥାନ ରେ ଶୁକ୍ର ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ, ସୁନ୍ଦର ବନିବା, ସଜେଇ ହେବା ଆପଣଙ୍କ ଅଭ୍ୟାସ ବନି ଯିବ, ପ୍ରେମିକ ଗୁଣ ମଧ୍ୟ ହୋଇ ପାରେ । ନିଜ ଆୟୁ ର ଲୋକ ଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଆପଣ ପ୍ରଧାନ ବନି ପାରନ୍ତି । ଧାର୍ମିକ ହୋଇ ଥିଲେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କର ପ୍ରେମିକ ଗୁଣ ରହିବ । ଉତ୍ତମ ଭବନ କିମ୍ବା ବାହନ ର ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇ ପାରେ । ଲୋକ ଙ୍କ ଠାରୁ ମାର୍ଗ ଦର୍ଶନ ନେବେ ।

ଶୁକ୍ର ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଡାଲା-ଡ଼ଳନ ଖରାପ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ଏବଂ ଅନୈତିକ ସମ୍ବନ୍ଧ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ଧର୍ମ-କର୍ମ ରେ ରୁଚି ରଖନ୍ତୁ ।

ଶନି

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ତୃତୀୟ ସ୍ଥାନ ରେ ଶନି ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ହାତ ରେ ଖର୍ଚ୍ଚ ଅଧିକ ହେବ କିମ୍ବା ଧନ ର କମୀ ରହିବ । ଆପଣ ସମସ୍ତଙ୍କ ସାହାଯ୍ୟ କରିବେ କିନ୍ତୁ ଲୋକ ଆପଣଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷରାପ କରି ପାରନ୍ତି । ଲୁହା, ମଶାନ ସମ୍ବନ୍ଧିତ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ଲାଭ ହେବ । ଆପଣ ସାହସ ପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବେ ଯାହାର କାରଣ ଆପଣଙ୍କୁ କ୍ଷତି ମଧ୍ୟ ଉଠେଇ ବାକୁ ପଡ଼ି

ପାରେ ।

ଶନି ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ମାଛ ର ଶିକାର କରନ୍ତୁ ନାହିଁ, ମାଛ ଖାଆନ୍ତୁ ନାହିଁ । ମଦ ପିଅନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. କୀକର କିମ୍ବା ବେରୀ ର ବୃକ୍ଷ ଘରେ ଲଗାନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ରାହୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଷଷ୍ଠ ସ୍ଥାନ ରେ ରାହୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ଶସ୍ତ୍ର ଭୟ ରହିବ, ବିନା ଲାଭସେଷ ର ହୃଦୟର ରଖିବା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଦଣ୍ଡ/ଜରିମାନା ର ଭୟ ରହିବ । ଦାଦା ଙ୍କ ସହ ଝଗଡ଼ା କରିବା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ହାନି ହେବ । ନିମ୍ନ ସ୍ତର ର ଲୋକ ଙ୍କ ସହିତ ମିତ୍ରତା ଦ୍ଵାରା ହାନି ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ଉପରେ ଡ଼ୋରୀ ର ଲାଞ୍ଜ ମଧ୍ୟ ଲାଗି ପାରେ । ବ୍ୟବସାୟ କରିବା କିମ୍ବା ଲେଖା-ପଢ଼ା ର ବିନା କରିବା କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ଲାଭ ହେବ ନାହିଁ ।

ରାହୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. କଳା କୁକୁର ପାଳନ୍ତୁ କିମ୍ବା କଳା କୁକୁର କୁ ଭୋଜନ ର ଭାଗ ଖୁଆନ୍ତୁ ।
୨. ୬ ପଇସା ପାଖରେ ରଖନ୍ତୁ ।

କେତୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ପଞ୍ଚମ ସ୍ଥାନ ରେ କେତୁ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କ ଏହି ବର୍ଷ ଗୁରୁ ଭକ୍ତି ରେ ରୁଚି ରହିବ । ଡ଼ାଲୀ-ଡ଼ଳନ ଠାକ ରହିବ । ଧର୍ମ-ସଜ୍ଜର ର ଛିତି ଶୁଭ ହେବାର କାରଣ ସନ୍ତାନ ର ସୁଖ ମିଳିବ । ପୁତ୍ର ଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କ ଭାଗ୍ୟୋଦୟ ହେବ ଏବଂ ଆର୍ଥିକ ଛିତି ରେ ସୁଧାର ହେବ । ପରିବାର ରେ କୌଣସି ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ସନ୍ତାନ ଜନ୍ମ ହେବାର ଯୋଗ ଥାଏ, ତାହା ହେଲେ ପୁତ୍ର ଲାଭ ହେବ । ଯାତ୍ରା ରେ ଉନ୍ନତି ହେବ ।

କେତୁ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଖରାପ ଚଳନ ର ଲୋକ ଙ୍କ ସଙ୍ଗେ ରେ ପଡ଼ନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ଲୁହା ର ପେଡ଼ି/ଟୁଙ୍ଗ/ଆଲମାରୀ ରେ ସବୁ ବେଳେ ଡ଼ାଲୀ ଲଗାନ୍ତୁ ନାହିଁ । ଡ଼ାଲୀ କୁ ବେଳେ-ବେଳେ ଖୋଲୁ ଥାଆନ୍ତୁ ।

ବର୍ଷକୁ ଶୁଭ ବନେଇବା ପାଇଁ ବର୍ଷାରମ୍ଭରେ ବିଷିଷ୍ଟ ଉପାୟ

୧. ୮ ଦିନ ଜଳଖିଆ ରେ ପନୀର ଖାଆନ୍ତୁ କିମ୍ବା ପନୀର ର ବଞ୍ଚି ଥିବା ପାଣି ପିଅନ୍ତୁ ।

(ଉପରୋକ୍ତ ଉପାୟ ଜନ୍ମ ଦିନରେ କିମ୍ବା ଜନ୍ମ ଦିନ ର ୪୦ ଦିନ ଭିତରେ ଆରମ୍ଭ କରିବାକୁ ହେବ ।)

ଲାଲ ବହି ବର୍ଷପତ୍ର 2023-2024

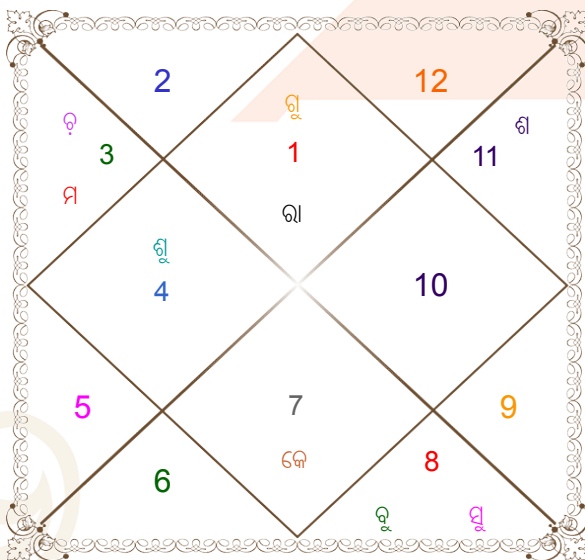
ବର୍ତ୍ତମାନ ଆୟୁ - 37
 ବର୍ତ୍ତମାନ ଦଶା - ଶନି

| ଗ୍ରହ | ଅକ୍ଷ | ଧାର୍ମିକ | ଶୋଭା | ଭଦ୍ର/ଧୀମା |
|---------|------|---------|------|-----------|
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | -- | ଋ | -- | ଭଦ୍ର |
| ଚନ୍ଦ୍ର | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ମଙ୍ଗଳ | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ବୁଧ | -- | ଋ | -- | ଧୀମା |
| ଗୁରୁ | -- | -- | -- | ଧୀମା |
| ଶୁକ୍ର | -- | ଋ | -- | ଭଦ୍ର |
| ଶନି | -- | -- | ଋ | ଭଦ୍ର |
| ରାହୁ | -- | -- | -- | ଧୀମା |
| କେତୁ | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |

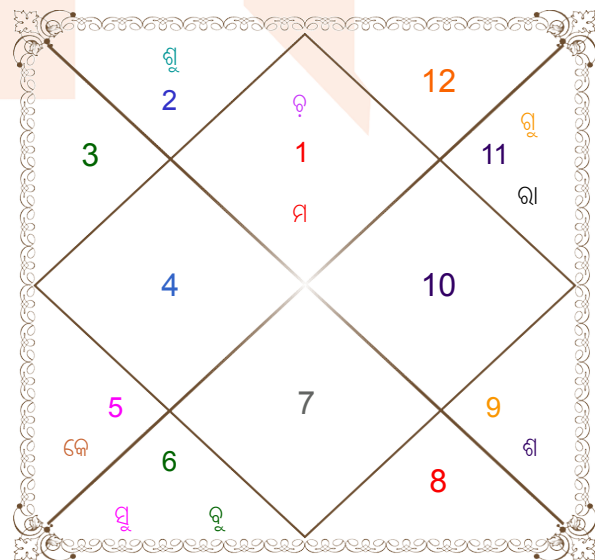
ଭାବ ସ୍ଥିତି

| ଖାଳା | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---------|----|----|----|----|---|---|----|----|----|----|----|----|
| ଧାର୍ମିକ | -- | -- | -- | -- | ଋ | ଋ | -- | -- | -- | -- | -- | -- |

ବର୍ଷ ଲଗ୍ନ ୨୦୨୩ - ୨୦୨୪



ବର୍ଷ ଚନ୍ଦ୍ର ଲଗ୍ନ ୨୦୨୩ - ୨୦୨୪



ଲାଲ ବହି ବର୍ଷପତ୍ର 2023-2024

ସୂର୍ଯ୍ୟ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଅକ୍ଷୟ ସ୍ଥାନ ରେ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣ ମୃତ୍ୟୁ ମୁଖରେ ପଡ଼ି ପାରନ୍ତି, କୌଣସି ରୋଗୀ ପାଖରେ ଯେତେ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବସି ରହିବେ ସେତେ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ତାହାର ମୃତ୍ୟୁ ହେବ ନାହିଁ । ସବୁ କାମ କୁ ବାୟତ୍ୟ ର ସହିତ ନିଭେଇବା ରେ ପ୍ରସତ୍ଵଶୀଳ ରହିବେ, ସ୍ଵଭାବ ସାଧୁ ଭଳି ହେବ । ଆପଣ ନିଜ ପାଇଁ କରି ଯିବା କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ଲୋକ ଙ୍କୁ ସମର୍ପିତ କରିବେ । ସଜଟ ରେ ଅଧିକ ଉନ୍ନତି କରିବେ ।

ସୂର୍ଯ୍ୟ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ରସୋଇ ଘର ଅପବିତ୍ର ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ପର ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ସହ ଅନୈତିକ ସମ୍ପର୍କ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଚନ୍ଦ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ତୃତୀୟ ସ୍ଥାନ ରେ ଚନ୍ଦ୍ର ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ଚରିତ୍ର ଠିକ୍ ହେବ ଏବଂ ପରାକ୍ରମ ବଢ଼ିବ, ଡୋରୀ ଠାରୁ ବଞ୍ଚିବେ । ବିଦ୍ୟା ଭଲ ରହିବ । ୩, ୬, ୮, ୧୨ ମାସ ଅଧିକ ଲାଭ ବାୟକ ହେବ, ଭଗବାନ ନିଜେ ଆପଣଙ୍କ ଭାଗ୍ୟ ବନେଇବା ରେ ସହାୟକ ହେବେ, ଗରୀବ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ପର୍କ ରହିବ, କୌଣସି ଅନ୍ତରାକ୍ଷୟ ଖେଳ ରେ ଆପଣଙ୍କ ରୁଚି ରହିବ କିମ୍ବା ନିଜେ ମଧ୍ୟ ସେହି ଖେଳ ରେ ଭାଗ ନେଇ ପାରନ୍ତି ।

ଚନ୍ଦ୍ର ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଭଉଣୀ-ଭାଇ ଙ୍କ ସହ ଝଗଡ଼ା କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ଭଗବାନ ଙ୍କ ପାଇଁ ମିଳି ଯିବା ସାମାନ ହତପ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ମଙ୍ଗଳ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ତୃତୀୟ ସ୍ଥାନ ରେ ମଙ୍ଗଳ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ଅନ୍ୟ ର ସହାୟତା କରି ପ୍ରସନ୍ନତା ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ କିନ୍ତୁ ଜରୁରୀ ନାହିଁ କି ଅନ୍ୟର ସହାୟତା ର ବଦଳରେ ଆପଣଙ୍କୁ ସମ୍ମାନ ମିଳିବ, ଆପଣଙ୍କୁ କସରତ କରିବା କିମ୍ବା ଜିମ ଆଦି ଯିବା ର ପସନ୍ଦ ରହିବ, ମୁକାବଲା ର ବିଦ୍ୟା (ପ୍ରତିଯୋଗୀ ପରୀକ୍ଷା) ରେ ଆପଣଙ୍କ ଜୀତ ହେବ, ନର୍ମ ସ୍ଵଭାବ ରଖିବେ, ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କୁ ଲାଭ ମିଳିବ । ଧନ-ପରିବାର/ସନ୍ତାନ ର ସୁଖ ମିଳିବ ।

ମଙ୍ଗଳ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଯେଟ ର ବିଶେଷ ଧ୍ୟାନ ରଖନ୍ତୁ ।
୨. ହାତୀ ଦାନ୍ତ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ବୁଧ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଅକ୍ଷୟ ସ୍ଥାନ ରେ ବୁଧ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ଜୀବନ-କଳା ଆଦି ବିଦ୍ୟା ରେ ରୁଚି କିମ୍ବା ତାହାର ପ୍ରଭାବ ରହିବ, ଯାହା ଆପଣଙ୍କୁ ଲାଭ ଦେବ ନାହିଁ । ଭିତରେ ଭିତରେ ଗୁପ୍ତ ରୂପ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଶରୀର କଷ୍ଟ କିମ୍ବା ଧନ ହାନି ର ସାମନା କରି ବାକୁ ପଡ଼ି ପାରେ । ଗୃହସ୍ଥ ଜୀବନ ରେ କିଛି ସମସ୍ୟା ଆସି ପାରେ । ଅଳ୍ପ ଆପଣଙ୍କ ପତନ ର କାରଣ ବନିବ । ଖରାପ ଚାଲି-ଚଳନ ଏବଂ ଅନୈତିକ ସମ୍ବନ୍ଧ ହାର ଏବଂ ହାନି ଦେବ ।

ବୁଧ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ବର୍ଷା ର ପାଣି ଛାତ ଉପରେ ରଖନ୍ତୁ ।
୨. ଏହି ବର୍ଷ ବିବାହ ହୋଇ ଥାଏ, ତାହା ହେଲେ ତମ୍ବା ର ବାସନ ରେ ମୁଗ ଭର୍ତ୍ତି କରି ସଂକଳ୍ପ କରି ପତ୍ତି/ପତ୍ତୀ ଦୁହିଁ ଙ୍କୁ ଜଳ ପ୍ରବାହ କରନ୍ତୁ । ଯଦି ବିବାହ ହୋଇ ଯାଇ ଥାଏ, ତାହା ହେଲେ ମଧ୍ୟ ଏହି ଉପାୟ କରିବା ଲାଭ ହେବ ।
୩. ଆଖି ରେ ସୁରମା ଲଗାନ୍ତୁ ।

ଗୁରୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ପ୍ରଥମ ସ୍ଥାନ ରେ ଗୁରୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ବିଦ୍ୟା ସମ୍ବନ୍ଧିତ ଅସୁବିଧା ହୋଇ ପାରେ । ପିତା-ଦାଦା ଙ୍କ ଚିନ୍ତା, ପରିବାର ରେ କାହାକୁ ଦୃଢ଼ତା ରୋଗ କିମ୍ବା ମାନସିକ ରୋଗ ର ଆଶଙ୍କା ଅଛି । ବୟସ୍କ ଲୋକ ଙ୍କୁ ସ୍ୱାସ ରୋଗ ହୋଇ ପାରେ । ମଦ-ବୀୟନ ଆପଣଙ୍କ ବୁଦ୍ଧି କୁ ଭ୍ରଷ୍ଟ କରି ପାରେ, ଅତଃ ଏହାର ସେବନ ଆପଣଙ୍କୁ ହାନିକାରକ ଅଟେ । ଲୋକ ର ନିନ୍ଦା କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଗୁରୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. କେସର/ହଳଦୀ ର ଚିକା କରନ୍ତୁ ।
୨. ବୟସ୍କ ଲୋକ ଙ୍କ ଆର୍ତ୍ତନାଶ ନିଅନ୍ତୁ ।

ଶୁକ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନ ରେ ଶୁକ୍ର ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ କାମ ବାସନା ର ଅଧିକତା ର ଲକ୍ଷଣ ହେବ । ଦ୍ୱିତୀୟ ସ୍ତ୍ରୀ ଆପଣଙ୍କ ଉପରେ ମୋହିତ ହୋଇ ପାରନ୍ତି । ମାମା-ମାଉସୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ଲାଭ ମିଳିବ, ଉତ୍ତମ ଭବନ-ବାହନ ର ସୁଖ ମିଳିବ, ଉତ୍ତମ ଭୋଜନ-ଶୟନ ର ପସନ୍ଦ ରହିବ । ଆପଣ ନିଜ ପରିବାର କିମ୍ବା ସହର/ଗାଁ/ଦେଶ ରେ ପ୍ରସିଦ୍ଧି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ଯାତ୍ରା ଅଧିକ ହେବ ଏବଂ ଯାତ୍ରା ରେ ଲାଭ ହେବ ।

ଶୁକ୍ର ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଚାଲି-ଚଳନ ଠାକ ରଖନ୍ତୁ, ଅନୈତିକ ସମ୍ବନ୍ଧ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ବୟସ୍କ ଘର ର ପରମ୍ପରା ଠାକ ରଖନ୍ତୁ ।

ଶନି

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଏକାଦଶ ସ୍ଥାନ ରେ ଶନି ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ଏହି ବର୍ଷ ଧର୍ମ କୁ ମାନିବେ ଏବଂ ନିୟମରେ ରହିବେ । ଧର୍ମ ଉପରେ କାର୍ଯ୍ୟ ରହିବେ ତାହା ହେଲେ ମାଟି ର କାମ ରେ ସୁନା ବନିବ । ପ୍ରାଣ ଚାଲି ଯିବ କିନ୍ତୁ ବଚନ ଯେପରି ନ ଯିବ ତେଣୁ ପରି ଆପଣଙ୍କ ଚରିତ୍ର ହେବ । ଲୁହା, କୋଇଲା, ରବର ଆଦି ର କାମ ରେ ଲାଭ ହୋଇ ପାରେ । ବ୍ୟସନ ଙ୍କ ଠାରୁ ଦୁର ରେ ରହିବେ ତାହା ହେଲେ ବହୁତ ଲାଭ ହେବ । ସଜ୍ଜ ପସନ୍ଦ ବୃତ୍ତି ରହିବ ।

ଶନି ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଭଡ଼ା ଘରେ ବାସ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ଡୋରି-ଠକ କରି ଧନ କମାନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ରାହୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ପ୍ରଥମ ସ୍ଥାନ ରେ ରାହୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ କିଛି ଅବଳ-ବଦଳ ର ଯୋଗ ଅଛି । ଭାଗ୍ୟ ର ପ୍ରଭାବ ସ୍ଥିର ରହିବ ନାହିଁ । ଆପଣଙ୍କର ଦୃଷ୍ଟି ଏକୃତ୍ୟା ଏବଂ ନାସ୍ତିକ ସ୍ୱଭାବ ହୋଇ ପାରେ । କିଛି ବନ୍ଧୁ ଥିବା କାମ ରେ ବାଧା ମଧ୍ୟ ଆସି ପାରେ । ଆପଣଙ୍କୁ ନୀଳ-କଳା କପଡ଼ା ପିନ୍ଧିବା ହାନିକାରକ ହୋଇ ପାରେ । ସରକାରୀ ବିଭାଗ ଦ୍ୱାରା ଲାଞ୍ଜ କିମ୍ବା କୋର୍ଟ ର କେସ ବନି ପାରେ ।

ରାହୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ଧର୍ମ ସ୍ଥାନ ରେ ଗୁଡ଼-ଗହମ ଦାନ ଦିଅନ୍ତୁ ।
୨. କ୍ଷୀର ଶରୀର ଉପରେ ଘଷି ସ୍ନାନ କରନ୍ତୁ ।

କେତୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନ ରେ କେତୁ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ଦିନ କୁ ଦିନ ଆପଣଙ୍କ ଧନ ର ଉନ୍ନତି ହେଉ ଥିବ, ଏପରି ସଂଭାବନା ଅଛି । ଜୀବିକା ର ନୂଆ ସାଧନ ବନିବ । ଆପଣ ନିଜ କାମ ରେ ପକ୍ଷା ରହିବେ । ଏହାର କାରଣ ଆପଣ ବଡ଼ ରୁ ବଡ଼ ବ୍ୟକ୍ତି ଙ୍କ ଆଗରେ ନିଜର ଝଣ୍ଟା ଚଳେଇ ପାରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ଆପଣଙ୍କ ସହାୟତା କରିବେ ଏବଂ ସନ୍ତାନ ଅସୁବିଧା ରେ ଶତ୍ରୁ ଙ୍କୁ ମାରି ଆସିବ ।

କେତୁ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଚାଲା ଚଳନ ଠାକ ରଖନ୍ତୁ ଏବଂ ଅନୈତିକ ସମ୍ବନ୍ଧ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. କଲମ ରେ ଲେଖିବା କାମ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ବର୍ଷକୁ ଶୁଭ ବନେଇବା ପାଇଁ ବର୍ଷାରମ୍ଭରେ ବିଷିଷ୍ଟ ଉପାୟ

୧. ତମ୍ବା ର ବାସନ ରେ ମୁଗ ଭର୍ତ୍ତି କରି ଜଳ ରେ ପ୍ରବାହ କରନ୍ତୁ ।

(ଉପରୋକ୍ତ ଉପାୟ ଜନ୍ମ ଦିନରେ କିମ୍ବା ଜନ୍ମ ଦିନ ର ୪୦ ଦିନ ଭିତରେ ଆରମ୍ଭ କରିବାକୁ ହେବ ।)

ଲୀଳା ବହି ବର୍ଷପତ୍ର 2024-2025

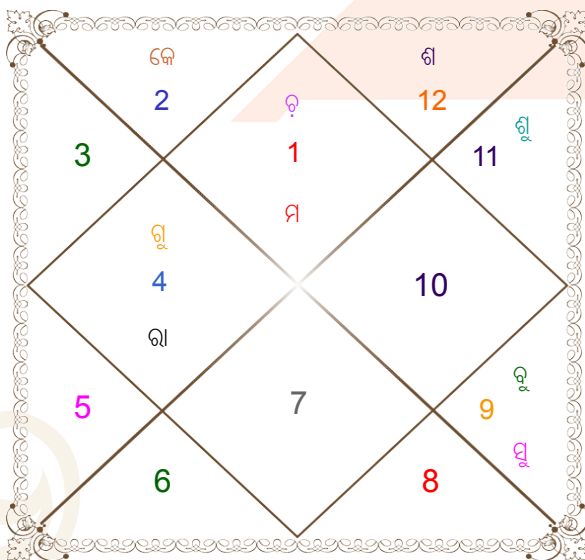
ବର୍ତ୍ତମାନ ଆୟୁ - 38
 ବର୍ତ୍ତମାନ ଦଶା - ଶନି

| ଗ୍ରହ | ଅକ୍ଷ | ଧାର୍ମିକ | ଶୋଭା | ଭଦ୍ର/ଧୀମା |
|---------|------|---------|------|-----------|
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ଚନ୍ଦ୍ର | -- | ଋ | -- | ଭଦ୍ର |
| ମଙ୍ଗଳ | -- | ଋ | -- | ଭଦ୍ର |
| ବୁଧ | -- | -- | -- | ଧୀମା |
| ଗୁରୁ | -- | ଋ | -- | ଧୀମା |
| ଶୁକ୍ର | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ଶନି | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ରାହୁ | -- | ଋ | ଋ | ଧୀମା |
| କେତୁ | -- | ଋ | -- | ଭଦ୍ର |

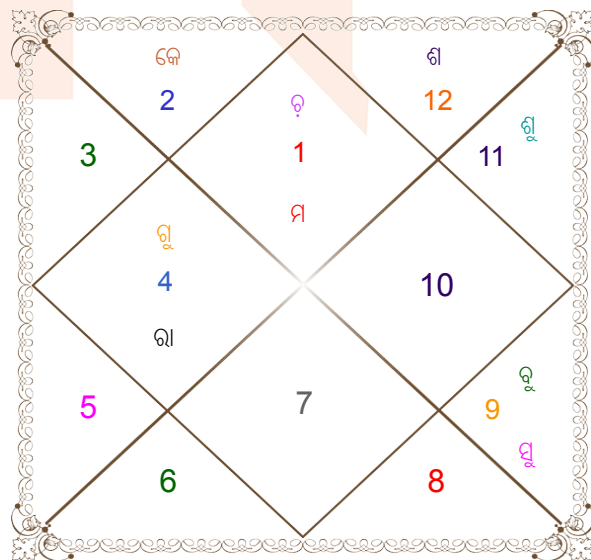
ଭାବ ସ୍ଥିତି

| ଶାଳା | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---------|----|----|---|----|---|----|----|---|----|----|----|----|
| ଧାର୍ମିକ | -- | -- | ଋ | -- | ଋ | -- | -- | ଋ | -- | -- | -- | -- |

ବର୍ଷ ଲଗ୍ନ ୨୦୨୪ - ୨୦୨୫



ବର୍ଷ ଚନ୍ଦ୍ର ଲଗ୍ନ ୨୦୨୪ - ୨୦୨୫



ଲାଲ ବହି ବର୍ଷପତ୍ର 2024-2025

ସୂର୍ଯ୍ୟ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ନବମ ସ୍ଥାନ ରେ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ଉତ୍ତମ ବାହନ ର ସୁଖ ମିଳିବ, ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ର ଲାଭ କିମ୍ବା ଶୁଭ ଫଳ ମିଳିବ । ସମାଜ ଏବଂ ପରିବାର ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ତ୍ୟାଗ ଏବଂ ପରୋପକାର ର ଭାବନା ମଧ୍ୟ ରହିବ, ପରିବାର ର ବ୍ୟକ୍ତି ଙ୍କୁ ପାଳନ କରିବାର ଭାର ଆପଣଙ୍କ ଉପରେ ରହି ପାରେ । ସ୍ୱପରାକ୍ରମ ଦ୍ୱାରା ଭାଗ୍ୟ ର ସିତାରା ମଧ୍ୟ ବୁଲନ୍ଦ ହେବ ।

ସୂର୍ଯ୍ୟ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ବିନା କଷ୍ଟ ର ଜିନିଷ, ଦାନ/ଉପହାର ଆଦି ନିଅନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ବହୁତ ନରମ କିମ୍ବା ବହୁତ ଗରମ ସ୍ୱଭାବ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଚନ୍ଦ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ପ୍ରଥମ ସ୍ଥାନ ରେ ଚନ୍ଦ୍ର ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ସୁନ୍ଦର ଏବଂ ଧନୀ କପଡ଼ା ପିନ୍ଧିବାର ପସନ୍ଦ ରହିବ, ବିଦ୍ୟା ଠାରୁ ଲାଭ, କାହାର ସମ୍ପତ୍ତି ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ରହି ପାରେ, ମାତା-ପିତା ଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ସୁବିଧା ସୁବୃଦ୍ଧ ହେବ, କେବେ ଯାତ୍ରା ରେ ଯଦି ଯାଆନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ଯାତ୍ରା ରୁ ଫେରିବା ପରେ ମାତା ଙ୍କ ଚରଣ ସ୍ପର୍ଶ କରି ଆଶୀର୍ବାଦ ନେବା ଦ୍ୱାରା ଲାଭ ହେବ । ପରିବାର ରେ ବହୁତ ସମୟ ପରେ କାହାର ପୁତ୍ର ସନ୍ତାନ ହେବ ।

ଚନ୍ଦ୍ର ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଚାଲା-ଚଳନ ଠାକ ଏବଂ ଅନୈତିକ ସମ୍ବନ୍ଧ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ମାତା କିମ୍ବା ମାତା ସମାନ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ସହ ଝଗଡ଼ା କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ମଙ୍ଗଳ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ପ୍ରଥମ ସ୍ଥାନ ରେ ମଙ୍ଗଳ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ଏହି ବର୍ଷ ସାହସୀ ଏବଂ ଶୁଭବୀର ବନିବେ, କ୍ଷରାପ ସମୟରେ ମଧ୍ୟ ଭଲ ଭାବେ ରହିବେ, ବଡ଼ ଭଉଣୀ-ଭାଇ ଙ୍କ ଠାରୁ ଲାଭ ମିଳି ପାରେ । ଅନ୍ୟ ର ସାହାଯ୍ୟ କୁ ସବୁ ବେଳେ ମନେ ରଖିବେ । ପରିବାର ଏବଂ ସମାଜ କୁ ସଜ୍ଜତ ଏବଂ ଭଲ ରାସ୍ତାରେ ଯିବା ପାଇଁ ଆଦେଶ ଦେବେ, ଲୁହା/କାଠ, ମଶୀନ ଆଦି କାମ ରେ ଲାଭ ମିଳିବ ।

ମଙ୍ଗଳ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ବିନା କଷ୍ଟ ର ଜିନିଷ, ଦାନ କିମ୍ବା ଉପହାର ନିଅନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ହାତୀ ଦାନ୍ତ ପାଖରେ ରଖନ୍ତୁ ।

ବୁଧ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ନବମ ସ୍ଥାନ ରେ ବୁଧ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ପିତା ଙ୍କ ଠାରୁ ଦୂର ରେ କିମ୍ବା ପିତା ଙ୍କ ଚିନ୍ତା ରହିବ, ପିତା ଙ୍କ ଧନ ନାଶ ହୋଇ ପାରେ । ଆପଣଙ୍କୁ ପାଟି ସମ୍ବନ୍ଧିତ ରୋଗ ହେବ, ଏପରି ଆଶଙ୍କା ଅଛି । ଗୃହସ୍ଥ ଏବଂ ସନ୍ତାନ ସମ୍ବନ୍ଧ ରେ କିଛି ଖରାପ ମଧ୍ୟ ହୋଇ ପାରେ । ସବୁ କାମ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ବିତର୍କ କରି ଚାଲିବା ଦରକାର । ଯାତ୍ରା ରେ ହାନି ର ଭୟ ହେବ, ସତର୍କ ରହନ୍ତୁ ।

ବୁଧ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ଗାଇ କୁ ଘାସ ଦିଅନ୍ତୁ ।
୨. ଲୁହା ର ଗୁଳି କୁ ଲାଲ ରଙ୍ଗ କରି ପାଖରେ ରଖନ୍ତୁ ।

ଗୁରୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନ ରେ ଗୁରୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ମଦ-ବାୟର ପାଇବା ଦ୍ୱାରା, ବିଦ୍ୟା କିମ୍ବା ବିଦ୍ୟା ସମ୍ବନ୍ଧୀ କାମ ରେ ଅସୁବିଧା ହୋଇ ପାରେ । ଚାଳୀ-ଚଳନ ଖରାପ କିମ୍ବା ଦ୍ୱିତୀୟ ବିବାହ ଆପଣଙ୍କୁ ସନ୍ତାନ ସୁଖ ଦେବ ନାହିଁ । ଆପଣଙ୍କୁ ଜମୀ-ବାଡ଼ି ର ଚିନ୍ତା ରହିବ । ପିତା-ଦାଦା ଙ୍କ ଠାରୁ ଦୂର ହୋଇ ପାରେ । ମାତା ଙ୍କ ମୃତ୍ୟୁ କିମ୍ବା ମାତା ଙ୍କ ଉପରେ କଷ୍ଟ ଆସି ପାରେ ।

ଗୁରୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ଧର୍ମ ମନ୍ଦିର ରେ ପ୍ରତି ଦିନ ମୁଣ୍ଡ ନୁଆନ୍ତୁ ।
୨. କୁଳ ପୁରୋହିତ କୁ ଧନ ବସ୍ତ୍ର ଆଦି ଦେଇ ଆର୍ତ୍ତାବାଦ ନିଅନ୍ତୁ । ଯଦି କୁଳ ପୁରୋହିତ ନ ଥାଏ, ତାହା ହେଲେ ମାସ-୨ ମାସ ପରେ ୪ କିଲୋ ଚଣା ଡାଲି ଧର୍ମ ସ୍ଥାନ ରେ ଦିଅନ୍ତୁ ।

ଶୁକ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଏକାଦଶ ସ୍ଥାନ ରେ ଶୁକ୍ର ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ କନ୍ୟା ସନ୍ତାନ ର ସୁଖ ମିଳି ପାରେ । ଆପଣ ଅକାରଣେ ପଇସା ପଛରେ ଦୋକିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଭଲ ଗୁଣ ବଢ଼ିବ କିନ୍ତୁ ଆପଣଙ୍କ ଗୁପ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ କରି ବାର ଅଭ୍ୟାସ ହୋଇ ଯିବ । ବିତାରଧାରା କୁ ଶୀଘ୍ର ବଦଳେଇ ଦେବେ, ଶଶୁର ଙ୍କ ପାଖରେ ଲୋକ ସହାୟକ ହେବେ । ଭଉଣୀ-ସାଳୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ଲାଭ ମିଳିବ, ସ୍ତ୍ରୀ ଆପଣଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ସାହାଯ୍ୟ କରିବେ ।

ଶୁକ୍ର ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ମାତା/ପତ୍ନୀ ଙ୍କୁ ଘର ର ମୁଖ୍ୟ ବନାନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ଚାକିରୀ-ବ୍ୟାପାର ରେ ବାରମ୍ବାର ବଦଳା-ବଦଳୀ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଶନି

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଦ୍ୱାଦଶ ସ୍ଥାନ ରେ ଶନି ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ଧନ ବ୍ୟୟ ଅଧିକ ହେବ ଏବଂ ତାହା ମଧ୍ୟ ପରିବାର ର ଶୁଭ କାମରେ, ସରକାରୀ ବିଭାଗ ଏବଂ ମକକମା ରେ ବଜ୍ରତ ହେବ । ଆପଣଙ୍କୁ ରାତି ର ପୁରା

ଆରାମ ମିଳିବ । ସାଧନା କିମ୍ବା ଅଧ୍ୟାତ୍ମ ରେ ଆପଣଙ୍କ ରୁଚି ରହିବ ତାହା ହେଲେ ଏହା ଆପଣଙ୍କୁ ହାନିକାରକ ହୋଇ ପାରେ । ମଦ ପିଇବା, ମାଂସ-ମାଛ ଖାଇବା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ହାନିକାରକ ଅଟେ ।

ଶନି ର ଶୁଭ୍ରତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଚାଲା-ଚଳନ ଠାକ ରଖନ୍ତୁ ଏବଂ ଅନୈତିକ ସମ୍ପତ୍ତି ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ଅନ୍ୟ ର ଜିନିଷ ଉପରେ ନଜର ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ରାହୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନ ରେ ରାହୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ମାତା ସମାନ ସ୍ତ୍ରୀ ଜ୍ଞ ସହ ଅବୈଧ ସମ୍ପର୍କ ରଖିବା ହାନିକାରକ ହେବ କିମ୍ବା ଖରାପ ଚାଲା-ଚଳନ ଆପଣଙ୍କ ଧନ କୁ ନଷ୍ଟ କରି ଦେବ । ଘରେ ପାଇଖାନା ର ଜାଗା ବଦଳାନ୍ତି, ତାହା ହେଲେ କୋର୍ଟ କେସ ର ଭୟ ହେବ । ଆପଣ ଦିନ ରେ ମଧ୍ୟ ସପ୍ନ ଦେଖିବେ କିନ୍ତୁ ସେହି ସପ୍ନ ଲାଭ ନ ଦେଇ ଅବନତି କରେଇବ । ମସ୍ତିସ୍କ ମାୟା ରହିବ କିମ୍ବା ବୁଦ୍ଧି କୌଣସି କାମ ରେ ଆସିବ ନାହିଁ ।

ରାହୁ ର ଶୁଭ୍ରତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ଘରେ ଗଙ୍ଗା ଜଳ ରେ ସ୍ନାନ କରନ୍ତୁ ।
୨. ସୁଖା ଧନିୟା (ମସଲ) ଜଳରେ ପ୍ରକାହ କରନ୍ତୁ ।

କେତୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଦ୍ଵିତୀୟ ସ୍ଥାନ ରେ କେତୁ ଶୁଭ୍ର ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ଯାତ୍ରା କରିବା ଦ୍ଵାରା ଧନ ଲାଭ କିମ୍ବା ମାନ-ସମ୍ମାନ ବଢ଼ିବ, ଦଲାଲ କିମ୍ବା କମ୍ପାନୀ ଏଜେଣ୍ଟ ର କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ଲାଭ ହେବ । ଆୟ ବୃଦ୍ଧି ଲକ୍ଷ-କୋଟି ହୋଇ ଥାଉ କିନ୍ତୁ ଭାଗ ରେ ଦଲାଲ ର ଦଲାଲୀ ପରି ଧନ ଲାଭ ହେବ । ସରକାର ଜ୍ଞ ଠାରୁ ସାହାଯ୍ୟ କିମ୍ବା ସରକାରୀ ବିଭାଗ ରେ ଧନ ଲାଭ ହୋଇ ପାରେ ।

କେତୁ ର ଶୁଭ୍ରତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଚାଲି ଚଳନ ଠାକ ରଖନ୍ତୁ ଏବଂ ଅନୈତିକ ସମ୍ପତ୍ତି ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ନକଲୀ ସୁନା ପିନ୍ଧନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ବର୍ଷକୁ ଶୁଭ୍ର ବନେଇବା ପାଇଁ ବର୍ଷାରମ୍ଭରେ ବିଷିଷ୍ଟ ଉପାୟ

୧. ୪୩ ଦିନ ଗାଈ, କୁକୁର ଏବଂ କାଉ କୁ ଭୋଜନ ର ଭାଗ ଦିଅନ୍ତୁ ।

(ଉପରୋକ୍ତ ଉପାୟ ଜନ୍ମ ଦିନରେ କିମ୍ବା ଜନ୍ମ ଦିନ ର ୪୦ ଦିନ ଭିତରେ ଆରମ୍ଭ କରିବାକୁ ହେବ ।)

ଲାଇ ବହି ବର୍ଷପତ୍ର 2025-2026

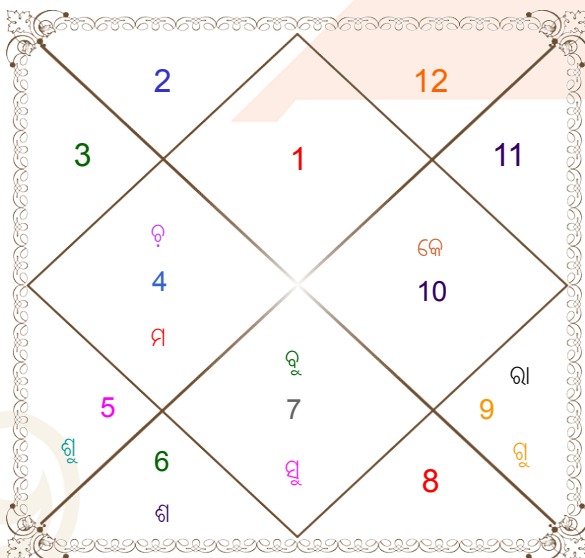
ବର୍ତ୍ତମାନ ଆୟୁ - 39
 ବର୍ତ୍ତମାନ ଦଶା - ଶନି

| ଗ୍ରହ | ଅକ୍ଷ | ଧାର୍ମିକ | ଶୋଇବା | ଭଦ୍ର/ଧୀମା |
|---------|------|---------|-------|-----------|
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ଚନ୍ଦ୍ର | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ମଙ୍ଗଳ | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ବୁଧ | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ଗୁରୁ | -- | -- | -- | ଧୀମା |
| ଶୁକ୍ର | -- | -- | -- | ଧୀମା |
| ଶନି | -- | ଘୃ | -- | ଧୀମା |
| ରାହୁ | -- | -- | -- | ଧୀମା |
| କେତୁ | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |

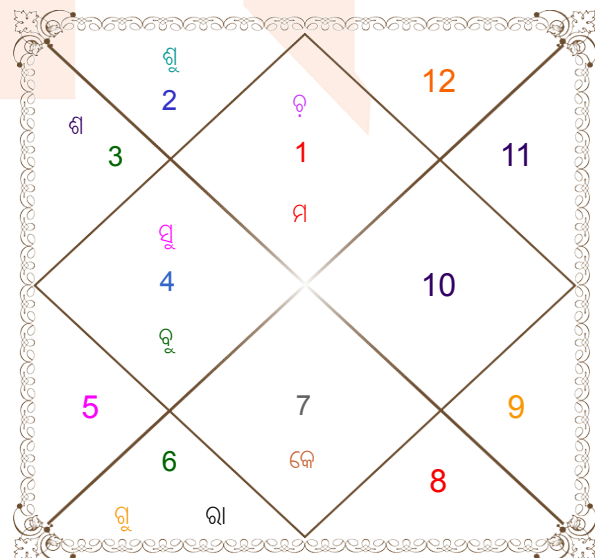
ଭାବ ସ୍ଥିତି

| ଖାଳା | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| ଧାର୍ମିକ | ଘୃ | ଘୃ | ଘୃ | -- | -- | -- | -- | ଘୃ | -- | -- | ଘୃ | ଘୃ |

ବର୍ଷ ଲଗ୍ନ ୨୦୨୫ - ୨୦୨୬



ବର୍ଷ ଚନ୍ଦ୍ର ଲଗ୍ନ ୨୦୨୫ - ୨୦୨୬



ଲାଲ ବହି ବର୍ଷପତ୍ର 2025-2026

ସୂର୍ଯ୍ୟ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନ ରେ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ମାତା-ପିତା ଙ୍କ ଅବସ୍ଥା ରେ ସୁଧାର ହେବ, ଆପଣଙ୍କ ଲେଖା ଏକ ସମ୍ମାନିତ ବ୍ୟକ୍ତି ରେ ରହିବ । କାରବାର ଏବଂ ପରିବାର ରେ ଉନ୍ନତି ହେବ, ଭାଗୀଦାରୀ ର କାମ ରେ ଲାଭ ମିଳିବ । ଜ୍ୟୋତିଷ କିମ୍ବା କର୍ମକାଣ୍ଡ ରେ ରୁଚି ରହିବ । କଷ୍ଟ ସମୟରେ ଆପଣ ନିଜ ପରିବାର ପାଖରେ ରହିବେ ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ କଷ୍ଟ ର ନିବାରଣ ହୋଇ ଯିବ ।

ସୂର୍ଯ୍ୟ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଯଦି ବୋକାନ କିମ୍ବା ପ୍ରାଇବେଟ ଡାକିରା କରନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ମୁଣ୍ଡ ଗରମ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ସରକାରୀ ଅଧିକାରୀ ଆଶାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ରାଗ ସ୍ୱଭାବ ରଖନ୍ତୁ ।

ଚନ୍ଦ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନ ରେ ଚନ୍ଦ୍ର ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣ ରାଜା ଭୋଗ ଭୋଗିବେ କିମ୍ବା ସମୟ ସୁଖ ପୁର୍ବକ କରିବ, ସମୁଦ୍ର ଯାତ୍ରା କିମ୍ବା ସମୁଦ୍ର ସମ୍ବନ୍ଧିତ କାମ ରେ ଲାଭ ହେବ । କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା ପୂର୍ବ ରୁ କୌଣସି ବଡ଼ ଲୋକ ଙ୍କ ଆଦେଶ ନେଇ କାର୍ଯ୍ୟ ଆରମ୍ଭ କରିବା ଶୁଭ ରହିବ । ଯଦି କିଏ ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ସମ୍ପତ୍ତି ରଖି ଯାଏ ତାହା ଫେରସ୍ତ ନେବାକୁ ଆସିବ ନାହିଁ କିମ୍ବା ଅତୀତକ ଧନ-ଲାଭ ହେବ ।

ଚନ୍ଦ୍ର ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ମାତା କିମ୍ବା ମାତା ସମାନ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ସହ ଝଗଡ଼ା କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. କ୍ଷୀର-ପାଣୀ ର ବ୍ୟାପାର କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ମଙ୍ଗଳ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନ ରେ ମଙ୍ଗଳ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ସୁଖ ର ସାଧନ ରୁ ସୁଖ ମିଳିବ ନାହିଁ । ମାତା, ଜେଜେ ମା-ଶାଶୁ ଏବଂ ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ଲାଭ ମିଳିବ, ଗୃହସ୍ଥ ଜୀବନ ସୁଖମୟ ବ୍ୟତୀତ ହେବ, ସନ୍ତାନ ର ଚିନ୍ତା ରହିବ, କୁଣ୍ଡଳୀ ଙ୍କ ଆପଣଙ୍କ ଘରେ ଯିବା-ଆସିବା ଲାଗି ରହିବ । ଘର/ବାହନ ର ସୁଖ ମିଳିବ । ଅନ୍ୟ କୁ ସୁଖ ଦେଇ ତାକୁ ରାସ୍ତା କୁ ଆଣିବାରେ ପ୍ରୟତ୍ନଶୀଳ ରହିବେ ।

ମଙ୍ଗଳ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଦକ୍ଷିଣ ଦିଗ ର ମୁଖ୍ୟ ଦ୍ୱାର ଘରେ ବାସ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. କାଲା-କଣା, ଅଙ୍ଗୁଳି, ନିଃସନ୍ତାନ ବ୍ୟକ୍ତି ଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ବୁଧ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନ ରେ ବୁଧ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ପରିବାର ରେ ସମ୍ମାନ ମିଳିବ, ବିଦେଶ ଯାତ୍ରା କିମ୍ବା ବିଦେଶ ରେ ଲାଭ ର ଯୋଗ ଅଛି । ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ସମ୍ବନ୍ଧିତ କାମ ରେ କିମ୍ବା ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ଲାଭ ମିଳିବ । କପଡ଼ା, ଡାକ୍ତରୀ ର କାମ ରେ ଅଧିକ ଲାଭ ମିଳି ପାରେ । ଆପଣଙ୍କ କଲମ ରେ ଖଣ୍ଡ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ଅଧିକ ବଳ ହେବ । ଝିଅ-ଭଉଣୀ, ପିଉସି ନାନି-ସାଳୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ଲାଭ ମିଳିବ ।

ବୁଧ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ବିନା ସୀଙ୍ଗ ବାଲୀ ଗାଇ କିମ୍ବା ଛେଳି ଘରେ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ସବୁଜ ଘାସ ଘରେ ଲଗାନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଗୁରୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ନବମ ସ୍ଥାନ ରେ ଗୁରୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କର ଏହି ବର୍ଷ ନାସ୍ତିକ ପ୍ରବୃତ୍ତି ବନ୍ଦି ପାରେ, ଯାହା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭ ହେବ ନାହିଁ । ବୟସ୍କ ଲୋକ ଙ୍କ ସହ ବିରୋଧ କିମ୍ବା ଝଗଡ଼ା ଆପଣଙ୍କୁ କରିବା ଦରକାର ନାହିଁ । ପରିବାର ରେ କାହାକୁ ହୃଦୟ ସମ୍ବନ୍ଧିତ ରୋଗ ହୋଇ ପାରେ । ସୁନା ବିକିବେ କିମ୍ବା ପଡ଼ି ଯିବ କିମ୍ବା ହଜି ଯିବ ଏପରି ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । କୌଣସି କୁ ଦେଇ ଯିବା କଥା ଯଦି ଆପଣ ପୁରା କରିବେ ନାହିଁ, ତାହା ହେଲେ ହାନି ହେବ ।

ଗୁରୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ଗଙ୍ଗା ସ୍ନାନ କରନ୍ତୁ ଏ ଥର (୨ ମାସ ଲଗାତାର କିମ୍ବା ମାସ ରେ ଥରେ କିମ୍ବା ୯ ଦିନ ଲଗାତାର)
୨. ବଡ଼ନ ଏବଂ ଧର୍ମ ର ପାଳନ କରନ୍ତୁ ।

ଶୁକ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ପଞ୍ଚମ ସ୍ଥାନ ରେ ଶୁକ୍ର ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ଗୁଣ ପ୍ରେମିକ ଏବଂ ଆପଣ ପରସ୍ପା ଉପରେ କାମୁକ ହୋଇ ପାରନ୍ତି । ଯଦି ଆପଣ ଅବିବାହିତ ହୋଇ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ଏହି ବର୍ଷ ବିବାହ ର ଯୋଗ ବନ୍ଦିବ । ଅର୍ଦ୍ଧଜାତୀୟ କିମ୍ବା ମାତା-ପିତା ଙ୍କ ଇଚ୍ଛା ର ବିରୁଦ୍ଧ ରେ ବିବାହ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ନଚେତ ସନ୍ତାନ ସୁଖ ଖରାପ ହୋଇ ପାରେ । ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ଗର୍ଭପାତ ର ଭୟ ରହିବ । ପିଉସି ନାନି-ଝିଅ, ଭଉଣୀ-ସାଳୀ ଙ୍କ ଧନ ଆପଣଙ୍କ ହାତରେ କ୍ଷତି ହୋଇ ପାରେ ।

ଶୁକ୍ର ର ଅଶୁଭତା ଦୂର କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ଗୁଣ୍ଡାଙ୍ଗ ଶୀର କିମ୍ବା ଦହି ରେ ସଫା କରନ୍ତୁ ।
୨. ଗାଇ କୁ ଡ଼ାରା ଖୁଆନ୍ତୁ ।

ଶନି

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଷଷ୍ଠ ସ୍ଥାନ ରେ ଶନି ଅଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ଏହି ବର୍ଷ ପୂର୍ଣ୍ଣମା ଦିନ କୌଣସି ନୂଆ କାମ ଆରମ୍ଭ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ । କାରଣ, ଏହି ଦିନ ନୂଆ କାମ ଆରମ୍ଭ କରିବା ଦ୍ୱାରା ଲାଭ ହେବ ନାହିଁ । ଚମଡ଼ା ର ସାମାନ ମାଗଣା/ଉପହାର ରେ ନିଅନ୍ତୁ ନାହିଁ, ଏହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ମାନ-ସମ୍ମାନ କମ ହେବ କିମ୍ବା ଅକାରଣେ ଲଜ୍ୟା ର କାରଣ ବନ୍ଦିବ ।

ପରିବାର ରେ କାହାକୁ ଯେତ ବଧା କିମ୍ବା ପଥର ରୋଗ ର ଭୟ ରହିବ ।

ଶନି ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. କଳା କୁକୁର ର ସେବା/ପାଳନ କରନ୍ତୁ ।
୨. ନୂଆ ଜୋତା କାହାରି କୁ ପ୍ରଥମେ ପିନ୍ଧେଇ ନିଜେ ପିନ୍ଧନ୍ତୁ କିମ୍ବା କିଣିବାର ୬ ଦିନ ପରେ ପିନ୍ଧନ୍ତୁ ।
୩. ବାଦାମ ଖରାପ ନାଳ ରେ ପକାନ୍ତୁ ।

ରାହୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୃଷ୍ଣଳୀ ର ନବମ ସ୍ଥାନ ରେ ରାହୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ପୁଲିସ/କୋର୍ଟ ର ଭୟ କିମ୍ବା ଡୋରୀ ର ଜିନିଷ କିଣିବାର ଲାଞ୍ଚ ଲାଗି ପାରେ । ପିତା ଏବଂ ଶଶୁର ଙ୍କୁ କଷ୍ଟ କିମ୍ବା ତାଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ହାନି ର ଭୟ ରହିବ । ସାଧୁ-ଫଳୀର ର ସହିତ ଅପଥା ଖର୍ଚ୍ଚ ହିଁ ବଢ଼ିବ । ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ରେ ବାଧା ଆସି ପାରେ । ଧାର୍ମିକ କାମ ରେ ରୁଚି ରହିବ, ଯାହା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଠାକ ରହିବ ନାହିଁ ।

ରାହୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ଶରୀର ରେ ଶୁଦ୍ଧ ସୁନା ପିନ୍ଧନ୍ତୁ ।
୨. ଧର୍ମ ମନ୍ଦିର ରେ ମୁଣ୍ଡ ନୁଆଁନ୍ତୁ ।

କେତୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୃଷ୍ଣଳୀ ର ଦଶମ ସ୍ଥାନ ରେ କେତୁ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ମାଟି ର କାମ ଠାରୁ ସୁନା ବନିବ, ସହର/ଗାଁ/ଦେଶ/ବିଶ୍ଵ ପ୍ରସିଦ୍ଧ ହୋଇ ପାରନ୍ତି । ସମାଜ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଖ୍ୟାତି ବଢ଼ିବ, ଧନ ର ଅଭାବ ରହିବ ନାହିଁ । ଆପଣଙ୍କ ସ୍ଵଭାବ ରେ କିଛି ଚିନ୍ତା ବନି ପାରେ । ସନ୍ତାନ ସୁଖ ର ଯୋଗ ମଧ୍ୟ ଏହି ବର୍ଷ ଅଛି କିନ୍ତୁ ମାତା ଙ୍କୁ କଷ୍ଟ ହୋଇ ପାରେ, ଶାଶୁ/ମାତା ଙ୍କ ଦେହ ଖରାପ କିମ୍ବା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଦୂର ହୋଇ ପାରେ ।

କେତୁ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଚାଲୀ ଚଳନ ଖରାପ କିମ୍ବା ଅନୈତିକ ସମ୍ବନ୍ଧ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. କୁକୁର କୁ ପୂଜା କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ବର୍ଷକୁ ଶୁଭ ବନେଇବା ପାଇଁ ବର୍ଷାମୂଳେ ବିଷିଷ୍ଟ ଉପାୟ

୧. ଶରୀର ରେ ଶୁଦ୍ଧ ସୁନା ପିନ୍ଧନ୍ତୁ ।

(ଉପରୋକ୍ତ ଉପାୟ ଜନ୍ମ ଦିନରେ କିମ୍ବା ଜନ୍ମ ଦିନ ର ୪୦ ଦିନ ଭିତରେ ଆରମ୍ଭ କରିବାକୁ ହେବ ।)

ଲାଲ ବହି ବର୍ଷପତ୍ର 2026-2027

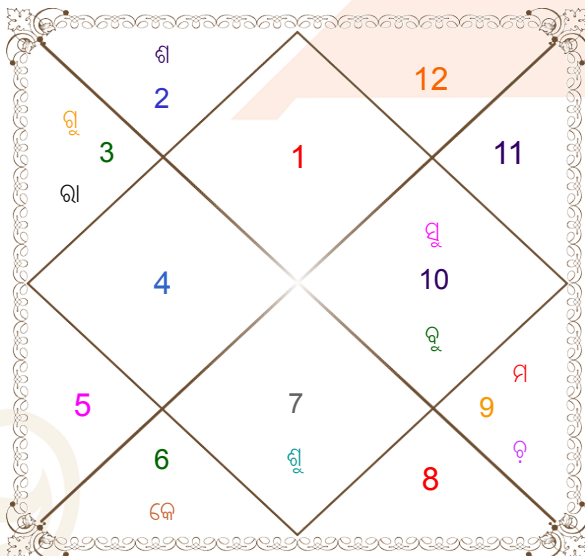
ବର୍ତ୍ତମାନ ଆୟୁ - 40
 ବର୍ତ୍ତମାନ ଦଶା - ଶନି

| ଗ୍ରହ | ଅକ୍ଷ | ଧାର୍ମିକ | ଶୋଇବା | ଭଦ୍ର/ଧୀମା |
|---------|------|---------|-------|-----------|
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | -- | -- | -- | ଧୀମା |
| ଚନ୍ଦ୍ର | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ମଙ୍ଗଳ | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ବୁଧ | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ଗୁରୁ | -- | -- | -- | ଧୀମା |
| ଶୁକ୍ର | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ଶନି | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ରାହୁ | -- | -- | -- | ଧୀମା |
| କେତୁ | -- | ଘୃ | -- | ଧୀମା |

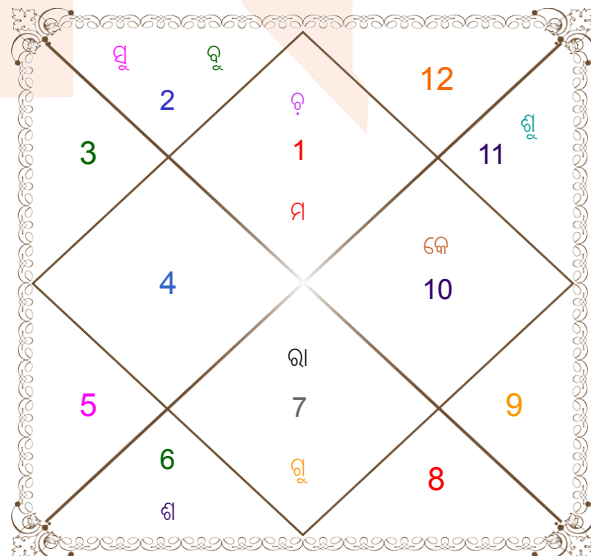
ଭାବ ସ୍ଥିତି

| ଖାନା ଧାର୍ମିକ | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|--------------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| | ଘୃ | -- | -- | ଘୃ | ଘୃ | -- | -- | ଘୃ | -- | -- | -- | ଘୃ |

ବର୍ଷ ଲଗ୍ନ ୨୦୨୬ - ୨୦୨୭



ବର୍ଷ ଚନ୍ଦ୍ର ଲଗ୍ନ ୨୦୨୬ - ୨୦୨୭



ଲାଲ ବହି ବର୍ଷପତ୍ର 2026-2027

ସୂର୍ଯ୍ୟ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଦଶମ ସ୍ଥାନ ରେ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣ ନିଜର ଭେଦ କାହାରି କୁ କୁହନ୍ତୁ ନାହିଁ, ଆପଣଙ୍କ ଭେଦ ହିଁ ଆପଣଙ୍କୁ ନଷ୍ଟ କରିବାକୁ ଚେଷ୍ଟା କରି ପାରେ, ମଶୀନ, କାଠ କାମ ରେ ହାନି ହୋଇ ପାରେ । କୋଇଲା-ବିଜୁଳୀ ର କାମ ରେ ଅଧିକ ଲାଭ ମିଳିବ ନାହିଁ । ପିତା ଙ୍କ ସୁଖ କମ କିମ୍ବା ପିତା ଙ୍କ ଠାରୁ ଲାଭ ମିଳିବ ନାହିଁ । ଆଖି ରେ କଷ୍ଟ ର ଭୟ ଅଛି ।

ସୂର୍ଯ୍ୟ ର ଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ପିତୃ ଘରେ ହେଷ୍ଟ ପତ୍ର ଲଗାନ୍ତୁ ।
୨. ମୁଣ୍ଡ ରେ ଧଳା-ଶରବତୀ, ଟୋପୀ ପିନ୍ଧନ୍ତୁ କିମ୍ବା ପଗଡ଼ୀ/ସ୍ଵାର୍ଫ ବାନ୍ଧନ୍ତୁ ।

ଚନ୍ଦ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ନବମ ସ୍ଥାନ ରେ ଚନ୍ଦ୍ର ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ସମାଜ ର ଲୋକ ଙ୍କ ପ୍ରତି ଦୟା ହେବ । ଆପଣଙ୍କୁ ପିତୃ ସମ୍ପତ୍ତି ର ଲାଭ ମିଳିବ । ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ର ଭଲ ଫଳ ମିଳିବ । ଆପଣଙ୍କର ସଙ୍ଗତ ବିଦ୍ୟା ରେ ରୁଚି, ଧାର୍ମିକ ବିଚାର କିମ୍ବା ଧର୍ମ-କର୍ମ ରେ ରୁଚି ଅଧିକ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କୁ ବିନମ୍ର ସ୍ୱଭାବ ରଖିବା ଶୁଭ ଅଟେ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ଉନ୍ନତି ର ଶିଖର ରେ ପହଞ୍ଚି ପାରିବେ, ଧନ-ଦୌଳତ ପ୍ରଭୃତ ହେବ ।

ଚନ୍ଦ୍ର ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଚାଲୀ ଚଳନ ଠାକ ରଖନ୍ତୁ ଏବଂ ଅନୈତିକ ସମ୍ବନ୍ଧ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ମିଛ କୁହନ୍ତୁ ନାହିଁ, ଅଇଁଠା ଭୋଜନ ଖୁଆନ୍ତୁ ନାହିଁ ଏବଂ ଖାଆନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ମଙ୍ଗଳ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ନବମ ସ୍ଥାନ ରେ ମଙ୍ଗଳ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ପିତୃ ସମ୍ପତ୍ତି ରେ ବୃଦ୍ଧି ଏବଂ ତାହାର ଲାଭ ମିଳିବ, ପରିବାର ରେ ଧାର୍ମିକ ଉତ୍ସବ ମଧ୍ୟ ହୋଇ ପାରେ । ଡାକିରା-ବ୍ୟାପାର ରେ ଅଧିକ ଧନ ଲାଭ ମିଳିବ । ବିବାହିତ ଭାଇ ଙ୍କ ସହିତ ରହିବେ କିମ୍ବା ତାଙ୍କର ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ସେବା କରିବେ, ତାହା ହେଲେ ଆପଣ ସମାଜ ରେ ଏକ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ବ୍ୟକ୍ତି ର ଅଧିକାର ପାଇବେ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ମାନ-ସମ୍ମାନ ବଢ଼ିବ ।

ମଙ୍ଗଳ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ପରଦେଶ ରେ ବାସ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ଭାଇ ଙ୍କ ସହ ଝଗଡ଼ା କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ବୁଧ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଦଶମ ସ୍ଥାନ ରେ ବୁଧ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ବିଦେଶ ଯାତ୍ରା କିମ୍ବା ବିଦେଶ ସମ୍ବନ୍ଧିତ କାମ ରେ ଲାଭ ମିଳିବ, ପିତୃ ନାନି, ଝିଅ, ସାଳୀ, ଭଉଣୀ ଚରମ ରୁ ଖୁସୀ ମିଳିବ । ନିଜ ଲୋକ ଙ୍କ ସହ ବ୍ୟବହାର କୁଶଳ, ଖୁଶାମତ ଏବଂ ନୀତି ଦ୍ୱାରା ସବୁ କାମ କରିବେ, ଅନେକ ବିଦ୍ୟା ରେ ରୁଚି, ଆପଣଙ୍କ ପରିବାର ର ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ଭଲ ହୋଇ ଯିବ ।

ବୁଧ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ସବୁଜ ରଙ୍ଗ ନିଷେଧ ।
୨. ତୁଳସୀ, ମନୀ ପ୍ଲାଟ ଆଦି ଚଉଡ଼ା ପତ୍ର ର ଗଛ-ପତ୍ର ଘରେ ଲଗାନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୩. ମଦ ଆଦି ପିଅନ୍ତୁ ନାହିଁ । ମାଛ ଖାଆନ୍ତୁ ନାହିଁ ଏବଂ ମାଛ ର ଶିକାର କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଗୁରୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ତୃତୀୟ ସ୍ଥାନ ରେ ଗୁରୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ଧର୍ମ ର ବିରୁଦ୍ଧ ରେ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା ଦରକାର ନାହିଁ । ଧନ ଖରାପ ଚରିକାରେ କମେଇବାର ଅଭୀଷ୍ଟ ରହିବ, ଅପଥ୍ୟ ଗାଳି-ଗୁଳଜ, ଫାଲତୁ କଥା ବାଣୀ ଆପଣ ଙ୍କୁ ସମାଜ ରେ ଅପମାନିତ କରି ପାରେ । ପୀପଲ ର ଗଛ କାଟିବା ଆପଣଙ୍କର ସନ୍ତାନ ପାଇଁ କଷ୍ଟ ହେବ । ଯାହା ଉପରେ ଆପଣ ବିଚିତ୍ରିବେ, ତାହାର ନାସ କରି ଦେବେ । ଅପବିତ୍ର ଧର୍ମ ସ୍ଥାନ ଘରେ ହେବ ।

ଗୁରୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ଦୁର୍ଗା ପାଠ କିମ୍ବା ଜନ୍ୟା (୯ ବର୍ଷ ରୁ ଛୋଟ ଝିଅର ସେବା କରନ୍ତୁ)
୨. କେସର କିମ୍ବା ହଳଦୀ ର ଚିକା କରନ୍ତୁ ।

ଶୁକ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନ ରେ ଶୁକ୍ର ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ଘର-ବାହନ ର ସୁଖ ମିଳିବ । କଳା ରଙ୍ଗ ର ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ସହ, ଆପଣଙ୍କ ଭାଗ୍ୟ କୁ ଜଗେଇବା ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ଉନ୍ନତି ରେ ସହାୟକ ହୋଇ ପାରେ । ବିବାହ ସମ୍ବନ୍ଧିତ ଜିନିଷ ର କାରବାର ରେ ଲାଭ ମିଳିବ । ଯଦି ଘର ଠାରୁ ଦୁର କୁ ଯିବା ପଡ଼ି ପାରେ । ପତ୍ନୀ-ମାତା ଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ମା-ଝିଅ ପରି ସମ୍ପର୍କ ରହିବ । ପତ୍ନୀ ସୁଖୀଳ ଏବଂ ସେବା କରିବ ।

ଶୁକ୍ର ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଧଳା ଗାଈ ର ପାଳନ କିମ୍ବା ସେବା କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ବିଲେଇ ର ଚମଡ଼ା ପର୍ସ ରେ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଶନି

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଦ୍ୱିତୀୟ ସ୍ଥାନ ରେ ଶନି ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ଇଶ୍ୱର ଙ୍କ ଉପରେ ଆପଣଙ୍କ ବିଶ୍ୱାସ ବଢ଼ିବ । ପିତା/ଶଶୁର ଘରେ ଧନ-ସମ୍ପତ୍ତି ର ଲାଭ ହେବ । କୋଇଲା, ଚମଡ଼ା, ମଶନ ର କାମ ରେ ଲାଭ ହେବ । ମାନ-ପ୍ରତିଷ୍ଠା

ବଢ଼ିବ । ଅଳ୍ପ ସମୟରେ ଅସୁବିଧା ର ସମାଧାନ କରିବେ । ବନି ଥିବା ଘର ର ଲାଭ ମିଳି ପାରେ । ଧନ ର ଅଭାବ ରହିବ ନାହିଁ ।

ଶନି ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ମଥା ରେ ସୋରିଷ ତେଲ ଲଗାନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ସାମ୍ପୋ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ରାହୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ତୃତୀୟ ସ୍ଥାନ ରେ ରାହୁ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ଯଦି ଆପଣ ଭଉଣୀ-ଝିଅ, ସାଳୀ-ପିଉସି ନାନି ଙ୍କ ଧନ ଉପଭୋଗ କରନ୍ତି, ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କର ହାନି ହୋଇ ପାରେ । ଆପଣଙ୍କ ଭାଇ-ବନ୍ଧୁ ଯୋଜା ରେ ଆପଣଙ୍କ ଧନ ହ୍ରାସ କରି ପାରନ୍ତି, ସାବଧାନ ରହନ୍ତୁ । ବାକି ର ବୋଝ ବଢ଼ି ପାରେ କିନ୍ତୁ ଆପଣ ବୃଦ୍ଧମତ୍ତା ର ସହ ବାକି ରୁ ମୁକ୍ତ ହୋଇ ଯିବେ । ଖରାପ ବ୍ୟବହାର କରିବା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ହାନିକାରକ ହେବ ।

ରାହୁ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ଶୁକ୍ଳ ରୂପା ଘରେ ରଖନ୍ତୁ ।
୨. କନ୍ୟା (୯ ବର୍ଷ ରୁ ଛୋଟ ଝିଅ) ଙ୍କ ସେବା କିମ୍ବା ଦୁର୍ଗା ପାଠ କରନ୍ତୁ କିମ୍ବା କନ୍ୟା ଦାନ କରନ୍ତୁ ।

କେତୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଷଷ୍ଠ ସ୍ଥାନ ରେ କେତୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ଏହି ବର୍ଷ ସୁନା ବିକନ୍ତୁ ନାହିଁ ଏବଂ ହଜାନ୍ତୁ ନାହିଁ, ଖାସ କରି ବିବାହ ସମୟ ରେ ମିଳି ଥିବା ସୁନା ର ମୁଦି । ଯାତ୍ରା ରେ ହାନି ହେବ ଏପରି ଆଶଙ୍କା ଅଛି । ଚୁମତା, ପାଦ ରେ କଷ୍ଟ ହୋଇ ପାରେ । ଅପଥା ଖର୍ଚ୍ଚ ବଢ଼ିବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ମାମା ଙ୍କୁ କଷ୍ଟ ର ଭୟ, ସନ୍ତାନ ସୁଖ ର ଚିନ୍ତା । ଶତ୍ରୁ ଅକାରଣେ ଝଗଡ଼ା କରିବେ ଏବଂ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ହାନି ର ଭୟ ରହିବ ।

କେତୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. କେସର/ହଳଦୀ ର ଚିକା କରନ୍ତୁ ।
୨. ଶୁକ୍ଳ ସୁନା ର ମୁଦି ବାମ ହାତ ର ଅନାମିକା ଆଙ୍ଗୁଠି ରେ ପିନ୍ଧନ୍ତୁ ।

ବର୍ଷକୁ ଶୁଭ ବନେଇବା ପାଇଁ ବର୍ଷାରମ୍ଭରେ ବିଷିଷ୍ଟ ଉପାୟ

୧. ୪୩ ଦିନ ମୁଣ୍ଡ ରେ ଧଳା-ଶରବତୀ ଗୋପୀ/ପଗଡ଼ୀ/ରୁମାଲ/ସ୍ନାନ୍ଧ୍ୟ ରେ ଘୋଡ଼େଇ ରଖନ୍ତୁ ।

(ଉପରୋକ୍ତ ଉପାୟ ଜନ୍ମ ଦିନରେ କିମ୍ବା ଜନ୍ମ ଦିନ ର ୪୦ ଦିନ ଭିତରେ ଆରମ୍ଭ କରିବାକୁ ହେବ ।)

ଲାଲ ବହି ବର୍ଷପତ୍ର 2027-2028

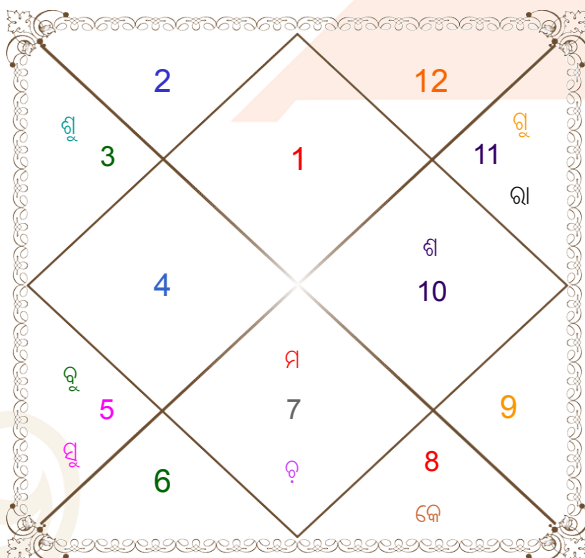
ବର୍ତ୍ତମାନ ଆୟୁ - 41
 ବର୍ତ୍ତମାନ ଦଶା - ଶନି

| ଗ୍ରହ | ଅକ୍ଷ | ଧାର୍ମିକ | ଶୋଭା | ଭଦ୍ର/ଧୀମା |
|---------|------|---------|------|-----------|
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | -- | ଋତୁ | -- | ଭଦ୍ର |
| ଚନ୍ଦ୍ର | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ମଙ୍ଗଳ | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ବୁଧ | -- | ଋତୁ | -- | ଭଦ୍ର |
| ଗୁରୁ | -- | -- | -- | ଧୀମା |
| ଶୁକ୍ର | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ଶନି | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ରାହୁ | -- | -- | -- | ଧୀମା |
| କେତୁ | -- | ଋତୁ | -- | ଧୀମା |

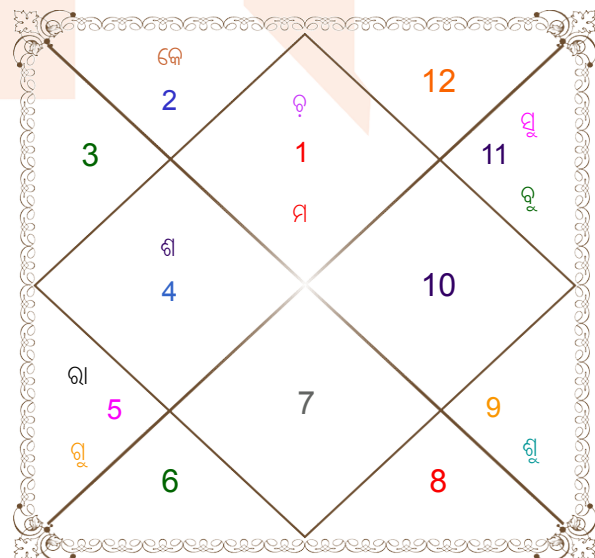
ଭାବ ସ୍ଥିତି

| ଖାଳା | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---------|-----|----|----|-----|----|-----|----|----|----|----|----|----|
| ଧାର୍ମିକ | ଋତୁ | -- | -- | ଋତୁ | -- | ଋତୁ | -- | -- | -- | -- | -- | -- |

ବର୍ଷ ଲଗ୍ନ ୨୦୨୭ - ୨୦୨୮



ବର୍ଷ ଚନ୍ଦ୍ର ଲଗ୍ନ ୨୦୨୭ - ୨୦୨୮



ଲାଲ ବହି ବର୍ଷପତ୍ର 2027-2028

ସୂର୍ଯ୍ୟ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନ ରେ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ପରିବାର ର ଭାଗ୍ୟ ବଦଳିବ, ଯଦି ରାଜା ଆପଣଙ୍କର ଭଲ କରେ ନାହିଁ ତାହା ହେଲେ ପକୀର ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କ ଭଲ ହେବ, ସରକାରୀ ଅଧିକାରୀଙ୍କ ସହ ମଧୁର ସମ୍ପର୍କ ବନିବ, ପରିବାର ର ଉନ୍ନତି ହେବ । ଗୁପ୍ତ ବିଦ୍ୟା କିମ୍ବା ଜ୍ୟୋତିଷ ରେ ରୁଚି ରହିବ, ଅତୀତକ ଧନ ପ୍ରାପ୍ତି ର ମଧ୍ୟ ଯୋଗ ଅଛି କିମ୍ବା ସରକାରୀ ବିଭାଗ ରେ ଲାଭ ମିଳିବ ।

ସୂର୍ଯ୍ୟ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ରାଗ ବୃତ୍ତି ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ମିଛ କୁହନ୍ତୁ ନାହିଁ, ଅଇଁଠା ଭୋଜନ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ/କରାନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଚନ୍ଦ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନ ରେ ଚନ୍ଦ୍ର ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ମାତା-ପିତାଙ୍କୁ ଅଧିକ ଧନ ଲାଭ ହେବ । ଆପଣଙ୍କୁ କାହାରି ସମ୍ପର୍କ ରେ ହାତ ପଡ଼େଇ ବାକୁ ପଡ଼ିବ ନାହିଁ । ଜ୍ୟୋତିଷ ବିଦ୍ୟା, ଯୋଗ ଅଭ୍ୟାସ ତଥା ଶାୟରୀ ରେ ଆପଣଙ୍କ ପସନ୍ଦ ରହିବ । ଜଳ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣତା କାମ ରେ ଲାଭ ହେବ । ନୂଆ ବିଷୟ ର ଖୋଜ ମଧ୍ୟ କରି ପାରିବେ, ବିଦେଶ ଯାତ୍ରା କିମ୍ବା ବିଦେଶ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣତା କାମ ରେ ଲାଭ ହେବ ।

ଚନ୍ଦ୍ର ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଚାଲି ଚଳନ ଠୀକ ରଖନ୍ତୁ ଏବଂ ଅନୈତିକ ସମ୍ପର୍କ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. କ୍ଷୀର-ପାଣି ର ବ୍ୟାପାର କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ମଙ୍ଗଳ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନ ରେ ମଙ୍ଗଳ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ପରିବାର ର ଉନ୍ନତି ଏବଂ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । କାନ୍ଦୁ ଥିବା ବ୍ୟକ୍ତି କୁ ହସେଇବା ଏବଂ ତାକୁ ସାହାଯ୍ୟ ଦେଇ ସାହାଯ୍ୟ କରିବା ନିଜର କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ବୁଝିବେ, ସଜ୍ଜତ ପସନ୍ଦ, ଜ୍ୟୋତିଷ ବିଦ୍ୟା ରେ ରୁଚି ରହିବ, ବିଷ୍ଣୁ ଭଗବାନଙ୍କ ପରି ସଂସାର ର ପାଳକ ସିଦ୍ଧ ହୋଇ ପାରନ୍ତି । ଓକିଲ, ସରପଞ୍ଚ, ନେତା ଆଦି ପଦ ର ଅଧିକାର ମଧ୍ୟ ମିଳି ପାରେ ।

ମଙ୍ଗଳ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଚାଲି-ଚଳନ ଠୀକ ରଖନ୍ତୁ ଏବଂ ଅନୈତିକ ସମ୍ପର୍କ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ଘରେ ବେଳ ଗଛ ଲଗାନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ବୁଧ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ପଞ୍ଚମ ସ୍ଥାନ ରେ ବୁଧ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଧନ ଲାଭ ହେବ ଏବଂ ସୁଖ ର ସାଧନ ମିଳିବ, ଜ୍ୟୋତିଷ ବିଦ୍ୟା ଏବଂ ଧର୍ମ-ଅଧ୍ୟାତ୍ମ ପ୍ରତି ରୁଚି, ଆପଣ ଯେଉଁ କଥା ମୁହଁ ରେ କହିବେ, ତାହା ସତ ହୋଇ ପାରେ ଅର୍ଥାତ୍ ଆପଣଙ୍କ ମୁହଁ ରୁ ବାହାରିବା ବାକ୍ୟ ବେଦ ର ଗାର ମାନା ଯାଇ ଥାଏ । ଅତ୍ୟନ୍ତ ଧନ ଲାଭ ହେବ ଏବଂ ବହୁତ ଭଲ ଦିନ ଦେଖି ବାକୁ ମିଳିବ ।

ବୁଧ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଗଭ ମୁଖ ଘରେ ବାସ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ଚାଲା-ଚଳନ ଠାକ ରଖନ୍ତୁ ଏବଂ ଅନୈତିକ ସମ୍ବନ୍ଧ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଗୁରୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଏକାଦଶ ସ୍ଥାନ ରେ ଗୁରୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ଚାଲା-ଚଳନ ଖରାପ ହୋଇ ପାରେ । ଚାଲା-ଚଳନ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଏକ ଜରୁରୀ ଜିନିଷ ହେବ । ଦାଦା-ପିତା କୁ କଷ୍ଟ ସୁନା ର ଆଭୂଷଣ ରେ ହାନି, ଆଖି ର ନଜର କମଜୋର ହୋଇ ପାରେ । ଭାଗ୍ୟ ର ଫଳ କିଛି ମଧ୍ୟମ ରହିବ । ପରିବାର ର ଲୋକ କ୍ଷ ଆଦର କରିବା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଏକ ଜରୁରୀ କର୍ମ ହେବ ।

ଗୁରୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ହଳଦିଆ ରୁମାଲ ପାଖରେ ରଖନ୍ତୁ ।
୨. ଅଜଣା ସବ କୁ ମଶାଣି ରେ ଦାନ ଦିଅନ୍ତୁ ।

ଶୁକ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ତୃତୀୟ ସ୍ଥାନ ରେ ଶୁକ୍ର ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ସ୍ତ୍ରୀ କ୍ଷ ଦ୍ଵାରା ଧନ ଲାଭ ହେବ । ସ୍ତ୍ରୀ ଆପଣଙ୍କ କାମ ରେ ହାତ ପକେଇବେ କିମ୍ବା ପତ୍ନୀ କ୍ଷ ସହିତ ଆରମ୍ଭ କରି ଥିବା କାମ ରେ ଲାଭ ମିଳିବ । ଆପଣଙ୍କ ଉପରେ କୌଣସି ନା କୌଣସି ସ୍ତ୍ରୀ ମୋହିତ ରହି ପାରନ୍ତି । କମ କଷ୍ଟ ରେ ଅଧିକ ଲାଭ ମିଳିବ ଏପରି ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ପତ୍ନୀ କ୍ଷ ଘରେ ରହିବା ସମୟରେ କେବେ ଚୋରୀ ହେବ ନାହିଁ ।

ଶୁକ୍ର ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ବୟସ୍କ ଘର ର ପରମ୍ପରା କୁ ଠାକ ରଖନ୍ତୁ ।
୨. ରାଗ-ରଙ୍ଗ ରେ ରୁଚି ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଶନି

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଦଶମ ସ୍ଥାନ ରେ ଶନି ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ସରକାରୀ ବିଭାଗ କିମ୍ବା ସରକାର କ୍ଷ ଦ୍ଵାରା ଲାଭ ମିଳିବ । ଏହି ବର୍ଷ ର ସମସ୍ତ ଦଶମ ଦିନ ଏବଂ ଦଶମ ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭ ଏବଂ ଲାଭକାରୀ ହେବ । ଧର୍ମାତ୍ମା ହେବା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଠାକ ରହିବ ନାହିଁ । ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ କାମ ଅର୍ଥାତ ଗୋଟିଏ ଯାଗା ରେ ବସି କରିବା କାମ ରେ ମାନ-ସମ୍ମାନ

ବଢ଼ିବ ଏବଂ ଅଧିକ ଧନ ଲାଭ ମିଳିବ ।

ଶନି ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

- ୧. ମାଦକ ଦ୍ରବ୍ୟ/ଜିନିଷ ର ପ୍ରୟୋଗ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ଏବଂ ମାଛ ଖାଆନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
- ୨. ଭାଗ-ଦୌଡ଼ ର କାମ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ରାହୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଏକାଦଶ ସ୍ଥାନ ରେ ରାହୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ପିତା ଙ୍କ ଚିନ୍ତା ରହିବ, ପିତା ଙ୍କ ଠାରୁ ଦୂର କିମ୍ବା ମୃତ୍ୟୁ ହୋଇ ପାରେ । ସମୟ କିଛି ଗରୀବ ରେ କଟି ପାରେ । ଅଧିକ୍ଷକ ଙ୍କ ସହ ଝଗଡ଼ା କରିବା ଆପଣଙ୍କୁ କ୍ଷତି ପହଞ୍ଚାଇ ପାରେ । ଲକର/ଆଲମାରୀ ଖାଲୀ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ, ସେଥିରେ କିଛି ଧନ ରଖନ୍ତୁ । ପରିବାର ଉପରେ ଗୁଳି ଚାଲିବାର ଭୟ ନୀଳ ମୁଦି-ନୀଳମ ଏବଂ ନୀଳ-କଳା କପଡ଼ା ପିନ୍ଧିବା ହାନିକାରକ ଅଟେ ।

ରାହୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

- ୧. ମୁଣ୍ଡ ରେ ଚୋଷ୍ଟି ରଖନ୍ତୁ କିମ୍ବା ମୁଣ୍ଡ ରେ ଧଳା-ଶରବତୀ ଟୋପୀ ପିନ୍ଧନ୍ତୁ କିମ୍ବା ପଗଡ଼ୀ ବାନ୍ଧନ୍ତୁ ।
- ୨. ୪ କିଲୋ ପଇସା ଏବଂ ୪ଟି ସୁଖା ନଡ଼ିଆ (ବାଜିବା ବାଲା) ଜଳ ରେ ପ୍ରବାହ କରନ୍ତୁ ।
- ୩. ସିଗାରେଟ ଯଦି ପିଅନ୍ତି, ତାହା ହେଲେ ରୂପା ର ପାଇପ ରେ ଲଗେଇ କରି ପିଅନ୍ତୁ ।

କେତୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଅଷ୍ଟମ ସ୍ଥାନ ରେ କେତୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଏହି ବର୍ଷ ମଦ-ମାଂସ ର ସେବନ ହାନିକାରକ ଅଟେ । ଖରାପ ଚାଲୀ ଚଳନ କିମ୍ବା ଅନୈତିକ ସମ୍ବନ୍ଧ ରଖିବା ଦ୍ଵାରା ଗୁପ୍ତ ରୋଗ ଦେବ । ସନ୍ତାନ ସୁଖ ବାହାଁଳି ତାହା ହେଲେ ଚାଲୀ-ଚଳନ ଠୀକ ରଖନ୍ତୁ । ସନ୍ତାନ ର ଚିନ୍ତା ରହିବ ଏପରି ଆଶଙ୍କା ଅଛି । କାରବାର ରେ ହାନି ଏବଂ ଯାତ୍ରା ରେ ଅସୁବିଧା କିମ୍ବା ଅପବ୍ୟୟ ହେବ । କାହାରି କୁ ନିଜର କଷ୍ଟ କଥା କୁହନ୍ତୁ ନାହିଁ କାରଣ ଆପଣଙ୍କ କଷ୍ଟ ଆତୁରି ବଢ଼ିବ ।

କେତୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

- ୧. କଳା-ଧଳା କମ୍ପଳ ଧର୍ମ ସ୍ଥାନ ରେ ଦିଅନ୍ତୁ (ସନ୍ତାନ ର ଲମ୍ବା ଆୟୁ ପାଇଁ) ।
- ୨. କଳା-ଧଳା କମ୍ପଳ ରେ କେତୁ ସହିତ ବସି ଥିବା ଗ୍ରହ ର ଜିନିଷ ବାନ୍ଧି ମଶାଣୀ ରେ ରଖନ୍ତୁ (ଯଦି କୁଆ ଜନ୍ମ ନ ହୁଏ) ।
 - (୧) ସୂର୍ଯ୍ୟ-ଗହମ, (୨) ଚନ୍ଦ୍ର-ଡାଉଳ, (୩) ମଙ୍ଗଳ-ମସୂର ଡାଲି, (୪) ବୁଧ-ମୁଗ, (୫) ଗୁରୁ-ଡ଼ାଲି, (୬) ଶୁକ୍ର-ଡାଉଳ, (୭) ଶନି-ହରଡ଼ ଡାଲି, (୮) ରାହୁ-ଜଅ, (୯) କେତୁ-କଳା-ଧଳା ରାଶି ।
- ୩. କୁକୁର କୁ ଭୋଜନ ର ଭାଗ ଦିଅନ୍ତୁ ।

ବର୍ଷକୁ ଶୁଭ ବନେଇବା ପାଇଁ ବର୍ଷାଋତୁରେ ବିଷିଷ୍ଟ ଉପାୟ

- ୧. ହଳଦିଆ ରୁମାଲ ପାଖରେ ରଖନ୍ତୁ ।
- (ଉପରୋକ୍ତ ଉପାୟ ଜନ୍ମ ଦିନରେ କିମ୍ବା ଜନ୍ମ ଦିନ ର ୪୦ ଦିନ ଭିତରେ ଆରମ୍ଭ କରିବାକୁ ହେବ ।)

ଲାଲ ବହି ବର୍ଷପତ୍ର 2028-2029

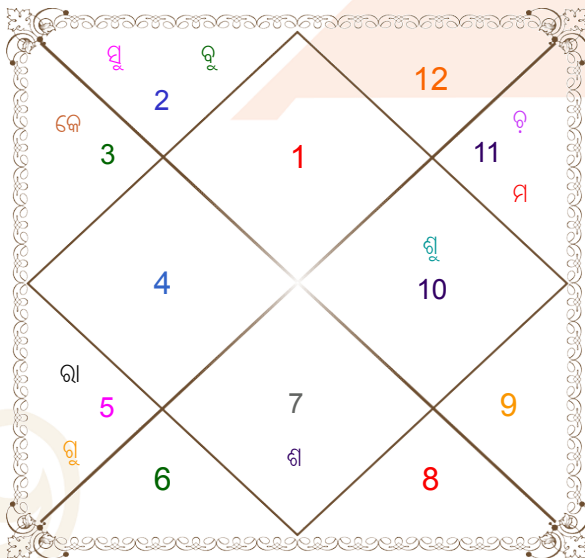
ବର୍ତ୍ତମାନ ଆୟୁ - 42
 ବର୍ତ୍ତମାନ ଦଶା - ଶନି

| ଗ୍ରହ | ଅକ୍ଷ | ଧାର୍ମିକ | ଶୋଇବା | ଭଦ୍ର/ଧୀମା |
|---------|------|---------|-------|-----------|
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | -- | ଋତୁ | -- | ଭଦ୍ର |
| ଚନ୍ଦ୍ର | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ମଙ୍ଗଳ | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ବୁଧ | -- | ଋତୁ | -- | ଭଦ୍ର |
| ଗୁରୁ | -- | ଋତୁ | -- | ଧୀମା |
| ଶୁକ୍ର | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ଶନି | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ରାହୁ | -- | ଋତୁ | -- | ଧୀମା |
| କେତୁ | -- | -- | -- | ଧୀମା |

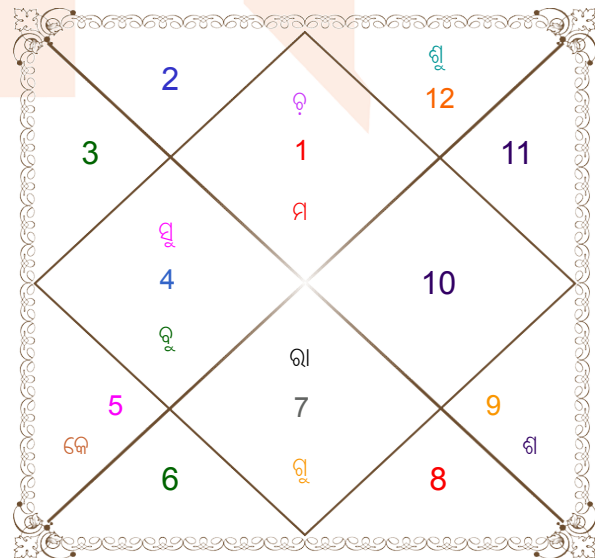
ଭାବ ସ୍ଥିତି

| ଖାନା | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---------|-----|----|----|-----|----|----|----|-----|----|----|----|-----|
| ଧାର୍ମିକ | ଋତୁ | -- | -- | ଋତୁ | -- | -- | -- | ଋତୁ | -- | -- | -- | ଋତୁ |

ବର୍ଷ ଲଗ୍ନ ୨୦୨୮ - ୨୦୨୯



ବର୍ଷ ଚନ୍ଦ୍ର ଲଗ୍ନ ୨୦୨୮ - ୨୦୨୯



ଲାଲ ବହି ବର୍ଷପତ୍ର 2028-2029

ସୂର୍ଯ୍ୟ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଦ୍ୱିତୀୟ ସ୍ଥାନ ରେ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ପରିବାର ର ଉନ୍ନତି ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ଭାଇ-ବନ୍ଧୁ ଙ୍କ ପାଇଁ ଉନ୍ନତି କାରକ ହେବ, ଉତ୍ତମ ସବାରୀ ର ସୁଖ ମିଳିବ, ଧାର୍ମିକ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ଅଗ୍ରଣୀ, ସମାଜ ସେବା ର କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ରୁଚି ରହିବ, ସରକାରୀ ବିଭାଗ ଠାରୁ ଲାଭ ହେବ ଏବଂ ସରକାରୀ ଅଧିକାରୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ମାନ-ସମ୍ମାନ ମିଳିବ, ଦାନ-ପୁଣ୍ୟ ରେ ରୁଚି ରହିବ ।

ସୂର୍ଯ୍ୟ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଉପହାର/ମାଗଣା ର ଜିନିଷ କିମ୍ବା ଦାନ ନିଅନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ବିନା କଷ୍ଟ ର ମାଲ ଖାଆନ୍ତୁ ନାହିଁ କିମ୍ବା କାହାର ମାଲ ନଷ୍ଟ କରିବାର ଅଭ୍ୟାସ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଚନ୍ଦ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଏକାଦଶ ସ୍ଥାନ ରେ ଚନ୍ଦ୍ର ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ବିଦ୍ୟା ସମ୍ବନ୍ଧୀ କାମ ରେ ଲାଭ ହେବ, ସୁଖ ର ସାଧନ ମିଳିବ, ଆପଣଙ୍କୁ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ, ମାତା-ସନ୍ତାନ ର ସୁଖ ମିଳିବ, କୋର୍ଟ, ଇଞ୍ଜାନିୟରିଂ, ଡାକ୍ତରୀ ସମ୍ବନ୍ଧିତ କାମ ରେ ଲାଭ ମିଳିବ, କାରବାର ମଧ୍ୟ ଭଲ ରହିବ । ରାତ୍ରି ସମୟ ରେ ପାଠ ପଢ଼ିବା କିମ୍ବା ରାତ୍ରି ସମୟ ରେ ବିଦ୍ୟା ସମ୍ବନ୍ଧିତ କାମ ରେ ଲାଭ ହେବ ।

ଚନ୍ଦ୍ର ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଚାଲି ଚଳନ ଠାକ ରଖନ୍ତୁ ଏବଂ ଅନୈତିକ ସମ୍ବନ୍ଧ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ପାଠ ପଢ଼ିବା ରେ ଅରୁଚି ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ମଙ୍ଗଳ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଏକାଦଶ ସ୍ଥାନ ରେ ମଙ୍ଗଳ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱଭାବ ନ୍ୟାୟ ପ୍ରିୟ ରହିବ, ନିଜର ଭାଗ୍ୟ ସ୍ୱୟଂ ନିଜ ହାତରେ ବନେଇବେ, କାରବାର ରେ ଉନ୍ନତି ହେବ, ଜମି-ବାଡ଼ି ର ଲାଭ ମିଳିବ ଏବଂ ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କୁ ସବୁ ସୁଖ-ସୁବିଧା ମିଳିବ । ପୁତ୍ର-ନାତି ର ସୁଖ ମିଳିବ, ଆପଣଙ୍କୁ ଶତ୍ରୁ ଙ୍କ ସହ କୌଣସି ଭୟ ରହିବ ନାହିଁ କିମ୍ବା ଶତ୍ରୁ ମଧ୍ୟ ମିତ୍ର ବନି ଯିବେ ।

ମଙ୍ଗଳ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. କାହାରି ଉପରେ ମଧ୍ୟ ଭରସା କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. କୁକୁର କୁ ମାଡ଼ ମାରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ବୁଧ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଦ୍ୱିତୀୟ ସ୍ଥାନ ରେ ବୁଧ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ପିତା-ଦାଦା ଙ୍କ ଠାରୁ ଧନ ଲାଭ ହେବ, ଆପଣଙ୍କୁ ଜ୍ଞାନ ର କଥା ରେ ଅଧିକ ରୁଚି ରହିବ, କଥା ହେବା ସମୟରେ କଥା ବଦଳେଇ ବାର ଅଭ୍ୟାସ ରହି ପାରେ । ନିଜ ଭାଗ୍ୟ ର ଉନ୍ନତି ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ ଅଧିକ କଷ୍ଟ ମଧ୍ୟ କରି ବାକୁ ପଡ଼ି ପାରେ । ଏହି ବର୍ଷ କଳା କାମ ର ଉତ୍ତର ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ ।

ବୁଧ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ସବୁଜ ରଙ୍ଗ ନିଷେଧ ।
୨. ସୁତା-ତାବୀଜ, ଜଳ, ବିଭୂତି ଠାରୁ ଦୂର ରେ ରହନ୍ତୁ ।
୩. ଶୁଆ, ମେଣ୍ଟା-ଛେଳି ପାଳନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଗୁରୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ପଞ୍ଚମ ସ୍ଥାନ ରେ ଗୁରୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ମାଗଣା ଖାଇବା କିମ୍ବା ଦାନ ନେବା ହାନିକାରକ ହେବ, ଯାହା ଆପଣଙ୍କ ବୃଷ୍ଟି ଭ୍ରଷ୍ଟ କରି ପାରେ । ଗୁରୁ-ସାଧୁ ଙ୍କୁ ଗାଳୀ-ଗୁଳଜ କରିବା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ହାନିକାରକ ହେବ । ମାଂସାହାରୀ ହେବା ଦ୍ୱାରା ସନ୍ତାନ କୁ କଷ୍ଟ ହେବ । ଅଳ୍ପ ଉନ୍ନତି ର ବାଧା ବନିବ । ନାବ ରେ ନଦୀ/ସମୁଦ୍ର ପାର କରନ୍ତୁ ନାହିଁ, ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ସଙ୍ଗଟ ରେ ପଡ଼ି ବାର ଆଶଙ୍କା ଅଛି ।

ଗୁରୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ସାଧୁ-ମହାତ୍ମା ଙ୍କ ସେବା କରନ୍ତୁ ।
୨. ଧର୍ମ ମନ୍ଦିର ର ସମ୍ପା କରନ୍ତୁ ।

ଶୁକ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଦଶମ ସ୍ଥାନ ରେ ଶୁକ୍ର ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ କାମ ର ଅଧିକତା ହେବ । ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ସହିତ ରହିବା ଦ୍ୱାରା କେବେ କୌଣସି ଦୁର୍ଘଟନା ହେବ ନାହିଁ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କୁ କୌଣସି ପ୍ରକାର ର ଦୁଃଖ ଭୋଗି ବାକୁ ପଡ଼ିବ ନାହିଁ । ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ପ୍ରାୟ ଠିକ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ଲୋଭ ଏବଂ ଶକ୍ତ କରି ବାର ଭାବନା ବଢ଼ି ପାରେ । ଦସ୍ତକାରୀ ର କାମ ରେ ଅଧିକ ଲାଭ ହେବ ।

ଶୁକ୍ର ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ମଦ-ବୀୟର ପିଅନ୍ତୁ ନାହିଁ, ମାଛ ଖାଆନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ପ୍ରେମିକା ପରି ବନନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଶନି

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନ ରେ ଶନି ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ଏହି ବର୍ଷ ପରୋପକାର କରିବା ଦ୍ୱାରା ଧନ ଲାଭ ପାଇବେ । ଏହି ଲାଭ ୭ ଗୁଣ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ହୋଇ ପାରେ । ଘର ବନିବ ଏବଂ ପୂର୍ବ ପୁରୁଷ ଙ୍କ ଠାରୁ ଜମି-ବାଡ଼ି ର ଲାଭ

ମିଳିବ । ଆପଣଙ୍କୁ ଗାଁ/ସହର କିମ୍ବା କୌଣସି ସଂସ୍ଥା ର ପଦ ମିଳି ପାରେ । ପିତା/ଶଶୁର ଏବଂ ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ପାଇଁ ସମୟ ଶୁଭ ରହିବ ।
ଡାଲା-ଡଳନ ଖରାପ ରଖିବା ଦ୍ୱାରା ଧନ ହାନି ହେବ ।

ଶନି ର ଶୁଭତା ବଢେଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଡାକ୍ତର/କେମିଷ୍ଟ ଙ୍କ ସହିତ ରହନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ଡୋର-ଡାକୁ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ବନ୍ଧ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୩. ପିତୃ ଘର ର ମୁଖ୍ୟ ଦ୍ୱାର ର ଏଣ୍ଟି ଠାକ ରଖନ୍ତୁ, ଏହାର ଦୁଇ ପାଖରେ ସୁର୍ଯ୍ୟୋଦୟ ର ପୂର୍ବ ରୁ ସୋରିସ ତେଲ ଢାଳନ୍ତୁ ।

ରାହୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ପଞ୍ଚମ ସ୍ଥାନ ରେ ରାହୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ବିଦ୍ୟା ସମ୍ପନ୍ନୀ କାମ ରେ ଅସୁବିଧା, ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ସହ ଝଗଡ଼ା-ଛାଡ଼ ପତ୍ର କିମ୍ବା ମୃତ୍ୟୁ ମଧ୍ୟ ହୋଇ ପାରେ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ସମୟ ଆଗକୁ କଷ୍ଟକାରୀ ବନିବ । ଦ୍ୱିତୀୟ ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ସନ୍ତାନ ସୁଖ ମିଳିବ ନାହିଁ, ଏଥି ପାଇଁ ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ବନ୍ଧ ବିଚ୍ଛେଦ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ । ପ୍ରଥମ ସନ୍ତାନ (ପୁଅ) ର ସୁଖ ଅଛି, ଭାଇ ଧନି, ନିଃସନ୍ତାନ କିମ୍ବା ତାଙ୍କୁ ସନ୍ତାନ ର ଚିନ୍ତା ରହିବ ।

ରାହୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ଶୁକ୍ଳ ରୂପା ର ହାତୀ ରୂପା ର ପ୍ଲେଟ ଉପରେ ଠିଆ କରି ଘରେ ରଖନ୍ତୁ ।
୨. ପୂର୍ବ ପୁରୁଷ ଘର ର ଜିନିଷ ତଳେ ରୂପା ର ପାତିୟ ଲଗାନ୍ତୁ ।
୩. ନିଜ ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ସହ ଦୁଇ ଥର ବିବାହ (ଡାରି କର୍ମ) କରନ୍ତୁ । (ପୁତ୍ର ସୁଖ ପାଇଁ)

କେତୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ତୃତୀୟ ସ୍ଥାନ ରେ କେତୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ଅନ୍ୟ ର ଆବେଶ ନେବା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ହାନିକାରକ ହେବ । ଏକା ବୁଲିବା କିମ୍ବା ଭାଇ ଙ୍କ ଠାରୁ ଦୂର ପ୍ରବେଶ ରେ ଜୀବନ ବ୍ୟତୀତ କରିବା ଠାକ ହେବ ନାହିଁ, ଶରୀର ଉପରେ ଘା-ଭ୍ରଣ ମଧ୍ୟ ହୋଇ ପାରେ । କିଏ ପରିସ୍ରା କରିଥିବା ଉପରେ ପରିସ୍ରା କରିବା ଆପଣ ଙ୍କ ଗୁପ୍ତାଙ୍ଗ ରେ ରୋଗ ଏବଂ ଶରୀର ରେ କଷ୍ଟ ହେବ କିମ୍ବା ସନ୍ତାନ ସୁଖ ର ଚିନ୍ତା ରହିବ ଏପରି ମଧ୍ୟ ସମ୍ଭବ ଅଛି ।

କେତୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. କାନ ରେ ଶୁକ୍ଳ ସୁନା ର ପିନ୍ଧନ୍ତୁ ।
୨. ଶରୀର ରେ ଶୁକ୍ଳ ସୁନା ପିନ୍ଧନ୍ତୁ ।

ବର୍ଷକୁ ଶୁଭ ବନେଇବା ପାଇଁ ବର୍ଷାମୂଳରେ ବିଷିଷ୍ଟ ଉପାୟ

୧. ଶୁକ୍ଳ ରୂପା ର ହାତୀ କୁ ରୂପା ର ପ୍ଲେଟ ରେ ରଖି ଘରେ ସ୍ଥାପିତ କରନ୍ତୁ ।

(ଉପରୋକ୍ତ ଉପାୟ ଜନ୍ମ ଦିନରେ କିମ୍ବା ଜନ୍ମ ଦିନ ର ୪୦ ଦିନ ଭିତରେ ଆରମ୍ଭ କରିବାକୁ ହେବ ।)

ଲାଇ ବହି ବର୍ଷପତ୍ର 2029-2030

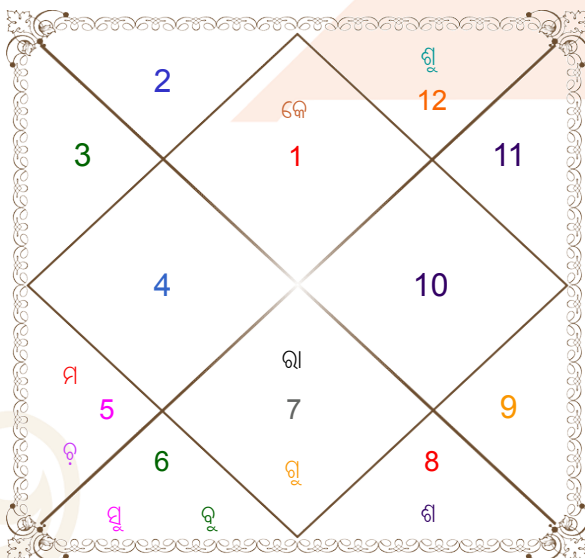
ବର୍ତ୍ତମାନ ଆୟୁ - 43
 ବର୍ତ୍ତମାନ ଦଶା - ଶନି

| ଗ୍ରହ | ଅକ୍ଷ | ଧାର୍ମିକ | ଶୋଇବା | ଭଦ୍ର/ଧୀମା |
|---------|------|---------|-------|-----------|
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | -- | ଋତୁ | -- | ଭଦ୍ର |
| ଚନ୍ଦ୍ର | -- | ଋତୁ | -- | ଭଦ୍ର |
| ମଙ୍ଗଳ | -- | ଋତୁ | -- | ଭଦ୍ର |
| ବୁଧ | -- | ଋତୁ | -- | ଭଦ୍ର |
| ଗୁରୁ | -- | -- | -- | ଧୀମା |
| ଶୁକ୍ର | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ଶନି | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ରାହୁ | -- | -- | -- | ଧୀମା |
| କେତୁ | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |

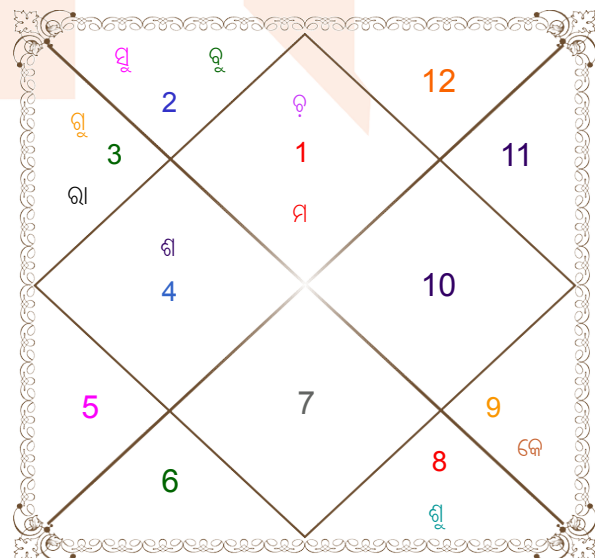
ଭାବ ସ୍ଥିତି

| ଖାଳା | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---------|----|----|-----|-----|----|----|----|----|----|-----|-----|----|
| ଧାର୍ମିକ | -- | -- | ଋତୁ | ଋତୁ | -- | -- | -- | -- | -- | ଋତୁ | ଋତୁ | -- |

ବର୍ଷ ଲଗ୍ନ ୨୦୨୯ - ୨୦୩୦



ବର୍ଷ ଚନ୍ଦ୍ର ଲଗ୍ନ ୨୦୨୯ - ୨୦୩୦



ଲାଲ ବହି ବର୍ଷପତ୍ର 2029-2030

ସୂର୍ଯ୍ୟ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଷଷ୍ଠ ସ୍ଥାନ ରେ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ଭାଗ୍ୟ ଉପରେ ଭରସା କରିବେ, ଶତ୍ରୁ ଦବି ରହିବେ । ମକଦ୍ଦମା ରେ ଜୀତ ହେବ, ସନ୍ତାନ ଜନ୍ମ ଦ୍ଵାରା ଭାଗ୍ୟୋଦୟ ହେବ । ବାପା ଘର ଠାରୁ ଲାଭ ହେବ, ପିତାଙ୍କ ବ୍ୟବହାର ରେ କିଛି ଭୟ ରହିବ । ପର ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ସହିତ ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ବନ୍ଧ ବନ୍ଦି ପାରେ କିନ୍ତୁ ଚାଲି-ଚଳନ ଠୀକ ରଖନ୍ତୁ । ସରକାରୀ ବିଭାଗ ରେ ଲାଭ ହେବ ।

ସୂର୍ଯ୍ୟ ର ଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଝିଅ-ଭଉଣୀ, ସାଳୀ-ପିଉସି ନାନି ଙ୍କ ସହ ଝଗଡ଼ା କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ଧାର ଏବଂ ଦାନ, ମାଗଣା ର ଜିନିଷ ନିଅନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଚନ୍ଦ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ପଞ୍ଚମ ସ୍ଥାନ ରେ ଚନ୍ଦ୍ର ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ପରିବାର ଲୋକ ଙ୍କ ସୁନା-ରୂପା ର ଲାଭ ହେବ, ବିଦ୍ୟା ର ଲାଭ ହେବ, ଆପଣ ଅନ୍ୟ ର କଷ୍ଟ ନିଜ ଉପର କୁ ନେବେ, ଅନ୍ୟ ର ପରୋପକାର କରିବେ, ଲଢ଼େଇ-ଝଗଡ଼ା ରେ ଆପଣ ଯାହା ସପକ୍ଷ ରେ ଯିବେ ସେହି ବ୍ୟକ୍ତି ର ଜୀତ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ବହୁତ ପ୍ରସିଦ୍ଧି ହେବ ଏବଂ ସମାଜ ରେ ଆପଣଙ୍କ ମାନ-ସମ୍ମାନ ବଢ଼ିବ ।

ଚନ୍ଦ୍ର ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ସବୁ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ କାହାରି ଆଦେଶ ନିଶ୍ଚୟ ନିଅନ୍ତୁ ।
୨. ପାପ କାମ ରେ ନିଜ କୁ ହସ୍ତକ୍ଷେପ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ମଙ୍ଗଳ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ପଞ୍ଚମ ସ୍ଥାନ ରେ ମଙ୍ଗଳ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ଗୃହସ୍ଥ/ସନ୍ତାନ ର ପୁଞ୍ଜ ମିଳିବ, ପରିବାର ରେ ଭନ୍ନତି ହେବ, ଯାତ୍ରା ବହୁତ ହେବ । ଏହି ଜନ୍ମ ଦିନ ପରେ ଧନ ଦିନ କୁ ଦିନ ବଢ଼ି ଚାଲିବ, ପିତା-ଦାଦା ଙ୍କ ଭନ୍ନତି ମଧ୍ୟ ବଢ଼ିବ, ଚାଲି-ଚଳନ ଆପଣଙ୍କୁ ଭଲ ରଖିବାକୁ ହେବ, ଶତ୍ରୁ କୁ ମଧ୍ୟ ମିତ୍ର ବନେଇବା ରେ ପ୍ରୟତ୍ନଶୀଳ ରହିବେ ଏବଂ ଶତ୍ରୁ ଆପଣଙ୍କ ସହାୟକ ବନ୍ଦି ଯିବେ ।

ମଙ୍ଗଳ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଚାଲି-ଚଳନ ଠୀକ ରଖନ୍ତୁ, ଅନୈତିକ ସମ୍ବନ୍ଧ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ମଦ-ବୀୟର ପିଅନ୍ତୁ ନାହିଁ, ମାଂସ-ମାଛ ର ଭୋଜନ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ବୁଧ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଷଷ୍ଠ ସ୍ଥାନ ରେ ବୁଧ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଏହି ବର୍ଷ ମୁଖ୍ୟ କାମ ରେ ଲାଭ ମିଳିବ, ବିଦେଶ ଭ୍ରମଣ ର ଇଚ୍ଛା ମଧ୍ୟ ରହିବ, ସମୁଦ୍ର ଯାତ୍ରା ରେ ଲାଭ ମିଳିବ, କୃଷି ସମ୍ବନ୍ଧିତ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ଲାଭ ମିଳିବ । ବନ୍ଧବ୍ୟ ଦେବା, ଏକାଡେମିକ୍/ଡାକ୍ତରୀ ଏକାଡେମିକ୍, ଲେଖା, ପ୍ରିଣ୍ଟିଙ୍ଗ୍ ସମ୍ବନ୍ଧିତ କାମ ରେ ଲାଭ ହେବ । ମୁହଁ ରୁ ବାହାରିବା କଥା ଶହେ ପ୍ରତିଶତ ଠିକ୍ ହୋଇ ପାରେ । ବାପା ଘର ଠାରୁ ଲାଭ ମିଳିବ ।

ବୁଧ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. କନ୍ୟା/ଭଉଣୀ ର ବିବାହ ନିଜେ ରହୁଥିବା ଘର ର ଉତ୍ତର ଦିଗ ରେ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ସେବକ/ଡାକର ଉପରେ ସବୁ ବେଳେ ନିଜର ରଖନ୍ତୁ ।

ଗୁରୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନ ରେ ଗୁରୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ଘରେ ମନ୍ଦିର ବନେଇ ପୂଜା କରିବା ଧନ-ପରିବାର ପାଇଁ ଅଶୁଭ ହେବ । ଘରେ ମନ୍ଦିର ହାନିକାରକ କିନ୍ତୁ କାନ୍ଥ ରେ ଫୋଟୋ ଲଗେଇ ପୂଜା-ପାଠ କରି ପାରିବେ । ବୁଲା-ବୁଲି କରୁ ଥିବା ସାଧୁ ଙ୍କ କଥାରେ ପଡ଼ି ଭାଗ୍ୟ ଖରାପ ହୋଇ ଯିବ ଏବଂ ଜୀବନ ରେ ଲାଭ-କ୍ଷତି ଦେଖିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ମାମୁ ଙ୍କୁ ସନ୍ତାନ ର ଚିନ୍ତା ରହିବ । କ୍ଷରାପ ଲୋକ ଙ୍କ ସଙ୍ଗତ ରୁ ବଞ୍ଚନ୍ତୁ ।

ଗୁରୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ଶୁକ୍ଳ ସୁନା ହଳଦିଆ କପଡ଼ା ରେ ବାନ୍ଧି ରଖନ୍ତୁ ।
୨. ଆପଣ ବିବାହିତ ହୁଅନ୍ତୁ, ତାହା ହେଲେ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ମା ଘରୁ କିଛି ନା କିଛି ସାମାନ ଆଣନ୍ତୁ ।

ଶୁକ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଦ୍ଵାଦଶ ସ୍ଥାନ ରେ ଶୁକ୍ର ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ଜ୍ୟୋତିଷ ବିଦ୍ୟା ଏବଂ ଗୁପ୍ତ ବିଦ୍ୟା ରେ ରୁଚି ରହି ପାରେ, ପରିବାର ର ପାଳନ-ପୋଷଣ କରିବା ରେ ଆପଣଙ୍କ ଅଧିକ ଧ୍ୟାନ ରହିବ । ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ଭାଗ୍ୟ ଆପଣ ଙ୍କୁ ଠିକ୍ ସମୟ ରେ କାମରେ ଆସିବ, ଆରାମ ର ସାଧନ ମିଳିବ । ଚିତ୍ର କଳା-ଗାଇବା ର ପସନ୍ଦ ମଧ୍ୟ ହୋଇ ପାରେ । ଆପଣଙ୍କ ମାନ-ସମ୍ମାନ ଭଲ ରହିବ ।

ଶୁକ୍ର ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଡାଲା-ଡଲନ ଠାକ ରଖନ୍ତୁ ଏବଂ ଅନୈତିକ ସମ୍ବନ୍ଧ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ର ବିଶେଷ ଧ୍ୟାନ ରଖନ୍ତୁ ।

ଶନି

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଅଷ୍ଟମ ସ୍ଥାନ ରେ ଶନି ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ସ୍ଵଭାବ ରହିବ । ଗୋଟିଏ ଜାଗା ରେ ବସି କରିବା ବାଲା କାମ ରେ ଲାଭ ହେବ । ଦୌଡ଼ା-ଦୌଡ଼ି ର କାମ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ । ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ସାମାନ୍ୟ ରହିବ । ପୁତ୍ର ସନ୍ତାନ ର ଖୁସୀ ମିଳିବ, ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ର ବିଶେଷ ଧ୍ୟାନ ରଖନ୍ତୁ । ଆପଣଙ୍କ ଘର ଯଦି ବନ୍ଦ ଗଳା ଭିତରେ ହୋଇ ଥାଏ, ସେହି

ଘରେ ଆପଣ ବାସ ନ କରିବେ, ତାହା ହେଲେ ଲାଭ ହେବ ।

ଶନି ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ନିଜ ନାମରେ ଘର କିଣନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ସାପ କୁ ମାରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୩. ଘର ର ମୁଖ୍ୟ ଦ୍ଵାର ର ଷଣ୍ଠି କୁ ପୂଜା କରନ୍ତୁ ।

ରାହୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନ ରେ ରାହୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ବିଦୁଳୀ କିମ୍ବା ପୁଲିସ ବିଭାଗ ସମ୍ବନ୍ଧିତ କାମ ରେ ହାନି ର ଭୟ ଗ୍ରାସପୋର୍ଟ ର କାମ କରିବା ଦ୍ଵାରା ହାନି କିମ୍ବା ଆୟୁ କମ୍ ହୋଇ ପାରେ । ସାଥୀ ଈ ସହ ଝଗଡ଼ା । କାରବାର ରେ ଲାଭ-କ୍ଷତି ମଧ୍ୟ ହୋଇ ପାରେ । ପତ୍ନୀ ଈ ମୁଣ୍ଡ ବଥା ର ରୋଗ ହୋଇ ପାରେ । ପତ୍ନୀ ଈ ସହ ଛାଡ଼ ପତ୍ର କିମ୍ବା ପତ୍ନୀ ଈ ମୃତ୍ୟୁ ମଧ୍ୟ ହୋଇ ପାରେ ।

ରାହୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ନଡ଼ିଆ ର ଦାନ କରନ୍ତୁ ।
୨. ଶୁକ୍ଳ ରୂପା ର ଦୁଇଟି ଇଟା ଘରେ ସବୁ ବେଳେ ରଖନ୍ତୁ ।
୩. ପୁସ୍ତକ ର ଡ଼ବା ରେ ଶୁକ୍ଳ ରୂପା ର ଡ଼ାରି ଖଣ୍ଡ ରଖି ଗଙ୍ଗା ଜଳ ଭର୍ତ୍ତି କରି ରଖନ୍ତୁ ।

କେତୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ପ୍ରଥମ ସ୍ଥାନ ରେ କେତୁ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଏହି ବର୍ଷ ଭନଡ଼ି ର ଯୋଗ ଅଛି । କିନ୍ତୁ ବଦଳୀ ର ଯୋଗ କମ ହୁଁ ଅଛି । ଯାତ୍ରା ର ଆଦେଶ ପତ୍ର ଅନୁସାରେ ଯାତ୍ରା ହେବ ନାହିଁ କିମ୍ବା ମଝିରେ ଛାଡ଼ି ଫେରନ୍ତୁ ଆସିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ପିତା-ଗୁରୁ ଈ ସେବା ରେ ରୁଡ଼ି ରହିବ । ପରିବାର ରେ କୌଣସି ସ୍ତ୍ରୀ ଈ ସନ୍ତାନ ଜନ୍ମ ହେବାର ଯୋଗ ହୋଇ ଥାଏ, ତାହା ହେଲେ ତାଙ୍କର ପୁତ୍ର ଲାଭ ହୋଇ ପାରେ ।

କେତୁ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଛେଳି ପାଳନ୍ତୁ ନାହିଁ ଏବଂ ଛେଳି ର ସେବା କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ଗଳୀ ର ଶେଷ ଘରେ ବାସ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ବର୍ଷକୁ ଶୁଭ ବନେଇବା ପାଇଁ ବର୍ଷାଋତୁରେ ବିଷିଷ୍ଟ ଉପାୟ

୧. ଶୁକ୍ଳ ସୁନା ହଳଦିଆ କପଡ଼ା ରେ ବାନ୍ଧି କରି ରଖନ୍ତୁ/ଧାରଣ କରନ୍ତୁ ।

(ଉପରୋକ୍ତ ଉପାୟ ଜନ୍ମ ଦିନରେ କିମ୍ବା ଜନ୍ମ ଦିନ ର ୪୦ ଦିନ ଭିତରେ ଆରମ୍ଭ କରିବାକୁ ହେବ ।)

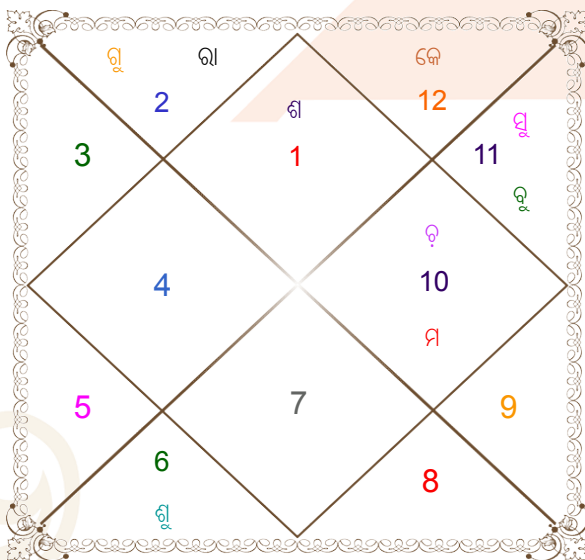
ଲୀଳା ବହି ବର୍ଷପତ୍ର 2030-2031

ବର୍ତ୍ତମାନ ଆୟୁ - 44
 ବର୍ତ୍ତମାନ ଦଶା - ଶନି

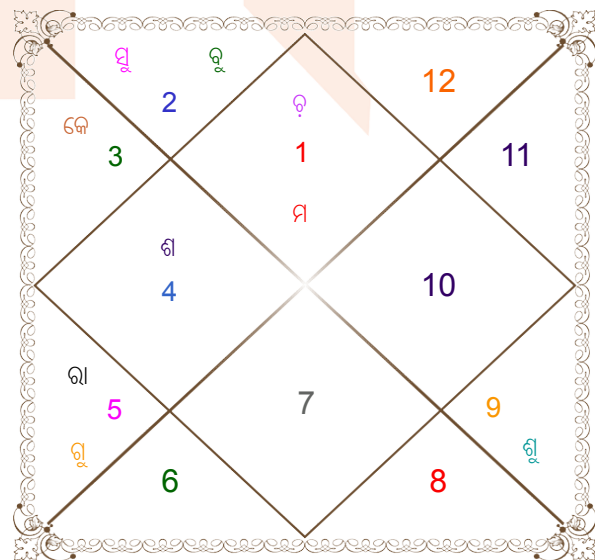
| ଗ୍ରହ | ଅକ୍ଷ | ଧାର୍ମିକ | ଶୋଇବା | ଭଦ୍ର/ଧୀମା |
|---------|------|---------|-------|-----------|
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | -- | -- | -- | ଧୀମା |
| ଚନ୍ଦ୍ର | -- | -- | -- | ଧୀମା |
| ମଙ୍ଗଳ | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ବୁଧ | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ଗୁରୁ | -- | -- | -- | ଧୀମା |
| ଶୁକ୍ର | -- | ଘୃ | -- | ଭଦ୍ର |
| ଶନି | -- | ଘୃ | -- | ଭଦ୍ର |
| ରାହୁ | -- | -- | -- | ଧୀମା |
| କେତୁ | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |

| ଖାଳା | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| ଧାର୍ମିକ | -- | -- | ଘୃ | ଘୃ | ଘୃ | -- | -- | ଘୃ | ଘୃ | -- | -- | -- |

ବର୍ଷ ଲଗ୍ନ ୨୦୩୦ - ୨୦୩୧



ବର୍ଷ ଚନ୍ଦ୍ର ଲଗ୍ନ ୨୦୩୦ - ୨୦୩୧



ଲାଲ ବହି ବର୍ଷପତ୍ର 2030-2031

ସୂର୍ଯ୍ୟ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଏକାଦଶ ସ୍ଥାନ ରେ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣ ଏହି ବର୍ଷ ସୁସ୍ଥ ଏବଂ ବେଶାତିର ପାଇଁ ଜୀବନ ରେ ଉନ୍ନତି ର ଅନେକ ଅବସର ହରେଇ ବସିବେ । ମାଂସ-ମଦ ଆଦିର ବ୍ୟବହାର କରିବା ସନ୍ତାନ ପାଇଁ କଷ୍ଟ ହେବ କିମ୍ବା ସନ୍ତାନ ସୁଖ ର ଚିନ୍ତା ରହିବ । ଅନ୍ୟ ଲୋକ ଙ୍କୁ ଗାଳୀ ଦେବା, ମିଛ ସାକ୍ଷୀ ଦେବା, ଲଢ଼େଇ-ଝଗଡ଼ା କରିବା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଠୀକ ହେବ ନାହିଁ, ଏହି କଥା ରୁ ବଞ୍ଚନ୍ତୁ । ସରକାରୀ ବିଭାଗ ଦ୍ଵାରା ଦଣ୍ଡ/ଜରିମାନା ର ଭୟ ରହିବ ।

ସୂର୍ଯ୍ୟ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ମିଛ କୁହନ୍ତୁ ନାହିଁ, ଅଇଁଠା ଭୋଜନ ଖାଇବେ ନାହିଁ ଏବଂ ଖୁଆଇବେ ନାହିଁ ।
୨. ମାଂସ-ମାଛ ଖାଇବେ ନାହିଁ ଏବଂ ମଦ ଆଦି ପିଅନ୍ତୁ ନାହିଁ, ମାଦକ ଦ୍ରବ୍ୟ ର ସେବନ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଚନ୍ଦ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଦଶମ ସ୍ଥାନ ରେ ଚନ୍ଦ୍ର ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଏହି ବର୍ଷ ଖରାବ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ସମୟ ରେ ରାତି ରେ ପାଣି ଔଷଧ ର ପ୍ରୟୋଗ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ହାନିକାରକ ଅଟେ । ବିଧ୍ୟା ସମ୍ପତ୍ତି କାମ ରେ ମଧ୍ୟ ଅସୁବିଧା ଆସି ପାରେ । ଡୋର-ଦୁଆରୀ କିମ୍ବା ମଦୁଆ ଲୋକ ଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କ ନଷ୍ଟ ହେବ । କୌଣସି ସ୍ତ୍ରୀ କିମ୍ବା ପ୍ରେମିକା ଙ୍କ ଭୁଲ ଆଦେଶ ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କ ଧନ-ସମ୍ପାଦନ ନଷ୍ଟ ହୋଇ ପାରେ, ସତର୍କ ରହନ୍ତୁ ।

ଚନ୍ଦ୍ର ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. କ୍ଷୀର କୁ ଛିଡ଼େଇ ତାହାର ପାଣି ପିଅନ୍ତୁ ଅର୍ଥାତ ପନୀର ର ପାଣି ପିଅନ୍ତୁ (ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ଖରାପ ସମୟ ରେ) ।
୨. ୧୦ ଦିନ ସକାଳେ ଜଳଖିଆ ରେ କଞ୍ଚା ପନୀର ଖାଆନ୍ତୁ ।
୩. ରାତ୍ରି ସମୟ ରେ (ସୂର୍ଯ୍ୟାସ୍ତ ରୁ ସୂର୍ଯ୍ୟୋଦୟ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ) କ୍ଷୀର ପିଅନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ମଙ୍ଗଳ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଦଶମ ସ୍ଥାନ ରେ ମଙ୍ଗଳ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣ ର ଗଣତୀ ଉଚ୍ଚ/ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ବ୍ୟକ୍ତି ଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ମାନ-ସମ୍ମାନ ବଢ଼ିବ । କୌଣସି ସରକାରୀ ବିଭାଗ କିମ୍ବା ପୁଲିସ୍/ସେନା ବିଭାଗ ରେ କାର୍ଯ୍ୟରତ ହେବେ, ତାହା ହେଲେ ଉନ୍ନତି ମିଳିବ, ଡାକିରୀ ବ୍ୟାପାର ରେ ଅଧିକ ଧନ ଲାଭ ହେବ । ଆପଣ ରାଜା ପରି ସମୟ ବ୍ୟତୀତ କରିବେ । ଭଲ କିମ୍ବା କ୍ଷରାପ ରେ ମଧ୍ୟ ହେଉ ଆପଣ ଧନ କମେଇବେ, ସମ୍ପତ୍ତି ଏବଂ ବାହନ ର ସୁଖ ହେବ ।

ମଙ୍ଗଳ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ସୁନା ବିକନ୍ତୁ ନାହିଁ କିମ୍ବା ହଜାନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. କ୍ଷୀର ପୁସ୍ତକର ସମୟରେ ରସୋଇ ଘରେ ଗ୍ୟାସ ଚୁଲୀ/ ଆଇଠି /ଚୁଲୀ ଆଦି ଉପରେ ଯେପରି ନ ପଡ଼େ ତାହାର ବିଶେଷ ଧ୍ୟାନ ରଖନ୍ତୁ ।

ବୁଧ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଏକାଦଶ ସ୍ଥାନ ରେ ବୁଧ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ସବୁ ବୁଧବାର ଦିନ ଏବଂ ଖରା ବେଳେ (୩ଟା ରୁ ୫ଟା) ର ସମୟ ଶୁଭ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ଭାଗ୍ୟୋଦୟ ହେବ କିମ୍ବା ଉନ୍ନତି ହେବ, ଅଳପ ଠାରୁ ଦୂର ରେ ରହିବୁ । ଆପଣ ନିଜ ବୁଦ୍ଧି ଦ୍ୱାରା ଅଧିକ ଲାଭ ଅର୍ଜିତ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ମାନ-ସମ୍ମାନ ଏବଂ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ବଢ଼ିବ । ପିତୃ ସମ୍ପତ୍ତି ର ଲାଭ ମିଳିବ । ଆପଣଙ୍କ ମିତ୍ରତା ଦ୍ୱାରା ସମସ୍ତ କ୍ଷୁ ଲାଭ ମିଳିବ ।

ବୁଧ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ମନୀ ପ୍ଲୁଟ, ରବର ପ୍ଲୁଟ ଆଦି ଚଢ଼ଢ଼ା ପତ୍ର ର ଗଛ-ପତ୍ର ଘରେ ଲଗାନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ପୀତଳ ର ଖାଲୀ ବାସନ ବନ୍ଦ କିମ୍ବା ଓଲଟା ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଗୁରୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଦ୍ୱିତୀୟ ସ୍ଥାନ ରେ ଗୁରୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ପିତା କୁ କଷ୍ଟ ସୁନାବା କିମ୍ବା ବଢ଼େଇ ର କାମ ଅର୍ଥାତ୍ ଅଧିକ କଷ୍ଟ ର କାମ ରେ ହାନି ମିଳିବ ଏବଂ ସହଜ ର କାମ ଅର୍ଥାତ୍ କମ କଷ୍ଟ ର କାମ ରେ ଅଧିକ ଲାଭ ହେବ । ଅନ୍ୟ ର ଝଗଡ଼ା ରେ ପଡ଼ି ଆପଣ ନିଜର କ୍ଷତି କରି ବସିବେ, ସାବଧାନ ରହନ୍ତୁ । ଆପଣଙ୍କ କିଛି କ୍ଷରାପ ସମୟ ମଧ୍ୟ ଆସି ପାରେ ଯାହାର କାରଣ ଆପଣ ଦୁଃଖୀ ରହିବେ ।

ଗୁରୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ଘରେ କଞ୍ଚା କାଠ ନିଷ୍ଠୁ ରଖନ୍ତୁ କିମ୍ବା ଫୁଲ ଗଛ ର ଗାମଲା ଲଗାନ୍ତୁ ।
୨. କେସର କିମ୍ବା ହଳଦୀ ର ଚିକା କରନ୍ତୁ ।

ଶୁକ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଷଷ୍ଠ ସ୍ଥାନ ରେ ଶୁକ୍ର ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ଏହି ବର୍ଷ କାମ ପୂର୍ଣ୍ଣ ପାଇଁ ସ୍ତ୍ରୀ କୁ ପ୍ରଶଂସା କରିବେ ଏବଂ ସ୍ତ୍ରୀ କୁ ଗୁଲ୍ଲୀମୀ ମଧ୍ୟ କରି ବାକୁ ପଡ଼ି ପାରେ । ଧନ ର ଲାଭ ବହୁତ ହେବ । ପୂତ୍ର ସନ୍ତାନ ର ବଦଳରେ କନ୍ୟା ସନ୍ତାନ ର ସୁଖ ମିଳି ବାର ଆଶଙ୍କା ଅଛି । ଜନ୍ମ ଦିନ ପରେ ଧନ ବୃଦ୍ଧି ମଧ୍ୟ ହେବ । ମାନ-ସମ୍ମାନ ବଢ଼ିବ ଏବଂ ବାହନ ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇ ପାରେ ।

ଶୁକ୍ର ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ସ୍ତ୍ରୀ ଜାତି ର ଅପମାନ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ପତ୍ନୀ ଭୂମି ରେ ଖାଲି ପାଦରେ ଚାଲନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଶନି

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ପ୍ରଥମ ସ୍ଥାନ ରେ ଶନି ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ କେମିଷ୍ଟ କିମ୍ବା ଡାକ୍ତର, ଇଞ୍ଜାନିୟରିଙ୍ଗ୍ ସମ୍ବନ୍ଧିତ କାମ ରେ ଲାଭ ହୋଇ ପାରେ । ଲୁହା-କାଠ ର କାମ ରେ ମଧ୍ୟ ଲାଭ ହେବ, ମାତା-ପିତା କୁ ପାଖରେ ଧନ ର ଉନ୍ନତି ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ପତ୍ତି ବଢ଼ି ବାର ଆଶା ଅଛି । ସରକାରୀ ବିଭାଗ ରେ ଲାଭ ମିଳିବ ଏବଂ ଉଚ୍ଚାଧିକାରୀ କୁ ସହ ଭଲ ସମ୍ବନ୍ଧ

ବନ୍ଧିବ ।

ଶନି ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

- ୧. ଯଦି ପରିବାର ର କୌଣସି ଖୁସୀ ସମୟ ଆସି ଥାଏ, ତାହା ହେଲେ ବାଜା ବଜାନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
- ୨. ମଦ ଆଦି ପାଇବା, ମାଂସ-ମାଛ ଖାଇବା ଏବଂ ପ୍ରେମ ଠାରୁ ଦୂର ରେ ରହନ୍ତୁ ।

ରାହୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଦ୍ଵିତୀୟ ସ୍ଥାନ ରେ ରାହୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ଦୁଆ-ବାଜି ଆଦି ର ବ୍ୟାପାର ହାନିକାରକ ହେବ । ଶଶୁର ଘର ଏବଂ ସ୍ଵାମୀ ଙ୍କ ବିରୋଧ କରିବେ ତାହା ହେଲେ ହାନି ହେବ, ଧର୍ମ ସ୍ଥାନ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଉପରେ ଚୋରୀ ଆଦି ର ଲାଞ୍ଚ ଲାଗି ପାରେ । ଫୈଜଦାରୀ ମକଦ୍ଦମା ରେ ହାନି ର ଭୟ ମାଗଣା ଅନ୍ନ କିମ୍ବା ଦାନ ର ଅନ୍ନ ଖାଆନ୍ତୁ ନାହିଁ, ଏହା ଦ୍ଵାରା ଜୀବନ ନଷ୍ଟ ହେବ । ବାଲୀ-ଚଳନ ଖରାପ ହୁଏ, ତାହା ହେଲେ ଦଣ୍ଡ ର ଭୟ ରହିବ ।

ରାହୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

- ୧. ରୂପା ର ଗୁଳି କୁ ଧଳା ସୁତା ରେ ବାନ୍ଧି ବେକ ରେ ପିନ୍ଧନ୍ତୁ ।
- ୨. ମଥାରେ କେସର/ହଳଦୀ ର ଟିକା କରନ୍ତୁ କିମ୍ବା ଶୁଷ୍କ ସୁନା ପିନ୍ଧନ୍ତୁ ।

କେତୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଦ୍ଵାଦଶ ସ୍ଥାନ ରେ କେତୁ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ବଦଳୀ ଏବଂ ଉନ୍ନତି ର ସମ୍ଭବ ଅଛି । ଆପଣଙ୍କ ଅୟଣୀ ସ୍ଵଭାବ ହେବ, ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କୁ ଲାଭ ହେବ । ପୁତ୍ର ସନ୍ତାନ ର ସୃଷ୍ଟି ମିଳିବ । ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ବିଚାର ରହିବ, ଲୋକ-ପର ଲୋକ ଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ହେବା କୁ ଥିବା କଥା ଆପଣଙ୍କ ମୁଣ୍ଡ ରେ ପୂର୍ବ ରୁ ହିଁ ଆସି ଯିବ । ପୁତୁରା/ଭଣ୍ଡା, ସଳା, ଯୋଗ୍ୟ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ଭଲ ସମ୍ପର୍କ ରହିବ ।

କେତୁ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

- ୧. କୁକୁର କୁ ଚୋଟ ମାରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
- ୨. ଠକ-ଧୋକାବାଜୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ଦୂର ରେ ରହନ୍ତୁ ।

ବର୍ଷକୁ ଶୁଭ ବନେଇବା ପାଇଁ ବର୍ଷାରମ୍ଭରେ ବିଷିଷ୍ଟ ଉପାୟ

- ୧. ୪୩ ଦିନ ବାଲି ରେ ଚକିୟା ବନେଇ ରାତି ରେ ମୁଣ୍ଡ ତଳେ ରଖି ସୁଅନ୍ତୁ ।

(ଉପରୋକ୍ତ ଉପାୟ ଜନ୍ମ ଦିନରେ କିମ୍ବା ଜନ୍ମ ଦିନ ର ୪୦ ଦିନ ଭିତରେ ଆରମ୍ଭ କରିବାକୁ ହେବ ।)

ଲୀଳା ବହି ବର୍ଷପତ୍ର 2031-2032

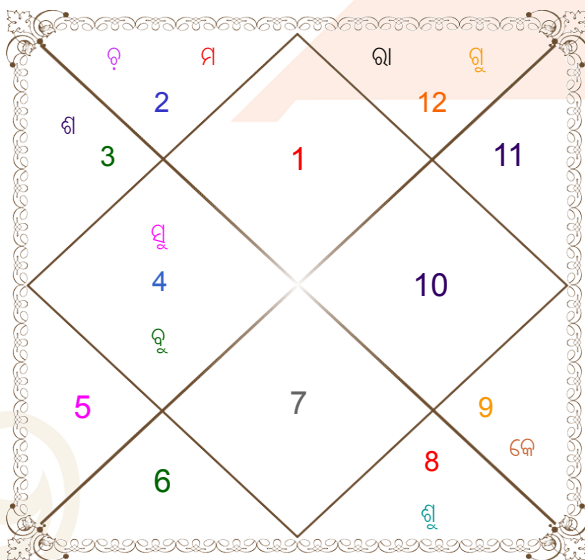
ବର୍ତ୍ତମାନ ଆୟୁ - 45
 ବର୍ତ୍ତମାନ ଦଶା - ଶନି

| ଗ୍ରହ | ଅକ୍ଷ | ଧାର୍ମିକ | ଶୋଭା | ଭଦ୍ର/ଧୀମା |
|---------|------|---------|------|-----------|
| ସୂର୍ଯ୍ୟ | -- | ଅଂ | -- | ଭଦ୍ର |
| ଚନ୍ଦ୍ର | -- | ଅଂ | -- | ଭଦ୍ର |
| ମଙ୍ଗଳ | -- | ଅଂ | -- | ଭଦ୍ର |
| ବୁଧ | -- | ଅଂ | -- | ଭଦ୍ର |
| ଗୁରୁ | -- | -- | -- | ଧୀମା |
| ଶୁକ୍ର | -- | -- | -- | ଧୀମା |
| ଶନି | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |
| ରାହୁ | -- | -- | -- | ଧୀମା |
| କେତୁ | -- | -- | -- | ଭଦ୍ର |

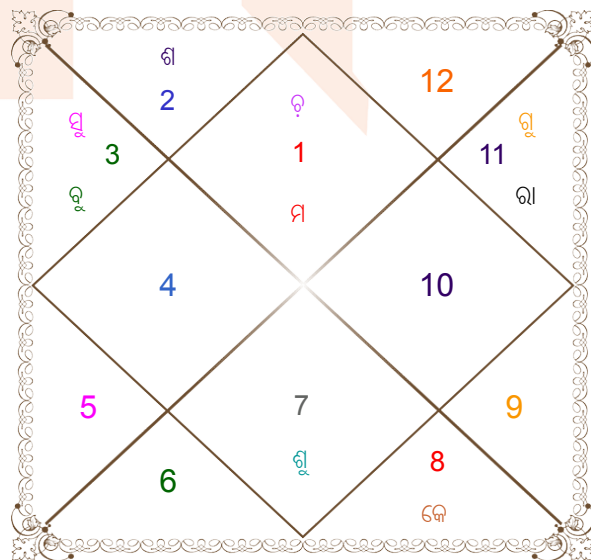
ଭାବ ସ୍ଥିତି

| ଖାଳା | 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| ଧାର୍ମିକ | ଅଂ | -- | -- | -- | ଅଂ | -- | ଅଂ | -- | -- | -- | -- | -- |

ବର୍ଷ ଲଗ୍ନ ୨୦୩୧ - ୨୦୩୨



ବର୍ଷ ଚନ୍ଦ୍ର ଲଗ୍ନ ୨୦୩୧ - ୨୦୩୨



ଲାଲ ବହି ବର୍ଷପତ୍ର 2031-2032

ସୂର୍ଯ୍ୟ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନ ରେ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ଧନ ର ଉପଯୋଗ ଅନ୍ୟ ଲୋକ କରିବେ କିନ୍ତୁ ଆପଣ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଲାଭ ଉଠେଇବେ । ପରିବାର ରେ ନୂଆ କାର୍ଯ୍ୟ ଆରମ୍ଭ ହୋଇ ପାରେ ଯାହା ଲାଭଦାୟକ ରହିବ । ବସ୍ତ୍ର ର କାମ ଠାରୁ ଲାଭ ମିଳିବ, ରାତ୍ରି ସମୟ ରେ କରିବା କାର୍ଯ୍ୟ ଠାରୁ ଅଧିକ ଲାଭ ମିଳିବ, ସରକାରୀ ବିଭାଗ କିମ୍ବା ସମୁଦ୍ର ର ଯାତ୍ରା ରେ ମଧ୍ୟ ଲାଭ ମିଳିବ । ମାତା/ଶାଶୁ ଙ୍କ ସହ ଝଗଡ଼ା କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ସୂର୍ଯ୍ୟ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଡୋରୀ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ଏବଂ ଡୋରୀ ର ଧାରଣା ମନ ରେ ଆଣନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. କୌଣସି ମଧ୍ୟ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ସହ ଝଗଡ଼ା କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଚନ୍ଦ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଦ୍ୱିତୀୟ ସ୍ଥାନ ରେ ଚନ୍ଦ୍ର ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ପିତୃ ସୁଖ ଏବଂ ସୁଖ ର ସାଧନ ମିଳିବ, ଘର ସମ୍ପତ୍ତି ର ଭାଗ କିମ୍ବା ଲାଭ ମିଳିବ । ଧଳା ଜିନିଷ ର କାରବାର ରେ ଅଧିକ ଲାଭ ମିଳିବ । ଭାଇ-ବନ୍ଧୁ ଙ୍କ ସୁଖ ଅବଶ୍ୟ ମିଳିବ । ବିଦ୍ୟା ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ କାମ ରେ ସଫଳତା ମିଳିବ । ଯାତ୍ରା କରିବା କିମ୍ବା ପାହାଡ଼ ପ୍ରଦେଶ ଠାରୁ ଲାଭ ମିଳିବ । ବାଲ୍ୟ-ଚଳନ ଠୀକ ରଖନ୍ତୁ ।

ଚନ୍ଦ୍ର ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଘରେ ମୂର୍ତ୍ତି ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ଏବଂ ଘଣ୍ଟି, ଚାଳି ଆଦି ବଜାନ୍ତୁ ନାହିଁ (ସେନ୍ତାନ ସୁଖ ପାଇଁ) । ପରନ୍ତୁ କାନ୍ଥ ରେ ଫୋଟୋ ଲଗେଇ ପୁଜା-ପାଠ କରି ପାରିବେ ।
୨. ମଦ ଆଦି ମାଦକ ବସ୍ତୁ ର ବ୍ୟବହାର କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ମଙ୍ଗଳ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଦ୍ୱିତୀୟ ସ୍ଥାନ ରେ ମଙ୍ଗଳ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ପରିବାର ରେ ଅନ୍ନ-ଧନ ର କୌଣସି କମୀ ରହିବ ନାହିଁ । ଆପଣ ଭାଇ-ବନ୍ଧୁ ଙ୍କ ଦୁଃଖ ରେ ସବୁ ସମୟ ରେ ସାଥ ଦେବେ, ଆପଣ ମନ ଏବଂ ଜବାବ୍ ରେ ପକ୍ଷା ରହିବେ, ଯେଉଁ କଥା କହିବେ ତାକୁ ପୁରା କରି ଦେଖେଇବେ । ଯଦି ବଡ଼ ଭାଇ ଜୀବିତ ହୋଇ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଅଧିକ ଧନ, ମାନ ଆପଣଙ୍କୁ ମିଳିବ । ପରିବାର ର ଲୋକ ଙ୍କ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ଲାଭ ମିଳିବ ।

ମଙ୍ଗଳ ର ଶୁଭତା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଲଢ଼େଇ-ଝଗଡ଼ା ଠାରୁ ଦୂର ରେ ରହନ୍ତୁ ।
୨. ଘର କୁ ଆସି ଥିବା କୁଣ୍ଡିଆଁ ଙ୍କ ସେବା ରେ କମ୍ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ବୁଧ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନ ରେ ବୁଧ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ଧନ ଲାଭ, ପରିବାର ରେ ସବୁ ଖୁସୀ ଏବଂ ସୁଖ ର ସାଧନ ମିଳିବ । କହି ବାକୁ ଗଲେ ରାଜଯୋଗ ର ସମୟ ଅଛି, ବିଦେଶ ଯାତ୍ରା କିମ୍ବା ବିଦେଶ ରେ ଲାଭ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ, ଏପରି ଯୋଗ ଅଛି । ଭଉଣୀ-ଝିଅ, ପିଉସି ନାନି-ସାଳୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ଲାଭ ହୋଇ ପାରେ । ମାତା ଙ୍କ ଠାରୁ ଧନ-ସମ୍ପତ୍ତି ର ଲାଭ ହେବ କିନ୍ତୁ ମାତୃ ସୁଖ ରେ କମୀ ର ଆଶଙ୍କା ରହିବ ।

ବୁଧ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଝିଅ-ଭଉଣୀ, ପିଉସି ନାନି-ସାଳୀ ଙ୍କ ସହ ଝଗଡ଼ା କରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. ବିଧବା ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ବନ୍ଧ ରଖନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ଗୁରୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଦ୍ୱାଦଶ ସ୍ଥାନ ରେ ଗୁରୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ଏହି ବର୍ଷ କାହାରି କୁ ଯୋକା ଦେବେ ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ଆଗକୁ ଆସିବା ସମୟ ଠୀକ ରହିବ ନାହିଁ, ମିଛ ସାକ୍ଷୀ ଦେବା ଏବଂ ଗମନ କରିବା ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ହିତକର ରହିବ ନାହିଁ । ଧନ ର ଅପବ୍ୟୟ କିମ୍ବା ଧନ ଖରାପ କାମ ରେ ବର୍ବାଦ ହୋଇ ପାରେ । ଆପଣ ସମୟ କୁ ବ୍ୟର୍ଥ ନ କରି ସମାଜ ସେବା ଏବଂ ଶୁଭ କାମ ରେ ଲଗାନ୍ତୁ ।

ଗୁରୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ଗୁରୁ/ସାଧୁ ଙ୍କ ସେବା କରନ୍ତୁ ।
୨. ପୀପଲ ର ବୃକ୍ଷ ରେ ଜଳ ଦିଅନ୍ତୁ ।

ଶୁକ୍ର

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଅଷ୍ଟମ ସ୍ଥାନ ରେ ଶୁକ୍ର ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ଗୁପ୍ତ ରୋଗ ର ଭୟ ହେବ । ଡାକ୍ତା-ଡ଼ଳନ ଠୀକ ରଖନ୍ତୁ ନଚେତ ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ସ୍ୱଭାବ ଚିତ୍ତଚ୍ଚିତ୍ତା ହୋଇ ପାରେ । ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ସହ ଝଗଡ଼ା କରିବା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ହାର ଏବଂ ହାନି ର କାରଣ ହେବ । ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ସହ କଥା ରେ ହୁଁ ରେ ହୁଁ ନିଷ୍ଠୟ କରନ୍ତୁ କିନ୍ତୁ କରନ୍ତୁ ନିଜ ମନ ର । ଆପଣଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ଦେଇ ଥିବା କଥା ଆପଣଙ୍କୁ ପୁଣି କରି ବାକୁ ପଡ଼ି ପାରେ ।

ଶୁକ୍ର ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ଖରାପ ନାଳ ରେ ତମ୍ବା ର ପଇସା କିମ୍ବା ଫୁଲ ପକାନ୍ତୁ ।
୨. ଧର୍ମ ସ୍ଥାନ ରେ ମୁଣ୍ଡ ନୁଆନ୍ତୁ ।

ଶନି

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ତୃତୀୟ ସ୍ଥାନ ରେ ଶନି ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ହାତ ରେ ଖର୍ଚ୍ଚ ଅଧିକ ହେବ କିମ୍ବା ଧନ ର କମୀ ରହିବ । ଆପଣ ସମସ୍ତଙ୍କ ସାହାଯ୍ୟ କରିବେ କିନ୍ତୁ ଲୋକ ଆପଣଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷରାପ କରି ପାରନ୍ତି । ଲୁହା, ମଶୀନ ସମ୍ବନ୍ଧିତ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ଲାଭ ହେବ । ଆପଣ ସାହସ ପୁଣି କାର୍ଯ୍ୟ କରିବେ ଯାହାର କାରଣ ଆପଣଙ୍କୁ କ୍ଷତି ମଧ୍ୟ ଉଠେଇ ବାକୁ ପଡ଼ି

ପାରେ ।

ଶନି ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ମାଛ ର ଶିକାର କରନ୍ତୁ ନାହିଁ, ମାଛ ଖାଆନ୍ତୁ ନାହିଁ । ମଦ ପିଅନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. କୀକର କିମ୍ବା ବେରୀ ର ବୃକ୍ଷ ଘରେ ଲଗାନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ରାହୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ଦ୍ଵାଦଶ ସ୍ଥାନ ରେ ରାହୁ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣ ଏହି ବର୍ଷ ବିନା ବୁଝି ସୁଝି କିମ୍ବା ଶଙ୍ଖ ଚୀଲ ପରି କାର୍ଯ୍ୟ କରିବେ, ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କୁ ହାନି ହେବ, ପ୍ରେମ କିମ୍ବା ଫ୍ରେଜ୍ଦାଠାରା ମକଦ୍ଦମା ରେ ଫସନ୍ତୁ ନାହିଁ । ରାତ୍ରି ସମୟ ରେ ନୀଦ ର ସୁଖ କମ ମିଳିବ । ବିନା ବୁଝି ସୁଝି କୌଣସି କାର୍ଯ୍ୟ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ । ପରିବାର ର ଅତିରିକ୍ତ ବୋଧ ଆପଣଙ୍କ ଉପରେ ହୋଇ ପାରେ । ଧନ ର ବ୍ୟୟ ପରିବାର ର ଭଲ କିମ୍ବା ଶୁଭ କାମ ଉପରେ ହେବ ।

ରାହୁ ର ଅଶୁଭତା କମ କରିବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ ।

ଉପାୟ :

୧. ଘର ର ଶେଷ ରେ ଅନ୍ଧାର କୋଠରୀ ବନାନ୍ତୁ ।
୨. ଶୁକ୍ଳ ରୂପା ର ହାତୀ (ରୂପା ର ପ୍ଲେଟ ଉପରେ ଠିଆ କରି) ଘରେ ରଖନ୍ତୁ ।
୩. ଶୁକ୍ଳ ରୂପା ର ଚାରି ଖଣ୍ଡ କୁ ସୁରାଖ କରି ଧଳା ସୁତା ରେ ବାନ୍ଧି ବେକ ରେ ପିନ୍ଧନ୍ତୁ ।

କେତୁ

ଆପଣଙ୍କ ବର୍ଷ କୁଣ୍ଡଳୀ ର ନବମ ସ୍ଥାନ ରେ କେତୁ ଶୁଭ ଅଛି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ବର୍ଷ ପ୍ରଗତି ମିଳିବ ଏପରି ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ବଦଳୀ ର ଆଶା କମ ଅଛି । ଯାତ୍ରା ରେ ଲାଭ ହେବ । ପ୍ରଦେଶ ରେ ମଧ୍ୟ କିଛି ସମୟ ବ୍ୟତୀତ ହୋଇ ପାରେ । ନିଜ ସନ୍ତାନ ସହିତ କିମ୍ବା ତାହାର ଆଦେଶ ରେ କୌଣସି କାମ କରିବେ, ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କୁ ଅଧିକ ଲାଭ ହେବ । ଆପଣ ଯାହାକୁ ପୁତ୍ର ହେବାର ଆଶୀର୍ବାଦ ଦେବେ ତାଙ୍କ ଘରେ ପୁତ୍ର ଜନ୍ମ ହେବ ।

କେତୁ ର ଶୁଭତା ବଢ଼େଇବା ପାଇଁ ନିମ୍ନଲିଖିତ ବାରଣ କରନ୍ତୁ ।

ବାରଣ :

୧. ଚୋର-ତାକୁ ଈ ସହିତ ରହନ୍ତୁ ନାହିଁ ।
୨. କୁକୁର କୁ ଚୋଟ ମାରନ୍ତୁ ନାହିଁ ।

ବର୍ଷକୁ ଶୁଭ ବନେଇବା ପାଇଁ ବର୍ଷାରମ୍ଭରେ ବିଷିଷ୍ଟ ଉପାୟ

୧. ଗୁରୁ-ସାଧୁ ଈ ସେବା କରନ୍ତୁ କିମ୍ବା ପୀପଲ ର ବୃକ୍ଷ ଲଗାନ୍ତୁ ।

(ଉପରୋକ୍ତ ଉପାୟ ଜନ୍ମ ଦିନରେ କିମ୍ବା ଜନ୍ମ ଦିନ ର ୪୦ ଦିନ ଭିତରେ ଆରମ୍ଭ କରିବାକୁ ହେବ ।)

ଫଳାଦେଶ - 2022

ବୃହସ୍ପତି ଦ୍ଵାଦଶ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏଇ ବର୍ଷ ଆପଣ ଶାରୀରିକ ଭାବେ ସୁସ୍ଥ ରହିଲେ ମଧ୍ୟ ମାନସିକ ଯତ୍ନଶୀଳ ଭାବିପାରନ୍ତି । ବ୍ୟୟର ଅଧିକ ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥା ଉନ୍ନତି ସମ୍ଭବ ନୁହେଁ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ନାନା ବାଧା ବ୍ୟପତ୍ତିର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେବେ । ଫଳରେ ସାଧ୍ୟତା ପାଇବାକୁ ହେଲେ ଆପଣଙ୍କୁ କଠୋର ପରିଶ୍ରମ କରିବାକୁ ହେବ । ଏଇ ସମୟରେ ଭ୍ରମଣର ଯୋଗାଯୋଗ ହୋଇପାରେ ଯାହା ଫଳରେ ଅର୍ଥବ୍ୟୟ ହୋଇପାରେ । ତେବେ ଭବିଷ୍ୟତ ଆପଣଙ୍କ ଉନ୍ନତିର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଦଶା କ୍ଷେତ୍ରରେ ସୁଫଳ ନ ପାଇବା ଫଳରେ ଗୁରୁଭୃତ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପାଦନା ପାଇଁ ଯଥେଷ୍ଟ ପରିଶ୍ରମର ପ୍ରୟୋଗ । ଆପଣଙ୍କର ନାନା ଦିଗରୁ ଅର୍ଥପ୍ରାପ୍ତି ହୋଇପାରେ । ଆଶାନ୍ତରୁପ ଫଳଲାଭ କରିବେ ।

ଶନି ଏକାଦଶ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷିଆ ଆପଣଙ୍କର ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଗୁରୁଭୃତ୍ୟ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ରାଜନୀତି, ବ୍ୟବସାୟ ତଥା କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଉନ୍ନତି କରିବାର ସୁଯୋଗ ପାଇବେ । ଉପାର୍ଜନ ବୃଦ୍ଧି ପାଇବା ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ଅର୍ଥନୈତିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ଘଟିବ । ସମାଜରେ ଆପଣ ସମ୍ମାନିତ ବ୍ୟକ୍ତି ହିସାବରେ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ହେବେ । ସନ୍ତାନ ମାନଙ୍କ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟପ୍ରତି ଦୃଷ୍ଟି ଦିଅନ୍ତୁ ଏବଂ ଯତ୍ନବାନ ହୁଅନ୍ତୁ ।

ରାହୁ ଏବଂ କେତୁ ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନରେ ଅବସ୍ଥାନ ହେତୁ ଏହି ବର୍ଷିଆ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମଗ୍ରିକ ଭାବେ ଶୁଭ । ଏହି ସମୟରେ ଶାରୀରିକ ଓ ମାନସିକ କଷ୍ଟ ପାଇପାରନ୍ତି । ଆପଣଙ୍କର ସ୍ତ୍ରୀ ସହିତ ସୁସମ୍ପର୍କ ବଜାୟ ରହିବ ଏବଂ ବିବାହିତ ଜୀବନ ସୁଖମୟ ହେବ । କିନ୍ତୁ ଆପଣ ଶାରୀରିକ ଅସୁସ୍ଥତା ଭୋଗିବାର ଯଥେଷ୍ଟ ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । କିନ୍ତୁ ଆପଣଙ୍କର ଅର୍ଥନୈତିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ହେବ । ଆପଣ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ସାଧ୍ୟତା ପାଇବେ ଏବଂ ସମାଜରେ ଆପଣ ସମ୍ମାନିତ ବ୍ୟକ୍ତି ହିସାବରେ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଲାଭ କରିବେ । ଆପଣ ପୁରୁଣା ବନ୍ଧୁବାନ୍ଧବଙ୍କୁ ତ୍ୟାଗ କରିବେ ଏବଂ ନୂତନ କୌଣସି ରୁଚ୍ଛିରେ ଆବଶ୍ୟ ହେବେ, ଯାହାକି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭଜନକ ।

ଇସ ବର୍ଷ ରାହୁ କୀ ମହାଦଶା ମେଂ ଶନି କୀ ଅନ୍ତର ରହେଗା । ଶନି ନବମ ଭାବ ମେଂ ବିଛା ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ଜବକି ରାହୁ ପ୍ରଥମ ଭାବ ମେଂ ମୀନ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭ ଏବଂ ଅନୁକୂଳ ରହିବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ସବୁ ବେଳେ ଉନ୍ନତି ର ମାର୍ଗ ପ୍ରଶସ୍ତ ରହିବ ତଥା ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ଲୋକଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କ ସ୍ଥାପିତ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଭବିଷ୍ୟତରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଲକ୍ଷ୍ମିତ ଲାଭ ଏବଂ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ବ୍ୟାପାରରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଉତ୍ସାହ ଜନକ ପରିଣାମର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ତଥା ଲାଭ ଏବଂ ଉନ୍ନତି ମାର୍ଗ ଉପରେ ଅଗ୍ରସର ରହିବେ । ଯଦି ବାକିରୀରେ ଆଜ୍ଞିତ ହୋଇ ପଦ ଉନ୍ନତିର ଅବସର ମିଳିବ । ତଥା ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କରେ ମଧୁରତା ରହିବ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ସେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଏପରି ସମୟରେ ବିଦେଶ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ସମ୍ପନ୍ନି ଯୋଜନାରେ ସଫଳତା ମିଳିପାରେ । ଏହାକୁ ଛାଡ଼ି ମିତ୍ର ବର୍ଗଙ୍କ ଠାରୁ ବାଞ୍ଛିତ ଲାଭ ଏବଂ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ତଥା ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ବିଶ୍ଵାସ ନୀୟତା ର ଭାବ ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଶତ୍ରୁ ବର୍ଗଙ୍କ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ପରାଜିତ ତଥା ପ୍ରଭାବିତ କରିବାରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ ।

ମାସିକ ପକ୍ଷାଦେଶ

ଏହି ମାସ କୁ ଆପଣ ସୁଖ ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନତା ପୂର୍ବକ ବ୍ୟତୀତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ରେ ପୁଣି ଉନ୍ନତି ହେବ, ତଥା ସମାଜ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଉଚିତ ସମ୍ମାନ ତଥା ଆଦର ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁଣି ସମ୍ମାନ ତଥା ସହଯୋଗ ଅର୍ଜିତ ହେବ । ତଥା ସେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପ୍ରସନ୍ନ ତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ମିତ୍ର ଏବଂ ବନ୍ଧୁ ଜନ କୁ ଆପଣ ପୁଣି ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଅଧିକାଂଶ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଏହି ମାସ ରେ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ଶ୍ରଦ୍ଧା ର ଭାବନା ରହିବ, ତଥା ନିୟମ ପୂର୍ବକ ଆପଣ ତାଙ୍କର ପୂଜା ତଥା ସେବା କରିବେ । ସନତ୍ତି ପକ୍ଷ ରୁ ଆପଣ ସୁଖୀ ରହିବେ, ତଥା ବନ୍ଧୁ ଏବଂ ମିତ୍ର ଙ୍କ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣଙ୍କ ଅସଫଳ ଆଶା ମଧ୍ୟ ଏହି ମାସ ରେ ପୁଣି ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ମାନସିକ ରୂପ ରେ ଶାନ୍ତି ତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟି ର ଅନୁଭୂତି କରିବେ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ସରକାର କିମ୍ବା ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଠାରୁ ପୁଣି ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ଏବଂ ନିଜର ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ଦୂର ସମୀପ ର ଲାଭ ଦାୟକ ପାତ୍ରା ମଧ୍ୟ କରି ପାରନ୍ତି । ଏହା ଛଡ଼ା ନବୀନ ବସ୍ତ୍ର କିମ୍ବା ଦ୍ରବ୍ୟ ଆଦି ର ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ସମୟ ରେ ପ୍ରାପ୍ତି ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଅର୍ଥାତ ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ସୁଖ ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନତା ପୂର୍ବକ ବ୍ୟତୀତ ହେବ ।

ଏହି ମାସ କୁ ଆପଣ ସୁଖ ତଥା ପ୍ରସନ୍ନତା ପୂର୍ବକ ବ୍ୟତୀତ କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ବର୍ଗ ଠାରୁ ପୁଣି ଲାଭ ତଥା ସହଯୋଗ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ସୋଭାଗ୍ୟ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଯୁକ୍ତ ରହିବେ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ସମସ୍ତ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଯଥା ସମୟ ରେ ସିଦ୍ଧ ହେବ । ସରକାର କିମ୍ବା ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ରୁ ମଧ୍ୟ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ଲାଭ ଅର୍ଜନ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ, ତଥା ମନ ମଧ୍ୟ ପୁଣି ପ୍ରସନ୍ନ ରହିବ । ଅଧ୍ୟୟନ କିମ୍ବା ଜ୍ଞାନ ଅର୍ଜନ ର ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣ ରୁଚିଶୀଳ ରହିବେ । ମିତ୍ର ଏବଂ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମଧୁର ସମ୍ପର୍କ ରହିବ, ତଥା ତାଙ୍କର ପୁଣି ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ମନୋଚ୍ଛିତ ଦ୍ରବ୍ୟ ପଦାର୍ଥ ର ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ଏହା ଛଡ଼ା ବନ୍ଧୁ ବର୍ଗ ରେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ବିଗତ ଅସଫଳ ଆଶା ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ସଫଳତା ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ବୃଦ୍ଧି ରେ ନିର୍ମଳତା ର ଭାବ ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ । ତଥା ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରା ରେ ଧନ ତ ଥା ସୁଖ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଧର୍ମ ର ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ଶ୍ରଦ୍ଧା ର ଭାବନା ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ, ତଥା ସମାଜ ରେ ଯଶ ତଥା ସମ୍ମାନ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଅର୍ଥାତ ଏହି ମାସ କୁ ଆପଣ ସୁଖ ପୂର୍ବକ ବ୍ୟତୀତ କରିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭା ଶୁଭ ଫଳ ରେ ଯୁକ୍ତ ମଧ୍ୟମ ରୂପ ରେ ବ୍ୟତୀତ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ବ୍ୟୟ ଅଧିକ ମାତ୍ରା ରେ ହେବ । ତଥା ଆପଣ ଦୁଷ୍ଟ ମନୁଷ୍ୟ ଙ୍କ ସଙ୍ଗରେ କେତେ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ଆର୍ଥିକ ସଙ୍ଗତ ରୁ ମଧ୍ୟ ଲାଗି ରହିବେ । ଅର୍ଥାତ ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଅଶାନ୍ତ ତଥା ଉଦ୍‌ବିଗ୍ନ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଶରୀର ରେ ଦୁର୍ବଳତା ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଏହି ସମୟ ରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ପରିଶ୍ରମ

କରିବା ପରେ ମଧ୍ୟ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ହିଁ ସିଦ୍ଧ ହୋଇ ପାରିବ । ଧର୍ମ ର ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ବିଶେଷ ଶ୍ରଦ୍ଧା ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣଙ୍କ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଯଥୋଚିତ ପୂଜନ ତଥା ସତକାର କରିବେ ନାହିଁ । ସାଥେ ସାଥେ ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାର ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ହାନି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ମିତ୍ର ତଥା ବନ୍ଧୁଙ୍କ ସହ ମଧୁର ସମ୍ପର୍କ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ରେ ମଧ୍ୟ ଅନାବଶ୍ୟକ ରୂପ ରେ ବ୍ୟବଧାନ ଉତ୍ପନ୍ନ ହେଉ ଥିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ ରୁ ଆପଣ ଭୟଭୀତ ତଥା ଚିନ୍ତିତ ରହିବେ, ତଥା ଯେଉଁ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାରମ୍ଭ କରିବେ ସେଥିରେ ସଫଳତା ର ଅପେକ୍ଷା ଅସଫଳତା ହିଁ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ମାନସିକ ରୂପ ରେ ଆପଣ ଅଶାନ୍ତ ରହିବେ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ଅଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଅର୍ଜିତ କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ବର୍ଗ ଠାରୁ ଲାଭ ଅର୍ଜିତ କରିବେ, ତଥା ବୃଦ୍ଧି ମଧ୍ୟ ନିର୍ମଳ ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଧର୍ମ ର ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ଶ୍ରଦ୍ଧା ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଯାହାର ଫଳସ୍ୱରୂପ କୌଣସି ଧାର୍ମିକ ଉତ୍ସବ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଏହି ପରି ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ମଧ୍ୟମ ରହିବ ।

ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ପରାକ୍ରମ ରେ ନିତ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେଉ ଥିବ । ଅର୍ଥାତ ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶତ୍ରୁ ବର୍ଗ କମଜୋର ରହିବେ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ସହ ପ୍ରଭାବିତ ତଥା ଭୟଭୀତ ରହିବେ । ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗଙ୍କ ଠାରୁ ଏହି ସମୟ ରେ ସମ୍ମାନ ଏବଂ ସହଯୋଗ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ଆପଣ ସଫଳ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ମୁଖ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ଛାଡ଼ି ଅନ୍ୟ ସ୍ତ୍ରୋତ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଲାଭ ଅର୍ଜନ କରିବେ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ସୁଦୃଢ଼ ରହିବ । ଏହା ଦ୍ୱାରା ସମାଜ ତଥା ମିତ୍ର ବର୍ଗ ରେ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସୋଭାଗ୍ୟ ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ପୂର୍ବ ବିଳମ୍ବିତ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ସ୍ୱତଃ ସିଦ୍ଧ ହୋଇ ଥିବ । ସାଥେ ସାଥେ ସାମ୍ବାରିକ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ସଫଳ ରହିବେ ଏବଂ ସର୍ବତ୍ର ଆନନ୍ଦ ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନତା ର ବାତାବରଣ ବିଦ୍ୟ ମାନ ରହିବ ।

ପରନ୍ତୁ ଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ବେଳେ ବେଳେ ଆପଣଙ୍କୁ ଅଶୁଭ ଫଳ ର ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ଗରମ କିମ୍ବା ପିତ ଦ୍ୱାରା ଉତ୍ପନ୍ନ ରୋଗ ରେ ଶାରୀରିକ କଷ୍ଟ ଅନୁଭୂତି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ସମୟ ରେ କୌଣସି ପ୍ରକାର ର ଲକ୍ଷ ବିକାର ମଧ୍ୟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଅର୍ଥାତ ଶାରୀରିକ ସୁରକ୍ଷା ର ପ୍ରତି ପୂର୍ଣ୍ଣ ସଚେତ ରହନ୍ତୁ । ଏହା ଛଡ଼ା ଅଗ୍ନି ଦ୍ୱାରା ମଧ୍ୟ କ୍ଷତି ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଅର୍ଥାତ ସାବଧାନୀ ଏବଂ ସତର୍କତା ପୂର୍ବକ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବା ଦରକାର ।

ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ନିଜର ଉତ୍ସାହ ଦ୍ୱାରା ଧନ ଲାଭ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ସାମାଜିକ ଜନଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ଯଶ ତଥା ସମ୍ମାନ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ନିଜର ପାରିବାରିକ ଜନ ତଥା ବନ୍ଧୁ ବର୍ଗଙ୍କ ମଧ୍ୟ ଯଥୋଚିତ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଅର୍ଜିତ ହେବ, ତଥା ପରସ୍ପର ସମ୍ପର୍କ ମଧ୍ୟ ମଧୁର ରହିବ । ଏହି ମାସ ରେ ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଫଳତଃ ଆପଣଙ୍କ ସବୁ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ସିଦ୍ଧ ହୋଇ ଥିବ । ଆପଣଙ୍କ ମିଷ୍ଟାନ ଭକ୍ଷଣ ରେ ମଧ୍ୟ ଏହି ମାସ ପୂର୍ଣ୍ଣ ରୁଚି ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟ ରେ ଭଲ ରହିବ, ତଥା ସେଥିରେ ବଳ ର ବୃଦ୍ଧି ହେଉ ଥିବ । ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ କୁ ପରାଜିତ ତଥା ଭୟଭୀତ କରିବା ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ସଫଳ ରହିବେ, ତଥା ସବୁ ଜନଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଫଳତଃ ଆପଣଙ୍କ ପାରିବାରିକ ଜୀବନ ସୁଖ ମୟ ରହିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ବ୍ୟାପାର ଆଦି କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରା ରେ ଲାଭ ଅର୍ଜନ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ପରି ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ଶୁଭ ଫଳ ଦାୟକ ରହିବ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସୁଖୀ ରହିବେ, ତଥା ସନତ୍ତି ପକ୍ଷ ରୁ ମଧ୍ୟ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ



କରିବେ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ନବୀନ ବସ୍ତ୍ର କିମ୍ବା ବସ୍ତ୍ର ର ପ୍ରାପ୍ତି ମଧ୍ୟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଅର୍ଥାତ ପ୍ରସନ୍ନତା ପୂର୍ବକ ଏହି ମାସ କୁ ବ୍ୟତୀତ କରିବାରେ ଆପଣ ସଫଳ ରହିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟତୟ ଶୁଭ ରହିବ, ତଥାପି ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରାରେ ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ହେଉ ଥିବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ନିଜର ପରାକ୍ରମ ଦ୍ୱାରା ଧନ ଅର୍ଜନ କରିବେ, ତଥା ବିବିଧ ପ୍ରକାରର ସୁଖ ଉପଭୋଗ କରିବାରେ ସଫଳ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ସମାଜରେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ତଥା ଯଶରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନରେ ଶ୍ରଦ୍ଧାର ଭାବନା ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ, ତଥା ଶ୍ରଦ୍ଧା ପୂର୍ବକ ଆପଣ ତାଙ୍କର ପୂଜା ତଥା ସେବା କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ସମାଜରେ ଅନ୍ୟ ଲୋକଙ୍କ ଉପକାର କରିବାରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ତତ୍ପର ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ସାମାନ୍ୟ ହିଁ ରହିବ । ଏହି ମାସରେ ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ତଥା ଆଶ୍ରୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ମିତ୍ର ଏବଂ ବନ୍ଧୁ ବର୍ଗଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମଧୁର ସମ୍ପର୍କ ରହିବ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ବାଞ୍ଛିତ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେଉ ଥିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣଙ୍କ ମନୋ କାମନା ମଧ୍ୟ ଏହି ମାସରେ ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେବ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ମାନସିକ ରୂପରେ ପ୍ରସନ୍ନତାରେ ଅନୁଭୂତି କରିବେ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସରେ ଶୁଭ ଫଳର ସାଥେ ସାଥେ ବେଳେ ବେଳେ ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ବାତ ଜନ୍ମ ରୋଗରେ ଶାରୀରିକ କଷ୍ଟ ଅନୁଭୂତି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ଆପଣ କୌଣସି ଏପରି କାର୍ଯ୍ୟକୁ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ପରେ ଆପଣଙ୍କୁ ପଶ୍ଚାତାପ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଅଗ୍ନି ଆଦି ଦ୍ୱାରା ମଧ୍ୟ ଆପଣ ହାନି ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରନ୍ତି । ଅର୍ଥାତ ବୃଦ୍ଧିମତା ପୂର୍ବକ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କଳାପକୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।

ଏହି ମାସରେ ଆପଣ ସାମାନ୍ୟତୟ ଅଶୁଭ ଫଳ ହିଁ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ଆପଣ ଅନେକ ପ୍ରକାରର ଶାରୀରିକ କଷ୍ଟର ଅନୁଭୂତି କରିବେ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ଶତ୍ରୁ ପ୍ରବଳ ରହିବେ, ତଥା ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣ ଭୟଭୀତ ତଥା ଚିନ୍ତିତ ରହିବେ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ମାନସିକ ରୂପରେ ଆପଣ ଉଦ୍ବିଗ୍ନତା ତଥା ଅଶାନ୍ତିର ଅନୁଭୂତି କରିବେ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ବ୍ୟାପାର କିମ୍ବା ଆଜୀବିକା ସମ୍ପର୍କି କାର୍ଯ୍ୟରେ ମାନ୍ଦା ଆସିବ, ତଥା ଅନେକ ଅନାବଶ୍ୟକ ବାଧା ମଧ୍ୟ ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ କୌଣସି କାର୍ଯ୍ୟ ବନ୍ଦ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି କିମ୍ବା ସେଥିରେ କୌଣସି ପ୍ରକାରର ପରିବର୍ତ୍ତନ ହେବାରେ ସମ୍ଭାବନା ବନିବ । ସମାଜରେ ଅନ୍ୟ ଲୋକଙ୍କ ସହ ଏହି ମାସରେ ଆପଣଙ୍କ ଅନାବଶ୍ୟକ ବିବାଦ କିମ୍ବା ସଂଘର୍ଷ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ସାମାଜିକ ସମ୍ମାନରେ ନ୍ୟୁନତା ଆସିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଧନ ହାନିର ମଧ୍ୟ ଯୋଗ ବନି ଥାଏ, ତଥା ଶାରୀରିକ କୌଣସି ରୋଗ ମଧ୍ୟ ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସରେ ଆପଣ ବାତ ଜନିତ ରୋଗରେ କଷ୍ଟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା କୌଣସି ଏପରି କାର୍ଯ୍ୟକୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ପରେ ପଶ୍ଚାତାପ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଅଗ୍ନି ଦ୍ୱାରା ମଧ୍ୟ କୌଣସି ପ୍ରକାରର କ୍ଷତି କିମ୍ବା ହାନି ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଅର୍ଥାତ ସାବଧାନ ଏବଂ ସତର୍କତା ପୂର୍ବକ ନିଜର ସାଂସାରିକ କାର୍ଯ୍ୟ କଳାପକୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭ ଏବଂ ଅନୁକୂଳ ରହିବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ବୃଦ୍ଧିରେ ନିର୍ମଳତା ର ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ସବୁ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ବଳ ଦ୍ୱାରା ହିଁ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଏହି ମାସରେ ସକ୍ତ ପକ୍ଷରୁ ଆପଣଙ୍କ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ଏବଂ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବାରେ ସଫଳ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାରରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ଦ୍ରବ୍ୟ ଲାଭର ଯୋଗ ବନିବ । ଏହି ସମୟରେ ସମାଜରେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରଭୁତ୍ୱରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ ତଥା ସବୁ ଲୋକ ଆପଣଙ୍କ ହାର୍ଦ୍ଦିକ ସମ୍ମାନ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଶୁଭ ଏବଂ

ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଏହି ମାସ ରେ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ, ତଥା ଭଲ ସମାଚାର କୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ସୁଶିଖିବେ । ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ପୁଣି ଆତ୍ମା ରହିବ, ତଥା ଶୁଭା ପୂର୍ବକ ଆପଣ ତାଙ୍କର ପୂଜା ତଥା ସେବା କରିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ରାଜ୍ୟ କିମ୍ବା ଭଲ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣ ଲାଭ ଅର୍ଜନ କରିବା ରେ ମଧ୍ୟ ସଫଳ ହୋଇ ପାରନ୍ତି । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସାମାଜିକ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରେ ଅତି ବୃଦ୍ଧି ହେବ ତଥା ସମସ୍ତ ମାନସିକ ବିକଳା ଦୂର ହେବ । ଅର୍ଥାତ ମନ ରେ ଆପଣ ପୁଣି ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ତଥା ପ୍ରସନ୍ନ ରହିବେ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ତଥା ପୁତ୍ରଙ୍କ ପୁଣି ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ନବୀନ ବସ୍ତ୍ର କିମ୍ବା ବସ୍ତୁ କୁ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ମଧ୍ୟ ସଫଳ ହୋଇ ପାରନ୍ତି । ଏହି ପରି ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ଶୁଭ ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନତା ପ୍ରଦାନ କରିବା ବାଲା ରହିବ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟତୟା ଅଶୁଭ ରହିବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ ଏବଂ ଶରୀର ରେ ଦୁର୍ବଳତା ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶତ୍ରୁ ମଧ୍ୟ ପ୍ରବଳ ରହିବେ, ତଥା ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଭୟଭୀତ ତଥା ବିକଳିତ ରହିବେ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ମନ ରେ ଅଶାନ୍ତି ତଥା ଭବିଷ୍ୟତ ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଘରେ କୌଣସି ପ୍ରକାର ର ଡୋରୀ ମଧ୍ୟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି ଅର୍ଥାତ ସତର୍କ ରହନ୍ତୁ । ଭଲ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଠାରୁ ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ପୁଣି ସହଯୋଗ ରଖିବା ଦରକାର ତଥା ତାଙ୍କର ଆଜ୍ଞା କୁ ପାଳନ କରିବା ଦରକାର ଅନ୍ୟଥା ଆପଣ ଦଣ୍ଡିତ ମଧ୍ୟ କରା ଯାଇ ପାରେ । ଆପଣଙ୍କ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଏହି ମାସ ରେ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ହିଁ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ ଏବଂ ଧନ ର ବ୍ୟୟ ମଧ୍ୟ ଅନାବଶ୍ୟକ ରୂପ ରେ ହେଉ ଥିବ । ଅର୍ଥାତ ଆର୍ଥିକ ଦୃଷ୍ଟି ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଶିଥିଳ ହୋଇ ପାରନ୍ତି । ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ କୌଣସି ଏପରି କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ କୁ ପରେ ପଶ୍ଚାତାପ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ମିତ୍ର ଏବଂ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ବନ୍ଧ ରେ ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟ ରେ ତନାବ ର ବାତାବରଣ ରହିବ, ତଥା ସମାଜ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଉପେକ୍ଷା ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣଙ୍କ ମନୋ କାମନା ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟ ରେ ଅପୂର୍ଣ୍ଣ ହିଁ ରହିବ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ଗରମ କିମ୍ବା ପିତ ଜନିତ ରୋଗ ରେ ପୀଡ଼ିତ ରହିବେ, ତଥା ଦୁର୍ଘଟଣା ଅତି ରୁ ମଧ୍ୟ ଶରୀର ରେ ରକ୍ତ ବିକାର ର ସମ୍ଭାବନା ହେବାର ଅଛି । ଏହା ଛଡ଼ା ଏହି ସମୟ ରେ ଅଗ୍ନି ଦ୍ୱାରା ମଧ୍ୟ ଆପଣ ହାନି ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରନ୍ତି । ଅର୍ଥାତ ସାବଧାନୀ ପୂର୍ବକ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କଳାପ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବିଶେଷ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ଶୁଭ ଫଳ ର ଅପେକ୍ଷା ଅଶୁଭ ଫଳ ହିଁ ଅଧିକ ମାତ୍ରା ରେ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ପକ୍ଷ ରୁ କଷ୍ଟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଶତ୍ରୁଙ୍କ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ବିକଳା ଏବଂ ଭୟ ର ବାତାବରଣ ବନି ରହିବ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଉତ୍ସାହ ରେ ମଧ୍ୟ କମୀ ଆସିବ, ତଥା ଧନ ର ବ୍ୟୟ ମଧ୍ୟ ଅଧିକ ମାତ୍ରା ରେ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଅତ୍ୟନ୍ତ ପରିଶ୍ରମ କରିବା ପରେ ପୁଣି ରୂପ ରେ ସିଦ୍ଧ ହେବ ନାହିଁ । ଶାରୀରିକ ଅସୁସ୍ଥତା ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟ ରେ ବନୀ ରହିବ, ତଥା ସ୍ୱଭାବ ରେ ଲୋଲୁପତା ର ଭାବ ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ନିଜର ବନ୍ଧୁ ଏବଂ ମିତ୍ର ବର୍ଗଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ବନ୍ଧ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ପରସ୍ପର ମନ ମୁତାବ ରହିବ । ମିତ୍ର ବର୍ଗ ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟ ରେ ଶତ୍ରୁଙ୍କ ପରି ବ୍ୟବହାର କରିବେ, ଯାହାର କାରଣ ମନ ଅଶାନ୍ତ ତଥା ଅସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣଙ୍କ ସାମାଜିକ ଜନ ରୁ ମଧ୍ୟ ବାଦ ବିବାଦ କିମ୍ବା ସଂଘର୍ଷ ହେବା ର ସମ୍ଭାବନା ବନୀ ରହିବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ସାମାଜିକ ସମ୍ମାନ ରେ ମଧ୍ୟ ନ୍ୟୁନତା ଆସିବ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସ ରେ ଅଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ହେଉ ଥିବ । ଅର୍ଥାତ ସ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ସୁଖ ଏବଂ ସହଯୋଗ ର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ, ତଥା ବୃଦ୍ଧି ବଳ ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟ ସଫଳ ମଧ୍ୟ ହୋଇ ପାରେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଧର୍ମ ର ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ରୁଚି ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଏହି ପରି ଆପଣଙ୍କ ଏହି ମାସ ସାମାନ୍ୟ ରୂପ ରେ ବ୍ୟତୀତ ହେବ ।

ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ଶୁଭା ଶୁଭ ଉଭୟ ପ୍ରକାର ର ଫଳ କୁ ଅର୍ଜିତ କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ ରୁ ଆପଣ ଭୟଭୀତ ତଥା ଚିନ୍ତିତ ରହିବେ ଏବଂ ଘରେ କୌଣସି ପ୍ରକାର ର ଡୋରା ଆଦି ହେବା ର ମଧ୍ୟ ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଧନ ଅଧିକ ମାତ୍ରା ରେ ବ୍ୟୟ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ଆର୍ଥିକ କଷ୍ଟ ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରନ୍ତି । ଧର୍ମ ର ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ଶ୍ରଦ୍ଧା ର ଅପେକ୍ଷା, ଉପେକ୍ଷା ର ଭାବ ହିଁ ଅଧିକ ରହିବ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ ଏବଂ ଆପଣ ବିବିଧ ପ୍ରକାର ର ଶାରୀରିକ ତଥା ମାନସିକ କଷ୍ଟ କୁ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଶରୀର ରେ ଦୁର୍ବଳତା ସୃଷ୍ଟି ରୁପ ରେ ପରିଲକ୍ଷିତ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ଦୁର କିମ୍ବା ସମୀପ ର କୌଣସି ଯାତ୍ରା ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ କରି ପାରନ୍ତି । ଆପଣଙ୍କ ସାମ୍ବରକ କାର୍ଯ୍ୟ ଏହି ମାସ ରେ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ହିଁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ହେବ ତଥା ମକଳମା ଆଦି ରେ ମଧ୍ୟ ବ୍ୟୟ ଅଧିକ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ସାବଧାନୀ ଏବଂ ସତର୍କତା ପୁର୍ବକ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କଳାପ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।

ପରନ୍ତୁ ଅଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କୁ ସମୟ ସମୟ ରେ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ଏବଂ ମହିଳା ସହଯୋଗି ଙ୍କ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ଲାଭ ଅର୍ଜନ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ବୁଦ୍ଧି ରେ ମଧ୍ୟ ନିର୍ମଳତା ର ଭାବ ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ ଏବଂ ଧନ ଅର୍ଜନ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରା ରେ ହେଉ ଥିବ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ଧର୍ମ ର ମଧ୍ୟ ଅନୁପାଳନ କରିବେ ତଥା ସମାଜ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ଯଶ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ଶୁଭ ତଥା ଭାଗ୍ୟ ବର୍ଷକ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରା ରେ ଧନ ଅର୍ଜନ କରିବେ, ତଥା ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପୁର୍ଣ୍ଣ ରୁପ ରେ ସମ୍ମୁଖ ତଥା ପ୍ରସନ୍ନ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ଘରେ କୌଣସି ଧାର୍ମିକ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ସନ୍ତତି ପକ୍ଷ ରୁ ଆପଣ ନିଶ୍ଚିନ୍ତ ରହିବେ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ଶ୍ରଦ୍ଧା ର ଭାବ ରହିବ ଏବଂ ଶ୍ରଦ୍ଧା ପୁର୍ବକ ଆପଣ ତାଙ୍କର ସେବା ତଥା ପୂଜା କରିବେ । ସମାଜ ରେ ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଯଶ ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ଭାଗ୍ୟ ଉଦୟ ସମ୍ବନ୍ଧି କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ବୁଦ୍ଧି ରେ ମଧ୍ୟ ନିର୍ମଳତା ର ଭାବ ରହିବ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଲାଭ ଦାୟକ ଯାତ୍ରା ର ଯୋଗ ମଧ୍ୟ ବନିବ । ସରକାର କିମ୍ବା ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଠାରୁ ଆପଣ ସମ୍ମାନ ତଥା ସହଯୋଗ ମଧ୍ୟ ଅର୍ଜିତ କରିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ମିତ୍ର ଏବଂ ବନ୍ଧୁ ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମଧୁର ସମ୍ବନ୍ଧ ରହିବ, ତଥା ସମାଜ ରେ ଆପଣ ଏକ ସମ୍ମାନନୀୟ ତଥା ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ବ୍ୟକ୍ତି ବନିବେ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ତଥା ମହିଳା ବର୍ଗ ଙ୍କ ଠାରୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ଏବଂ ଲାଭ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରା ରେ ଧନ ଅର୍ଜନ ମଧ୍ୟ ହେବ । ତଥା ସୁଖ ସାଧନ କୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଧର୍ମ ର ଅନୁପାଳନ ରେ ଆପଣଙ୍କ ରୁଚି ରହିବ, ତଥା ସମାଜ ରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ଯଶ ଏବଂ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ବ୍ୟାପ୍ତ ରହିବ ।

ପଲ୍ଲୀଦେଶ - 2023

ବୃହସ୍ପତି ପ୍ରଥମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ପଳରେ ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣ ଦୈନିକ ଓ ମାନସିକ ଭାବେ ଶାନ୍ତିରେ କଟାଇବେ । ସାମାଜିକ ଦିଗରୁ ସମ୍ମାନ ପାଇବେ ଏବଂ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ର ଓ ବ୍ୟାବସାୟିକ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆଶାନ୍ୱରୁପ ସାଫଲ୍ୟ ଲାଭ କରିବେ । ଅନ୍ୟ ଦିଗରୁ ଅର୍ଥ ପ୍ରାପ୍ତି ପଳରେ ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାନ ଉନ୍ନତି ହେବ । ଆପଣ କଠୋର ପରିଶ୍ରମ ଦ୍ୱାରା ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣ ସମସ୍ତ ଅସମାପ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟକୁ ସମାପ୍ତ କରିବେ । ଦଶା ଶୁଭ ପଳାଫଳ ହେତୁ କଠୋର ଶ୍ରମ ଆପଣଙ୍କୁ ସାଫଲ୍ୟ ଆଣିଦେବ ।

ଶନି ଏକାଦଶ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ପଳରେ ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କର ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ରାଜନୀତି, ବ୍ୟବସାୟ ତଥା କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଉନ୍ନତି କରିବାର ସୁଯୋଗ ପାଇବେ । ଉପାର୍ଜନ ବୃଦ୍ଧି ପାଇବା ପଳରେ ଆପଣଙ୍କର ଅର୍ଥନୈତିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ଘଟିବ । ସମାଜରେ ଆପଣ ସମ୍ମାନିତ ବ୍ୟକ୍ତି ହିସାବରେ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ହେବେ । ସନ୍ତାନ ମାନଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟପ୍ରତି ଦୃଷ୍ଟି ଦିଅନ୍ତୁ ଏବଂ ଯତ୍ନବାନ ହୁଅନ୍ତୁ ।

ରାହୁ ଏବଂ କେତୁ ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନରେ ଅବସ୍ଥାନ ହେତୁ ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମଗ୍ରିକ ଭାବେ ଶୁଭ । ଏହି ସମୟରେ ଶାରୀରିକ ଓ ମାନସିକ କଷ୍ଟ ପାଇପାରନ୍ତି । ଆପଣଙ୍କର ସ୍ତ୍ରୀ ସହିତ ସୁସମ୍ପର୍କ ବଜାୟ ରହିବ ଏବଂ ବିବାହିତ ଜୀବନ ସୁଖମୟ ହେବ । କିନ୍ତୁ ଆପଣ ଶାରୀରିକ ଅସୁସ୍ଥତା ଭୋଗିବାର ଯଥେଷ୍ଟ ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । କିନ୍ତୁ ଆପଣଙ୍କର ଅର୍ଥନୈତିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ହେବ । ଆପଣ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ସାଫଲ୍ୟ ପାଇବେ ଏବଂ ସମାଜରେ ଆପଣ ସମ୍ମାନିତ ବ୍ୟକ୍ତି ହିସାବରେ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଲାଭ କରିବେ । ଆପଣ ପୁରୁଣା ବନ୍ଧୁବାନ୍ଧବଙ୍କୁ ତ୍ୟାଗ କରିବେ ଏବଂ ନୂତନ କୌଣସି ରୁଚିରେ ଆବଦ୍ଧ ହେବେ, ଯାହାକି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭଜନକ ।

ରାହୁ କୀ ମହାଦଶା ମେ ଶନି କା ଅନ୍ତର ୩୦/୦୬/୨୦୨୩ କୋ ସମାପ୍ତ ହୋଗା । ଉପକେ ବାଦ ବୁଧ କା ଅନ୍ତର ପ୍ରାରଭ ହୋଗା । ଶନି ନବମ ଭାବ ମେ ବିଛା ରାଶି ମେ ସ୍ଥିତ ହେଁ ଜବକି ବୁଧ ଦ୍ୱାଦଶ ଭାବ ମେ କୁମ୍ଭ ରାଶି ମେ ସ୍ଥିତ ହେଁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟ ରୂପ ରେ ଭଲ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଭାବି ଥିବା କାର୍ଯ୍ୟ ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେବ । ତଥା ସକ୍ରିୟତା ର ଭାବ ର ପ୍ରବଳତା ଏବଂ କଳ୍ପନାଶୀଳତା ର କାରଣ ବର୍ତ୍ତମାନ ବ୍ୟାପାର ରେ ବିସ୍ତାର କରିବା ରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ସନ୍ତୋଷ ଜନକ ପରିଣାମ ର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ଯଦି ଚାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ପଦ ଉନ୍ନତି ର ସମ୍ଭାବନା ବନିବ ଏବଂ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପ୍ରସନ୍ନ ଏବଂ ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ପାରିବାରିକ ଦୃଷ୍ଟି ରେ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ମଧ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ । ତଥା ସବୁ ଲୋକ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ମିଳି ମିଶି ରହିବେ ଏବଂ ଜଣେ ଅନ୍ୟ କୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଘର ଉପଯୋଗୀ ବସ୍ତୁ ଉପରେ ମଧ୍ୟ ବ୍ୟୟ ହେବ । ଏହା କୁ ଛାଡ଼ି ଦୂର ସମୀପ ର ଲାଭ ଦାୟକ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ମଧ୍ୟ ସମ୍ଭବ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଭବିଷ୍ୟତ ରେ ଲାଭ ଏବଂ ସମ୍ମାନ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ମିତ୍ର ବର୍ଗ ଙ୍କ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ସକରାତ୍ମକ ସହଯୋଗ ମଧ୍ୟ ଅବସର ଅନୁକୂଳ ମିଳୁ ଥିବ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟ ରୂପ ରେ ଅନୁକୂଳ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ଭଲ ରହିବ । ପରନ୍ତୁ ବ୍ୟୟ ମଧ୍ୟ ଅଧିକ ହେବ । କିନ୍ତୁ ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ଉପରେ କୌଣସି ବିଶେଷ ଦୁ ସ୍ତ୍ରଭାବ ହେବ ନାହିଁ । ଏହି ସମୟ ରେ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ର ସିଦ୍ଧି ଆପଣ ସାହାସ ତଥା ଆତ୍ମ ବିଶ୍ୱାସ ଦ୍ୱାରା ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ପରିଶ୍ରମ ପୂର୍ବକ ଉନ୍ନତି ର ମର୍ଗ ଉପରେ ଅଗ୍ରସର ରହିବେ । ପାରିବାରିକ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ଉତ୍ତମ ରହିବ । ତଥା ସବୁ ଲୋକ ସୁସ୍ଥ ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନ ରହିବେ । ତଥା ଆପଣଙ୍କୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ବ୍ୟାପାର ରେ ମଧ୍ୟ ଲାଭ ହେଉ ଥିବ ତଥା ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ଲୋକ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କ ସ୍ଥାପିତ ହେବ । ଏହା କୁ ଛାଡ଼ି ଲାଭ ଦାୟକ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ହେବ । ତଥା ଏହା ଦ୍ୱାରା ଭବିଷ୍ୟତ ପାଇଁ ନବୀନ ଆୟମ ସ୍ଥାପିତ ହେବ । କିନ୍ତୁ ଏପରି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ପ୍ରତି ପୂର୍ଣ୍ଣ ସତର୍କ ରହିବା ଦରକାର ।

ମାସିକ ପଞ୍ଜାବେଶ

ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ରେ ବିଶେଷ ସଫଳତା ତଥା ଲାଭ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପୁର୍ଣ୍ଣ ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ତଥା ପ୍ରସନ୍ନ ରହିବେ, ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣ ପଦ ଉନ୍ନତି କିମ୍ବା ବିଶେଷ ଲାଭ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରନ୍ତି । ବନ୍ଧୁ ଏବଂ ମିତ୍ର ବର୍ଗ ଠାରୁ ଆପଣ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ତାଙ୍କର ପର ଉପକାର ସମ୍ପନ୍ନି କାର୍ଯ୍ୟ କୁ କରିବା ପାଇଁ ଚପୁର ରହିବେ । ଆପଣ ନିଜର ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ଵପୁର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ଏହି ମାସ ସଫଳତା ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଅର୍ଥାତ ମନ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ପ୍ରସନ୍ନ ତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ଶ୍ରଦ୍ଧା ର ଭାବ ରହିବ, ତଥା ନିୟମ ପୁର୍ବକ ଆପଣ ତାଙ୍କର ପୂଜା ତଥା ସେବା କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ସମାଜ ରେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରଭୁତ୍ଵ ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ସବୁ ଲୋକ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରଭୁତା ଏବଂ ଶ୍ରେଷ୍ଠତା କୁ ମନ ରେ ସ୍ଵୀକାର କରିବେ, ତଥା ଆପଣଙ୍କୁ ଦ୍ଵାର୍ଦ୍ଧିକ ଆଦର ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଯଶ ମଧ୍ୟ ଦୂର ଦୂର ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବିସ୍ତାର ହେବ ଏବଂ ଅନ୍ୟ ସ୍ରୋତ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଲାଭ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ନବୀନ ଗୃହ ର ପ୍ରାପ୍ତି କିମ୍ବା ସ୍ଥାନ ପରିବର୍ତ୍ତନ ମଧ୍ୟ କରି ପାରନ୍ତି । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ମନୋ କାମନା ମଧ୍ୟ ପୁର୍ଣ୍ଣ ହେବ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ଏବଂ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ଏବଂ ନିଜର ଅଧିକାଂଶ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ଵପୁର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ନିଜର ବୁଦ୍ଧିମତା ଦ୍ଵାରା ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ସମସ୍ତ ଭୌତିକ ସୁଖ ଅର୍ଜିତ କରି ପ୍ରସନ୍ନତା ପୁର୍ବକ ସମୟ କୁ ବ୍ୟତୀତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ଶୁଭ ଫଳ ଦାୟକ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ମହିଳା ବର୍ଗ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ଲାଭ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ତଥା ଆପଣଙ୍କ ସୋଭାଗ୍ୟ ରେ ମଧ୍ୟ ଆଶାତୀତ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କ ସମସ୍ତ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ଵପୁର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ସମୟ ରେ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଏହା ଦ୍ଵାରା ମାନସିକ ରୂପ ରେ ଆପଣ ପୁର୍ଣ୍ଣ ଶାନ୍ତି ତଥା ପ୍ରସନ୍ନତା ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ସରକାର କିମ୍ବା ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରା ରେ ଲାଭ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ ଏବଂ ଜ୍ଞାନ ଅର୍ଜନ ର କ୍ଷେତ୍ର ରେ ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ଉତ୍ସୁକତା ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ମିତ୍ର ତଥା ବନ୍ଧୁ ଜନ ଙ୍କ ସହ ଏହି ସମୟ ରେ ମଧୁର ସମ୍ପର୍କ ରହିବ ଏବଂ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ବାଞ୍ଛିତ ସହଯୋଗ ତଥା ସହାୟତା ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଇଚ୍ଛିତ ଦ୍ରବ୍ୟ ର ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ, ତଥା ପ୍ରସନ୍ନତା ପୁର୍ବକ ଆପଣ ତାହାର ଉପଭୋଗ କରିବେ । ସନ୍ତତି ପକ୍ଷ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ଏବଂ ସମାଜ ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ସମ୍ମାନ ତଥା ପ୍ରତିଷ୍ଠା ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣଙ୍କ ଅଟକି ଥିବା ଶୁଭ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟ ରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ହେବ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ଏବଂ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ବୁଦ୍ଧି ରେ ନିର୍ମଳତା ର ଭାବ ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ । ଏବଂ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରା ରେ ଧନ ଏବଂ ସୁଖ ସାଧନ କୁ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ଆପଣ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଧର୍ମ ର ଅନୁପାଳନ ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ରୁଚିଶୀଳ ରହିବେ ଏବଂ ସମାଜ ତଥା ବନ୍ଧୁ ବର୍ଗ ଙ୍କ ଠାରୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସମ୍ମାନ ଏବଂ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଅର୍ଜିତ କରିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅଶୁଭ ତଥା ଅସୁବିଧା ଉତ୍ପନ୍ନ କରିବା ବାଲା ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ବ୍ୟୟ

ଅଧିକ ମାତ୍ରା ରେ ହେବ, ତଥା ଦୃଷ୍ଟ ମନୁଷ୍ୟ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମିଳା ମିଶା ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ଆପଣ ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରକାର ର କଷ୍ଟ ଅନୁଭୂତି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସବୁ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ପରିଶ୍ରମ କରିବା ପରେ ମଧ୍ୟ ସଫଳତା ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ହିଁ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଧର୍ମ ର ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ଶ୍ରଦ୍ଧା ର ଭାବନା ରହିବ ନାହିଁ ଏବଂ ଧନ ହାନି ର ଯୋଗ ମଧ୍ୟ ବନିବ । ମିତ୍ର ଏବଂ ବନ୍ଧୁ ଜ ସହ ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ବନ୍ଧ ବିଶେଷ ମଧୁର ରହିବ ନାହିଁ ଏବଂ ତାଙ୍କ ଠାରୁ କୌଣସି ମଧ୍ୟ ପ୍ରକାର ର ସୁଖ କିମ୍ବା ସହଯୋଗ ମିଳିବ ନାହିଁ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ଯେଉଁ ମଧ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରାରମ୍ଭ କରିବେ ସେଥିରେ ଆପଣଙ୍କୁ ବ୍ୟବଧାନ ର ସାମନା କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ମାନସିକ ରୂପ ରେ ଆପଣ ଅଶାନ୍ତ ତଥା ଅସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଶତ୍ରୁ ଜ ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଭୟଭୀତ ଏବଂ ଚିନ୍ତିତ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣଙ୍କ ସଙ୍କଳ୍ପ ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟ ରେ ଅପୂର୍ଣ୍ଣ ହିଁ ରହିବ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ଗରମ କିମ୍ବା ପିତ ରେ ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବା କୁ ଥିବା ରୋଗ ରେ କଷ୍ଟ ଅନୁଭୂତି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ରକ୍ତ ବିକାର ର ମଧ୍ୟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଅର୍ଥାତ୍ ଏହି ମାସ ରେ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଏବଂ ସୁରକ୍ଷା ର ପ୍ରତି ସତର୍କ ରହନ୍ତୁ ତଥା ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧିମତା ପୂର୍ବକ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।

ଏହି ମାସ କୁ ଆପଣ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ସୁଖ ଏବଂ ଶାନ୍ତି ପୂର୍ବକ ବ୍ୟତୀତ କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ, ତଥା ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଶାନ୍ତ ତଥା ପ୍ରସନ୍ନଚିତ ରହିବେ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ପରାକ୍ରମ ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ଶତ୍ରୁ ଜ ପରାଜିତ କରିବା ରେ ଆପଣ ସଫଳ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ଆୟ ଶ୍ରୋତ ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ବାସ୍ତିତ ଲାଭ ଅର୍ଜିତ ହେବ । ଫଳତଃ ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ଭଲ ରହିବ । ବ୍ୟାପାର କିମ୍ବା ଚାକିରୀ କୁ ଛାଡ଼ି ଅନ୍ୟ ସାଧନ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଲାଭ ଅର୍ଜନ କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସମସ୍ତ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ, ତଥା ଭାଗ୍ୟ ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ଚିର ପ୍ରତୀକ୍ଷିତ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଏହି ମାସ ରେ ସିଦ୍ଧ ହେବ । ମିତ୍ର ଏବଂ ବନ୍ଧୁ ବର୍ଗ ଜ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମଧୁର ସମ୍ବନ୍ଧ ରହିବ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ସାମ୍ପାରିକ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟ ରେ ସଫଳ ହେବ । ଏହା ଛଡ଼ା ରାଜ୍ୟ ର ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପ୍ରସନ୍ନ ଏବଂ ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ଯଥୋଚିତ ସହଯୋଗ ତଥା ଲାଭ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ଏବଂ ପୁତ୍ର ଜ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ତଥା ସୁଖ ଅର୍ଜିତ କରିବେ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ନବୀନ ବସ୍ତ୍ର କିମ୍ବା ବସ୍ତୁ କୁ ମଧ୍ୟ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସଫଳ ହୋଇ ପାରିବେ । ଏହି ପରି ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ଉତ୍ତମ ଫଳ ଦାୟକ ରହିବ ।

ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ନିଜର ପରାକ୍ରମ ଏବଂ ଉତ୍ସାହ ଦ୍ୱାରା ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରା ରେ ଧନ ଅର୍ଜନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ପରିବାର ଏବଂ ସାମାଜିକ ଜନ ଜ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ଯଥୋଚିତ ମାନ ସମ୍ମାନ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେଉ ଥିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଯଶ ରେ ମଧ୍ୟ ଅଭିବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ବନ୍ଧୁ ଏବଂ ମିତ୍ର ଜ ସହ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ବଢ଼ିବ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ଆଶ୍ରୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ, ତଥା ଏହି ପରିପେକ୍ଷ୍ୟ ରେ ଆପଣ ନିଜର ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବା ରେ ସଫଳ ହେବେ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ମିଷ୍ଟାନ ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଅଧିକ ରୁଚିଶୀଳତା ର ପ୍ରଦର୍ଶନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ଏବଂ ଶାରୀରିକ ବଳ ରେ ପୂର୍ଣ୍ଣ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଶତ୍ରୁ ବର୍ଗ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ନିର୍ବଳ ରହିବେ । ଫଳତଃ ସେ ଆପଣଙ୍କ ଠାରୁ ପରାଜିତ ରହିବେ । ସ୍ତ୍ରୀ ଜ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ସୁଖ ର ପ୍ରାପ୍ତି କରିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ବ୍ୟାପାର ଆଦି କାର୍ଯ୍ୟ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଅତିରିକ୍ତ ଆୟ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସ ରେ ଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଘଟିତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ବାତ ଜନ୍ମ ରୋଗ ରେ କଷ୍ଟ ଅନୁଭୂତି ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରନ୍ତି । ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ କୌଣସି ଏପରି କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ସାମାଜିକ ଅବହେଳା ହେବ, ତଥା ପରେ ଆପଣଙ୍କୁ ପଶ୍ଚାତାପ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଅଗ୍ନି ଦ୍ୱାରା ମଧ୍ୟ ଆପଣ ନ୍ୟୁନାଧିକ ହାନି ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରନ୍ତି । ଅର୍ଥାତ ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭ ଶୁଭ ଫଳ ରେ ଯୁକ୍ତ ହୋଇ ମଧ୍ୟମ ରହିବ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟ ଶୁଭ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ନିଜର ପରାକ୍ରମ ଦ୍ୱାରା ଧନ ଅର୍ଜନ କରିବେ, ତଥା ବିବିଧ ପ୍ରକାର ର ସୁଖ କୁ ଉପଭୋଗ କରିବା ରେ ମଧ୍ୟ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ସମାଜ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଯଶ ତଥା ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ଶ୍ରଦ୍ଧା ର ଭାବନା ରହିବ, ତଥା ବିଧି ପୂର୍ବକ ତାଙ୍କର ପୂଜନ ତଥା ଆଦର କରୁ ଥିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଅନ୍ୟ ଲୋକ ଙ୍କ ଉପକାର କରିବା ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ତପ୍ତ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ସାମାନ୍ୟ ରହିବ ତଥା ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କ ଉଚ୍ଚ ସହଯୋଗ ଏବଂ ମିତ୍ରତା ରହିବ । ବହୁ ଏବଂ ମିତ୍ର ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମଧୁର ସମ୍ବନ୍ଧ ରହିବ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଯଥୋଚିତ ସୁଖ ଏବଂ ସହଯୋଗ ଆପଣଙ୍କୁ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣଙ୍କ ମନୋ କାମନା ମଧ୍ୟ ଏହି ମାସ ରେ ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେବ, ତଥା ଭାଗ୍ୟ ଉଦୟ ସମ୍ବନ୍ଧି କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ମାନସିକ ରୂପ ରେ ପ୍ରସନ୍ନତା ର ଅନୁଭୂତି କରିବେ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ବେଳେ ବେଳେ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ଠଣ୍ଡା କିମ୍ବା ବାତ ରୋଗ ରେ ପୀଡ଼ିତ ହୋଇ ପାରନ୍ତି, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ଦ୍ୱାରା କୌଣସି ଏପରି କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ, ଯାହା ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ ଅନୁତାପ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ସମାଜ ରେ ସମ୍ମାନ ରେ ମଧ୍ୟ କମୀ ଆସିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଅଗ୍ନି ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ହାନି ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରନ୍ତି । ଅର୍ଥାତ ସାବଧାନୀ ଏବଂ ବୁଦ୍ଧିମତା ର ସହ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟତୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ଶୁଭ ଫଳ ର ଅପେକ୍ଷା ଅଶୁଭ ଫଳ ହିଁ ଅଧିକ ଘଟିତ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ଆପଣ ଅନେକ ପ୍ରକାର ର କଷ୍ଟ ଅନୁଭୂତି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ ଏହି ସମୟ ରେ ପ୍ରବଳ ରହିବେ, ଅର୍ଥାତ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣ ଭୟଭୀତ ତଥା ଚିନ୍ତିତ ରହିବେ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଅଶାନ୍ତ ତଥା ଅସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ରେ ନ୍ୟୁନତା ଆସିବ କିମ୍ବା କୌଣସି ଅନ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟ ରହି ଯିବ କିମ୍ବା ବନ୍ଦ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ସାଥେ ସାଥେ କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ରେ କୌଣସି ପ୍ରକାର ର ପରିବର୍ତ୍ତନ ହେବା ର ମଧ୍ୟ ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ସମାଜ ରେ ଅନ୍ୟ ଜନ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ବନ୍ଧ ବିଶେଷ ମଧୁର ରହିବେ ନାହିଁ, ତଥା ପରସ୍ପର ବିବାଦ ଏବଂ ବୈମନସ୍ୟ ର ଭାବ ରହିବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ସାମାଜିକ ମାନ ସମ୍ମାନ ରେ ନ୍ୟୁନତା ଆସିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଧନ ହାନି ର ଯୋଗ ମଧ୍ୟ ବନି ଥାଏ, ତଥା ଶରୀର ରେ କୌଣସି ପ୍ରକାର ର ରୋଗ ମଧ୍ୟ ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଅର୍ଥାତ ସାବଧାନୀ ଏବଂ ବୁଦ୍ଧିମତା ର ସହ ସମୟ କୁ ବ୍ୟତୀତ କରନ୍ତୁ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସ ରେ ଅଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ଏବଂ ପୁତ୍ର ଙ୍କ ସୁଖ ଏବଂ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ କୌଣସି କଷ୍ଟ ହେବ ନାହିଁ । ଏହା ଛଡ଼ା ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ନବୀନ ବସ୍ତ୍ର କିମ୍ବା ଦ୍ରବ୍ୟ କୁ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରନ୍ତି । ଏହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ମାନସିକ ପ୍ରସନ୍ନତା ର ପ୍ରାପ୍ତି କରି ପାରନ୍ତି ।

ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ବୁଦ୍ଧି ରେ ନିର୍ମଳତା ର ଭାବ ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ



ବୁଦ୍ଧିମତା ଦ୍ୱାରା ହିଁ ସଫଳ ହେବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ଅନେକ ପ୍ରକାରର ବ୍ରହ୍ମ ଅର୍ଜନ କରିବାରେ ସମର୍ଥ ହେବେ, ତଥା ପୁତ୍ର ସନ୍ତତିର ପୁଣି ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହି ମାସରେ ଜ୍ଞାନ ଅର୍ଜନରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ରୁଚି ରହିବ, ତଥା ସେଥିରେ ଆପଣ ସଫଳ ମଧ୍ୟ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରଭୃତରେ ଏହି ସମୟରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ ଏବଂ ସବୁ ଲୋକ ଆପଣଙ୍କ ଯୋଗ୍ୟତାକୁ ସ୍ୱୀକାର କରିବେ । ଏହି ମାସରେ ଆପଣଙ୍କ ଅନେକ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ସିଦ୍ଧ ହେବ, ତଥା କେଉଁଠି ଠାରୁ ଶୁଭ ସମାହାର ମଧ୍ୟ ମିଳିବ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ପ୍ରସନ୍ନତା ର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନରେ ଶ୍ରଦ୍ଧା ର ଭାବନା ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ ତଥା ବିଧି ପୂର୍ବକ ଆପଣ ତାଙ୍କର ପୂଜା ତଥା ସେବା କରିବେ । ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ସରକାର କିମ୍ବା ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଠାରୁ ଆପଣ ବାଞ୍ଛିତ ସହଯୋଗ ତଥା ଲାଭ ଅର୍ଜନ କରିବାରେ ମଧ୍ୟ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ସମୟରେ ସମାଜରେ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁଣି ପ୍ରତିଷ୍ଠା ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ମାନସିକ ରୂପରେ ଆପଣ ଶାନ୍ତ ତଥା ପ୍ରସନ୍ନ ରହିବେ ।

ପରନ୍ତୁ ଶୁଭ ଫଳର ସାଥେ ସାଥେ ବେଳେ ବେଳେ ଏହି ମାସରେ ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଘଟିବ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ଗରମ କିମ୍ବା ପିତାରେ ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବାକୁ ଥିବା ରୋଗରେ ଶାରୀରିକ କଷ୍ଟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ରକ୍ତ ବିକାରରୁ ମଧ୍ୟ ପୀଡ଼ିତ ହୋଇ ପାରନ୍ତି । ଅର୍ଥାତ ନିଜର ସମସ୍ତ ସାମ୍ପାଦିକ କାର୍ଯ୍ୟ କଳାପ କୁ କରିବାରେ ସତର୍କତା ର ଅନୁପାଳନ କରନ୍ତୁ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଅନାବଶ୍ୟକ ସମସ୍ୟା ଉତ୍ପନ୍ନ ନ ହେବ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟତୟ ଅଶୁଭ ହିଁ ରହିବ, ପରନ୍ତୁ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରାରେ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଘଟିବ ହେବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ଶରୀରରେ ଦୁର୍ବଳତା ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ । ଏହି ମାସରେ ଆପଣଙ୍କ ଶତ୍ରୁ ମଧ୍ୟ ପ୍ରବଳ ରହିବେ, ଫଳତଃ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସେ ସମସ୍ୟା ଉତ୍ପନ୍ନ କରିବେ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ବିକ୍ରନ୍ତ ତଥା ଭୟଭୀତ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଘରେ ଏହି ସମୟରେ କୌଣସି ପ୍ରକାରର ଚୋରୀ ମଧ୍ୟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ସାଥେ ସାଥେ ଚାକିରୀ କିମ୍ବା ବ୍ୟବସାୟରେ ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗଙ୍କ ଆଜ୍ଞାକୁ ପାଳନ କରନ୍ତୁ ତଥା ତାଙ୍କର ଉପେକ୍ଷା ନ କରନ୍ତୁ, ଅନ୍ୟଥା କୌଣସି ପ୍ରକାରର ବନ୍ଧୁ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରନ୍ତି । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରାରେ ହିଁ ସଫଳ ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଧନର ବ୍ୟୟ ମଧ୍ୟ ଅଧିକ ମାତ୍ରାରେ ରହିବ । ଅର୍ଥାତ ଆର୍ଥିକ ଛୁଟି କମଜୋର ରହିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣ କୌଣସି ଏପରି କାର୍ଯ୍ୟକୁ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ପରେ ଅନୁତାପ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ, ତଥା ସମାଜରେ ସମ୍ମାନରେ ମଧ୍ୟ ନ୍ୟୁନତା ଆସିବ । ମିତ୍ର ଏବଂ ବନ୍ଧୁ ବର୍ଗଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ବନ୍ଧରେ ମଧୁରତା ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା କିଛି ନା କିଛି ବିବାଦ ଚାଲି ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ଇଚ୍ଛା ମଧ୍ୟ ଏହି ମାସରେ ଅପୂର୍ଣ୍ଣ ରହିବ । ଅର୍ଥାତ ବୁଦ୍ଧିମତା ଏବଂ ସାବଧାନତା ର ସହ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟକୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବା ଦରକାର ।

ପରନ୍ତୁ ଅଶୁଭ ଫଳର ସାଥେ ସାଥେ ସମୟ ସମୟରେ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଘଟିବ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ପୁଣି ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ସାଥେ ସାଥେ ନିଜର ବୁଦ୍ଧିମତା ଦ୍ୱାରା ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରାରେ ଧନ ଅର୍ଜନ ମଧ୍ୟ କରିବେ । ଏହି ପରି ଆପଣ ମଧ୍ୟମ ରୂପରେ ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବାରେ ସଫଳ ହୋଇ ପାରିବେ, ତଥା ସମାଜରେ ମଧ୍ୟ ନ୍ୟୁନାଧିକ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଅର୍ଜିତ କରିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବିଶେଷ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ତଥା ବନ୍ଧୁ ବର୍ଗଙ୍କ ଠାରୁ କଷ୍ଟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ଅଥବା ଆପଣଙ୍କୁ କୌଣସି ପ୍ରକାରର କଷ୍ଟ ଅନୁଭୂତି ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ ମଧ୍ୟ ଏହି ମାସରେ ବଳ ବାନ ରହିବେ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ଭୟଭୀତ ତଥା ବିକ୍ରନ୍ତ ରହିବେ, ତଥା ତାଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସମସ୍ୟା ମଧ୍ୟ ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ଉତ୍ସାହର ଭାବର ନ୍ୟୁନତା ରହିବ, ତଥା ଧନର ବ୍ୟୟ ମଧ୍ୟ ଅଧିକ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ଆର୍ଥିକ ରୂପରେ ମଧ୍ୟ ହଇରାଣ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଲୋଭର ଭାବ ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ଅଧିକତା ଦୃଷ୍ଟି

ଗୋଟିଏ ହେବ । ବହୁ ଏବଂ ମିତ୍ର ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ବିଶେଷ ଭଲ ସମ୍ବନ୍ଧ ରହିବ ନାହିଁ ଏବଂ ପରସ୍ପର ମନ ମୁତାବକ ରହିବ ତଥା ଏହି ସମୟରେ ମିତ୍ର ମଧ୍ୟ ଶତ୍ରୁ ଙ୍କ ପରି ବ୍ୟବହାର କରିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ପାରିବାରିକ ତଥା ସାମାଜିକ ଜନ ଙ୍କ ସହ ମଧ୍ୟ ପରସ୍ପର ବିବାଦ ହେଉ ଥିବ । ଅର୍ଥାତ ବିଧି ପୂର୍ବକ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କଳାପ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବା ଦରକାର ।

ପରନ୍ତୁ ଅଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ବେଳେ ବେଳେ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଘଟିତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ସୁଖ ଏବଂ ଲାଭ ଅର୍ଜିତ କରିବାରେ ସଫଳ ହେବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଅଧିକାଂଶ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ନିଜର ବୁଦ୍ଧି ବଳ ଦ୍ୱାରା ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଏହି ମାସରେ ଆପଣ ସାମାନ୍ୟ ଧନ ଅର୍ଜନ, ତଥା ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବାରେ ମଧ୍ୟ ସମର୍ଥ ରହିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅଶୁଭ ଫଳ ଅଧିକ ମାତ୍ରାରେ ପ୍ରଦାନ କରିବ, ତଥା ଶୁଭ ଫଳ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରାରେ ହିଁ ଘଟିତ ହେବ । ଏହି ସମୟରେ ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ ଠାରୁ ଆପଣ ଚିନ୍ତିତ ଏବଂ ଭୟଭୀତ ରହିବେ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସେ ଅନେକ ଅନାବଶ୍ୟକ ସମସ୍ୟା ଉତ୍ପନ୍ନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସରେ ଆପଣଙ୍କ ଘରେ ଡୋରୀ ଆଦି ମଧ୍ୟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି, ତଥା ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବାରେ ବାଧା ବିଘ୍ନ ଆସୁ ଥିବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ଛୁଟି ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ ଏବଂ ଧନର ବ୍ୟୟ ମଧ୍ୟ ଅଧିକ ମାତ୍ରାରେ ହେଉ ଥିବ । ଧର୍ମର ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନରେ ବିଶେଷ ଶ୍ରଦ୍ଧା ର ଭାବ ରହିବ ନାହିଁ ଏବଂ ଦେବତା ତଥା ବ୍ରାହ୍ମଣ ଙ୍କ ପ୍ରତି ଉପେକ୍ଷା ର ଭାବ ରଖିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଖରାବ ରହିବ ଏବଂ ଶରୀରରେ ଦୁର୍ବଳତା ମଧ୍ୟ ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ, ତଥା ଆପଣ ଅନେକ ପ୍ରକାରର ଶାରୀରିକ କଷ୍ଟ ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରନ୍ତି । ଏହି ସମୟରେ ଦୂର ସମୀପର କୌଣସି ଯାତ୍ରା ମଧ୍ୟ କରି ପାରନ୍ତି । ସାଥେ ସାଥେ ସାଂସାରିକ କାର୍ଯ୍ୟରେ ଆପଣ କଷ୍ଟ ଅନୁଭୂତି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ମକଦ୍ଦମା ଆଦିରେ ମଧ୍ୟ ବ୍ୟୟାଧିକ୍ୟର ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ଅର୍ଥାତ ମାନସିକ ରୂପେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଅଶାନ୍ତ ରହିବେ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସରେ ଅଶୁଭ ଫଳର ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ଏବଂ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବାରେ ସଫଳ ରହିବେ, ତଥା ବୁଦ୍ଧିରେ ମଧ୍ୟ ନିର୍ମଳତା ର ଭାବ ରହିବ ଏବଂ ନିଜର ବୁଦ୍ଧିମତା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରାରେ ଧନ ଅର୍ଜନ କରିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଧର୍ମର ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଅନୁପାଳନ କରିବେ ଏବଂ ସମାଜରେ ଯଥେଷ୍ଟ ସମ୍ମାନ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ଶୁଭ ଏବଂ ସୋଭାଗ୍ୟ ବର୍ଦ୍ଧକ ରହିବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରାରେ ଲାଭ ଅର୍ଜନ କରିବାରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ଛୁଟି ସୁଦୃଢ଼ ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପୂର୍ଣ୍ଣ ପ୍ରସନ୍ନ ଏବଂ ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ଯଥୋଚିତ ସମ୍ମାନ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଫଳତଃ ନିଜର ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସିଦ୍ଧ କରିବାରେ ଆପଣ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ମାସରେ ଆପଣଙ୍କ ଘରେ କୌଣସି ଧାର୍ମିକ କାର୍ଯ୍ୟକ୍ରମ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ସନ୍ତତି ପକ୍ଷରୁ ଆପଣ ନିଶ୍ଚିତ ରହିବେ ଏବଂ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଯଥୋଚିତ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନରେ ପୂର୍ଣ୍ଣ ଶ୍ରଦ୍ଧା ର ଭାବନା ରହିବ, ତଥା ବିଧି ପୂର୍ବକ ଆପଣ ତାଙ୍କର ପୂଜା ତଥା ସେବା କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ସମାଜରେ ଆପଣଙ୍କ ଯଶରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଏହି ମାସରେ ଆପଣଙ୍କ ଭାଗ୍ୟ ଉଦୟ ସମ୍ବନ୍ଧିତ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ବୁଦ୍ଧିରେ ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟରେ ନିର୍ମଳତା ର ଭାବ ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ, ତଥା ଦୂର ସମୀପର ଲାଭଦାୟକ ଯାତ୍ରା ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ବହୁ ଏବଂ ମିତ୍ର ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମଧୁର ସମ୍ବନ୍ଧ ରହିବ, ତଥା ଜଣେ ଅନ୍ୟ କୁ ବାଞ୍ଛିତ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହି ପରି ସମାଜରେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତିଷ୍ଠାରେ ନିତ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେଉ ଥିବ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସରେ ଆପଣ ଶ୍ରେଷ୍ଠ ଜନ ତଥା ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ସହଯୋଗ ଅର୍ଜିତ କରିବେ, ତଥା କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ଉନ୍ନତି ହେବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ନବୀନ ବସ୍ତ୍ର କିମ୍ବା ବସ୍ତୁ କୁ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବାରେ ସ

ଫଳତା ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ସୁଖ ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନତା ପୂର୍ବକ ନିଜର ସମୟ ବ୍ୟତୀତ କରିବେ ।



ଫଳାଦେଶ - 2024

ଏହି ବର୍ଷ ବୃହସ୍ପତି ଦ୍ୱିତୀୟ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଦିଗ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଶୁଭ । ଆପଣଙ୍କର ପୁତ୍ର ସନ୍ତାନ ଲାଭର ସୁଯୋଗ ଅଛି । ଅତିରିକ୍ତ ବ୍ୟୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଚିନ୍ତାର କାରଣ ହୋଇପାରେ । ସାମାଜିକ ମର୍ଯ୍ୟଦା ବୃଦ୍ଧି ପାଇବ ଏବଂ ପାରିବାରିକ ବ୍ୟକ୍ତିମାନଙ୍କ ନିକଟରୁ ସମ୍ମାନ ପାଇବେ । ଆପଣ ଧର୍ମଶାସ୍ତ୍ର ପ୍ରତି ଆଗ୍ରହୀ ହୋଇ ଅନେକ ଧର୍ମିୟ ଅନୁଷ୍ଠାନର ଆୟୋଜନ କରିବେ । ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କର ସମ୍ପତ୍ତି ଓ ବ୍ୟାବସାୟିକ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଲାଭର ସୁଯୋଗ ଅଛି । କଥୋପକଥନ ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ଲୋକଙ୍କୁ ପ୍ରଭାବିତ କରିବେ । ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ଗ୍ରହ ଓ ଦଶରା ଅଶୁଭ ଫଳାଫଳ ଯୋଗୁଁ ଆପଣ ଚିନ୍ତାଗ୍ରସ୍ତ ହୋଇପଡ଼ିବେ ।

ଶନି ଏକାଦଶ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କର ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ରାଜନୀତି, ବ୍ୟବସାୟ ତଥା କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଉନ୍ନତି କରିବାର ସୁଯୋଗ ପାଇବେ । ଉପାର୍ଜନ ବୃଦ୍ଧି ପାଇବା ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ଅର୍ଥନୈତିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ଘଟିବ । ସମାଜରେ ଆପଣ ସମ୍ମାନିତ ବ୍ୟକ୍ତି ହିସାବରେ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ହେବେ । ସନ୍ତାନ ମାନଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟପ୍ରତି ଦୃଷ୍ଟି ଦିଅନ୍ତୁ ଏବଂ ଯତ୍ନବାନ ହୁଅନ୍ତୁ ।

ରାହୁ ଏକାଦଶ ସ୍ଥାନ ଏବଂ କେତୁ ଷଷ୍ଠ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ସାଧାରଣ ଭାବେ ଶୁଭ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ଦୈନିକ ଓ ମାନସିକ ଉଭୟ ଦିଗରୁ ସୁସ୍ଥ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ବିଦେଶ ଯାତ୍ରାର ଯୋଗାଯୋଗ ହୋଇପାରେ । ଫଳରେ ଅଧିକ ବ୍ୟୟର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତିର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । କେତୁ ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣ ଶତ୍ରୁ ଦମନର ସମ୍ଭାବନା ହେବେ । ଆପଣଙ୍କର ସାମାଜିକ ମର୍ଯ୍ୟଦା ବୃଦ୍ଧି ପାଇବ ।

ଇସ ବର୍ଷ ରାହୁ କୀ ମହାଦଶା ମେଂ ବୁଧ କୀ ଅନ୍ତର ରହେगा । ବୁଧ ଦ୍ୱାଦଶ ଭାବ ମେଂ କୁମ୍ଭ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ଜବକି ରାହୁ ପ୍ରଥମ ଭାବ ମେଂ ମୀନ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟ ରୂପ ରେ ଭଲ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ସକରାତ୍ମକ ପରିଣାମ ମିଳିବ । ତଥା କିଛି ଲକ୍ଷ୍ମିତ କାର୍ଯ୍ୟ ତଥା ଯୋଜନା ମଧ୍ୟ ପୁର୍ଣ୍ଣ ହେବ । ଆର୍ଥିକ ଦୃଷ୍ଟି ରେ ସମୟ ଅନୁକୂଳ ରହିବ । ତଥା ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରା ରେ ଧନ ଅର୍ଜନ ହେବ ଏବଂ କିଛି ଆୟ ସ୍ରୋତ ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ବ୍ୟାପାର ରେ ମଧ୍ୟ ଉନ୍ନତି ର ଯୋଗ ବନିବ । ଯଦି ଡାକିରା ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ପଦ ଉନ୍ନତି ର ସମ୍ଭାବନା ବନିବ । ତଥା ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ଲକ୍ଷ୍ମିତ ସ୍ଥାନାନ୍ତରଣ ର ମଧ୍ୟ ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ପାରିବାରିକ ସଦସ୍ୟ ଙ୍କ ବ୍ୟବହାର ସହଯୋଗ ପୁର୍ଣ୍ଣ ରହିବ । ତଥା ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ପ୍ରେମ ପୁର୍ବକ ରହିବେ । ମିତ୍ର ବର୍ଗ ଙ୍କ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ଏପରି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ବାଞ୍ଛିତ ସୁଖ ଏବଂ ସହଯୋଗ ର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ତଥା ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ବିଶ୍ୱାସନୀୟତା ର ଭାବ ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । କିନ୍ତୁ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ର ଏପରି ସମୟ ରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ଧ୍ୟାନ ରଖିବା ଦରକାର । ଏହି ପରି ଶୁଭ ସମୟ କୁ ଆପଣଙ୍କୁ ଯତ୍ନ ପୁର୍ବକ ସହଯୋଗ କରିବା ଦରକାର ।

ମାସିକ ପକ୍ଷାଦେଶ

ଏହି ମାସ କୁ ଆପଣ ସୁଖ ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନତା ପୂର୍ବକ ବ୍ୟତୀତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ରେ ଉନ୍ନତି ହେବ, ତଥା ସମାଜ ରେ ଆପଣ ଯଥୋଚିତ ଆଦର ଏବଂ ସମ୍ମାନ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁଣି ସହଯୋଗ ତଥା ସମ୍ମାନ ମିଳିବ ଏବଂ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣ ବାଞ୍ଛିତ ଲାଭ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପୁଣି ପ୍ରସନ୍ନ ଏବଂ ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ମିତ୍ର ଏବଂ ବନ୍ଧୁ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମଧୁର ସମ୍ବନ୍ଧ ରହିବ ଏବଂ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଇଚ୍ଛିତ ସହଯୋଗ ର ଆପଣଙ୍କୁ ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ଅଧିକାଂଶ ଶୁଭ କାର୍ଯ୍ୟ ଏହି ମାସ ରେ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଙ୍କ ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ଶ୍ରଦ୍ଧା ରହିବ, ତଥା ବିଧି ପୂର୍ବକ ଆପଣ ତାଙ୍କର ସେବା ତଥା ପୂଜା କରିବେ । ସନତ୍ତ ପକ୍ଷ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ନିଶ୍ଚିନ୍ତ ରହିବେ ଏବଂ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣ ବାଞ୍ଛିତ ସୁଖ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ବନ୍ଧୁ ଏବଂ ମିତ୍ର ଙ୍କ ସହ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣଙ୍କ ପୂର୍ବ ସଙ୍କଳ୍ପ ମଧ୍ୟ ଏହି ମାସ ରେ ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଶାନ୍ତ ତଥା ପ୍ରସନ୍ନ ରହିବେ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ତଥା ମହିଳା ସହଯୋଗୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ପୁଣି ସହଯୋଗ ତଥା ଲାଭ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ, ତଥା ଧର୍ମ ର ଅନୁପାଳନ ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ତପ୍ତ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ କୌଣସି ଧାର୍ମିକ ଉତ୍ସବ ର ଆୟୋଜନ ମଧ୍ୟ କରି ପାରନ୍ତି ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟତୟ ଶୁଭ ଫଳ ଦାୟକ ରହିବ ପରନ୍ତୁ ନ୍ୟୁନାଧିକ ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ବର୍ଗ ଠାରୁ ପୁଣି ଲାଭ ତଥା ସହଯୋଗ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ଭାଗ୍ୟ ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କ ସମସ୍ତ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ସମୟ ରେ ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେବ । ସରକାର କିମ୍ବା ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଲାଭ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ଠାକ ହିଁ ରହିବ, ତଥା ମନ ରେ ମଧ୍ୟ ଶାନ୍ତି ରହିବ । ଅଧ୍ୟୟନ ର ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ରୁଚି ଉତ୍ତମ ହେବ ତଥା ସେଥିରେ ଆପଣ ସଫଳତା ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ମିତ୍ର ଏବଂ ସମ୍ପର୍କୀ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମଧୁର ସମ୍ବନ୍ଧ ରହିବ ଏବଂ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ଇଚ୍ଛିତ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେଉ ଥିବ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ କୁ ମନୋବାଞ୍ଛିତ ଦ୍ରବ୍ୟ ପଦାର୍ଥ ର ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ଏହା ଛଡ଼ା ବନ୍ଧୁ ବର୍ଗ ରେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ବିଗତ ଅସଫଳ ଆଶା ରେ ମଧ୍ୟ ସଫଳତା ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସ ରେ ଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ବେଳେ ବେଳେ ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଘଟିତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ଗରମ କିମ୍ବା ପିତ ରୋଗ ରେ ଶାରୀରିକ କଷ୍ଟ ର ଅନୁଭୂତି କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ରୂପ ର ବିକାର ର ମଧ୍ୟ ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ଅର୍ଥାତ ଏହି ସମୟ ରେ ଶାରୀରିକ ସୁରକ୍ଷା ପ୍ରତି ପୁଣି ସାବଧାନ ରହନ୍ତୁ ତଥା ବୃଦ୍ଧମତା ପୂର୍ବକ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅଧିକ ଅଶୁଭ ତଥା ଶୁଭ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଧନ ବ୍ୟୟ ଅଧିକ ମାତ୍ରା ରେ ହେବ । ତଥା ଦୁଷ୍ଟ ଜନ ଙ୍କ ସଙ୍ଗେ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ, ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣ କଷ୍ଟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ମଧ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ, ଯାହା ଦ୍ଵାରା ମନ ରେ ଅଶାନ୍ତି ର ଭାବ ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଶରୀର ରେ ଦୁର୍ବଳତା ରହିବ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ କଠିନ ପରିଶ୍ରମ କରିବା ପରେ ମଧ୍ୟ ସଫଳ ହେବେ ନାହିଁ । ଏହି ମାସ

ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ବିଶେଷ ଶ୍ରଦ୍ଧା ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣ ଉପେକ୍ଷା ର ଭାବ ରଖିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାର ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ଧନ ହାନି ହେଉ ଥିବ । ଏହି ସମୟରେ ମିତ୍ର ଏବଂ ବନ୍ଧୁଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ଭଲ ସମ୍ପର୍କ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ପରସ୍ପର ମନ ମୁଗାବ ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ମଧ୍ୟ ଅନାବଶ୍ୟକ ବ୍ୟବଧାନ ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଭୟଭୀତ ଏବଂ ଚିନ୍ତିତ ରହିବେ, ତଥା ଯେଉଁ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ପ୍ରାରମ୍ଭ କରିବେ, ସେଥିରେ ଅସଫଳତା ମିଳିବ । ଅର୍ଥାତ ବିଧି ପୂର୍ବକ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସରେ ଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଘଟିତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ଏବଂ ପୁତ୍ରଙ୍କ ଠାରୁ ବାଞ୍ଛିତ ସହଯୋଗ ଅର୍ଜିତ କରିବେ, ତଥା ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ନବୀନ ବସ୍ତ୍ର କିମ୍ବା ଦ୍ରବ୍ୟ ଆଦି କୁ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରନ୍ତି । ଏହି ପରି ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭା ଶୁଭ ଫଳରେ ସୁକ୍ତ ହୋଇ ବ୍ୟତୀତ ହେବ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟତୟ ଶୁଭ ଫଳ ପ୍ରଦାନ କରିବା ବାଲା ରହିବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ, ତଥା ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଶାନ୍ତ ତଥା ପ୍ରସନ୍ନ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପରାକ୍ରମରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ କୁ ପରାଜିତ କରିବାରେ ଆପଣ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ଲାଭ ମାର୍ଗ ପ୍ରଶସ୍ତ ରହିବ ଅର୍ଥାତ ଆର୍ଥିକ କ୍ଷିତି ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ସୁଦୃଢ଼ ରହିବ । ଚାକିରୀ କିମ୍ବା ବ୍ୟାପାର କୁ ଛାଡ଼ି ଆପଣ ଅନ୍ୟ ସ୍ତ୍ରୋତ ରୁ ମଧ୍ୟ ଲାଭ ଅର୍ଜନ କରିବାରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ଭାଗ୍ୟ ଉଦୟ ସମ୍ପନ୍ନି କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ ଏବଂ କୌଣସି ଏପରି ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ସିଦ୍ଧ ହେବ । ଯାହାର ଆପଣ ବହୁତ ସମୟ ଧରି ପ୍ରତୀକ୍ଷା କରି ଥିଲେ । ବନ୍ଧୁ ଏବଂ ମିତ୍ରଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମଧୁର ସମ୍ପର୍କ ରହିବ ଏବଂ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହି ସମୟରେ ସାମ୍ବାରିକ କାର୍ଯ୍ୟରେ ଆପଣଙ୍କୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସଫଳତା ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ତଥା ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପ୍ରସନ୍ନ ଏବଂ ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତିଷ୍ଠାରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ସବୁ ଲୋକ ଆପଣଙ୍କ ହାର୍ଦ୍ଦିକ ସମ୍ମାନ କରିବେ ।

ପରନ୍ତୁ ଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣ ସମୟ ସମୟରେ ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ବାତ ଜନ୍ମ ରୋଗରେ କଷ୍ଟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ଏବଂ ଜଣା କିମ୍ବା ଅଜଣାରେ କୌଣସି ଏପରି କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ସାମାଜିକ ପ୍ରତିଷ୍ଠାରେ ନ୍ୟୁନତା ଆସିବ, ତଥା ଆପଣଙ୍କୁ ଏଥି ପାଇଁ ପଶ୍ଚାତାପ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଅଗ୍ନି ଆଦି ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ନ୍ୟୁନାଧିକ କ୍ଷତି ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରନ୍ତି । ଅର୍ଥାତ ସାବଧାନୀ ପୂର୍ବକ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କଳାପ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।

ଏହି ମାସରେ ଆପଣ ଅଶୁଭ ଫଳ ର ଅପେକ୍ଷା ଶୁଭ ଫଳ ଅଧିକ ମାତ୍ରାରେ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବାରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ନିଜର ଉତ୍ସାହ ଦ୍ୱାରା ଧନ ଅର୍ଜନ କରିବେ, ତଥା ନିଜର ଆର୍ଥିକ କ୍ଷିତି କୁ ସୁଦୃଢ଼ କରିବାରେ ସକ୍ଷମ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ସାମାଜିକ ଜନଙ୍କ ସହ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ଯଶ ମଧ୍ୟ ଦୂର ଦୂର ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବିସ୍ତାର ହେବ । ମିତ୍ର ଏବଂ ବନ୍ଧୁ ବର୍ଗଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣ ଯଥୋଚିତ ସମ୍ମାନ ଅର୍ଜିତ କରିବେ ଏବଂ ତାଙ୍କୁ ନିଜର ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରୁ ଥିବେ । ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ଆଶ୍ୱସ୍ତ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରାରେ ଲାଭ ଅର୍ଜିତ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସରେ ମିଷ୍ଟାନ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନରେ ବିଶେଷ ରୁଚି ରହିବ, ତଥା ଆପଣ ପ୍ରସନ୍ନତା ପୂର୍ବକ ଚାହାର ଉପଭୋଗ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ସାମାନ୍ୟ ରହିବ, ତଥା ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ପ୍ରସନ୍ନ ହିଁ ରହିବେ । ଏହି ମାସରେ ଆପଣ ଶତ୍ରୁଙ୍କ ଠାରୁ ବିଜୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବାରେ ମଧ୍ୟ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ବ୍ୟାପାର ଆଦି କାର୍ଯ୍ୟ ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ଲାଭ ତଥା ଧନ ଅର୍ଜିତ କରିବାରେ ସଫଳ ରହିବେ ।

ପରନ୍ତୁ ଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ବେଳେ ବେଳେ ଏହି ମାସରେ ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଘଟିତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ଶୀତ କିମ୍ବା ବାତ ଜନ୍ମ ରୋଗରେ ଶାରୀରିକ ରୂପରେ କଷ୍ଟ ଅନୁଭୂତି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ବୃଦ୍ଧି କୌଣସି ଏପରି କାର୍ଯ୍ୟ କୁ

କରିବା ପାଇଁ ଉଦ୍ୟତ ହେବ, ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କ ସାମାଜିକ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଖସିବ ଏବଂ ପରେ ଏଥି ପାଇଁ ଆପଣ ଅନୁତାପ କରିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଅଗ୍ନି ଦ୍ଵାରା ମଧ୍ୟ ଆପଣ କିଛିତ ଧନ ହାନି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ଅର୍ଥାତ ବୃଦ୍ଧିମତା ପୂର୍ବକ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବା ଦରକାର ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ନିଜର ପରାକ୍ରମ ଦ୍ଵାରା ଧନ ଅର୍ଜନ କରିବେ, ତଥା ବିବିଧ ପ୍ରକାର ର ସୁଖ ର ଉପଭୋଗ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ସମାଜ ରେ ସବୁ ଲୋକ ଆପଣଙ୍କୁ ହାର୍ଦ୍ଦିକ ସମ୍ମାନ ତଥା ଆଦର ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ଶ୍ରଦ୍ଧା ର ଭାବନା ରହିବ, ତ ଥା ବିଧି ପୂର୍ବକ ଆପଣ ତାଙ୍କର ପୂଜା ତଥା ସେବା କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଅନ୍ୟ ଲୋକ ଙ୍କ ଉପକାର ପାଇଁ ମଧ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟ କରିବା ରେ ତପ୍ତ ରହିବେ । ଶାରୀରିକ ରୂପ ରେ ଆପଣ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସୁସ୍ଥ ରହିବେ, ତଥା ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଠାରୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ତଥା ଲାଭ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହା ଦ୍ଵାରା ସମାଜ ରେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଏହି ମାସ ରେ ବନ୍ଧୁ ତଥା ମିତ୍ର ବର୍ଗ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ତଥା ଆପଣ ମଧ୍ୟ ତାଙ୍କୁ ଇଚ୍ଛିତ ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ନିଜର ସଙ୍କଳ୍ପ ତଥା ମାନସିକ ବିଫାର କୁ ଭଲ ଭାବେ ଦେବା ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ସଫଳ ସିଦ୍ଧ ହେବେ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ମାନସିକ ରୂପ ରେ ସବୁକ୍ଷ୍ମ ତଥା ପ୍ରସନ୍ନ ରହିବେ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ଏବଂ ପୁତ୍ର ଙ୍କ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ନବୀନ ବସ୍ତ୍ର କିମ୍ବା ଦ୍ରବ୍ୟ ଆଦି ମଧ୍ୟ ଅର୍ଜିତ କରିବେ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ଶୁଭ ଫଳ ଦାୟକ ରହିବ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟତୟ ଅଶୁଭ ହିଁ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ, ତ ଥା ଶରୀର ରେ ଦୁର୍ବଳତା ରହିବ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶତ୍ରୁ ପ୍ରବଳ ରହିବେ, ଅର୍ଥାତ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଉତ୍ସର୍ଗୀତ ତଥା ଚିନ୍ତିତ ରହିବେ, ଯାହା ଦ୍ଵାରା ମାନସିକ ରୂପ ରେ ଆପଣ ଅଶାନ୍ତ ତଥା ଉଦ୍‌ବିଗ୍ନ ରହିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଘରେ କୌଣସି ପ୍ରକାର ର ଚୋରା ମଧ୍ୟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଅର୍ଥାତ ସାବଧାନ ରହିବା ଦରକାର । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ବ୍ୟାପାର କିମ୍ବା ବାକିରୀ ଆଦି କ୍ଷେତ୍ର ରେ ଶିଥିଳତା ରହିବ, ତଥା ଅନେକ ଅନାବଶ୍ୟକ ବାଧା ବିଘ୍ନ ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ କୌଣସି କାର୍ଯ୍ୟ ପରିବର୍ତ୍ତନ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି କିମ୍ବା ଅଟକି ମଧ୍ୟ ଯାଇ ପାରେ । ସମାଜ ରେ ଅନ୍ୟ ଜନ ଙ୍କ ସହ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ପରସ୍ପର ବିବାଦ ତଥା ସଂଘର୍ଷ ହେଉ ଥିବ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ମାନ ରେ ମଧ୍ୟ ନ୍ୟୁନତା ଆସିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଧନ ହାନି ର ମଧ୍ୟ ସମ୍ଭାବନା ରହିବ ଏବଂ ଶରୀର ରେ କୌଣସି ରୋଗ ମଧ୍ୟ ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ଗରମ କିମ୍ବା ପିତ ରୁ ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବାକୁ ଥିବା ରୋଗ ରେ ପୀଡ଼ିତ ରହିବେ, ତଥା କୌଣସି ଦୁର୍ଘଟଣା ଆଦି ରେ ରୂପିର ବିକାର ମଧ୍ୟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି ଅର୍ଥାତ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ସାବଧାନୀ ପୂର୍ବକ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ତଥା ଶାରୀରିକ ସୁରକ୍ଷା ପ୍ରତି ବିଶେଷ ଧ୍ୟାନ ରଖନ୍ତୁ ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଅନାବଶ୍ୟକ ସମସ୍ୟା ଉତ୍ପନ୍ନ ନ ହେବ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଶୁଭ ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନତା ପ୍ରଦାନ କରିବା ବାଲା ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ବୃଦ୍ଧି ରେ ନିର୍ମଳତା ର ଭାବ ର ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ସମସ୍ତ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ବୃଦ୍ଧିମତା ଦ୍ଵାରା ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ଅନେକ ପ୍ରକାର ର ଦ୍ରବ୍ୟ ଲାଭ ଅର୍ଜିତ କରିବେ ଏବଂ ପୁତ୍ର ସନ୍ତତି ରେ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଜ୍ଞାନ ଅର୍ଜନ ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ରୁଚି ରହିବ, ତଥା ଜ୍ଞାନ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ଆପଣ ସଫଳ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରଭୁତ୍ଵ ରେ



ଏହି ମାସ ରେ ବୃଷି ହେବ ତଥା ସବୁ ଲୋକ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରଭୃତୀ ତଥା ଶ୍ରେଷ୍ଠତା କୁ ସ୍ୱୀକାର କରିବେ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ହାର୍ଦ୍ଦିକ ସମ୍ମାନ ମଧ୍ୟ କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଅନେକ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ ଏବଂ କେଉଁଠି ଠାରୁ କୌଣସି ଶୁଭ ସମାବେଶ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ପ୍ରସନ୍ନତା ହେବ । ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ଶ୍ରଦ୍ଧା ର ଭାବନା ରହିବ, ତଥା ନିୟମ ପୂର୍ବକ ଆପଣ ତାଙ୍କର ପୂଜା ତଥା ସେବା କରିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ସରକାର ଏବଂ ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ବାଞ୍ଛିତ ଲାଭ ଅର୍ଜିତ କରିବେ, ତଥା ସମାଜ ରେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ନିଜର ବୃଦ୍ଧି ବୃତ୍ତରତା ଦ୍ୱାରା ପ୍ରଭୃତ ମାତ୍ରା ରେ ଧନ ଅର୍ଜନ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ପରି ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ତଥା ସୁଖ ପ୍ରଦାନ କରିବା ବାଲା ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ମାନସିକ ରୂପ ରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ଶାନ୍ତ ତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟତୟ ଅଶୁଭ ହିଁ ରହିବ । ତଥାପି ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଘଟିତ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ ଅର୍ଥାତ ଶରୀର ରେ ଦୁର୍ବଳତା ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ଶତ୍ରୁ ମଧ୍ୟ ଏହି ମାସ ରେ ପ୍ରବଳ ରହିବେ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସମୟ ସମୟ ରେ ସମସ୍ୟା ଉତ୍ପନ୍ନ କରିବେ । ଅର୍ଥାତ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣ ଭୟଭୀତ ତଥା ଚିନ୍ତିତ ରହିବେ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଅଶାନ୍ତ ରହିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଘରେ କୌଣସି ପ୍ରକାର ର ଦୋରା ମଧ୍ୟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି ଅର୍ଥାତ ସାବଧାନ ରହିବା ଦରକାର । ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଠାରୁ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ କରିବା ଦରକାର ତଥା ବିନମ୍ରତା ପୂର୍ବକ ତାଙ୍କର ଆଜ୍ଞା କୁ ପାଳନ କରିବା ଦରକାର, ଅନ୍ୟଥା ଉପେକ୍ଷା ହେବା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଦକ୍ଷିତ କରା ଯାଇ ପାରେ । ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ହିଁ ସଫଳ ହେବ ଏବଂ ଧନ ର ବ୍ୟୟ ମଧ୍ୟ ଅଧିକ ରହିବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ମଧ୍ୟ କମଜୋର ହେବ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ କୌଣସି ଏପରି କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ, ଯାହା ପାଇଁ ପରେ ଆପଣଙ୍କୁ ପଶ୍ଚାତପ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ମିତ୍ର ଏବଂ ସମ୍ପୃକ୍ତ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ଭଲ ସମ୍ପର୍କ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ପରସ୍ପର ତନାବ ର ବାତାବରଣ ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ସମାଜ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଉପେକ୍ଷିତ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣଙ୍କ ମନୋ କାମନା ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟ ରେ ସଫଳ ହେବ ନାହିଁ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସ ରେ ଅଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କୁ ବେଳେ ବେଳେ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ସୁଖ ଏବଂ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଅତ୍ୟନ୍ତ ପରିଶ୍ରମ ଏବଂ ବୃଦ୍ଧି ବଳ ଦ୍ୱାରା ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଏହି ପରି ଆପଣ ସାମାନ୍ୟ ଧନ ଅର୍ଜନ ଏବଂ ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ମଧ୍ୟ ସଫଳ ରହିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବିଶେଷ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ଅଶୁଭ ଫଳ ର ଅପେକ୍ଷା ଶୁଭ ଫଳ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ଘଟିତ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ସ୍ତ୍ରୀ ତଥା ସ୍ତ୍ରୀ ପକ୍ଷ ରୁ କଷ୍ଟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ କିମ୍ବା ପତ୍ନୀ ଙ୍କୁ କୌଣସି ପ୍ରକାର ର କଷ୍ଟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଚିନ୍ତିତ ତଥା ଭୟଭୀତ ରହିବେ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଉତ୍ସାହ ରେ କମୀ ଆସିବ, ତଥା ଧନ ର ବ୍ୟୟ ମଧ୍ୟ ଅଧିକ ମାତ୍ରା ରେ ହେବ । ଫଳତଃ ଆର୍ଥିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ କମଜୋର ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ପରିଶ୍ରମ କରିବା ପରେ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ହିଁ ସିଦ୍ଧ ହେବ । ଫଳତଃ ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଅଶାନ୍ତ ତଥା ଚିନ୍ତିତ ରହିବେ । ଶାରୀରିକ ଅସୁସ୍ଥତା ର ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ଲୋଲୁପତା ର ଭାବ ର ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ନିଜର ବନ୍ଧୁ ଏବଂ ମିତ୍ର ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ଭଲ ସମ୍ପର୍କ ରହିବ ନାହିଁ ଏବଂ ପରସ୍ପର ମନମୁଣାବ ରହିବ । ଏପରି ସମୟ ରେ ମିତ୍ର ମଧ୍ୟ ଶତ୍ରୁ ଙ୍କ ପରି ବ୍ୟବହାର କରିବେ । ଏହାର ଛଡ଼ା ସମାଜ ରେ ଅନ୍ୟ ଲୋକଙ୍କ ସହ ବାଦ ବିବାଦ ତଥା ସଂଘର୍ଷ ହେଉ ଥିବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ସାମାଜିକ ସମ୍ମାନ ରେ ମଧ୍ୟ ନ୍ୟୁନତା ର ଭାବ ରହିବ ।



ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସ ରେ ଅଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଘଟିତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ମହିଳା ବର୍ଗ ଠାରୁ ପୁଣି ସହଯୋଗ ତଥା ଲାଭ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ସମୟ ରେ ପରିଶ୍ରମ ପୂର୍ବକ ଧନ ଅର୍ଜନ ଏବଂ ଲାଭ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ସଫଳତା ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଧର୍ମ ର ଅନୁପାଳନ ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଙ୍କ ରୂପେ ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ, ତଥା ସମାଜ ରେ ନ୍ୟୁନାଧିକ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ ।

ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ଶୁଭା ଶୁଭ ଉତ୍ପନ୍ନ ପ୍ରକାର ର ଫଳ କୁ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ ପ୍ରବଳ ରହିବ, ଫଳତଃ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣ ଭୟଭୀତ ତଥା ବିକଳ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ଘରେ କୌଣସି ପ୍ରକାର ର ଦୋରା ହେବାର ମଧ୍ୟ ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଧନ ବ୍ୟୟ ଅଧିକ ମାତ୍ରା ରେ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆର୍ଥିକ କ୍ଷତି ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ଧର୍ମ ର ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ଶ୍ରଦ୍ଧା ରେ ମଧ୍ୟ ନ୍ୟୁନତା ଆସିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ ତଥା ଆପଣ ବିବିଧ ପ୍ରକାର ର ଶାରୀରିକ କଷ୍ଟ ର ଅନୁଭୂତି କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ମଧ୍ୟ ଅନେକ ପ୍ରକାର ର ବ୍ୟବଧାନ ଆସିବ, ତଥା ସେଥିରେ ସଫଳତା ର ଅପେକ୍ଷା ଅସଫଳତା ହିଁ ଅଧିକ ମିଳିବ । ଅର୍ଥାତ ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଅଶାନ୍ତ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣଙ୍କ ଦୂର ସମୀପ ର ମଧ୍ୟ କୌଣସି ଯାତ୍ରା ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଆପଣଙ୍କ ସାଂସାରିକ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟ ରେ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ହିଁ ସଫଳ ହେବ ତଥା ମକଦ୍ଦମା ଆଦି ରେ ମଧ୍ୟ ଧନ ଅଧିକ ମାତ୍ରା ରେ ବ୍ୟୟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ଅର୍ଥାତ ଏହି ମାସ କୁ ସାବଧାନୀ ତଥା ବିଧି ପୂର୍ବକ ବ୍ୟତୀତ କରନ୍ତୁ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସ ରେ ଅଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ସରକାର କିମ୍ବା ଭଲ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଠାରୁ ସହଯୋଗ ତଥା ଲାଭ ଅର୍ଜିତ କରି ପାରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ନିଜର ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ପରିଶ୍ରମ ପୂର୍ବକ ସଫଳ ବନେଇ ବାରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା କୌଣସି ନବୀନ ଦ୍ରବ୍ୟ କିମ୍ବା ବସ୍ତ୍ର ର ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତି କରିବା ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ପରି ମଧ୍ୟମ ରୂପ ରେ ଆପଣ ନିଜର ସମୟ କୁ ଏହି ମାସ ରେ ବ୍ୟତୀତ କରିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ଶୁଭ ତଥା ସୋଭାଗ୍ୟ ଶାଳୀ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରା ରେ ଧନ ଅର୍ଜନ କରିବେ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ଭଲ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପୁଣି ପ୍ରସତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ଘରେ କୌଣସି ଧାର୍ମିକ ଉତ୍ସବ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ସନ୍ତତି ପକ୍ଷ ରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁଣି ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ମିଳିବ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣ ନିଶ୍ଚିନ୍ତ ରହିବେ । ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ପୁଣି ଶ୍ରଦ୍ଧା ରହିବ, ତଥା ବିଧି ପୂର୍ବକ ଆପଣ ତାଙ୍କର ପୂଜା ତଥା ସେବା କରିବେ । ସମାଜ ରେ ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଯଶ ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ଭାଗ୍ୟ ଉଦୟ ସମ୍ପନ୍ନ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ବୁଦ୍ଧି ରେ ମଧ୍ୟ ନିର୍ମଳତା ର ଭାବ ରହିବ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ସବୁ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ବୁଦ୍ଧିମତା ଦ୍ୱାରା ହିଁ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ଦୂର ସମୀପ ର ଲାଭ ଦାୟକ ଯାତ୍ରା ମଧ୍ୟ କରି ପାରିବେ । ସରକାର କିମ୍ବା ଭଲ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଠାରୁ ଆପଣ ପୁଣି ସମ୍ମାନ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ମିତ୍ର ଏବଂ ବନ୍ଧୁ ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମଧୁର ସମ୍ବନ୍ଧ ରହିବ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ବାଞ୍ଛିତ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେଉ ଥିବ । ଏହି ପରି ସର୍ବତ୍ର ଆପଣଙ୍କ ଯଶ ତଥା ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେଉ ଥିବ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ପୁଣି ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ନିଜର ବୁଦ୍ଧିମତା ଦ୍ୱାରା ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରା ରେ ଧନ ଏବଂ ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଧର୍ମ ର ପ୍ରତି ଆପଣ ଶ୍ରଦ୍ଧାଳୁ ହେବେ ଏବଂ ଧର୍ମ ର ଅନୁପାଳନ ରେ ତପ୍ତ ରହିବେ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ସମାଜ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ମାନ ରେ ଅଭିବୃଦ୍ଧି ହେବ ।

ଫଳାଦେଶ - 2025

ଏହି ବର୍ଷ ବୃହସ୍ପତି ଶୟ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ନିକଟରେ ଭ୍ରମଣର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି, ଯାହାକି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭଦାୟକ । ଆପଣ ଦର୍ଶନ ଓ ସାହିତ୍ୟରେ ଆଗ୍ରହୀ ହେବେ ଏବଂ ସମସ୍ତ ଶାସ୍ତ୍ର ଅଧ୍ୟୟନରେ ପ୍ରଚାର ବ୍ୟୟ କରିବେ । ବନ୍ଧୁମାନଙ୍କ ନିକଟରୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗିତା ଆଶା କରିପାରନ୍ତି । ଆପଣଙ୍କର ଦୈନିକ ଓ ମାନସିକ ସୁସ୍ଥତା ବଜାୟ ରହିବ । ପାରିପାର୍ଶ୍ଵିକ ବ୍ୟକ୍ତିମାନଙ୍କ ନିକଟରୁ ସମ୍ମାନ ଲାଭ କରିବେ । କିନ୍ତୁ ଆପଣଙ୍କର ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ପରିସ୍ଥିତି ବା ଦଶାଫଳ ଶୁଭ ହେବ ନାହିଁ ।

ଶନି ଏକାଦଶ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ବିଦେଶ ଯାତ୍ରାର ସମ୍ଭାବନା ସୁଫଳ ହୋଇପାରେ । ଆପଣଙ୍କର ନୂତନ କୌଶଳ ପରିକଳ୍ପନା ବାସ୍ତବ୍ୟ ହୋଇପାରେ । ଆପଣ ଦୈନିକ ଓ ମାନସିକ ଯତ୍ନରେ କଷ୍ଟ ପାଇବେ । ପ୍ରତିବେଶୀ ମାନଙ୍କ ସହିତ ସୁସମ୍ପର୍କ ବଜାୟ ରହିବ ନାହିଁ ଏବଂ ବନ୍ଧୁ ବାନ୍ଧବ ଓ ଆତ୍ମୀୟ ସ୍ଵଜନଙ୍କ ନିକଟରୁ ସହଯୋଗିତା ନ ପାଇବା ଫଳରେ ସା ଫଳ୍ୟ ଲାଭ ପାଇଁ କଠିନ ପରିଶ୍ରମ କରିବାକୁ ହେବ ।

ରାହୁ ଏକାଦଶ ସ୍ଥାନ ଏବଂ କେତୁ ପଞ୍ଚମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷିକ ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଶୁଭ । କଠୋର ପରିଶ୍ରମ ଫଳରେ ଆପଣ ବ୍ୟବସାୟିକ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉନ୍ନତି କରିପାରିବେ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଅଥବା ରାଜନୈତିକ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣଙ୍କ ପଦୋନ୍ନତିର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ସମାଜରେ ଆପଣ ସମ୍ମାନିତ ବ୍ୟକ୍ତି ହିସାବରେ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ସୁବିଧା ଅସ୍ଥୁର ରହିବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ମାନଙ୍କ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ପ୍ରତି ଦୃଷ୍ଟି ଦିଅନ୍ତୁ ।

ଇସ ବର୍ଷ ରାହୁ କୀ ମହାଦଶା ମେଂ ବୁଧ କା ଅନ୍ତର ରହେगा । ବୁଧ ଦ୍ଵାଦଶ ଭାବ ମେଂ କୁମ୍ଭ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ଜବକି ରାହୁ ପ୍ରଥମ ଭାବ ମେଂ ମୀନ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବିଶେଷ ଶୁଭ ଏବଂ ଅନୁକୂଳ ରହିବ ନାହିଁ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଇଚ୍ଛିତ ପରିଣାମ ମିଳିବ ନାହିଁ । ତଥା ବ୍ୟାପାର ଆଦି ରେ ଅତିରିକ୍ତ ବ୍ୟୟ ର ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ଏହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଅନାବଶ୍ୟକ ସମସ୍ୟା ତଥା ଅସୁବିଧା ର ସାମନା କରିବା କୁ ପଡ଼ିବ । ଯଦି ଡାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ପଦ ଉନ୍ନତି ସମ୍ଭାବନା ବ୍ୟବଧାନ ତଥା ବିଳମ୍ବ ହେବ । ତ ଥା ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କ ରେ ତନାବ ରହିବ । ପାରିବାରିକ ସଦସ୍ୟ ଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ବିଶେଷ ସହଯୋଗ ମିଳିବ ନାହିଁ । ତ ଥା ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ସଦଭାବ ର ମଧ୍ୟ ନ୍ୟୁନତା ରହିବ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଅଶାନ୍ତି ରହିବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ଆଧ୍ୟାତ୍ମ କିମ୍ବା ପର ବିଦ୍ୟା ଆଦି ରେ ରୁଚିଶୀଳ ରହିବେ । ତଥା କିଛି ଅନୁଭବ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହା କୁ ଛାଡ଼ି ଲାଭ ଦାୟକ ଚର୍ଯ୍ୟ ଯାତ୍ରା ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ ଏବଂ ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ ଙ୍କୁ ପରାଜିତ କରିବା ରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଅର୍ଥାତ ଧର୍ଯ୍ୟ ପୂର୍ବକ ସମୟ ର ବ୍ୟତୀତ କରନ୍ତୁ ।

ମାସିକ ପଞ୍ଜାଦେଶ

ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ଅଶୁଭ ଫଳ ର ଅପେକ୍ଷା ଶୁଭ ଫଳ ହିଁ ଅଧିକ ମାତ୍ରା ରେ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ରେ ଉନ୍ନତି ହେବ, ତଥା ସାମାଜିକ ଏବଂ ପାରିବାରିକ ଜନ ଜୀବନ ଠାରୁ ଯଥୋଚିତ ମାନ ସମ୍ମାନ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ସାଧେ ଥ ସାଧେ ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ତଥା ସମ୍ମାନ ଅର୍ଜିତ କରିବେ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କ ମହତ୍ଵପୁର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଯଥା ସମୟ ସିଦ୍ଧ ହେବ ଏବଂ ବାଞ୍ଛିତ ଲାଭ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ମିତ୍ର ଏବଂ ବନ୍ଧୁ ଜନ ଜୀବନ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମଧୁର ସମ୍ପର୍କ ରହିବ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣ ବାଞ୍ଛିତ ସୁଖ ଏବଂ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଶୁଭ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଏହି ମାସ ରେ ସିଦ୍ଧ ହେବ । ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଜୀବ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ଶ୍ରଦ୍ଧା ର ଭାବ ରହିବ, ତଥା ବିଧି ପୁର୍ବକ ଆପଣ ତାଙ୍କର ସେବା ତଥା ପୂଜା କରିବା ପାଇଁ ଚପୁର ରହିବେ । ସନ୍ତତି ପକ୍ଷ ରୁ ଆପଣ ସୁଖୀ ରହିବେ ଏବଂ ବନ୍ଧୁ ତଥା ମିତ୍ର ଜୀବନ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣ ଜୀବନୋ କାମନା ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟ ରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ହେବ, ଫଳତଃ ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ପ୍ରସନ୍ନ ତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ଗରମ କିମ୍ବା ପିତ ଦ୍ଵାରା ଉପହୁତ ରୋଗ ରେ କଷ୍ଟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ସାଧେ ସାଧେ ରକ୍ତ ବିକାର ର ମଧ୍ୟ ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ଅର୍ଥାତ ଶାରୀରିକ ସୁରକ୍ଷା ର ଦୃଷ୍ଟି ରେ ଏହି ମାସ ରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସତର୍କ ରହନ୍ତୁ ତଥା ଅନ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ମଧ୍ୟ ବୁଦ୍ଧିମତା ପୁର୍ବକ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।

ଏହି ମାସ କୁ ଆପଣ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ସୁଖ ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନତା ପୁର୍ବକ ବ୍ୟତୀତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ମହିଳା ବର୍ଗ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ବାଞ୍ଛିତ ଲାଭ ଏବଂ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ସାଧେ ସାଧେ ସୋଭାଗ୍ୟ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଯୁକ୍ତ ରହିବେ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ସମସ୍ତ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ଵପୁର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ସୋଭାଗ୍ୟ ଦ୍ଵାରା ହିଁ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ସରକାର କିମ୍ବା ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଜୀବ ଠାରୁ ଆପଣ ସହଯୋଗ ତଥା ଲାଭ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଭଲ ରହିବ, ତଥା ଜ୍ଞାନ ଅର୍ଜନ ର ପ୍ରତି ଆପଣ ନିଜର ରୁଚି ର ପ୍ରଦର୍ଶନ କରିବେ, ତଥା ଏଥିରେ ସଫଳତା ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ମିତ୍ର ତଥା ସମ୍ପର୍କ ଜୀବ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମଧୁର ସମ୍ପର୍କ ରହିବ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ଇଚ୍ଛିତ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେଉ ଥିବ, ସାଧେ ସାଧେ ମନୋବାଞ୍ଛିତ ଦ୍ରବ୍ୟ ର ମଧ୍ୟ ଏହି ମାସ ରେ ଉପଲବ୍ଧ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ସନ୍ତତି ପକ୍ଷ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ଯଥୋଚିତ ଲାଭ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେଉ ଥିବ । ସାମାଜିକ ଜନ ଜୀବନ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ଅସଫଳ ଆଶା ମଧ୍ୟ ଏହି ମାସ ରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ପ୍ରସନ୍ନ ତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ ।

ସାଧେ ସାଧେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ତଥା ପୁତ୍ର ଜୀବ ବାଞ୍ଛିତ ସୁଖ ଏବଂ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ନବୀନ ବସ୍ତ୍ର କିମ୍ବା ବସ୍ତୁ ର ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ସଫଳ ସିଦ୍ଧ ହୋଇ ପାରିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ଆପଣ ବିବିଧ ପ୍ରକାର ର ଅଶୁଭ ଫଳ ର ହିଁ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଧନ ବ୍ୟୟ ଅଧିକ ମାତ୍ରା ରେ ହେବ । ତଥା ଦୁଷ୍ଟ ଜନ ଜୀବ ସଙ୍ଗେ ଆପଣଙ୍କୁ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କ ଦୃଷ୍ଟି ରେ ଆପଣ କମଜୋର ହେବେ । ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ମଧ୍ୟ ବିଶେଷ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ଆପଣ ଅନେକ ପ୍ରକାର ର କଷ୍ଟ ର ଅନୁଭୂତି କରିବେ, ସାଧେ ସାଧେ ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଅପ୍ରସନ୍ନ ତଥା ଅସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ଵପୁର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ପରିଶ୍ରମ କରିବା ପରେ ମଧ୍ୟ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ହିଁ ସିଦ୍ଧ ହୋଇ ପାରିବ । ସାଧେ ସାଧେ ଧର୍ମ ର

ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ବିଶେଷ ଶ୍ରଦ୍ଧା ରହିବ ନାହିଁ ଏବଂ ଆପଣ ଦେବତା ତଥା ବ୍ରାହ୍ମଣ ଙ୍କ ଉପେକ୍ଷା କରିବେ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାର ରୁ ମଧ୍ୟ ହାନି ର ଯୋଗ ବନ୍ଦୁ ଥିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ମିତ୍ର ତଥା ବନ୍ଧୁ ଙ୍କ ସହ ବିଶେଷ ସମ୍ବନ୍ଧ ରହିବ ନାହିଁ ତ ଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ସହଯୋଗ ମଧ୍ୟ ଅଳ୍ପ ହିଁ ମିଳିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ରେ ମଧ୍ୟ ଅନାବଶ୍ୟକ ବାଧା ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ବଳବାନ ରହିବେ, ତଥା ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣ ବିକ୍ରନ୍ତ ତଥା ଭୟଭୀତ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଯେଉଁ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ପ୍ରାରମ୍ଭ କରିବେ, ସେଥିରେ ସଫଳତା ର ଅପେକ୍ଷା ଅସଫଳତା ହିଁ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ।

ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ଶୀତ କିମ୍ବା ବାତ ରେ ଉତ୍ପନ୍ନ ରୋଗ ଦ୍ୱାରା କଷ୍ଟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣ କୌଣସି ଏପରି କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ସାମାଜିକ ଅବମାନନା ହେବ ଏବଂ ପରେ ଆପଣଙ୍କୁ ପଶ୍ଚାତାପ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଅଗ୍ନି ଦ୍ୱାରା ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ କ୍ଷତି ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଅର୍ଥାତ ସାବଧାନୀ ତଥା ଧୈର୍ଯ୍ୟ ପୂର୍ବକ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟ ରୂପ ରେ ହିଁ ଶୁଭ ଫଳଦାୟକ ରହିବ, ତଥା ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ହେଉ ଥିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ, ତଥା ହୃଦୟ ରୁ ମଧ୍ୟ ପ୍ରସନ୍ନତା ର ଅନୁଭୂତି କରିବେ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ପରାକ୍ରମ ରେ ପୁଣି ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ କୁ ପରାଜିତ କରିବା ରେ ଆପଣ ସଫଳ ରହିବେ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ଶତ୍ରୁ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ବିକ୍ରନ୍ତ ତଥା ଭୟଭୀତ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଆୟ କ୍ଷେତ୍ର ରେ ମଧ୍ୟ ଉନ୍ନତି ହେବ । ଫଳତଃ ପୁରୁର ମାତ୍ରା ରେ ଧନ ଅର୍ଜନ କରି ନିଜର ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି କୁ ସୁଦୃଢ଼ ବନେଇବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ବ୍ୟାପାର କିମ୍ବା ଚାକିରୀ କୁ ଛାଡ଼ି ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାର ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଲାଭ ଅର୍ଜନ କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସମସ୍ତ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ, ତଥା ଭାଗ୍ୟ ର ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ବିଳମ୍ବିତ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଏହି ମାସ ରେ ପୁଣି ହୋଇ ପାରିବ । ମିତ୍ର ତଥା ବନ୍ଧୁ ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ବନ୍ଧ ମଧୁର ରହିବ, ତଥା ସାମ୍ପାରିକ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ସମୟ ରେ ସମ୍ପନ୍ନ ହେଉ ଥିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ରାଜ୍ୟ ର ଭଜ ଅଧିକାରୀ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପ୍ରସନ୍ନ ଏବଂ ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ଯଥା ଯୋଗ୍ୟ ସମ୍ମାନ ପ୍ରାପ୍ତ ହେଉ ଥିବ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସ ରେ ଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ବେଳେ ବେଳେ ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଘଟିତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ବାତ ଜନ୍ମ୍ୟ ରୋଗ ରେ ପୀଡ଼ିତ ରହିବେ, ତଥା ପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ କିମ୍ବା ଅପ୍ରତ୍ୟକ୍ଷ ରୂପ ରେ ଆପଣ କୌଣସି ଏପରି କାର୍ଯ୍ୟ କରିବେ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ପଶ୍ଚାତାପ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ ତଥା ସମାଜ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଅବମାନନା ହେବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଏହି ମାସ ରେ ଅଗ୍ନି ଦ୍ୱାରା ମଧ୍ୟ କୌଣସି ପ୍ରକାର ର କ୍ଷତି ହେବା ର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଅର୍ଥାତ ସାବଧାନୀ ପୂର୍ବକ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।

ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ନିଜର ଉତ୍ସାହ ଦ୍ୱାରା ଧନ ଅର୍ଜନ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ସମାଜ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁଣି ଯଶ ତଥା ସମ୍ମାନ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ପରିବାର ତଥା ମିତ୍ର ଜନ ଙ୍କ ସହ ମଧୁର ସମ୍ବନ୍ଧ ରହିବ ଏବଂ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣ ଯଥୋଚିତ ଆଦର ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଭଜ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁଣି ସହଯୋଗ ତଥା ଆଶ୍ରୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣଙ୍କ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଯଥା ସମୟ ସିଦ୍ଧ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ମାନସିକ ରୂପ ରେ ଆପଣ ପ୍ରସନ୍ନ ତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ତଥା ମିଷ୍ଟାନ୍ନ ର ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ଚୀତ୍ର ରୁଚି ରହିବ । ଶାରୀରିକ ବଳ ର ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ପୁଣିତା ରହିବ ଏବଂ ଶତ୍ରୁ ଙ୍କୁ ପରାଜିତ କରିବା ରେ ଆପଣ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କୁ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ପୁଣି ସୁଖ ଏବଂ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣଙ୍କ ଗୃହସ୍ଥ ଜୀବନ ସୁଖୀ ରହିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ବ୍ୟାପାର ଆଦି କାର୍ଯ୍ୟ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଅତିରିକ୍ତ ଧନ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସଫଳତା ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ପୁତ୍ର ତଥା ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ପୁଣି ସୁଖ ଏବଂ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ

ଆପଣ ନବୀନ ବସ୍ତ୍ର କିମ୍ବା ଦ୍ରବ୍ୟ ଆଦି ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ସଫଳ ହୋଇ ପାରିବେ । ଏହି ପରି ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ଶୁଭ ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନତା ପ୍ରଦାନ କରିବା ବାଲା ରହିବ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟତୟ ଶୁଭ ହିଁ ରହିବ, ତଥାପି ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ହେଉ ଥିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ନିଜର ପରାକ୍ରମ ଦ୍ୱାରା ଧନ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ, ତଥା ବିବିଧ ପ୍ରକାର ର ସୁଖ ର ଉପଭୋଗ ମଧ୍ୟ କରିବେ । ସମାଜ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଯଶ ଏବଂ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ସବୁ ଲୋକ ଆପଣଙ୍କ ଶ୍ରେଷ୍ଠତା କୁ ସ୍ୱୀକାର କରିବେ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ହାର୍ଦ୍ଦିକ ସମ୍ମାନ କରିବେ । ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ପୁଣ୍ୟ ଶ୍ରଦ୍ଧା ର ଭାବନା ରହିବ, ତଥା ବିଧି ପୂର୍ବକ ଆପଣ ତାଙ୍କର ପୂଜା ତଥା ସେବା କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ସମାଜ ରେ ଆପଣ ଲୋକ ଙ୍କ ଉପକାର ପାଇଁ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ କରିବା ରେ ମଧ୍ୟ ତତ୍ପର ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଠିକ ହିଁ ରହିବ । ଏହି ମାସ ରେ ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁଣ୍ୟ ସହଯୋଗ ତଥା ସମ୍ମାନ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ତଥା ଅନ୍ୟ ଲୋକ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ପ୍ରଭୃତ କୁ ସ୍ୱୀକାର କରିବେ । ମିତ୍ର ଏବଂ ବନ୍ଧୁ ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମଧୁର ସମ୍ପର୍କ ରହିବ ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ବାଞ୍ଛିତ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଦ୍ୱିତ ପ୍ରତୀକ୍ଷିତ ମନୋ କାମନା ମଧ୍ୟ ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ପ୍ରସନ୍ନ ତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ବେଳେ ବେଳେ ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ଗରମ କିମ୍ବା ପିତ ଦ୍ୱାରା ଉତ୍ପନ୍ନ ରୋଗ ରେ କଷ୍ଟ ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରନ୍ତି । ସାଥେ ସାଥେ ରୂପିର ବିକାର ର ମଧ୍ୟ ଭୟ ରହିବ । ଅର୍ଥାତ ଏହି ମାସ ରେ ଶାରୀରିକ ସୁରକ୍ଷା ପ୍ରତି ପୁଣ୍ୟ ସତର୍କ ରହନ୍ତୁ ତଥା ବିଧି ପୂର୍ବକ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କଳାପ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟତୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ଶୁଭ ଫଳ ର ଅପେକ୍ଷା ଅଶୁଭ ଫଳ ହିଁ ଅଧିକ ମାତ୍ରା ରେ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ, ଫଳତଃ ଶରୀର ରେ ଦୁର୍ବଳତା ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ । ସାଧେ ଥ ସାଥେ ଶତ୍ରୁ ମଧ୍ୟ ବଳବାନ ରହିବେ, ଅର୍ଥାତ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣ ଭୟଭୀତ ତଥା ଚିନ୍ତିତ ରହିବେ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଅଶାନ୍ତି ର ଅନୁଭୂତି କରିବେ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ରେ ନ୍ୟୁନତା ରହିବ, ତଥା କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ରେ ପରିବର୍ତ୍ତନ କିମ୍ବା କୌଣସି କାର୍ଯ୍ୟ ଅଟକି ପାରେ କିମ୍ବା ବନ୍ଦ ମଧ୍ୟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ସାଥେ ସାଥେ ସମାଜ ରେ ଅନ୍ୟ ଜନ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ବିଶେଷ ମଧୁର ସମ୍ପର୍କ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ପରସ୍ପର ବୈମନସ୍ୟ ର ଭାବ ରହିବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ସାମାଜିକ ସମ୍ମାନ ରେ ମଧ୍ୟ ନ୍ୟୁନତା ଆସିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଅନ୍ୟ ପ୍ରକାର ରୁ ମଧ୍ୟ ଧନ ହାନି ହେବା ର ସମ୍ଭାବନା ରହିବ ଏବଂ ଶରୀର ରେ କୌଣସି ରୋଗ ମଧ୍ୟ ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଅର୍ଥାତ ସାବଧାନୀ ତଥା ବୁଦ୍ଧିମତା ପୂର୍ବକ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଅନାବଶ୍ୟକ ସମସ୍ୟା ଉତ୍ପନ୍ନ ନ ହେବ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସ ରେ ଅଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଏହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ତଥା ପୁତ୍ର ଙ୍କ ଠାରୁ ପୁଣ୍ୟ ସହଯୋଗ ତଥା ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ଏବଂ ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ରୁ ମଧ୍ୟ ନ୍ୟୁନାଧିକ ସହଯୋଗ ମିଳୁ ଥିବ । ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ନିଜର ବୁଦ୍ଧିମତା ଦ୍ୱାରା ଧନ ଅର୍ଜନ ଏବଂ ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ସଫଳତା ଅର୍ଜିତ କରି ପାରିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ଶୁଭ ଏବଂ ଅନୁକୂଳ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ବୁଦ୍ଧି ରେ ନିର୍ମଳତା ର ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ଅଧିକାଂଶ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ବୁଦ୍ଧିମତା ଦ୍ୱାରା ହିଁ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଏହି ମାସ ରେ ସନ୍ତତି ପକ୍ଷ ରୁ



ଆପଣ ପୁଣି ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ନବୀନ ଜ୍ଞାନ ଅର୍ଜନ କରିବା ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ସଫଳତା ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ସମାଜ ରେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରଭୁତ୍ୱ ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ ତଥା ସବୁ ଲୋକ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରଭୁତା ତଥା ଶ୍ରେଷ୍ଠତା କୁ ସ୍ୱୀକାର କରିବେ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କୁ ଯଥୋଚିତ ଆଦର ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ମହତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଏହି ମାସ ରେ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ, ତଥା କେଉଁ ଠାରୁ କୌଣସି ଶୁଭ ସମାହାର ମଧ୍ୟ ଶୁଣିବା କୁ ମିଳିବ । ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ଶ୍ରଦ୍ଧା ର ଭାବନା ରହିବ, ତଥା ବିଧି ପୂର୍ବକ ଆପଣ ତାଙ୍କର ପୂଜା ତଥା ସେବା ର କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ତପ୍ତ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ରାଜ୍ୟ ର ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ରୁ ମଧ୍ୟ ଲାଭ ତଥା ସହଯୋଗ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ଆପଣ ସଫଳ ହେବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ସାମାଜିକ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ମାନସିକ ଚିନ୍ତା ରୁ ମୁକ୍ତି ମିଳିବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଶାନ୍ତ ତଥା ପ୍ରସନ୍ନ ରହିବେ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ପୁଣି ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ନିଜର ବୃଦ୍ଧି ଚତୁରତା ଦ୍ୱାରା ଧନ ଅର୍ଜନ ଏବଂ ସୁଖ ସାଧନ କୁ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ସମର୍ଥ ସିଦ୍ଧ ହେବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଏହି ସମୟ ରେ ଧର୍ମ ର ଅନୁପାଳନ ରେ ତପ୍ତ ରହି ସମାଜ ରେ ସବୁ ଲୋକ ଙ୍କ ପାଖରେ ଆପଣ ଏକ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ବ୍ୟକ୍ତି ରହିବେ, ତଥା ସେ ଆପଣଙ୍କ ହାର୍ଦ୍ଦିକ ସମ୍ମାନ କରିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟତୟ ଅଶୁଭ ହିଁ ରହିବ । ତଥାପି ନ୍ୟୁନାଧିକ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେଉ ଥିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ ଏବଂ ଶାରୀରିକ ରୂପ ରେ ଆପଣ ଦୁର୍ବଳତା ର ଅନୁଭୂତି କରିବେ । ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ଏହି ମାସ ରେ ବଳବାନ ରହିବେ, ଅର୍ଥାତ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣ ବିକ୍ରିତ ତଥା ଭୟଭୀତ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଘରେ ମଧ୍ୟ କୌଣସି ପ୍ରକାର ର ଡୋରୀ ଆଦି ମଧ୍ୟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି ଅର୍ଥାତ ସାବଧାନ ରହନ୍ତୁ । ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଙ୍କ ଆଜ୍ଞା ର ତପ୍ତରତା କୁ ପାଳନ କରନ୍ତୁ ତଥା ତାଙ୍କର କୌଣସି ମଧ୍ୟ ପ୍ରକାର ର ଉପେକ୍ଷା ନ କରନ୍ତୁ । ଅନ୍ୟଥା ଆପଣ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଦଣ୍ଡ ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରନ୍ତି । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଅଧିକ ପରିଶ୍ରମ କରିବା ପରେ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ହିଁ ସିଦ୍ଧ ହେବ, ତଥା ଧନ ର ବ୍ୟୟ ମଧ୍ୟ ଅଧିକ ମାତ୍ରା ରେ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି କମଜୋର ରହିବ । ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ କୌଣସି ଏପରି କାର୍ଯ୍ୟ କୁ କରିବେ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଅନୁତାପ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ, ତଥା ସମ୍ମାନ ରେ ମଧ୍ୟ ନ୍ୟୁନତା ଆସିବ । ମିତ୍ର ଏବଂ ବନ୍ଧୁ ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମନ ମୁଗାବ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ଇଚ୍ଛା ଏହି ସମୟ ରେ ପୁଣି ହେବ ନାହିଁ ଅର୍ଥାତ ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ କଷ୍ଟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସ ରେ ଅଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ପତ୍ନୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ପୁଣି ସୁଖ ଏବଂ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ବୃଦ୍ଧି ରେ ନିର୍ମଳତା ହେବା ର କାରଣ ବୃଦ୍ଧି ଚତୁରତା ଦ୍ୱାରା ସେ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସିଦ୍ଧ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଧନ ଅର୍ଜନ କରିବା ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ସଫଳ ରହିବେ, ତଥା ସମାଜ ରେ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବିଶେଷ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ଅଶୁଭ ଫଳ ହିଁ ଅଧିକ ମାତ୍ରା ରେ ଘଟିତ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ତଥା ବନ୍ଧୁ ବର୍ଗ ଙ୍କ ଠାରୁ କଷ୍ଟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ କିମ୍ବା ଆପଣଙ୍କୁ କୌଣସି କଷ୍ଟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ ମଧ୍ୟ ବଳବାନ ରହିବେ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସେ ସମସ୍ୟା ଉତ୍ପନ୍ନ କରୁ ଥିବେ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଭିତରେ ଉତ୍ସାହ ର ଭାବ ର ନ୍ୟୁନତା ସ୍ପଷ୍ଟ ପରିଲକ୍ଷିତ ହେବ, ତଥା ଧନ ମଧ୍ୟ ଅଧିକ ମାତ୍ରା ରେ ବ୍ୟୟ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆର୍ଥିକ କ୍ଷେତ୍ର ରେ ଆପଣ କଷ୍ଟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ତଥା ମାନସିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟ ରେ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ ଏବଂ ସ୍ୱଭାବ ରେ ଲୋଲୁପତା ର ଭାବ ର ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ବନ୍ଧୁ ଏବଂ ମିତ୍ର ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ଭଲ ସମ୍ବନ୍ଧ ରହିବ ନାହିଁ ତଥା ପରସ୍ପର ମନ ମୁଗାବ ତଥା ବୈମନସ୍ୟ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ସମାଜ ତଥା ପରିବାର ର ଲୋକ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ପରସ୍ପର ବିବାଦ ହେଉ ଥିବ । ଅର୍ଥାତ ଏପରି



ସମୟ କୁ ବିଧି ପୂର୍ବକ ବ୍ୟତୀତ କରିବା ହିଁ ବୃଦ୍ଧିମାନୀ ରହିବ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ଶୁଭ ଫଳ ର ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ଏହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣ ଶ୍ରେଷ୍ଠ ଜନ ତଥା ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀଙ୍କ ଠାରୁ ସହଯୋଗ ଏବଂ ଲାଭ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସଫଳତା ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ରେ ଉନ୍ନତି ମଧ୍ୟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ନବୀନ ବସ୍ତୁ ତଥା ଦ୍ରବ୍ୟ ଆଦି ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରନ୍ତି । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣ କିଛିତ ସୁଖ ର ଅନୁଭୂତି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟତୟ ଅଶୁଭ ହିଁ ରହିବ, ତଥାପି ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଅବଶ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶତ୍ରୁ ବଳବାନ ରହିବେ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସମସ୍ୟା ଉତ୍ପନ୍ନ କରିବେ, ଫଳତଃ ଆପଣ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ଭୟଭୀତ ତଥା ଚିନ୍ତିତ ରହିବେ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଘରେ ଚୋରୀ ମଧ୍ୟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି, ତଥା ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ପରିଶ୍ରମ ଦ୍ଵାରା ସଫଳ ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଧନ ବ୍ୟୟ ମଧ୍ୟ ଅଧିକ ମାତ୍ରା ରେ ହେବ । ଫଳତଃ ଆର୍ଥିକ ଦୃଷ୍ଟି ରୁ ମଧ୍ୟ କମଜୋର ରହିବେ । ଶାରୀରିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଦୁର୍ବଳ ରହିବେ, ତଥା ଧର୍ମ ର ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ବିଶେଷ ଶ୍ରଦ୍ଧା ର ଭାବ ଅଳ୍ପ ହିଁ ରହିବ, ତଥା ଆପଣ ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣଙ୍କ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ହିଁ ପୂଜନ ତଥା ସେବା କରିବେ । ଶାରୀରିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଅସୁସ୍ଥ ରହିବେ, ତଥା ଶରୀର ରେ ଦୁର୍ବଳତା ର ଭାବ ରହିବ ଏବଂ ଆପଣ ନାନା ପ୍ରକାର ର ଶାରୀରିକ କଷ୍ଟ ଅନୁଭୂତି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଦୁର ସମୀପ ର ଯାତ୍ରା ମଧ୍ୟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଆପଣଙ୍କ ପାରିବାରିକ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟ ରେ ଅସଫଳ ରହିବ ଏବଂ ମକଳମା ଆଦି ରେ ଧନ ବ୍ୟୟ ହେବା ର ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ଅର୍ଥାତ ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଅଶାନ୍ତ ତଥା ଅସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସ ରେ ବେଳେ ବେଳେ ଆପଣ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ଠାରୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ଏବଂ ନିଜର ବୁଦ୍ଧି ବୃତ୍ତରତା ଦ୍ଵାରା ଅନେକ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ସାମାନ୍ୟ ଧନ ତଥା ସୁଖ ଅର୍ଜନ କରି ଆପଣ ପ୍ରସନ୍ନତା ର ଅନୁଭୂତି କରି ପାରିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ଶୁଭ ଏବଂ ସୌଭାଗ୍ୟଶାଳୀ ସିଦ୍ଧ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରା ରେ ଲାଭ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ, ତଥା ଆର୍ଥିକ ରୂପ ରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସମ୍ପନ୍ନ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପ୍ରସନ୍ନ ତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣ ନିଜର ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ଯଥା ସମୟ ସିଦ୍ଧ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ନିଜର ଘରେ କୌଣସି ଧାର୍ମିକ ଉତ୍ସବ ର ଆୟୋଜନ ମଧ୍ୟ କରି ପାରନ୍ତି । ଏହି ସମୟ ରେ ସନ୍ତତି ପକ୍ଷ ରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ଏବଂ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ତଥା ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ଶ୍ରଦ୍ଧା ର ଭାବନା ରହିବ, ତଥା ବିଧି ପୂର୍ବକ ଆପଣ ତାଙ୍କର ପୂଜା ତଥା ସେବା କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ସାମାଜିକ ଜନଙ୍କ ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କ ଯଶ ତଥା ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଭାଗ୍ୟ ଉତ୍ତମ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ବୁଦ୍ଧି ନିର୍ମଳ ରହିବ, ତଥା ଲାଭ ଦାୟକ ଯାତ୍ରା ର ମଧ୍ୟ ଯୋଗ ବନିବ । ନିଜର ବନ୍ଧୁ ଏବଂ ମିତ୍ରଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମଧୁର ସମ୍ବନ୍ଧ ରହିବ ଏବଂ ଜଣେ ଅନ୍ୟ ପ୍ରତି ବାଞ୍ଛିତ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହି ପରି ସମାଜ ରେ ସର୍ବତ୍ର ସମ୍ମାନୀୟ ତଥା ଆଦରଣୀୟ ବୁଝିବେ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ, ତଥା ନିଜର ବୁଦ୍ଧି, ବୃତ୍ତରତା ଦ୍ଵାରା ଧନ ଏବଂ ସୁଖ ସାଧନ କୁ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ମଧ୍ୟ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଧର୍ମ ର ଅନୁପାଳନ ରେ ଶ୍ରଦ୍ଧା ର ପ୍ରଦର୍ଶନ କରି ଆପଣ ଏକ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ବ୍ୟକ୍ତି ରୂପ ରେ ସମ୍ମାନ ଅର୍ଜିତ କରି ପାରିବେ ।

ଫଳାଦେଶ - 2026

ବୃହସ୍ପତି ଧର୍ମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ସାମଗ୍ରିକ ଭାବେ ଶୁଭ । ଆପଣଙ୍କର ଦୈନିକ ଓ ମାନସିକ ଭାରସାମ୍ୟ ବଜାୟ ରହିବ । ଅସମାପ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ ସମାପ୍ତ କରିବାର ସୁଯୋଗ ପାଇବେ । ପରିବାରର ସଦସ୍ୟ ମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଐକ୍ୟ ରହିବ । କର୍ମ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଓ ବ୍ୟବସାୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭବାନ ହେବେ, ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାର ଅତ୍ୟନ୍ତ ଉନ୍ନତି ହେବ । ବନ୍ଧୁମାନଙ୍କ ନିକଟରୁ ପୁଣି ସହଯୋଗିତା ପାଇବେ । ଏହିବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କର ସମ୍ପତ୍ତି ପ୍ରାପ୍ତି ଓ ଯାନବାହାନ କ୍ରୟର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ମାଆଙ୍କ ଦିଗରୁ ଆପଣ ଲାଭବାନ ହେବେ । କିନ୍ତୁ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ପରିସ୍ଥିତି ଦଶାଫଳ ଅଶୁଭ ହେତୁ ଆପଣଙ୍କୁ କଠୋର ଶ୍ରମ କରିବାକୁ ହେବ ।

ଶନି ଏକାଦଶ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ବିଦେଶ ଯାତ୍ରାର ସମ୍ଭାବନା ସୁଫଳ ହୋଇପାରେ । ଆପଣଙ୍କର ନୂତନ କୌଶଳୀ ପରିକଳ୍ପନା ବାସ୍ତବାୟିତ ହୋଇପାରେ । ଆପଣ ଦୈନିକ ଓ ମାନସିକ ଯତ୍ନରେ କଷ୍ଟ ପାଇବେ । ପ୍ରତିବେଶୀ ମାନଙ୍କ ସହିତ ସୁସମ୍ପର୍କ ବଜାୟ ରହିବ ନାହିଁ ଏବଂ ବନ୍ଧୁ ବାନ୍ଧବ ଓ ଆତ୍ମୀୟ ସ୍ୱଜନଙ୍କ ନିକଟରୁ ସହଯୋଗିତା ନ ପାଇବା ଫଳରେ ସା ଫଳ୍ୟ ଲାଭ ପାଇଁ କଠିନ ପରିଶ୍ରମ କରିବାକୁ ହେବ ।

ରାହୁ ଏକାଦଶ ସ୍ଥାନ ଏବଂ କେତୁ ପଞ୍ଚମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଶୁଭ । କଠୋର ପରିଶ୍ରମ ଫଳରେ ଆପଣ ବ୍ୟବସାୟିକ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉନ୍ନତି କରିପାରିବେ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଅଥବା ରାଜନୈତିକ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣଙ୍କ ପଦୋନ୍ନତିର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ସମାଜରେ ଆପଣ ସମ୍ମାନିତ ବ୍ୟକ୍ତି ହିସାବରେ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ବୃଦ୍ଧି ଅନୁଭବ ରହିବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ମାନଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ପ୍ରତି ଦୃଷ୍ଟି ଦିଅନ୍ତୁ ।

ରାହୁ କୀ ମହାଦଶା ମେଂ ବୁଧ କା ଅକ୍ତର ୧୬/୦୧/୨୦୨୬ କୋ ସମାପ୍ତ ହୋଗା । ଉପକେ ବାଦ କେତୁ କା ଅକ୍ତର ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଗା । ବୁଧ ଦ୍ୱାଦଶ ଭାବ ମେଂ କୁମ୍ଭ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ଜବକି କେତୁ ସପ୍ତମ ଭାବ ମେଂ କନ୍ୟା ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବିଶେଷ ଅନୁକୂଳ ରହିବ ନାହିଁ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ଧନ ତଥା ସମୟ ଅନାବଶ୍ୟକ ବର୍ବାଦ ହେବ । ତଥା କୌଣସି ମଧ୍ୟ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟରେ ବାସ୍ତବ ସଫଳତା ମିଳିବ ନାହିଁ । ସାଥେ ସାଥେ ସାମ୍ପାଦିକ ବ୍ୟୟରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆର୍ଥିକ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଅସୁବିଧା ର ସାମନା କରିବାକୁ ପଡ଼ି ପାରେ । ଅର୍ଥାତ ବ୍ୟୟ ଉପରେ ନିୟନ୍ତ୍ରଣ ରଖିବା ଦରକାର । ବ୍ୟାପାରରେ ମଧ୍ୟ ସମୟ ଅନୁକୂଳ ରହିବ ନାହିଁ । ତଥା ସମସ୍ୟା ର ସାମନା କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଯଦି ବାକିରୀରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ପଦ ଉନ୍ନତିରେ ବିଳମ୍ବ ତଥା ବାଧା ହେବ । ତଥା ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗଙ୍କ ସହ ତନାବ ପୁଣି ସମ୍ଭବ ରହିବ । ପାରିବାରିକ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ତଥା ସମୃଦ୍ଧିରେ ମଧ୍ୟ ନ୍ୟୁନତା ରହିବ । ତଥା ସଦସ୍ୟଙ୍କ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ସହଯୋଗ ତଥା ସ୍ନେହର ଭାବରେ ଅଲଗା ରହିବ । ଏହାକୁ ଛାଡ଼ି ପରିବାରରେ କୌଣସି ସଦସ୍ୟଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ମଧ୍ୟ ପ୍ରଭାବିତ ହୋଇ ପାରେ । ମିତ୍ର ବର୍ଗଙ୍କ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ବାସ୍ତବ ସହଯୋଗ ମିଳିବ ନାହିଁ । ତଥା ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ବିଶ୍ୱାସର ଭାବରେ ମଧ୍ୟ ଅଭାବ ଆସିବ । ଅର୍ଥାତ ଅନ୍ୟ ଉପରେ ନିର୍ଭର ନ କରନ୍ତୁ । ତଥା ଶଙ୍କଟର କାର୍ଯ୍ୟ ଠାରୁ ଦୂରରେ ରହିବ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭା ଶୁଭ ଫଳରେ ଯୁକ୍ତ ରହିବ । ତଥା ଅଶୁଭ ଫଳର ପ୍ରାପ୍ତି ଶୁଭ ଫଳରୁ ଅଧିକ ହେବ । ପରିବାରରେ ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟରେ ଅଶାନ୍ତିର ବାତାବରଣ ରହିବ । ତଥା ସଦସ୍ୟଙ୍କ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ଜଣେ ଅନ୍ୟଙ୍କ ପ୍ରତି ସହଯୋଗ ତଥା ସ୍ନେହର ଭାବରେ ଅଭାବ ଆସିବ । ସାଥେ ସାଥେ ପତ୍ନୀଙ୍କ ସହ ମଧ୍ୟ ସମ୍ଭବରେ ତନାବ ରହିବ । ତଥା ବାମତ୍ୟ ଜୀବନ ପ୍ରଭାବିତ ହେବ । ବ୍ୟାପାରରେ ମଧ୍ୟ ସମସ୍ୟା ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ ଏବଂ ଲାଭ ମାର୍ଗ ଅବରୁଦ୍ଧ ରହିବ । ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତିରେ ମଧ୍ୟ ଅସ୍ଥିରତା ରହିବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଧନ ଅଭାବ ଦ୍ୱାରା ଅସୁବିଧା ହେବ । ବାକିରୀରେ ମଧ୍ୟ ପଦ ଉନ୍ନତିରେ ବିଳମ୍ବ ହେବ । ତଥା ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗଙ୍କ ସହ ସମ୍ଭବରେ ତନାବ ରହିବ । ଏହି ସମୟରେ ଯଦି ଆପଣ ସତର୍କ ନ ରହନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ଶତ୍ରୁ ବର୍ଗଙ୍କ ସହ ଅସୁବିଧା ମଧ୍ୟ ହୋଇ ପାରେ । ଅର୍ଥାତ ଶଙ୍କଟର କାର୍ଯ୍ୟ ଠାରୁ ଦୂରରେ ରହିବା ଦରକାର ।

ମାସିକ ପଞ୍ଜାବେଶ

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ରହିବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ବିଶେଷ ସଫଳତା ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ମଧ୍ୟ ପ୍ରସନ୍ନ ତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ଉନ୍ନତିର ଆଡ଼କୁ ଅଗ୍ରସର ହେବେ । ସାଥେ ସାଥେ ବନ୍ଧୁ ତଥା ମିତ୍ର ବର୍ଗଙ୍କ ସହ ମଧୁର ତଥା ଘନିଷ୍ଠ ସମ୍ପର୍କ ରହିବ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେଉ ଥିବ । ତଥା ପର ଲୋକଙ୍କ ଉପକାର କାର୍ଯ୍ୟରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଡାକ୍ତର ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଅଧିକାଂଶ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଏହି ମାସରେ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ମାନସିକ ରୂପେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ପ୍ରସନ୍ନ ତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ଶ୍ରଦ୍ଧା ରହିବ, ତଥା ନିୟମ ପୂର୍ବକ ଆପଣ ତାଙ୍କର ପୂଜା ତଥା ସେବା କରିବେ । ଏହି ସମୟରେ ସାମାଜିକ ଜନଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରଭୁତ୍ୱରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ସବୁ ଲୋକ ଆପଣଙ୍କ ଶ୍ରେଷ୍ଠତା ତଥା ପ୍ରଭୁତ୍ୱକୁ ମନରେ ସ୍ୱୀକାର କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ କାର୍ତ୍ତିକ ମଧ୍ୟ ଦୂର ଦୂର ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ବିସ୍ତାର ହେବ, ତଥା ଅନ୍ୟ ପ୍ରୋତ୍ସାହନ ମଧ୍ୟ ଲାଭ ଅର୍ଜନ ହେଉ ଥିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ନବୀନ ଗୃହର ପ୍ରାପ୍ତି କିମ୍ବା ସ୍ଥାନ ପରିବର୍ତ୍ତନ ମଧ୍ୟ କରି ପାରନ୍ତି । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ମନୋ କାମନା ମଧ୍ୟ ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେବ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସରେ ସ୍ତ୍ରୀ ତଥା ପୁତ୍ରଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ତଥା ନବୀନ ବସ୍ତ୍ରର ପ୍ରାପ୍ତି କିମ୍ବା ବସ୍ତୁକୁ ଅର୍ଜିତ କରି ପାରନ୍ତି । ଏହି ପରି ଆପଣ ଆନନ୍ଦ ପୂର୍ବକ ଏହି ମାସକୁ ବ୍ୟତୀତ କରିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟତୟ ଶୁଭ ହିଁ ରହିବ, ତଥାପି ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରାରେ ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ହେଉ ଥିବ । ଏହି ସମୟରେ ସ୍ତ୍ରୀ ପକ୍ଷରୁ ଲାଭ ଅର୍ଜନ କରିବାରେ ଆପଣ ସଫଳ ରହିବେ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ସୋଭାଗ୍ୟରେ ମଧ୍ୟ ଆଶାତୀତ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ଅଧିକାଂଶ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଯଥା ସମୟରେ ସିଦ୍ଧ ହେବ । ଏହା ଦ୍ୱାରା ମାନସିକ ରୂପେ ଆପଣ ପୁର୍ଣ୍ଣ ପ୍ରସନ୍ନ ତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ଏହି ମାସରେ ସରକାର କିମ୍ବା ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣ ଆଶ୍ଚର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ଏବଂ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ଯଥୋଚିତ ଲାଭ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଠିକ୍ ହିଁ ରହିବ, ତଥା ଜ୍ଞାନ ଅର୍ଜନର ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ରୁଚି ଉତ୍ତମ ହେବ । ମିତ୍ର ଏବଂ ବନ୍ଧୁଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମଧୁର ସମ୍ପର୍କ ରହିବ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ବାଞ୍ଛିତ ସହଯୋଗ ତଥା ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବାରେ ସଫଳ ରହିବେ, ଏହି ମାସରେ ଆପଣ ଇଚ୍ଛିତ ଦ୍ରବ୍ୟକୁ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ପ୍ରସନ୍ନତା ପୂର୍ବକ ଏହାର ଉପଭୋଗ କରିବେ । ସନ୍ତତି ପକ୍ଷରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ଏବଂ ସମାଜରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସମ୍ମାନ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣଙ୍କ ଅଟଳ ଥିବା କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟରେ ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେବ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସରେ ଶୁଭ ଫଳର ସାଥେ ସାଥେ ସମୟ ସମୟରେ ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଘଟିତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ଠଣ୍ଡା କିମ୍ବା ବାତରୁ ଉତ୍ତମ ରୋଗ ଦ୍ୱାରା କଷ୍ଟର ଅନୁଭୂତି କରିବେ, ସାଥେ ସାଥେ କୌଣସି ଏପରି କାର୍ଯ୍ୟକୁ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ପରେ ଆପଣଙ୍କୁ ପଶ୍ଚାତାପ ମଧ୍ୟ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଅଗ୍ନିରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ କ୍ଷତି ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରନ୍ତି । ଅର୍ଥାତ ସାବଧାନୀ ପୂର୍ବକ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କଳାପକୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅଶୁଭ ତଥା ଅସୁବିଧା ଉତ୍ତମ କରିବା ବାଲା ସିଦ୍ଧ ହେବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ଅଧିକ ମାତ୍ରାରେ ବ୍ୟୟ କରିବେ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ଆର୍ଥିକ ଦୃଷ୍ଟିରେ ହଇରାଣ ହେବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣ ଦୁଷ୍ଟ ମନୁଷ୍ୟର ସଙ୍ଗରେ

ମଧ୍ୟ ରହିବେ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ଆପଣ ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରକାର ର ଶାରୀରିକ କଷ୍ଟ ଅନୁଭୂତି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସବୁ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଅଧିକ ପରିଶ୍ରମ ଦ୍ୱାରା ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ହିଁ ସଫଳ ହେବ । ଧର୍ମ ର ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ବିଶେଷ ଶ୍ରଦ୍ଧା ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ଉପେକ୍ଷା ର ଭାବ ରହିବ । ସମ୍ଭବି ତଥା ମିତ୍ର ଙ୍କ ସହ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ମଧୁର ସମ୍ପର୍କ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ତାଙ୍କର ପରସ୍ପର ମନମୁଖାବ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ଯେଉଁ ମଧ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟ ପ୍ରାରମ୍ଭ କରିବେ, ସେଥିରେ ସଫଳତା ର ଅପେକ୍ଷା ଅସଫଳତା ହିଁ ମିଳିବ । ଫଳତଃ ମାନସିକ ରୂପ ରେ ଆପଣ ଅସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଶତ୍ରୁ ବର୍ଗ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଏହି ସମୟ ରେ ଚିନ୍ତିତ ଏବଂ ଭୟଭୀତ ରହିବେ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ଶୀତ ରୁ ଉତ୍ତନ ରୋଗ ଦ୍ୱାରା ଶାରୀରିକ କଷ୍ଟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ଏବଂ କୌଣସି ଏପରି କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ସମାଜ ରେ ଅବମାନନା ହେବ, ତଥା ପରେ ଆପଣ ପଶ୍ଚାତପ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଅଗ୍ନି ଦ୍ୱାରା ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ହାନି ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଅର୍ଥାତ ବୁଦ୍ଧିମତା ତଥା ବିଧି ପୁର୍ବକ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବୁ ।

ଏହି ମାସ କୁ ଆପଣ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ସୁଖ ଏବଂ ଶାନ୍ତି ପୁର୍ବକ ବ୍ୟତୀତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ, ତଥା ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ପ୍ରସନ୍ନ ତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପରାକ୍ରମ ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ ତଥା ଶତ୍ରୁ କୁ ପରାଜିତ କରିବା ରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆୟ ସ୍ରୋତ ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ବାଞ୍ଛିତ ଲାଭ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ସୁଦୃଢ଼ ରହିବ । ବ୍ୟାପାର କିମ୍ବା ଚାକିରୀ କୁ ଛାଡ଼ି ଅନ୍ୟ ସାଧନ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଧନ ଅର୍ଜନ କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଯଥା ସମୟ ସିଦ୍ଧ ହେବ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ଭାଗ୍ୟ ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣଙ୍କ ଚିର ପ୍ରତୀକ୍ଷିତ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଏହି ମାସ ରେ ସଫଳ ହେବ । ମିତ୍ର ଏବଂ ବନ୍ଧୁ ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ଘନିଷ୍ଠ ସମ୍ପର୍କ ରହିବ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ବାଞ୍ଛିତ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେଉ ଥିବ । ସାଥେ ସାଥେ ସାଂସାରିକ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସଫଳ ବନେଇବା ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ସମର୍ଥ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କ ଭଜ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପ୍ରସନ୍ନ ଏବଂ ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ଯଥୋଚିତ ସମ୍ମାନ ତଥା ସହଯୋଗ ମିଳୁ ଥିବ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ସ୍ତ୍ରୀ ଏବଂ ପୁତ୍ର ଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ବାଞ୍ଛିତ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ତଥା ଆପଣ ନବୀନ ବସ୍ତ୍ର କିମ୍ବା ବସ୍ତୁ ଆଦି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ସଫଳ ହୋଇ ପାରନ୍ତି । ଏହି ପରି ଆପଣ ସୁଖ ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନତା ପୁର୍ବକ ନିଜର ସମୟ ବ୍ୟତୀତ କରିବେ ।

ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ସାମାନ୍ୟତୟ ଶୁଭ ଫଳ ହିଁ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥାପି ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ନ୍ୟୁନାଧିକ ରୂପ ରେ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ନିଜର ପରାକ୍ରମ ଏବଂ ଉତ୍ସାହ ଦ୍ୱାରା ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରା ରେ ଧନ ଅର୍ଜନ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ପରିବାର ଏବଂ ସାମାଜିକ ଜନ ଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ଯଥୋଚିତ ସମ୍ମାନ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ତଥା ସେଥିରେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ବନ୍ଧୁ ଏବଂ ମିତ୍ର ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମଧୁର ସମ୍ପର୍କ ରହିବ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେଉ ଥିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଭଜ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ଆଶ୍ରୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଫଳତଃ ଆପଣଙ୍କ ଅନେକ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଯଥା ସମୟ ରେ ସିଦ୍ଧ ହେବ । ମିଷ୍ଟାନ୍ନ ପ୍ରତି ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ତୀବ୍ର ଇଚ୍ଛା ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ଏବଂ ଶାରୀରିକ ବଳ ରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଶତ୍ରୁ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ଏହି ସମୟ ରେ ନିର୍ବଳ ରହିବେ, ତଥା ତାଙ୍କୁ ପରାଜିତ ତଥା ଭୟଭୀତ କରିବା ରେ ଆପଣ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ବାଞ୍ଛିତ ସୁଖ ଏବଂ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ଅନ୍ୟ ସାଧନ ରେ ଧନ ଅର୍ଜନ କରିବା ରେ ମଧ୍ୟ ସଫଳ ରହିବେ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଘଟିତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ଗରମ କିମ୍ବା ପିତ ରୋଗ ରେ ଶାରୀରିକ ଅସୁସ୍ଥତା ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ଏବଂ ରକ୍ତ ବିକାର ର ମଧ୍ୟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଅର୍ଥାତ ଶାରୀରିକ ସୁରକ୍ଷା ର ଏହି ସମୟ ରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ଧ୍ୟାନ ରଖିବା ଦରକାର, ତଥା ସାବଧାନୀ ପୁର୍ବକ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବା ଦରକାର ।

ଏହି ମାସ କୁ ଆପଣ ସୁଖ ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନତା ପୁର୍ବକ ବ୍ୟତୀତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ପରାକ୍ରମ ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ ତଥା ସବୁ ସାମାଜିକ ତଥା ଅନ୍ୟ ଲୋକ ଆପଣଙ୍କ ଶ୍ରେଷ୍ଠତା ତଥା ପ୍ରଭୁତା କୁ ସ୍ୱୀକାର କରିବେ ଏବଂ ଯେ ଥାଡ଼ିତ ସମ୍ମାନ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣ ଧନ ଏବଂ ସୁଖ ଉପଭୋଗ ର ସାମଗ୍ରୀ ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ମଧ୍ୟ ସଫଳ ରହିବେ । ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ଶ୍ରଦ୍ଧା ରହିବ ତଥା ବିଧି ପୁର୍ବକ ଆପଣ ତାଙ୍କର ସେବା ତଥା ପୂଜା କରିବେ । ଅନ୍ୟ ଲୋକ ଙ୍କ ପର ଉପକାର ସମ୍ପନ୍ନି କାର୍ଯ୍ୟ କୁ କରିବା ପାଇଁ ମଧ୍ୟ ସବୁ ବେଳେ ତପ୍ତ ରହିବେ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ, ତଥା ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣ ବାଞ୍ଛିତ ଲାଭ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ବନ୍ଧୁ ଏବଂ ମିତ୍ର ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମଧୁର ସମ୍ପର୍କ ରହିବ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ଯେ ଥାଡ଼ିତ ସମ୍ମାନ ତଥା ସହଯୋଗ ମିଳୁ ଥିବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣଙ୍କ ମନୋ କାମନା ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟ ରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ହେବ, ଫଳତଃ ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ପ୍ରସନ୍ନତା ର ଅନୁଭୂତି କରିବେ, ତଥା ଭାଗ୍ୟ ଉଦୟ ସମ୍ପନ୍ନି କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟ ରେ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ବୃଦ୍ଧି ରେ ଏହି ସମୟ ରେ ନିର୍ମଳତା ର ଭାବ ରହିବ, ତଥା ନିଜର ବୁଦ୍ଧିମତା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରା ରେ ଧନ ଅର୍ଜନ ତଥା ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଧର୍ମ ର ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଶ୍ରଦ୍ଧା ର ପ୍ରଦର୍ଶନ କରିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟତୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ଶୁଭ ଫଳ ର ଅପେକ୍ଷା ଅଶୁଭ ଫଳ ହିଁ ଅଧିକ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ଅନେକ ପ୍ରକାର ର କଷ୍ଟ ଅନୁଭୂତି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଶତ୍ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ଅଧିକ ବଳବାନ ହେବେ ଅର୍ଥାତ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣ ଚିନ୍ତିତ ତଥା ଭୟଭୀତ ରହିବେ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଅଶାନ୍ତ ତଥା ଅସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ବ୍ୟାପାର ଆଦି କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ମାନ୍ଦା ରହିବ, ତଥା ଡାକିରୀ ଆଦି ରେ ମଧ୍ୟ ଅନାବଶ୍ୟକ ସମସ୍ୟା ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣ କୌଣସି କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ପରିବର୍ତ୍ତନ କରି ପାରନ୍ତି କିମ୍ବା କୌଣସି କାର୍ଯ୍ୟ ଅଟକି ମଧ୍ୟ ଯାଇ ପାରେ । ସମାଜ ରେ ଅନ୍ୟ ଲୋକଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ଭଲ ସମ୍ପର୍କ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ପରସ୍ପର ବୈମନସ୍ୟ ର ଭାବ ରହିବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ସାମାଜିକ ସମ୍ମାନ ରେ ମଧ୍ୟ ନ୍ୟୁନତା ପରିଲକ୍ଷିତ ହେବ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣଙ୍କ ଏହି ମାସ ରେ ଧନ ହାନି ର ଯୋଗ ବନିବ, ତଥା ଶରୀର କୌଣସି ନବୀନ ରୋଗ ରେ ପୀଡ଼ିତ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଅର୍ଥାତ ନିଜର ସମସ୍ତ ସାଂସାରିକ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ଭଲ ଭାବେ ଭାବି ଚିନ୍ତି ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଅବଶ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ସ୍ତ୍ରୀ ତଥା ପୁତ୍ର ଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ତଥା ନିଜର ବୁଦ୍ଧିମତା ଦ୍ୱାରା ଧନ ଅର୍ଜନ କରିବା ରେ ସଫଳତା ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଧର୍ମ ର ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ଶ୍ରଦ୍ଧା ରହିବ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ଏହି ବିତ୍ତର ରେ ଆପଣ ସମାଜ ରେ ବାଞ୍ଛିତ ସମ୍ମାନ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ହିଁ ଶୁଭ ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନତା ପ୍ରଦାନ କରିବା ବାଲା ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ

ବୁଦ୍ଧି ରେ ନିର୍ମଳତା ର ଭାବ ର ବୁଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ଆପଣଙ୍କ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ବୁଦ୍ଧିମତା ଦ୍ୱାରା ହିଁ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ବିବିଧ ପ୍ରକାର ର ଦ୍ରବ୍ୟ ଅର୍ଜିତ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ପୁତ୍ର ସନ୍ତତି ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ଏହି ମାସରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସୁଖ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଜ୍ଞାନ ଅର୍ଜନରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ରୁଚି ଉତ୍ତମ ହେବ, ତଥା ଏଥିରେ ଆପଣ ସଫଳ ମଧ୍ୟ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରଭୁତ୍ୱରେ ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟରେ ବୁଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ସବୁ ଲୋକ ଆପଣଙ୍କ ଶ୍ରେଷ୍ଠତା କୁ ହୃଦୟରେ ସ୍ୱୀକାର କରିବେ, ତଥା ଆପଣଙ୍କୁ ଯଥୋଚିତ ସମ୍ମାନ ମଧ୍ୟ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ଅନେକ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ସଫଳ ହେବ, ତଥା କେଉଁ ଠାରୁ କୌଣସି ଶୁଭ ସମାଚାର ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ହାର୍ଦ୍ଦିକ ପ୍ରସନ୍ନତା ର ଅନୁଭୂତି ହେବ । ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନରେ ଶ୍ରଦ୍ଧା ଉତ୍ତମ ହେବ, ତଥା ବିଧି ପୁର୍ବକ ଆପଣ ତାଙ୍କର ପୂଜା ତଥା ସେବା କରିବେ । ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ଯଥୋଚିତ ସମ୍ମାନ ତଥା ସହଯୋଗ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ସମାଜରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ଯଶ ତଥା ପ୍ରତିଷ୍ଠାରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ ।

ସାଥେ ସାଥେ ଏହି ମାସରେ ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ଠାରୁ ଆବଶ୍ୟକ ସହଯୋଗ ଅର୍ଜିତ କରିବେ, ତଥା ନିଜର ବୁଦ୍ଧି ତୃପ୍ତରତା ଦ୍ୱାରା ପ୍ରଭୁର ମାତ୍ରାରେ ଧନ ଅର୍ଜନ ତଥା ସୁଖ ଅର୍ଜନରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଧର୍ମର ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଶ୍ରଦ୍ଧାବାନ ରହିବେ, ତଥା ସମାଜରେ ଆଦରଣୀୟ ବୁଝାଯିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅଶୁଭ ଫଳ ପ୍ରଦାନ କରିବା ବାଲା ହେବ । ତଥାପି ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରାରେ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେଉ ଥିବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ମଧ୍ୟମ ରହିବ, ଫଳତଃ ଶରୀରରେ ଦୁର୍ବଳତା ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଶତ୍ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ବଳବାନ ରହିବେ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅନାବଶ୍ୟକ ସମସ୍ୟା ଉତ୍ପନ୍ନ କରିବେ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ତାଙ୍କ ପ୍ରତି ଭୟଭୀତ ତଥା ଚିନ୍ତିତ ରହିବେ । ଏହି ମାସରେ ଆପଣଙ୍କ ଘରେ କୌଣସି ଡୋରା ମଧ୍ୟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି, ଅର୍ଥାତ ସାବଧାନ ରହିବା ଦରକାର । ସାଥେ ସାଥେ ଡାକିରୀ କିମ୍ବା ବ୍ୟବସାୟରେ ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗଙ୍କ ଉପେକ୍ଷା ନକରନ୍ତୁ ତଥା ବିନମ୍ରତା ପୁର୍ବକ ତାଙ୍କର ଆଜ୍ଞା କୁ ପାଳନ କରନ୍ତୁ ଅନ୍ୟଥା ଆପଣଙ୍କୁ ଦଣ୍ଡିତ କରାଯାଇପାରେ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ଅନେକ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରାରେ ହିଁ ସଫଳ ହେବ, ତଥା ଧନର ବ୍ୟୟ ମଧ୍ୟ ଅଧିକ ହେବ । ଫଳତଃ ଆର୍ଥିକ ଦୃଷ୍ଟିରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ କଷ୍ଟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିପାରନ୍ତି । ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣ କୌଣସି ଏପରି କାର୍ଯ୍ୟକୁ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ, ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ପରେ ପଶ୍ଚାତପ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ ତଥା ସମାଜରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ଆଦରରେ ନ୍ୟୁନତା ଆସିବ । ବନ୍ଧୁ ଏବଂ ମିତ୍ରଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ଏହି ସମୟରେ ମନ ମୁଗାବ ରହିବ, ତଥା ମାନସିକ ଇଚ୍ଛା ଅପୂର୍ଣ୍ଣ ହିଁ ରହିବ । ଅର୍ଥାତ ତନାବରୁ ବଞ୍ଚିବା ପାଇଁ ବିଧି ପୁର୍ବକ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କଳାପକୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସରେ ଆପଣ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଅର୍ଜିତ କରିବେ । ଏହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ଶ୍ରେଷ୍ଠ ଜନ ତଥା ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀଙ୍କ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଆପଣ ନବୀନ ବସ୍ତ୍ର କିମ୍ବା ଦ୍ରବ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଅର୍ଜିତ କରିପାରିବେ, ତଥା ମାନସିକ ରୂପରେ ପ୍ରସନ୍ନତା ର ଅନୁଭୂତି କରିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବିଶେଷ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ସ୍ତ୍ରୀ ଏବଂ ବନ୍ଧୁ ବର୍ଗଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣ କଷ୍ଟ ଅନୁଭୂତି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ କିମ୍ବା ଆପଣଙ୍କୁ ମଧ୍ୟ କୌଣସି ପ୍ରକାରର କଷ୍ଟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ବଳବାନ ରହିବେ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅନାବଶ୍ୟକ ସମସ୍ୟା ତଥା ବାଧା ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣ ପ୍ରାୟ ଅସୁବିଧା ର ସାମନା କରିବେ, ତଥା ମାନସିକ ରୂପରେ ଚିନ୍ତିତ ମଧ୍ୟ ରହିବେ । ଏହି ମାସରେ ଆପଣଙ୍କ ଉତ୍ସାହର ଭାବର ନ୍ୟୁନତା ରହିବ, ତଥା ଧନର ବ୍ୟୟ ମଧ୍ୟ ଅନାବଶ୍ୟକ ରୂପରେ ଅଧିକ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆର୍ଥିକ ରୂପରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଅସୁବିଧା

ରହିବେ । ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱଭାବ ରେ ଲୋଲୁପତା ର ଭାବ ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ବନ୍ଧୁ ଏବଂ ମିତ୍ର ଙ୍କ ସହ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ଭଲ ସମ୍ପର୍କ ରହିବ ନାହିଁ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ବାଞ୍ଛିତ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ଅସଫଳ ରହିବେ, ତଥା ଏପରି ସମୟ ରେ ମିତ୍ର ମଧ୍ୟ ଶତ୍ରୁ ଙ୍କ ପରି ବ୍ୟବହାର କରିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ପରିବାର ତଥା ଅନ୍ୟ ସାମାଜିକ ଜନ ରୁ ମଧ୍ୟ ବିବାଦ ଆଦି ହେଉ ଥିବ । ଅର୍ଥାତ ବୃଦ୍ଧିମତା ଏବଂ ବିଧି ପୂର୍ବକ ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କଳାପ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସ ରେ ନ୍ୟୁନାଧିକ ରୂପ ରେ ଆପଣ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଅର୍ଜିତ କରିବେ । ଏହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ନିଜର ବୃଦ୍ଧିମତା ଦ୍ୱାରା ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ସଫଳତା ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଧନ ତଥା ସୁଖ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବା ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ସଫଳତା ମିଳିବ । ଅର୍ଥାତ ମାନସିକ ରୂପ ରେ ଆପଣ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ହୋଇ ପାରିବେ ।

ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣ ସାମାନ୍ୟତୟ ଅଶୁଭ ଫଳ ହିଁ ଅଧିକ ମାତ୍ରା ରେ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ଶୁଭ ଫଳ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ ର ପ୍ରବଳ ହେବା ଦ୍ୱାରା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣ କଷ୍ଟ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ଚିନ୍ତିତ ମଧ୍ୟ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ ଘରେ କୌଣସି ପ୍ରକାର ର ଚୋରା ମଧ୍ୟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି ଅର୍ଥାତ ସତର୍କ ରହନ୍ତୁ । ଏହି ମାସ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ପରିଶ୍ରମ କରିବା ପରେ ମଧ୍ୟ ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ହିଁ ସଫଳ ହୋଇ ପାରିବେ, ତଥା ବିଭିନ୍ନ ପ୍ରକାର ର ବ୍ୟବଧାନ ଆସୁ ଥିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଧନ ବ୍ୟୟ ମଧ୍ୟ ଅଧିକ ମାତ୍ରା ରେ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ଆର୍ଥିକ ଦୃଷ୍ଟି ରୁ ମଧ୍ୟ ଅସୁବିଧା ରହିବେ । ଧର୍ମ ର ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ବିଶେଷ ଶ୍ରଦ୍ଧା ରହିବ ନାହିଁ ତଥା ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣ ଉପେକ୍ଷା ର ଭାବ ରଖିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଠାକ ରହିବ ନାହିଁ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କୁ ଅନେକ ପ୍ରକାର ର ଶାରୀରିକ କଷ୍ଟ ହୋଇ ପାରେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆପଣଙ୍କ କୌଣସି ଦୂର ସମୀପ ର ଯାତ୍ରା ମଧ୍ୟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଏହା ଛଡ଼ା ସାଂସାରିକ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଅସଫଳ ରହିବେ, ତଥା କୌଣସି ମକଦ୍ଦମା ଆଦି ରେ ଧନ ହାନି ର ମଧ୍ୟ ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ମାନସିକ ରୂପ ରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ଅସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ଅର୍ଥାତ ସାବଧାନୀ ତଥା ବୃଦ୍ଧିମତା ଦ୍ୱାରା ସମୟ କୁ ବ୍ୟତୀତ କରନ୍ତୁ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସ ରେ ସମୟ ସମୟ ରେ ଆପଣ ଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ଅର୍ଜିତ କରି ପାରିବେ । ଏହାର ପ୍ରଭାବ ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ସ୍ତ୍ରୀ ଙ୍କ ପୁଣ୍ୟ ତଥା ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ବୃଦ୍ଧି ରେ ନିର୍ମଳତା ର ଭାବ ରହିବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ଅନେକ କାର୍ଯ୍ୟ ବୃଦ୍ଧିମତା ଦ୍ୱାରା ପୁଣ୍ୟ ହେବ, ତଥା ଧନ ଅର୍ଜନ ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ଧର୍ମ ର ପ୍ରତି ମଧ୍ୟ ଶ୍ରଦ୍ଧା ର ଭାବ ରଖି ସମାଜ ରେ ଆଦର ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ ।

ଏହି ମାସ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟତୟ ଶୁଭ ହିଁ ରହିବ, ତଥାପି ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଭଲ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପୁଣ୍ୟ ପ୍ରସନ୍ନ ତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ, ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ପୁଣ୍ୟ ସହଯୋଗ ତଥା ସମ୍ମାନ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣଙ୍କ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଯଥା ସମୟ ରେ ସିଧା ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରା ରେ ଧନ ଅର୍ଜନ କରିବା ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ସଫଳ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଘରେ ଏହି ମାସ ରେ କୌଣସି ଧାର୍ମିକ ଉତ୍ସବ ର ଆୟୋଜନ ମଧ୍ୟ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ସନତ୍ତି ପକ୍ଷ ରୁ ଆପଣ ପୁଣ୍ୟ ସୁଖୀ ରହିବେ, ତଥା ଦେବତା ଏବଂ ବ୍ରାହ୍ମଣ ଙ୍କ ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ଅନନ୍ୟ ଶ୍ରଦ୍ଧା ରହିବ, ତଥା ନିୟମ ପୂର୍ବକ ଆପଣ ତାଙ୍କର ପୂଜା ତଥା ସେବା କରିବେ । ସମାଜ ରେ ସର୍ବତ୍ର ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଯଶ ତ ଥା ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ, ତଥା ଭାଗ୍ୟ ଉନ୍ନତି ସମ୍ପନ୍ନି ଶୁଭ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ବୃଦ୍ଧି ଏହି ସମୟ ରେ ନିର୍ମଳ ରହିବ, ତଥା ଲାଭ ଦାୟକ ଯାତ୍ରା ର ମଧ୍ୟ ଏହି ମାସ ରେ ଯୋଗ ବନିବ । ସାଥେ ସାଥେ ସରକାରୀ ଚକ୍ର ଠାରୁ ଲାଭ ଅର୍ଜନ କରିବା ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ସଫଳ ରହିବେ । ଏହା ଛଡ଼ା ବନ୍ଧୁ ଏବଂ ମିତ୍ର ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ମଧୁର ସମ୍ପର୍କ ରହିବ, ତଥା ସମାଜ ରେ ପୁଣ୍ୟ ସମ୍ମାନ ପ୍ରାପ୍ତ



କରିବେ ।

ପରନ୍ତୁ ଏହି ମାସ ରେ ଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ବେଳେ ବେଳେ ଆପଣଙ୍କୁ ଅଶୁଭ ଫଳ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଆପଣ ଗରମ କିମ୍ବା ପିତ ରୁ ଉତ୍ପନ୍ନ ରୋଗ ଦ୍ୱାରା ଶାରୀରିକ କଷ୍ଟ ଅନୁଭୂତି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ, ତଥା ଅନ୍ୟ କାରଣ ଦ୍ୱାରା ରକ୍ତ ବିକାର ର ମଧ୍ୟ ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ଅର୍ଥାତ ଶାରୀରିକ ସୁରକ୍ଷା ର ଧ୍ୟାନ ରଖନ୍ତୁ, ତଥା ନିଜର କାର୍ଯ୍ୟ କଳାପ କୁ ବୃଦ୍ଧିମତା ଦ୍ୱାରା ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।



ବୃହସ୍ପତି ୫ମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ସାମଗ୍ରିକ ଭାବେ ଶୁଭ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ଜ୍ୟୋତିଷଶାସ୍ତ୍ର, ସାହିତ୍ୟ ଓ ସଙ୍ଗିତ ପ୍ରତି ଆଗ୍ରହୀ ହେବେ ଏବଂ ଅଧ୍ୟୟନରେ ସମୟ ବ୍ୟୟ କରିବେ । ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ହେବ । ଆପଣ ରାଜନୀତିବିଦ୍ ବା ଉଚ୍ଚପଦସ୍ଥ କର୍ମଚାରୀ ମାନଙ୍କ ସଂସ୍ପର୍ଶରେ ଲାଭବାନ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କର କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଓ ବ୍ୟବସାୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉନ୍ନତିର ଯୋଗ ଅଛି । ଆପଣଙ୍କର ସନ୍ତାନ ନିଜ ନିଜ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆଶାନ୍ୱରୁପ ଫଳ ଲାଭ କରିବେ । କିନ୍ତୁ ଦଶା କ୍ଷେତ୍ରରେ ସଫଳ ପାଇବେ ନାହିଁ । ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କୁ ନାନା ବାଧା-ବିପତ୍ତିର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେବାକୁ ହେବ ।

ଏଇ ବର୍ଷ ଶନିର ପ୍ରଭାବ ପାଇଁ ଆପଣ ଗ୍ୟାନ୍ଧିକର ଅସୁବିଧା ଭୋଗିବେ ଏବଂ ମାନସିକ ଯତ୍ନଶା ଭୋଗିପାରନ୍ତି । ପରିବାରର ସଦସ୍ୟ ମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଅସନ୍ତୋଷ ସୃଷ୍ଟି ହୋଇଯାଏ, ଗୃହ ପରିବେଶ ଶାନ୍ତି ବଜାୟ ରହିବ ନାହିଁ । ଆପଣଙ୍କ ସ୍ତ୍ରୀ ଦୈହିକ ଦିଗରୁ ସୁସ୍ଥତା ରହିଲେ ମଧ୍ୟ ବିବାହିତ ଜୀବନ ସୁଖମୟ ହେବ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଓ ବ୍ୟବସାୟିକ କ୍ଷେତ୍ରରେ ସାଫଲ୍ୟ ପାଇବାକୁ ହେଲେ ଆପଣଙ୍କୁ କଠୋର ପରିଶ୍ରମ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ରାଜନୀତି ବା କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ପଦୋନ୍ନତି ବିଳମ୍ବ ହୋଇପାରେ । ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥା ଅବନତି ଘଟିବ । ଏଇ ବର୍ଷର ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ଗ୍ରହ ଓ ଦଶା କ୍ଷେତ୍ରରେ ସୁପଳ ନ ପାଇବା ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କୁ ସାଫଲ୍ୟ ପାଇବାକୁ ହେଲେ କଠୋର ପରିଶ୍ରମ କରିବାକୁ ହେବ । ଶନିର ମନ୍ଦ ପ୍ରଭାବରେ ହାତକୁ ମୁକ୍ତି ପାଇବା ପାଇଁ ଶନିର ଆରାଧନା କରିବା ଉଚିତ୍ ଏବଂ ବାମ ହସ୍ତର ମଝି ଆଙ୍ଗୁଳିରେ ନୀଳା ପରିଧାନ କରିବା ବିଶେଷ ପ୍ରୟୋଜନ ।

ରାହୁ ଦଶମ ସ୍ଥାନ ଏବଂ କେତୁ ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ସାଧାରଣ ଭାବେ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ସାଫଲ୍ୟ ଲାଭ ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ କଠୋର ଶ୍ରମ କରିବାକୁ ହେବ ଏବଂ ପଦୋନ୍ନତିର ସମ୍ଭାବନା ମଧ୍ୟ ଅଛି । ଆପଣ ରାଜନୀତିବିଦ୍ ମାନଙ୍କ ସଂସ୍ପର୍ଶରେ ଆସି ଉପକୃତ ହେବେ ଆର୍ଥିକ ଦିଗରୁ ଏହି ସମୟଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଶୁଭ । କିନ୍ତୁ ଆପଣଙ୍କ ପିତା-ମାତାଙ୍କ ଶାରୀରିକ ସୁସ୍ଥାରେ ବିଘ୍ନ ସୃଷ୍ଟି ହେବ ।

ରାହୁ କୀ ମହାଦଶା ମେଂ କେତୁ କା ଅନ୍ତର 0୩/0୨/୨0୨୭ କୋ ସମାପ୍ତ ହୋଗା । ଉସକେ ବାଦ ଶୁକ୍ର କା ଅନ୍ତର ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଗା । କେତୁ ସପ୍ତମ ଭାବ ମେଂ କନ୍ୟା ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ଜବକି ଶୁକ୍ର ଏକାଦଶ ଭାବ ମେଂ ମକର ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭ ଫଳ ଦାୟକ ରହିବ ନାହିଁ । ତଥା ଆପଣଙ୍କ ଭାବି ଥିବା କୌଣସି ମଧ୍ୟ ଯୋଜନା ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେବ ନାହିଁ । ବ୍ୟାପାର ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ପରିଶ୍ରମ ଦ୍ୱାରା ମଧ୍ୟ ଲାଭ ଏବଂ ସଫଳତା ମିଳିବ ନାହିଁ । ତଥା ସମୟ ସମୟ ରେ ଅନାବଶ୍ୟକ ସମସ୍ୟା ତଥା ଅସୁବିଧା ର ସାମନା କରିବା କୁ ପଡ଼ିବ । ଡାକିରୀ ରେ ପଦ ଉନ୍ନତି ସମ୍ଭବି ବାଧା ଉପନ୍ନ ହେବ । ତଥା ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ମଧ୍ୟ ସମ୍ବନ୍ଧ ରେ ତନାବ ରହିବ । ଯାହାର କାରଣ ସେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପ୍ରସନ୍ନ ରହିବେ ନାହିଁ । ତଥା ପାରିବାରିକ ସଦସ୍ୟ ଙ୍କ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ଜଣେ ଅନ୍ୟ ଙ୍କ ପ୍ରତି ବେ ମନସ୍ୟ ଏବଂ ଅସହଯୋଗ ର ଭାବ ରହିବ । ତଥା ସୁଖ ଶାନ୍ତି ତ ଥା ସମ୍ଭବି ମଧ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ଏହା କୁ ଛାଡ଼ି ଶତ୍ରୁ ଏବଂ ପ୍ରତିଦ୍ୱନ୍ଦୀ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅନାବଶ୍ୟକ ସମସ୍ୟା ଉପନ୍ନ କରିବେ । ଅର୍ଥାତ୍ ଏଥି ପ୍ରତି ସାବଧାନ ରହିବା ଦରକାର । ତଥା ଅନ୍ୟତ୍ର ମଧ୍ୟ ଶଙ୍କଟ ର କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ଅପେକ୍ଷା କରିବା ଦରକାର ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭ ଫଳ ଦାୟକ ରହିବ ନାହିଁ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ କୌଣସି ମଧ୍ୟ ଯୋଜନା କାର୍ଯ୍ୟ କାରୀ ହେବ ନାହିଁ । ତଥା ସୁ ଅବସର ରେ ପ୍ରାୟଃ ନ୍ୟୁନତା ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ବ୍ୟାପାର ରେ ମଧ୍ୟ ଅନାବଶ୍ୟକ ଅସୁବିଧା ତଥା ସମସ୍ୟା ର ସାମନା କରିବା କୁ ପଡ଼ିବ । ଯଦି ଡାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ଅଧିକାର ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ବନ୍ଧ ରେ ତନାବ ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ପଦ ଉନ୍ନତି ସମ୍ଭବି ବ୍ୟବଧାନ ତଥା ବିଳମ୍ବ ହେବ । ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ରେ ମଧ୍ୟ ଅସ୍ଥିରତା ରହିବ ଏବଂ ଆୟ ସ୍ରୋତ ର ଅଭାବ ର କାରଣ ଆପଣଙ୍କୁ ସମୟ ସମୟ ରେ ଧନ ଅଭାବ ସମ୍ଭବି ଅସୁବିଧା ର ସାମନା କରିବା କୁ ପଡ଼ିବ । ଏପରି ସମୟ ରେ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ସମ୍ପର୍କ ରେ ନ୍ୟୁନତା ଆସିବ । ଅର୍ଥାତ୍ ସମୟ କୁ ଧର୍ଯ୍ୟ ପୂର୍ବକ ବ୍ୟତୀତ କରନ୍ତୁ । ପରନ୍ତୁ ଲାଭ ଦାୟକ ଏବଂ ସମ୍ମାନ ବର୍ଧକ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଭବିଷ୍ୟତ ପାଇଁ ନବୀନ ଯୋଜନା ସ୍ଥାପିତ ହେବ ।



ଫଳାଦେଶ - 2028

ଏହି ବର୍ଷ ବୃହସ୍ପତି ଷମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ସମୟଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଫଳଦାୟକ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ଜ୍ୟୋତିଷଶାସ୍ତ୍ର, ସାହିତ୍ୟ ଓ ସଙ୍ଗୀତ ପ୍ରତି ଅତ୍ୟନ୍ତ ଆଗ୍ରହୀ ହେବେ । ଏହି ବିଷୟରେ ଜ୍ଞାନାର୍ଜନ ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ କଠୋର ପରିଶ୍ରମ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତିରୁ ସୁଧା ବଢ଼ାଯିବ । ପ୍ରେମ-ବନ୍ଧନରେ ଆବଦ୍ଧ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ବ୍ୟବସାୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉନ୍ନତି ଯୋଗ ଅଛି । ଆପଣ ରାଜନୀତିବିତ୍ଙ୍କ ସଂସ୍ପର୍ଶରେ ଆସିବେ ଏବଂ ସେମାନଙ୍କ ସହିତ ବହୁତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ ସମ୍ପର୍କ ଗଢ଼ି ଉଠିବ । ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ଭାନ ସୁଭାବ ଦିଗରେ ମାଜିତ ହେବ । ଦଶର ଅଶୁଭ ଫଳ ହେତୁ ଭଲ-ମନ୍ଦ ଉଭୟ ଫଳ ଆଶା କରିପାରିବ ।

ଏଇ ବର୍ଷ ଶନିର ପ୍ରଭାବ ହେତୁ ଆପଣ ଦୈନିକ ସୁସ୍ଥତା ବଢ଼ାଯିବ ଯଦି ମଧ୍ୟ ମାନସିକ ଭାବେ ଶାନ୍ତି ବିହୀନ ହେବ । ସାପ୍ତାହ ପାଇବାକୁ ହେଲେ ଆପଣଙ୍କୁ କଠୋର ପରିଶ୍ରମ କରିବାକୁ ହେବ । ଗୃହ ପରିବେଶ ଶାନ୍ତିପୂର୍ଣ୍ଣ ରହିବ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ତ୍ରୀର ଦୈନିକ ଅବସ୍ଥା ମଧ୍ୟ ପ୍ରକାର ରହିବ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ପଦୋନ୍ନତି ହୋଇପାରେ । ଆଶାନ୍ତରୂପ ସାପ୍ତାହ ଲାଭ ପାଇବାକୁ ହେଲେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ପରିଶ୍ରମ ପ୍ରୟୋଜନ । କିନ୍ତୁ ଶନିର ମନ୍ଦ ପ୍ରଭାବରେ ହାତକୁ ମୁକ୍ତି ପାଇବା ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ ଶନିର ଆରାଧନା କରିବା ଉଚିତ୍ । ବାମ ହସ୍ତର ମଝି ଆଙ୍ଗୁଳୀରେ ନୀଳା ଧାରଣ ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ମାନସିକ ଶାନ୍ତି ବା ସାପ୍ତାହ ଆସିପାରେ ।

ରାହୁ ନବମ ସ୍ଥାନ କେତୁ ତୃତୀୟ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ସାମଗ୍ରିକ ଭାବେ ଶୁଭ । ସହଯୋଗରେ ଆପଣ କୌଣସି ଗୁରୁତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ କରିପାରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଶାରିରୀକ ସୁସ୍ଥତା ବଢ଼ାଯିବ ଯଦି ମଧ୍ୟ କ୍ରୋଧ ପ୍ରବଣତା ବେଶାଦେଇପାରେ । କେତୁ ପ୍ରଭାବରେ ସାମାଜିକ ମର୍ଯ୍ୟଦା ବୃଦ୍ଧି ପାଇବ ଏବଂ ଆପଣ ସମାଜରେ ଜଣେ ସମ୍ମାନିତ ବ୍ୟକ୍ତି ହିସାବରେ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ହେବ ଏବଂ ଆପଣ ଆଶାନ୍ତରୂପ ଅର୍ଜନ କରିବେ ଏବଂ ବିଳାସିତାରେ ଜୀବନ ଅତିବାହିତ କରିବେ । ଆପଣ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଓ ବ୍ୟବସାୟରେ ଉନ୍ନତି କରିବେ ।

ଇସ ବର୍ଷ ରାହୁ କା ମହାଦଶା ମେଂ ଶୁକ୍ର କା ଅନ୍ତର ରହେଗା । ଶୁକ୍ର ଏକାଦଶ ଭାବ ମେଂ ମକର ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ଜବକି ରାହୁ ପ୍ରଥମ ଭାବ ମେଂ ମୀନ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବିଶେଷ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ଏହି ସମୟ ରେ ବ୍ୟାପାର ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ବିଶେଷ ସଫଳତା ମିଳିବ ନାହିଁ । ତଥା ଅନ୍ୟତ୍ର ମଧ୍ୟ ମହତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ ଯୋଜନା ସଫଳ ହେବ ନାହିଁ । ଯଦି ଚାକିରୀ ରେ ଆନ୍ତି ଚାହା ହେଲେ ପଦ ଉନ୍ନତି ସମ୍ଭବି ବିଳମ୍ବ ହେବ । ତଥା ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କ ରେ ତନାବ ରହିବ । ବେ ରୋଜଗାର ଙ୍କୁ ମଧ୍ୟ ଉଚିତ ରୋଜଗାର ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ନାହିଁ । ଆର୍ଥିକ ଦୃଷ୍ଟି ରେ ମଧ୍ୟ ସ୍ଥିତି ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ତଥା ଆୟ ସ୍ରୋତ ରେ ଅଭାବ ର କାରଣ ବେଳେ ବେଳେ ଆର୍ଥିକ ଅସୁବିଧା ର ସାମନା କରିବା କୁ ପଡ଼ିବ । ସାଥେ ସାଥେ ପରିବାର ରେ ଅଶାନ୍ତି ର ବାତାବରଣ ବନି ରହିବ । ତଥା ଜଣେ ଅନ୍ୟ ଙ୍କ ପ୍ରତି ସହଯୋଗ ର ଭାବ ର ଅଭାବ ରହିବ । ଏହା କୁ ଛାଡ଼ି ମହତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ ସମ୍ପର୍କ ରେ ମଧ୍ୟ ନ୍ୟୁନତା ରହିବ । କିନ୍ତୁ ଭବିଷ୍ୟତ ପାଇଁ ଆଶାଋତ ରହନ୍ତୁ ।

ଫଳାଦେଶ - 2029

ବୃହସ୍ପତି ଓ ଶୁକ୍ର ଶୁଭ ଶୁଭ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ସାଧାରଣ ଭାବେ ଶୁଭ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କର ଦୈନିକ ଓ ମାନସିକ ସୁସ୍ଥତା ବଜାୟ ରହିବ ନାହିଁ । ସାମାନ୍ୟ ସଫଳତା ପାଇଁ ମଧ୍ୟ କଠୋର ପରିଶ୍ରମ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଶତ୍ରୁପକ୍ଷଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ନାନା ବାଧା-ବିପତ୍ତିର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେବେ । ଆପଣ ଅପ୍ରୟୋଜନୀୟ କାର୍ଯ୍ୟରେ ଅର୍ଥ ବ୍ୟୟ କଲେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଛିଡ଼ାବନ୍ଧା ବଜାୟ ରହିବ । ଆଶାନ୍ତରୂପ ଫଳ ଲାଭ ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ କଠୋର ପରିଶ୍ରମ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ ।

ଏଇ ବର୍ଷ ଶନିର ପ୍ରଭାବ ହେତୁ ଆପଣ ଦୈନିକ ସୁସ୍ଥତା ବଜାୟ ରଖିଲେ ମଧ୍ୟ ମାନସିକ ଭାବେ ଶାନ୍ତି ବିହୀନ ହେବ । ସାମାନ୍ୟ ପାଇବାକୁ ହେଲେ ଆପଣଙ୍କୁ କଠୋର ପରିଶ୍ରମ ଜାରିବାକୁ ହେବ । ଗୃହ ପରିବେଶ ଶାନ୍ତିପୂର୍ଣ୍ଣ ରହିବ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ଵାର ଦୈନିକ ଅବସ୍ଥା ମଧ୍ୟ ପ୍ରକାର ରହିବ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ପଦୋନ୍ନତି ହୋଇପାରେ । ଆଶାନ୍ତରୂପ ସାମାନ୍ୟ ଲାଭ ପାଇବାକୁ ହେଲେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ପରିଶ୍ରମ ପ୍ରୟୋଜନ । କିନ୍ତୁ ଶନିର ମନ୍ଦ ପ୍ରଭାବରେ ହାତକୁ ମୁକ୍ତି ପାଇବା ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ ଶନିର ଆରାଧନା କରିବା ଉଚିତ୍ । ବାମ ହସ୍ତର ମଝି ଆଙ୍ଗୁଳୀରେ ନୀଳା ଧାରଣ ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ମାନସିକ ଶାନ୍ତି ବା ସାମାନ୍ୟ ଆସିପାରେ ।

ରାହୁ ନବମ ସ୍ଥାନ କେତୁ ତୃତୀୟ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ସାମଗ୍ରିକ ଭାବେ ଶୁଭ । ସହଯୋଗରେ ଆପଣ କୌଣସି ଗୁରୁତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ କରିପାରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଶାରିରୀକ ସୁସ୍ଥତା ବଜାୟ ରହିଲେ ମଧ୍ୟ କ୍ରୋଧ ପ୍ରବଣତା ବେଶାଦେଇପାରେ । କେତୁ ପ୍ରଭାବରେ ସାମାଜିକ ମର୍ଯ୍ୟଦା ବୃଦ୍ଧି ପାଇବ ଏବଂ ଆପଣ ସମାଜରେ ଜଣେ ସମ୍ମାନିତ ବ୍ୟକ୍ତି ହିସାବରେ ପ୍ରତିଷ୍ଠିତ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ହେବ ଏବଂ ଆପଣ ଆଶାନ୍ତରୂପ ଅର୍ଜନ କରିବେ ଏବଂ ବିଳାସିତାରେ ଜୀବନ ଅତିବାହିତ କରିବେ । ଆପଣ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଓ ବ୍ୟବସାୟରେ ଉନ୍ନତି କରିବେ ।

ଇସ ବର୍ଷ ରାହୁ କା ମହାବଶା ମେଂ ଶୁକ୍ର କା ଅନ୍ତର ରହେଗା । ଶୁକ୍ର ଏକାଦଶ ଭାବ ମେଂ ମକର ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଂ ଜବକି ରାହୁ ପ୍ରଥମ ଭାବ ମେଂ ମୀନ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଂ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅନୁକୂଳ ଫଳ ଦାୟକ ରହିବ ନାହିଁ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ବ୍ୟାପାର ରେ ଅନାବଶ୍ୟକ ସମସ୍ୟା ତଥା ବ୍ୟବଧାନ ର ସାମନା କରିବା କୁ ପଡ଼ିବ । ତଥା ଭାବି ଥିବା ଯୋଜନା ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେବ । ଯଦି ଡାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ବରିଷ୍ଠ ସହଯୋଗୀ ତଥା ଅଧିକାରି ଙ୍କ ସହ ସମ୍ବନ୍ଧ ରେ ତନାବ ରହିବ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ପଦ ଉନ୍ନତି ସମ୍ଭବି ବିଳମ୍ବ ହେବ । ତଥା କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ରେ ମଧ୍ୟ ଅସୁବିଧା ହେବ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ମାନସିକ ତନାବ ରହିବ । ପରିବାର ରେ ମଧ୍ୟ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ର ଭାବ ର ଅଭାବ ରହିବ । ତଥା ସୁସ୍ଥତା ଙ୍କ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ଅସହଯୋଗ ମତଭେଦ ତଥା ବେ ମନସ୍ୟ ର ଭାବ ରହିବ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କୁ ମଧ୍ୟ ଅନୁକୂଳ ସହଯୋଗ ମିଳିବ ନାହିଁ । କିନ୍ତୁ ମିତ୍ର ବର୍ଗ ଙ୍କ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ବିଶ୍ଵାସ ର ଭାବ ବନି ରହିବ । ତଥା ଆପଣଙ୍କୁ ସେ ଅବସର ଅନୁକୂଳ ବାଞ୍ଛିତ ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରୁ ଥିବେ ।

ଫଳାଦେଶ - 2030

ଏହି ବର୍ଷ ବୃହସ୍ପତି ୭ମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ସମୟଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଶୁଭ । ଆପଣ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଆଶାନ୍ୱରୁପ ସାଫଲ୍ୟ ପାଇବେ ଏବଂ ଆପଣ ଯଦି ବେକାର ହୋଇଥାନ୍ତି କର୍ମ ସଂସ୍ଥାନ ହୋଇଯାଇପାରେ । ଆପଣ ଅବିବାହିତ ହେଲେ ବିବାହଯୋଗ ମଧ୍ୟ ହୋଇପାରେ । ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ବିବାହିତ ଜୀବନ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଶୁଭ । ଆପଣଙ୍କର ସାମାଜିକ ମର୍ଯ୍ୟଦା ବୃଦ୍ଧିର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ନାନା ଦିଗରୁ ଅର୍ଥ ପ୍ରାପ୍ତି ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ଦେଖାଦେବ । ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ପରିସ୍ଥିତି ଓ ଦଶା କ୍ଷେତ୍ରରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ସୁଫଳ ଆଶା କରିପାରନ୍ତି ।

ଶନି ଦ୍ୱିତୀୟ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏଇ ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ପାରିବାରିକ ଜୀବନ ଅତ୍ୟନ୍ତ ସୁଖଦାୟକ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ପ୍ରାରୁଣ୍ୟ ଫଳରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ବିଳାସ ବ୍ୟୟନ ମଧ୍ୟ ଦେଇ ଜୀବନ କାଟିବେ । ଶତ୍ରୁପକ୍ଷ ଆପଣଙ୍କ କ୍ଷତି ସାଧନରେ ବ୍ୟର୍ଥ ହେବ । ସମସ୍ତ ଅସମାପ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ହୋଇଯିବା ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ମାନସିକ ଶାନ୍ତି ବଜାୟ ରଖିବେ । ଶନିର ସକଳ ଶକ୍ତି ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣ ଅପ୍ରୟୋଜନୀୟ ବାଧାବିପତ୍ତିର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେବେ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଓ ବ୍ୟବସାୟିକ କ୍ଷେତ୍ରରେ ସାଫଲ୍ୟ ଲାଭ କରିବେ । ଏହାଠାରୁ ମୁକ୍ତି ପାଇବା ପାଇଁ ଶନିର ଆରାଧନା ଏବଂ ନୀଳା ପରିଧାନ କରିବା ଉଚିତ୍ ।

ଏହି ବର୍ଷ ରାହୁ ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନ ଏବଂ କେତୁ ପ୍ରଥମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଶୁଭ ନୁହେଁ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ନାନା ପ୍ରକାର ଶାରୀରିକ ଅସୁସ୍ଥତା ଏବଂ ବାଧା-ବିପତ୍ତିର ସମ୍ମୁଖୀନ ହୋଇପାରନ୍ତି । ଆପଣଙ୍କ ସ୍ତ୍ରୀ ଶାରୀରିକ ଦିଗରୁ ଅସୁସ୍ଥ ହୋଇପଡ଼ିବ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ସହିତ ସୁସମ୍ପର୍କ ଗଢ଼ି ଉଠିବାରେ ବାଧା ସୃଷ୍ଟି ହୋଇପାରେ । ବେଶୀ ଭାଗ କାର୍ଯ୍ୟରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଅଧିକ ଶ୍ରମ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତିର କୌଣସି ସମ୍ଭାବନା ନାହିଁ । ଆପଣ ଆପଣଙ୍କ ସହକର୍ମୀଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ବାଧା-ବିପତ୍ତିର ସମ୍ମୁଖୀନ ହୋଇପାରନ୍ତି । ସୁତରାଂ ଏ ବ୍ୟାପାରରେ ଆପଣ ସତର୍କତା ରୁହନ୍ତୁ । ସୁଫଳ ଲାଭ ପାଇଁ ରାହୁ ଓ କେତୁଙ୍କର ଆରାଧନା କରିବାକୁ ହେବ ।

ଇସ ବର୍ଷ ରାହୁ କୀ ମହାଦଶା ମେଂ ତୀନ ଗ୍ରହୋଂ କୀ ଅନ୍ତର୍ଦଶା ରହେଗୀ । ଇସ ବର୍ଷ ଶୁକ୍ର କୀ ଅନ୍ତର ୦୩/୦୨/୨୦୩୦ କୋ ସମାପ୍ତ ହୋଗା । ଉସକେ ବାଦ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଅନ୍ତର୍ଦଶା ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଗୀ ତଥା ୨୯/୧୨/୨୦୩୦ ତକ ଚଳେଗୀ । ଇସ ବର୍ଷ କୀ ଅନ୍ତ ଚନ୍ଦ୍ର କୀ ଅନ୍ତର୍ଦଶା ମେଂ ହୋଗା । ଆପଣୀ ଜନ୍ମକୁଣ୍ଡଳୀ ମେଂ ମହାଦଶା କୀ ସ୍ୱାମୀ ପ୍ରଥମ ଭାବ ମେଂ ମୀନ ରାଶି ମେଂ ଛିଡ଼ ହେଂ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବିଶେଷ ଶୁଭ ରହିବ ନାହିଁ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଅଟଳି ଥିବା ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେବ ନାହିଁ । ତଥା ଅନ୍ୟତ୍ର ମଧ୍ୟ ଅସୁବିଧା ର ସାମନା କରିବା କୁ ପଡ଼ିବ । ବ୍ୟାପାର ରେ ମଧ୍ୟ ଛିଡ଼ି ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ ତ ଥା ହାନି ର ଯୋଗ ବନିବ । ଡାକିରୀ ରେ ପଦ ଉନ୍ନତି ସମ୍ଭବି ବିଳମ୍ବ ହେବ ତଥା ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କ ରେ ତନାବ ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଆୟ ଯୋଗ ରେ ଅଭାବ ର କାରଣ ଆର୍ଥିକ ଅସୁବିଧା ର ସାମନା କରିବା କୁ ପଡ଼ିବ । ଏହା କୁ ଛାଡ଼ି ଅନିଶ୍ଚିତ ତଥା ବ୍ୟର୍ଥ ର ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଯାତ୍ରା ଦ୍ୱାରା ମାନସିକ ତନାବ ବନି ରହିବ । ସାମାଜିକ ମାନ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରେ ମଧ୍ୟ ଏପରି ସମୟ ରେ ନ୍ୟୁନତା ରହିବ । କିନ୍ତୁ ପରିବାର ରେ ସଦସ୍ୟ ଙ୍କ ବୃଦ୍ଧି ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ଶାନ୍ତି ର ଅନୁଭୂତି କରିବେ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ମିଶ୍ରିତ ଫଳ ଦାୟକ ରହିବ । ତଥା ଶୁଭ ଫଳ ର ସାଥେ ସାଥେ ଅଶୁଭ ଫଳ ର ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଏବଂ ଯୋଜନା ରେ ପରିଶ୍ରମ ଦ୍ୱାରା ମଧ୍ୟ ସଫଳତା ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ହିଁ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ତଥା ଅନ୍ୟତ୍ର ମଧ୍ୟ ଉନ୍ନତି ମାର୍ଗ ଅବରୁଦ୍ଧ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ବରିଷ୍ଠ ଏବଂ ଭଜ ଅଧିକାରୀ ଙ୍କ ସହ ତନାବ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସମ୍ପର୍କ ରହିବ । ପାରିବାରିକ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ତଥା ସମୃଦ୍ଧି ମଧ୍ୟମ ରହିବ । ତଥା କୌଣସି ଏକ ସଦସ୍ୟ ଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଏହି ସମୟ ରେ ପ୍ରଭାବିତ ହୋଇ ପାରେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଜ୍ୟୋତିଷ, ଆଧ୍ୟାତ୍ମ କିମ୍ବା ପର ବିଦ୍ୟା ର ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ରୁଚି ଉତ୍ପନ୍ନ ହୋଇ ପାରେ । ତଥା ଏହି କ୍ଷେତ୍ର ରେ କିଛି ଉଲ୍ଲେଖନୀୟ ଅନୁଭବ କିମ୍ବା ଉପଲବ୍ଧି ମଧ୍ୟ ଅର୍ଜିତ କରି ପାରନ୍ତି । ଯଦି ଆପଣଙ୍କ ଶତ୍ରୁ କିଛି ଅସୁବିଧା ଉତ୍ପନ୍ନ କରିବା ର ଚେଷ୍ଟା କରିବେ । କିନ୍ତୁ ସେଥିରେ ସେ ସଫଳ ହେବେ ନାହିଁ । ଏହା କୁ ଛାଡ଼ି ଆପଣଙ୍କୁ ନିଜ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ର ପୂର୍ଣ୍ଣ ଧ୍ୟାନ ରଖିବା

ଦରକାର ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବିଶେଷ ଶୁଭ ଏବଂ ଅନୁକୂଳ ରହିବ ନାହିଁ । ଏହି ସମୟ ରେ କୌଣସି ନବୀନ ଯୋଜନା କିମ୍ବା କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ଅଧିକ ବ୍ୟୟ ନ କରନ୍ତୁ । ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ମଧ୍ୟ ବିଶେଷ ସୂଚକ ରହିବ ନାହିଁ । ତଥା ଲାଭ ମାର୍ଗ ମଧ୍ୟ ଅବରୁଦ୍ଧ ହେବ । ଯଦି ଆପଣ ଚାକିରୀ କରୁ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ କୌଣସି ସହାୟକ ଆପଣଙ୍କ ବରିଷ୍ଠ ହୋଇ ପାରେ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କୁ ମାନସିକ ତନାବ ରହିବ । ପାରିବାରିକ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ତଥା ସମୃଦ୍ଧି ଏହି ସମୟ ରେ ଅନୁକୂଳ ରହିବ ନାହିଁ । ତଥା ପାରିବାରିକ ଜନ ଜ୍ଞ ମଧ୍ୟ ରେ ମତଭେଦ ତଥା ତନାବ ରହିବ । ମାନ ସମ୍ମାନ ତଥା ପ୍ରସିଦ୍ଧି ରେ ମଧ୍ୟ ଅଳ୍ପତା ର ଆଭାସ ହେବ । ମିତ୍ର ଏବଂ ବନ୍ଧୁ ବର୍ଗ ଜ୍ଞ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ କୌଣସି ବିଶେଷ ସହଯୋଗ ମିଳିବ ନାହିଁ । ତଥା ଦୂର ର ବ୍ୟର୍ଥ ର ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଏହା କୁ ଛାଡ଼ି ଆବାସ ସମ୍ପନ୍ନୀ ସମସ୍ୟା ମଧ୍ୟ ଏପରି ସମୟ ରେ ଉତ୍ପନ୍ନ ହୋଇ ପାରେ । ପରକୁ ପରିବାର ରେ ବିବାହ କିମ୍ବା ଛୁଆ ଜନ୍ମ ର ରୂପ ରେ କୌଣସି ମଙ୍ଗଳ ଉତ୍ସବ ସମ୍ପନ୍ନ ହୋଇ ପାରେ । ଅର୍ଥାତ ନିଜେ ଏବଂ ଧର୍ମ୍ୟ ପୂର୍ବକ ନିଜ କାର୍ଯ୍ୟ କଳାପ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।



ଫଳାଦେଶ - 2031

ବୃହସ୍ପତି ଟମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ସାଧାରଣ ଭାବେ ଶୁଭ । ଆପଣଙ୍କର ଦୈନିକ ମାନସିକ ସୁସ୍ଥିତା ବଜାୟ ରହିବ । ଆପଣ ଆତ୍ମପ୍ରତ୍ୟୟ ଦ୍ଵାରା ସମସ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ ଏବଂ ଆଶାନ୍ତରୂପ ସାଧ୍ୟତା ପାଇବେ । ଶତ୍ରୁପକ୍ଷ ଆପଣଙ୍କ କ୍ଷତି ସାଧନରେ ବ୍ୟର୍ଥ ହେବେ । ଆପଣ ରାଜନୀତି, ଡାକିରୀ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଅଥବା ବ୍ୟବସାୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉନ୍ନତି କରିବେ । ସମାଜରେ ଧନୀ ଓ ସମ୍ମାନିତ ବ୍ୟକ୍ତି ହିସାବରେ ପରିଚିତ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କର ଆକର୍ଷକ ପ୍ରାପ୍ତି ଯୋଗ ଅଛି । ଆପଣ ଜ୍ୟୋତିଷଶାସ୍ତ୍ର, ଚନ୍ଦ୍ର ଓ ମନ୍ତ୍ରରେ ଆଗ୍ରହୀ ହୋଇ ଏହି ବିଷୟରେ ପ୍ରଚାର ଜ୍ଞାନାର୍ଜନ କରିବେ । ଦଶା କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣ ସୁଫଳ ପାଇବେ । ଫଳରେ ସରକାରୀ ଉଚ୍ଚପଦସ୍ଥ କର୍ମଚାରୀଙ୍କ ନିକଟରୁ ଆପଣ ସହଯୋଗିତା ଲାଭ କରିବେ ।

ଶନି ଦ୍ଵିତୀୟ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏଇ ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ପାରିବାରିକ ଜୀବନ ଅତ୍ୟନ୍ତ ସୁଖଦାୟକ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ପ୍ରାରୁଣ୍ୟ ଫଳରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ବିଳାସ ବ୍ୟୟନ ମଧ୍ୟ ଦେଇ ଜୀବନ କାଟିବେ । ଶତ୍ରୁପକ୍ଷ ଆପଣଙ୍କ କ୍ଷତି ସାଧନରେ ବ୍ୟର୍ଥ ହେବ । ସମସ୍ତ ଅସମାପ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ହୋଇଯିବା ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ମାନସିକ ଶାନ୍ତି ବଜାୟ ରଖିବେ । ଶନିର ସକଳ ଶକ୍ତି ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣ ଅପ୍ରୟୋଜନୀୟ ବାଧାବିପତ୍ତିର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେବେ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଓ ବ୍ୟବସାୟିକ କ୍ଷେତ୍ରରେ ସାଧ୍ୟତା ଲାଭ କରିବେ । ଏହାଠାରୁ ମୁକ୍ତି ପାଇବା ପାଇଁ ଶନିର ଆରାଧନା ଏବଂ ନୀଳା ପରିଧାନ କରିବା ଉଚିତ୍ ।

ଏହି ବର୍ଷ ରାହୁ ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନ ଏବଂ କେତୁ ପ୍ରଥମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଶୁଭ ନୁହେଁ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ନାନା ପ୍ରକାର ଶାରୀରିକ ଅସୁସ୍ଥିତା ଏବଂ ବାଧା-ବିପତ୍ତିର ସମ୍ମୁଖୀନ ହୋଇପାରନ୍ତି । ଆପଣଙ୍କ ସ୍ତ୍ରୀ ଶାରୀରିକ ଦିଗରୁ ଅସୁସ୍ଥ ହୋଇପଡ଼ିବ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ସହିତ ସୁସମ୍ପର୍କ ଗଢ଼ି ଉଠିବାରେ ବାଧା ସୃଷ୍ଟି ହୋଇପାରେ । ବେଶୀ ଭାଗ କାର୍ଯ୍ୟରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଅଧିକ ଶ୍ରମ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତିର କୌଣସି ସମ୍ଭାବନା ନାହିଁ । ଆପଣ ଆପଣଙ୍କ ସହକର୍ମୀଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ବାଧା-ବିପତ୍ତିର ସମ୍ମୁଖୀନ ହୋଇପାରନ୍ତି । ସୁତରାଂ ଏ ବ୍ୟାପାରରେ ଆପଣ ସତର୍କତା ରୁହନ୍ତୁ । ସୁଫଳ ଲାଭ ପାଇଁ ରାହୁ ଓ କେତୁଙ୍କର ଆରାଧନା କରିବାକୁ ହେବ ।

ଇସ ବର୍ଷ ରାହୁ କୀ ମହାଦଶା ମେଂ ଚନ୍ଦ୍ର କୀ ଅନ୍ତର ରହେଗା । ଚନ୍ଦ୍ର ଦ୍ଵିତୀୟ ଭାବ ମେଂ ମେଷ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଂ ଜବକି ରାହୁ ପ୍ରଥମ ଭାବ ମେଂ ମୀନ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଂ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଭଲ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ମନ ରେ ପ୍ରବଳ ଉତ୍ସାହ ତଥା ପରାକ୍ରମ ର ବହୁଳତା ରହିବ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କ ଉନ୍ନତି ମାର୍ଗ ପ୍ରଶସ୍ତ ରହିବ । ତଥା ଭବିଷ୍ୟତ ପାଇଁ ନବୀନ ଆଶା ବନିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଆତ୍ମ ଶକ୍ତି ର ସୁଦୃଢ଼ତା ର କାରଣ ଆପଣ ବିଷମ ପରିସ୍ଥିତି କୁ ସାମନା ତଥା ସମାଧାନ କରିବା ରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ କୌଣସି ଲାଭ ଦାୟକ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ପ୍ରାରମ୍ଭ କରିବେ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆୟ ସ୍ରୋତ ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ବ୍ୟାପାରିକ କ୍ଷେତ୍ର ପାଇଁ ଉତ୍ତମ ଧନ ଲାଭ ର ଯୋଗ ବନିବ । ତଥା ଯଦି ଡାକିରୀ କରୁ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ପଦ ଉନ୍ନତି ର ଅବସର ମିଳିବ । ପାରିବାରିକ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ତ ଥା ସମୃଦ୍ଧି ମଧ୍ୟ ଭଲ ରହିବ । ତଥା ସବୁ ଲୋକ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ପ୍ରେମ ପୂର୍ବକ ରହିବେ । କୌଣସି ବିବାହ କିମ୍ବା ଛୁଆ ଙ୍ଗ ଜନ୍ମ ର ରୂପ ରେ ଏହି ସମୟ ରେ ପରିବାର ରେ କୌଣସି ମଙ୍ଗଳ ଉତ୍ପତ୍ତ ର ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ସାମାଜିକ ମାନ ସମ୍ମାନ ତଥା ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେଉ ଥିବ । ତଥା ମିତ୍ର ଏବଂ ଶୁଭ ଚିନ୍ତକ ଙ୍ଗ ଠାରୁ ଲକ୍ଷିତ ସହଯୋଗ ତଥା ଲାଭ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଅର୍ଥାତ୍ ସମୟ ର ସଦୃଶଯୋଗ କରିବା ପାଇଁ ସତର୍କତା ରହନ୍ତୁ ।



ପଲ୍ଲୀଦେଶ - 2032

ବୃହସ୍ପତି ଦଶମସ୍କାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ପଳରେ ଏଇ ସମୟଟି ଆପଣଙ୍କର ଉନ୍ନତି ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଉପଯୁକ୍ତ ସମୟ । ବ୍ୟବସାୟ ଦିଗରୁ ଅତି ସହଜରେ ସାଫଲ୍ୟ ପାଇବ । ଏଇ ସମୟ ଆପଣ ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ବ୍ୟକ୍ତିମାନେ ଆସିବେ ଏବଂ ସେମାନଙ୍କ ସହିତ ବହୁତ୍ପୁରୁଷ ସମ୍ପର୍କ ସଂସ୍ପର୍ଶରେ ଗଢ଼ି ଉଠିବ ଓ ସେମାନଙ୍କ ଠାରୁ ସହଯୋଗ ପାଇବେ । ଆପଣ ସରକାରଙ୍କ ପକ୍ଷରୁ ସମ୍ମାନିତ ହୋଇପାରନ୍ତି । ଗୃହ ପରିବେଶ ଶାନ୍ତି ରହିବ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥା ଉନ୍ନତ ରହିବ । ଏଇ ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କୁ କଠୋର ପରିଶ୍ରମ କରିବାକୁ ହେବ । ଆପଣ ନିଜର ବ୍ୟବହାର ସମ୍ପର୍କରେ ସତ୍ତ୍ୱେନ ହୁଅନ୍ତୁ ।

ଏହି ବର୍ଷ ଗୟା ସ୍କାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ପଳରେ ଏହି ସମୟଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଶୁଭ । ବ୍ୟବସାୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆକର୍ଷଣୀୟ ପରିବର୍ତ୍ତନ ଘଟିବ ଏବଂ ସମସ୍ତ ଅସମାପ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ ଆପଣ ସହଜରେ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ । ଏହି ସମୟରେ ଭ୍ରମଣ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭଜନକ । କର୍ମ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉନ୍ନତିର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ସୁତରାଂ ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କର ଉନ୍ନତି ପକ୍ଷରେ ଉପଯୁକ୍ତ ସମୟ ।

ଏହି ବର୍ଷ ରାହୁ ଷଷ୍ଠ ସ୍କାନ ଏବଂ କେତୁ ଦ୍ୱାଦଶ ସ୍କାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ପଳରେ ଏହି ସମୟଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ସାଧାରଣ ଭାବେ ଶୁଭ । ପ୍ରତିବେଶୀ ଓ ସମାଜ ନିକଟରୁ ଆପଣ ଉପଯୁକ୍ତ ସମ୍ମାନ ପାଇବେ । ବିରୋଧୀ ପକ୍ଷକୁ ଆପଣ ପରାଜିତ କରିବାକୁ ସକ୍ଷମ ହେବେ । ନିଜର ପ୍ରଦେଶ, ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ମାଲି ମକଦ୍ଦମା ତଥା ପ୍ରତିଯୋଗିତା ମୂଳକ ପରୀକ୍ଷାରେ ସଫଳ ହୋଇ ପାରନ୍ତି । ଆର୍ଥିକ ଦିଗରୁ ମଧ୍ୟ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଶୁଭ । ଆପଣଙ୍କର ଆୟ ବୃଦ୍ଧିର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । କିନ୍ତୁ ଆପଣ ପେଟଗୁପ୍ତ ଯଥା କୋଷକାଠିନ୍ୟ ବା ଗ୍ୟାସ୍ତିକ ଜାତୀୟ ଶାରୀରିକ ଅସୁସ୍ଥତାରେ କଷ୍ଟ ପାଇବେ ।

ଇସ ବର୍ଷ ଗୁରୁ କୀ ମହାଦଶା ପ୍ରାରଂଭ ହୋଇ ରହିଛି । ଇସସେ ବିବିତ ହୋତା ହେଁ ଇସ ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ଶୌଲୀ ତଥା କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ମେଂ ପରିବର୍ତ୍ତନ ହୋଗା । ଇସ ବର୍ଷ କୀ ପ୍ରାରଂଭ ରାହୁ କୀ ମହାଦଶା ମେଂ ବହୁ କେ ଅନ୍ତମ ଅନ୍ତର ସେ ହୋଇ ରହିଛି ଓର ବର୍ଷ କୀ ସମାପ୍ତି ଗୁରୁ କୀ ମହାଦଶା ମେଂ ଗୁରୁ କେ ପ୍ରଥମ ଅନ୍ତର ସେ ହୋଗା । ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମକୂଣ୍ଡଳୀ ମେଂ ମହାଦଶା କୀ ସ୍ୱାମୀ ପ୍ରଥମ ଭାବ ମେଂ ମୀନ ରାଶି ମେଂ ଛିତ ହେଁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବିଶେଷ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ସାହାସ ତଥା ଆତ୍ମିକ ଶକ୍ତି ର ନ୍ୟୁନତା ରହିବ । ଫଳତଃ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ତଥା ଯୋଜନା ରେ ସଫଳତା ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ହିଁ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କୁ କିଛିତ ସୁ ଅବସର ର ପ୍ରାପ୍ତି ଅବଶ୍ୟ ହେବ । ପରକୁ ବ୍ୟବହାରିକ ନ ହେବା ର କାରଣ ତାହାର ଉପଯୋଗ କରିବା ରେ ଅସମର୍ଥ ରହିବେ । ପାରିବାରିକ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ତଥା ସମୃଦ୍ଧି ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟରେ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ତଥା ପାରିବାରିକ ଜନ ଜ ସହ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ମତଭେଦ ତଥା ତନାବ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସମ୍ଭବ ରହିବ । ଆର୍ଥିକ କ୍ଷେତ୍ରରେ କିଛିତ ଅସୁବିଧା ର ଅନୁଭୂତି ହେବ । ତଥା ଲାଭ ମାର୍ଗ ଅବରୁଦ୍ଧ ରହିବ । ସାହିତ୍ୟ କଳା ଏବଂ କବିତା ଆଦି ର ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ଅପେକ୍ଷା ର ଭାବନା ରହିବ । ତଥା ଏହି କ୍ଷେତ୍ରରେ କୌଣସି ଉଲ୍ଲେଖନୀୟ ସଫଳତା ମିଳିବ ନାହିଁ । ମିତ୍ର ଏବଂ ବନ୍ଧୁ ବର୍ଗଙ୍କ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ବାଞ୍ଛିତ ସହଯୋଗ ମିଳିବ ନାହିଁ । ତଥା ବ୍ୟର୍ଥ ଏବଂ ତନାବ ଯୁକ୍ତ ଅନାବଶ୍ୟକ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଧ୍ୟାନ ପୂର୍ବକ ସମୟ ର ବ୍ୟତୀତ କରନ୍ତୁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବିଶେଷ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ଏହି ସମୟରେ ଉନ୍ନତି ମାର୍ଗ ଅବରୁଦ୍ଧ ରହିବ । ତଥା ଅଟକି ଥିବା କାର୍ଯ୍ୟ ଅପୂର୍ଣ୍ଣ ହିଁ ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ସମ୍ପର୍କରେ ମଧ୍ୟ ନ୍ୟୁନତା ହିଁ ରହିବ । ତଥା ବ୍ୟର୍ଥ ର କାର୍ଯ୍ୟରେ ଧନ ଏବଂ ସମୟ ନଷ୍ଟ ହେବ । ବ୍ୟାପାରରେ ମଧ୍ୟ ବିଶେଷ ଉନ୍ନତି ହେବ ନାହିଁ । ତଥା ବାକିରୀରେ ପଦ ଉନ୍ନତି ସମ୍ଭାବନା ବିଳମ୍ବ ହେବ । ଏହି ସମୟରେ ବରିଷ୍ଠ ସହଯୋଗୀ ତଥା ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗଙ୍କ ସହ ମଧ୍ୟ ମଧୁର ସମ୍ପର୍କ ରହିବ ନାହିଁ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ବେଳେ ବେଳେ ସମସ୍ୟା ଉପସ୍ଥାନ ହେବ । ଆର୍ଥିକ ଦୃଷ୍ଟିରେ ମଧ୍ୟ ଛିତିରେ ଅସ୍ଥିରତା ରହିବ । ତଥା ଆୟ ସ୍ରୋତରେ ନ୍ୟୁନତା ଆସିବ । ଫଳତଃ ବେଳେ ବେଳେ ଆର୍ଥିକ ଅସୁବିଧା ର ମଧ୍ୟ ସାମନା କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ପରିବାରରେ ମଧ୍ୟ ଅଶାନ୍ତି ର ବାତାବରଣ ରହିବ । ତଥା ଜଣେ ଅନ୍ୟଙ୍କ ପ୍ରତି ସହଯୋଗ ର ଭାବରେ ନ୍ୟୁନତା ରହିବ । ଏପରି ସମୟରେ ମିତ୍ର ବର୍ଗଙ୍କ ସହଯୋଗ ମଧ୍ୟ ଅଳ୍ପ ହିଁ ରହିବ । କିନ୍ତୁ ଶୁଭ ଏବଂ ଲାଭ ପ୍ରଦ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ର ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ଅର୍ଥାତ ଧର୍ଯ୍ୟ ପୂର୍ବକ ସମୟ ର ବ୍ୟତୀତ କରନ୍ତୁ ।

ଫଳାଦେଶ - 2033

ବୃହସ୍ପତି ଏକାଦଶସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏଇ ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କର ଉନ୍ନତିର ସମୟ । ଆପଣ ଅର୍ଥ ଉପାର୍ଜନର କୌଣସି ନୂଆ ଉତ୍ସର ସନ୍ଧାନ ପାଇବେ ଏବଂ ପ୍ରଚୁର ଅର୍ଥ ଆୟ କରିବେ । ବ୍ୟବସାୟ ଅଧିକ ଉନ୍ନତି ହେବାର ଯୋଗ ଅଛି । ରାଜନୀତି ବା ଦାକିରୀ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣଙ୍କର ପଦୋନ୍ନତି ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଆପଣ ଜ୍ୟୋତିଷଶାସ୍ତ୍ର ପ୍ରତି ଆଗ୍ରହ ଅନୁଭବ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କର ସାମାଜିକ ମର୍ଯ୍ୟାଦା ଅସ୍ଥୁଣ ରହିବ । ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ଗ୍ରହ କ୍ଷେତ୍ରରେ ସୁଫଳ ନ ପାଇଲେ ମଧ୍ୟ ଦଶା କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣ ସୁଫଳ ଆଶା କରି ପାରନ୍ତି । ସୁତରାଂ ଆପଣ ଭଲ ଓ ମନ୍ଦ ଉଭୟ ଫଳର ଆଶା କରିପାରନ୍ତି ।

ଏହି ବର୍ଷ ଶୁକ୍ର ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ସାମଗ୍ରିକ ଭାବେ ଏହି ସମୟଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଶୁଭ । ଅସମାପ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ ଆପଣ ସହଜରେ ସମ୍ପନ୍ନ କରିପାରିବେ । ବ୍ୟବସାୟିକ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉନ୍ନତିର ଯୋଗ ଅଛି । କର୍ମ ସୁତ୍ରରେ ଦୂର ଭ୍ରମଣର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି, ଯାହାକି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭଜନକ ଏବଂ ଆପଣ ପଦୋନ୍ନତିର ସୁଯୋଗ ପାଇବେ । ସମାଜରେ ଆପଣଙ୍କର ପଦ ମର୍ଯ୍ୟାଦା ଅସ୍ଥୁଣ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ସଙ୍ଗୀନୀଙ୍କର ଶାରୀରିକ ଅସୁସ୍ଥତା ବେଶାଦେଇପାରେ । ଆପଣ ସମାଜର ପରିସେବା ମୂଳକ କାର୍ଯ୍ୟରେ ସମସ୍ୟାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେବେ । ପରିଶ୍ରମ ଓ ଅଧ୍ୟ ବ୍ୟବସାୟ ଦ୍ଵାରା ଆପଣ ସାଫଲ୍ୟ ଲାଭ କରିବେ । ଆପଣ ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ରାଜନୀତିବିତ୍ ମାନଙ୍କ ସଂସ୍ପର୍ଶରେ ଆସିବେ କିନ୍ତୁ ସେମାନଙ୍କଠାରୁ କୌଣସି ସହଯୋଗିତା ପାଇବେ ନାହିଁ ।

ଏହି ବର୍ଷ ରାହୁ କ୍ଷଣ ସ୍ଥାନ ଏବଂ କେତୁ ଦ୍ଵାଦଶ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ସମୟଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ସାଧାରଣ ଭାବେ ଶୁଭ । ଆପଣ ସମାଜରେ ସମ୍ମାନିତ ବ୍ୟକ୍ତି ହିସାବରେ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଲାଭ କରିବେ । ଶତ୍ରୁପକ୍ଷ ଆପଣଙ୍କର କ୍ଷତି ସାଧନରେ ବ୍ୟର୍ଥ ହେବେ । ଆପଣ ମାମଲା ସଙ୍ଗ୍ରହ ଏବଂ ପ୍ରତିଯୋଗିତା ମୂଳକ ପରୀକ୍ଷାରେ ଜୟ ଲାଭର ସୁଯୋଗ ପାଇବେ । ନାନା ଦିଗରୁ ଅର୍ଥ ଉପାର୍ଜନ ଫଳରେ ଅର୍ଥନୈତିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ଘଟିବ । ଆପଣଙ୍କର ଶାରୀରିକ ସୁସ୍ଥତା ଅସ୍ଥୁଣ ରହିଲେ ମଧ୍ୟ ମାନସିକ ଦିଗରୁ ଅସନ୍ତୋଷ ସୃଷ୍ଟି ହେବ ।

ମହାଦଶା ଏବଂ ଅର୍ଦ୍ଧଦଶା ସ୍ଵାମୀ ପ୍ରଥମ ଭାବ ମେଂ ମୀନ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ।

ଫଳାଦେଶ - 2034

ବୃହସ୍ପତି ଦ୍ଵାଦଶ ଛାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏଇ ବର୍ଷ ଆପଣ ଶାରୀରିକ ଭାବେ ସୁସ୍ଥ ରହିଲେ ମଧ୍ୟ ମାନସିକ ଯତ୍ନଶୀଳ ଭାବିପାରନ୍ତି । ବ୍ୟୟର ଅଧିକ ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥା ଉନ୍ନତି ସମ୍ଭବ ନୁହେଁ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ନାନା ବାଧା ବାପତିର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେବେ । ଫଳରେ ସାମାଜ୍ୟ ପାଇବାକୁ ହେଲେ ଆପଣଙ୍କୁ କଠୋର ପରିଶ୍ରମ କରିବାକୁ ହେବ । ଏଇ ସମୟରେ ଭ୍ରମଣର ଯୋଗାଯୋଗ ହୋଇପାରେ ଯାହା ଫଳରେ ଅର୍ଥବ୍ୟୟ ହୋଇପାରେ । ତେବେ ଭବିଷ୍ୟତ ଆପଣଙ୍କ ଉନ୍ନତିର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଦଶା କ୍ଷେତ୍ରରେ ସୁଫଳ ନ ପାଇବା ଫଳରେ ଗୁରୁତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପାଦନା ପାଇଁ ଯଥେଷ୍ଟ ପରିଶ୍ରମର ପ୍ରୟୋଜନ । ଆପଣଙ୍କର ନାନା ଦିଗରୁ ଅର୍ଥପ୍ରାପ୍ତି ହୋଇପାରେ । ଆଶାନ୍ତରୁପ ଫଳଲାଭ କରିବେ ।

ଏହି ବର୍ଷ ଗୟା ଛାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ସାମଗ୍ରିକ ଭାବେ ଏହି ସମୟଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଶୁଭ । ଅସମାପ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ ଆପଣ ସହଜରେ ସମ୍ପନ୍ନ କରିପାରିବେ । ବ୍ୟବସାୟିକ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉନ୍ନତିର ଯୋଗ ଅଛି । କର୍ମ ସୂତ୍ରରେ ଦୂର ଭ୍ରମଣର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି, ଯାହାକି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭଜନକ ଏବଂ ଆପଣ ପଦୋନ୍ନତିର ସୁଯୋଗ ପାଇବେ । ସମାଜରେ ଆପଣଙ୍କର ପଦ ମର୍ଯ୍ୟାଦା ଅସ୍ପୃଶ୍ୟ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ସଙ୍ଗୀନୀଙ୍କର ଶାରୀରିକ ଅସୁସ୍ଥତା ବେଶାଦେଇପାରେ । ଆପଣ ସମାଜର ପରିସେବା ମୂଳକ କାର୍ଯ୍ୟରେ ସମସ୍ୟାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେବେ । ପରିଶ୍ରମ ଓ ଅଧ୍ୟ ବ୍ୟବସାୟ ଦ୍ଵାରା ଆପଣ ସାମାଜ୍ୟ ଲାଭ କରିବେ । ଆପଣ ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ରାଜନୀତିବିତ୍ ମାନଙ୍କ ସଂସ୍ପର୍ଶରେ ଆସିବେ କିନ୍ତୁ ସେମାନଙ୍କ ଠାରୁ କୌଣସି ସହଯୋଗିତା ପାଇବେ ନାହିଁ ।

ଏହି ବର୍ଷ ରାହୁ ଷଷ୍ଠ ଛାନ ଏବଂ କେତୁ ଦ୍ଵାଦଶ ଛାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ସମୟଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ସାଧାରଣ ଭାବେ ଶୁଭ । ଆପଣ ସମାଜରେ ସମ୍ମାନିତ ବ୍ୟକ୍ତି ହିସାବରେ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଲାଭ କରିବେ । ଶତ୍ରୁପକ୍ଷ ଆପଣଙ୍କର କ୍ଷତି ସାଧନରେ ବ୍ୟର୍ଥ ହେବେ । ଆପଣ ମାମଲା ସଙ୍ଗ୍ରହ ଏବଂ ପ୍ରତିଯୋଗିତା ମୂଳକ ପରୀକ୍ଷାରେ ଜୟ ଲାଭର ସୁଯୋଗ ପାଇବେ । ନାନା ଦିଗରୁ ଅର୍ଥ ଉପାର୍ଜନ ଫଳରେ ଅର୍ଥନୈତିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ଘଟିବ । ଆପଣଙ୍କର ଶାରୀରିକ ସୁସ୍ଥତା ଅସ୍ପୃଶ୍ୟ ରହିଲେ ମଧ୍ୟ ମାନସିକ ଦିଗରୁ ଅସନ୍ତୋଷ ସୃଷ୍ଟି ହେବ ।

ମହାଦଶା ଏବଂ ଅର୍ଦ୍ଧଦଶା ସ୍ଵାମୀ ପ୍ରଥମ ଭାବ ମେଂ ମୀନ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ।

ଫଳାଦେଶ - 2035

ବୃହସ୍ପତି ପ୍ରଥମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ମାନସିକ, ଦୈନିକ ଓ ସାମାଜିକ ପରିବର୍ତ୍ତନ ଦେଖାଦେବ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣଙ୍କର ପ୍ରବଳ ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଆପଣ ଅବିବାହିତ ହୋଇଥିଲେ, ବିବାହ ଯୋଗର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଆପଣ ଧର୍ମଶାସ୍ତ୍ର ପ୍ରତି ଆଗ୍ରହୀ ହୋଇ ଅନେକ ଧର୍ମିୟ ଅନୁଷ୍ଠାନର ଆୟୋଜନ କରିବେ । ନାନା ଦିଗରୁ ଅର୍ଥ ପ୍ରାପ୍ତି ଯୋଗୁ ଆର୍ଥିକ ଛିଡାବନ୍ଧା ବଜାୟ ରହିବ । ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣ ଦୀର୍ଘ ଦିନର ଅସମାପ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବାକୁ ସକ୍ଷମ ହେବେ । ଆପଣ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟରେ ନିଜକୁ ଉତ୍ସର୍ଗ କରିବେ ।

ଶନି ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାବଧାନତା ସହିତ ଶୁଭ ଏବଂ ଉନ୍ନତି କରିବା ପାଇଁ ଅନେକ ସୁଯୋଗ ପାଇବେ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଅଥବା ରାଜନୈତିକ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣଙ୍କର ଆତ୍ମସନ୍ତୋଷ ଆସିବ । ବହୁବାନ୍ଧବ ଏବଂ ଆତ୍ମୀୟ ସ୍ୱଜନଙ୍କ ନିକଟରୁ ଆପଣ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗିତା ପାଇବେ । ପ୍ରଚୁର ଅର୍ଥୋପାର୍ଜନ ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ଘଟିବ । ଆପଣ ନୂତନ କୌଶଳି କାର୍ଯ୍ୟ ସହିତ ସୁଖ ହେବେ ଏବଂ ଗୃହ ବା ସମ୍ପତ୍ତି ବିକ୍ରୟ କରିପାରନ୍ତି । ଏ ବ୍ୟାପାରରେ ଆପଣ ସାମୟିକତାରେ ଅସୁବିଧାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେଲେ ମଧ୍ୟ ଭବିଷ୍ୟତରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭବାନ ହେବେ । ଶନି ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣ ମାନସିକ ଦିଗରୁ ଅତ୍ୟନ୍ତ କଷ୍ଟ ପାଇବେ । ଏଥିରୁ ମୁକ୍ତି ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ ନୀଳା ଧାରଣ କରିବାକୁ ହେବ ।

ରାହୁ ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନ ଏବଂ କେତୁ ଦଶମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ସାଧାରଣ ଭାବେ ଶୁଭ । ଆପଣଙ୍କର ଦୈନିକ ଏବଂ ମାନସିକ ସୁସ୍ଥିତି ଅତ୍ୟନ୍ତ ରହିବ । ଆପଣ ଯାନବାହନ ବା ଗୃହ କ୍ରୟ-ବିକ୍ରୟ କରିପାରନ୍ତି । ଆପଣଙ୍କର ଉପାର୍ଜନ ବୃଦ୍ଧି ପାଇବା ଫଳରେ ଅର୍ଥନୈତିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ଘଟିବ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣ ଆଶାନୁରୂପ ସାଫଲ୍ୟ ଲାଭ କରିବେ କିନ୍ତୁ ଆପଣଙ୍କ ପିତା-ମାତା ଶାରୀରିକ ଦିଗରୁ ସୁସ୍ଥ ରହିବେ ନାହିଁ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କର ଭ୍ରମଣ ଯୋଗର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି ।

ଗୁରୁ କୀ ମହାଦଶା ମେଂ ଗୁରୁ କା ଅନ୍ତର ୦୪/୦୯/୨୦୩୫ କୋ ସମାପ୍ତ ହୋଗା । ଉପକେ ବାଦ ଶନି କା ଅନ୍ତର ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଗା । ଗୁରୁ ପ୍ରଥମ ଭାବ ମେଂ ମୀନ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ଜବକି ଶନି ନବମ ଭାବ ମେଂ ବିଛା ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭ ଏବଂ ଅନୁକୂଳ ରହିବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ସବୁ ବେଳେ ଲାଭ ତଥା ଉନ୍ନତି ର ମାର୍ଗ ପ୍ରଶସ୍ତ ରହିବ । ତଥା ଆପଣଙ୍କ ମହତ୍ତ୍ୱକାମ୍ୟା ପୁର୍ଣ୍ଣ ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ଲୋକ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କ ସ୍ଥାପିତ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ବାଞ୍ଛିତ ଲାଭ ହେବ । ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୁର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ଆପଣ ଉତ୍ସାହ ଏବଂ ଆତ୍ମ ବିଶ୍ୱାସ ର ଭାବରେ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ । ବ୍ୟାପାର ପାଇଁ ସମୟ ଅନୁକୂଳ ରହିବ । ତଥା ନବୀନ କାର୍ଯ୍ୟ ର ବିସ୍ତାର ମଧ୍ୟ ହେବ । ଯଦି ଚାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ପଦ ଉନ୍ନତି ହେବ । ତଥା ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ମଧୁର ସମ୍ପର୍କ ରହିବ ଏବଂ ସେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ପାରିବାରିକ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ଏବଂ ସମୃଦ୍ଧି ମଧ୍ୟ ଅନୁକୂଳ ରହିବ । ତଥା ସବୁ ଲୋକ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ମିଳି ମିଶି ରହିବେ । ମିତ୍ର ବର୍ଗ ଙ୍କ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ଅବସର ଅନୁକୂଳ ଛାଡ଼ିତ ଲାଭ ଏବଂ ସହଯୋଗ ମିଳୁ ଥିବ । ଏହା କୁ ଛାଡ଼ି ଶୁଭ ଏବଂ ଲାଭ ଦାୟକ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ସମୟ ର ସହଯୋଗ କରନ୍ତୁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟ ରୂପରେ ଭଲ ରହିବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ମହତ୍ତ୍ୱପୁର୍ଣ୍ଣ ଯୋଜନା ତଥା କାର୍ଯ୍ୟ ସିଦ୍ଧ ହେବ ତଥା ବ୍ୟାପାରରେ ସନ୍ତୋଷ ଜନକ ପରିଣାମ ର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଏଥିରେ କୌଶଳି ବିସ୍ତାର କିମ୍ବା ନବୀନ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ପ୍ରାରମ୍ଭ ର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଯଦି ଚାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ କାର୍ଯ୍ୟ ସ୍ତରରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ତଥା ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କରେ ମଧୁରତା ରହିବ ଏବଂ ସେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ପାରିବାରିକ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ତଥା ସମୃଦ୍ଧି ମଧ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ ତଥା ସବୁ ସଦସ୍ୟ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ପ୍ରେମ ପୁର୍ବକ ରହିବେ । ତଥା ଜଣେ ଅନ୍ୟ କୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଦୂର ସମୀପ ର ଲାଭ ଦାୟକ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ସମ୍ପାନ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଏହା କୁ ଛାଡ଼ି ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ବ୍ୟକ୍ତି ଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କ ମଧ୍ୟ ସ୍ଥାପିତ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ସମୟ ସମୟରେ ବାଞ୍ଛିତ ଲାଭ ଏବଂ ସହଯୋଗ ର ପ୍ରାପ୍ତ କରୁ ଥିବେ

ଫଳାଦେଶ - 2036

ଏହି ବର୍ଷ ବୃହସ୍ପତି ଦ୍ଵିତୀୟ ଗୃହରେ ଅବସ୍ଥାନ କରିବା ଫଳରେ ପ୍ରଚୁର ଧନ ଉପାର୍ଜନ କରିପାରିବେ । ବହୁବିଧ କ୍ଷେତ୍ରରୁ ଅର୍ଥପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ଗୃହ ମଧ୍ୟରେ ଶାନ୍ତି ଓ ସନ୍ତାନ ଲାଭ ହେବ । ଅତ୍ୟଧିକ ବ୍ୟୟ ହେତୁ ନିଜକୁ ଅସୁବିଧା ମନେ କରିବେ । ସମାଜରେ ଆପଣଙ୍କ ଭାବମୁଖ ସମ୍ମାନଜନକ ହେବ । ଧର୍ମାନୁଷ୍ଠାନ ଇତ୍ୟାଦି ପାଳନ କରିବେ । ବ୍ୟବସାୟରେ ଉନ୍ନତି ପରିଲକ୍ଷିତ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ବ୍ୟବହାର ଓ କଥାବାର୍ତ୍ତାରେ ସମସ୍ତେ ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ହେବେ ।

ଶନି ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାବଧାନତାରେ ଶୁଭ ଏବଂ ଉନ୍ନତି କରିବା ପାଇଁ ଅନେକ ସୁଯୋଗ ପାଇବେ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଅଥବା ରାଜନୈତିକ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣଙ୍କର ଆତ୍ମସନ୍ତୋଷ ଆସିବ । ବହୁବାନ୍ଧବ ଏବଂ ଆତ୍ମୀୟ ସୁଜନଙ୍କ ନିକଟରୁ ଆପଣ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗିତା ପାଇବେ । ପ୍ରଚୁର ଅର୍ଥୋପାର୍ଜନ ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ଘଟିବ । ଆପଣ ନୂତନ କୌଶଳି କାର୍ଯ୍ୟ ସହିତ ଯୁକ୍ତ ହେବେ ଏବଂ ଗୃହ ବା ସମ୍ପତ୍ତି ବିକ୍ରୟ କରିପାରନ୍ତି । ଏ ବ୍ୟାପାରରେ ଆପଣ ସାମୟିକତାରେ ଅସୁବିଧାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେଲେ ମଧ୍ୟ ଭବିଷ୍ୟତରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭବାନ ହେବେ । ଶନି ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣ ମାନସିକ ଦିଗରୁ ଅତ୍ୟନ୍ତ କଷ୍ଟ ପାଇବେ । ଏଥିରୁ ମୁକ୍ତି ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ ନୀଳା ଧାରଣ କରିବାକୁ ହେବ ।

ରାହୁ ଚତୁର୍ଥୀୟ ସ୍ଥାନ ଏବଂ କେତୁ ନବମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଶୁଭ । ଆପଣଙ୍କର ସାମାଜିକ ମର୍ଯ୍ୟଦା ଓ ପ୍ରତିପତ୍ତି ବୃଦ୍ଧି ପାଇବ । ଶତ୍ରୁପକ୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ପରାଜିତ ହେବେ । ମାନସିକ ଦିଗରୁ ଆପଣ ଶାନ୍ତି ପାଇବେ ଏବଂ ସମସ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ ଆପଣ ବୃଦ୍ଧ ଆତ୍ମପ୍ରତ୍ୟୟ ସହିତ ସୁସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣ ଆଶାନ୍ୱରୁପ ସାଫଲ୍ୟ ପାଇବେ । ଏହି ସମୟରେ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ଗ୍ରହ ଓ ଦଶରା ଅଶୁଭ ପ୍ରଭାବ ଫଳରେ ଆପଣ ଯେକୌଣସି କାର୍ଯ୍ୟ ଚୈତ୍ୟ ସହିତ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।

ଇସ ବର୍ଷ ଗୁରୁ କା ମହାବଶା ମେଂ ଶନି କା ଅନ୍ତର ରହେଗା । ଶନି ନବମ ଭାବ ମେଂ ବିଚ୍ଛା ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଂ ଜବକି ଗୁରୁ ପ୍ରଥମ ଭାବ ମେଂ ମୀନ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଂ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ କିଛି ମହତ୍ଵପୁର୍ଣ୍ଣ ଯୋଜନା ପୁର୍ଣ୍ଣ ହେବ ତଥା ମହତ୍ଵକାନ୍ଧ୍ୟା କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ସଫଳତା ମିଳିବ । ବ୍ୟାପାର ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ରୁ ହିଁ ଲାଭ ହେବ ତଥା ମହତ୍ଵପୁର୍ଣ୍ଣ ସମ୍ପର୍କ ରେ ଉନ୍ନତି ର ମାର୍ଗ ପ୍ରଶସ୍ତ ହେବ । ପରିବାର ରେ ମଧ୍ୟ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ର ବାତାବରଣ ରହିବ । ତଥା ସବୁ ସଦସ୍ୟ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ମିଳି ମିଶି ରହିବେ । ତ ଥା ଜଣେ ଅନ୍ୟ କୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଏପରି ସମୟ ରେ କୌଣସି ଶୁଭ କିମ୍ବା ମାଙ୍ଗଳିକ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସାମାଜିକ ମାନ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ତଥା ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ବ୍ୟକ୍ତି ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ପର୍କ ସ୍ଥାପିତ ହେବ । ସାହା ଦ୍ଵାରା ଭବିଷ୍ୟତ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ବାଞ୍ଛିତ ଲାଭ ର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ଏହା କୁ ଛାଡ଼ି ଲାଭ ଦାୟକ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ମଧ୍ୟ ହେବ । ସାହା ଦ୍ଵାରା ଭବିଷ୍ୟତ ରେ ଲାଭ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ସମୟ ର ସହଯୋଗ କରନ୍ତୁ ।

ଫଳାଦେଶ - 2037

ଏହି ବର୍ଷ ବୃହସ୍ପତି ଶୟ ଛାନ୍ ଅଧିକାର କରିବା ଫଳରେ ନିକଟରେ ଆପଣଙ୍କର ଭ୍ରମଣ ଯୋଗର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି, ଯାହାକି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭଦାୟକ । ଆପଣ ଦର୍ଶନ ଓ ସାହିତ୍ୟ ପ୍ରତି ଆଗ୍ରହୀ ହେବେ । ପୁରୁଣା ବନ୍ଧୁମାନଙ୍କ ସହଯୋଗିତା ଓ ସମର୍ଥନ ପାଇବେ । ଆପଣଙ୍କର ନୂତନ କିଛି ବନ୍ଧୁ ହେବେ, ଯେଉଁମାନେ କି ନୂତନ କିଛି କାର୍ଯ୍ୟର ସହାନ ଆପଣଙ୍କୁ ଦେବେ । ଶାରୀରିକ କୌଶଳ ସମସ୍ୟା ଦେଖା ଦେବ ନାହିଁ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣଙ୍କର ଉନ୍ନତିର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଆପଣଙ୍କର ସାମାଜିକ ମର୍ଯ୍ୟଦା ଅକ୍ଷୁଣ୍ଣ ରହିବ । ଏହି ସମୟରେ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ଗ୍ରହ ଓ ଶୁଭ ଫଳାପଳ ଆଶା କରିପାରନ୍ତି । ଏହି ସମୟକୁ ଆପଣ ଯଥାପସ୍ତକ ବ୍ୟବହାର କରନ୍ତୁ ।

ଶନି ପଞ୍ଚମ ଛାନ୍ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ଦୈନିକ ଓ ମାନସିକ ସୁସ୍ଥତା ବଜାୟ ରହିବ । ଆପଣ ସବୁ ପ୍ରକାର ଗୁରୁତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଗୁଡ଼ିକ ଆତ୍ମପ୍ରତ୍ୟୟ ଦ୍ଵାରା ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ ଏବଂ ସମାଜରେ ଗୁରୁତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ ବ୍ୟକ୍ତି ହିସାବରେ ସ୍ଵୀକୃତି ପାଇବେ । ନାନା ଦିଗରୁ ଅର୍ଥ ପ୍ରାପ୍ତି ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ଘଟିବ । ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ମାନେ ନିଜ ନିଜ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ସଫଳତା ହାସଲ କରିବା ଯୋଗୁଁ ଆପଣ ଆତ୍ମସନ୍ତୋଷ ଲାଭ କରିବେ । ଆପଣ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କର ଜୀବନସଙ୍ଗିନୀ ଉଭୟ ହିଁ ସମାଜରେ ସମ୍ମାନିତ ବ୍ୟକ୍ତି ହିସାବରେ ସ୍ଵୀକୃତି ପାଇବେ । ଆପଣ ନାନା ଦିଗରୁ ସାଫଲ୍ୟ ପାଇବେ ଏବଂ ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ରାଜନୀତିବିଦ୍ ମାନଙ୍କ ସଂସ୍ପର୍ଶରେ ଆସିବେ । ଆପଣଙ୍କର ଆକର୍ଷକ ପ୍ରାପ୍ତି ଯୋଗ ଅଛି । ସୁତରାଂ ଏହି ସମୟକୁ ଯଥୋପଯୁକ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟରେ ଲଗାଇବା ପାଇଁ ଆପଣ ଚେଷ୍ଟା କରିବା ଉଚିତ୍ ।

ରାହୁ ତୃତୀୟ ଛାନ୍ ଏବଂ କେତୁ ନବମ ଛାନ୍ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷକି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଶୁଭ । ଆପଣଙ୍କର ସାମାଜିକ ମର୍ଯ୍ୟଦା ଓ ପ୍ରତିପତ୍ତି ବୃଦ୍ଧି ପାଇବ । ଶତ୍ରୁପକ୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ପରାଜିତ ହେବେ । ମାନସିକ ଦିଗରୁ ଆପଣ ଶାନ୍ତି ପାଇବେ ଏବଂ ସମସ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ ଆପଣ ଦୃଢ଼ ଆତ୍ମପ୍ରତ୍ୟୟ ସହିତ ସୁସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣ ଆଶାନ୍ୱରୁପ ସାଫଲ୍ୟ ପାଇବେ । ଏହି ସମୟରେ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ଗ୍ରହ ଓ ଦଶର ଅଶୁଭ ପ୍ରଭାବ ଫଳରେ ଆପଣ ଯେକୌଣସି କାର୍ଯ୍ୟ ଧୈର୍ଯ୍ୟ ସହିତ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।

ଇସ ବର୍ଷ ଗୁରୁ କା ମହାଦଶା ମେଂ ଶନି କା ଅନ୍ତର ରହେଗା । ଶନି ନବମ ଭାବ ମେଂ ବିଛା ରାଶି ମେଂ ଛିତ ହେଂ ଜବକି ଗୁରୁ ପ୍ରଥମ ଭାବ ମେଂ ମୀନ ରାଶି ମେଂ ଛିତ ହେଂ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭ ଏବଂ ଅନୁକୂଳ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସବୁ ବେଳେ ଉନ୍ନତି ର ମାର୍ଗ ପ୍ରଗତ ରହିବ ତଥା ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ଲୋକ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କ ସ୍ଥାପିତ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଭବିଷ୍ୟତ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଲକ୍ଷିତ ଲାଭ ଏବଂ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ବ୍ୟାପାର ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଉତ୍ସାହ ଜନକ ପରିଣାମ ର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ତଥା ଲାଭ ଏବଂ ଉନ୍ନତି ମାର୍ଗ ଉପରେ ଅଗ୍ରସର ରହିବେ । ଯଦି ବାକିରୀ ରେ ଆଜି ବାହା ହେଲେ ପଦ ଉନ୍ନତି ର ଅବସର ମିଳିବ । ତଥା ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କ ରେ ମଧୁରତା ରହିବ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ସେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଏପରି ସମୟ ରେ ବିଦେଶ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ସମ୍ପନ୍ନି ଯୋଜନା ରେ ସଫଳତା ମିଳି ପାରେ । ଏହା କୁ ଛାଡ଼ି ମିତ୍ର ବର୍ଗ ଙ୍କ ଠାରୁ ବାଞ୍ଛିତ ଲାଭ ଏବଂ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ତଥା ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ବିଶ୍ଵାସ ନୀୟତା ର ଭାବ ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଶତ୍ରୁ ବର୍ଗ ଙ୍କ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ପରାଜିତ ତଥା ପ୍ରଭାବିତ କରିବା ରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ ।

ଫଳାଦେଶ - 2038

ଏହି ବର୍ଷ ବୃହସ୍ପତି ଧର୍ମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଶୁଭ । ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ଦୈନିକ ଓ ମାନସିକ ସୁସ୍ଥତା ବଜାୟ ରହିବ । ପରିବାରର ସଦସ୍ୟଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଶାନ୍ତି ବିରାଜମାନ କରିବ । ଆପଣଙ୍କର ସମସ୍ତ ଅସମାପ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ବ୍ୟବସାୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଲାଭର ଯୋଗ ଅଛି । ଆପଣଙ୍କର ସାମାଜିକ ମର୍ଯ୍ୟଦା ଅସ୍ଥୁନ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କର ନିଜସ୍ୱ ଗାଡ଼ି, ବାଡ଼ି ଏବଂ ସମ୍ପତ୍ତି ଲାଭର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ମାତୃସ୍ଥାନ ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଶୁଭ । ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କର ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ପରିସ୍ଥିତି ଓ ଦଶାଫଳ ମଧ୍ୟ ଶୁଭ ।

ଶନି ପଞ୍ଚମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ଦୈନିକ ଓ ମାନସିକ ସୁସ୍ଥତା ବଜାୟ ରହିବ । ଆପଣ ସବୁ ପ୍ରକାର ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଗୁଡ଼ିକ ଆତ୍ମପ୍ରତ୍ୟୟ ଦ୍ୱାରା ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ ଏବଂ ସମାଜରେ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ବ୍ୟକ୍ତି ହିସାବରେ ସ୍ୱୀକୃତି ପାଇବେ । ନାନା ଦିଗରୁ ଅର୍ଥ ପ୍ରାପ୍ତି ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ଘଟିବ । ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ମାନେ ନିଜ ନିଜ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ସ ଫଳତା ହାସଲ କରିବା ଯୋଗୁଁ ଆପଣ ଆତ୍ମସନ୍ତୋଷ ଲାଭ କରିବେ । ଆପଣ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କର ଜୀବନସଙ୍ଗିନୀ ଉଭୟ ହିଁ ସମାଜରେ ସମ୍ମାନିତ ବ୍ୟକ୍ତି ହିସାବରେ ସ୍ୱୀକୃତି ପାଇବେ । ଆପଣ ନାନା ଦିଗରୁ ସାଫଲ୍ୟ ପାଇବେ ଏବଂ ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ରାଜନୀତିବିଦ୍ ମାନଙ୍କ ସଂସ୍ପର୍ଶରେ ଆସିବେ । ଆପଣଙ୍କର ଆକର୍ଷକ ପ୍ରାପ୍ତି ଯୋଗ ଅଛି । ସୁତରାଂ ଏହି ସମୟଟିକୁ ଯଥୋପଯୁକ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟରେ ଲଗାଇବା ପାଇଁ ଆପଣ ଚେଷ୍ଟା କରିବା ଉଚିତ୍ ।

ଏହି ବର୍ଷ ରାହୁ ଦ୍ୱିତୀୟ ଘରେ ଏବଂ କେତୁ ଅଷ୍ଟମ ଘରେ ଅବସ୍ଥାନ କରିବା ଯୋଗୁ ଆପଣ ପାରିପାର୍ଶ୍ୱିକ ସଦସ୍ୟ ମଧ୍ୟରେ ସୁଖ ଶାନ୍ତିରୁ ବଞ୍ଚିତ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ମୋଟାମୋଟି କିନ୍ତୁ ମାନସିକ ପକ୍ଷେ ଆପଣ ଅସନ୍ତୁଷ୍ଟ ଏବଂ ଅଶାନ୍ତ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କୁ ସଫଳ ଲାଗି ଖୁବ ସଂଘର୍ଷ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ ।

ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅପବ୍ୟୟର ଯୋଗୁ ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ପରିସ୍ଥିତି ଭାରସାମ୍ୟ ହରାଇବେ ।

ଆପଣ ଯଦି ସମ୍ପତ୍ତି, ଟଙ୍କା ବିନିଯୋଗ କରନ୍ତି ତେବେ ଆପଣ ଲାଭବାନ ହେବେ ।

ଭୟ ଥିବା କାମକୁ ସଫଳତା ପାଇବା ଯୋଗୁ ଆପଣଙ୍କୁ କଠିନ ପରିଶ୍ରମ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଭଲ ଫଳାଫଳର ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କର ରାହୁ ଓ କେତୁର ଆରାଧନା କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ , ମନ୍ତ୍ର ଉଚ୍ଚାରଣ ଏବଂ ପୂଜା କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଆପଣଙ୍କୁ ଅବଶ୍ୟ ଦାନ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଏହା ଅଶୁଭ ପ୍ରଭାବ କମ କରିବ ଏବଂ ଲାଭଜନକ ପରିଣାମ ଦେବ ।

ଗୁରୁ କୀ ମହାଦଶା ମେଂ ଶନି କା ଅନ୍ତର ୧୮/୦୩/୨୦୩୮ କୋ ସମାପ୍ତ ହୋଗା । ଉପକେ ବାଦ ବୁଧ କା ଅନ୍ତର ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଗା । ଶନି ନବମ ଭାବ ମେଂ ବିଛା ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ଜବକି ବୁଧ ଦ୍ୱାଦଶ ଭାବ ମେଂ କୁମ୍ଭ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟ ରୂପ ରେ ଭଲ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଭାବି ଥିବା କାର୍ଯ୍ୟ ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେବ । ତଥା ସକ୍ରିୟତା ର ଭାବ ର ପ୍ରବଳତା ଏବଂ କଳ୍ପନାଶୀଳତା ର କାରଣ ବର୍ତ୍ତମାନ ବ୍ୟାପାର ରେ ବିସ୍ତାର କରିବା ରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ସନ୍ତୋଷ ଜନକ ପରିଣାମ ର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ଯଦି ଚାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ପଦ ଉନ୍ନତି ର ସମ୍ଭାବନା ବନିବ ଏବଂ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପ୍ରସନ୍ନ ଏବଂ ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ପାରିବାରିକ ଦୃଷ୍ଟି ରେ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ମଧ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ । ତଥା ସବୁ ଲୋକ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ମିଳି ମିଶି ରହିବେ ଏବଂ ଜଣେ ଅନ୍ୟ କୁ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଥ ଘର ଉପଯୋଗୀ ବସ୍ତୁ ଉପରେ ମଧ୍ୟ ବ୍ୟୟ ହେବ । ଏହା କୁ ଛାଡ଼ି ଦୂର ସମୀପ ର ଲାଭ ଦାୟକ ଡାକ୍ତା ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଭବିଷ୍ୟତ ରେ ଲାଭ ଏବଂ ସମ୍ମାନ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ମିତ୍ର ବର୍ଗ ଙ୍କ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ସକରାତ୍ମକ ସହଯୋଗ ମଧ୍ୟ ଅବସର ଅନୁକୂଳ ମିଳୁ ଥିବ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟ ରୂପ ରେ ଅନୁକୂଳ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ଭଲ ରହିବ

। ପରନ୍ତୁ ବ୍ୟୟ ମଧ୍ୟ ଅଧିକ ହେବ । କିନ୍ତୁ ଆର୍ଥିକ ଛିତି ଉପରେ କୌଣସି ବିଶେଷ ଦୁ ଖୁଭାବ ହେବ ନାହିଁ । ଏହି ସମୟ ରେ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ର ସିଦ୍ଧି ଆପଣ ସାହାସ ତଥା ଆତ୍ମ ବିଶ୍ୱାସ ଦ୍ୱାରା ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ପରିଶ୍ରମ ପୂର୍ବକ ଉନ୍ନତି ର ମର୍ଗ ଉପରେ ଅଗ୍ରସର ରହିବେ । ପାରିବାରିକ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ଉତ୍ତମ ରହିବ । ତଥା ସବୁ ଲୋକ ସୁସ୍ଥ ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନ ରହିବେ । ତଥା ଆପଣଙ୍କୁ ପୁଣ୍ୟ ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ବ୍ୟାପାର ରେ ମଧ୍ୟ ଲାଭ ହେଉ ଥିବ ତଥା ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ଲୋକ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କ ସ୍ଥାପିତ ହେବ । ଏହା କୁ ଛାଡ଼ି ଲାଭ ଦାୟକ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ହେବ । ତଥା ଏହା ଦ୍ୱାରା ଭବିଷ୍ୟତ ପାଇଁ ନବୀନ ଆୟୁମ ସ୍ଥାପିତ ହେବ । କିନ୍ତୁ ଏପରି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ପ୍ରତି ପୁଣ୍ୟ ସତର୍କ ରହିବା ଦରକାର ।



ଫଳାଦେଶ - 2039

ଏହି ବର୍ଷ ବୃହସ୍ପତି ଋମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ସମୟଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ । ଆପଣ ଉଚ୍ଚ ଶିକ୍ଷା ପାଇଁ ଆଗ୍ରହୀ ହୋଇ ଦର୍ଶନଶାସ୍ତ୍ର ଅଧ୍ୟୟନ କରିବେ । ନାନା ଦିଗରୁ ଅର୍ଥ ପ୍ରାପ୍ତି ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାରେ ଉନ୍ନତି ଦେଖାଦେବ । ଆପଣଙ୍କର ପୁତ୍ର ସନ୍ତାନ ଲାଭର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଆପଣ ଅବିବାହିତ ହେଲେ ବିବାହ ଯୋଗ ଅଛି । କର୍ମ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଓ ବ୍ୟବସାୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉନ୍ନତି ହେବ । ଆପଣ ରାଜନୀତିବିତ୍ ବା ଉଚ୍ଚପଦସ୍ଥ ବ୍ୟକ୍ତିମାନଙ୍କ ସଂସ୍ପର୍ଶ ଲାଭ କରିବେ ଏବଂ ସେମାନଙ୍କ ସହଯୋଗିତା ପାଇବେ । ଆପଣ ସନ୍ତାନ ମାନଙ୍କ ଠାରୁ ସୁବ୍ୟବହାର ପାଇବେ । ଦଶା କ୍ଷେତ୍ରରେ ଶୁଭ ଫଳ ଆଶା କରିପାରିବ । ଅନେକ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଏହି ସମୟ ମଧ୍ୟରେ ସୁସମ୍ପନ୍ନ କରିପାରିବେ ।

ଶନି ପଞ୍ଚମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ଦୈନିକ ଓ ମାନସିକ ସୁସ୍ଥତା ବଜାୟ ରହିବ । ଆପଣ ସବୁ ପ୍ରକାର ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ଗୁଡ଼ିକ ଆତ୍ମପ୍ରତ୍ୟୟ ଦ୍ୱାରା ସମ୍ପନ୍ନ କରିବେ ଏବଂ ସମାଜରେ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ବ୍ୟକ୍ତି ହିସାବରେ ସ୍ୱୀକୃତି ପାଇବେ । ନାନା ଦିଗରୁ ଅର୍ଥ ପ୍ରାପ୍ତି ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାରେ ଉନ୍ନତି ଘଟିବ । ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ମାନେ ନିଜ ନିଜ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ସାମର୍ଥ୍ୟ ହାସଲ କରିବା ଯୋଗୁଁ ଆପଣ ଆତ୍ମସନ୍ତୋଷ ଲାଭ କରିବେ । ଆପଣ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କର ଜୀବନସଙ୍ଗିନୀ ଉଭୟ ହିଁ ସମାଜରେ ସମ୍ମାନିତ ବ୍ୟକ୍ତି ହିସାବରେ ସ୍ୱୀକୃତି ପାଇବେ । ଆପଣ ନାନା ଦିଗରୁ ସାମର୍ଥ୍ୟ ପାଇବେ ଏବଂ ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ରାଜନୀତିବିତ୍ ମାନଙ୍କ ସଂସ୍ପର୍ଶରେ ଆସିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଆକର୍ଷକ ପ୍ରାପ୍ତି ଯୋଗ ଅଛି । ସୁତରାଂ ଏହି ସମୟଟିକୁ ଯଥୋପଯୁକ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟରେ ଲଗାଇବା ପାଇଁ ଆପଣ ଚେଷ୍ଟା କରିବା ଉଚିତ୍ ।

ରାହୁ ଏବଂ କେତୁ ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନରେ ଅବସ୍ଥାନ ହେତୁ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଶୁଭ ନୁହେଁ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ଦୈନିକ ଓ ମାନସିକ ଅସୁସ୍ଥତାରେ କଷ୍ଟ ପାଇବେ । ଆପଣଙ୍କର ସ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ସହିତ ସୁସମ୍ପର୍କରେ ବ୍ୟାଘାତ ସୃଷ୍ଟି ହୋଇପାରେ । ଫଳରେ ଗୃହରେ ଅଶାନ୍ତି ଦେଖାଦେଇପାରେ । ଆପଣଙ୍କର ଅର୍ଥନୈତିକ ଉନ୍ନତିର କୌଣସି ସମ୍ଭାବନା ନାହିଁ । ଆପଣ କଠୋର ପରିଶ୍ରମ ଦ୍ୱାରା ଅଧିକ ଥିପାଜନ କରିଲେ ମଧ୍ୟ ଅଧିକ ବ୍ୟୟ ଫଳରେ ସମସ୍ୟାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେବେ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ସାମର୍ଥ୍ୟ ପାଇଁ ଅଧିକ ପରିଶ୍ରମ ପ୍ରୟୋଜନ । ଆପଣଙ୍କର ପୁରୁଣା ବନ୍ଧୁବାନ୍ଧବଙ୍କ ସହିତ ଯୋଗାଯୋଗ ବିଚ୍ଛିନ୍ନ ହେବ । ଏବଂ ନୂତନ ବନ୍ଧୁବାନ୍ଧବଙ୍କ ସଂସ୍ପର୍ଶରେ ଲାଭବାନ ହେବେ ।

ଇସ ବର୍ଷ ଗୁରୁ କା ମହାଦଶା ମେଂ ବୁଧ କା ଅନ୍ତର ରହେଗା । ବୁଧ ଦ୍ୱାଦଶ ଭାବ ମେଂ କୁମ୍ଭ ରାଶି ମେଂ ଛିତ ହେଁ ଜବକି ଗୁରୁ ପ୍ରଥମ ଭାବ ମେଂ ମୀନ ରାଶି ମେଂ ଛିତ ହେଁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟ ରୂପ ରେ ଭଲ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ସକରାତ୍ମକ ପରିଶ୍ରମ ମିଳିବ । ତଥା କିଛି ଇଚ୍ଛିତ କାର୍ଯ୍ୟ ତଥା ଯୋଜନା ମଧ୍ୟ ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେବ । ଆର୍ଥିକ ଦୃଷ୍ଟି ରେ ସମୟ ଅନୁକୂଳ ରହିବ । ତଥା ପୁତ୍ର ମାତ୍ରା ରେ ଧନ ଅର୍ଜନ ହେବ ଏବଂ କିଛି ଆୟ ସ୍ରୋତ ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ବ୍ୟାପାର ରେ ମଧ୍ୟ ଉନ୍ନତି ର ଯୋଗ ବନିବ । ଯଦି ଡାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ପଦ ଉନ୍ନତି ର ସମ୍ଭାବନା ବନିବ । ତଥା ଏହାର ସାଥେ ସାଥେ ଇଚ୍ଛିତ ସ୍ଥାନାନ୍ତରଣ ର ମଧ୍ୟ ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ପାରିବାରିକ ସଦସ୍ୟ ଙ୍କ ବ୍ୟବହାର ସହଯୋଗ ପୂର୍ଣ୍ଣ ରହିବ । ତଥା ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ପ୍ରେମ ପୂର୍ବକ ରହିବେ । ମିତ୍ର ବର୍ଗ ଙ୍କ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ଏପରି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ବାଞ୍ଛିତ ସୁଖ ଏବଂ ସହଯୋଗ ର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ତଥା ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ବିଶ୍ୱାସନୀୟତା ର ଭାବ ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । କିନ୍ତୁ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ର ଏପରି ସମୟ ରେ ପୂର୍ଣ୍ଣ ଧ୍ୟାନ ରଖିବା ଦରକାର । ଏହି ପରି ଶୁଭ ସମୟ କୁ ଆପଣଙ୍କୁ ଯତ୍ନ ପୂର୍ବକ ସତ୍ୱପଯୋଗ କରିବା ଦରକାର ।

ଫଳାଦେଶ - 2040

ଏହି ବର୍ଷ ବୃହସ୍ପତି ଶୁକ୍ର ଶୁକ୍ର ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ସମୟଟି ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଉନ୍ନତର ସମୟ । ଆପଣଙ୍କର ଦୈନିକ ଓ ମାନସିକ ସୁସ୍ଥତା ବଜାୟ ରହିବ । ଆପଣ ନିଜର ଆତ୍ମପ୍ରତ୍ୟୟ ଯୋଗୁଁ କୌଣସି ଗୁରୁତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟର ଦାୟିତ୍ଵ ଭାର ଗ୍ରହଣ କରିବେ । ବ୍ୟବସାୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆଶାନ୍ୱରୁପ ଲାଭବାନ ହେବେ । ଶତ୍ରୁପକ୍ଷ ଆପଣଙ୍କର କ୍ଷତି ସାଧନରେ ବ୍ୟର୍ଥ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ସୁସ୍ଥାବସ୍ଥା ବଜାୟ ରହିବ ଏବଂ ଧର୍ମ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଅର୍ଥ ବ୍ୟୟର ଯୋଗ ଅଛି । ଆପଣଙ୍କର ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ପରିସ୍ଥିତି ଓ ଦଶା କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣ ସୁଫଳ ପାଇବେ ।

ଏହି ବର୍ଷ ଶନି ଶୁକ୍ର ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ସମୟଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଶୁଭ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କର ଭ୍ରମଣ, ଆପଣଙ୍କ ବ୍ୟବସାୟ ବା କର୍ମକ୍ଷେତ୍ର ପାଇଁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭଦାୟକ । ଅର୍ଥନୈତିକ ଦିଗରୁ ଆପଣଙ୍କ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ଘଟିବ । ଶତ୍ରୁପକ୍ଷ ଆପଣଙ୍କ କ୍ଷତି ସାଧନରେ ବ୍ୟର୍ଥ ହେବେ । ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣ ପ୍ରତିଯୋଗିତା ମୂଳକ ପରୀକ୍ଷାରେ ସାଫଲ୍ୟ ଲାଭ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କର ସାମାଜିକ ମର୍ଯ୍ୟଦା ବୃଦ୍ଧି ପାଇବ ।

ରାହୁ ଏବଂ କେତୁ ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନରେ ଅବସ୍ଥାନ ହେତୁ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଶୁଭ ନୁହେଁ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ଦୈନିକ ଓ ମାନସିକ ଅସୁସ୍ଥତାରେ କଷ୍ଟ ପାଇବେ । ଆପଣଙ୍କର ସ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ସହିତ ସୁସମ୍ପର୍କରେ ବ୍ୟାପାତ ସୃଷ୍ଟି ହୋଇପାରେ । ଫଳରେ ଗୃହରେ ଅଶାନ୍ତି ଦେଖାଦେଇପାରେ । ଆପଣଙ୍କର ଅର୍ଥନୈତିକ ଉନ୍ନତିର କୌଣସି ସମ୍ଭାବନା ନାହିଁ । ଆପଣ କଠୋର ପରିଶ୍ରମ ଦ୍ଵାରା ଅଧିକାରୀ କରାଯାଇ ମଧ୍ୟ ଅଧିକ ବ୍ୟୟ ଫଳରେ ସମସ୍ୟାର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେବେ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ସାଫଲ୍ୟ ପାଇଁ ଅଧିକ ପରିଶ୍ରମ ପ୍ରୟୋଗନ । ଆପଣଙ୍କର ପୁରୁଣା ବନ୍ଧୁବାନ୍ଧବଙ୍କ ସହିତ ଯୋଗାଯୋଗ ବିଚ୍ଛିନ୍ନ ହେବ । ଏବଂ ନୂତନ ବନ୍ଧୁବାନ୍ଧବଙ୍କ ସଂସ୍ପର୍ଶରେ ଲାଭବାନ ହେବେ ।

ଗୁରୁ କୀ ମହାବଶା ମେଂ ବୁଧ କା ଅନ୍ତର ୨୩/୦୭/୨୦୪୦ କୋ ସମାପ୍ତ ହୋଗା । ଉପକେ ବାଦ କେତୁ କା ଅନ୍ତର ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଗା । ବୁଧ ଦ୍ଵାଦଶ ଭାବ ମେଂ କୁମ୍ଭ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ଜବକି କେତୁ ସପ୍ତମ ଭାବ ମେଂ କନ୍ୟା ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭ ଏବଂ ଅନୁକୂଳ ରହିବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ସୁଦୃଢ଼ ରହିବ । ତଥା ପ୍ରଭୃତ ମାତ୍ରାରେ ଧନ ଏବଂ ଲାଭ ଅର୍ଜିତ କରିବାରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଆୟ ସ୍ରୋତରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ବ୍ୟାପାର ପାଇଁ ସମୟ ଉନ୍ନତି ଦାୟକ ରହିବ । ତଥା ଲାଭ ମାର୍ଗ ପ୍ରଶସ୍ତ ରହିବ । ଯଦି ଚାକିରୀରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ପଦ ଉନ୍ନତିର ଅବସର ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ଏବଂ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କରେ ମଧୁରତା ରହିବ । ତଥା ସେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପ୍ରଭାବିତ ରହିବେ । ପାରିବାରିକ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ତଥା ସମୃଦ୍ଧି ମଧ୍ୟ ଅନୁକୂଳ ରହିବ । ତଥା ସଦସ୍ୟଙ୍କ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ସ୍ନେହ ତଥା ସହଯୋଗର ଭାବ ରହିବ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ସହଯୋଗ ପୁର୍ଣ୍ଣ ବ୍ୟବହାର ରହିବ । ସାଥେ ସାଥେ ଜ୍ୟୋତିଷ, ଆଧ୍ୟାତ୍ମ ପର ବିଦ୍ୟା ଆଦିରେ ଆପଣଙ୍କ ରୁଚି ଉତ୍ତମ ହେବ । ତଥା ଏଥିରେ କିଛି ବୈଜ୍ଞାନିକ ଅନୁଭବ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ଆଦି ଦ୍ଵାରା ମଧ୍ୟ ଲାଭ ଏବଂ ସମ୍ମାନର ଯୋଗ ବନିବ । ତଥା ଯଦି ସତର୍କ ରହନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷଙ୍କୁ ମଧ୍ୟ ପରାଜିତ କରିବାରେ ସମର୍ଥ ହେବେ । ଅର୍ଥାତ ବୃଦ୍ଧିମତ୍ତା ପୂର୍ବକ ସମୟର ସହଯୋଗ କରନ୍ତୁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ମିଶ୍ରିତ ଫଳ ଦାୟକ ରହିବ । ପରନ୍ତୁ ଶୁଭ ଫଳର ହିଁ ଅଧିକତା ରହିବ । ପାରିବାରିକ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ତଥା ସମୃଦ୍ଧିରେ ମଧ୍ୟ ଅନୁକୂଳତା ରହିବ । ତଥା ସବୁ ଲୋକ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ମିଳି ମିଶି ରହିବେ । ତଥା ଜଣେ ଅନ୍ୟକୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ପତ୍ନୀଙ୍କ ସହ ମଧୁର ସମ୍ପର୍କ ରହିବ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଦାମ୍ପତ୍ୟ ଜୀବନ ସୁଖ ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନତା ବର୍ଦ୍ଧକ ବ୍ୟତୀତ ହେବ । ବ୍ୟାପାରରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣଙ୍କୁ ଉଚ୍ଚିତ ସଫଳତା ମିଳିବ । ତଥା ଲାଭ ମାର୍ଗ ପ୍ରଶସ୍ତ ରହିବ । ଆର୍ଥିକ ଦୃଷ୍ଟିରେ ସ୍ଥିତିରେ ସୁଦୃଢ଼ତା ରହିବ ଏବଂ ଆୟ ସାଧନରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ତଥା କିଛି ମହତ୍ତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ କିମ୍ବା ଯୋଜନା ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଯଦି ଚାକିରୀରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ପଦ ଉନ୍ନତିର ଅବସରରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ତଥା ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କରେ ମଧୁରତା ରହିବ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ସେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପ୍ରସନ୍ନ ତଥା ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ଏହାକୁ ଛାଡ଼ି ଶତ୍ରୁ ଏବଂ ପ୍ରତିଦ୍ଵନ୍ଦୀ ମଧ୍ୟ ପରାସ୍ତ ରହିବେ । କିନ୍ତୁ ଶଙ୍କଟର କାର୍ଯ୍ୟ ଠାରୁ ଦୂରରେ ରହିବା ଦରକାର ।



ଫଳାଦେଶ - 2042

ଏହି ବର୍ଷ ବୃହସ୍ପତି ୭ମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ସମୟଟି ଆପଣଙ୍କର ଉନ୍ନତି ପଥରେ ଉପଯୁକ୍ତ ସମୟ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ର ଓ ବ୍ୟବସାୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉନ୍ନତି ଓ ଲାଭ ଉଭୟ ଆଶା କରିପାରିବେ । ଆପଣ ବେକାର ହୋଇଥିଲେ କର୍ମ ସଂସ୍ଥାନ ହୋଇପାରେ । ଆପଣ ଅବିବାହିତ ହୋଇଥିଲେ ବିବାହ ଯୋଗ ହୋଇପାରେ । ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନସଙ୍ଗ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଯତ୍ନଶୀଳ ହେବେ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କୁ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଉତ୍ସାହୀ କରି ତୋଳିବେ । ଆପଣଙ୍କ ସାମାଜିକ ମର୍ଯ୍ୟଦା ଅସ୍ପୃଷ୍ଣ ରହିବ ଏବଂ ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତାବସ୍ଥା ବଜାୟ ରହିବ । କିନ୍ତୁ ଆପଣଙ୍କର ଅଧିକ ବ୍ୟୟ ପ୍ରତି ଝୁଙ୍କ ଅଛି । ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କର ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ପରିସ୍ଥିତି ଏବଂ ଦଶା କ୍ଷେତ୍ରରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ସୁଫଳ ଆଶା କରିପାରିବେ । ସୁତରାଂ ଆପଣ ଭଲ ମନ୍ଦ ଉଭୟ ଫଳ ଆଶା କରିପାରିବେ ।

ଏହି ବର୍ଷ ଶନି ୭ମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ସାଧାରଣ ଭାବେ ଏହି ସମୟଟି ଆପଣଙ୍କ ପଥରେ ଶୁଭ । ଏହି ସମୟରେ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣ ଯଥେଷ୍ଟ ଉନ୍ନତି କରିବେ । କିନ୍ତୁ ଆପଣଙ୍କର ମା, ବାପା, ସ୍ତ୍ରୀଙ୍କର ଶାରୀରିକ ସୁସ୍ଥତା ନ ରହିପାରେ । ଏଣୁ ଆପଣ ମାନସିକ ଦିଗରୁ ଅସ୍ଥିରତା ଅନୁଭବ କରିବେ । ଆପଣ ଆତ୍ମପ୍ରତ୍ୟୟ ଓ ମନୋବଳ ଦ୍ୱାରା ଏହି ପରିସ୍ଥିତିକୁ କଟାଇ ଯାଇପାରିବେ । ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାନ ଉନ୍ନତି ଘଟିବ । ଏହି ସମୟରେ ଭ୍ରମଣ ଆପଣଙ୍କ ପଥରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭଜନକ । ଆପଣ ଏହି ବର୍ଷ ସମଗ୍ର କ୍ରୟ ବିକ୍ରୟ କରିପାରିବେ ।

ରାହୁ ଏବଂ କେତୁ ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନରେ ଅବସ୍ଥାନ ହେତୁ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମଗ୍ରିକ ଭାବେ ଶୁଭ । ଏହି ସମୟରେ ଶାରୀରିକ ଓ ମାନସିକ କଷ୍ଟ ପାଇପାରିବେ । ଆପଣଙ୍କର ସ୍ତ୍ରୀ ସହିତ ସୁସମ୍ପର୍କ ବଜାୟ ରହିବ ଏବଂ ବିବାହିତ ଜୀବନ ସୁଖମୟ ହେବ । କିନ୍ତୁ ଆପଣ ଶାରୀରିକ ଅସୁସ୍ଥତା ଭୋଗିବାର ଯଥେଷ୍ଟ ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । କିନ୍ତୁ ଆପଣଙ୍କର ଅର୍ଥନୈତିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ହେବ । ଆପଣ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ସାମାଜ୍ୟ ପାଇବେ ଏବଂ ସମାଜରେ ଆପଣ ସମ୍ମାନିତ ବ୍ୟକ୍ତି ହିସାବରେ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଲାଭ କରିବେ । ଆପଣ ପୁରୁଣା ବନ୍ଧୁବାନ୍ଧବଙ୍କୁ ତ୍ୟାଗ କରିବେ ଏବଂ ନୂତନ କୌଣସି ରୁଚ୍ଛିରେ ଆବଦ୍ଧ ହେବେ, ଯାହାକି ଆପଣଙ୍କ ପଥରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭଜନକ ।

ଇସ ବର୍ଷ ଗୁରୁ କୀ ମହାଦଶା ମେଂ ଶୁକ୍ର କୀ ଅନ୍ତର ରହେଗା । ଶୁକ୍ର ଏକାଦଶ ଭାବ ମେଂ ମକର ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଂ ଜବକି ଗୁରୁ ପ୍ରଥମ ଭାବ ମେଂ ମୀନ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଂ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବିଶେଷ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ଏହି ସମୟ ରେ ବ୍ୟାପାର ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ବିଶେଷ ସଫଳତା ମିଳିବ ନାହିଁ । ତଥା ଅନ୍ୟତ୍ର ମଧ୍ୟ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଯୋଜନା ସଫଳ ହେବ ନାହିଁ । ଯଦି ଚାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ପଦ ଉନ୍ନତି ସମ୍ଭବି ବିଳମ୍ବ ହେବ । ତଥା ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କ ରେ ତନାବ ରହିବ । ବେ ରୋଜଗାର ଙ୍କୁ ମଧ୍ୟ ଉଦ୍ଦିତ ରୋଜଗାର ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ ନାହିଁ । ଆର୍ଥିକ ଦୃଷ୍ଟି ରେ ମଧ୍ୟ ସ୍ଥିତି ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ତଥା ଆୟ ସ୍ରୋତ ରେ ଅଭାବ ର କାରଣ ବେଳେ ବେଳେ ଆର୍ଥିକ ଅସୁବିଧା ର ସାମନା କରିବା କୁ ପଡ଼ିବ । ସାଥେ ସାଥେ ପରିବାର ରେ ଅଶାନ୍ତି ର ବାତାବରଣ ବନି ରହିବ । ତଥା ଜଣେ ଅନ୍ୟ ଙ୍କ ପ୍ରତି ସହଯୋଗ ର ଭାବ ର ଅଭାବ ରହିବ । ଏହା କୁ ଛାଡ଼ି ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ସମ୍ପର୍କ ରେ ମଧ୍ୟ ନ୍ୟୁନତା ରହିବ । କିନ୍ତୁ ଭବିଷ୍ୟତ ପାଇଁ ଆଶାନ୍ତିତ ରହନ୍ତୁ ।

ଫଳାଦେଶ - 2043

ବୃହସ୍ପତି ଏମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ସମୟଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ବିଶେଷ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ । ଆପଣ ଧର୍ମଶାସ୍ତ୍ର ପ୍ରତି ଆଗ୍ରହୀ ହେବେ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କର ଦୈନିକ ଓ ମାନସିକ ଅବସ୍ଥା ବଜାୟ ରହିବ । ଏଇ ସମୟରେ ସମସ୍ତ ଅସମାପ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ ଗୁଡ଼ିକୁ ପୁନଃବିଚାରଣ କରିବେ ଏବଂ ନୂଆ କାର୍ଯ୍ୟ କୌଣସି ଭାବେ ନିୟୁତ୍ତି ହୋଇପାରନ୍ତି । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ପଦୋନ୍ନତିର ଯୋଗ ଅଛି । ବ୍ୟବସାୟ ଦିଗରୁ ଲାଭର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଆପଣର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥା ସୁରକ୍ଷିତ ରହିବ । ଦଶା କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣ ସୁଖ ଆଶା କରି ପାରନ୍ତି ।

ଏହି ବର୍ଷ ଶନି ୭ମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ସାଧାରଣ ଭାବେ ଏହି ସମୟଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଶୁଭ । ଏହି ସମୟରେ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣ ଯଥେଷ୍ଟ ଉନ୍ନତି କରିବେ । କିନ୍ତୁ ଆପଣଙ୍କର ମା, ବାପା, ସ୍ତ୍ରୀଙ୍କର ଶାରୀରିକ ସୁସ୍ଥତା ନ ରହିପାରେ । ଏଣୁ ଆପଣ ମାନସିକ ଦିଗରୁ ଅସ୍ଥିରତା ଅନୁଭବ କରିବେ । ଆପଣ ଆତ୍ମପ୍ରତ୍ୟୟ ଓ ମନୋବଳ ଦ୍ୱାରା ଏହି ପରିସ୍ଥିତିକୁ କଟାଇ ଯାଇପାରିବେ । ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାନ ଉନ୍ନତି ଘଟିବ । ଏହି ସମୟରେ ଭ୍ରମଣ ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭଜନକ । ଆପଣ ଏହି ବର୍ଷ ସମ୍ପତ୍ତି କ୍ରୟ ବିକ୍ରୟ କରିପାରନ୍ତି ।

ରାହୁ ଏକାଦଶ ସ୍ଥାନ ଏବଂ କେତୁ ଷଷ୍ଠ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ସାଧାରଣ ଭାବେ ଶୁଭ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ଦୈନିକ ଓ ମାନସିକ ଉଭୟ ଦିଗରୁ ସୁସ୍ଥ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ବିଦେଶ ଯାତ୍ରାର ଯୋଗାଯୋଗ ହୋଇପାରେ । ଫଳରେ ଅଧିକ ବ୍ୟୟର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତିର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । କେତୁ ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣ ଶତ୍ରୁ ଦମନର ସମ୍ପନ୍ନ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କର ସାମାଜିକ ମର୍ଯ୍ୟଦା ବୃଦ୍ଧି ପାଇବ ।

ଇସ ବର୍ଷ ଗୁରୁ କୀ ମହାଦଶା ମେଂ ଶୁକ୍ର କା ଅନ୍ତର ରହେଗା । ଶୁକ୍ର ଏକାଦଶ ଭାବ ମେଂ ମକର ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଂ ଜବକି ଗୁରୁ ପ୍ରଥମ ଭାବ ମେଂ ମୀନ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଂ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭ ଏବଂ ସମ୍ମାନ ବର୍ଦ୍ଧକ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଆକାଂକ୍ଷା ତଥା ଆଶା ପୂରା ହେବ । ତଥା ବ୍ୟାପାର ରେ ଇଚ୍ଛିତ ଲାଭ ର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ଯଦି ବାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ପଦ ଉନ୍ନତି ର ସମ୍ଭାବନା ପ୍ରବଳ ହେବ । ତଥା ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କ ରେ ମଧୁରତା ରହିବ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ସେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ପରିବାର ରେ ସଦସ୍ୟଙ୍କ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ସହଯୋଗ ର ଭାବ ରହିବ । ତଥା ସବୁ ଲୋକ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ମିଳି ମିଶି ରହିବେ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ପରିବାର ରେ ଶାନ୍ତି ତଥା ସଦଭାବ ର ଭାବନା ରହିବ । ଏହା କୁ ଛାଡ଼ି ମିତ୍ର ବର୍ଗଙ୍କ ଠାରୁ ଆପଣଙ୍କୁ ସମୟ ଅନୁକୂଳ ଇଚ୍ଛିତ ଲାଭ ଏବଂ ସହଯୋଗ ମିଳୁ ଥିବ । ତଥା ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ବିଶ୍ୱାସନୀୟତା ର ଭାବ ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଏପରି ସମୟ କୁ ଯତ୍ନ ପୂର୍ବକ ସହଯୋଗ କରିବା ପାଇଁ ଚପ୍ପର ରହନ୍ତୁ ।

ଫଳାଦେଶ - 2044

ବୃହସ୍ପତି ଦଶମସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏଇ ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କର ଉନ୍ନତି ପକ୍ଷରେ ସହାୟକ । ଆପଣ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଓ ବ୍ୟବସାୟ ଦିଗରୁ ଆଶାନ୍ୱରୁପ ସାଫଲ୍ୟ ପାଇବେ । ଆପଣ ରାଜନୀତିବିତ୍ ବା ଉଚ୍ଚପଦସ୍ଥ କର୍ମଚାରୀ ମାନଙ୍କ ସହିତ ଆପଣଙ୍କର ସୁ-ସମ୍ପର୍କ ଗଢ଼ି ଉଠିବ ଏବଂ ସେମାନଙ୍କ ନିକଟରୁ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସମର୍ଥନ ପାଇବେ । ଗୃହ ପରିବେଶର ଭାରସାମ୍ୟ ବଜାୟ ରହିବ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ର ପଦୋନ୍ନତିର ଯୋଗ ଅଛି । ଏଇ ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ଦେଖାଦେବ । ଆପଣ କାହାରିଦ୍ୱାରା ପ୍ରତାରିତ ହୋଇପାରନ୍ତି । ଆପଣ ନିଜର ବ୍ୟବହାର ସମ୍ପର୍କରେ ସଚେତନ ହୁଅନ୍ତୁ । ଦଶା କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣ ସୁଫଳ ପାଇବେ ।

ଏହି ବର୍ଷ ଶନି ଷଷ୍ଠ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଆପଣ ବ୍ୟବସାୟ ଓ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଆଶାନ୍ୱରୁପ ସାଫଲ୍ୟ ଲାଭ କରିବେ । ଅର୍ଥନୈତିକ ଦିଗରୁ ଆପଣଙ୍କର ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ହେବ ଏବଂ ବ୍ୟବସାୟିକ ଦିଗରୁ ଆକର୍ଷକ ପରିବର୍ତ୍ତନର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ପଦୋନ୍ନତିର ଯୋଗ ଅଛି । ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ ଆପଣଙ୍କର କ୍ଷତି ସାଧନରେ ବ୍ୟର୍ଥ ହେବେ । ଆପଣ ପ୍ରତିଯୋଗିତା ମୂଳକ ପରୀକ୍ଷାରେ ସଫଳ ହେବେ । ଏହି ସମୟକାଳୀନ ଭ୍ରମଣ ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଫଳଦାୟକ ।

ରାହୁ ଏକାଦଶ ସ୍ଥାନ ଏବଂ କେତୁ ପଞ୍ଚମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଶୁଭ । ଏହି ସମୟରେ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣ ପଦୋନ୍ନତିର ସୁଯୋଗ ପାଇବେ ଏବଂ ବ୍ୟବସାୟିକ ଦିଗରୁ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭବାନ ହେବେ । ପ୍ରତିବେଶୀ ମାନଙ୍କ ନିକଟରେ ଆପଣ ସମ୍ମାନିତ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କର ଉପାର୍ଜନ ବୃଦ୍ଧି ପାଇବା ଫଳରେ ବ୍ୟାଙ୍କରେ ଅର୍ଥ ସଞ୍ଚୟର ପରିମାଣ ବୃଦ୍ଧି ପାଇବ । ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ମାନେ ସେମାନଙ୍କ କର୍ମ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆଶାନ୍ୱରୁପ ଉନ୍ନତି କରିବେ ।

ଇସ ବର୍ଷ ଗୁରୁ କୀ ମହାଦଶା ମେଂ ତୀନ ଗ୍ରହୋଂ କୀ ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଧଶା ରହେଗୀ । ଇସ ବର୍ଷ ଶୁକ୍ର କୀ ଅନ୍ତର ୨୯/୦୧/୨୦୪୪ କୋ ସମାପ୍ତ ହୋଗା । ଉସକେ ବାଦ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଧଶା ପ୍ରାରଭ୍ ହୋଗୀ ତଥା ୧୬/୧୧/୨୦୪୪ ତକ ଚଲେଗୀ । ଇସ ବର୍ଷ କୀ ଅନ୍ତ ଚନ୍ଦ୍ର କୀ ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଧଶା ମେଂ ହୋଗା । ଆପକୀ ଜନ୍ମକୁଣ୍ଡଳୀ ମେଂ ମହାଦଶା କୀ ସ୍ୱାମୀ ପ୍ରଥମ ଭାବ ମେଂ ମୀନ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଂ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭ ଏବଂ ଅନୁକୂଳ ଫଳ ଦାୟକ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଅଟକି ଥିବା କାର୍ଯ୍ୟ ପୁର୍ଣ୍ଣ ହେବ । ତଥା ବ୍ୟାପାର ରେ ମଧ୍ୟ ସନ୍ତୋଷ ଜନକ ପରିଣାମ ର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଲାଭ ଦାୟକ ସମ୍ବନ୍ଧ ମଧ୍ୟ ବନିବ । ଯଦି ଡାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ କାର୍ଯ୍ୟ ସ୍ତର ରେ ଉନ୍ନତି ର ପ୍ରବଳ ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ତଥା ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ବନ୍ଧ ରେ ମଧୁରତା ରହିବ । ଆର୍ଥିକ ଦୃଷ୍ଟି ରେ ମଧ୍ୟ ସ୍ଥିତି ରେ ସୁଦୃଢ଼ତା ରହିବ । ତଥା ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରା ରେ ଧନ ଅର୍ଜନ ହେବ ଏବଂ ଆୟ ସ୍ରୋତ ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ପାରିବାରିକ ସଦସ୍ୟ ଙ୍କ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ସହଯୋଗ ର ଭାବ ରହିବ । ତଥା ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ସବୁ ଲୋକ ପ୍ରେମ ବର୍ଧକ ରହିବେ । ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଶାନ୍ତି ତଥା ସଦ୍ଭାବ ର ବାତାବରଣ ବନି ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ପରିବାର ରେ ସଦସ୍ୟ ଙ୍କ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ର ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ଏହା କୁ ଛାଡ଼ି ଦୂର ସମୀପ ର ଲାଭ ଦାୟକ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ମଧ୍ୟ ହେବା ର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ତଥା ସାମାଜିକ ମାନ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟ ରୂପ ରେ ଶୁଭ ଫଳ ହିଁ ଅଧିକ ପ୍ରଦାନ କରିବ । ତଥାପି ବେଳେ ବେଳେ ଅଶୁଭ ଫଳ ର ପ୍ରାପ୍ତି ମଧ୍ୟ ହୋଇ ପାରେ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ମହତ୍ତ୍ୱପୁର୍ଣ୍ଣ ଯୋଜନା ତଥା କାର୍ଯ୍ୟ ସଫଳ ହେବ । ଆର୍ଥିକ ଦୃଷ୍ଟି ରେ ସମୟ ଅନୁକୂଳ ରହିବ । ତଥା ଏଥିରେ ସ୍ଥାୟିତ୍ୱ ବନି ରହିବ । ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ବ୍ୟକ୍ତି ଏବଂ ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ସାମାନ୍ୟ ସମ୍ବନ୍ଧ ଭଲ ରହିବ । ପାରିବାରିକ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ତଥା ସମୃଦ୍ଧି ମଧ୍ୟ ବନା ରହିବ । ତଥା ସବୁ ଲୋକ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ପ୍ରେମ ପୁର୍ବକ ରହିବେ । ତଥା ତାଙ୍କର ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ମଧ୍ୟ ଭଲ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ରୁଚି ଆଧ୍ୟାତ୍ମ କିମ୍ବା ପର ବିଦ୍ୟା ପ୍ରତି ଉତ୍ସୁକ ହୋଇ ପାରେ । ତଥା ଏହି କ୍ଷେତ୍ର ରେ କିଛି ଅନୁଭବ ତଥା ଉପଲବ୍ଧି ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ମଧ୍ୟ ଆପଣ ସମର୍ଥ ହେବେ । ଶତ୍ରୁ ଏବଂ ପ୍ରତିଦ୍ୱନ୍ଦି ଙ୍କୁ ପରାଜିତ କରିବା ରେ ଆପଣ ସଫଳ ହେବେ । ତଥା ତାଙ୍କ ଠାରୁ କୌଣସି ଅସୁବିଧା ହେବ ନାହିଁ । କିନ୍ତୁ ଶାରୀରିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଏବଂ ସୁରକ୍ଷା ର ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କୁ ଏପରି ସମୟ ରେ ପୁର୍ଣ୍ଣ ସଚେତନ ରହିବା ଦରକାର ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ରହିବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତିରେ ସୁଦୃଢତା ରହିବ । ତଥା ବିଭିନ୍ନ ଆୟ ସ୍ରୋତର ବୃଦ୍ଧି କରିବାରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଯଦି ଆପଣ ବାକିରୀରେ ଥାଆନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ଆପଣଙ୍କ ପଦ ଉନ୍ନତିର ପ୍ରବଳ ସମ୍ଭାବନା ବନିବ । ପାରିବାରିକ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ତଥା ସମୃଦ୍ଧି ଏହି ସମୟରେ ଭଲ ରହିବ । ତଥା ସବୁ ପାରିବାରିକ ଜନ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟରେ ମିଳି ମିଶି ରହିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ପରିବାରରେ କୌଣସି ମଙ୍ଗଳ ଉତ୍ସବ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଯାହା ବିବାହ କିମ୍ବା ଛୁଆଁଙ୍କ ଜନ୍ମର ରୂପରେ ହୋଇପାରେ । ମାନ ସମ୍ମାନ ଏବଂ ପ୍ରସିଦ୍ଧି ଏହି ସମୟରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ତଥା ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ଲୋକ ଏବଂ ଭଲ ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ପର୍କ ବନିବ । କିମ୍ବା ତାଙ୍କଠାରୁ ଇଚ୍ଛିତ ଲାଭ ଏବଂ ସହଯୋଗ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ମିତ୍ର ଏବଂ ଶୁଭ ଚିନ୍ତକଙ୍କଠାରୁ ମଧ୍ୟ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସହଯୋଗର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ଦ୍ୱାରା ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଭବିଷ୍ୟତ ପାଇଁ ଲାଭ ଦାୟକ ଯୋଜନା ବନିବ । ଅର୍ଥାତ ସମୟର ସହଯୋଗ କରନ୍ତୁ । ତଥା ଉନ୍ନତି ମାର୍ଗ ପ୍ରଶସ୍ତ କରିବା ପାଇଁ ଚପ୍ତ ରହନ୍ତୁ ।



ଫଳାଦେଶ - 2045

ବୃହସ୍ପତି ଏକାଦଶସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏଇ ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କର ସବୁଦିଗରୁ ଶୁଭ । ଏଇ ସମୟରେ ଆପଣ କିଛି ନୂଆ ଅର୍ଥରପାର୍ଜନ ଉତ୍ସର ସନ୍ଧାନ ପାଇବେ । ଫଳରେ ବ୍ୟାଙ୍କର ଅର୍ଥ ସଞ୍ଚୟର ପରିମାଣ ବୃଦ୍ଧି ପାଇବ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଆଶାନ୍ୱରୁପ ସାଫଲ୍ୟ ପାଇବେ ଏବଂ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ପଦୋନ୍ନତିର ଯୋଗ ଅଛି । ଆପଣ ଜ୍ୟୋତିଷଶାସ୍ତ୍ର ବିଷୟରେ ଅଧ୍ୟୟନ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କର ସାମାଜିକ ମର୍ଯ୍ୟାଦା ଅସ୍ଥୁଣ ରହିବ । ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ପରିସ୍ଥିତି ଓ ଦଶା କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣ ସୁଫଳ ଆଶା କରିପାରନ୍ତି ।

ଏହି ବର୍ଷ ଶନି ସପ୍ତମ ଗୃହରେ ପ୍ରବେଶ କରିବା ହେତୁ ଶାରୀରିକ ଓ ମାନସିକ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ମଧ୍ୟମ ଧରଣର ରହିବ । ଆପଣଙ୍କର ପତ୍ନୀ ରୋଗରେ ପିଡ଼ିତ ହେବେ ଏବଂ ବୈବାହିକ ଜୀବନ ଆନନ୍ଦମୟ ହେବନାହିଁ । ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣ କୌଣସି ବ୍ୟବସାୟ ଆରମ୍ଭ କରନ୍ତୁ ନାହିଁ, କ୍ଷତ୍ରରେ ପଡ଼ିବେ । ଆୟ ଠାରୁ ବ୍ୟୟ ବଳେଇଯିବ ଫଳରେ ଚିନ୍ତା ଗ୍ରସ୍ତହେବେ । ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣ ନୂତନ ଘର, ଜମି ଇତ୍ୟାଦି କ୍ରୟ କରିବା ପାଇଁ ମନ ନିବେଶ କରିବେ ।

ରାହୁ ନବମ ସ୍ଥାନ ଓ କେତୁ ତୃତୀୟ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଆପଣ ଏ ବର୍ଷରେ ମିଶ୍ରଫଳ ଲାଭ କରିବେ । ଆପଣ ଧର୍ମିୟ ବ୍ୟାପାରରେ ଆଗ୍ରହୀ ହେବେ ଏବଂ କୌଣସି ରମଣୀଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ଉପକୃତ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ନାହିଁ । ଆପଣ ଶାରୀରିକ ଦିଗରୁ ସୁସ୍ଥ ରହିଲେ ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟରେ ଅଳ୍ପକେ ଅର୍ଥାତ୍ ସାମାନ୍ୟ କଥାରେ କ୍ରୋଧାନ୍ୱିତ ହୋଇପଡ଼ିବେ । ମାନସିକ ସୁସ୍ଥତା ଅତୁଟ ରହିବ କିନ୍ତୁ ଗୃହରେ ଅଶାନ୍ତି ଦେଖା ଦେଇପାରେ । କିନ୍ତୁ କେତୁ ତୃତୀୟ ସ୍ଥାନରେ ରହିବା ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ସାମାଜିକ ମର୍ଯ୍ୟାଦା ବୃଦ୍ଧି ପାଇବ । ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାନ ଉନ୍ନତି ଘଟିବ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ପିତାମାତାଙ୍କର ଶାରୀରିକ ସୁସ୍ଥତା ଅସ୍ଥୁଣ ରହିବ ।

ଇସ ବର୍ଷ ଗୁରୁ କୀ ମହାଦଶା ମେଂ ଚନ୍ଦ୍ର କା ଅନ୍ତର ରହେନା । ଚନ୍ଦ୍ର ଦ୍ୱିତୀୟ ଭାବ ମେଂ ମେଷ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଂ ଜବକି ଗୁରୁ ପ୍ରଥମ ଭାବ ମେଂ ମୀନ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଂ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭ ଏବଂ ଅନୁକୂଳ ରହିବ ନାହିଁ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ଆତ୍ମ ବିଶ୍ୱାସ ର ଅଭାବ ରହିବ । ତଥା ନିରାଶ ବାଦୀ ବିଚାର ଧାରା ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ । କାଳ୍ପନିକ ଶକ୍ତି ର ନ୍ୟୁନତା ର କାରଣ ଆପଣ ଉତ୍ପନ୍ନ ସମସ୍ୟା କୁ ସାମନା ତଥା ସମାଧାନ କରିବାରେ ଅସମର୍ଥ ରହିବେ । ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତି ମଧ୍ୟ ସାମାନ୍ୟ ରହିବ । ତଥା ଅଧିକ ବ୍ୟୟ ର କାରଣ ବେଳେ ବେଳେ ଅସୁବିଧା ମଧ୍ୟ ହୋଇ ପାରେ । ଏପରି ସମୟରେ କୌଣସି ଯୋଜନା କିମ୍ବା କାର୍ଯ୍ୟ ଉପରେ ବ୍ୟୟ ନ କରନ୍ତୁ । ବ୍ୟାପାରରେ ମଧ୍ୟ ହାନି ର ସମ୍ଭାବନା ରହିବ । ତଥା ଡାକିରୀରେ ପଦ ଉନ୍ନତି ସମ୍ଭାବନା ବାଧା ଆସିବ । ପାରିବାରିକ ଶାନ୍ତି ତଥା ସୁଖ ସମୃଦ୍ଧି ଭଲ ହେବ ନାହିଁ । ତଥା ପାରିବାରିକ ଜନ ଜୀବନରେ ମଧ୍ୟରେ ତନାବ ଏବଂ ମତଭେଦ ରହିବ । ସାମାଜିକ ମାନ ସମ୍ମାନ ଏବଂ ପ୍ରସିଦ୍ଧିରେ ମଧ୍ୟ ନ୍ୟୁନତା ର ଅନୁଭୂତି ହେବ । ପରନ୍ତୁ ଏହି ସମୟରେ ପରିବାରରେ କୌଣସି ମଙ୍ଗଳ ଉତ୍ପତ୍ତି ହୋଇ ପାରେ । ଅର୍ଥାତ୍ ସମୟକୁ ଧ୍ୟାନ ପୂର୍ବକ ବ୍ୟତୀତ କରନ୍ତୁ । ତଥା ବୁଦ୍ଧିମତ୍ତା ର ସହ କାର୍ଯ୍ୟ କଳାପ କୁ ସମ୍ପନ୍ନ କରନ୍ତୁ ।

ଫଳାଦେଶ - 2046

ବୃହସ୍ପତି ଦ୍ଵାଦଶ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏଇ ବର୍ଷ ଆପଣ ଶାରୀରିକ ଭାବେ ସୁସ୍ଥ ରହିଲେ ମଧ୍ୟ ମାନସିକ ପକ୍ଷଣା ଭୋଗିପାରନ୍ତି । ବ୍ୟୟର ଅଧିକ ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥା ଉନ୍ନତି ସମ୍ଭବ ନୁହେଁ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ନାନା ବାଧା ବାପଣିର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେବେ । ଫଳରେ ସାପକ୍ଷ୍ୟ ପାଇବାକୁ ହେଲେ ଆପଣଙ୍କୁ କଠୋର ପରିଶ୍ରମ କରିବାକୁ ହେବ । ଏଇ ସମୟରେ ଭ୍ରମଣର ଯୋଗାଯୋଗ ହୋଇପାରେ ଯାହା ଫଳରେ ଅର୍ଥବ୍ୟୟ ହୋଇପାରେ । ତେବେ ଭବିଷ୍ୟତ ଆପଣଙ୍କ ଉନ୍ନତିର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଦଶା କ୍ଷେତ୍ରରେ ସୁଫଳ ନ ପାଇବା ଫଳରେ ଗୁରୁତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପାଦନା ପାଇଁ ଯଥେଷ୍ଟ ପରିଶ୍ରମର ପ୍ରୟୋଜନ । ଆପଣଙ୍କର ନାନା ଦିଗରୁ ଅର୍ଥପ୍ରାପ୍ତି ହୋଇପାରେ । ଆଶାନ୍ତରୁପ ଫଳଲାଭ କରିବେ ।

ଏହି ବର୍ଷ ଶନି କ୍ଷତ୍ର ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଆପଣ ବ୍ୟବସାୟ ଓ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଆଶାନ୍ତରୁପ ସାପକ୍ଷ୍ୟ ଲାଭ କରିବେ । ଅର୍ଥନୈତିକ ଦିଗରୁ ଆପଣଙ୍କର ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ହେବ ଏବଂ ବ୍ୟବସାୟିକ ଦିଗରୁ ଆକର୍ଷିକ ପରିବର୍ତ୍ତନର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ପଦୋନ୍ନତିର ଯୋଗ ଅଛି । ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ ଆପଣଙ୍କର କ୍ଷତି ସାଧନରେ ବ୍ୟର୍ଥ ହେବେ । ଆପଣ ପ୍ରତିଯୋଗିତା ମୂଳକ ପରୀକ୍ଷାରେ ସଫଳ ହେବେ । ଏହି ସମୟକାଳୀନ ଭ୍ରମଣ ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଫଳଦାୟକ ।

ରାହୁ ଦଶମ ଗୃହରେ ଏବଂ କେତୁ ଚତୁର୍ଥ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ସାଧାରଣ ଭାବେ ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ମଙ୍ଗଳମୟ ହେବ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଅଥବା ବ୍ୟବସାୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ କାହିଁତ ଫଳ ପାଇବେ । ଚାକିରୀ ଅଥବା ରାଜନୀତିରେ ଗୁରୁତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ ପଦରେ ଅବସ୍ଥାନ କରିବାର ପ୍ରବଳ ସୁଯୋଗ ଅଛି । ଏହି ସମୟ ମଧ୍ୟରେ ଆପଣ ରାଜନୀତିବିତ୍ ମାନଙ୍କ ସଂସ୍ପର୍ଶରେ ଆସିବେ ଏବଂ ସେମାନଙ୍କ ସାହାଯ୍ୟ ଦ୍ଵାରା ବଡ଼ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଲାଭବାନ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କର ସାମାଜିକ ମର୍ଯ୍ୟାଦାର ଉନ୍ନତି ହେବ ଏବଂ ଜନ ସମାଜରେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ଗ୍ରହଣଯୋଗ୍ୟ ହେବା ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥା ଭଲରେ କଟିବ, କାରଣ ବିଭିନ୍ନ ଦିଗରୁ ଅର୍ଥାଗମନର ସୁଯୋଗ ସମ୍ଭାବନା ରହିଛି । ପିତା-ମାତାଙ୍କ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ଏବଂ ମାନସିକ ଦିଗରୁ ସେମାନେ ସୁଖୀ ହେବେ ।

ଗୁରୁ କୀ ମହାଦଶା ମେଂ ଚନ୍ଦ୍ର କା ଅନ୍ତର ୧୮/୦୩/୨୦୪୬ କୋ ସମାପ୍ତ ହୋଗା । ଉସକେ ବାଦ ମଙ୍ଗଳ କା ଅନ୍ତର ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଗା । ଦୋନୋ ଅନ୍ତର୍ଦଶାଆଁ କେ ସ୍ଵାମୀ ଗ୍ରହ ଏକ ହା ଭାବ ଏବଂ ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବିଶେଷ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ସାହାସ ତଥା ଆତ୍ମିକ ଶକ୍ତି ର ନ୍ୟୁନତା ରହିବ । ଫଳତଃ ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ତଥା ଯୋଜନା ରେ ସଫଳତା ଅଳ୍ପ ମାତ୍ରା ରେ ହିଁ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ କିଛିତ ସୁ ଅବସର ର ପ୍ରାପ୍ତି ଅବଶ୍ୟ ହେବ । ପରନ୍ତୁ ବ୍ୟବହାରିକ ନ ହେବା ର କାରଣ ତାହାର ଉପଯୋଗ କରିବା ରେ ଅସମର୍ଥ ରହିବେ । ପାରିବାରିକ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ତଥା ସମୃଦ୍ଧି ମଧ୍ୟ ଏହି ସମୟ ରେ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ତଥା ପାରିବାରିକ ଜନ ଜ୍ଞ ସହ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ମତଭେଦ ତଥା ତନାବ ପୂର୍ଣ୍ଣ ସମ୍ଭବ ରହିବ । ଆର୍ଥିକ କ୍ଷେତ୍ର ରେ କିଛିତ ଅସୁବିଧା ର ଅନୁଭୂତି ହେବ । ତଥା ଲାଭ ମାର୍ଗ ଅବରୁଦ୍ଧ ରହିବ । ସାହିତ୍ୟ କଳା ଏବଂ କବିତା ଆଦି ର ପ୍ରତି ଆପଣଙ୍କ ଅପେକ୍ଷା ର ଭାବନା ରହିବ । ତଥା ଏହି କ୍ଷେତ୍ର ରେ କୌଣସି ଉଲ୍ଲେଖନୀୟ ସଫଳତା ମିଳିବ ନାହିଁ । ମିତ୍ର ଏବଂ ବନ୍ଧୁ ବର୍ଗ ଜ୍ଞ ଠାରୁ ମଧ୍ୟ ବାଞ୍ଛିତ ସହଯୋଗ ମିଳିବ ନାହିଁ । ତଥା ବ୍ୟର୍ଥ ଏବଂ ତନାବ ଯୁକ୍ତ ଅନାବଶ୍ୟକ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଅର୍ଥାତ ଧ୍ୟାନ ପୂର୍ବକ ସମୟ ର ବ୍ୟତୀତ କରନ୍ତୁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ମଧ୍ୟମ ରହିବ । ତଥା ଶୁଭା ଶୁଭ ଉଭୟ ପ୍ରକାର ର ଫଳ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । କିନ୍ତୁ ଅଶୁଭ ଫଳ ର ପ୍ରାପ୍ତି ଅଧିକ ମାତ୍ରା ରେ ହେବ । ପାରିବାରିକ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ଏହି ସମୟ ରେ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ତଥା ପରିବାର ରେ ଲୋକ ଜ୍ଞ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ତନାବ, ମତଭେଦ ବିଦ୍ୟମାନ ରହିବ । ତଥା କୌଣସି ଜ୍ଞ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ମଧ୍ୟ ପ୍ରଭାବିତ ହୋଇ ପାରେ । ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ବ୍ୟକ୍ତି ଜ୍ଞ ସହ ମଧ୍ୟ ସମ୍ପର୍କ ରେ ନ୍ୟୁନତା ଆସିବ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଶୁଭ ଏବଂ ମହତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟ ର ସିଦ୍ଧି ରେ ବିଳମ୍ବ ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଅନିଚ୍ଛିତ ତଥା ବ୍ୟର୍ଥ ର ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ କ୍ରୋଧ ର ଭାବ ର ପ୍ରବଳତା ରହିବ । ଯାହା ଦ୍ଵାରା ସମୟ ସମୟ ରେ ଅନାବଶ୍ୟକ ସମସ୍ୟା ଉତ୍ପନ୍ନ ହେବ । କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ର ଉନ୍ନତି ମଧ୍ୟ ସାମାନ୍ୟ ରହିବ । ପରନ୍ତୁ ଶତ୍ରୁ ପକ୍ଷ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ପ୍ରତିକୂଳ ବାତାବରଣ ବନେଇବା ରେ ସଫଳ ହେବ ନାହିଁ । ଏହି ପରି ସମୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ଅର୍ଥାତ ନିଜେ ଏବଂ

ବୃଦ୍ଧିମତ୍ତା

ପୁର୍କିକ ସମୟ ର ବ୍ୟତୀତ କରନ୍ତୁ ।



ଫଳାଦେଶ - 2047

ବୃହସ୍ପତି ପ୍ରଥମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ମାନସିକ, ଦୈନିକ ଓ ସାମାଜିକ ପରିବର୍ତ୍ତନ ଦେଖାଦେବ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣଙ୍କର ପ୍ରବଳ ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଆପଣ ଅବିବାହିତ ହୋଇଥିଲେ, ବିବାହ ଯୋଗର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଆପଣ ଧର୍ମଶାସ୍ତ୍ର ପ୍ରତି ଆଗ୍ରହୀ ହୋଇ ଅନେକ ଧର୍ମିୟ ଅନୁଷ୍ଠାନର ଆୟୋଜନ କରିବେ । ନାନା ଦିଗରୁ ଅର୍ଥ ପ୍ରାପ୍ତି ଯୋଗୁ ଆର୍ଥିକ ଛିଟାବଣ୍ଡା ବଜାୟ ରହିବ । ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣ ଦୀର୍ଘ ଦିନର ଅସମାପ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ କରିବାକୁ ସକ୍ଷମ ହେବେ । ଆପଣ କାର୍ଯ୍ୟ ମଧ୍ୟରେ ନିଜକୁ ଉତ୍ସର୍ଗ କରିବେ ।

ଏହି ବର୍ଷ ଶନି ୮ମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଆପଣ ଗ୍ୟାସ୍ତିକ ରୋଗରେ ଆକ୍ରାନ୍ତ ହୋଇପାରନ୍ତି । ଆପଣ ମଝିରେ ମଝିରେ ବାଧା-ବିପ୍ଳବ ସମ୍ମୁଖୀନ ହେବାର ଆଶଙ୍କା ଅଛି । ସୁତରାଂ ସାଫଲ୍ୟ ପାଇବାକୁ ହେଲେ ଧୈର୍ଯ୍ୟ ଧରି ରହିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଆପଣଙ୍କ ସ୍ତ୍ରୀ ଶାରୀରିକ ଦିଗରୁ ଅସୁସ୍ଥ ରହିବେ, ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ସୁତରାଂ ଆପଣଙ୍କ ବିବାହିତ ଜୀବନ ସୁଖମୟ ହେବ ନାହିଁ । ଆତ୍ମୀୟ ସ୍ୱଜନ ଓ ବନ୍ଧୁମାନଙ୍କ ସହିତ ସୁସମ୍ପର୍କ ଗଢ଼ିଉଠିବ ନାହିଁ । ଶନି ଦଶାହର ମନ୍ଦ ଫଳ ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣ ବିପଦର ସମ୍ମୁଖୀନ ହୋଇପାରନ୍ତି । ଏଥିରୁ ମୁକ୍ତି ପାଇବା ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ ନୀଳା ଧାରଣ କରିବାକୁ ହେବ ।

ଏହି ବର୍ଷ ରାହୁ ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନ ଏବଂ କେତୁ ପ୍ରଥମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣ ଶାରୀରିକ ଅସୁସ୍ଥତାରେ କଷ୍ଟ ପାଇବେ । ପରିବାରର ସଦସ୍ୟ ମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଅସନ୍ତୋଷ ଦେଖାଦେବ । ବ୍ୟବସାୟ ଓ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ସାଫଲ୍ୟ ପାଇବାକୁ ହେଲେ ଆପଣଙ୍କୁ କଠୋର ପରିଶ୍ରମ କରିବାକୁ ହେବ । ପ୍ରଚୁର ଧନ ଉପାର୍ଜନ କରିବା ସତ୍ତ୍ୱେ ବି ବ୍ୟୟ ପ୍ରବଣତା ଯୋଗୁଁ ଆପଣ ଅର୍ଥାଭାବରେ ପଡ଼ିବେ । ଲଟେରୀ ମାଧ୍ୟମରେ ଅର୍ଥପ୍ରାପ୍ତି ହୋଇପାରେ । ସୁଫଳ ପାଇବା ପାଇଁ ରାହୁ ଓ କେତୁଙ୍କୁ ଆରାଧନା କରିବାକୁ ହେବ ।

ଇସ ବର୍ଷ ଶନି କୀ ମହାଦଶା ପ୍ରାରଂଭ ହୋଇ ରହି ହେ । ଇସସେ ବିଦିତ ହୋତା ହେଁ ଇସ ସମୟ ଆପଣା ଜୀବନ ଶୌଲୀ ତଥା କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ମେଂ ପରିବର୍ତ୍ତନ ହୋଗା । ଇସ ବର୍ଷ କୀ ପ୍ରାରଂଭ ଗୁରୁ କୀ ମହାଦଶା ମେଂ ମଙ୍ଗଳ କେ ଅନ୍ତମ ଅନ୍ତର ସେ ହୋ ରହି ହେଁ ଓର ବର୍ଷ କୀ ସମାପ୍ତି ଶନି କୀ ମହାଦଶା ମେଂ ଶନି କେ ପ୍ରଥମ ଅନ୍ତର ସେ ହୋଗା । ଆପଣା ଜନ୍ମକୁଣ୍ଡଳୀ ମେଂ ମହାଦଶା କୀ ସ୍ୱାମୀ ନବମ ଭାବ ମେଂ ବିଛା ରାଶି ମେଂ ଛିତ ହେଁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଶୁଭ ଏବଂ ଅନୁକୂଳ ରହିବ । ତଥା ନିଜ ବୁଦ୍ଧିମତ୍ତା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ବାଞ୍ଛିତ ଉନ୍ନତି ଏବଂ ସଫଳତା ଅର୍ଜିତ କରିବା ରେ ସମର୍ଥ ରହିବେ । ଆର୍ଥିକ ଛିତି ଏହି ସମୟ ରେ ସୁଦୃଢ଼ ରହିବ । ତଥା ପ୍ରଚୁର ମାତ୍ରା ରେ ଧନ ଏବଂ ଲାଭ ଅର୍ଜିତ ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଆୟ ସ୍ରୋତ ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ପାରିବାରିକ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ତଥା ସମୃଦ୍ଧି ମଧ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ । ତଥା ସବୁ ଲୋକ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ମିଳି ମିଶି ରହିବେ । କିନ୍ତୁ କୌଣସି ଜ୍ୱାଳା ପ୍ରଭାବିତ ହୋଇ ପାରେ । ଏହି ସମୟ ରେ ବିଦ୍ୱାନ ତଥା ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ବ୍ୟକ୍ତି ଜ୍ୱାଳା ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ପର୍କ ହେବ । ତଥା ତାଙ୍କ ସହ ମିତ୍ରତା ପୁଣି ସମ୍ବନ୍ଧ ବନିବ । ଲମ୍ବା ଦୂର ର ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କୁ ଲାଭ ତଥା ସମ୍ମାନ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ରେ ଉନ୍ନତି ସନ୍ତୋଷ ପ୍ରଦ ରହିବ । ସାମାଜିକ ମାନ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ତଥା ପ୍ରସିଦ୍ଧି ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଶତ୍ରୁ ଏବଂ ପ୍ରତିଦ୍ୱନ୍ଦୀ ଆପଣଙ୍କ ଠାରୁ ପରାଜିତ ହେବେ । ତଥା ଭାଇ ଭଉଣୀ ନିଜର କ୍ଷେତ୍ର ରେ ଉନ୍ନତି ର ମାର୍ଗ ଉପରେ ଅଗ୍ରସର ରହିବେ । ଅର୍ଥାତ୍ ଏପରି ସମୟ ର ସବୁପଯୋଗ କରିବା ପାଇଁ ଚପ୍ପର ରହନ୍ତୁ ।

ଏହି ସମୟ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ସାମାନ୍ୟ ରୂପ ରେ ଭଲ ରହିବ । ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ମହତ୍ତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଯୋଜନା ତଥା କାର୍ଯ୍ୟ ସିଦ୍ଧ ହେବ ତଥା ବ୍ୟାପାର ରେ ସନ୍ତୋଷ ଜନକ ପରିଣାମ ର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ସାଥେ ସାଥେ ଏଥିରେ କୌଣସି ବିଫଳ କିମ୍ବା ନବୀନ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ପ୍ରାରମ୍ଭ ର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଯଦି ଚାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ କାର୍ଯ୍ୟ ସ୍ତର ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ତଥା ଅଧିକାରୀ ବର୍ଗ ଜ୍ୱାଳା ସହ ସମ୍ବନ୍ଧ ରେ ମଧୁରତା ରହିବ ଏବଂ ସେ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ରହିବେ । ପାରିବାରିକ ସୁଖ ଶାନ୍ତି ତଥା ସମୃଦ୍ଧି ମଧ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ ତଥା ସବୁ ସଦସ୍ୟ ପରସ୍ପର ମଧ୍ୟ ରେ ପ୍ରେମ ପୁର୍ବକ ରହିବେ । ତଥା ଜଣେ ଅନ୍ୟ କୁ ପୁଣି ସହଯୋଗ ପ୍ରଦାନ କରିବେ । ସାଥେ ସାଥେ ଦୂର ସମୀପ ର ଲାଭ ଦାୟକ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ମଧ୍ୟ ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଯାତ୍ରା ଦ୍ୱାରା ସମ୍ମାନ ମଧ୍ୟ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ । ଏହା କୁ ଛାଡ଼ି ପ୍ରଭାବଶାଳୀ ବ୍ୟକ୍ତି ଜ୍ୱାଳା ସମ୍ପର୍କ ମଧ୍ୟ ସ୍ଥାପିତ ହେବ । ଯାତ୍ରା ଦ୍ୱାରା ଆପଣ ସମୟ ସମୟ ରେ ବାଞ୍ଛିତ ଲାଭ ଏବଂ ସହଯୋଗ ର ପ୍ରାପ୍ତି କରୁ ଥିବେ



ଫଳାଦେଶ - 2048

ଏହି ବର୍ଷ ବୃହସ୍ପତି ଦ୍ଵିତୀୟ ଗୃହରେ ଅବସ୍ଥାନ କରିବା ଫଳରେ ପ୍ରଚୁର ଧନ ଉପାର୍ଜନ କରିପାରିବେ । ବହୁବିଧ ଶେତ୍ରରୁ ଅର୍ଥପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ଗୃହ ମଧ୍ୟରେ ଶାନ୍ତି ଓ ସନ୍ତାନ ଲାଭ ହେବ । ଅତ୍ୟଧିକ ବ୍ୟୟ ହେତୁ ନିଜକୁ ଅସୁବିଧା ମନେ କରିବେ । ସମାଜରେ ଆପଣଙ୍କ ଭାବମୂର୍ତ୍ତି ସମ୍ମାନଜନକ ହେବ । ଧର୍ମାନୁଷ୍ଠାନ ଇତ୍ୟାଦି ପାଳନ କରିବେ । ବ୍ୟବସାୟରେ ଉନ୍ନତି ପରିଲକ୍ଷିତ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ବ୍ୟବହାର ଓ କଥାବାର୍ତ୍ତାରେ ସମସ୍ତେ ସନ୍ତୁଷ୍ଟ ହେବେ ।

ଏହି ବର୍ଷ ଶନି ିମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଆପଣ ଗ୍ୟାନ୍ତ୍ରିକ ରୋଗରେ ଆକ୍ରାନ୍ତ ହୋଇପାରନ୍ତି । ଆପଣ ମଝିରେ ମଝିରେ ବାଧା-ବିପ୍ଳବ ସମ୍ମୁଖୀନ ହେବାର ଆଶଙ୍କା ଅଛି । ସୁତରାଂ ସାଫଲ୍ୟ ପାଇବାକୁ ହେଲେ ଧୈର୍ଯ୍ୟ ଧରି ରହିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଆପଣଙ୍କ ସ୍ତ୍ରୀ ଶାରୀରିକ ଦିଗରୁ ଅସୁସ୍ଥ ରହିବେ, ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ନାହିଁ । ସୁତରାଂ ଆପଣଙ୍କ ବିବାହିତ ଜୀବନ ସୁଖମୟ ହେବ ନାହିଁ । ଆତ୍ମୀୟ ସ୍ଵଜନ ଓ ବନ୍ଧୁମାନଙ୍କ ସହିତ ସୁସମ୍ପର୍କ ଗଢ଼ିଉଠିବ ନାହିଁ । ଶନି ଦଶା ଯାଏଁ ଫଳ ପ୍ରଭାବରେ ଆପଣ ବିପଦର ସମ୍ମୁଖୀନ ହୋଇପାରନ୍ତି । ଏଥିରୁ ମୁକ୍ତି ପାଇବା ପାଇଁ ଆପଣଙ୍କୁ ନୀଳା ଧାରଣ କରିବାକୁ ହେବ ।

ଏହି ବର୍ଷ ରାହୁ ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନ ଏବଂ କେତୁ ପ୍ରଥମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣ ଶାରୀରିକ ଅସୁସ୍ଥତାରେ କଷ୍ଟ ପାଇବେ । ପରିବାରର ସଦସ୍ୟ ମାନଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଅସନ୍ତୋଷ ଦେଖାଦେବ । ବ୍ୟବସାୟ ଓ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ସାଫଲ୍ୟ ପାଇବାକୁ ହେଲେ ଆପଣଙ୍କୁ କଠୋର ପରିଶ୍ରମ କରିବାକୁ ହେବ । ପ୍ରଚୁର ଧନ ଉପାର୍ଜନ କରିବା ସତ୍ତ୍ଵେ ବି ବ୍ୟୟ ପ୍ରବଣତା ଯୋଗୁଁ ଆପଣ ଅର୍ଥାଭାବରେ ପଡ଼ିବେ । ଲଟେରୀ ମାଧ୍ୟମରେ ଅର୍ଥପ୍ରାପ୍ତି ହୋଇପାରେ । ସୁଫଳ ପାଇବା ପାଇଁ ରାହୁ ଓ କେତୁଙ୍କୁ ଆରାଧନା କରିବାକୁ ହେବ ।

ମହାଦଶା ଏବଂ ଅର୍ଦ୍ଧଦଶା ସ୍ଵାମୀ ନବମ ଭାବ ମେଂ ବିଛା ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ।

ଫଳାଦେଶ - 2049

ଏହି ବର୍ଷ ବୃହସ୍ପତି ଶୟ ଧ୍ଵାନ ଅଧିକାର କରିବା ଫଳରେ ନିକଟରେ ଆପଣଙ୍କର ଭ୍ରମଣ ଯୋଗର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି, ଯାହାକି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭଦାୟକ । ଆପଣ ଦର୍ଶନ ଓ ସାହିତ୍ୟ ପ୍ରତି ଆଗ୍ରହୀ ହେବେ । ପୁରୁଣା ବନ୍ଧୁମାନଙ୍କ ସହଯୋଗିତା ଓ ସମର୍ଥନ ପାଇବେ । ଆପଣଙ୍କର ନୂତନ କିଛି ବନ୍ଧୁ ହେବେ, ଯେଉଁମାନେ କି ନୂତନ କିଛି କାର୍ଯ୍ୟର ସହାନ ଆପଣଙ୍କୁ ଦେବେ । ଶାରୀରିକ କୌଶଳ ସମସ୍ୟା ଦେଖା ଦେବ ନାହିଁ । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଆପଣଙ୍କର ଉନ୍ନତିର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ଆପଣଙ୍କର ସାମାଜିକ ମର୍ଯ୍ୟଦା ଅକ୍ଷୁଣ୍ଣ ରହିବ । ଏହି ସମୟରେ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ଗ୍ରହ ଓ ଶୁଭ ଫଳାଫଳ ଆଶା କରିପାରନ୍ତି । ଏହି ସମୟକୁ ଆପଣ ଯଥାପସ୍ତକ ବ୍ୟବହାର କରନ୍ତୁ ।

ଶନି ନବମ ଧ୍ଵାନ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ସାମଗ୍ରିକ ଭାବେ ଶୁଭ । ଆପଣଙ୍କର ସାମାଜିକ ପରିଧି ବୃଦ୍ଧି ପାଇବ ଏବଂ ସାମାଜିକ ମର୍ଯ୍ୟଦା ଅକ୍ଷୁଣ୍ଣ ରହିବ । ଶତ୍ରୁପକ୍ଷ ଆପଣଙ୍କ କ୍ଷତି ସାଧନରେ ବ୍ୟର୍ଥ ହେବେ । ଆପଣ ଧର୍ମଶାସ୍ତ୍ର ପ୍ରତି ଆଗ୍ରହୀ ହେବେ କିନ୍ତୁ ମାନସିକ ଅସ୍ଥିରତା ଫଳରେ କୌଣସି ଗୁରୁତ୍ଵପୂର୍ଣ୍ଣ ସିଦ୍ଧାନ୍ତ ଗ୍ରହଣ କରି ପାରିବେ ନାହିଁ । ବାପାଙ୍କ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ପ୍ରତି ଦୃଷ୍ଟି ଦିଅନ୍ତୁ ।

ଏହି ବର୍ଷ ରାହୁ ସପ୍ତମ ଧ୍ଵାନ ଏବଂ କେତୁ ପ୍ରଥମ ଧ୍ଵାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଶୁଭ ନୁହେଁ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ନାନା ପ୍ରକାର ଶାରୀରିକ ଅସୁସ୍ଥତା ଏବଂ ବାଧା-ବିପତ୍ତିର ସମ୍ମୁଖୀନ ହୋଇପାରନ୍ତି । ଆପଣଙ୍କ ସ୍ତ୍ରୀ ଶାରୀରିକ ଦିଗରୁ ଅସୁସ୍ଥ ହୋଇପଡ଼ିବ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ସହିତ ସୁସମ୍ପର୍କ ଗଢ଼ି ଉଠିବାରେ ବାଧା ସୃଷ୍ଟି ହୋଇପାରେ । ବେଶୀ ଭାଗ କାର୍ଯ୍ୟରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଅଧିକ ଶ୍ରମ କରିବାକୁ ପଡ଼ିବ । ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତିର କୌଣସି ସମ୍ଭାବନା ନାହିଁ । ଆପଣ ଆପଣଙ୍କ ସହକର୍ମୀଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ବାଧା-ବିପତ୍ତିର ସମ୍ମୁଖୀନ ହୋଇପାରନ୍ତି । ସୁତରାଂ ଏ ବ୍ୟାପାରରେ ଆପଣ ସତର୍କତା ରୁହନ୍ତୁ । ସୁଧଳ ଲାଭ ପାଇଁ ରାହୁ ଓ କେତୁଙ୍କର ଆରାଧନା କରିବାକୁ ହେବ ।

ମହାଦଶା ଏବଂ ଅର୍ଦ୍ଧଦଶା ସ୍ଵାମୀ ନବମ ଭାବ ମେଂ ବିଚ୍ଛା ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ।

ଫଳାଦେଶ - 2050

ଏହି ବର୍ଷ ବୃହସ୍ପତି ଧର୍ମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ସାଧାରଣ ଭାବେ ଶୁଭ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କର ଦୈନିକ ଓ ମାନସିକ ସୁସ୍ଥତା ବଜାୟ ରହିବ । ପରିବାରର ସଦସ୍ୟଙ୍କ ମଧ୍ୟରେ ଶାନ୍ତି, ସୁରକ୍ଷିତ ରହିବ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କର ପରିକଳ୍ପନା ବାସ୍ତବାୟିତ ହେବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଓ ବ୍ୟବସାୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆଶାନ୍ୱରୁପ ଫଳ ଲାଭ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କର ଅର୍ଥନୈତିକ ଅବସ୍ଥା ସାଧାରଣ ପର୍ଯ୍ୟାୟରେ ରହିବ । ସମାଜରେ ଓ ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ବ୍ୟକ୍ତିମାନଙ୍କ ନିକଟରୁ ଆପଣ ସମ୍ମାନ ଲାଭ କରିବେ । ଏହି ବର୍ଷ ଆପଣଙ୍କର ସମ୍ପତ୍ତି ଲାଭର ଯୋଗ ଅଛି । ମାତୃସ୍ଥାନ ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଶୁଭ । ଆପଣଙ୍କର ଅନ୍ୟାନ୍ୟ ପରିସ୍ଥିତି ଜଟିଳ ହେଲେ ମଧ୍ୟ ଦଶା କ୍ଷେତ୍ରରେ ଶୁଭ ଫଳ ଆଶା କରିପାରିବ । ଏହି କାରଣରୁ ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ କାର୍ଯ୍ୟରେ ବିଳମ୍ବର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି ।

ଏହି ବର୍ଷ ଶନି ନବମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଆପଣ ଏହି ସମୟରେ ସୁଫଳ ଆଶା କରିପାରିବ । ବ୍ୟବସାୟ ଦିଗରୁ ଯଥେଷ୍ଟ ଉନ୍ନତି କରିବେ । ରାଜନୀତିବିତ୍ ମାନଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ଏହି ସମୟଟି ଅତ୍ୟନ୍ତ ଶୁଭ ଏବଂ ପଦୋନ୍ନତିର ଯୋଗ ଅଛି । ନାନା ଦିଗରୁ ନାନା ଭାଗରେ ଅର୍ଥ ପ୍ରାପ୍ତି ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ଆର୍ଥିକ ସ୍ଥିତିବସ୍ଥା ବଜାୟ ରହିବ ।

ଏହି ବର୍ଷ ରାହୁ ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନ ଏବଂ କେତୁ ପ୍ରଥମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ସମୟଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ସାମଗ୍ରିକ ଭାବେ ଶୁଭ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କର ଶାରୀରିକ ଓ ମାନସିକ ସୁସ୍ଥତା ଅସ୍ଥୁନ ରହିବ ଏବଂ ସମସ୍ତ ଅସମାପ୍ତ କାର୍ଯ୍ୟ ଭଲ ଭାବରେ ସମ୍ପୂର୍ଣ୍ଣ କରି ପାରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ବିବାହିତ ଜୀବନ ସୁଖମୟ ହେବ ଏବଂ ସ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ସହିତ ସୁସମ୍ପର୍କ ରହି ଉଠିବ । ବ୍ୟବସାୟ ଦିଗରୁ ଆପଣ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭବାନ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କର ସାମାଜିକ ସମ୍ମାନ ବୃଦ୍ଧି ପାଇବ ଏବଂ ବନ୍ଧୁବାନ୍ଧବ ମାନଙ୍କ ନିକଟରୁ ସହଯୋଗିତା ପାଇବେ ।

ମହାଦଶା ଏବଂ ଅର୍ଦ୍ଧଦଶା ସ୍ୱାମୀ ନବମ ଭାବ ମେଂ ବିଛା ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଁ ।

ଫଳାଦେଶ - 2051

ବୃହସ୍ପତି ଝମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ସାମଗ୍ରିକ ଭାବେ ଶୁଭ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ଜ୍ୟୋତିଷଶାସ୍ତ୍ର, ସାହିତ୍ୟ ଓ ସଙ୍ଗିତ ପ୍ରତି ଆଗ୍ରହୀ ହେବେ ଏବଂ ଅଧ୍ୟୟନରେ ସମୟ ବ୍ୟୟ କରିବେ । ଆର୍ଥିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ହେବ । ଆପଣ ରାଜନୀତିବିତ୍ ବା ଉଚ୍ଚପଦସ୍ଥ କର୍ମଚାରୀ ମାନଙ୍କ ସଂସ୍ପର୍ଶରେ ଲାଭବାନ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କର କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ଓ ବ୍ୟବସାୟ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉନ୍ନତିର ଯୋଗ ଅଛି । ଆପଣଙ୍କର ସନ୍ତାନ ନିଜ ନିଜ କ୍ଷେତ୍ରରେ ଆଶାନ୍ୱରୁପ ଫଳ ଲାଭ କରିବେ । କିନ୍ତୁ ଦଶା କ୍ଷେତ୍ରରେ ସଫଳ ପାଇବେ ନାହିଁ । ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କୁ ନାନା ବାଧା-ବିପତ୍ତିର ସମ୍ମୁଖୀନ ହେବାକୁ ହେବ ।

ଶନି ନବମ ସ୍ଥାନ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କର ଉନ୍ନତି ପକ୍ଷରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ସହାୟକ । ବ୍ୟବସାୟିକ ଦିଗରୁ ଅଭାବନୀୟ ପରିବର୍ତ୍ତନ ଆସିବ । ଆପଣ ଯଦି ରାଜନୀତି ସହିତ ଯୁକ୍ତ ପାଆନ୍ତି, ତେବେ ରାଜନୀତି କ୍ଷେତ୍ରରେ ଉଚ୍ଚ ସ୍ଥାନ ଅଧିକାର କରିବାର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । କର୍ମ କ୍ଷେତ୍ରରେ ମଧ୍ୟ ପଦୋନ୍ନତିର ସୁଯୋଗର ସମ୍ଭାବନା ଉଜ୍ଜ୍ୱଳ । ନାନାଦିଗରୁ ସମ୍ଭାବନା ଅଛି । ନାନା ଦିଗରୁ ଅର୍ଥ ପ୍ରାପ୍ତି ଫଳରେ ଆପଣଙ୍କର ଅର୍ଥନୈତିକ ଅବସ୍ଥାର ଉନ୍ନତି ଘଟିବ । ଆପଣ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ପ୍ରତି ନଜର ଦିଅନ୍ତୁ । କାରଣ, ଆପଣଙ୍କ ରକ୍ତଚାପ ବୃଦ୍ଧିର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି ।

ରାହୁ ସପ୍ତମ ସ୍ଥାନ ଏବଂ କେତୁ ପ୍ରଥମ ସ୍ଥାନ ଅତିକ୍ରମ କରିବା ଫଳରେ ଏହି ବର୍ଷଟି ଆପଣଙ୍କ ପକ୍ଷରେ ସାଧାରଣ ଭାବେ ଶୁଭ । ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ଦୈନିକ ଦିଗରୁ ସୁସ୍ଥ ରହିଲେ ମଧ୍ୟ ମାନସିକ ଯତ୍ନଶାରେ କଷ୍ଟ ପାଇବେ । ଆପଣ କଠୋର ପରିଶ୍ରମ ଫଳରେ ସାଫଲ୍ୟ ଲାଭ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କର ସ୍ତ୍ରୀଙ୍କର ଶାରୀରିକ ସୁସ୍ଥତା ଅସ୍ତୁନ୍ନ ରହିବ । ଆପଣ କର୍ମକ୍ଷେତ୍ରରେ ସହକର୍ମି ମାନଙ୍କ ଦ୍ୱାରା ବାଧା ବିପତ୍ତିର ସମ୍ମୁଖୀନ ହୋଇପାରନ୍ତି । ଆପଣଙ୍କର ସାମାଜିକ ମର୍ଯ୍ୟଦା କ୍ଷୁନ୍ନ ହେବ ଏବଂ ଅର୍ଥ ଉପାର୍ଜନ ପାଇଁ କଠୋର ପରିଶ୍ରମ କରିବାକୁ ହେବ । ସୁଫଳ ପ୍ରାପ୍ତି ପାଇଁ ରାହୁ ଓ କେତୁଙ୍କୁ ଆରାଧନା କରିବାକୁ ହେବ ।

ମହାଦଶା ଏବଂ ଅର୍ଦ୍ଧଦଶା ସ୍ତ୍ରୀମୀ ନବମ ଭାବ ମେଂ ବିଛା ରାଶି ମେଂ ସ୍ଥିତ ହେଂ ।

ଦଶା ବିଶ୍ଳେଷଣ

ମହାଦଶା :- ରାହୁ
(18/07/2015 - 17/07/2033)

ରାହୁ ଙ୍କ ମହାଦଶା ୧୮/୦୭/୨୦୧୫ ରେ ଆରମ୍ଭ ହେବ ଏବଂ ୧୭/୦୭/୨୦୩୩ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ । ଏହାର ଅବଧି ୧୮ ବର୍ଷ ଅଟେ । ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ଜୁଷ୍ଟିଫିକା ରେ ରାହୁ ପ୍ରଥମ ଭାବ ରେ ଛିଡା ଅଛି । ଏହି ଛାନ ଠାରୁ ରାହୁ ଙ୍କ ଦୃଷ୍ଟି ସଫଳ ଭାବ ଉପରେ ଅଛି । ଏହାର ପୂର୍ବ ରୁ ଆପଣଙ୍କ ୭ ବର୍ଷ ର ମଙ୍ଗଳ ଦଶା ଚାଲୁ ଥିଲା । ମଙ୍ଗଳ ର କାରଣ ଆପଣଙ୍କୁ ସଫଳତା, ଖ୍ୟାତି, ସମ୍ପତି ତଥା ଉତ୍ତମ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ରାହୁ ଙ୍କ ବର୍ତ୍ତମାନ ଦଶା ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଧନ ର ପ୍ରାପ୍ତି ଏବଂ ଶତ୍ରୁ ଙ୍କ ଠାରୁ ବିଜୟ ମିଳିବ ତଥା ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ ।

ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ : ଏହି ଦଶା କାଳ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ଶରୀର ର ଉପରା ଭାଗ ତଥା ମୁଣ୍ଡ ରେ କଷ୍ଟ ହୋଇ ପାରେ । ଆପଣ ମୁଣ୍ଡ ବ୍ୟଥା ତଥା ପିତ୍ତ ଦୋଷ ରେ ଗ୍ରସିତ ହୋଇ ପାରନ୍ତି ଏବଂ ରତ୍ନ ପରିବର୍ତ୍ତନ ର କାରଣ ସଂକ୍ରାମକ ରୋଗ, ଚର୍ମ ରୋଗ, ଚେହେରା ଉପରେ ତଥା ମାଥା ରେ ଫେଡ଼ା ଆଦି ହୋଇ ପାରେ । ଏହି ମାମୁଳୀ ଅସୁବିଧା କୁ ଛାଡ଼ି ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ ।

ଅର୍ଥ ଏବଂ ବ୍ୟବସାୟ : ଏହି ଦଶା କାଳ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଆର୍ଥିକ ଛିଡି ଅତ୍ୟନ୍ତ ଭଲ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କୁ ଲାଭ ଏବଂ ସମୃଦ୍ଧି ର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ଧାର୍ମିକ, ଶୈଷିକ ଏବଂ ବୈଜ୍ଞାନିକ ଉପଲବ୍ଧି ର କାରଣ ଆପଣଙ୍କୁ ସମ୍ପତି ଏବଂ ପ୍ରତିଷ୍ଠା ମିଳିବ । ଆପଣଙ୍କୁ ଜୁଆ ରେ ଭଲ ଲାଭ ମିଳିବ । ରାହୁ ଙ୍କ ଦଶା ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଧନ ର ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭ ହେବ । ଆପଣଙ୍କୁ ମିତ୍ର ଙ୍କ ଠାରୁ ଲାଭ ହୋଇ ପାରେ । ଜୀବିକା କିମ୍ବା ବ୍ୟବସାୟ ପାଇଁ ବାୟୁ ଜାନ ଚାଳକ, ଔଷଧ, କମପ୍ୟୁଟର, ମଶୀନ, ସମୁଦ୍ର ସେବା, ବାୟୁ ସେନା ଆଦି ର କ୍ଷେତ୍ର କୁ ଚାଲିଯିବ । ଔଷଧ, ରସାୟନ, ତ୍ରୁଣ, ମଶୀନ ଆଦି ର ବ୍ୟାପାର ଲାଭ ଦାୟକ ହୋଇ ପାରେ । ଚାକିରୀ ପେଶା ଲୋକ ଙ୍କ ଛାନାନ୍ତରଣ ହୋଇ ପାରେ ଯାହା ଅନ୍ତ ରେ ଲାଭ ଦାୟକ ହେବ ଏବଂ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭ ତଥା କାର୍ଯ୍ୟ ଛାନ ରେ ଅପ୍ରତ୍ୟାଶିତ ପଦ ଉନ୍ନତି ହେବ । ବ୍ୟାପାର, ବ୍ୟବସାୟ ରେ ଜଡ଼ିତ ଲୋକ ଙ୍କ ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ଭଲ ଲାଭ, କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ସଫଳତା ତଥା ଆୟ ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ବ୍ୟବସାୟ ରେ ଉନ୍ନତି ତଥା ଆର୍ଥିକ ଖୁସୀ ପାଇଁ ଏହି ଦଶା ଅତ୍ୟନ୍ତ ଉତ୍ତମ ଅଟେ ।

ବାହାନ, ଯାତ୍ରା, ଜମି ବାଡ଼ି : ଚନ୍ଦ୍ର ଙ୍କ ଅନ୍ତର ଦଶା ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ବାହାନ ର ସୁଖ ମିଳିବ । ଆପଣଙ୍କୁ ଜୀବନ ର ସବୁ ସୁଖ ମିଳିବ । ଆପଣ ଅତ୍ୟନ୍ତ ତଥା ଭୁ ସମ୍ପତି ର ସ୍ୱାମୀ ହେବେ । ଏହି ଦଶା କାଳ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଅନେକ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ହେବ । ବୁଧ ଙ୍କ ଅନ୍ତର ଦଶା ରେ ଆପଣଙ୍କ ଛୋଟ କିନ୍ତୁ ଗୁରୁ ଙ୍କ ଅନ୍ତର ଦଶା ରେ ଲମ୍ବା ଯାତ୍ରା ହେବ । ବିଦେଶ ଯାତ୍ରା ହୋଇ ପାରେ ।

ଶିକ୍ଷା : ଏହି ଦଶା କାଳ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଶିକ୍ଷା ଉତ୍ତମ ହେବ । ଇନଜିନିୟରିଙ୍ଗ, ଗଣିତ, ବିଜ୍ଞାନ, ଅନ୍ତରିକ୍ଷ ଅନୁସନ୍ଧାନ ତଥା କମପ୍ୟୁଟର ବିଜ୍ଞାନ ରେ ଆପଣଙ୍କ ରୁଚି ହେବ । ଆପଣଙ୍କୁ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତିଦ୍ୱନ୍ଦି ଙ୍କ ଠାରୁ ବିଜୟ ମିଳିବ ଏବଂ ପରୀକ୍ଷା ତଥା ପ୍ରତିଯୋଗିତା ରେ ଭଲ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ପାଖରେ ନେତୃତ୍ୱ ଗୁଣ ଏବଂ ସାହାସ ହେବ ଏବଂ ଆପଣ ସ୍ୱଭାବ ରେ ସ୍ୱତନ୍ତ୍ର ହେବେ । ଆପଣ ଚତୁର ଏବଂ କୁଟନୀତିଜ୍ଞ ହେବେ ।

ପାରିବାରିକ ଜୀବନ : ପରିବାର ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ବନ୍ଧ ମଧୁର ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ଛୁଆ ଭାଗ୍ୟବାନ ଏବଂ ଖୁସୀ ରେ ରହିବେ । ଆପଣଙ୍କ ତାଙ୍କ ସହିତ ସମ୍ବନ୍ଧ ଭଲ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ସାଥୀ ଙ୍କ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା, ବିଦେଶ ସହ ସମ୍ପର୍କ ଏବଂ ଭୌତିକ ଲାଭ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ସାଥୀ ଙ୍କ ସହ ଆପଣଙ୍କ ସମ୍ବନ୍ଧ ମଧୁର ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ମାତା ଙ୍କ ଯାତ୍ରା ଏବଂ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ରେ ଯିବେ ଏବଂ ଦାନ ପୁଣ୍ୟ ର କାର୍ଯ୍ୟ କରିବେ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ପିତା ଙ୍କୁ ଜୁଆ ରେ ଲାଭ ତଥା ଧନ ରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ଛୋଟ ଭାଇ ଭଉଣୀ ଙ୍କୁ ସବୁ ପ୍ରକାର ର ଲାଭ ତଥା ସମ୍ପତି ମିଳିବ । ବଡ଼ ଭାଇ ଭଉଣୀ ସାହାସୀ ଏବଂ କଠିନ ପରିଶ୍ରମୀ ହେବେ, ତାଙ୍କର ଛୋଟ ଯାତ୍ରା ହେବ ଏବଂ ସେ ସମ୍ପର୍କ ବ୍ୟବସ୍ଥା ର କ୍ଷେତ୍ର ରେ ସଫଳ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କ ତାଙ୍କ ସହିତ ସମ୍ବନ୍ଧ ମଧୁର ରହିବ । ଏହି ଦଶା

କାଳ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଭଲ ସମ୍ମାନ, ଭୌତିକ ସମୃଦ୍ଧି ଏବଂ ସମ୍ପତି ର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ ।

ଅନ୍ତର ଦଶା : ରାହୁ ଙ୍ଗ ମହାଦଶା ରେ ରାହୁ ର ଅନ୍ତର ଦଶା କାଳ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ସମ୍ପତି ଏବଂ ଲାଭ, କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ସଫଳତା ଏବଂ ଖୁସୀ ମିଳିବ । ଗୁରୁ ଙ୍ଗ ଅନ୍ତର ଦଶା ରେ ଆପଣଙ୍କ ଚୀର୍ଯ୍ୟ ଯାତ୍ରା ହେବ ଏବଂ ସମୃଦ୍ଧି ତଥା ଭଜ ଶିକ୍ଷା ର ପ୍ରାପ୍ତି ହେବ କିନ୍ତୁ ଶନି ଙ୍ଗ ଅନ୍ତର ଦଶା ରେ ବ୍ୟବସାୟ ରେ ପ୍ରଗତି ଏବଂ ଉପାର୍ଜନ ଭଲ ହେବ । ବୁଧ ଙ୍ଗ ଅନ୍ତର ଦଶା କାଳ ରେ ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ କିଛି ଖରାପ ହେବ, କିନ୍ତୁ ଶଶୁର ଘର ଠାରୁ ଲାଭ ଏବଂ ଛୋଟ ଯାତ୍ରା ହେବ । କେତୁ କିଛି ସମସ୍ୟା ଦେଇ ପାରେ । ଶୁକ୍ର ଙ୍ଗ ଅନ୍ତର ଦଶା ରେ ସାଥୀ ଙ୍ଗ ଠାରୁ ଲାଭ ମିଳିବ ଏବଂ ବିବାହ ହେବ କିନ୍ତୁ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଙ୍ଗ ଅନ୍ତର ଦଶା କାଳ ରେ ଛୁଆ ଙ୍ଗ ଠାରୁ ସୁଖ ଏବଂ ଜୁଆ ରେ ସଫଳତା ମିଳିବ । ଚନ୍ଦ୍ର ଙ୍ଗ ଅନ୍ତର ଦଶା ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ମାତା ଙ୍ଗ ଠାରୁ ଲାଭ ଏବଂ ଜୀବନ ର ସୁଖ ମିଳିବ କିନ୍ତୁ ଲଗ୍ନ ସ୍ୱାମୀ ମଙ୍ଗଳ ଙ୍ଗ ଅନ୍ତର ଦଶା କାଳ ରେ ଯଶ, ଖ୍ୟାତି, ଉତ୍ତମ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ତଥା ସଫଳତା ମିଳିବ ।



**ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଧଶା :- ରାହୁ - ଚନ୍ଦ୍ର
(29/12/2030 - 29/06/2032)**

ରାହୁ ମହାଦଶା ର ଅବଧି ୧୮ ବର୍ଷ ହୋଇ ଥାଏ । ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଏହି ଦଶା ୧୮/୦୭/୨୦୧୫ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ୧୭/୦୭/୨୦୩୩ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ । ଏହି ମହାଦଶା ରେ ଚନ୍ଦ୍ରମା ଙ୍କ ଅନ୍ତର ଦଶା ୧ ବର୍ଷ ୬ ମାସ ର ହେବ, ଯାହା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ୨୯/୧୨/୨୦୩୦ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ୨୯/୦୬/୨୦୩୨ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ ।

ଚନ୍ଦ୍ରମା ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ରେ ଦ୍ୱିତୀୟ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ି ଅଛି । ଦ୍ୱିତୀୟ ଭାବ ଭାଗ୍ୟ, ଲାଭ ହାନି, ସାଂସାରିକ ଉପଲବ୍ଧି, ରତ୍ନ, ବାଣୀ, ଡାହାଣ ଆଖି, ଅଭିଳାଷି, ଜୀଭ, ଦାନ୍ତ ଏବଂ ପରିବାର ର ସଦସ୍ୟ ଙ୍କ ପ୍ରତିକ ଅଟେ । ଚନ୍ଦ୍ରମା ମନ ଏବଂ ମାତା ଙ୍କ କାରକ ଅଟେ । ଦ୍ୱିତୀୟ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ି ହୋଇ ଚନ୍ଦ୍ରମା ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ର ଅକ୍ଷୟ ଭାବ ଉପରେ ଦୃଷ୍ଟି ପକେଇ ଥାଏ ଏବଂ ଅକ୍ଷୟ ଭାବ ର କାରକତ୍ୱ କୁ ପ୍ରଭାବିତ କରି ଥାଏ ।

ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ସୁଇଚ୍ଛା ପୁଣି, ଶାନ୍ତ ଶିଷ୍ଟ ଏବଂ ପ୍ରସନ୍ନଚିତ୍ତ ହେବେ, କାର୍ଯ୍ୟ, ବ୍ୟାପାର ଏବଂ ସମାଜ ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ଭାଗ୍ୟ ସପକ୍ଷ ରେ ରହିବ, ଧନୀ ବନିବେ । ବିପରୀତ ଲିଙ୍ଗ ର ବ୍ୟକ୍ତି ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରତି ପ୍ରଭାବିତ ହେବେ କିନ୍ତୁ ସେ ଆପଣଙ୍କୁ ନିଜ ଅନୁସାରେ ଚଳେଇ ପାରନ୍ତି । ଏହି ସମୟ ରେ ସାବଧାନୀ ର ଆବଶ୍ୟକ ଅଛି ।

ଶୁଭ୍ରତ୍ୱ ର ବୃଦ୍ଧି ପାଇଁ ଚନ୍ଦ୍ରମା ଙ୍କ ବୈଦିକ ମନ୍ତ୍ର ର ୧୧୦୦୦ ଜପ କରନ୍ତୁ ।

ଚନ୍ଦ୍ରମା ଙ୍କୁ ଚନ୍ଦ୍ର ଉଦୟ ସମୟ ରେ ମନ୍ତ୍ର ଉଚ୍ଚାରଣ କରି କଥା କ୍ଷୀର ଅର୍ପିତ କରନ୍ତୁ ।

**ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଧଶା :- ରାହୁ - ମଙ୍ଗଳ
(29/06/2032 - 17/07/2033)**

ରାହୁ ମହାଦଶା ର ଅବଧି ୧୮ ବର୍ଷ ହୋଇ ଥାଏ । ଯାହା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ୧୮/୦୭/୨୦୧୫ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ୧୭/୦୭/୨୦୩୩ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ । ଏହି ମହାଦଶା ରେ ମଙ୍ଗଳ ଙ୍କ ଅନ୍ତର ଦଶା ୧ ବର୍ଷ ୧୮ ଦିନ ର ହେବ । ଯାହା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ୨୯/୦୬/୨୦୩୨ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ୧୭/୦୭/୨୦୩୩ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ ।

ମଙ୍ଗଳ ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ରେ ଦ୍ୱିତୀୟ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ି ଅଛି । ଦ୍ୱିତୀୟ ଭାବ ଭାଗ୍ୟ, ଲାଭ ହାନି, ସାଂସାରିକ ଉପଲବ୍ଧି, ରତ୍ନ, ବାଣୀ, ଡାହାଣ ଆଖି, ଅଭିଳାଷି, ଜୀଭ, ଦାନ୍ତ ଏବଂ ପରିବାର ର ସଦସ୍ୟ ଙ୍କ ପ୍ରତିକ ଅଟେ ।

ମଙ୍ଗଳ ଅଗ୍ନି ପ୍ରଦାନ ଗ୍ରହ ଅଟେ ଏବଂ ଇଚ୍ଛା, ଭୁ ସମ୍ପତି ର କାରକ ଅଟେ । ସାମାନ୍ୟତଃ ଏହା କୁ ଅଶୁଭ ମାନା ଯାଇ ଥାଏ । ଦ୍ୱିତୀୟ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ି ହୋଇ ମଙ୍ଗଳ ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ର ୫, ୮, ୯ ଭାବ ଉପରେ ଦୃଷ୍ଟି ପକେଇ ଥାଏ ଏବଂ ତାଙ୍କର କାରକତ୍ୱ କୁ ପ୍ରଭାବିତ କରି ଥାଏ ।

ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ବାଧା ଆସିବ, କିନ୍ତୁ ଆୟ ଭଲ ହେବ । ଧନ ସଞ୍ଚିତ ହେବ । ଆପଣ ଲୋଭି ହୋଇ ପାରନ୍ତି; ପରିବାର ରେ ଝଗଡ଼ା ହୋଇ ପାରେ । ମିଛ କଥା ର କାରଣ ଶତ୍ରୁତା ବଢ଼ିବ । ଇଚ୍ଛା ର ବ୍ୟବହାର ସକରାତ୍ମକ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ କରିବା ଲାଭପ୍ରଦ ରହିବ, ଏହା ଦ୍ୱାରା ସୁଖ ର ରକ୍ଷା ହୋଇ ପାରେ ।

କଷ୍ଟ ଠାରୁ ବଞ୍ଚିବା ପାଇଁ ବ୍ରହ୍ମା ଙ୍କ ଗାୟତ୍ରୀ ମନ୍ତ୍ର ର ୧୦୮ ଜପ ପ୍ରତିଦିନ କରନ୍ତୁ ।

**ମହାଦଶା :- ଗୁରୁ
(17/07/2033 - 17/07/2049)**

ଗୁରୁ ଜ୍ଞ ମହାଦଶା ର ଅବଧି ୧୬ ବର୍ଷ ଅଟେ । ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ରେ ଏହା ୧୭/୦୭/୨୦୩୩ ରେ ଆରମ୍ଭ ହେବ ଏବଂ ୧୭/୦୭/୨୦୪୯ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ରେ ଗୁରୁ ଲଗ୍ନ ରେ ଛିଡ଼ି ଅଛି । ଏହା ଶରୀର ରଚନା, ରୂପକାର, ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ, ସ୍ୱଭାବ, ପ୍ରବୃତ୍ତି, ପ୍ରତିଷ୍ଠା, ସାମାନ୍ୟ ରତ୍ନ ସହନ, ଚେହେରା ର ଉପରୀ ଭାଗ, ଦୀର୍ଘ ଆୟୁ ଏବଂ ସାମାନ୍ୟ ଜୀବନ ର ସଂରଚନା ପ୍ରତି ବିଚାର ର ପ୍ରତୀକ ଅଟେ । ଗୁରୁ ସ୍ୱଭାବ ରେ ଏକ ଶୁଭ ଗ୍ରହ ଅଟେ ଯାହା ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ରେ ପ୍ରଥମ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ି ହୋଇ ପଞ୍ଚମ, ସପ୍ତମ ତଥା ନବମ ଭାବ ଉପରେ ଦୃଷ୍ଟି ରଖି ତାଙ୍କ ଉପରେ ନିଜର ଶୁଭ ପ୍ରଭାବ ପକେଇ ଥାଏ । ୧୬ ବର୍ଷ ର ଏହି ଦଶା ଶାନ୍ତି, ସମୃଦ୍ଧି ଏବଂ ଉତ୍ତମ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ର ଦଶା ହେବ ।

ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ : ମହାଦଶା ଜ୍ଞ ସ୍ୱାମୀ ନିଜର ହିଁ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ି ହୋଇ ଭାବ କୁ ଶକ୍ତି ଦେଇ ଥାନ୍ତି । ଫଳତଃ ଏହି ଦଶା କାଳ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ କୌଣସି ବଡ଼ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ସମସ୍ୟା ହେବ ନାହିଁ ଏବଂ ଆପଣ ନିଜର ସାମାନ୍ୟ କାର୍ଯ୍ୟ ସମ୍ପାଦନ କରିବା ର ଛିଡ଼ି ରେ ରହିବେ ।

ଅର୍ଥ ଏବଂ ସମ୍ପତ୍ତି : ଗୁରୁ ଜ୍ଞ ପ୍ରଥମ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ି ଏବଂ ପଞ୍ଚମ ତଥା ନବମ ଭାବ(ସେପ୍ଟମ କୁ ଛାଡ଼ି) ଅର୍ଥାତ୍ ଦୁଇ ତ୍ରିକୋଣ ଉପରେ ଚାହାର ଦୃଷ୍ଟି ର କାରଣ ଏହି ଦଶା କାଳ ରେ ଆପଣ ଭାଗ୍ୟଶାଳୀ ହେବେ । ଆପଣ ନିଜର ଆୟ ର ସ୍ରୋତ ଏବଂ ଚଳ ଅଚଳ ସମ୍ପତ୍ତି ରେ ବୃଦ୍ଧି କରିବେ । ଆପଣ ଭୋଗ ବିଳାସ ର ବସ୍ତୁ ଉପରେ ବ୍ୟୟ ମଧ୍ୟ କରିବେ ।

ବ୍ୟବସାୟ : ପ୍ରଥମ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ି ଗୁରୁ ର କାରଣ ଆପଣ ନିଜର ହିଁ ପ୍ରୟାସ ଦ୍ୱାରା ନିଜର ଜୀବିକା ଉପାର୍ଜନ କରିବେ । ଆପଣ କୌଣସି ମଧ୍ୟ ବ୍ୟବସାୟ ରେ ହେଉ, ଉନ୍ନତି କରିବେ । ଆପଣ ଚାକିରୀ ପେଶା ରେ ଥାଆନ୍ତୁ ଅଥବା ବ୍ୟବସାୟ ଜୀବନ ରେ ଉନ୍ନତି କରିବେ ଏବଂ ଘର, ବାହାନ ଆଦି ସମ୍ପତ୍ତି ରେ ବୃଦ୍ଧି କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଶିକ୍ଷା ତଥା ଜ୍ଞାନ ରେ ମଧ୍ୟ ବୃଦ୍ଧି ହେବ ।

ପାରିବାରିକ ଜୀବନ : ଗୁରୁ ଜ୍ଞ ପ୍ରଥମ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ି ତଥା ପଞ୍ଚମ, ସପ୍ତମ ତଥା ନବମ ଭାବ ଅର୍ଥାତ୍ ଭୃତ କର୍ମ ଭାବ, ଜୀବନ ସଙ୍ଗ ଭାବ ଏବଂ ସୁଖ କର୍ମ ଉପରେ ତାଙ୍କର ଦୃଷ୍ଟି ର କାରଣ ଆପଣଙ୍କ ପାରିବାରିକ ଜୀବନ ଅତ୍ୟନ୍ତ ସୁବ୍ୟବସ୍ଥିତ ତଥା ସୌହାର୍ଦ୍ଦ ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ସାଥୀ ଆପଣଙ୍କ ସହଯୋଗୀ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ଛୁଆ ଆଜ୍ଞାକାରୀ ହେବେ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ମାତା ପିତା ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ କୁ ସୁଖ ମୟ ବନେଇବା ରେ ମହତ୍ତ୍ୱ ପୂର୍ଣ୍ଣ ଭୂମିକା ନିଭେଇବେ ।

ଶିକ୍ଷା ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ : ଗୁରୁ ଜ୍ଞ ପ୍ରଥମ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ି ର କାରଣ ଏହି ଦଶା କାଳ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ଶିକ୍ଷା ର ଉତ୍ତମ ଅବସର ମିଳିବ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ ବୃଦ୍ଧି ସମ୍ପନ୍ନ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ଜ୍ଞାନ ପ୍ରତି ପସନ୍ଦ ର କାରଣ ଆପଣ ନିଜ ଇଚ୍ଛା ର ଅନୁରୂପ ସାହିତ୍ୟ ଏବଂ ଧର୍ମ ର ପୁସ୍ତକ ଅଧ୍ୟୟନ କରିବେ ।

**ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଧଶା :- ଗୁରୁ - ଗୁରୁ
(17/07/2033 - 04/09/2035)**

ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବୃହସ୍ପତି ର ମହାଦଶା ୧୭/୦୭/୨୦୩୩ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହେଉ ଅଛି । ଏହି ମହାଦଶା ରେ ପ୍ରଥମ ଅନ୍ତର ଦଶା ବୃହସ୍ପତି ଙ୍କ ହେବ ଯାହାର ଅବଧି ୨ ବର୍ଷ ୧ ମାସ ୧୮ ଦିନ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଏହି ଅନ୍ତର ଦଶା ୧୭/୦୭/୨୦୩୩ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ୦୪/୦୯/୨୦୩୫ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ । ଅନ୍ତର ଦଶା ସ୍ୱାମୀ ବୃହସ୍ପତି ବୁଦ୍ଧି, ଉଚ୍ଚ ଜ୍ଞାନ, ଜୀବନ ଏବଂ ଧନ ର କାରକ ଅଟେ ।

ବୃହସ୍ପତି ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ରେ ଲଗ୍ନ ରେ ଛିଡ଼ି ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଭାବ ଶାରୀରିକ ଗଠନ, ଆକୃତି, ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ, ଜନ୍ମ ଜାତ ସ୍ୱଭାବ ଏବଂ ଅଭ୍ୟାସ, ସମ୍ମାନ, ଗରିମା, ସାମାନ୍ୟ ଶୁଭତ୍ୱ, ଦେହ ର ଉପର ଭାଗ, ଆୟୁ ଏବଂ ଜୀବନ ର ରୂପ ରେଖା ଆଦି ର ପ୍ରତିକ ଅଟେ । ବୃହସ୍ପତି ଶୁଭ ଗ୍ରହ ଅଟେ । ଲଗ୍ନ ରେ ଛିଡ଼ି ହୋଇ ବୃହସ୍ପତି ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ର ୫, ୭, ୯ ଭାବ ଉପରେ ଦୃଷ୍ଟି ପକେଇ ଥାଏ ଏବଂ ତାଙ୍କର କାରକତ୍ୱ କୁ ପ୍ରଭାବିତ କରି ଥାଏ ।

ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ସୌଭାଗ୍ୟଶାଳୀ ରହିବେ, ସମ୍ମାନିତ ହେବେ, ଧନୀ ବନିବେ । କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ସଫଳତା ମିଳିବ । ଆତ୍ମ ବିଶ୍ୱାସ ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ; ଯୋଗ୍ୟତା ର ବିକାସିତ ହେବ । ପାରିବାରିକ ଜୀବନ ସୁଖୀ ରହିବ, ସନ୍ତାନ ସୁଖକାରୀ ହେବେ । ଯଦି ଅବିବାହିତ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ବିବାହ ହୋଇ ପାରେ । ବ୍ୟାପାର ଠାରୁ ଲାଭ ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ରାଜନୀତି ରେ ବିଜୟୀ ହେବେ; ସବୁ କାମ ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ପୁତ୍ର ଙ୍କ ଜନ୍ମ ହୋଇ ପାରେ । ଘରେ ମାଙ୍ଗଳିକ ଉତ୍ସବ ହୋଇ ପାରେ । ପିତା ଙ୍କ ସହ ସମ୍ବନ୍ଧ ଉତ୍ତମ ରହିବ । ବିଦ୍ୱାନ, ସହ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କ ବଢ଼ିବ ।

ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ସାଥୀ ଙ୍କୁ ବ୍ୟାପାର ରେ ଲାଭ ହେବ, ଉଚ୍ଚ ପଦ ପ୍ରାପ୍ତ ହେବ, ଧନୀ ବନିବେ । ଆପଣଙ୍କ ପିତା ଙ୍କୁ ନିବେଶ ଠାରୁ ଲାଭ ହୋଇ ପାରେ । ମାତା ଙ୍କ ଭାଗ୍ୟ ଚମକିବ; ଆପଣଙ୍କ ଭାଇ ଭଉଣୀ ଙ୍କ ପାଇଁ ପରୀକ୍ଷା ରେ ସଫଳତା, ସଞ୍ଚାର ମାଧ୍ୟମ ରେ କୁଶଳତା, ଦୂର ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ର ସଙ୍କେତ ଅଛି ।

ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ଙ୍କୁ ପରୀକ୍ଷା ରେ ସଫଳତା ମିଳିବ । ଯଦି ସେ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ହେବ, ଧନୀ ବନିବେ, ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ପ୍ରସନ୍ନ ରହିବେ ।

ଯଦି ଆପଣ ଚାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ କିଛି ପରିବର୍ତ୍ତନ ହୋଇ ପାରେ; ଅପ୍ରତ୍ୟାଶିତ ପ୍ରଗତି କିମ୍ବା ଧନ ଲାଭ ର ସମ୍ଭବ ଅଛି । ପରାମର୍ଶ ଦାତା ଧନୀ ବନିବେ; ଅଚଳ ସମ୍ପତ୍ତି କ୍ରୟ କରି ପାରନ୍ତି । ବ୍ୟାପାରୀ ଙ୍କୁ ନିବେଶ ଠାରୁ ଲାଭ ହେବ ।

ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ । ଶୁଭତ୍ୱ ର ବୃଦ୍ଧି ପାଇଁ ବୃହସ୍ପତି ଙ୍କ ମନ୍ତ୍ର ର ଜପ କରନ୍ତୁ ।
ଓଁ ବୃଂ ବୃହସ୍ପତିୟେ ନମଃ

**ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଧଶା :- ଗୁରୁ - ଶନି
(04/09/2035 - 18/03/2038)**

ଆପଣଙ୍କ ବୃହସ୍ପତି ର ମହାଦଶା ୧୭/୦୭/୨୦୩୩ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ଥିଲା । ଏହି ମହାଦଶା ରେ ଦ୍ୱିତୀୟ ଅନ୍ତର ଦଶା ଶନି ଙ୍କ ହେବ ଯାହାର ଅବଧି ୨ ବର୍ଷ ୬ ମାସ ୧୨ ଦିନ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଏହି ଅନ୍ତର ଦଶା ୦୪/୦୯/୨୦୩୫ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ୧୮/୦୩/୨୦୩୮ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ । ଅନ୍ତର ଦଶା ସ୍ୱାମୀ ଶନି ଆୟୁ, ସମ୍ପାଦ ଏବଂ ଦାର୍ଶନିକ ସ୍ୱଭାବ ର କାରକ ଅଟେ ।

ଶନି ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ରେ ନବମ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ି ଅଛି । ନବମ ଭାବ ଶ୍ରଦ୍ଧା, ଭାଗ୍ୟ, ଧାର୍ମିକ ଏବଂ ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ବିଚାର, ଅର୍ଥ ଜ୍ଞାନ, ଭବିଷ୍ୟତ ଜ୍ଞାନ, ଉପାସନା ସ୍ଥଳ, ପିତା, ଧର୍ମ ଗୁରୁ, ଲମ୍ବା ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା, ଉଚ୍ଚ ଶିକ୍ଷା ଏବଂ ଆଶୁ ର ପ୍ରତିକ ଅଟେ ।



ଶନି ଅଶୁଭ ଗ୍ରହ ଅଟେ । ନବମ ଭାବ ରେ ଛିତ ହୋଇ ଶନି ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ର ୧୧, ୩, ୬ ଭାବ ଉପରେ ଦୃଷ୍ଟି ପକେଇ ଥାଏ ଏବଂ ତାଙ୍କର କାରକତ୍ୱ କୁ ପ୍ରଭାବିତ କରି ଥାଏ ।

ଏହି ସମୟରେ ଆପଣ ଭାଗ୍ୟଶାଳୀ ଏବଂ ଧନୀ ବନିବେ । ଦୂର ସ୍ଥାନ ର ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ହୋଇ ପାରେ । ସନ୍ଧ୍ୟାସ ପ୍ରତି ଇଚ୍ଛା ହୋଇ ପାରେ । ଧର୍ମ ଏବଂ ଦର୍ଶନ ଶାସ୍ତ୍ର ରେ ମନ ଲାଗି ପାରେ । ପିତା ଙ୍କ ସହ ସମ୍ପର୍କ ମଧୁର ହେବ । ଶିକ୍ଷା ଉତ୍ତମ ହେବ । ସନ୍ତାନ ଠାରୁ ସୁଖ ମିଳିବ । ପାରିବାରିକ ଜୀବନ ଉତ୍ତମ ହେବ । ଦାନ ଧର୍ମ ର ସମ୍ପନ୍ନା ରେ ମିଶି ପାରନ୍ତି ।

ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ସାଥୀ ସବୁ କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ଉତ୍ସାହ ଏବଂ ସାହାଯ୍ୟ ର ସହ ପୁର୍ଣ୍ଣ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ପିତା ଙ୍କ ଆଡୁ ବିଶ୍ୱାସ ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ମାତା ଙ୍କୁ ଶତ୍ରୁ ଙ୍କ ଠାରୁ ସଫଳତା ମିଳିବ । ଆପଣଙ୍କ ଭାଇ ଭଉଣୀ ଙ୍କ ପାଇଁ ସାଥୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ଲାଭ, ବ୍ୟାପାର ରେ ଲାଭ, ଅଚଳ ସମ୍ପତ୍ତି ଏବଂ ବାହାନ ସୁଖ, ନିବେଶ ଠାରୁ ଲାଭ ର ସଙ୍କେତ ଅଛି ।

ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ର ଶିକ୍ଷା ପୁର୍ଣ୍ଣ ହୋଇ ପାରେ, ପରୀକ୍ଷା ରେ ସଫଳତା ମିଳିବ । ଯଦି ସେ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ନିବେଶ ଠାରୁ ଲାଭ ହେବ ।

ଯଦି ଆପଣ ଚାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ କାର୍ଯ୍ୟାଳୟ ଉତ୍ତମ ହେବ, ଉନ୍ନତି ହେବ । ପରାମର୍ଶ ଦାତା ଙ୍କ ଖର୍ଚ୍ଚ ବଢ଼ି ପାରେ, ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ହେବ । ବ୍ୟାପାରି ଙ୍କୁ ଜନ ସମ୍ପର୍କ ଠାରୁ ଲାଭ ହେବ ।

ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ । ଶୁଭତ୍ୱ ର ବୃଦ୍ଧି ପାଇଁ ଶନି ମନ୍ତ୍ର ର ଜପ କରନ୍ତୁ ।

ଓଁ ଶଂ ଶନୈଚ୍ଚରାୟ ନମଃ

**ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଧଶା :- ଗୁରୁ - ବୁଧ
(18/03/2038 - 23/06/2040)**

ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବୃହସ୍ପତି ର ମହାଦଶା ୧୭/୦୭/୨୦୩୩ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ଥିଲା । ଏହି ମହାଦଶା ରେ ତୃତୀୟ ଅକ୍ତର ଦଶା ବୁଧ ଙ୍କ ହେବ, ଯାହାର ଅବଧି ୨ ବର୍ଷ ୩ ମାସ ୬ ଦିନ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଏହି ଅକ୍ତର ଦଶା ୧୮/୦୩/୨୦୩୮ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ୨୩/୦୬/୨୦୪୦ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ । ଅକ୍ତର ଦଶା ସ୍ୱାମୀ ବୁଧ ବୁଦ୍ଧି, ସୃଷ୍ଟି ର କାରକ ଅଟେ ।

ବୁଧ ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ରେ ଦ୍ୱାଦଶ ଭାବ ରେ ଛିତ ଅଛି । ଦ୍ୱାଦଶ ଭାବ ହାନି, ବାଧା, ଧନ ର ଅପବ୍ୟୟ, ଯୋକା, ଦାନ, ପରିବାର ଠାରୁ ଅଲଗା, ଦୁଃଖ, ଗୁପ୍ତ ଶତ୍ରୁ, କାଣ୍ଡ, ଗୁପ୍ତ ଦୁଃଖ, ସୁଖ ଏବଂ ବିଦେଶ ରେ ଜୀବନ ଜୀପନ ର ପ୍ରତିକ ଅଟେ । ଦ୍ୱାଦଶ ଭାବ ରେ ଛିତ ହୋଇ ବୁଧ ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ର ଷଷ୍ଠ ଭାବ ଉପରେ ଦୃଷ୍ଟି ପକେଇ ଥାଏ ଏବଂ ଷଷ୍ଠ ଭାବ ର କାରକତ୍ୱ କୁ ପ୍ରଭାବିତ କରି ଥାଏ ।

ଏହି ସମୟରେ ଆପଣଙ୍କ ଶୁଭ କାର୍ଯ୍ୟ ଉପରେ ଖର୍ଚ୍ଚ ବଢ଼ିବ । ଆଧ୍ୟାତ୍ମ ଏବଂ ଧ୍ୟାନ ପ୍ରତି ଇଚ୍ଛା ହେବ । ଅର୍ଥ ଜ୍ଞାନ ଶକ୍ତି ଏବଂ କଳ୍ପନା ଶୀଳତା ଉତ୍ତମ ରହିବ । ଶିକ୍ଷା ପୁର୍ଣ୍ଣ ହେବ । କିଛି ପରିବର୍ତ୍ତନ ହୋଇ ପାରେ । ସଫଳତା ର ଅନେକ ଅବସର ମିଳିବ । ଆଧ୍ୟାତ୍ମ ଏବଂ ଦର୍ଶନ ପ୍ରତି ଇଚ୍ଛା ବଢ଼ିବ । ମକଦ୍ଦମା ରେ ବିଜୟା ହେବେ । ମାମା ପକ୍ଷ ର ଲୋକ ଙ୍କ ଠାରୁ ଲାଭ ହୋଇ ପାରେ ।

ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ସାଥୀ ଙ୍କୁ ମାନସିକ ଶାନ୍ତି ଏବଂ ପାରିବାରିକ ସୁଖ ମିଳିବ । ଆପଣଙ୍କ ପିତା ଙ୍କୁ ଅଚଳ ସମ୍ପତ୍ତି ଏବଂ ବାହାନ ର ସୁଖ ମିଳିବ । ମାତା ଙ୍କ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ହୋଇ ପାରେ; ସମ୍ପନ୍ନ ଏବଂ ଉଚ୍ଚ ପଦ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଭାଇ ଭଉଣୀ ଙ୍କ ପାଇଁ ଧନ ଅର୍ଜନ, ଲାଭ, ସୁଖ ସୁବିଧା, ଭଲ ମିତ୍ର, ମହତ୍ୱପୁର୍ଣ୍ଣ ପଦ ଉପରେ ହସ୍ତାକ୍ଷର ର ସଙ୍କେତ ଅଛି ।

ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ପରୀକ୍ଷା ରେ ସଫଳ ରହିବେ, ଜ୍ଞାନ ବିଜ୍ଞାନ ପ୍ରତି ଇଚ୍ଛା ହେବ । ଯଦି ସେ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ସଫଳତା ମିଳିବ ।



ଯଦି ଆପଣ ଚାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ସହ କର୍ମୀଙ୍କ ଠାରୁ ଲାଭ ହେବ, ଧନ ଅର୍ଜନ ଉତ୍ତମ ହେବ, କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ସଫଳ ରହିବେ । ପରାମର୍ଶ ଦାତା ଙ୍କ ଆୟ ଭଲ ହେବ, କିଛି ପରିବର୍ତ୍ତନ ହୋଇ ପାରେ, ସଫଳ ରହିବେ । ବ୍ୟାପାରି ଙ୍କୁ ପ୍ରତିଯୋଗିତା ରେ ସଫଳତା ମିଳିବ ।

ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ର, ବିଶେଷ କରି ସ୍ୱାୟତ୍ତ ଚନ୍ଦ୍ର ଏବଂ ନେତ୍ର ର ଧ୍ୟାନ ରଖନ୍ତୁ । ଶୁଭକ୍ରୁର ବୃଷି ପାଇଁ ବୁଧ ମନ୍ତ୍ର ର ଜପ କରନ୍ତୁ ।
ଓଁ ବୁଂ ବୁଧାୟ ନମଃ

**ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଧଶା :- ଗୁରୁ - କେତୁ
(23/06/2040 - 30/05/2041)**

ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବୃହସ୍ପତି ମହାଦଶା ୧୭/୦୭/୨୦୩୩ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ଥିଲା । ଏହି ମହାଦଶା ରେ ବୃହସ୍ପତି ଅନ୍ତର ଦଶା କେତୁ ଙ୍କ ହେବ ଯାହାର ଅବଧି ୧୧ ମାସ ୬ ଦିନ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଏହି ଅନ୍ତର ଦଶା ୨୩/୦୬/୨୦୪୦ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ୩୦/୦୫/୨୦୪୧ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ । ଅନ୍ତର ଦଶା ସ୍ୱାମୀ କେତୁ ମୋକ୍ଷ ଏବଂ ଶଲ୍ୟ ଚିକିତ୍ସା ର କାରକ ଅଟେ ।

କେତୁ ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ରେ ସପ୍ତମ ଭାବ ରେ ସ୍ଥିତ ଅଛି । ସପ୍ତମ ଭାବ ସମୃଦ୍ଧ, ଜୀବନ ସାଥୀ, ବ୍ୟାପାର ରେ ସାଥୀ, ମକଦ୍ଦମା, ବିଦେଶ ରେ ପ୍ରଭାବ ଏବଂ ଜୀବନ ରେ ଭୟ ର ପ୍ରତିକ ଅଟେ । କେତୁ ଛାୟା ଗ୍ରହ ଅଟେ । ଏହାର ନିଜ ର ରାଶି ନ ଥାଏ ଏବଂ ଏହାର କୌଣସି ରାଶି ର ସ୍ୱାମୀ ଭି ନ ଥାଏ । ଏହାର ଶୁଭ ଅଶୁଭ ପ୍ରଭାବ ଏହାର ସ୍ଥିତି, ଭାବ ଏବଂ ରାଶି ଅନୁସାରେ ହୋଇ ଥାଏ । ସପ୍ତମ ଭାବ ରେ ସ୍ଥିତ ହୋଇ କେତୁ ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ର ଲଗ୍ନ ଉପରେ ଦୃଷ୍ଟି ପକେଇ ଥାଏ ଏବଂ ପ୍ରଥମ ଭାବ ର କାରକତ୍ୱ କୁ ପ୍ରଭାବିତ କରି ଥାଏ ।

ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ ସାଥୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ଲାଭ ହେବ । ବ୍ୟାପାର ରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ପାରିବାରିକ ସୁଖ ହେବ । ବିରୋଧି ଙ୍କ ଠାରୁ ବିଜୟା ହେବେ । ସମାଜ ରେ ସଫଳତା ମିଳିବ । ବ୍ୟାପାର ସମୃଦ୍ଧ ରେ ବିଦେଶ ଯାଇ ପାରନ୍ତି । ପ୍ରସିଦ୍ଧ ହେବେ, ଅନ୍ୟ ଲୋକ ସହାୟତା କରିବେ, ଆତ୍ମ ବିଶ୍ୱାସ ରେ ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେବେ, ମନ ର ଶାନ୍ତି ରହିବ । ସାଧୁ ସନ୍ଥ ଙ୍କ ପ୍ରତି ମନ ଲାଗିବ । ଆପଣଙ୍କ ବୁଦ୍ଧି ତୀବ୍ର ରହିବ; ପ୍ରତ୍ୟେକ କାର୍ଯ୍ୟ ସୁ ନିୟୋଜନ ଏବଂ ସାବଧାନୀ ର ସହ କରିବେ ।

ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ସାଥୀ ଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଏବଂ କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷମତା ଉତ୍ତମ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ପିତା ଙ୍କ ଆଧ୍ୟାତ୍ମ ପ୍ରତି ଲକ୍ଷ୍ୟ ରହିବ, ଘର ଠାରୁ ବାହାରେ ଅଧିକ ମନ ଲାଗିବ । ମାତା ଙ୍କ ବନ୍ଧୁ ବାନ୍ଧବ ଙ୍କ ସହ ସମୃଦ୍ଧ ଉତ୍ତମ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ଭାଇ ଭଉଣୀ ଙ୍କ ପାଇଁ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ସଫଳତା, ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା ଏବଂ ପ୍ରସିଦ୍ଧି ର ସଙ୍କେତ ଅଛି ।

ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟ ପୂର୍ଣ୍ଣ ହେବ । ଯଦି ସେ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ଧନୀ ବନିବେ ।

ଯଦି ଆପଣ ଚାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ଦରମା ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ପରାମର୍ଶ ଦାତା ବ୍ୟକ୍ତି ରହିବେ । ବ୍ୟାପାରୀ ଧନ କମେଇବେ ।

ଶୁଭକ୍ରୁର ବୃଷି ପାଇଁ ବିରି ଡାଲି, କମ୍ବଳ, ରାଶୀ, ତେଲ ଏବଂ ସପ୍ତ ଧାନ୍ୟ ଦାନ କରନ୍ତୁ ।

**ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଧଶା :- ଗୁରୁ - ଶୁକ୍ର
(30/05/2041 - 29/01/2044)**

ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବୃହସ୍ପତି ମହାଦଶା ୧୭/୦୭/୨୦୩୩ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ଥିଲା । ଏହି ମହାଦଶା ରେ ପଞ୍ଚମ ଅନ୍ତର ଦଶା ଶୁକ୍ର ଙ୍କ ହେବ, ଯାହାର ଅବଧି ୨ ବର୍ଷ ୮ ମାସ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଏହି ଅନ୍ତର ଦଶା ୩୦/୦୫/୨୦୪୧ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ୨୯/୦୧/୨୦୪୪ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ । ଅନ୍ତର ଦଶା ସ୍ୱାମୀ ଶୁକ୍ର ସୌନ୍ଦର୍ଯ୍ୟ, ସୁଖ ଏବଂ କଳା ର କାରକ ଅଟେ ।



ଶୁକ୍ର ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ରେ ଏକାଦଶ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ି ଅଛି । ଏକାଦଶ ଭାବ ମିତ୍ର ଗଣ, ସମାଜ, ଅଭିଳାଷି, ଇଚ୍ଛା ଏବଂ ତାହାର ପୁରଣ, ଉଦ୍ୟମ ରେ ସଫଳତା, ଧନ ଲାଭ, ବଡ଼ ଭାଇ, ଭାଗ୍ୟ ଉଦୟ ର ପ୍ରତିକ ଅଟେ । ଶୁକ୍ର ଶୁଭ ଗ୍ରହ ଅଟେ । ଏକାଦଶ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ି ହୋଇ ଶୁକ୍ର ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ର ପଞ୍ଚମ ଭାବ ଉପରେ ଦୃଷ୍ଟି ପକେଇ ଥାଏ ଏବଂ ପଞ୍ଚମ ଭାବ କାରକତ୍ୱ କୁ ପ୍ରଭାବିତ କରି ଥାଏ ।

ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣ ସଫଳ ରହିବେ । ଭାଗ୍ୟ ଚମକିବ । ଧନ ଏବଂ ସବୁ ସୁଖ ସାଧନ ଉପଲବ୍ଧ ହେବ । ଲୋକ ପ୍ରିୟତା ବଢ଼ିବ । ବଡ଼ ଭାଇ ଭଉଣୀ ଙ୍କ ସହ ସମ୍ବନ୍ଧ ମଧୁର ରହିବ । ସମାଜ ରେ ସଫଳତା ମିଳିବ; ଜୀବନ ଆମୋଦ ପ୍ରମୋଦ ରେ କଟିବ । ଧନ ଅର୍ଜନ ହେବ; ବାହାନ ସୁଖ ର ସମ୍ଭବ ଅଛି । ଯଦି ବିବାହିତ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ଶିଶୁ ଙ୍କ ଜନ୍ମ ହୋଇ ପାରେ । ବିବାହିତ ଜୀବନ ସୁଖୀ ରହିବ । ଶିକ୍ଷା ଉତ୍ତମ ହେବ ଏବଂ ପ୍ରଗତି ର ଅବସର ମିଳିବ ।

ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ସାଥୀ ଙ୍କ ପଦ ଏବଂ ସମ୍ମାନ ରେ ବୃଦ୍ଧି ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ପିତା ଙ୍କୁ ସଫଳତା ଆରାମ ରେ ମିଳି ପାରେ । ମାତା ଙ୍କ ଜୀବନ ରେ ଅତ୍ୟନ୍ତ କିଛି ଘଟି ପାରେ ।

ଆପଣଙ୍କ ଭାଇ ଭଉଣୀ ଙ୍କ ପାଇଁ ଧନ, ସାମୁହିକ କାର୍ଯ୍ୟ ଏବଂ ପରୀକ୍ଷା ରେ ସଫଳତା ର ସଙ୍କେତ ଅଛି ।

ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ଯଦି କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ସାଥୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ଲାଭ ହେବ ।

ଯଦି ଆପଣ ଚାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ କାର୍ଯ୍ୟାଳୟ ରେ ବାତାବରଣ ମଧୁର ରହିବ । ପରାମର୍ଶ ଦାତା ଙ୍କୁ ବିଭିନ୍ନ ମାଧ୍ୟମ ରୁ ଲାଭ ହେବ । ବ୍ୟାପାରି ଙ୍କ ଲାଭ ଉତ୍ତମ ହେବ; ଧନୀ ବନିବେ ।

ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ । କାନ ଏବଂ ଗୋଡ଼ ର ସାଧାରଣ ରୋଗ ହୋଇ ପାରେ । ଶୁଭତ୍ୱ ର ବୃଦ୍ଧି ପାଇଁ ଶୁକ୍ର ମନ୍ତ୍ର ର ଜପ କରନ୍ତୁ ।

ଓଁ ଶୁଂ ଶୁକ୍ରାୟ ନମଃ

**ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଦଶା :- ଗୁରୁ - ସୂର୍ଯ୍ୟ
(29/01/2044 - 16/11/2044)**

ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବୃହସ୍ପତି ର ମହାଦଶା ୧୭/୦୭/୨୦୩୩ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ଥିଲା । ଏହି ମହାଦଶା ରେ କ୍ଷୟ ଅନ୍ତର ଦଶା ସୂର୍ଯ୍ୟ ଙ୍କ ହେବ ଯାହାର ଅବଧି ୯ ମାସ ୧୮ ଦିନ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଏହି ଅନ୍ତର ଦଶା ୨୯/୦୧/୨୦୪୪ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ୧୨/୧୧/୨୦୪୪ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ । ଅନ୍ତର ଦଶା ସ୍ୱାମୀ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଆତ୍ମା, ପିତା, କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷମତା ଏବଂ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ର କାରକ ଅଟେ ।

ସୂର୍ଯ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ରେ ଦ୍ୱାଦଶ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ି ଅଛି । ଦ୍ୱାଦଶ ଭାବ ହାନି, ବାଧା, ଧନ ର ଅପବ୍ୟୟ, ଯୋକା, ଦାନ, ପରିବାର ଠାରୁ ଅଲଗା, ଦୁଃଖ, ଗୁପ୍ତ ଶତ୍ରୁ, କାଣ୍ଡ, ଗୁପ୍ତ ଦୁଃଖ, ସୁଖ ଏବଂ ବିଦେଶ ରେ ଜୀବନ ଜାପନ ର ପ୍ରତିକ ଅଟେ । ସୂର୍ଯ୍ୟ ଶକ୍ତିଶାଳୀ ଗ୍ରହ ଅଟେ । ଦ୍ୱାଦଶ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ି ହୋଇ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ର କ୍ଷୟ ଭାବ ଉପରେ ଦୃଷ୍ଟି ପକେଇ ଥାଏ ଏବଂ କ୍ଷୟ ଭାବ ର କାରକତ୍ୱ କୁ ପ୍ରଭାବିତ କରି ଥାଏ ।

ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଆଧ୍ୟାତ୍ମ ଏବଂ ଚନ୍ଦ୍ର ମନ୍ତ୍ର ପ୍ରତି ଇଚ୍ଛା ହେବ । ଧନ ଖର୍ଚ୍ଚ ରେ ବୃଦ୍ଧି ର ପରିଚ୍ଛେଦ ଦେବେ; ବାକି ଠାରୁ ବଞ୍ଚନ୍ତୁ । ବିଦେଶ ଯାତ୍ରା କିମ୍ବା ବିଦେଶ ରେ ନିବାସ ସମ୍ଭବ ଅଛି । କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ରେ ସଫଳତା ମିଳିବ । ବିରୋଧି ଏବଂ ଶତ୍ରୁ ଙ୍କ ଠାରୁ ବିଜୟ ହେବେ । ଆପଣଙ୍କ ପ୍ରଶାସନିକ କ୍ଷମତା ଉତ୍ତମ ଅଟେ । ଅଦାଲତ ରେ ବିଜୟ ହେବେ । ମାମା ପକ୍ଷ ର ଲୋକ ଙ୍କ ଠାରୁ ଲାଭ ହେବ ।

ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ସାଥୀ ଧନୀ ବନିବେ; ଉଚ୍ଚ ପଦ ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ପିତା ଅତ୍ୟନ୍ତ ସମୃଦ୍ଧି କ୍ରୟ କରି ପାରନ୍ତି ।



ମାତା ଙ୍ଵ ଆଧ୍ୟାତ୍ମ ପ୍ରତି ଇଚ୍ଛା ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ଭାଇ ଭଉଣୀ ଙ୍ଵ ପାଇଁ କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷେତ୍ର ରେ ସଫଳତା, ଉଚ୍ଚ ପଦ, ଧନ ଲାଭ ର ସଙ୍କେତ ଅଛି ।

ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ର ଜୀବନ ରେ କିଛି ପରିବର୍ତ୍ତନ ଆସି ପାରେ । ଯଦି ସେ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ପରିବର୍ତ୍ତନ ହୋଇ ପାରେ; ବୋନସ ଆଦି ଠାରୁ ଅପ୍ରତ୍ୟାଶିତ ଲାଭ ହୋଇ ପାରେ ।

ଯଦି ଆପଣ ଚାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ସାଥୀ କିମ୍ବା ଅନୁବନ୍ଧ ଠାରୁ ଲାଭ ହେବ । ପରାମର୍ଶ ଦାତା ଧନ କମେଇବେ । ବ୍ୟାପାରି ଙ୍ଵ କର୍ମଚାରୀ ଙ୍ଵ ଠାରୁ ଲାଭ ହେବ ।

ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ, ବିଶେଷ କରି ନେତ୍ର ଏବଂ ଗୋଡ଼ ର ଧ୍ୟାନ ରଖନ୍ତୁ । କଷ୍ଟ ଠାରୁ ବଞ୍ଚିବା ପାଇଁ ସୂର୍ଯ୍ୟ ଗାୟତ୍ରୀ ମନ୍ତ୍ର ର ଜପ କରନ୍ତୁ ।

**ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଧଶା :- ଗୁରୁ - ଚନ୍ଦ୍ର
(16/11/2044 - 18/03/2046)**

ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବୃହସ୍ପତି ର ମହାଦଶା ୧୭/୦୭/୨୦୩୩ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ଥିଲା । ଏହି ମହାଦଶା ରେ ସପ୍ତମ ଅକ୍ତର ଦଶା ଚନ୍ଦ୍ରମା ଙ୍ଵ ହେବ । ଯାହାର ଅବଧି ୧ ବର୍ଷ ୪ ମାସ ଅଛି । ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଏହି ଅକ୍ତର ଦଶା ୧୬/୧୧/୨୦୪୪ ରେ ଆରମ୍ଭ ହୋଇ ୧୮/୦୩/୨୦୪୬ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ । ଅକ୍ତର ଦଶା ସ୍ଵାମୀ ଚନ୍ଦ୍ର ସୁନ୍ଦର, ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ, ମାନସିକ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ଏବଂ ଭାବନା ର କାରକ ଅଟେ ।

ଚନ୍ଦ୍ରମା ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ନିକା ରେ ଦ୍ଵିତୀୟ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ି ଅଛି । ଦ୍ଵିତୀୟ ଭାବ ଭାଗ୍ୟ, ଲାଭ ହାନି, ସାଂସାରିକ ଉପଲବ୍ଧି, ରତ୍ନ, ବାଣୀ, ଡାହାଣ ଆଖି, ଅଭିଳାଷି, ଜୀଭ, ଦାନ୍ତ ଏବଂ ପରିବାର ର ସଦସ୍ୟ ଙ୍ଵ ପ୍ରତୀକ ଅଟେ । ଚନ୍ଦ୍ରମା ମନ ଏବଂ ମାତା ଙ୍ଵ କାରକ ଅଟେ । ଦ୍ଵିତୀୟ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ି ହୋଇ ଚନ୍ଦ୍ରମା ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ନିକା ର ଅକ୍ଷୟ ଭାବ ଉପରେ ଦୃଷ୍ଟି ପକେଇ ଥାଏ ଏବଂ ଅକ୍ଷୟ ଭାବ ର କାରକତ୍ଵ କୁ ପ୍ରଭାବିତ କରି ଥାଏ ।

ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ପାରିବାରିକ ଜୀବନ ସୁଖୀ ରହିବ । ପରିବାର ରେ ହସ୍ତ ଖୁସୀ ର ବାତାବରଣ ରହିବ । ଆପଣ ପ୍ରମୁଖ ବନ୍ଦି ପାରନ୍ତି । ଧନ ର ସଞ୍ଚୟ ହେବ । ମୃତୁ ବାଣୀ ଠାରୁ ଲୋକ ପ୍ରଭାବିତ ହେବେ । ରାଜନୀତି ରେ ସଫଳ ହୋଇ ପାରନ୍ତି । ଶିକ୍ଷା ଉତ୍ତମ ହେବ । ଆଧ୍ୟାତ୍ମ ପ୍ରତି ଇଚ୍ଛା ନେଇ ପାରନ୍ତି । ପିତୃ ସମ୍ପତି ଠାରୁ ଲାଭ ହୋଇ ପାରେ । ଅପ୍ରତ୍ୟାଶିତ ଧନ ପ୍ରାପ୍ତ ହୋଇ ପାରେ । ଜ୍ଞାନ ବିଜ୍ଞାନ ପ୍ରତି ଇଚ୍ଛା ହେବ । ଜୀବନ ସାଥୀ ଙ୍ଵ ଠାରୁ ଧନ ର ଲାଭ ହୋଇ ପାରେ ।

ଆପଣଙ୍କ ପିତା ଙ୍ଵ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ । ମାତା ଙ୍ଵ ବହୁତ ମିତ୍ର ହେବେ । ଆପଣଙ୍କ ଭାଇ ଭଉଣୀ ଙ୍ଵ ପାଇଁ ତୀର୍ଥ ଯାତ୍ରା, ବାଧା ର କାରଣ ସମସ୍ୟା, ଜୀବନ ରେ ଖୁସୀ ଏବଂ ଉତ୍ତମ ଶିକ୍ଷା ର ସଙ୍କେତ ଅଛି ।

ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ର ଶିକ୍ଷା ଉତ୍ତମ ହେବ । ଯଦି ସେ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ସଫଳ ରହିବେ ।

ଯଦି ଆପଣ ଚାକିରୀ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ଭାଗ୍ୟଶାଳୀ ରହିବେ । ପରାମର୍ଶ ଦାତା ଙ୍ଵ ଅତ୍ୟନ୍ତ ଲାଭ ଏବଂ ନିବେଶ ଠାରୁ ଧନ ଅର୍ଜନ ହେବ । ବ୍ୟାପାରି ଙ୍ଵ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ କିଛି ପରିବର୍ତ୍ତନ ହୋଇ ପାରେ ।

ଆପଣଙ୍କ ସ୍ଵାସ୍ଥ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ । ଦେହ ଏବଂ ମୁଖ ର ସାଧାରଣ ରୋଗ ହୋଇ ପାରେ । ଶୁଭକ୍ରୁ ର ବୃଦ୍ଧି ପାଇଁ ଧଳା ବସ୍ତୁ ଦାନ ରେ ଦିଅନ୍ତୁ ।



**ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଧଶା :- ଗୁରୁ - ମଙ୍ଗଳ
(18/03/2046 - 22/02/2047)**

ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବୃହସ୍ପତି ର ମହାଦଶା ୧୭/୦୭/୨୦୩୩ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ଥିଲା । ଏହି ମହାଦଶା ରେ ଅଷ୍ଟମ ଅକ୍ତର ଦଶା ମଙ୍ଗଳ ଙ୍କ ହେବ ଯାହାର ଅବଧି ୧୧ ମାସ ୬ ଦିନ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଏହି ଅକ୍ତର ଦଶା ୧୮/୦୩/୨୦୪୬ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ୨୨/୦୨/୨୦୪୭ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ । ଅକ୍ତର ଦଶା ସ୍ୱାମୀ ମଙ୍ଗଳ ସାହାସ, ସୁନ୍ଦର ଏବଂ ଆତ୍ମ ବିଶ୍ୱାସ ର କାରକ ଅଟେ ।

ମଙ୍ଗଳ ଇଚ୍ଛା ର କାରକ ଅଟେ । ମଙ୍ଗଳ ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ରେ ଦ୍ୱିତୀୟ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ ଅଛି । ଦ୍ୱିତୀୟ ଭାବ ଭାଗ୍ୟ, ଲାଭ ହାନି, ସାମ୍ପାଦିକ ଉପଲବ୍ଧି, ରତ୍ନ, ବାଣୀ, ଡାହାଣ ଆଖି, ଅଭିଳାଷି, ଜୀଭ, ଦାନ୍ତ ଏବଂ ପରିବାର ର ସଦସ୍ୟ ଙ୍କ ପ୍ରତିକ ଅଟେ । ଦ୍ୱିତୀୟ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ ହୋଇ ମଙ୍ଗଳ ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ର ୫, ୮, ୯ ଭାବ ଉପରେ ଦୃଷ୍ଟି ପକେଇ ଥାଏ ଏବଂ ତାଙ୍କର କାରକତ୍ୱ କୁ ପ୍ରଭାବିତ କରି ଥାଏ ।

ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କ ଧନ ଲାଭ ଉତ୍ତମ ହେବ, କିନ୍ତୁ ଅପଥା ର ଖର୍ଚ୍ଚ ଠାରୁ ବଞ୍ଚିବା ଭଲ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ବୁଦ୍ଧି ଏବଂ କଳ୍ପନା ଶକ୍ତି ଉତ୍ତମ ରହିବ । ପ୍ରସିଦ୍ଧି ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ପରିବାର ରେ ଝଗଡ଼ା ଠାରୁ ବଞ୍ଚିବା ପାଇଁ ଚେଷ୍ଟା କରନ୍ତୁ । ଆପଣଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟ କ୍ଷମତା ଉତ୍ତମ ରହିବ, ସାଥୀ ଙ୍କ ମାଧ୍ୟମ ରୁ କିମ୍ବା ପିତୃ ସମ୍ପତ୍ତି ଦ୍ୱାରା ଧନ ଅର୍ଜନ ହୋଇ ପାରେ । ଅପ୍ରତ୍ୟାଶିତ ଘଟଣା କିମ୍ବା ପରିବର୍ତ୍ତନ ର ସମ୍ଭବ ଅଛି । ଅତୁଳ ସମ୍ପତ୍ତି କ୍ରୟ କରି ପାରନ୍ତି । ଜୁଆ ଠାରୁ ଲାଭ, ଉନ୍ନତି, ପରୀକ୍ଷା ରେ ସଫଳତା ଏବଂ ଉଚ୍ଚ ଅଧିକାରୀ ଙ୍କ ଠାରୁ ଲାଭ ର ସମ୍ଭାବନା ଅଛି ।

ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ସାଥୀ ଙ୍କୁ ଅତୀତକ ଲାଭ ହୋଇ ପାରେ । ଆପଣଙ୍କ ପିତା ଙ୍କୁ ଶତ୍ରୁ ଙ୍କୁ ଠାରୁ ବିଜୟ ମିଳିବ, ଆୟ ବଢ଼ିବ, ଧନୀ ବନିବେ ଏବଂ ସମ୍ମାନିତ ହେବେ । ମାତା ଙ୍କୁ ପାରିବାରିକ ସୁଖ ରହିବ, ଧନ ଅର୍ଜନ ଉତ୍ତମ ହେବ, ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଭଲ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ଭାଇ ଭଉଣୀ ଙ୍କୁ ପାଇଁ ଅଧିକ ଖର୍ଚ୍ଚ, ଉତ୍ତମ ଶିକ୍ଷା, ଅତୁଳ ସମ୍ପତ୍ତି ର ପ୍ରାପ୍ତି ଏବଂ ବାହାନ ସୁଖ ର ସଙ୍କେତ ଅଛି ।

ଆପଣଙ୍କ ସନ୍ତାନ ସଫଳତା ଏବଂ ପ୍ରଶଂସା ପ୍ରାପ୍ତ କରିବେ । ଯଦି ସେ କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ଉଚ୍ଚ ପଦ ପ୍ରାପ୍ତ କରି ପାରନ୍ତି ।

ଯଦି ଆପଣ ଡାକିରା ରେ ଥାନ୍ତି ତାହା ହେଲେ ଉତ୍ତମ ରହିବ, ସଫଳ ହେବେ । ପରାମର୍ଶ ଦାତା ସୌଭାଗ୍ୟଶାଳୀ ରହିବେ । ବ୍ୟାପାରି ଙ୍କୁ ଅପ୍ରତ୍ୟାଶିତ ଲାଭ ହୋଇ ପାରେ ।

ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଉତ୍ତମ ରହିବ । ମୁଖ ଏବଂ ଦାନ୍ତ ରେ ସାଧାରଣ ରୋଗ ହୋଇ ପାରେ । ଶୁଭକ୍ରୁ ର ବୃଦ୍ଧି ପାଇଁ ଲାଲ ବସ୍ତ୍ର, ମସୂର ଡାଲି ଏବଂ ତମ୍ବା ଦାନ ରେ ଦିଅନ୍ତୁ ।

**ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଧଶା :- ଗୁରୁ - ରାହୁ
(22/02/2047 - 17/07/2049)**

ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ବୃହସ୍ପତି ର ମହାଦଶା ୧୭/୦୭/୨୦୩୩ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ଥିଲା । ଏହି ମହାଦଶା ରେ ନବମ ଅକ୍ତର ଦଶା ରାହୁ ଙ୍କ ହେବ ଯାହାର ଅବଧି ୨ ବର୍ଷ ୪ ମାସ ୨୪ ଦିନ ଅଛି । ଏହି ଅକ୍ତର ଦଶା ୨୨/୦୨/୨୦୪୭ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ୧୭/୦୭/୨୦୪୯ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ । ଅକ୍ତର ଦଶା ସ୍ୱାମୀ ରାହୁ ଭୌତିକ ସୁଖ, ଅତୀତକ ପରିବର୍ତ୍ତନ ଏବଂ ବିଦେଶି ଙ୍କ କାରକ ଅଟେ ।

ରାହୁ ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ରେ ଲଗ୍ନ ରେ ଛିଡ଼ ଅଛି । ପ୍ରଥମ ଭାବ ଶାରୀରିକ ଗଠନ, ଆକୃତି, ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ, ଜନ୍ମ ଜାତ ସ୍ୱଭାବ ଏବଂ ଅଭ୍ୟାସ, ସମ୍ମାନ, ଗରିମା, ସାମାନ୍ୟ ଶୁଭକ୍ରୁ, ଦେହ ର ଉପର ଭାଗ, ଆୟୁ ଏବଂ ଜୀବନ ର ରୂପ ରେଖା ଆଦି ର ପ୍ରତିକ ଅଟେ । ରାହୁ ଛାୟା ଗ୍ରହ ଅଟେ । ଏହାର ନିଜ ର ରାଶି ନ ଥାଏ ଏବଂ ଏହାର କୌଣସି ରାଶି ର ସ୍ୱାମୀ ଭି ନ ଥାଏ । ଏହାର ଶୁଭ



ମହାଦଶା :- ଶନି
(17/07/2049 - 17/07/2068)

ଶନି ଙ୍କ ମହାଦଶା ୧୯ ବର୍ଷ ର ଅଟେ । ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ରେ ଏହା ୧୭/୦୭/୨୦୪୯ ରେ ଆରମ୍ଭ ହେବ ଏବଂ ୧୭/୦୭/୨୦୬୮ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ରେ ଶନି ନବମ ଭାବ ରେ ସ୍ଥିତ ଅଛି । ଶନୀ କୁ ଏକ ଅଶୁଭ ଗ୍ରହ ଭାବେ ମାନା ଯାଇ ଥାଏ, ଏହା ଅଶୁଭ ଏବଂ ଶୁଭ ଦୁହିଁ ଙ୍କ କାର୍ଯ୍ୟ କରି ଥାଏ । ଏହା କୁ ବାଧକ ଗ୍ରହ ମାନା ଯାଇ ଥାଏ । ଏହାର କାରଣ ଫଳ ର ପ୍ରାପ୍ତି ରେ ବିଳମ୍ବ ହୋଇ ଥାଏ, ଏଥି ରୁ ଆପଣ ବଞ୍ଚି ପାରିବେ ନାହିଁ । ଏହା ଜାତକ କୁ ଲକ୍ଷ୍ୟ ର ପ୍ରାପ୍ତି ପାଇଁ କଠିନ ପରିଶ୍ରମ କରିବା ପାଇଁ ପ୍ରେରିତ କରି ଥାଏ । ଏହା ଜାତକ କୁ ଧର୍ଯ୍ୟ ର ପରୀକ୍ଷା ନେଇ ଥାଏ, ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ କୁଣ୍ଡଳୀ ରେ ନବମ ଭାବ ରେ ସ୍ଥିତ ଏହି ଗ୍ରହ ର ଦୃଷ୍ଟି ଏକାଦଶ, ତୃତୀୟ ତଥା ଷଷ୍ଠ ଭାବ ଉପରେ ଅଛି ଏବଂ ଏହା ତାଙ୍କର କାର୍ଯ୍ୟ କୁ ପ୍ରଭାବିତ କରି ଥାଏ । ନବମ ଭାବ, ଯେଉଁ ଥିରେ ଏହାର ସ୍ଥିତ ଅଛି, ବିଶ୍ୱାସ, ଭାଗ୍ୟ, ଧ୍ୟାନ ସାଧନା, ବଳିଦାନ, ଦାନଶୀଳତା, ଅଧ୍ୟାପନ, ଧର୍ମ, ଲମ୍ବା ଯାତ୍ରା, ଉଚ୍ଚ ଶିକ୍ଷା ତ ଥା ବିଦେଶ ଯାତ୍ରା ର ପ୍ରତୀକ ଅଟେ ।

ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ : ନବମ ଭାବ ରେ ସ୍ଥିତ ମହାଦଶା ସ୍ୱାମୀ ଶନି ଙ୍କ ଦୃଷ୍ଟି ତୃତୀୟ ଏବଂ ଷଷ୍ଠ ଭାବ ଉପରେ ଅଛି ଯାହା ଦ୍ୱାରା ଆପଣଙ୍କ ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ଉତ୍ତମ ଏବଂ ଜୀବନ ଖୁସୀ ରେ ରହିବ । ଏହି ଦଶା କାଳ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ କୌଣସି ବଡ଼ ରୋଗ କିମ୍ବା ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ ସମସ୍ୟା ଅସୁବିଧା ରେ ପକେଇବ ନାହିଁ ।

ଧନ ସମ୍ପତ୍ତି : ଶନି ନବମ ଭାବ ରେ ସ୍ଥିତ ଅଛି ଏବଂ ଭାବ କୁ ଶକ୍ତି ପ୍ରଦାନ କରି ଥାଏ । ଆପଣଙ୍କ ଧାର୍ମିକ ତଥା ଦାନ ପୁଣ୍ୟ ର କାର୍ଯ୍ୟ ରେ ରୁଚି ହେବ । ଆପଣଙ୍କ ବିଦେଶ ଯାତ୍ରା ହେବ ଯେଉଁ ଥିରେ ଆପଣ ଧନ ଅର୍ଜିତ କରିବେ । ଚଳ ଅଚଳ ସମ୍ପତ୍ତି ରେ ବୃଦ୍ଧି ପାଇଁ ଦଶା ଅତ୍ୟନ୍ତ ଅନୁକୂଳ ଅଟେ ।

ବ୍ୟବସାୟ : ଶନି ଙ୍କ ନବମ ଭାବ ରେ ସ୍ଥିତ ହେବା ର କାରଣ ଆପଣ ନିଜର ବ୍ୟବସାୟ ଅଥବା ଉପଦେଶକ, ଶିକ୍ଷକ କିମ୍ବା ଚିକିତ୍ସକ ର କାର୍ଯ୍ୟ କରିବେ । ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ଉପରେ ଆପଣଙ୍କ ପିତା ଙ୍କ ପୁର୍ଣ୍ଣ ପ୍ରଭାବ ରହିବ ଏବଂ ଆପଣ ଦାନ ପୁଣ୍ୟ କରିବା ବାଲା ଏକ କର୍ତ୍ତବ୍ୟ ନିଷ୍ପତ୍ତି ହେବେ ।

ପାରିବାରିକ ଜୀବନ : ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ସାଥୀ ଆପଣଙ୍କ ସହାୟତା କରିବେ ଏବଂ ଆପଣଙ୍କ ଛୁଆ ଆଜ୍ଞାକାରୀ ହେବେ
ଯାହା ଦ୍ଵାରା ଆପଣଙ୍କ ପାରିବାରିକ ଜୀବନ ସୁଖ ମୟ ରହିବ । ଆପଣଙ୍କ ସମ କଷ ସାଥୀ ଈ ସହ ଆପଣଙ୍କ ପାରିବାରିକ ଜୀବନ ରେ
ମହତ୍ଵ ପୂର୍ଣ୍ଣ ଭୂମିକା ହେବ ।

ଶିକ୍ଷା ପ୍ରଶିକ୍ଷଣ : ଆପଣଙ୍କ ପଢ଼ା ରେ ଲଜ୍ଜା ରହିବ ଏବଂ ଆପଣ ନିଜର ଶିକ୍ଷା ପୁରା କରିବା ରେ ସଫଳ ହେବେ ।
ଜ୍ଞାନ ର ପ୍ରତି ଭଜ ଶିକ୍ଷା ଜାରୀ ରଖିବା ରେ ସହାୟକ ହେବେ ।



ଅନ୍ତର୍ଦ୍ଧଶା :- ଶନି - ଶନି
(17/07/2049 - 20/07/2052)

ଶନି ମହାଦଶା ର ଅବଧି ୧୯ ବର୍ଷ ହୋଇ ଥାଏ । ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ଏହି ଦଶା ୧୭/୦୭/୨୦୪୯ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ୧୭/୦୭/୨୦୬୮ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ । ଏହି ମହାଦଶା ରେ ଶନି ଙ୍କ ଅନ୍ତର ଦଶା ୩ ବର୍ଷ ୩ ମାସ ର ହେବ, ଯାହା ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ୧୭/୦୭/୨୦୪୯ ରେ ପ୍ରାରମ୍ଭ ହୋଇ ୨୦/୦୭/୨୦୫୨ ରେ ସମାପ୍ତ ହେବ ।

ଶନି ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ରେ ନବମ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ି ଅଛି । ନବମ ଭାବ ଶୁକ୍ରା, ଭାଗ୍ୟ, ଧାର୍ମିକ ଏବଂ ଆଧ୍ୟାତ୍ମିକ ବିଚାର, ଅର୍ଥ ଜ୍ଞାନ, ଭବିଷ୍ୟତ ଜ୍ଞାନ, ଉପାସନା ସ୍ଥଳ, ପିତା, ଧର୍ମ ଗୁରୁ, ଲମ୍ବା ଦୀର୍ଘ ଯାତ୍ରା, ଭଜ ଶିକ୍ଷା ଏବଂ ଆଶୁ ର ପ୍ରତିକ ଅଟେ । ଶନି ଅଶୁଭ ଗ୍ରହ ଅଟେ । ନବମ ଭାବ ରେ ଛିଡ଼ି ହୋଇ ଶନି ଆପଣଙ୍କ ଜନ୍ମ ପତ୍ରିକା ର ୧୧, ୩, ୬ ଭାବ ଉପରେ ଦୃଷ୍ଟି ପକେଇ ଥାଏ ଏବଂ ତାଙ୍କର କାରକତ୍ୱ କୁ ପ୍ରଭାବିତ କରି ଥାଏ ।

ଏହି ସମୟ ରେ ଆପଣଙ୍କୁ କୌଣସି ଯେତେ ରୋଗ ହୋଇ ପାରେ । ଏକା ଜୀବନ ବ୍ୟତୀତ କରି ପାରନ୍ତି, କିନ୍ତୁ ସାହାସୀ ହେବେ । ଧର୍ମ ପ୍ରତି ଇଚ୍ଛା କମ ହୋଇ ପାରେ କିନ୍ତୁ ସମାଜ ସେବା ଏବଂ ଦାନ ସମ୍ବନ୍ଧିତ ଗତିବିଧି ରେ ଭାଗ ନେବେ ।

କଷ୍ଟ ଠାରୁ ବଞ୍ଚିବା ଏବଂ ଶୁଭତ୍ୱ ର ବୃଦ୍ଧି ପାଇଁ ନିମ୍ନ ଉପାୟ କରନ୍ତୁ :

୧. ଶିବ ଙ୍କ ଉପାସନା ପ୍ରତିଦିନ କରନ୍ତୁ ।
୨. ଅଟା ର ଗୁଳା କରି ନଦି କିମ୍ବା ବନ୍ଧ ଆଦି ରେ ଥିବା ମାଛ କୁ ଖାଇବା କୁ ଦିଅନ୍ତୁ ।
୩. ଭୋଜନ ରୁ ପ୍ରଥମ ରୁଟି କାଢ଼ି ଗାଈ କୁ ଖାଇବା କୁ ଦିଅନ୍ତୁ ।

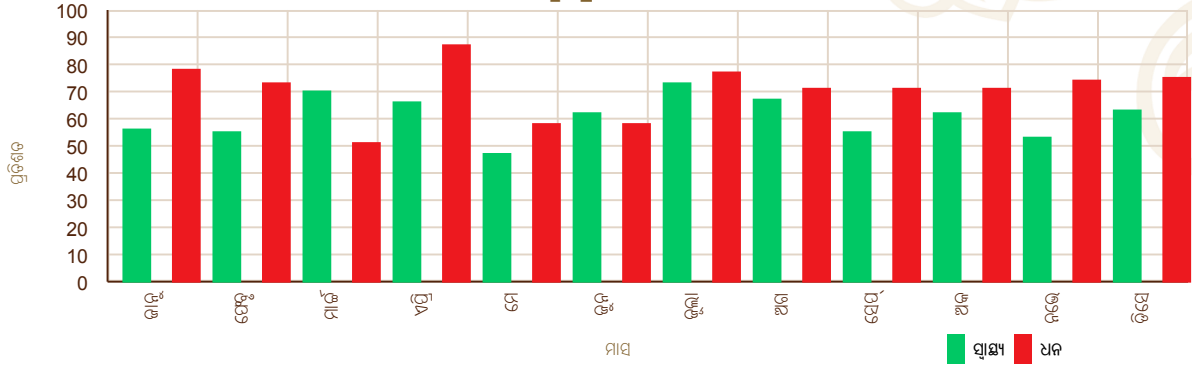
ଏକ୍ଷେ ଗ୍ରାଫ୍

ହିକ୍ଷେଗ୍ରାଫ୍, ଜୀବନ ର ଯେକୌଣସି ସମୟ ର ଗ୍ରାଫ୍ ଏହା ଦ୍ୱାରା ପ୍ରସ୍ତୁତ କରାଯାଇପାରେ । ଏହା ଦ୍ୱାରା ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ, ଆର୍ଥିକ, ବୁଦ୍ଧି, ପ୍ରେମ କିମ୍ବା ଅନ୍ୟ କୌଣସି କ୍ଷେତ୍ରରେ କୌଣସି ଭବିଷ୍ୟତ ଘଟଣାର ପୂର୍ବ ସୂଚନା ମିଳିଥାଏ । ହିକ୍ଷେଗ୍ରାଫ୍ ଆପଣଙ୍କୁ ଜୀବନ ର ସଠିକ ଘଟଣା ଖୁବ୍ ସହଜ ଜନକ ଭାବେ ଜଣାଇଥାଏ ।

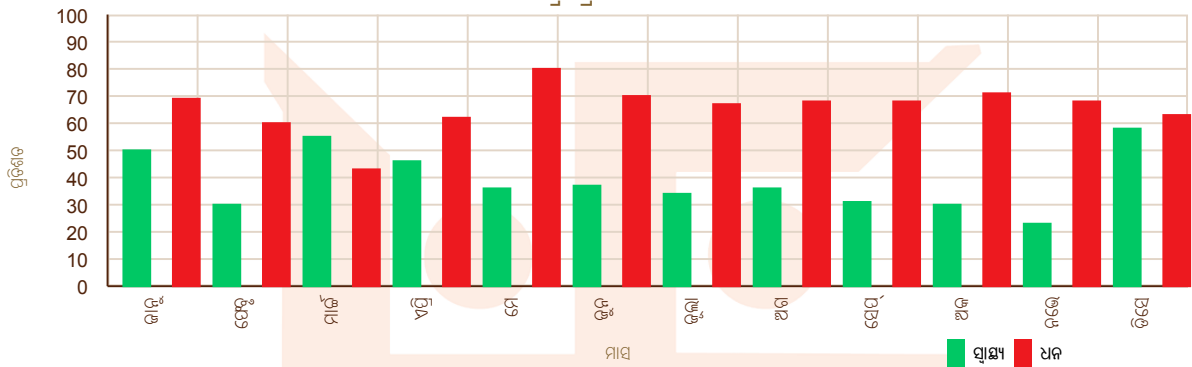
ପରବର୍ତ୍ତୀ ପୃଷ୍ଠାରେ ଆପଣଙ୍କ ଜୀବନ ର ତିନି ଗୁରୁତ୍ୱପୂର୍ଣ୍ଣ ଘଟଣା: ସ୍ୱାସ୍ଥ୍ୟ, ଧନ ତଥା ମାନସିକ ସ୍ତର ହିକ୍ଷେଗ୍ରାଫ୍ ଦ୍ୱାରା ପ୍ରଦର୍ଶିତ କରାଯାଇ ଅଛି । ଯଦି ଆପଣଙ୍କର ପ୍ରାୟ ନମ୍ବର ୫୦ ରୁ ଅଧିକ ସୂଚିତ ହୁଏ ତେବେ ଉତ୍ତମ ଅଟେ । ୨୫ ରୁ ଅଧିକ ଆପଣଙ୍କ ପାଇଁ ତତୋଧିକ ଉତ୍ତମ ଏବଂ ୮୦ ରୁ ଅତି ଅଧିକ ଉତ୍ତମ ଅଟେ । ସେହି ପରି, ୫୦ ରୁ କମ ସାମାନ୍ୟ ଭଲ, ୩୫ ରୁ କମ ଅଶୁଭ ଏବଂ ୨୦ ରୁ କମ ଅତି ଅଶୁଭ ସୂଚନା ପ୍ରଦାନ କରେ ।

| | | | |
|-------|---------|--------|-----------|
| 0-20 | ନିକୃଷ୍ଟ | 50-65 | ଶ୍ରେଷ୍ଠ |
| 20-35 | ନେଷ୍ଟ | 65-80 | ଉତ୍ତମ |
| 35-50 | ସାମାନ୍ୟ | 80-100 | ଅତି ଉତ୍ତମ |

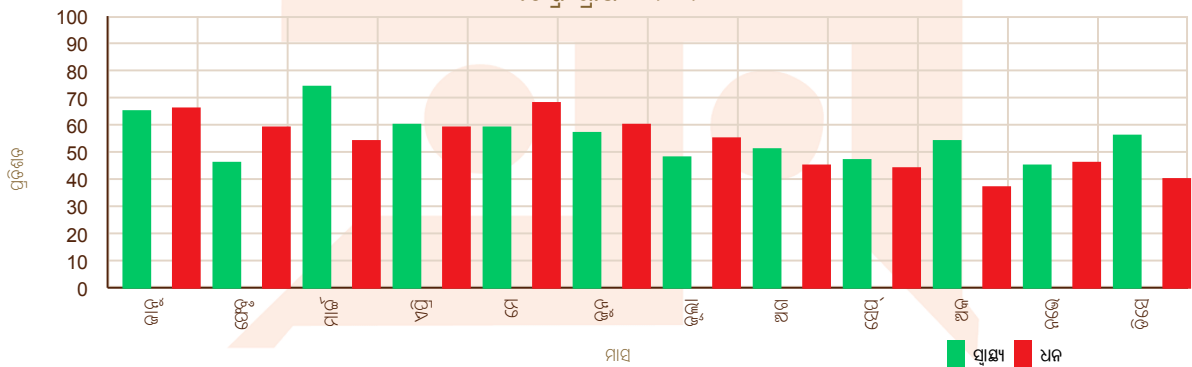
ଏକ୍ସ୍ପ୍ରେସ୍ ଗ୍ରାଫ - ୨୦୨୨



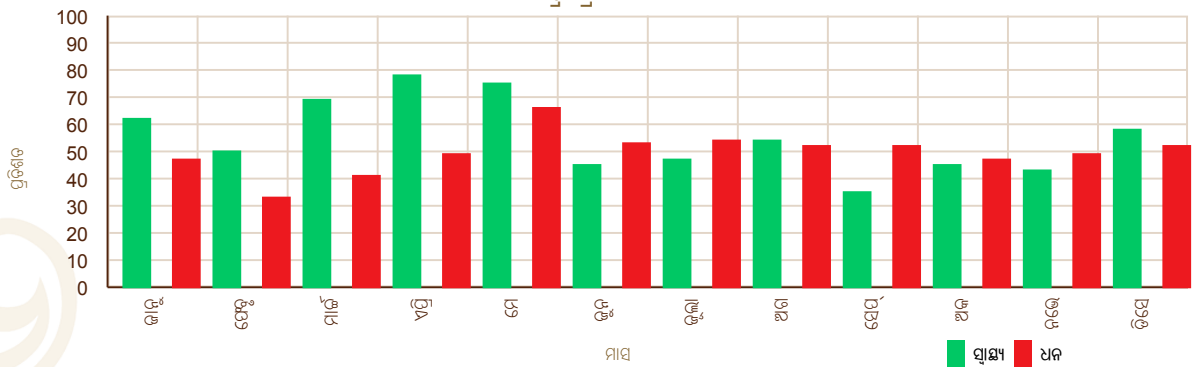
ଏକ୍ସ୍ପ୍ରେସ୍ ଗ୍ରାଫ - ୨୦୨୩



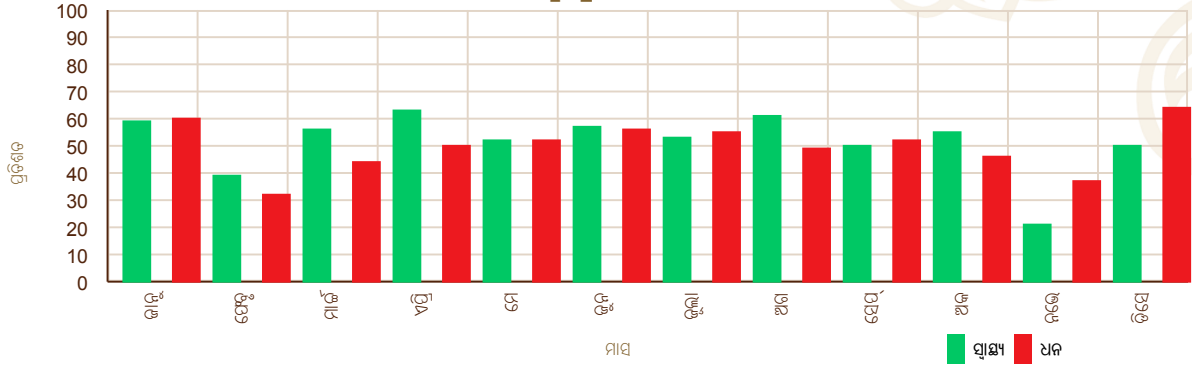
ଏକ୍ସ୍ପ୍ରେସ୍ ଗ୍ରାଫ - ୨୦୨୪



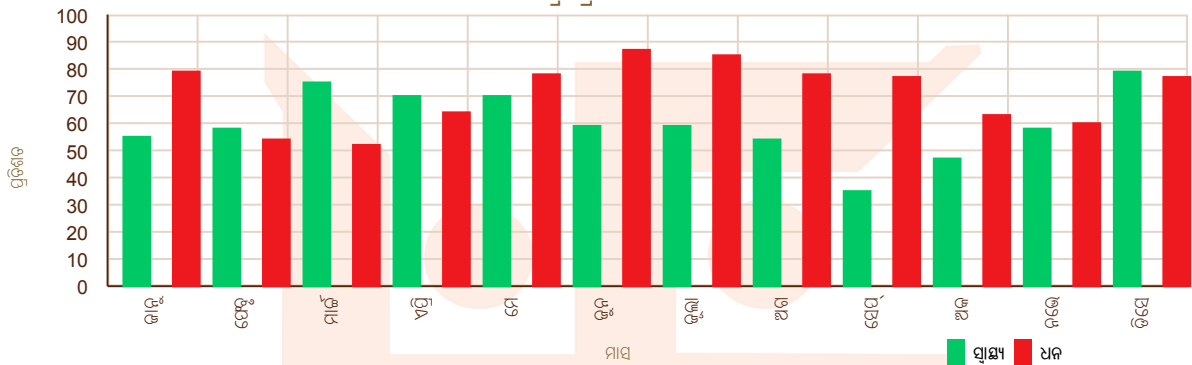
ଏକ୍ସ୍ପ୍ରେସ୍ ଗ୍ରାଫ - ୨୦୨୫



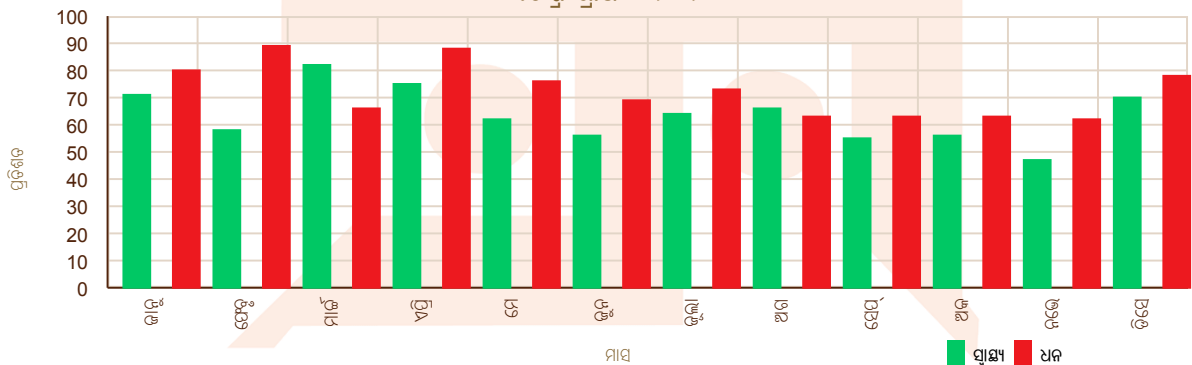
ଏକ୍ସ୍ପ୍ରେସ୍ ଗ୍ରାଫ - ୨୦୨୬



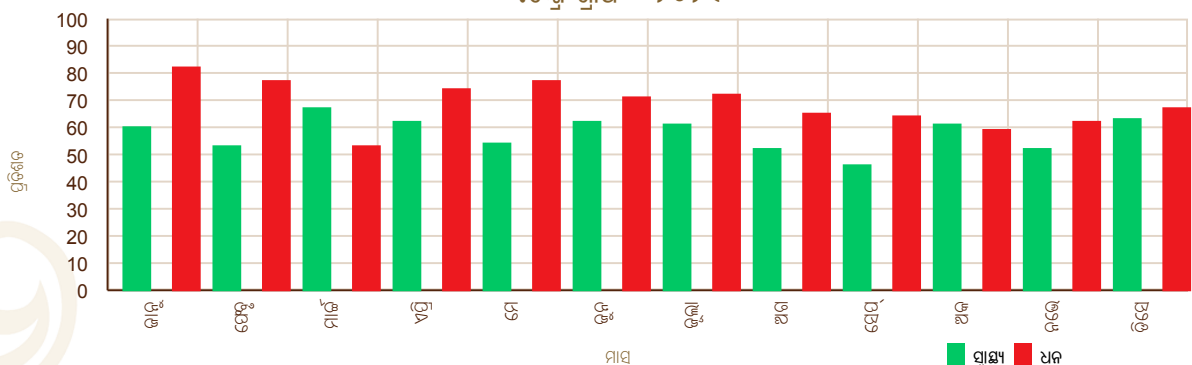
ଏକ୍ସ୍ପ୍ରେସ୍ ଗ୍ରାଫ - ୨୦୨୭



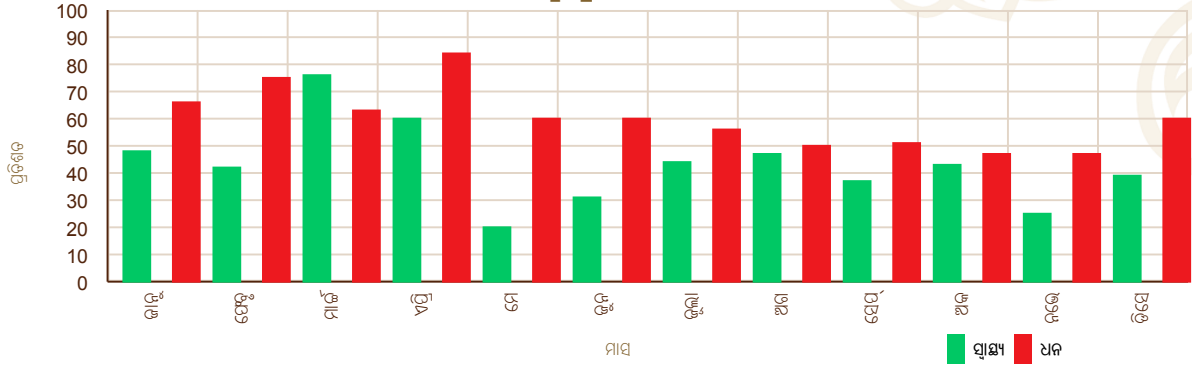
ଏକ୍ସ୍ପ୍ରେସ୍ ଗ୍ରାଫ - ୨୦୨୮



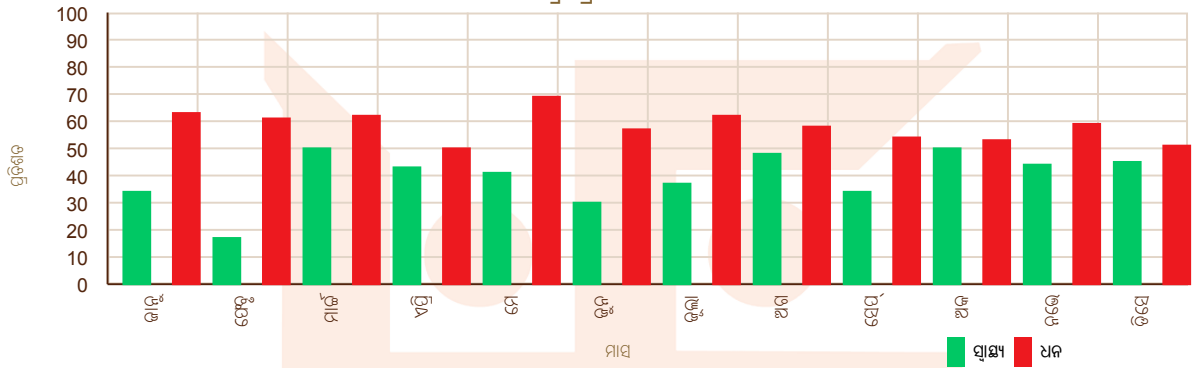
ଏକ୍ସ୍ପ୍ରେସ୍ ଗ୍ରାଫ - ୨୦୨୯



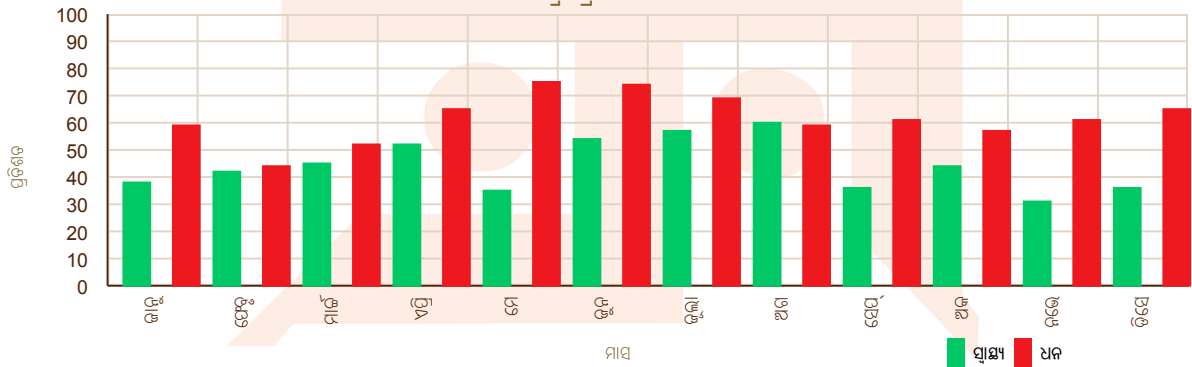
ଏକ୍ସ୍ପ୍ରେସ୍ ଗ୍ରାଫ - ୨୦୩୦



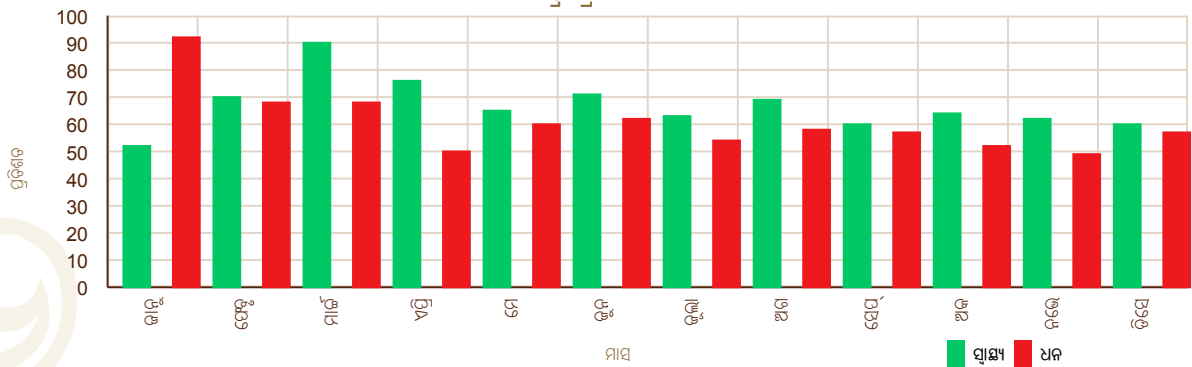
ଏକ୍ସ୍ପ୍ରେସ୍ ଗ୍ରାଫ - ୨୦୩୧



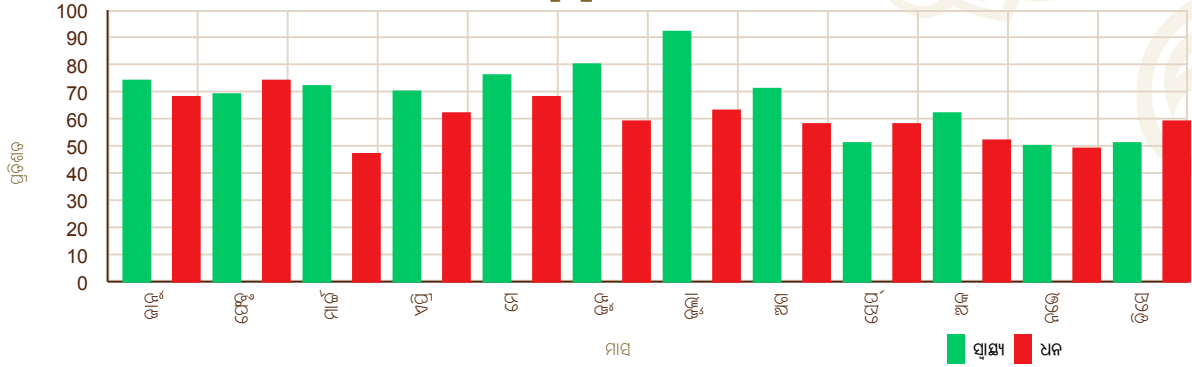
ଏକ୍ସ୍ପ୍ରେସ୍ ଗ୍ରାଫ - ୨୦୩୨



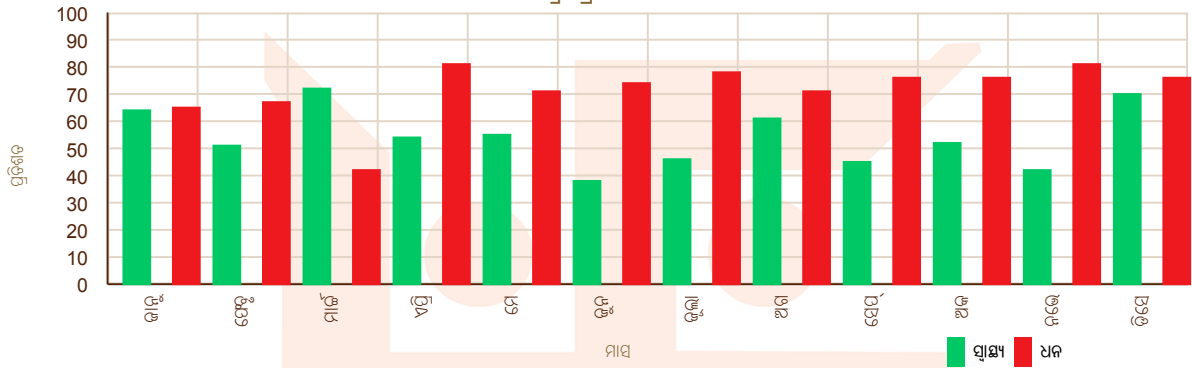
ଏକ୍ସ୍ପ୍ରେସ୍ ଗ୍ରାଫ - ୨୦୩୩



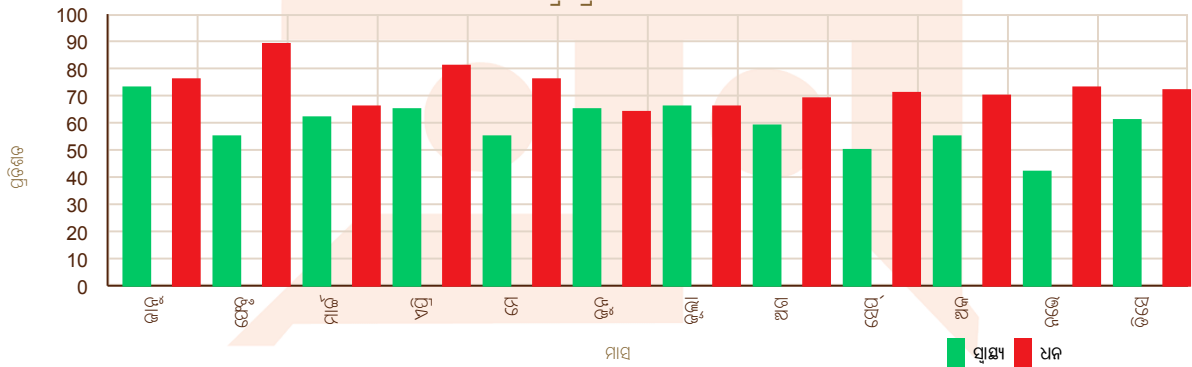
ଏକ୍ସ୍ଟ୍ରା ଗ୍ରାଫ - ୨୦୩୪



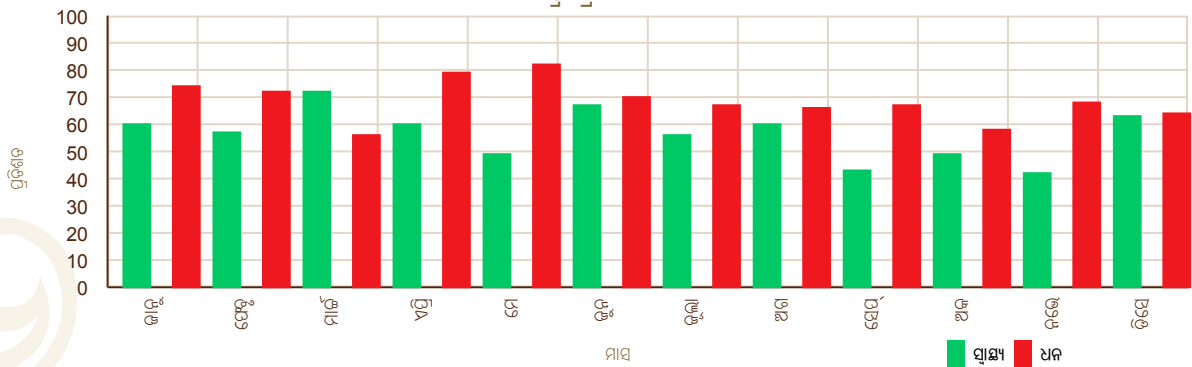
ଏକ୍ସ୍ଟ୍ରା ଗ୍ରାଫ - ୨୦୩୫



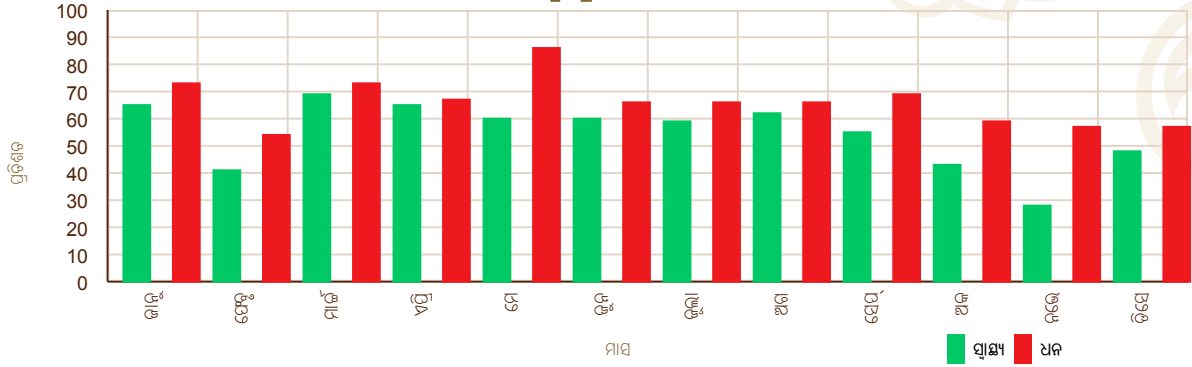
ଏକ୍ସ୍ଟ୍ରା ଗ୍ରାଫ - ୨୦୩୬



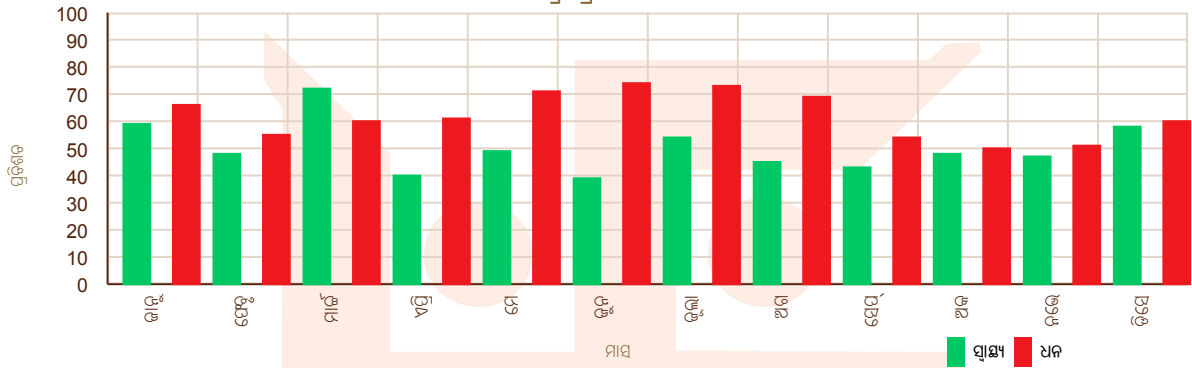
ଏକ୍ସ୍ଟ୍ରା ଗ୍ରାଫ - ୨୦୩୭



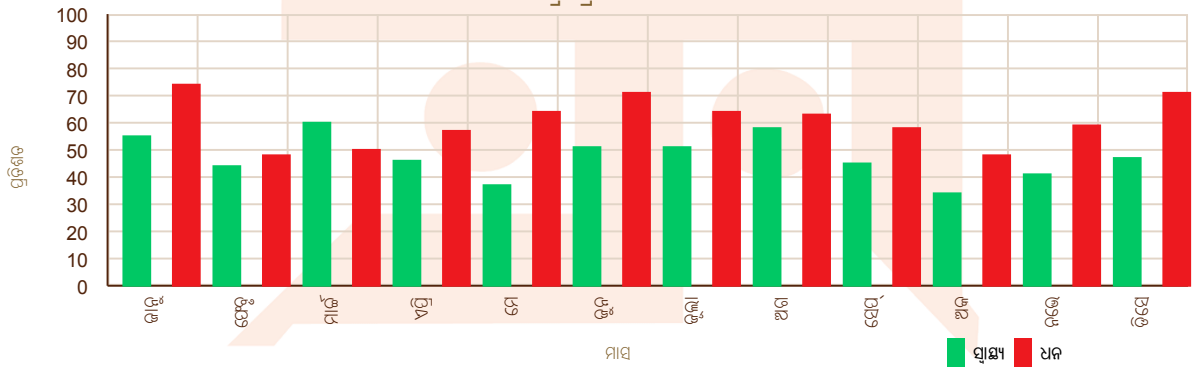
ଏକ୍ସ୍ପ୍ରେସ୍ ଗ୍ରାଫ୍ - ୨୦୩୮



ଏକ୍ସ୍ପ୍ରେସ୍ ଗ୍ରାଫ୍ - ୨୦୩୯



ଏକ୍ସ୍ପ୍ରେସ୍ ଗ୍ରାଫ୍ - ୨୦୪୦



ଏକ୍ସ୍ପ୍ରେସ୍ ଗ୍ରାଫ୍ - ୨୦୪୧

